मुगल सम्राट

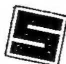
हुमायूं

लेखक

हरिशंकर श्रीवास्तव, एम०ए०, पी एच० डी०
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
गोरखपुर विश्वविद्यालय

आमुख लेखक

ताराचंद एम०ए०, डी० फिल० (आक्सन)
सदस्य, राज्य सभा
भूतपूर्व उपकुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय



स्टर्लिंग पब्लिशर्ज प्राइवेट लि
नई दिल्ली-110016 बंगलार-560001 जालंधर-144

स्टर्लिंग पब्लिशर्ज प्राइवेट लि०,
एल 10, ग्रीन पार्क एक्सटेन्शन, नई दिल्ली 110016
695, मॉडल टाऊन, जालन्धर-144003
24, रस कोर्स रोड माधव नगर, बंगलोर 560001

[इस पुस्तक को विद्यार्थियों के फायदे के लिए भारत सरकार द्वारा नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया के माध्यम से आर्थिक अनुदान दिया गया है]

मुग़ल सम्राट हुमायूं

Code No (45 5 H/1983)
मूल्य 32 00

एस० के० घई, मैनेजिंग डाइरेक्टर, स्टर्लिंग पब्लिशर्ज प्राइवेट लि०, एल 10 ग्रीन पार्क एक्सटेन्शन, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित एवं संजय प्रिंटर्स, मान सरोवर पार्क, शाहदरा, दिल्ली 110032 द्वारा मुद्रित

माता-पिता के
चरणो
मे

आमुख

हिन्दी म अभी ऐसी ऐतिहासिक पुस्तका की कमी है जो मूल ग्रथो के आधार पर लिखी गयी हा। डाक्टर हरिशकर श्रीवास्तव की पुस्तक इस कमी को पूरा करने मे मदद देती है। इन्होंने हुमायू के जीवन से सम्बन्ध रखने वाले सभी फारसी ग्रथा का अवलोकन किया है और अग्रेजो मे जितनी जीवनिया और मुगलकालीन इतिहास लिखे गये है उन सबका अच्छा निरीक्षण किया है। जीवन की घटनाओ और राज्य की कृतियो की पूरी जाच-पडताल की है और अन्य लेखको के विचारा पर युक्तिया के साथ निणय दिया है। हुमायू का विस्तृत, गम्भीर विद्वत्तापूण वणन प्रस्तुत किया है जिससे विद्यार्थियो को इस बादशाह का अच्छा ज्ञान मिल जाएगा।

हुमायू तैमूरीवश का विचित्र रत्न था। उस वश म अदभुत विभूतिया ने जन्म लिया, जिनका सिलसिला तैमूर से लेकर औरगजेब तक दस-बारह पीढिया तक चलता रहा। मुश्किल से कोई राजवश एसा होगा जिसमे इतने ओजस्वी नायक पैदा हुए हो। हुमायू इस लम्बी अनूठी जजीर की एक विलक्षण कडी था। उसका चरित्र गुण दोषा का अनोखा समूह था जिन्होने उसे एक तरफ हिन्दुस्तान का बादशाह और दूसरी तरफ देश निर्वासित ईरान के बादशाह का अनुजीवी बना दिया। एक समय वह दिल्ली का सम्राट था जिसके सामने राजे और नवाब सिर झुकाते थे और वही हुमायू राजस्थान के रेतीले मैदानो म निधन, निस्सहाय घूमता था। पर वह हर परिस्थिति मे खुश था, न कभी निराश होता था, न हार-जीत से विह्वल। उसे अपने पच्चीस वष के राज्यकाल मे से पन्द्रह वष विदेश मे बिताने पडे। भाइया ने उसे धोखा दिया। कभी वह दुनिया से ऐसा उदासीन होता था कि राज्यकाज को छोडने पर उद्यत हो जाता था। कभी विलास म ऐसा लीन हो जाता था कि दोस्त-दुश्मन की परवाह नहीं रहती थी। जब वह राजसिंहासन पर बैठा उस समय कठिनाइया स घिरा था। इन कठिनाइया न उससे साम्राज्य छुडवाया। फिर ईरानियो की थोडी सी मदद के साथ सब शत्रुआ को परास्त कर दोबारा दिल्ली का बादशाह बना। ऐसे आश्चयजनक उतार चढाव का ब्योरा सचमुच हृदय को आकर्षित करता है। काल की निठुरता और मनुष्य के धैय का अदभुत सघष

की कहानी को अत्यन्त रोचक बनाता है। इतिहास की दृष्टि से ही नहीं, मनोविज्ञान के सिद्धान्तों को समझने के लिए भी हुमायूँ के इतिहास का जानना आवश्यक है। डा० हरिशंकर श्रीवास्तव ने इस पुस्तक को लिखकर लाभदायक साहित्य में अच्छा इजाफा किया है।

—ताराचन्द

द्वितीय संस्करण की भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक का प्रथम संस्करण कई वर्ष पूर्व समाप्त हो गया था किन्तु कई कारणों से इसका प्रकाशन सम्भव न हो सका, यद्यपि पुस्तक लगभग सभी हिंदी-भाषी विश्वविद्यालयों के एम०ए० (इतिहास) के पाठ्य सूची में स्वीकृत है। मुझे प्रसन्नता है कि इसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

इस संस्करण में मैंने इस बीच प्रकाशित सामग्री का उपयोग किया है एवं सहायक ग्रंथों की सूची में उन्हें जोड़ दिया है। इस आधार पर कुछ स्थानों पर मैंने थोड़ा परिवर्तन भी किया है, किन्तु मूल पुस्तक के प्रारंभिक विचारों में विशेष परिवर्तन नहीं किया गया है।

पुस्तक के प्रकाशन में मेरे सहयोगी डा० सुधीशधर द्विवेदी, इतिहास विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय, नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत सरकार, तथा श्री एस० के० घई स्टर्लिंग पब्लिशर्ज, नई दिल्ली ने मेरी सहायता की है। मैं इन सबके प्रति आभार, प्रकट करता हूं।

—हरिशंकर श्रीवास्तव

दो शब्द

मुगल काल के साम्राटो मे हुमायू का अपना एक अलग स्थान है। वह मुगल वश के सस्थापक बाबर का पुत्र तथा उस वश के महान सम्राट अकबर का पिता था। उसके जीवन की उथल-पुथल कुछ ऐसी समस्याए उपस्थित करती है जो मुगल काल के इतिहास के अध्ययन के लिए आवश्यक हैं। मुगल सम्राटो मे हुमायू का राज्य-काल सबसे विवादग्रस्त रहा है। उसके निष्कासन तथा पराजय के वातावरण मे प्रभावित होकर इतिहासकारो ने उसके सभी कार्यों का आलोचनात्मक तथा सशयात्मक दृष्टि से देखा है। इसके विपरीत उसके जीवन की घटनाए इतनी मार्मिक हैं कि बरबस उसके प्रति हमारी सहानुभूति हो जाती है। इस तरह उसके पक्ष तथा विपक्ष मे तर्क का एक ऐसा वातावरण-सा छा गया है जिसमे उसका वास्तविक रूप प्राय लुप्त सा हो जाता है। भावनाओ से प्रभावित ऐतिहासिक अध्ययन इतिहास नही रह जाता है। इस तरह हुमायू का अध्ययन हमारे अनुशासित विचार की परख है। एस विवादग्रस्त व्यक्ति का अध्ययन ऐतिहासिक तटस्थता की वास्तविक कसौटी उपस्थित करता है।

हुमायू से सम्बन्धित समकालीन ग्रथ अधिकतर फारसी भाषा मे है। इनमे से अधिकाश उसकी मृत्यु के काफी दिनो बाद उसके पुत्र के काल मे लिखे गये। इन ग्रथो की सूची तथा सक्षिप्त परिचय पुस्तक के अन्त मे दी गयी है जिससे उनका मूल्याकन हो सकेगा। अग्रेजी मे हुमायू से सम्बन्धित कई उपयोगी ग्रथ हैं जो हुमायू के प्रति इतिहासकारो की विशेष रुचि के प्रमाण हैं।

प्रस्तुत पुस्तक गोरखपुर विश्वविद्यालय की एम०ए० कक्षाओ को दिये गये मेरे व्याख्यानो का विस्तृत तथा परिवर्तित रूप है। यह समकालीन ग्रथो पर आधारित है। हुमायू से सम्बन्धित आधुनिक लेखको के विचारो का भी मैंने अध्ययन किया है तथा अनेक स्थानो पर अपना तर्क प्रस्तुत करते हुए मैंने उनके विचारो से नम्र असहमति भी प्रकट की है। पाठक इन विचारो का अनुशीलन कर अपने विचार स्वय निश्चित कर सकते हैं। हुमायू से सम्बन्धित सभी प्रमुख घटनाओ को जहा तक सभव हो सका है मैंने स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। ऐतिहासिक स्थानो की भौगोलिक स्थिति भी मैंने फुटनोट मे प्रकट कर दी है, जिससे स्थानो को

निश्चित करने मे सुविधा होगी तथा पुस्तक में दिये गए मानचित्र मे ये स्थान देखे जा सकते है। हुमायू से सम्बन्धित तिथियो की भी विवेचना की गयी है जिससे हुमायू का कालक्रम निश्चित हो सकेगा। चौसा तथा कन्नौज के युद्धो के मानचित्र भी दिये गये है जिनसे इन युद्धो को समझा जा सकेगा। भौगोलिक स्थान, व्यक्तियो के नाम तथा फारसी शब्दो का जहा तक सम्भव हो सका है, सही तथा प्रचलित उच्चारण देने का प्रयत्न किया है।

इस ग्रथ मे सम्बन्धित फारसी पुस्तको के अध्ययन मे मौलवी मुहम्मद सादिक हुसेन से मैंने बडी सहायता प्राप्त की है। गोरखपुर विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के अध्यक्ष डा० महमूद इलाही ने फारसी के अनेक शब्दो की विवेचना कर मेरी कठिनाइया दूर की है। पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करने मे श्री भगवानप्रसाद एम०ए०, श्री रघुनाथप्रसाद एम०ए० तथा मेरी पुत्रियो, मधु तथा नीलिमा, ने मेरी सहायता की है। गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डा० रामचन्द्र तिवारी तथा श्रीमती शान्ता सिंह ने पुस्तक की भाषा को परिष्कृत करने मे सहायता दी है। गोरखपुर विश्वविद्यालय के आनरेरी लाइब्रेरियन डा०के०एस० भार्गव तथा असिस्टेण्ट लाइब्रेरियन श्री त्रिभुवननाथ गौड ने भिन्न भिन्न पुस्तकालयो से पुस्तके मगाकर मुझे सुविधा प्रदान की है। पुस्तक के लिखने मे जिन पुस्तको से मैंने सहायता प्राप्त की है उनके लेखको तथा प्रकाशको के प्रति मैं आभार प्रकट करता हू। पुस्तक मे दिये गये दोनो चित्र भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं।

मेरे पूज्य गुरुवर, प्रसिद्ध इतिहासकार डा० ताराचन्द ने अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी समय निकालकर पूरी पाण्डुलिपि पढकर अपने अमूल्य सुझाव देने तथा पुस्तक का आमुख लिखने की महती कृपा की है। इस कृपा के लिए मैं उनका विशेष आभार प्रकट करता हू।

प्रयाग विश्वविद्यालय मे अध्ययन करते समय मुगलकाल के इतिहास के प्रति मेरी रुचि जागृत हुई थी। तभी से इस विषय पर लिखने की आकाक्षा रही है किन्तु अनुकूल परिस्थिति के अभाव मे यह सम्भव न हो सका। विगत बीस वर्षों के अध्ययन तथा अध्यापन से मुगल इतिहास के प्रति आकर्षण बढता ही गया है। आज मुगल सम्राट हुमायू के जीवन तथा शासन का इतिहास प्रस्तुत कर एक सतोष का अनुभव कर रहा हू।

पुस्तक की कमियो से मैं अभिज्ञ हू। सन्तोष केवल इस बात से है कि अनेक कठिनाइया के बावजूद यह ग्रथ हिन्दी मे प्रस्तुत कर सका हू। विश्वविद्यालय उच्चतम शिक्षा केन्द्र है। उनके सम्मुख हिन्दी माध्यम की समस्या एक ज्वलन्त समस्या है। ऐसी स्थिति मे हम लोगो पर, जो विश्वविद्यालयी शिक्षा से सम्बद्ध हैं और जो हिन्दी प्रदेश के निवासी हैं, विशेष दायित्व है। प्रस्तुत प्रयत्न इस दायित्व

को निभाने की दिशा म एक विनम्र प्रयासमात्र है । इस पुस्तक से विद्यार्थियो के लाभ के अतिरिक्त हुमायू सम्बधी ऐतिहासिक समस्याओ का निराकरण तथा हिदी की कुछ सेवा हो सकी तो मैं अपने परिश्रम को सार्थक समझूगा ।

—हरिशकर श्रीवास्तव

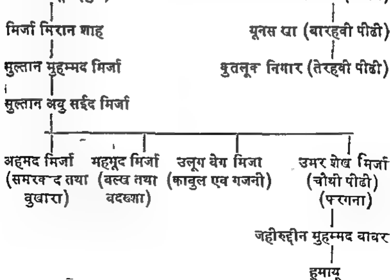
1 प्रारम्भिक जीवन

नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूं मिर्जा का जन्म काबुल के किले में मंगलवार 6 मार्च सन् 1508 की रात्रि में हुआ था।[1] उस समय उसका पिता जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर काबुल प्रदेश का अधिपति था। हुमायूं के शरीर में एशिया के दो प्रमुख विजेताओं—चंगेज तथा तैमूर—का रक्त था। बाबर के पिता उमर शेख मिर्जा तैमूर की चौथी पीढ़ी, तथा उसकी माता कुतलूक निगार चंगेज खां की तेरहवीं पीढ़ी में थी। इस तरह हुमायूं पिता की तरफ से तैमूर की छठी पीढ़ी में तथा अपनी दादी की तरफ से चंगेज की पन्द्रहवीं पीढ़ी में आता है।[2]

---

1 दि मेमायर्स ऑफ बाबर, (बाबरनामा), का श्रीमती ए० एस० बेवरिज का अंग्रेजी अनुवाद, पृ० 344, अकबरनामा, फारसी, भाग 1, पृ० 21, मुस्लिम तिथि के अनुसार चौथी जीकाद, 913 हिजरी। बाबर अपनी आत्मकथा में लिखता है कि मौलाना मसनदी नामक कवि ने 'सुल्तान हुमायूं खां' नामक अक्षरों से तथा काबुल के एक अन्य साधारण कवि ने 'शाह फीरोज कद्र' के अक्षरों से हुमायूं की जन्मतिथि निकाली। अरबी अक्षरों का वह क्रम जिसमें हर अक्षर का मूल्य एक से हजार तक निर्धारित है, अब्जद कहलाता है। अब्जद के आधार पर दोनों उपर्युक्त अक्षरों का जोड़ 913 हुआ।

2



हुमायू की माता माहम बेगम के प्रारम्भिक जीवन तथा वश के विषय म हमे अधिक ज्ञान नही है।[1] समकालीन इतिहासकारो से केवल यही पता चलता है कि वह सुल्तान हुसेन मिर्जा (बाइकरा) तथा खुरासान के प्रसिद्ध सन्त शेख अबु नस्र अहमद जाम[2] के वश से सम्बन्धित थी। इससे स्पष्ट है कि वह एक कुलीन परिवार की तथा शिआ मतावलम्बी थी। बाबर ने 1506 म हिरात मे उसस विवाह किया था। धार्मिक भिन्नता होने पर भी दोनो का वैवाहिक जीवन सुखी था। बाबर की कई पत्निया थी[3] किन्तु माहम उसकी प्रमुख पत्नी थी तथा उस उन सबसे अधिक महत्त्व प्राप्त था।

---

1 गुलबदन बेगम ने माहम के लिए 'आका' शब्द का प्रयोग किया है। यह तुर्की भाषा का शब्द है, जो वयोवृद्ध महिला के लिए प्रयोग किया जाता था। आका का अर्थ प्रभु मालिक, अध्यक्ष या सरदार है (गुलबदन हुमायू नामा, बेवरिज, प० 256-58)। श्रीमती बेवरिज लिखती हैं कि माहम के वश का पता लगाना कठिन है (बाबरनामा, बेवरिज प० 344, टिप्पणी)। डा० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार यह निश्चित ही है कि वह मुगल नही थी (ईश्वरी प्रसाद, हुमायू पृ० 1)। बाबर के ट्रास आक्सियाना अभियान के समय माहम उसके साथ थी (916 20 हि०)। ऊजबेको से पराजित होकर बाबर जिस समय 918 हि० (अप्रैल मई 1512) मे हिसार मे था तब भी माहम उसके साथ थी (बाबरनामा, बेवरिज, 1, प० 358 हुमायूनामा, बेवरिज प० 91)।

2 अबू नस्र अहमद जाम 'जिन्दा पील' ईरान के एक प्रसिद्ध सूफी सन्त थे। उनका जन्म सन 1049 (441 हि०) मे हुआ था। 22 वर्ष की अवस्था मे उन्होने धार्मिक जीवन अपना लिया। वे अट्ठारह वर्ष तक जगलो तथा पर्वतो मे घोर तपस्या करते रहे। उसके पश्चात उन्होने विवाह किया। उनके 39 पुत्र तथा 3 पुत्रिया हुई। उनकी मृत्यु के समय (फरवरी 1142, 536 हिजरी) तीन पुत्रिया तथा चौदह पुत्र जीवित थे। इनकी रचनाओ म रिसाला ए-समरक दी बहरुल हकीकत इत्यादि प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि उन्होने साठ हजार व्यक्तियो को इस्लाम धर्म का अनुयायी बनाया। अकबर की मा हमीदाबानो भी इसी वश से सम्बन्धित थी। (एनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लाम, भाग 1, पृ० 197 बील तथा कीन दि ओरिएन्टल बायोग्राफिकल डिक्शनरी पृ० 27)।

ईरान तथा निकट के भागो म उनका नाम बडे आदर से लिया जाता था। तमूर ने स्वय इनके दरगाह की यात्रा की थी। हुमायू की 'सन्त जिन्दपील के दरगाह की यात्रा के लिए इस पुस्तक का नवा अध्याय देखिए।

3 बाबरनामा तथा गुलबदन बेगम के हुमायूनामा से हमे बाबर की नौ पत्निया का ज्ञान प्राप्त होता है

हुमायू का जन्मोत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया। बाबर अपनी आत्म-कथा मे लिखता है "जब वह (हुमायू) पाच छह दिन का हो गया तो मैं चारबाग पहुचा, जहा उसके जन्म का समारोह मनाया गया। सभी छोटे-बडे बेग उपहार

---

(1) आयशा सुल्तान बेगम—यह बाबर के चाचा सुल्तान अहमद मिर्जा की पुत्री थी। जिस समय बाबर की अवस्था पाच वर्ष की थी, इसकी मगनी उससे हुई, किन्तु विवाह खोजन्द मे, मार्च 1500 मे हुआ। 1501 ई० म इसके एक पुत्री पैदा हुई, किन्तु यह एक महीने मे ही मर गयी (गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरीज टिप्पणी, पृ० 209-10)।

(2) जैनब सुल्तान बेगम—यह सुल्तान महमूद मिर्जा की पुत्री थी। इसका विवाह 1504 ई० मे हुआ। दुभाग्यवश 2 वर्ष पश्चात ही जैनब की मृत्यु हो गयी। (बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 48)।

(3) मासूमा सुल्तान बेगम—यह सुल्तान अहमद मिर्जा की पाचवी पुत्री थी। इसकी माता हबीबा सुल्तान बेगम अर्गून थी। यह बाबर की पहली पत्नी आयशा की सौतली बहन थी। यह प्रेमविवाह था जो 1507 ई० मे सम्पन्न हुआ था। दो वर्ष पश्चात् पुत्र-जन्म म इसकी मृत्यु हो गयी। इसकी पुत्री का नाम इसी के नाम पर (मासूमा सुल्तान बेगम) रखा गया (गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 90 तथा 263)। बाद मे इस लडकी का विवाह मुहम्मद जमान मिर्जा से हुआ।

(4) माहम बेगम—इसका उल्लेख ऊपर किया गया है। माहम बेगम के पाच सन्तानें हुईं—बारबुल मिर्जा, मिहिर जहा, एशान दौलत बेगम फारुक मिर्जा तथा हुमायू मिर्जा। प्रथम चार सन्तानें बचपन म ही मर गयीं।

(5) गुलरुख बेगम—इसके वश का परिचय हमे प्राप्त नही है। बाबर के साथ इसका विवाह सन् 1508 मे हुआ। इसके पाच पुत्र हुए जिनमे दो—कामरान तथा अस्करी—हुमायू के राज्य काल मे जीवित रहे और उसके दुर्भाग्य के कारण बने (बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 274 388, तारीखे रशीदी, पृ० 183, 248, 264 65, 280, 308, 326, गुलबदन बेगम, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 233-34)।

(6) दिलदार आगाचह—यह बाबर की दूसरी पत्नी जैनब बेगम की बहन थी। इससे बाबर का विवाह कदाचित 1509 ई० या इसके पश्चात हुआ था। इसकी पाच सन्तानें हुइ—गुलरग, गुलचेहरा, हिन्दाल, गुलबदन तथा अलवर। इनमे दो—हिन्दाल मिर्जा (1518 51 ई०) तथा गुलबदन बेगम (1523-1603 ई०)—ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। (गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 225 26, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 30 31, असकिन, 2, पृ० 164, 220, 302)।

लाये, चादी के टनको का इतना ढेर लग गया कि इससे पूव ऐसा ढेर नही देखा गया था। यह बहुत ही बढिया प्रकार का समारोह हुआ।"[1]

वावर 'पादशाह'

हुमायू के ज म के समय वावर की अवस्था लगभग 26 वप की थी। उसका प्रारम्भिक जीवन कठिन परिस्थितिया मे व्यतीत हुआ था। काबुल पर अधिकार प्राप्त करने के पश्चात उसका अनाथित जीवन समाप्त हो गया था और वह अपने जीवन मे स्थिरता का अनुभव कर रहा था। हुमायू के ज म के कुछ ही दिन पूव

---

(7) मुबारिका बीबी—यह शाह मन्सूर यूसुफजई की पुत्री थी। वावर ने केहरास मे 30 जनवरी, 1519 को इससे विवाह किया था। यह विवाह यूसुफजई को अपने म मिलाने के लिए किया गया था। इसके कोई सन्तान नही हुइ। कदाचित वावर की उपपत्निया ने इसे ऐसी दवा खिला दी थी कि कोई सन्तान न हो सकी। (गुलबदन, हुमायूनामा, वेवरिज, प० 91 92, 266, अकवरनामा, अ० अनु० 1, प० 315, एशियाटिक क्वाटरली रिव्यू, अप्रल 1901 एच० वेवरिज, 'ऐन अफगान लिजेंड,' (तारीखे हाफिजे रहमतखानी का अनुवाद)।

(8) गुलनार आगाचह और (9) नारगुल आगाचह—ये कदाचित दासिया थी जिन्ह शाह-तहमास्प ने बावर को उपहार के रूप म 1526 इ० मे दिया था। प्रारम्भ म ये रखैलें थी किन्तु बाद मे इनकी गणना राजभवन की सम्भ्रात महिलाओ मे होने लगी। गुलबदन वेगम न अपने सस्मरण मे कई बार उत्सवो तथा पारिवारिक विचार विमर्शों म इन्हें भाग लेते हुए वणन किया है। गुलनार हिन्दाल के विवाह के उत्सव में उपस्थित थी तथा गुलबदन वेगम के साथ 1575 ई० मे हज्ज को गयी थी। अपने जीवन के अन्तिम समय मे इन दोनो पर बाबर की आसक्ति बहुत वढ गयी थी (गुलवदन, हुमायूनामा वेवरिज, पृ० 232, अकबर-नामा, अ० अनु० 3, प० 145)।

इन नौ पत्नियो के अतिरिक्त तारीखे शाहरुख के लेखक नियाज मुहम्मद खुकडी न सायीदा आफाक नाम की एक दसवी पत्नी का भी उल्लेख किया है। हो सकता है कि वावर की और भी पत्निया तथा रखैलें रही हा।

गुलवदन ने वावर की 19 सताना का उल्लेख किया है किन्तु नाम उन्होंने केवल18 के लिखे है। हुमायू के केवल तीन सौतेले भाई तथा चार सौतेली बहनें जीवित रही।

1 बाबरनामा, वेवरिज, पृ० 344।

उसने दो बार भारत की पश्चिमोत्तर सीमाओं पर आक्रमण करने में सफलता प्राप्त की थी। इस तरह उसका जीवन एक नयी दिशा की ओर अग्रसर हो रहा था।

अब तक बाबर के पूर्वज अपने को 'मिर्जा' लिखते थे। हुमायूँ के जन्म के वर्ष उसने 'पादशाह' की उपाधि धारण की। बाबर अपनी आत्मकथा में लिखता है "उस समय तैमूर बेग के उत्तराधिकारियों को, चाहे वे राज्य ही क्यों न कर रहे हों, लोग 'मिर्जा' कहते थे, किन्तु इस समय मैंने आदेश दिया कि लोग मुझे 'पादशाह' कहा करें।"[1]

हुमायूँ का जन्म तथा बाबर द्वारा 'पादशाह' की उपाधि धारण करना, ये दोनों घटनाएँ एक ही वर्ष में कुछ दिनों के अन्तर से हुईं। इस कारण यह प्रश्न उठता है कि क्या इन दोनों घटनाओं में कोई सम्बन्ध है? बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम हुमायूँ के जन्म का उल्लेख करने के पश्चात् ही लिखती है "उसी वर्ष हजरत फिरदौस मकानी (बाबर) ने अपने अमीरों तथा सब लोगों को आदेश दिया कि उन्हें बाबर पादशाह कहा जाया करे अन्यथा हुमायूँ बादशाह के जन्म के पूर्व उन्हें मिर्जा बाबर के नाम से पुकारा जाता था। सभी बादशाह के पुत्रों को मिर्जा कहा जाता था। हुमायूँ बादशाह के जन्म के वर्ष में उन्होंने अपने आपको बादशाह कहलाया।"[2] इस वर्णन के आधार पर डॉ० बनर्जी लिखते हैं कि "हुमायूँ के जन्म के सम्बन्ध में मनाये जा रहे उत्सवों के समय बाबर ने मिर्जा के स्थान पर पादशाह की उपाधि धारण की।"[3] इसके विपरीत श्रीमती बेवरिज इन दोनों घटनाओं में कोई सम्बन्ध नहीं स्वीकार करतीं।[4] वे अपना मत बाबर की [illegible]

---

1 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 344।

2 गुलबदन, हुमायूँनामा, बेवरिज, पृ० 90, [illegible] पृ० 9, [illegible] के शब्द इस प्रकार हैं —
व दरहमा साल हजरते फिरदौस मकानी [illegible] व [illegible] सायरुन्नास कि मरा बाबर बादशाह [illegible]। [illegible] अज तवल्लुदे हजरत हुमायूँ बादशाह मिर्जा [illegible] मस्मूम बूदन्द बल्कि हमा बादशाह [illegible] मिर्जा [illegible] दर साल तवल्लुदे एशां खुद रा बाबर बादशाह [illegible]।

3 बनर्जी (हुमायूँ 1, पृ० 2) [illegible] "The occasion was marked by rejoicing amid [illegible] assumed the higher title of Padshah in preference [illegible] of Mirza so long [illegible] by him"

4 बाबरनामा, [illegible] 2।

पर आधारित करती है। दोनो मतो मे श्रीमती बेवरिज का ही मत सही मालूम होता है, क्योकि बाबर ने अपनी आत्मकथा मे पहले पादशाह की उपाधि धारण करने का वणन किया है और उसके पश्चात वह लिखता है कि उस वप के अन्त मे हुमायू का जन्म हुआ।[1] इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि हुमायू के जन्म के पूव ही बाबर ने पादशाह की उपाधि धारण कर ली थी। बाबर तथा गुलबदन बेगम के वणनो मे बाबर निश्चत ही अधिक विश्वसनीय है। गुलबदन बेगम का उस समय जन्म भी नही हुआ था। इसके अतिरिक्त किसी अन्य समकालीन इतिहासकार स भी डा० बनर्जी के मत का समथन नही प्राप्त होता।

बाबर द्वारा 'पादशाह' उपाधि धारण किये जाने के कुछ विशेष कारण थे। तमूर के वशजो मे उस समय बाबर का ही स्थान सबसे प्रमुख था। खाकान मुगल पादशाह कहलाते थे। बुगरा खा इतिहास मे पादशाह गाजी कहलाता था। खाकाना की यह उपाधि धारण कर बाबर अपने को चगताइया, मिर्जाओ तथा मुगलो मे सर्वोपरि घोषित करना चाहता था। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बाबर ने यह उपाधि राजनीतिक दृष्टि से धारण की थी, न कि पुत्र जन्म की प्रसन्नता के कारण।

पुत्र का जन्म बाबर के लिए प्रसन्नता तथा आनन्दोत्सव का विषय अवश्य था, किन्तु यह कहना कि पुत्र जन्म न "बाबर के वश तथा उसके शासन के सिद्धान्तो को निरतरता प्रदान की,"[2] सत्य नही है। बाबर की अवस्था अधिक नही थी। उसके सन्तानें भी हो रही थी, यद्यपि वे जीवित नही थी। इस कारण उसे पुत्र न होने का दुख नही था। सन्देह इस बात का था कि क्या नवजात शिशु जीवित रहेगा ? ऐसी स्थिति मे पुत्र-जन्म से वश की निरतरता की आशा हो सकती थी, निश्चय नही। मुगल शासन के सिद्धान्तो का अभी विकास नही हुआ था, जिनमे नये शिशु द्वारा स्थायित्व प्रदान करने की आशा की जाती। उपयुक्त कथन के प्रथम भाग मे कुछ सत्यता हो भी सकती है, किन्तु दूसरे का तो अस्तित्व ही नही था।

हुमायू का बाल्य-काल

हुमायू के जन्म तथा बाल्यकाल के समय मध्य एशिया क्रान्तिकारी

---

1 बाबरनामा, बेवरिज, प० 344।

2 बनर्जी, हुमायू 1 प० 2, The birth of a son ensured the continuity of his line and the principles of his Government

परिस्थितियो से गुजर रहा था। उसी वर्ष बाबर की अनुपस्थिति मे उसके विरुद्ध काबुल के भूतपूर्व शासक के पुत्र अब्दुरज्जाक को गद्दी पर बैठने के लिए एक षड्यन्त्र रचा गया। मई 1508 मे काबुल वापस आने के पश्चात बाबर को इस षड्यन्त्र की सूचना मिली किन्तु उसने इस पर अधिक ध्यान नही दिया। एक दिन वह चारबाग मे बैठा हुआ था। उसी समय अचानक लगभग तीन हजार सैनिको ने, जिनमे भाड़े के मुगल सैनिक भी थे, उस पर आक्रमण कर दिया। उस समय बाबर के पास केवल पाच सौ स्वामिभक्त सैनिक थे। आक्रमण इतना अचानक हुआ था कि वह या तो मार डाला जाता या विद्रोहियो द्वारा बन्दी बना लिया जाता। बाबर ने पहले तो भागना चाहा, किन्तु फिर मन को दृढ करके उसने विद्रोहियो का सामना किया। विद्रोही सख्या मे अधिक होने पर भी पराजित हुए तथा उनका नेता अब्दुरज्जाक बन्दी बनाया गया। बाबर यदि चाहता तो उसे मरवा सकता था, किन्तु उसने दया कर उसे स्वतन्त्र कर दिया। अब्दुरज्जाक ने कुछ दिन पश्चात् पुन विद्रोह किया जिसके उपरान्त उसे मार डाला गया।[1]

मध्य एशिया मे शैबानी खा ने तैमूर तथा चगेज के वशजो को पराजित कर उनके राज्यो पर अधिकार कर लिया था। शक्ति से मदान्ध होकर उसने इसी बीच ईरान के शाह से शत्रुता मोल ले ली। ऊजबेक तथा ईरानियो मे भयकर युद्ध की तयारी होने लगी। दिसम्बर 1510 मे मर्व के भयकर युद्ध मे शैबानी खा मारा गया तथा उसकी सेना बुरी तरह पराजित हुई।[2] शैबानी खा के पराजित होते ही मध्य एशिया मे अराजकता फैल गयी। तैमूर वशियो ने उसके साम्राज्य पर अधिकार करने का पुन प्रयत्न किया। बाबर को भी निमन्त्रण मिला। काबुल को अपने भाई नासिर मिर्जा के नियन्त्रण मे रखकर बाबर अपने दो पुत्रो (हुमायू तथा कामरान) के साथ 1511 के प्रारम्भ मे कुन्दुज पहुचा। यही पर शाह इस्माईल ने उसकी विधवा बहन खानजादा बेगम को, जिसका विवाह शैबानी खा से हुआ था, वापस भेजा। शाह ने बाबर को सूचित किया कि वह उसे समरकन्द देने को तैयार है यदि बाबर शिआ धर्म को प्रोत्साहित करने का वचन दे। बाबर

---

1 तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास, पृ० 204, फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 29 30, रशब्रुक विलियम्स, ऐन एम्पायर बिल्डर ऑफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी, पृ० 96-97।

2 तारीखे रशीदी, ए० तथा रा०, पृ० 237, अर्सकिन, 1, पृ० 298 300, अहसानत् तवारीख, स० सेडन, पृ० 57 तथा 119, विलियम्स, पृ० 97-101।

ने इसे स्वीकार किया और समरकन्द पर तीसरी तथा अंतिम बार उसका अधिकार हुआ,[1] किन्तु वह अधिक दिनों तक उसे अपने अधिकार में न रख सका। आठ महीने के पश्चात् ही नवम्बर 1512 में, वह उबदुल्ला खां उज़बक द्वारा गज्दवान के युद्ध में पराजित हुआ। कठिन परिस्थितियों में कुछ दिन हिसार तथा कुन्दुज में व्यतीत कर 1514 में बाबर को पुनः काबुल लौट आना पड़ा। इस बीच हुमायूं कहां था, यह निश्चित रूप से बताना कठिन है। कदाचित् वह कामरान के साथ सुरक्षा के लिए काबुल भेज दिया गया था।[3]

शिक्षा

हुमायूं के प्रारम्भिक जीवन तथा शिक्षा के विषय में अधिक ज्ञान नहीं है। उसने न स्वयं अपनी आत्मकथा लिखी न उसके पिता की आत्मकथा में ही इनका वर्णन है। समकालीन इतिहासकार भी मौन हैं। इस कारण उसकी शिक्षा कब प्रारम्भ हुई[4] तथा उसकी प्रगति कैसी थी इत्यादि बातों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं है। हमें उसके दो शिक्षकों—मौलाना मसीहुद्दीन रूहुल्लाह[5] तथा मौलाना इलियास[6] का उल्लेख मात्र मिलता है। हुमायूं कई भाषाओं का जानकार था। वह फारसी का कवि एवं ज्योतिष तथा नक्षत्रशास्त्र का विद्वान तथा साहित्यकारों का पोषक था। इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि उसकी प्रारम्भिक शिक्षा अच्छी हुई होगी।

बाबर की आत्मकथा में भी तीन ऐसे उल्लेख हैं जिनसे प्रमाणित होता है कि

---

1 विलियम्स, पृ० 101-103, रजब 917 हिजरी, सितम्बर-अक्टूबर 1511।

2 अहसानत तवारीख 1 पृ० 127-36, तारीखे रशीदी, ए० तथा रा०, पृ० 246-47 तथा 260-68, विलियम्स, पृ० 103-109।

3 ईश्वरी प्रसाद, लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ हुमायूं, पृ० 4।

4 लॉ, प्रोमोशन आफ लर्निंग इन इंडिया ड्यूरिंग मोहम्डन रूल, पृ० 128। चार वर्ष चार महीना तथा चार दिन की अवस्था में हुमायूं का विद्यारंभ संस्कार हुआ तथा उसे शिक्षकों के सुपुर्द किया गया।

5 ख्वांदमीर कानूने हुमायूनी, डॉ० बेनी प्रसाद (अ० अनु०) पृ० 24, अबुल फजल इसका नाम केवल रूहुल्लाह लिखता है अकबरनामा, I, पृ० 357।

6 गनी, ए हिस्ट्री ऑफ पर्शियन लैंगुएज एण्ड लिटरेचर ऐट दि मुगल कोर्ट, 2, पृ० 53।

बावर हुमायू की शिक्षा के विषय मे सतक था। जनवरी 1526 मे बाबार ने मिलाचत पर अधिकार किया और गाजी खा का पुस्तकालय उसे प्राप्त हुआ। उस पुस्तकालय की कुछ पुस्तकें उसने हुमायू को भेंट की।[1] जनवरी 1529 म बाबर ने हुमायू को अपनी कुछ रचनाए भेजी।[2] नवम्बर 1528 मे हुमायू ने बाबर का एक पत्र लिखा, उसके उत्तर मे बाबर हुमायू के पत्र की आलोचना करता है तथा उस शुद्ध लिखने का परामश देता है।[3]

शासन तथा सैनिक शिक्षा

बाबर ने हुमायू को सैनिक ज्ञान तथा उससे सम्बंधित शारीरिक काय तथा शक्ति-सचय मे भी प्रवीण करने का प्रयत्न किया। बाबर का जीवन एक ऐसा जीवन था जिसमे वह बराबर एक स्थान से दूसरे स्थान पर युद्ध, शासन तथा शिकार के लिए जाया करता था। हुमायू भी उसके साथ जाता रहता था। वहा उसे सैनिक हथियारो के प्रयोग की शिक्षा मिलती थी। बावर अपनी आत्मकथा मे लिखता है कि 12 नवम्बर 1519 मे कोह दमन की सैर करत समय हुमायू ने एक बत्तख पर

---

1 सात व आठ जनवरी 1526 को बाबर लिखता है, "उस टीले पर दो रातें व्यतीत करने के उपरान्त मैंने दुग का निरीक्षण किया। मैन गाजी खा के पुस्तकालय मे प्रवेश किया। वहा बहुत से उत्तम बहुमूल्य ग्रन्थ मिले। उनमे से कुछ मैंने हुमायू को दिये और कुछ कामरान को भेज दिय। उनम बहुत से ग्रन्थ पाडित्यपूण विषयो पर थे, किन्तु उनकी सख्या इतनी अधिक न थी जितनी सवप्रथम दृष्टिगत हुई थी। मैंने वह रात्रि किले म व्यतीत की। दूसरे दिन प्रातकाल मैं अपने शिविर मे चला आया।" बाबरनामा बेवरिज, प० 460।

2 "मुल्ला वहिश्ती के हाथ हिन्दाल को एक जडाऊ पटी सहित [illegible] जडाऊ कलमदान, एक मोतियो के काम की चौकी, एक [illegible] तथा बाबरी लिपि के कुछ विभिन्न पत्र एव बाबरी लिपि [illegible] भेजे। हिदुस्तान मे मैंने जिस अनुवाद और [illegible] उन्हे हुमायू के पास भेजा। हिदाल तथा [illegible] एव पद्य भेजे गये। उन्हे कामरान के पास [illegible] हुए नमूना के साथ मिर्जा बेग तगाई के [illegible] बाबरनामा बेवरिज, प० 642।

3 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 624-28। [illegible] से उद्धृत है।

वडा ही अच्छा निशाना लगाया।[1]

कुछ महीने पश्चात, जब हुमायू की अवस्था लगभग 12 वर्ष की थी, हम एक ऐसा उदाहरण मिलता है जब हुमायू अपने पिता के व्यस्त जीवन से अलग होकर आलस्यपूर्ण शान्तिमय जीवन व्यतीत करने की इच्छा प्रकट करता है। 1 जनवरी 1520 को लमगान की यात्रा का वर्णन करते हुए बाबर लिखता है "सोमवार को हम लोग लमगान की सैर के उद्देश्य से रवाना हुए। मुझे आशा थी कि हुमायू हमारे साथ चलेगा किन्तु जब ऐसा ज्ञात हुआ कि वह ठहरना चाहता है तो कूरा दर्रे से उसे वापस जाने की अनुमति दे दी गयी।'[2]

मध्य युग में बाल्यावस्था से ही राजकुमारों को शासन की शिक्षा दी जाती थी। हुमायू को भी इसी तरह की शिक्षा दी गयी। 1520 ई० में बाबर के चाचा सुल्तान महमूद मिर्जा के पुत्र मिर्जा खा की मृत्यु हो गयी। उसका पुत्र सुलेमान नाबालिग था। मिर्जा खा बदख्शा का शासक था। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र काबुल लाया गया और बाबर के पुत्रों के साथ उसकी शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया गया। बदख्शा के निवासियों ने सुलेमान की नाबालिगी के काल में बाबर से वहा का शासन प्रबन्ध करने की प्रार्थना की। इसके परिणामस्वरूप बाबर ने हुमायू को बदख्शा का गवर्नर नियुक्त किया।[3] माता और पिता हुमायू को नये पद

1 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 417।

2 वही, पृ० 421।

3 श्रीमती बेवरिज ने गुलबदन बेगम के हुमायूनामा के अंग्रेजी अनुवाद में (पृ० 92 93) यह मत प्रकट किया है कि हुमायू को नियुक्त करने में बाबर के सकोच का कारण उसकी अल्पायु थी। श्रीमती बेवरिज का यह मत सत्य प्रतीत नही होता क्योंकि मध्य युग में हुमायू से कम अवस्था के राजकुमारों को भी उत्तरदायित्व का पद दिया जाता था। हिन्दाल 11 या 12 वर्ष की अवस्था में बदख्शा का तथा कामरान 15 वर्ष की अवस्था में काबुल का गवर्नर नियुक्त हुआ था। अस्करी ने घाघरा के युद्ध में 13 वर्ष की अवस्था में सेना के एक भाग का नेतृत्व किया था। हुमायू की अवस्था इस समय लगभग तेरह वर्ष की थी। बाबर को सकोच कदाचित् इस कारण था कि बदख्शा पर सुलेमान का दावा हुमायू से अधिक था। किन्तु बदख्शा से एक निमन्त्रण पत्र आया जिसमें लिखा था कि 'मिर्जा खा की मृत्यु हो गयी है। मिर्जा सुलेमान अभी लडका है। ऊजबेक निकट है। विचार करें कि कही बदख्शा शत्रु के हाथ में न चला जाए। (हुमायू-नामा, गुलबदन, बेवरिज, पृ० 92)। इस पत्र को प्राप्त करने के उपरान्त बाबर ने तत्काल निर्णय कर हुमायू को वहा भेज दिया।

पर आसीन करने के लिए उसे साथ लेकर बदख्शा गये और उसे पद सम्हालने का काय सौपकर काबुल लौट आये।[1]

1523 से 1529 तक हुमायू बदख्शा का शासक रहा। इस बीच भारत पर आक्रमण के समय (नवम्बर दिसम्बर 1525) वह बाबर के साथ भारत आया। पुन खनुवा (खानवा) के युद्ध के पश्चात् वह बदख्शा भेजा गया (1527)।1529 मे वह पुन भारत लौट आया। वास्तविक रूप मे बदख्शा का शासन उसके परामशदाताओ तथा प्रतिनिधियो के हाथ म था। ऊजवेक लोग बराबर बदख्शा मे कठिनाइया उपस्थित करते रहते थे। बाबर बदख्शा को बहुत महत्वपूण समझता था। इम कारण वह सदा उस पर अपनी दष्टि रखता था। इस तरह हुमायू को बदख्शा के शासन मे बाबर का परामश और सहयोग सदा प्राप्त रहा।[2]

भारत पर आक्रमण

बाबर भारत पर आक्रमण करने के लिए तयारी कर रहा था। चौथे आक्रमण के पश्चात उसने समझ लिया कि उसे अपने ऊपर निभर रहकर आक्रमण करना होगा। उसन अपनी सेनाए सगठित की तथा हुमायू को भी बुलाया। भारत की तरफ आगे बढने के पूव उसने बदख्शा के शासन का भी प्रबन्ध किया। उसने हुमायू को आदेश भेजा कि वह एक सेना लेकर उसकी सहायता के लिए निश्चित समय पर बागवफा मे पहुच जाए। बाबर अपनी आत्मकथा मे लिखता है कि उसे हुमायू की प्रतीक्षा करनी पडी, क्योकि वह धीरे धीरे आ रहा था। 17 नवम्बर 1525 को बाबर ने काबुल से प्रस्थान किया। उसे आशा थी कि हुमायू निश्चित दिन तक अवश्य ही आ जाएगा, किन्तु वह उस दिन भी नही पहुचा और बाबर को हुमायू की प्रतीक्षा करनी पडी। जब हुमायू बाबर से मिला तो बाबर उस पर नाराज

---

1 माहम के साथ बाबर की बदख्शा यात्रा केवल पुत्र प्रेम के कारण न थी। बाबर ने वहा पहुचकर स्थिति का अध्ययन किया तथा उसे वहा का प्रबन्ध करने मे सुविधा भी हुई। बाबर की उपस्थिति का प्रभाव वहा के निवासियो पर पडना स्वाभाविक था। हुमायू के साथ उसके अधिकार मे एक बडी सेना रखी गयी जिसमे बैरम खा भी था जो भविष्य मे अकबर के राज्यकाल मे उसका प्रधान मन्त्री बना।

2 हुमायू के बदख्शा के शासन का पूण ज्ञान हमे प्राप्त नही है। निश्चयपूवक केवल इतना ही कहा जा सकता है कि इस बीच वहा शान्ति रही तथा कोई विशेष महत्वपूण घटना नही हुई। (डा० ईश्वरी प्रसाद हुमायू, पृ० 7)

हुआ और उसने उसे उसकी इस सुस्ती के लिए डाटा। वह अपनी आत्मकथा मे लिखता है "शनिवार (25 नवम्बर 1525) को हमने बागवफा मे पडाव डाला। कुछ दिन तक हम लोग हुमायू तथा उस ओर की सेना की प्रतीक्षा मे बागवफा मे ठहरे रहे। हुमायू के निश्चित अवधि मे अधिक ठहर जाने के कारण मैंने क्रोध प्रदर्शित करते हुए कठोर भाषा मे पत्र लिखकर उसके पास भिजवाया। रविवार 17 सफर (3 दिसम्बर) को प्रातःकाल के उपरान्त हुमायू उपस्थित हुआ। उसके विलम्ब कर देने के कारण मैंने उसे बहुत डाटा फटकारा।"[1]

हुमायू बाबर की आज्ञानुसार समय से क्यों नहीं पहुचा? कुछ विद्वान इस विलम्ब का कारण परिस्थितिया बताते है। इसके विपरीत दूसरे उसकी आलोचना करते है तथा उसकी चारित्रिक दुर्बलता को इसका कारण मानते हैं। हुमायू के पक्ष मे कहा गया है कि हुमायू के पास समय कम था। उसे बाबर का आदेश जिल हिज्जा के महीने मे मिला तथा उसे बागवफा मे मुहर्रम महीने मे पहुचना था। इस तरह उसके पास केवल एक महीने का समय था। इस बीच मे सेना एकत्र कर उस स्थान पर पहुचना सम्भव नहीं था। सैनिक तैयारियों मे समय लगता है तथा बाबर ने यद्यपि मुहर्रम मास मे बागेवफा पहुचने की आशा की थी, किन्तु वह 9 सफर (25 नवम्बर) को पहुच सका और हुमायू 3 दिसम्बर को। इस तरह बाबर हुमायू के पहुचने के लगभग एक सप्ताह पूर्व ही वहा पहुच सका। उसे (हुमायू) बदख्शा के सैनिकों को इस यात्रा के लिए तैयार करने मे, उन्हे समझाने मे समय लगा होगा, क्योंकि वे लोग अनिश्चित स्थान मे बहुत समय के लिए जाने को तैयार नहीं थे।[2]

डॉ० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार, "कदाचित् यह अभियान हुमायू की रुचि के अनुकूल नहीं था। उसे बाबर के इस अभियान की सफलता की आशा नहीं थी अथवा कुछ समय स्वतन्त्र शासन करने के पश्चात् ऐसे व्यक्तियों के अधीन कार्य करना उसे रुचिकर न प्रतीत हुआ हो, इसकी हम कल्पना कर सकते है। उसकी

1 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 447।

2 बाबर को बागेवफा से प्रस्थान करने मे एक मास का विलम्ब करना पडा। कुछ हस्तलिखित ग्रन्थों मे हुमायू की एक टिप्पणी मिलती है 'हमारा प्रस्थान आशुरा (10 मुहर्रम) के उपरान्त निश्चय हुआ था। हम लोग 10 सफर के बाद पहुचे। विलम्ब करना आवश्यक था। बाबर के पत्र सूचना प्राप्त करने के लिए थे। उत्तर मे निवेदन किया गया कि बदख्शा की सेना की तैयारी मे देर हो गयी। यदि यह दास अपने पिता की कृपा पर भरोसा करते हुए और अधिक विलम्ब करता तो दास का पिता और दुखी होता। बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 447, टिप्पणी 3।

अवस्था इस समय 17 वर्ष की थी, जब राजत्व का आनन्द लेने पर भी अपनी आत्मचेतनावस्था मे वह बालक ही था।"[1]

यदि हुमायू के बाद के चरित्र को भी ध्यान मे रखा जाए तो ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ से ही उसमें आंशिक रूप से उत्तरदायित्वहीनता तथा आलस्य था। कुछ ही मास पश्चात् उसने आगरे का खजाना लूटा तथा बाद मे कई महत्वपूर्ण अवसरों पर (जैसे बगाल तथा गुजरात के अभियानों मे) उसका आलस्य दोष स्पष्ट हो जाता है। यदि उसके पास समय की कमी होती अथवा सैनिकों को भर्ती करने तथा समझाने के कारण समय लगता तो उसने अपने उत्तर में बाबर को अपनी सफाई दी होती और बाबर ने अपनी आत्मकथा मे इसका उल्लेख अवश्य किया होता। बाबर हुमायू के पहुचने के केवल एक सप्ताह पूर्व ही क्यो पहुच सका, इसका उत्तर स्पष्ट है कि उसे हुमायू की गतिविधि का ज्ञान था। इस कारण वह भी धीरे-धीरे यात्रा कर रहा था जिससे हुमायू से उसकी मुलाकात हो जाए।

भारत पर आक्रमण मे हुमायू को भी एक प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ। 26 फरवरी 1526 को हुमायू ने हिसार फिरोजा के शिकदार हामिद खा के विरुद्ध आक्रमण किया। हुमायू की सहायता के लिए ख्वाजा कला, हिन्दू बेग, सुल्तान मुहम्मद इत्यादि उमरा भी थे। हुमायू की सेना को देखकर अफगान भाग गये। सेना ने हिसार फिरोजा पर अधिकार कर लिया।[2] हुमायू को लगभग सौ युद्ध-बन्दी तथा सात-आठ हाथी लूट म प्राप्त हुए। भेंट लेकर वह बाबर के सामने उपस्थित हुआ। सभी बन्दी बाबर की आज्ञा से मार डाले गये। इससे लोगो मे आतक छा गया। बाबर हुमायू की इस विजय से बहुत प्रसन्न हुआ। वह अपनी आत्मकथा मे लिखता है कि "यह हुमायू का प्रथम युद्ध तथा पहला अभियान था। यह सब भविष्य की सफलता के लिए बहुत ही शुभसूचक था।"[3] प्रसन्न होकर बाबर ने हुमायू को एक करोड टनके[4] तथा हिसार फिरोजा की जागीर जिसकी आमदनी

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 10।

2 हुमायू के साथ भेजे गये उमरा बाबर के प्रमुख अमीरो मे से थे। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि हुमायू का यह नेतृत्व केवल नाम मात्र का था। ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 14।

3 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 466।

4 ये टनके चादी के थे अथवा ताबे के यह निश्चित रूप से नही कहा जा सकता। अर्सकिन के अनुसार उनका मूल्य ढाई लाख रुपये के बराबर था। अर्सकिन, 1, पृ० 345।

लगभग एक करोड वार्षिक थी, पुरस्कारस्वरूप प्रदान की ।[1]

यहा से बाबर की सेना शाहाबाद पहुची । यहा हुमायू ने प्रथम बार उम्र में दाढी बनवाई । चगताई तुर्कों में यह अवसर बड़े धूमधाम से मनाया जाता था । किन्तु इस समय युद्ध के मैदान में यह सम्भव न था । इस कारण यह उत्सव साधारण रूप में ही मनाया गया । उसी समय अफगानों के पानीपत के मैदान की तरफ बढने के समाचार प्राप्त हुए ।

पानीपत के युद्ध मे

पानीपत के युद्ध में हुमायू दाहिने आन्तरिक चक्र (राइट इनर विंग) का सेनापति था। उसके साथ ख्वाजा कलां और हिन्दू बेग जैसे अनुभवी सरदार भी थे। युद्ध में पहला आक्रमण इसी चक्र (विंग) के ऊपर हुआ जिसमें हुमायू ने योग्यता दिखाई।[2] युद्ध के पश्चात बाबर द्वारा उसे और भी उत्तरदायित्व का भार सौंपा जाना इस बात का प्रमाण है।[3]

आगरा मे

पानीपत के युद्ध के पश्चत् हुमायू को उसी दिन यह आदेश देकर आगरा भेजा गया कि वह मृत सुल्तान इब्राहीम लोदी की राजधानी तथा उसके कोष पर अधिकार कर ले।[4] आगरा के दुर्ग में सोना तथा बहुमूल्य रत्न सुरक्षित थे । जिस समय हुमायू वहां पहुचा उस समय आगरा में बहुत-से अफगान, भारतीय सैनिक तथा उनके परिवारों ने किले में शरण ली थी । इनमें इब्राहीम लोदी तथा ग्वालियर के राजा विक्रमादित्य[5] का परिवार भी था। यहा हुमायू के समक्ष तीन प्रमुख समस्याए थी

---

1 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 466।

2 विलियम्स, पृ० 131 37।

3 ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 16।

4 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 475।

5 डॉ० बनर्जी अपनी पुस्तक हुमायू बादशाह (भाग 1, पृ० 5) में लिखते हैं कि हुमायू ने ग्वालियर के राजा विक्रम को पराजित किया तथा राजा युद्ध भूमि में मारा गया । डा० बनर्जी का यह मत सत्य नही है । बाबर अपनी आत्मकथा में स्पष्ट रूप से लिखता है कि इब्राहीम की पराजय के समय पानीपत के युद्ध में ग्वालियर का राजा विक्रमाजीत भी मारा गया

(1) दुग मे स्थित लागो मे विश्वास पैदा करना जिससे वे धन बाहर न भेजे तथा मुगलो का साथ दें।

(2) दुग मे छिपे अफगान उमरा दुग के धन को लूटकर भागना चाहते थे। इसकी सतकता से निगरानी करना आवश्यक था।

(3) मुगल सैनिक भी विजय के उल्लास म जो भी मिले उसे लूटना चाहते थे। उन्हे नियन्त्रित रखना आवश्यक था।

हुमायू ने आगरा को घेर लिया। उसके प्रत्येक माग पर उसने अपने सैनिक बैठा दिये, जिससे दुग से कोई भी व्यक्ति या धन बाहर न जा सके और सतकता से बाहर प्रतीक्षा करता रहा। विक्रमादित्य के परिवार के लोग तथा सम्बन्धी आगरा छोडकर भाग जाना चाहते थे। जिस समय वे निकलकर भाग रहे थे, हुमायू के माग-रक्षको द्वारा रोक लिये गये। हुमायू की आज्ञा से वे लूटे नही गये। इन लोगो ने हुमायू के सद्व्यवहार के कारण तथा उसे प्रसन्न करने के लिए उसे बहुत से अमूल्य रत्न भेंट किये। इसी मे 'कोहेनूर' भी था।[1]

पानीपत के युद्ध के दो सप्ताह पश्चात् 10 मई को बाबर आगरा के निकट पहुचा। वहा हुमायू ने उसका स्वागत किया और 'कोहेनूर' अर्पित किया, जिसे उसने पालिश कराकर और सुन्दर बनवा लिया था। बाबर ने उसे हुमायू को लौटा दिया। अपनी आत्मकथा मे बाबर इस हीरे के विषय मे वणन करते हुए लिखता है "प्रसिद्ध है कि इसका मूल्य समस्त ससार के ढाई दिन के भोजन के व्यय के बराबर आका जाता था। वह लगभग आठ मिस्काल के बराबर था।"[2]

बाबर के आगरा के निकट पहुचते ही आगरा के दुगरक्षक ने समपण कर

था तथा आगरा मे विक्रमाजीत की सन्तान तथा परिवार वाले थे। वह आगे लिखता है—विक्रमाजीत की सन्तान एव परिवार वाले इब्राहीम की पराजय के समय आगरा मे थे। जब हुमायू आगरा पहुचा तो व भागने का प्रयत्न करने लगे, किन्तु हुमायू द्वारा मार्गों की रक्षा हेतु आदमी नियुक्त कर देने के कारण उनका भागना सम्भव न हो सका। हुमायू ने स्वय उन्हे भागने न दिया। उन लोगो ने हुमायू को अपनी इच्छा से अत्यधिक जवाहरात एव बहुमूल्य वस्तुए दी जिनमे वह प्रसिद्ध हीरा भी था जिसे अलाउद्दीन लाया होगा। प्रसिद्ध है कि इसका मूल्य समस्त ससार के ढाई दिन के भोजन के व्यय के बराबर आका जाता था। यह लगभग आठ मिस्काल के बराबर था। बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 477, फिरिश्ता ब्रिग्स, 2, पृ० 46।

1 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 477।

2 वही। भारतीय तौल से साढे तीन तोला।

कर उसने बाबर को आराम दिया। यद्यपि अफगानो को पूर्णतया पराजित करने मे उसे सफलता नही मिली फिर भी उसने उनका दर्प चूर्ण कर उन्हे उन प्रदेशो से भगा दिया जहा उन्होने गडबडी मचा रखी थी।[1]

इस समय राणा सागा अपनी सेना तथा सहयोगियो के साथ आगे बढ रहा था। हुमायू की सेना मे बदख्शा के सिपाही अधिक थे। वे सभी अपने देश को लौटना चाहते थे। हुमायू ने भी लौटने की इच्छा प्रकट की। डाक्टर ईश्वरी प्रसाद के अनुसार हुमायू युद्ध से थक चुका था। उसकी अवस्था बहुत कम थी। उसमे अभी पूर्ण शारीरिक बल नही था भारतीय गर्म जलवायु उसे रुचिकर नही थी तथा उसके अधिकतर सिपाही बदख्शा के थे। इन कारणो से हुमायू अन्य सैनिको की भाति अनिच्छापूर्वक राणा सागा के विरुद्ध युद्ध मे आगे बढा।[2] कारण जो भी हो हुमायू का इस प्रकार कठिन परिस्थितियो मे विरक्त होना उसके चरित्र की कमजोरी का द्योतक है। योग्यता की निशानी तो यह थी कि वह इस परिस्थिति मे उत्साह दिखाता तथा अन्य लोगो को भी प्रोत्साहित कर युद्ध के लिए प्रेरित करता।

आगरा मे कुछ दिन रहने के पश्चात बाबर के साथ हुमायू राणा सागा से युद्ध करने के लिए आगे बढा। मार्ग का वर्णन करते हुए बाबर लिखता है कि मार्ग में सभाए हुआ करती थी और उसमे कभी-कभी हुमायू भी शराब पीता था।[3]

खानवा का युद्ध

राणा सागा के साथ बाबर की दूसरी लडाई खानवा के मैदान मे हुई जो फतेहपुर सीकरी से लगभग 16 किलोमीटर पर है। इस युद्ध मे हुमायू सेना के दायें पक्ष (राइट विंग) का सेनापति था। राणा सागा पराजित हुआ तथा उसकी सेना तितर बितर हो गयी।[4]

दिल्ली कोष की लूट

राजपूतो की पराजय के पश्चात् मुगल सेना अलवर की तरफ बढी और

---

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायू पृ० 18।

2 वही, पृ० 19।

3 बाबरनामा, बेवरिज, प० 545।

4 इस युद्ध के वर्णन के लिए देखिए बाबरनामा, बेवरिज पृ० 550 74 विलियम्स पृ० 146 56 शर्मा मेवाड एण्ड दि मुगल एम्परस 33-40, सरकार मिलिटरी हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, प० 56 61।

उसने दुग पर अधिकार कर लिया। इस दुग का सम्पूण कोष बाबर ने हुमायू को पारितोषिक के रूप मे दे दिया। इसी बीच बदख्शा मे मिर्जा खा की मृत्यु से उत्पन्न परिस्थितिया के कारण हुमायू को बदख्शा जाने की आज्ञा दी गयी। हुमायू बदख्शा का प्रशासक रह चुका था, इस कारण आशा थी कि वह परिस्थितियो को सभाल लेगा। रविवार 16 अप्रैल 1527 को अपने पिता से आज्ञा प्राप्त कर तथा पारितोषिक मे प्राप्त धन, वस्त्र इत्यादि लेकर हुमायू बदख्शा के लिए रवाना हुआ। माग मे वह दिल्ली से गुजरा। यहा उसने कुछ घरो को, जिनमे राजकीय कोष रखा हुआ था, तोड डाला तथा उनमे सचित धन को अपने अधिकार म कर लिया। बाबर हुमायू के इस व्यवहार से बहुत नाराज हुआ तथा उसे एक कडा पत्र लिखा।[1]

हुमायू ने यह काय क्यो किया ? यह बताना बहुत ही कठिन है। यह स्पष्ट है कि उसे धन की कमी न थी। भिन्न भिन्न स्थानो पर बाबर ने उसे इतना पारितोषिक दिया था कि धन की कमी की सम्भावना ही नही थी। डा० ईश्वरी प्रसाद लिखते है "ऐसा प्रतीत होता है कि हुमायू, बाबर के और बहुत से सेनापतिया के साथ, भारत के अभियान को केवल एक लूट का साधन समझता था और उसे भी यह आशा थी कि शीघ्र ही इसका अत हो जाएगा।" यह मत बहुत अशो मे सत्य है, फिर भी राज्य के उत्तराधिकारी द्वारा राजसी सम्पत्ति का लूटा जाना ठीक नही प्रतीत होता। निश्चय ही 'इससे हुमायू की बुद्धि की कमी प्रकट होती है। कदाचित वह अपने लालची विदेशी सनिको पर नियन्त्रण नही रख सका था। इससे उसकी उत्तरदायित्वहीनता भी प्रकट होती है।[3]

---

1 "इसी बीच यह समाचार प्राप्त हुआ कि हुमायू ने दिल्ली पहुचकर वहा से बहुत-से खजाना को खुलवाया और बिना आज्ञा उनम से कुछ पर अधिकार जमा लिया। मुझे उससे इस बात की तनिक भी आशा नहा थी। मुझे इसस बडा दु ख हुआ। मैंने उसे परामश देत हुए कठोर पत्र लिखकर भेजा।" बाबरनामा, बेवरिज प० 583।

2 ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, प० 20।

3 हुमायू के इस उच्छृखल काय से मुगल अमीरो मे भी असन्तोष फैला। कदाचित् प्रधान मन्त्री उसके इस काय से विशेषअप्रसन्न हुआ। बाबर की मृत्यु के पश्चात हुमायू के स्थान पर महदी ख्वाजा को गद्दी पर बठाने का विचार उसके मन की उपज थी, जो कदाचित् हुमायू के ऐसे कार्यों के परिणामस्वरूप हुई।

एक और प्रश्न विचारणीय है इस समय बाबर तथा हुमायू का पारस्परिक सम्बन्ध कैसा था ? दो परस्पर विरोधी घटनाए हुमायू के

बदख्शा मे

दिल्ली के कोष को लूटने के पश्चात हुमायू बदख्शा चला गया(अगस्त सितम्बर 1527)। यहा वह लगभग दो वर्ष (1527 29 ई०) तक रहा।[1] इस समय के उसके कार्यों का विशेष ज्ञान हम प्राप्त नही है। डा० बनर्जी लिखते है कि इस बीच उसने शान्तिमय सरकार की स्थापना करने का प्रयत्न किया, किन्तु समय कम रहने के कारण वहा उसे बहुत अधिक सफलता प्राप्त न हो सकी।[2] डा० ईश्वरी प्रसाद भी इस बात से सहमत हैं कि बदख्शा मे उसके चरित्र और व्यवहार म शक्ति और उत्साह का अभाव था, किन्तु वह वहा की प्रजा म लोकप्रिय था जिसस उसे यहा विशेष कठिनाई नही हुई।[3]

बदख्शा पहुचकर हुमायू ने देखा कि यहा की पुरानी समस्याए उसकी तथा बाबर की अनुपस्थिति मे और भी जटिल हो गयी थी। ऊजबेक अब भी शक्तिशाली थे। उस समय बुखारा मे उबैदुल्ला खा, समरकन्द म कुचुम सुल्तान तथा अबू सईद, हिसार मे हमजा सुल्तान के पुत्र, तथा बल्ख म कीतीन करा सुल्तान सत्तारूढ थे।[4] खुरासान ऊजबेका तथा ईरान के मध्य सघर्ष का विषय बना हुआ था। ईरान का सुल्तान, शाहतहमास्प, अभी बालक था। इस कारण ऊजबेक उबदुल्ला खा के योग्य नेतत्व मे अधिक शक्तिशाली थे। 1527 मे उबदुल्ला खा ने मर्व, मशहद अस्तराबाद तथा उसके अधीनस्थ स्थानो पर अधिकार कर लिया।[5] ईरान के शाह ने इसके विरुद्ध जून 1528 मे ऊजबेको के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की। उबदुल्ला ने भी शक्ति एकत्र की। जाम के युद्ध मे (26 सितम्बर 1528) शाह ने ऊजबेको को बुरी तरह परास्त किया। बडी कठिनाई से उबदुल्ला खा तथा

सम्मुख आती है। एक तरफ बाबर बार-बार हुमायू को पारितोषिक देकर प्रसन्न करना चाहता है दूसरी तरफ हुमायू बाबर से दूर होना चाहता है। खानवा के युद्ध के पश्चात तो वह भागकर बदख्शा जाना चाहता था। पुन वहा से भागकर भारत आया तथा यहा से पुन उधर जाना नही चाहता था। क्या इससे यह नही प्रतीत होता कि पिता-पुत्र का सम्बन्ध अच्छा नही था?

1 हुमायू के आगरा वापस आने का वर्णन दूसरे अध्याय म किया गया है।
2 बनर्जी, हुमायू, 1 पृ० 8।
3 ईश्वरी प्रसाद हुमायू पृ० 21।
4 अहसानत् तवारीख, 1 पृ० 190।
5 वही, पृ० 200।

की। इस पत्र मे बाबर न उसे भाइयो के प्रति उत्तम व्यवहार रखने को कहा तथा हुमायू और कामरान के भागो के विभाजन मे छ तथा पाच का अनुपात निश्चित किया। इस तरह इस पत्र से पिता का प्रेम, हुमायू का चरित्र तथा बदख्शा के भागो मे रुचि का पता चलता है।[1]

डॉ० ईश्वरी प्रसाद ने इस पत्र से यह अनुमान लगाया है कि इस समय हुमायू अवसाद की अवस्था मे था। उसकी तबीयत कुछ गिरी गिरी-सी रहती थी। उनका यह अनुमान है कि इसी समय हुमायू ने अफीम खाना भी प्रारम्भ कर

---

1 बाबर का हुमायू के नाम पत्र—

हुमायू, जिसे देखन की मेरी बडी अभिलाषा है, के प्रति शुभकामनाओ के बाद पहली बात इस प्रकार है

उस ओर तथा इस ओर की घटनाओ का ठीक-ठीक वणन गीना तथा बीआन शेख द्वारा लाये हुए पत्रो से, जो वे सोमवार 10 रबी उल-अव्वल (22 नवम्बर 1528) को लाये, मिल गया।

छद

ईश्वर को धन्य है कि तेरे एक पुत्र का जन्म हुआ,
तेरे लिए वह पुत्र और मेरे लिए वह हार्दिक प्रसन्नता का विषय।
महान ईश्वर तुझे और मुझे ऐसे ही सुखद समाचार पहुचाता रहे।
एवमस्तु ! हे लोक तथा परलोक के स्वामी।

तू कहता है कि तूने उसका नाम अलअमान रखा है। ईश्वर उसे सौभाग्यशाली बनाये। तूने स्वय अलअमान लिखा है किन्तु तूने इस बात पर ध्यान नही दिया कि साधारण लोग अधिकाशत अलआमा अथवा अलआमान बोलते हैं। इसके अतिरिक्त नामो मे अल का विरले ही प्रयोग होता है।

मगलवार 11 (23 नवम्बर) को यह झूठी अफवाह सुनी गयी कि बल्ख वाले आमन्त्रित हुए थे और कुरबान को बल्ख ले जा रहे थे।

कामरान तथा काबुल के बेगो को आदेश दे दिया गया है कि वे तुमसे मिलें। उनके पहुच जाने के उपरान्त हिसार समरकन्द, हरी अथवा जिस दिशा मे भाग्य तेरा साथ दे तू आक्रमण कर। सम्भव है कि ईश्वर की अनुकम्पा द्वारा तू शत्रुओ को परास्त कर सके और विभिन्न स्थानो पर अधिकार प्राप्त कर ले जिसके फलस्वरूप मित्रो को हर्ष एव शत्रुओ को शोक का अवसर प्राप्त हो। ईश्वर को धन्य है कि अब तुम लोगो के लिए प्राणो को खतरे मे डालने तथा तलवार चलाने का अवसर आ गया है जिस काम का अवसर मिल जाए उसकी उपेक्षा मत कर। बादशाहों के लिए एकान्तवास का आलसी जीवन उचित नहीं।

दिया था और अगले चार-पाच वर्षों मे अफीम ने पूणतया उसके ऊपर अधिकार कर लिया जो आगे चलकर उसके लिए बडा हानिकारक सिद्ध हुआ। विद्वान् लेखक का मत है कि हुमायू ने अपने अकेलेपन को (विशेषत भारतीय अभियानो के

वह ससार को विजय करता है जो शीघ्र बढता है,
राज्य देर करने से साथ नही देता।
विवाह के लिए समस्त काय रुक जाते हैं,
केवल बादशाही के काय नही।

यदि ईश्वर की कृपा से बल्ख तथा हिसार के राज्य विजय हो जाए तो तू अपने आदमियो को हिसार मे नियुक्त कर दे और कामरान के आदमी बल्ख मे। यदि समरकन्द पर भी विजय हो जाए तो उसे तू अपनी राजधानी बना ले। यदि ईश्वर ने चाहा तो मैं हिसार को खालसे मे सम्मिलित कर लूगा। यदि कामरान का विचार हो कि बल्ख उसके लिए कम है तो इसकी सूचना मुझे दे। यदि ईश्वर ने चाहा तो अन्य राज्यो से उसकी कमी की पूर्ति कर दूगा।

जैसा कि तुझे ज्ञात है सवदा यही नियम है कि यदि तेरे अधीन छह भाग रहे ह तो कामरान के अधीन पाच। यह नियम स्थायी रूप से चल रहा है। तू इसमे परिवतन मत कर।

अपने छोटे भाई के साथ उत्तम व्यवहार कर। बडा को सहनशील होना चाहिए। मुझे आशा है जहा तक तेरा सम्बन्ध है तू उसके साथ सदव्यवहार बनाये रखेगा। जो तेज तथा चतुर युवक हो चुका हो वह तेरे प्रति उचित निष्ठा एव सम्मान प्रदर्शित करने मे कमी न करेगा।

तेरी ओर से बहुत कम बातें आती हैं। पिछले दो-तीन वर्षों से तेरे पास से कोई व्यक्ति नही आया है। जिस आदमी को मैंने तेरे पास भेजा वह तेरे पास से एक वष से अधिक समय मे वापस आया। क्या यह बात ठीक है?

तू अपने पत्रो म 'एकान्तवास' 'एकान्तवास' की चर्चा करता है। एकान्तवास बादशाही का बहुत बडा दोष है। तूने मेरे आदेशानुसार मुझे एक पत्र लिखा है किन्तु तूने उसे दुहराया क्या नही? यदि तू उसे पुन पढता तो फिर उसमे ऐसी भूलें न करता। यद्यपि तेरा पत्र कठिनाई के उपरान्त पढ लिया जाता है किन्तु यह बडा भ्रमात्मक है। तेरा अक्षर विन्यास यद्यपि बुरा नही है किन्तु अधिक शुद्ध भी नही है। तेरे पत्रो के अस्पष्ट होने का कारण यह है कि वे जटिल होते हैं। भविष्य म तू उन्हे जटिल बनाये बिना लिख और सरल एव स्पष्ट शब्दो का प्रयोग कर। इस तरह तुझे तथा तेरे पत्र पढ़ने वालो को कम कष्ट होगा।

पश्चात जो अकेलापन आ गया था) दूर करने के लिए अफीम खाना प्रारम्भ किया था।[1]

यह कहना कि हुमायू ने अकेलेपन के कारण अफीम खाना प्रारम्भ किया, अधिक सत्य नही प्रतीत होता। वास्तव म यह हुमायू के कुछ मित्रा की मित्रता की देन थी। मिर्जा हैदर के अनुसार हुमायू न कुछ दुष्चरित्र व्यक्तिया के कारण कुछ आदतें डाल ली जिनमे अफीम भी थी।[2]

हुमायू का आगरा आगमन

उपर्युक्त अभियान के बाद हुमायू लगभग आठ महीन बदख्शा मे रहा (935 हिजरी सफर से शव्वाल तक)। 6 जून 1529 को हिन्दाल के गुरु मीर फखअली को शासन का काय सौपकर हुमायू आगरा रवाना हुआ। दूसर दिन (7 जून 1529) वह काबुल पहुचा। काबुल म अस्करी, हिन्दाल तथा कामरान से (जो उसी दिन काबुल पहुचा था) उसकी भेंट हुई। तीना भाइयों मे परामश हुआ। इसके परिणामस्वरूप काबुल तथा कन्धार का शासन कामरान को तथा बदख्शा का हिन्दाल को सौपकर हुमायू आगरा रवाना हुआ। जून के अन्त तथा जुलाई के प्रारम्भ मे (27 जून 6 जुलाई 1529) हुमायू आगरा पहुचा। इसी बीच 26 जून को हुमायू की माता माहम आगरा पहुची। काबुल से आगरा पहुचने म उसन पाच मास से अधिक लगाये।[3] जिस समय हुमायू आगरा पहुचा उस समय माहम तथा बाबर बातें कर रहे थे।[4] उसके आगमन से दोनो को प्रसन्नता हुई। बाबर लिखता है कि इस अवसर पर हुमायू तथा माहम ने उपहार प्रस्तुत किये।[5]

तू अब एक महान काय हेतु प्रस्थान करन वाला है। योग्य तथा अनुभवी बगा स परामश करके काय किया कर। (बाबरनामा, बेवरिज पृ० 624 27)।

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायू पृ० 22।

2 तारीखे रशीदी, ए० तथा रास, पृ० 469।

3 माहम बेगम 21 जनवरी 1529 को काबुल से रवाना हुई तथा 26 जून 1529 को आगरा पहुची (बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 686 87)।

4 अकबरनामा भाग 1, पृ० 114 15, बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 687।

5 वही, वही विलियम्स, ऐन एम्पायर बिल्डर, पृ० 172 73।

कुछ दिन पश्चात बाबर ने हुमायू से पुन बदख्शा जाने के लिए कहा किन्तु हुमायू इतने दूर जाने के लिए तैयार न हुआ। इसके पश्चात् बाबर ने प्रधान मन्त्री ख्वाजा निजामुद्दीन खलीफा को बदख्शा जाने के लिए कहा। किन्तु उसने भी अस्वीकार कर दिया।[1] कोई और उपाय न देख बाबर ने बदख्शा का प्रान्त वैस मिर्जा के पुत्र सुलेमान मिर्जा को दे दिया, यद्यपि बाबर ने खुत्बा तथा सिक्के का अधिकार अपने नाम मे रखा।[2] इस प्रान्त पर सुलेमान मिर्जा का पैतृक अधिकार भी था। इस तरह बाबर ने बदख्शा की समस्या को सुलझा दिया।

बदख्शा सुलेमान मिर्जा को देकर बाबर ने बुद्धिमानी का परिचय दिया। अमीरो के विरोध मे इतनी दूर से बदख्शा पर अधिकार रखना कठिन था। सुलेमान मिर्जा को राज्य तो प्राप्त हुआ, किन्तु उसे खुत्बा तथा सिक्के का अधिकार न मिलने स बाबर वैधानिक शासक बना रहा।

इस सम्बन्ध मे निम्नलिखित बाते ध्यान देने योग्य है

(1) हुमायू के पहुचने से बाबर को आश्चर्य हुआ। (2) माहम काबुल से धीरे धीरे आ रही थी। हुमायू इसके विपरीत काबुल से बहुत तेजी स आ रहा था। दोनो की मार्ग मे मुलाकात क्यो नहीं हुई? क्या माहम को हुमायू के आगरा पहुचने की सूचना नहीं थी? अथवा माहम जानबूझकर बाबर के पास बैठी थी जिससे यदि बाबर नाराज हो तो माहम उसे समझाकर हुमायू को माफी दिला दे। (3) हुमायू के पहुचने की खुशी मे बाबर ने दावत दी। या तो यह एक औपचारिक दावत थी अथवा माहम के कहने मे यह दावत दी गयी थी जिससे लोगो पर यह प्रभाव पडे कि बाबर हुमायू से प्रसन्न है।

1 डॉ० ईश्वरी प्रसाद ने खलीफा के अस्वीकार करने के दो कारण बताये हैं। प्रथम, वह वृद्धावस्था के कारण सेवा निवृत्ति की अवस्था मे पहुच गया था। शरीर मे वह इतना सामर्थ्य नहीं था कि बदख्शा जैसे कठिन प्रान्त का शासन सम्हाल सके। दूसरे बाबर के बिगडते स्वास्थ्य को देखकर वह उसके निकट रहना चाहता था। रशब्रुक विलियम्स का विचार है कि खलीफा महदी ख्वाजा को गद्दी पर बैठाना चाहता था इस कारण वह भारत नहीं छोडना चाहता था। (ईश्वरी प्रसाद, हुमायू पृ० 26, विलियम्स, पृ० 173-74)।

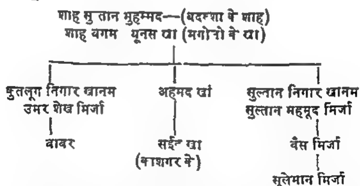
2 तारीखे रशीदी पृ० 203, अकबरनामा, 1, पृ० 115, बनर्जी हुमायू भाग 1, पृ० 12।

सुलेमान मिर्जा का अधिकार निम्नलिखित वंशवृक्ष से स्पष्ट हो जाता है

हुमायूं की अनुपस्थिति में बदख्शां

मिर्जा हिन्दाल जिल हिज्जा 935 हिजरी (अगस्त सितम्बर 1529) में बदख्शां पहुंचा। इस बीच फख्र अली के शासन से बदख्शां के अमीरों में असंतोष फैल गया। उन्होंने गद्दी के एक दूसरे वैध अधिकारी काशगर के सुल्तान सईद को आमन्त्रित किया। सुल्तान सईद ने उनके आमन्त्रण पर बदख्शां पर आक्रमण किया, किन्तु उसके पहुंचने के बारह दिन पूर्व हिन्दाल वहां पहुंच गया था। तीन मास 'किला-ए जफर' का घेरा डालने के पश्चात् सफलता की आशा न होने के कारण वह वापस लौट गया।

बदख्शां के अमीरों में असन्तोष के कई कारण थे। मीर फख्र अली एक साधारण मुगल अमीर था। बदख्शां के अमीरों का विचार था कि यह स्थान उनके योग्य नेता सुल्तान वैस को प्राप्त होना चाहिए था जिसने कुछ ही दिन पूर्व बाबर के पक्ष में ऊजबेकों से युद्ध कर मुगल सीमा को बढ़ाया था। इसके अतिरिक्त आगरा से शासित होने में कदाचित उन्हें मानहानि का अनुभव होता था। बदख्शां का वास्तविक उत्तराधिकारी मिर्जा सुलेमान अब बालिग हो गया था। ऐसी परिस्थिति में उनका विचार था कि उसे बदख्शां का शासन भार सम्हालने का अवसर मिलना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि मीर फख्र अली में योग्यता की भी कमी थी। इन्हीं कारणों से बदख्शां के अमीरों ने काशगर के सुल्तान सईद खां को निमन्त्रित किया था।[1]



1 सईद खां के पत्र में इस प्रकार निवेदन किया गया था
'हुमायूं मिर्जा हिन्दुस्तान चले गये हैं और इस प्रदेश को फख्र अली के हाथ में छोड़ दिया है जो ऊजबेकों का कदापि मुकाबला नहीं कर सकता अतः वह बदख्शां में शान्ति स्थापित न रख सकेगा। यदि (अमुक तिथि तक) खान आ जाएंगे तो बड़ा अच्छा है अन्यथा हमें

बदख्शा से भारत लौटने की समस्या

हुमायू के बदख्शा से लौटने के कारणो के विषय मे इतिहासकार एकमत नही हैं। हैदर मिर्जा स्पष्ट रूप म लिखता है कि बाबर ने हुमायू को बदख्शा से भारत इसलिए बुलवाया था जिससे यदि उसकी अचानक मत्यु हो जाए तो उसका एक पुत्र तथा उत्तराधिकारी उसके निकट रह।[1] हैदर मिर्जा उस समय बदख्शा म था। उसका सम्बन्ध सुलतान वैस मिर्जा, सुलेमान मिर्जा तथा बाबर से भी था। इस कारण स्थिति को समझने मे उसे सुविधा थी। हैदर मिर्जा के इस विचार का समथन तारीखे खानदान तैमूरिया, तारीखे अलफी तथा फिरिश्ता ने भी किया है।[2] इसके विपरीत अबुल फजल लिखता है कि हुमायू बाबर के "सम्मानित गोष्ठी के शौक से उससे मुलाकात करने के लिए रवाना हुआ।"[3] काबुल मे कामरान के पूछने पर हुमायू ने बतलाया कि बाबर से भेंट की इच्छा मुझे यहा से खीचे लिये जा रही है। अकबरनामा लिखते समय अबुल फजल के पास तारीखे रशीदी भी थी, तथा वह लिखता है कि मिर्जा हैदर न तारीखे रशीदी मे लिखा है कि 935 हिजरी (1528-29 ई०) मे जहा बानी गेती सितानी (बाबर) के बुलाने पर हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुआ और फख्र अली को बदख्शा मे नियुक्त कर दिया।"[4]

ऊजबेक लोग हडप कर लेंगे। यदि ऊजबेका न खान के पहुचने के पूव हम पर आक्रमण कर दिया तो हम (अमुक तारीख तक) अपन कदम न जमा सकेंग। हम आपसे सहायता के लिए आग्रह करते है। सम्भवत आपके द्वारा हमे मुक्ति प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त शाह बेगम के सम्बन्ध से, जो आपकी नानी है, बदख्शा आपका ही है। आपके अतिरिक्त कोई अन्य इसका अधिकारी नही (तारीखे रशीदी, प० 388 89)।

1 तारीखे रशीदी, पृ० 387, फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, प० 63।

2 खानदाने तैमूरिया के अनुसार—
"व हजरते जन्नत आशियानी हुमायू मिर्जा दरी साल अज बदख्शा व हिन्दुस्ता तलब फरमूदन्द व हिन्दाल मिर्जा व हुकूमते बदख्शा फरिस्तादन्द" अर्थात "बाबर न हुमायू मिर्जा को इसी साल बदख्शा से हिन्दुस्तान तलब किया और हिन्दाल मिजा को बदख्शा की हुकूमत पर भेजा।' तारीखे अलफी के अनुसार—
"पादशाह बाबर जन्नत आशियानी हुमायू मिर्जा रा दरी साल व हिन्दुस्तान तलब फरमूदन्द व हिन्दाल मिर्जा व हुकूमत बदख्शा फरिस्तादन्द।'

3 अकबरनामा, 1, प० 115।

4 वही।

माहम को सन्तोष प्राप्त हो।[1]

उत्तराधिकारी

हुमायू के स्वास्थ्य-लाभ करते ही बाबर न उसे अपना उत्तराधिकारी मनानीत किया। इसका वणन अहमद यादगार ने इस प्रकार किया है

"जाडे की एक रात्रि म बादशाह न एक प्याला पिया और किसी काय स हुमायू मिर्जा को बुलाया। जब वह उपस्थित हुआ तो गेती सितानी (बाबर) नशे मे होन के कारण तकिये पर सिर रखकर सो गये। शाहजादा उसी प्रकार हाथ बाधे खडा रहा। जब आधी रात को गती सितानी जागे तो उसे खडा देखकर पूछा कि तू कब आया? शाहजादे ने निवेदन किया कि 'जिस समय आपने मुझे बुलाया था।' बादशाह को याद आया और व बडे प्रसन्न हुए और उससे कहा कि 'यदि इश्वर तुझे राजसिंहासन और मुकुट प्र.ान कर ता अपने भाइयो की हत्या न करना और उन्ह क्षमा करते रहना।' शाहजादे ने भूमि पर सिर रखकर स्वीकार कर लिया। तदुपरान्त बादशाह न उसे 'वलि अहद' की उपाधि से सम्मानित किया और प्रसन्न करके विदा कर दिया। यही कारण था कि मिर्जा कामरान, मिर्जा अस्करी तथा हिन्दाल ने सैकडा प्रकार से धृष्टता की और युद्ध किया परन्तु बादशाह (हुमायू) विजय कर लेन के उपरान्त उनकी धृष्टता की तरफ ध्यान नही देता था और उनके उपस्थित होने पर वह उनके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करता था। उनके दुराचार का उनसे कोई बदला नही लेता था।[2]

कालिंजर का आक्रमण

इसी समय समाचार मिला कि कालिंजर के राजा न विद्रोह कर दिया है तथा उसने कालपी पर आक्रमण किया है। हुमायू न कालिंजर पर आक्रमण किया तथा वहा शान्ति स्थापित कर पुन सम्भल लौट गया।[3]

---

1 जरनल रायल एशियाटिक सोसाइटी 1926, पृ० 285 98, स्टडीज इन मेडिवल इण्डियन हिस्ट्री, प्रो० श्रीराम शर्मा का लेख, 'दि स्टोरी ऑफ बाबर्स डेथ', पृ० 158 63, गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 104 10।

2 अहमद यादगार, तारीखे शाही, विलियम्स, ऐन एम्पायर बिल्डर, पृ० 174।

3 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 105, अकबरनामा, 1, पृ० 117। कालिंजर म एक अभिलेख प्राप्त हुआ है जो इस प्रकार है

बाबर की मृत्यु

बाबर की बीमारी धीरे धीरे बढती गयी। कुछ ही महीनो मे उसकी दशा बहुत ही खराब हो गयी। मार्च-अप्रैल 1530 (रजब 936) को बाबर बीमार पडा था तथा (शव्वाल) जून जुलाई तक वह शयाग्रस्त रहा। अवस्था अधिक बिगडने पर उसने अपने पुत्र हुमायू को बुलवाया। हुमायू ने आकर देखा कि उसके पिता की अवस्था बहुत ही खराब है। इससे वह बहुत दुखी हुआ और दासो से कहने लगा कि एकबारगी इनका ऐसा हाल क्या हो गया ? वद्यो और हकीमो को बुलवाकर कहा कि मैं इनको स्वस्थ छोडकर गया था एकाएक यह क्या हो गया ?[1]

बीमारी की अवस्था मे बाबर पूछा करता था कि हिन्दाल कहा है ? वह कब आएगा ? हिन्दाल कितना बडा हुआ है ? इसी बीमारी की अवस्था मे बाबर ने अपनी दो पुत्रियो के विवाह किये—गुलरग बेगम का इसान तमूर सुल्तान से और गुलचेहरा बेगम का तुख्ताबुगा सुल्तान से।[2]

अपना अन्त समय देखकर बाबर ने अमीरो को बुलवाया जिसमे ख्वाजा खलीफा, तरदी बेग हिन्दू बेग और कम्बरे अली बेग प्रमुख थे। उनकी उपस्थिति मे उसने हुमायू को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया और कहा, "वर्षों से यह मेरी इच्छा थी कि हुमायू मिर्जा को बादशाही देकर मैं स्वतन्त्र जरश आबाफग मे एकान्तवास करू। ईश्वरी कृपा से वही हुआ। पर यह नही हुआ कि मैं स्वस्थ अवस्था म ऐसा करता। अब जब रुग्णावस्था मे पडा हू, मैं वसीयत करता हू कि हुमायू मेरा उत्तराधिकारी होगा और आप सब उसका साथ चाहने मे कमी न करें और उसके स्वामिभक्त रहे। एक हृदय और एक मन से आप सब उसकी तरफ रहेग और मुझे भरोसा है कि खुदा हुमायू को ऐसी बुद्धि देंगे कि वह मनुष्यो से अच्छा व्यवहार करेगा।[3] इतना कहने के पश्चात बाबर हुमायू की तरफ घूमा

मुहम्मद हुमायू पादशाह गाजी व तारीख सलख रजबुल मुरज्जब 936 हि०" अर्थात, "मुहम्मद बादशाह गाजी तिथि रजब महीने का अन्तिम दिन 936 हिजरी।'

इसम हुमायू अपने को पिता के जीवन काल मे ही बादशाह गाजी क नाम से सम्बोधित करता है। जनरल एशियाटिक सोसाइटी आफ बगाल, 1848 पृ० 186।

1 गुलबदन हुमायूनामा बेवरिज पृ० 105।

2 वही, पृ० 106-107।

3 गुलबदन हुमायूनामा, पृ० 24 बेवरिज, प० 108 109।
अलहान इ तशवीश मरा जबू करदा वसीयत मी कुनम कि हमा ईशा

और उसने उसके लिए यह अन्तिम सन्देश कहा "तुझे तेरे भाइयो एव अपने सभी सम्बन्धियो तथा आदमियो को ईश्वर को सौपता हू और इन लोगो को तेरे सुपुर्द करता हू।"[1]

इस घटना के तीन दिन पश्चात सोमवार, 26 दिसम्बर, 1530ई० को बाबर की मृत्यु हो गयी।

बाबर की मृत्यु गुप्त रखी गयी जिससे विद्रोह न हो। इसी बीच अरेश खा नामक एक भारतीय अमीर ने यह सुझाव दिया कि बाबर की मृत्यु को छिपाने का परिणाम भयकर हो सकता है और उसने कहा जब बादशाह की मृत्यु होती है तब अक्सर लोग लूट मार करते हैं। उसने यह सुझाव दिया कि एक आदमी को लाल वस्त्र पहनाकर हाथी पर बैठाकर मुनादी कर दी जाए कि बाबर बादशाह दरवेश हो गये हैं और राज्य हुमायू बादशाह को दिया गया है। हुमायू ने आज्ञा दी कि ऐसा ही हो। इससे प्रजा म सन्ताप हुआ।[3]

इसके चार दिन के बाद हुमायू गद्दी पर बैठा। बाबर आगरा म चारबाग या रामबाग में दफनाया गया। शेरशाह के समय बाबर की अफगान रानी बीबी मुबारिका उसकी लाश को काबुल ले गयी, जहा वह पुन दफनाया गया। आजकल वह स्थान शाहे काबुल कहलाता है। जहागीर ने उसम एक अभिलेख अकित कराया तथा शाहजहा ने वहा एक सुन्दर मस्जिद का निर्माण कराया।[4]

हुमायू रा बजाय मन दानन्द व मरा दौलतख्वाहिय ऊ तक्सीर न कुनन्द व वक्त मोआफिक व मरजेहन वाशद अज हक सुभानहु उम्मीदवारम कि हुमायू हम ब मदुम खूब पेश ख्वाहद आमद दीगर हुमायू तुराव बिरादराने तुरा व हमा खेशा व मदुम। खुदरा व तुरा बखुदा मी सिपारम व ईहारा बतो मी सिपारम।

अजी सुखना हाजरा व नाजरा रा गिरिया व जारी दस्त दाद व खुद हम चश्माने मुबारक पुर आब गरदी दन्द।

1 गुलवदन, हुमायूनामा, पृ० 108 109। अबुल फजल भी बाबर द्वारा हुमायू का उत्तराधिकारी मनोनीत करने का समर्थन करता है। (अकबर-नामा, भाग 1, पृ० 276 7)

2 गुलबदन, निजामुद्दीन तथा फिरिश्ता ने बाबर की मृत्यु तिथि पाचवी जमादुल अव्वल अर्थात 25 दिसम्बर दिया है। अबुल फजल ने छठी जमादुल अव्वल अर्थात् 26 दिसम्बर लिखा है। इस प्रश्न की विवेचना के लिए देखिए, होदीवाला, हिस्टारिकल स्टडीज इन मुगल न्यूमिसमेटिक्स, पृ० 262 63।

3 गुलवदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 109।

4 बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 15।

शराब मे भाग, धतूरा आदि चीजे भी मिलायी जाती थी। ऐसी स्थिति म उसके पेट मे रोग हाना एक साधारण-सी बात थी। इब्राहीम की मा द्वारा दिये गय विष का प्रभाव भी उसके स्वास्थ्य पर पडा होगा। इसके अतिरिक्त बाबर का सम्पूण जीवन कठिन श्रम और सघष का जीवन था। कठिन परिश्रम और अस्त व्यस्त तथा अनियमित दिनचर्या ने उसके स्वास्थ्य को गिरा दिया। काबुल, मध्य एशिया तथा भारत की जलवायु म अन्तर था। सम्भव है कि यह भी बाबर के शक्तिक्षय मे सहायक हुआ हो। इसी बीच उसके प्रिय पुत्र अलवर की मत्यु हो गयी जिससे बाबर का अस्वस्थ मन तथा शरीर और भी हिल गया। इन परिस्थितिया मे सम्भव है कि जिस समय बाबर ने अपने जीवन को समर्पित किया तथा उसके बाद जब हुमायू स्वस्थ हाने लगा तो बाबर को यह विश्वास हो गया हा कि खुदा ने उसकी प्राथना स्वीकार कर ली। शारीरिक दुबलता की अवस्था म मनोवैज्ञानिक प्रभाव से वह धीरे धीरे मृत्यु की ओर अग्रसर हाने लगा। इस दष्टि से उसकी मत्यु अन्धविश्वास के मनोवैज्ञानिक प्रभाव के कारण हुई। उसका जीवन अपण तथा उसकी मत्यु की घटनाए केवल सयोग मात्र थी।

उत्पन्न करता है जिससे निजामुद्दीन अहमद की बात को समर्थन प्राप्त होता है। किन्तु, गुलबदन बेगम तथा अबुल फजल के वर्णन इतने स्पष्ट है कि उन्हें अस्वीकार नही किया जा सकता। ऐसा प्रतीत होता है कि हुमायू उस समय आगरा मे उपस्थित था।

पड्यन्त्र

बाबर के प्रधान मन्त्री खलीफा ने हुमायू के स्थान पर महदी ख्वाजा को गद्दी पर बैठाने की योजना बनायी। यह योजना खलीफा के मस्तिष्क की उपज थी तथा दरबार के अन्य अमीरो को कदाचित् इसका ज्ञान नही था। पारिभाषिक तौर पर यह पड्यन्त्र कहा जा सकता है किन्तु वास्तव म यह खलीफा की योजना की एक चर्चा मात्र थी।[1] फिर भी वैधानिक दृष्टि स तथा मुगल साम्राज्य की स्थिरता की दृष्टि से इसका विशेष महत्त्व है। इसके अतिरिक्त इस पड्यन्त्र का प्रणेता बाबर का प्रधान मन्त्री था, जिसने बाबर के साथ 35 वर्ष व्यतीत किये थे, इसस इसका महत्त्व और भी बढ जाता है।

इस पड्यन्त्र का विशेष विवरण हमे केवल निजामुद्दीन अहमद द्वारा प्राप्त होता है, जिसके पिता की बुद्धिमानी स यह पड्यन्त्र विफल हुआ। यदि इसका वर्णन केवल निजामुद्दीन अहमद ही ने किया होता तो यह कहा जा सकता था कि उसने यह वर्णन अपने पिता का महत्त्व बढाने के लिए किया है। किन्तु, इसका समर्थन अबुल फजल के अकबरनामा सलातीने अफागेना (अथवा तारीखे शाही) तथा कवित्त हुमायूनामा ने भी किया है। इन समकालीन इतिहासकारो के कथन के पश्चात् पड्यन्त्र की वास्तविकता मे सन्देह नही रह जाता।

पड्यन्त्र का प्रणेता खलीफा

इस पड्यन्त्र का प्रणेता बाबर का प्रधान मन्त्री सुल्तान सैय्यद हकीम ख्वाजा निजामुद्दीन अली मुहम्मद खलीफा था। अपने अच्छे शासन सेवा तथा युद्ध कला की निपुणता के कारण उसने बाबर के मन मे विशेष स्थान प्राप्त कर लिया था।[2]

---

1 "It is technically correct to call this attempt of the Khalifah a conspiracy but in reality it was in the nature of what Mrs Beveridge calls a rumour of a plan of supercession of Babur s sons by Mahdi Khwajah at the instance of Mir Khalifan" (ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 24)।

2 बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 18।

उसे चार पद—वकील, अमीर सुल्तान और खलीफा—तथा तीन पारिवारिक उपाधियाँ—सयिद, ख्वाजा तथा बरलास तुर्क—प्राप्त थी, जो उच्च वंश के प्रतीक थे। इसके अतिरिक्त कुछ प्रमुख व्यक्तियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर उसने अपने को और भी शक्तिशाली बना लिया था। उसका छोटा भाई जुनायद बरलास बाबर की सौतेली छोटी बहन शहरबानो से तथा उसकी लडकी गुलबर्ग बेगम सिंध के शासक शाह हुसेन अरगून से विवाहित थी। उसके पुत्र मोहीब अली का विवाह शाह हुसेन की सौतेली लडकी नाहीद से हुआ था।[1] पानीपत तथा खानवा के युद्ध के पश्चात् माहम तथा गुलबदन बेगम काबुल से भारत आयी। गुलबदन का खडे होकर खलीफा का स्वागत करना पडा। खलीफा ने 6,000 शाहरुखी तथा 5 घोडे और उसकी स्त्री ने 3,000 शाहरुखी तथा तीन घोडे गुलबदन को भेंट किये और उसे भोजन के लिए निमन्त्रित किया।[2] बाबर के भारतीय अभियानों में भी खलीफा ने महत्त्वपूर्ण भाग लिया तथा उसे पारितोषिक रूप मे धन तथा उपाधि दोनों प्राप्त हुए। खानवा की लडाई के पश्चात् उसे 'मुकरबुल हजरत अल-सुल्तानी एतमादुद्दौला अल खाकानी' (अर्थात सुल्तान का प्रमुख मित्र तथा उसके साम्राज्य का स्तम्भ) की उपाधि मिली। बाबरनामा के अध्ययन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वह बाबर के जीवन के अन्त तक राज्य की समस्याओं मे उसे परामर्श देता रहा। अहमद यादगार लिखता है कि उसकी आज्ञाएं बादशाह की आज्ञाओं जैसी थी।[3] इस तरह खलीफा बाबर के दरबार का सबसे प्रमुख अमीर था तथा राज्य के आर्थिक तथा राजनीतिक शासन का प्रमुख था।

हुमायूं का प्रतिद्वंद्वी महदी ख्वाजा

खलीफा बाबर के पश्चात सयिद महदी ख्वाजा को गद्दी पर बैठाना चाहता था।[4] महदी ख्वाजा ख्वाजा मूसा का पुत्र था। ख्वन्दमीर के अनुसार वह सैयद

1 गुलबदन, हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ० 37, आईने अकबरी, अ० अनु०, ब्लाखमैन, पृ० 463 64।

2 गुलबदन हुमायूंनामा बेवरिज पृ० 101-102।

3 अहमद यादगार, तारीख शाही पृ० 130।

4 श्रीमती बेवरिज तथा डा० बनर्जी (गुलबदन हुमायूंनामा बेवरिज, पृ० 298 99, बनर्जी हुमायूं 1, पृ० 20) ने उसका नाम सयिद मुहम्मद महदी ख्वाजा बताया है। गुलबदन बेगम तथा बाबर दोनों उसे महदी ख्वाजा के नाम से ही सम्बोधित करते है। शेष जन ने उसे सयिद महदी ख्वाजा लिखा है। इससे उसका नाम महदी ख्वाजा ही प्रतीत होता है। महदी ख्वाजा अबुल माली की कब्र के निकट दफनाया गया था जो

था तथा तिरमीज के धार्मिक वंश से सम्बंधित था। 916 हिजरी (सन 1510-11 ई०) में वह बाबर का दीवान बेगी था तथा उसने 10,000 सैनिकों के साथ बाबर के पक्ष में बुखारा पर आक्रमण किया था।[1] इस अभियान के पश्चात् वह काबुल लौट आया। यहाँ तीन वर्ष पश्चात्, बाबर से 5 वर्ष बड़ी उसकी बहन खानजादा बेगम के साथ उसका विवाह हुआ।[2] इस समय इसका अधिक महत्त्व नहीं था। किन्तु बाबर के साथ भारतीय अभियानों में भाग लेकर उसने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की। पानीपत तथा खानवा के युद्धों में उसने बाएं तथा हुमायूं ने दाएं चक्र का नेतृत्व किया था। महदी ख्वाजा के कार्यों से प्रसन्न होकर उसे सत्तर लाख भत्ते के साथ बयाना तथा इटावा की जागीर भी पहले ही दी जा चुकी थी।[3]

महदी ख्वाजा का भतीजा ख्वाजा रहीमदाद ग्वालियर के दुर्ग का गवर्नर था। उसने बाबर के विरुद्ध विद्रोह किया तथा राजसी फरमान मानने से इनकार कर दिया। ग्वालियर एक स्थानीय राजपूत जमींदार को समर्पित कर रहीमदाद मालवा के सुलतान मुहम्मद खलजी के पास भाग जाना चाहता था।[4] इसी सम्बन्ध में महदी ख्वाजा अगस्त 1529 ई० में आगरा आया। खलीफा तथा शेख

निरमिजी था। इस कारण श्रीमती बेवरिज लिखती हैं कि महदी ख्वाजा भी तिरमिजी था। डा० बनर्जी का अनुमान है कि वह माहम से भी सम्बन्धित था।

1 बनर्जी, हुमायूं 1, पृ० 20।

2 इस समय खानजादा बेगम की अवस्था लगभग चालीस वर्ष की थी। महदी ख्वाजा भी लगभग इसी अवस्था का था। बाबर ने अपनी आत्मकथा में इस विवाह का उल्लेख नहीं किया है यद्यपि वह इसी वर्ष में लिखता है कि महदी ख्वाजा ने मुहम्मद जमान मिर्जा को काबुल आने से मना करके अच्छा नहीं किया। बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 364।

3 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 530। महदी ख्वाजा तथा हुमायूं को पानीपत तथा खानवा के युद्धों में बराबर का स्थान देने के कारण डॉ० बनर्जी ने यह विचार प्रकट किया है कि दोनों पर बाबर की समान दृष्टि थी (बनर्जी, हुमायूं, 1, पृ० 20)। यह ठीक नहीं प्रतीत होता, क्योंकि पानीपत के पूर्व हुमायूं को हिसार फिरोजा दिया गया और बाद में उसे सम्भल भी दिया गया। महदी को और कुछ प्राप्त नहीं हुआ। ईद के सुअवसर पर भी हुमायूं को 'चारकब' (एक प्रकार की खिलअत) के अतिरिक्त एक तलवार की पेटी तथा तीपूचाक घोड़ा सोने की जीन के साथ दिया गया। महदी ख्वाजा को पानीपत तथा खानवा के युद्धों में बराबर का स्थान उसके सम्बन्धी होने के अतिरिक्त युद्ध में योग्यता के कारण भी था। दोनों की बराबरी का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

4 तारीखे ग्वालियरी, बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 688-89।

मुहम्मद गौस की सहायता से रहीमदाद के प्राण तो बच गये किन्तु कुछ समय उपरान्त 7 सितम्बर 1529 ई० को उसे अपने स्थान से हटा दिया गया तथा अबुल फतह शेख गुरान को उसके स्थान पर नियुक्त किया गया।[1] इस विद्रोह में महदी ख्वाजा का कहां तक हाथ था यह बताना कठिन है, किन्तु इसके फलस्वरूप बाबर तथा महदी ख्वाजा में कुछ मनमुटाव हो गया। महदी ख्वाजा तथा खलीफा एक दूसरे के निकट आ गए। इस बीच महदी ख्वाजा उसमें कुछ गुणों को देखकर उसकी तरफ आकर्षित हुआ और दोनों एक-दूसरे के निकट आ गये। एक ऐसा व्यक्ति जो, जिसे स्वप्न में भी राजत्व की आशा नहीं थी, गद्दी पर बैठाकर खलीफा सम्पूर्ण शक्ति अपने हाथ में रखना चाहता था।

महदी ख्वाजा और बाबर का सम्बन्ध पुराना था। यश, सेवा सम्बन्ध एवं योग्यता की दृष्टि से महदी ख्वाजा का एक महत्त्वपूर्ण स्थान था। बड़ी बहन होने के नाते खानजादा बेगम का बाबर पर प्रभाव माहम से कम न था।[2]

डा० बनर्जी के अनुसार महदी ख्वाजा का चुनाव अच्छा था। यश, सेना, अनुभव तथा सम्बन्ध से वह मुगल गद्दी पर बैठने की योग्यता रखता था। धार्मिक पथ से सम्बन्धित होने के नाते ईरान के शाह इस्माईल और शाह तहमास्प की भांति उसे सफलता मिल सकती थी और उदार बाबर के साथ उसका इतने दिनों का सम्बन्ध एक जागृत मुगल शासन प्रणाली की प्रगति की गारंटी थी।[3] विद्वान लेखक के मत से सहमत होना कठिन है। बाबर के परिवार को छोड़कर अन्य व्यक्तियों को चुनने का विचार भयंकर परिणामों से खाली नहीं था। इसका परिणाम गृहयुद्ध तो होता ही साथ ही महदी ख्वाजा किसी बात में हुमायूं से अधिक योग्य नहीं था। बाबर का पुत्र होने से जो सद्भावना हुमायूं को प्राप्त होती वह महदी को प्राप्त नहीं हो सकती थी। प्रख्यात मुगल शासन का अभी शुभारम्भ भी नहीं हुआ था, उसके मूल सिद्धान्तों के विकास का प्रश्न ही नहीं था।

श्रीमती बेवरिज के अनुसार खलीफा का वास्तविक उम्मीदवार महदी ख्वाजा

---

1 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 689 90।

2 बनर्जी, हुमायूं, 1 पृ० 21। बाबरनामा के अंतिम भाग में महदी ख्वाजा का नाम अवसर बाबर के प्रमुख अमीरों के साथ आता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उस समय इसकी गणना उच्च अमीरों में हो रही थी। बाबर की आत्मकथा में महदी ख्वाजा का नाम प्रथम बार 1494 95 ई० में आया है।

3 बनर्जी, हुमायूं 1, पृ० 21।

नहीं बल्कि मुहम्मद जमान मिर्जा था।[1] यह तैमूर वंशी था तथा बाबर का सबसे बड़ा दामाद था। बाबर के चार पुत्रों के बाद यह सबसे प्रमुख तथा जवान था, (इसकी अवस्था उस समय 35 वर्ष की थी)। इसकी स्त्री मासूमा सुल्ताना बेगम माता व पिता दोनों तरफ से तैमूर वंश की थी और इस तरह से उसका आदर तुर्क अमीरों में विशेष था। श्रीमती बेवरिज के अनुसार घाघरा के अभियान के पश्चात् (अप्रैल 1529 ई०) उसे राजत्व का पद प्रदान किया गया।[2] श्रीमती बेवरिज के मतानुसार बाबर अपने दामाद को भारत का शासक नियुक्त कर स्वयं काबुल या इसके उत्तरी प्रदेश में चला जाना चाहता था। इसी के भय से माहम बेगम ने हुमायूं को आगरा बुलाया। बाद की घटनाएं इतनी शीघ्र हुईं कि बाबर अपने दामाद को नियुक्त नहीं कर सका। श्रीमती। बेवरिज निजामुद्दीन अहमद के कथन को सत्य नहीं मानतीं, क्योंकि इस घटना के 60 वर्ष पश्चात उसने अपनी पुस्तक की रचना की। घटना के 20 वर्ष बाद निजामुद्दीन अहमद का जन्म हुआ था। विदुषी लेखिका के अनुसार महदी ख्वाजा का चुनाव ठीक प्रतीत नहीं होता, विशेषतः इस कारण कि बाबर के अन्य पुत्र थे तथा ख्वाजा तैमूर वंश का नहीं था। खलीफा जैसा बुद्धिमान व्यक्ति उसे नहीं चुन सकता था। महदी ख्वाजा की अवस्था लगभग 55 वर्ष की थी। निजामुद्दीन अहमद उसे अथवा खलीफा के उम्मीदवार को दामाद और जवान कहता है।[3] किन्तु ख्वाजा जवान नहीं कहा जा सकता

1 Epigraphica Indo Muslimica 1915 16, गुलबदन, हुमायूंनामा बेवरिज, पृ० 298-301, बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 704 708।
"If Mahdi or any other competent man had ruled in Delhi by whatever tenure, this would not necessarily have ruined Humayun, or have taken from him the lands most coveted by Babur All Babur's plans and orders were such as to keep Humayun beyond the Hindukush, and to take him across the Oxus" गुलबदन, हुमायूंनामा, बेवरिज, अनुवादक की भूमिका, पृ० 26 27, तबकाते अकबरी के अंग्रेजी अनुवादक श्री डे ने भी श्रीमती बेवरिज के मत का समर्थन किया है। (डे तबकाते अकबरी, 2, पृ० 41 42)।

2 बाबरनामा, पृ० 704 708। बाबरनामा के अनुसार उसे एक राजकीय सरोपा, तलवार बेल्ट, एक तीपूचाक घोड़ा और एक छतरी दी गयी। इससे केवल एक प्रमुख पद का अनुमान लगाया जा सकता है और यह कहना कि उसे राजत्व का पद प्रदान किया गया, सही नहीं है। बनर्जी, हुमायूं, 1, पृ० 23।

3 निजामुद्दीन के शब्द इस प्रकार हैं (तबकाते अकबरी, पृ० 28)

और वह दामाद भी नही था।

श्रीमती वेवरिज के इस मत को स्वीकार करना कठिन है, क्योंकि यह केवल कल्पना पर आधारित है। किसी भी समकालीन इतिहासकार ने इस सम्बन्ध म मुहम्मद जमान मिर्जा के नाम का उल्लेख नही किया है। दामाद का अथ आधुनिक रीति या आधुनिक भारत मे प्रचलित अथ से नहीं बल्कि समकालीन अथ से लेना चाहिए जिसमे दामाद, बहनोई और ससुर के लिए भी प्रयोग किया जाता था।[1] गुलबदन वेगम उस यजना' (बहनोई) लिखती है तथा हबीब अस्सियार का लेखक ख्वन्दमीर स्पष्ट लिखता है कि उसन बाबर की बडी बहन खानजादा बेगम से विवाह किया था। दोनो ही उसका नाम महदी ख्वाजा लिखते है।[2] जवान का अथ उसने स्वास्थ्य से लेना चाहिए न कि आयु से

यदि तैमूर वश के ही व्यक्ति को चुनना था तो बाबर के पुत्रो के अतिरिक्त मुहम्मद सुल्तान मिर्जा, उसके पुत्र तथा अन्य अनुभवी व्यक्ति थे। निजामुद्दीन अहमद एक ऐसा लेखक है जिसके वणनो पर साधारणतया सन्देह नही किया जा सकता। इसके अतिरिक्त अबुल फजल ने भी उसका समथन किया है। यह कसे सम्भव माना जा सकता है कि इन लेखको ने मुहम्मद जमान मिर्जा के स्थान पर महदी ख्वाजा का नाम लिख दिया हो ? मुहम्मद जमान ने हुमायू के समय विद्रोह किया और वह उच्च स्तरीय मुगल अमीरो म से था। इस कारण उसम उलटफेर होने की कोई सम्भावना भी प्रतीत नही होती। इसके अतिरिक्त निजामुद्दीन अहमद के पिता को इस षडयन्त्र का पूरा ज्ञान था। वह कैसे मुहम्मद जमान मिर्जा तथा महदी ख्वाजा मे गडबड कर देता ? यदि यह कहा जाए कि बाबर मुहम्मद जमान मिर्जा को वहीं स्थापित करना चाहता था तो बाबर को उसके पहले अपने पुत्रो के लिए प्रबन्ध करना चाहिए था। बदख्शा सुल्तान मिर्जा को दे दिया गया था तथा हिन्दाल वापस बुला लिया गया था। यदि भारत के भाग भी किसी दूसरे

चू महदी ख्वाजा, दामादे हजरत फिरदौस मकानी जवाने सखी व बाजिल बूद, व बा अमीर खलीफा राब्तय मुहब्बत दाश्त।"

1 बहार अजम नामक शब्दकोश म दामाद का अथ इस प्रकार है
'दुलहिन के सामने हिन्द म उस व्यक्ति को कहते है जिससे पुत्री ब्याही जाए किन्तु उत्तम शैली के स्वामियो की रचना मे यह शब्द इस प्रकार प्रयुक्त नहीं हुआ है। फरहगेनव म इस शब्द का अथ 'किसी की पुत्री का पति, स्टइनगस से इसका अथ 'a son in law a father-in law, a husband of the king s sister, nearally, a wooer, a lover' दिया है।

2 गुलबदन, हुमायूनामा, पृ० 28 बेवरिज पृ० 126 ख्वन्दमीर, हबीबुस्सियार, बनर्जी हुमायू 1, पृ० 22 27।

को दे दिये जाते तो फिर बाबर के अपने पुत्रों के लिए क्या बचता ? फिर यदि मुहम्मद सुल्तान मिर्जा को वही स्थापित करना ही था तो महदी ख्वाजा का भी उसके पद के अनुसार उपयुक्त प्रबंध करना आवश्यक था। इसके अतिरिक्त निजामुद्दीन अहमद तथा अबुल फजल इस षड्यन्त्र की बात करते समय 'सल्तनत' शब्द का प्रयोग करते हैं।[1] इससे स्पष्ट है कि यह समस्या एक प्रांत के गवर्नर की नहीं वरन् साम्राज्य के उत्तराधिकारी से सम्बंधित थी। उपर्युक्त बातों से स्पष्ट हो जाता है कि खलीफा का उम्मीदवार महदी ख्वाजा था, न कि मुहम्मद जमान मिर्जा।[2]

खलीफा के निर्णय के कारण

खलीफा, जिसने अपने जीवन का एक बहुत बड़ा भाग बाबर की सेवा में व्यतीत किया था, क्यों तथा कैसे हुमायूं से नाराज हो गया, यह बताना सरल नहीं है, क्योंकि समकालीन इतिहासकारों ने इस पर अधिक प्रकाश नहीं डाला है। यदि वह हुमायूं से नाराज होता तो भी बात कुछ समझ में आती, किन्तु वह पूरे परिवार से ही नाराज था तथा हुमायूं के साथ-साथ उसने बाबर के सभी पुत्रों को त्याग दिया। इससे संदेह होता है कि इसके पीछे महत्त्वपूर्ण कारण होंगे।

निजामुद्दीन अहमद तथा अबुल फजल के वर्णन से यह स्पष्ट है कि खलीफा हुमायूं से असंतुष्ट था। मुगल साम्राज्य को स्थापित हुए बहुत दिन नहीं हुए थे। डा० बनर्जी के अनुसार खलीफा को कदाचित यह विश्वास हो गया था कि हुमायूं यदि गद्दी पर बैठेगा तो मुगल साम्राज्य का नाश हो जाएगा। इस दृष्टि से हुमायूं को उत्तराधिकार से वंचित कर वह समझता था कि वह राज्य का भला ही कर रहा है।[3] हुमायूं द्वारा दिल्ली के खजाने की लूट के कारण भी वह उससे नाराज

---

1 डे, तबकाते अकबरी, 2 पृ० 42, अकबरनामा, 1, पृ० 117।

2 मुहम्मद जमान मिर्जा तथा मुहम्मद सुल्तान मिर्जा ने हुमायूं के समय में कई बार विद्रोह किया। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी महत्त्वाकांक्षा का हनन हुआ था और इस कारण उन्होंने विद्रोह किया। महदी ख्वाजा ने हुमायूं के गद्दी पर बैठने के पश्चात कभी भी विद्रोह नहीं किया। क्या वह महत्त्वाकांक्षी नहीं था ? हो सकता है कि इसी कारण खलीफा ने उसे चुना हो।

3 डा० बनर्जी, (हुमायूं, 1, पृ० 19) लिखते हैं कि हुमायूं को पानीपत और खानवा के युद्धों में अधिक पारितोषिक प्राप्त होने के कारण भी खलीफा उससे द्वेष रखता था। किन्तु इसमें उसके नाराज होने का कोई कारण नहीं प्रतीत होता। हुमायूं बाबर का सबसे बड़ा पुत्र था और राज्य का

था तथा उसने हुमायूं को इसके लिए क्षमा नहीं किया। बेवरिज का अनुमान है कि खलीफा कदाचित हुमायूं के अफीम खाने तथा उसके एकाएक वदख्शां छोड़ने से असंतुष्ट था। नशे की वस्तुएं खाने के कारण राज्य से वंचित करना न्यायसंगत नहीं प्रतीत होता, विशेषतः जब हम जानते हैं कि बाबर स्वयं नशे में चूर रहता था। अतएव सम्राट के अभिन्न मित्र मीर खलीफा ने भी निश्चय ही शराब का प्रयोग किया होगा। कदाचित शिआ रानी माहम के प्रभाव से वह शंकित था। सम्भव है ईरानी और तूरानी तथा शिआ और सुन्नी संघर्ष, जो बाद में मुगल अमीरों में वैमनस्य का प्रमुख कारण बना, उस समय भी रहा हो तथा खलीफा और अन्य सुन्नी अमीरों को यह भय रहा हो कि हुमायूं के गद्दी पर बैठने से माहम का तथा उनके प्रभाव से शिआ धर्मावलम्बियों तथा ईरानियों का प्रभुत्व बढ़ जायगा।

हुमायूं को गद्दी से वंचित करने के कारण हो सकते हैं किन्तु उसके स्थान पर कामरान, अस्करी और हिन्दाल में से किसी को भी गद्दी पर बैठाया जा सकता था। खलीफा ने क्या बाबर के सभी पुत्रों को अस्वीकार कर दिया ? और फिर, बाबर के पुत्रों के अतिरिक्त यदि किसी दूसरे को ही चुनना था तो और भी महत्वपूर्ण योग्य व्यक्ति, जैसे मुहम्मद जमान मिर्जा, मुहम्मद सुल्तान मिर्जा, ख्वाजा ख्वाजा या इत्यादि व्यक्ति उपलब्ध थे जो अच्छे वंश के थे। इन्हें क्यों नहीं चुना गया ? डा० बनर्जी का यह मत सत्य प्रतीत होता है कि उसका विचार व्यक्तिगत था।[1] इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह उसकी बहुत बड़ी भूल थी। उसने बाबर की इच्छा, उसके वंश की भलाई इत्यादि सभी बातों को भुला दिया। यही नहीं, उसने एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दी जिससे बाबर के वंश को बहुत बड़ा खतरा उपस्थित हो गया। डा० बनर्जी के इस मत को स्वीकार करना कठिन है कि खलीफा साम्राज्य की भलाई को दृष्टि में रखकर हुमायूं को राज्याधिकार से वंचित करना चाहता था।[2] अबुल फजल का यह कथन, कि उसने एक संकुचित दृष्टिकोण (आलम बशारियत) अख्तियार किया अधिक सत्य है।[3]

उत्तराधिकारी था। इस दृष्टि से उसको अधिक पारितोषिक प्राप्त कराना न्यायसंगत था। जिस समय हुमायूं को पारितोषिक प्राप्त हुए उस समय तक हुमायूं ने कोष भी नहीं लूटा था। इस दृष्टि से उस समय उस पर क्रोध करने का कोई कारण नहीं प्रतीत होता।

1 *बनर्जी, हुमायूं 1 पृ० 20।*

2 "The Khalifah must have satisfied his political conscience that in rejecting Humayun he was furthering the interests of the state" (बनर्जी, हुमायूं 1, पृ० 19)।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 117।

बाबर की इच्छा

इस षडयन्त्र म अर्थात हुमायू क स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति का गद्दी पर बैठान म क्या खलीफा को बाबर का भी समथन प्राप्त था? खलीफा तथा बाबर का सम्बन्ध इतना घनिष्ठ था कि यह सन्देह हो जाता है कि उसने बाबर की इच्छा जान बिना ऐसा कभी नही किया होगा। इसी आधार पर श्रीमती बेवरिज न यह मत उद्धरित किया है कि हुमायू को गद्दी स वचित करन म बाबर की भी इच्छा थी। उनका विचार ह कि भिन भिन कडिया का जोडन से ऐसा प्रतीत होता है कि केवल खलीफा ही नही बल्कि कुछ अय अमीरो के साथ बाबर भी भारत म किसी अय व्यक्ति का शासक नियुक्त करना चाहता था तथा उसके पश्चात काबुल लौट जाना चाहता था।[1] प्रो० रशब्रुक विलियम्स ने भी इस मत का समथन किया है। उहान यह विचार व्यक्त किया है कि खलीफा तथा बाबर का इतना घनिष्ठ सम्बध था कि एसा मालूम होता है कि हुमाय के अनेक कार्यों, विशेषतया दिल्ली के कोष की लूट के कारण बाबर इतना दुखी था कि सम्भव है उसी ने खलीफा को प्रोत्साहित किया हो।[2]

घटनाओ तथा परिस्थितियो का अध्ययन करने स इस मत का स्वीकार नही किया जा सकता। बाबरनामा गुलबदन बेगम के हुमायूनामा तथा अय समकालीन एतिहासिक पुस्तको के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि बाबर अपने पश्चात हुमायू को गद्दी पर बैठाना चाहता था तथा उसने मत्यु क पूव उसे अपना उत्तराधिकारी मनोनीत भी किया था। बाबरनामा के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि बाबर हुमायू के कार्यों स अक्सर असन्तुष्ट रहा था। दिल्ली का कोष लूटने पर तथा बदख्शा ने अवसाद के पत्र लिखने पर बाबर ने उस पर अपनी अप्रसन्नता प्रकट की। किन्तु इसका अथ यह नही निकाला जा सकता कि वह उसे उत्तराधिकार से ही वचित करना चाहता था। भारतीय अभियानो मे बाबर ने हुमायू को बारबार पारितोषिक दिया, बदख्शा से लौटने पर उसके स्वागत म दावत दी गयी तथा

1 बाबरनामा, बेवरिज, प० 705-706 विदुषी लेखिका के अनुसार (1) बाबर के साम्राज्य का प्रमुख केन्द्र काबुल था, दिल्ली नही, (2) तमूर वशिया म साम्राज्य को विभाजित करने की परम्परा थी, (3) कई वर्षों से बाबर काबुल लौटना चाहता था, (4) बाबर को अपना उत्तराधिकारी चुनने का अधिकार था, (5) बाबर मुहम्मद जमान मिर्जा को गद्दी बैठाना चाहता था उन्होने अन्त मे स्वीकार किया है कि हुमायू की बीमारी के पश्चात बाबर ने यह विचार त्याग दिया था।

2 विलियम्स, एन एम्पायर बिल्डर, पृ० 171।

बाबर ने बारबार यह विचार प्रकट किया कि वह हुमायू को ही अपना उत्तराधिकारी मनोनीत करना चाहता है। हुमायूनामा में गुलबदन बेगम लिखती है कि माहम के काबुल में लौटने के पश्चात एक दिन बाबर जर अफशा बाग की सैर को गया। वहां पर वजूखाना (वह स्थान जहां नमाज से पूर्व हाथ मुह धोया जाता है) था। उसे देखकर बाबर ने कहा "मेरा हृदय सल्तनत एव बादशाही से भर गया है। मैं जर अफशा बाग में एकान्तवास ग्रहण करना चाहता हू। मेरी सेवा के लिए ताहिर आफ्ताबची बहुत है। मैं हुमायू को बादशाही प्रदान करता हू।" इसी बीच आका (माहम बेगम) तथा सभी पुत्रों एव पुत्रियो ने रोना तथा विलाप करना प्रारम्भ कर दिया और कहा कि 'ईश्वर आपको वर्षों तक बादशाही की मसनद पर आरूढ और अगणित 'करना तक अपनी रक्षा में रखे और सभी पुत्र आपके चरणो में वृद्धावस्था को प्राप्त हो।'[1]

हुमायू की बीमारी के समय उसकी शोचनीय अवस्था देखकर उसकी मा माहम तो चिन्तित थी ही बाबर भी विचलित हो गया। माहम ने बाबर से कहा कि वह तो इसलिए दुखी है कि हुमायू उसका एकमात्र पुत्र है, किन्तु बाबर के तो अन्य पुत्र भी हैं। बाबर ने उत्तर दिया "माहम यद्यपि मेरे अन्य पुत्र भी हैं किन्तु मैं तेरे हुमायू के बराबर किसी पुत्र को प्रिय नही समझता, कारण कि मैं सल्तनत एव बादशाही तथा समृद्ध ससार दुनिया में अद्वितीय, अपने काल के विचित्र व्यक्ति, प्रतापी सफल एव प्रिय पुत्र हुमायू के लिए चाहता हू न कि अन्य लोगो के लिए।"[2]

---

1 गुलबदन हुमायूनामा, पृ० 20, बेवरिज, पृ० 103। गुलबदन बेगम के शब्द इस प्रकार हैं

'व दर बागे मजकूर वजूखाना बूद आरा कि दीदन्द फरमून्द दिले मन अज सल्तनत व बादशाही गिरफ्ता दर बाग जर अफशा व गोशा बनशीनम व अज बराय खिदमतगारी ताहिर आफ्ताबची बसन खिसियार अस्त व बादशाही रा ब हुमायू बख्शम दरी अस्ना हजरत आकाम व हमा फरजन्दा गिरया व बनालगी करदा गुफ्तन्द कि खुदायताला शुमा रा दर मसनद बादशाही सालहाय विसियार व करनहाय बेशुमार दर अमान गुद निगाह दारद व हमा फरजन्दा दर कदम शुमा ब कमाले पीरी बरसन्द।'

2 गुलबदन हुमायूनामा फा० पृ० 21, बेवरिज—पृ० 104।
माहम अगरचे फरजन्दान दीगर दारम अम्मा हच फरजन्दे बराबर हुमायू नमी दारम अज बराय आं कि सल्तनत व बादशाही व दुनियाय रौशन अज बराय यगाना जहां व नादिरा दौरा कामगार बरखुरदार फरजन्द मि ख्वाहम हुमायू मी ख्वाहम न बराय दीगरां।

अहमद यादगार ने भी हुमायूं के उत्तराधिकारी नियुक्त किये जाने का समर्थन किया है।[1] मृत्यु के पूर्व तो उसने उसे प्रमुख अमीरों के सम्मुख अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया था।[2] हुमायूं के भारत निर्वासन के समय की घटनाओं का वर्णन करती हुई गुलबदन बेगम लिखती है कि हुमायूं ने खानजादा बेगम को कामरान के पास भाइयों में पारस्परिक सहयोग स्थापित करने के लिए उसको समझाने के उद्देश्य से कंधार भेजा। कामरान ने इच्छा प्रकट की कि उसके नाम से खुत्बा पढ़ा जाए। इस पर हिन्दाल ने उसका विरोध किया तथा कहा कि "बाबर ने अपने जीवन काल में हुमायूं बादशाह को स्वयं पादशाही प्रदान की थी और अपना उत्तराधिकारी बनाया था। हम सबने उसे स्वीकार किया था। उनके नाम से खुत्बा इस समय तक पढ़वाया जाता रहा है। इस समय खुत्बे में परिवर्तन करना उचित नहीं। इस बात की जांच अन्य महिलाओं से हुई तथा सभी ने स्वीकार किया कि बाबर ने हुमायूं को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था।[3] इस वर्णन से स्पष्ट है कि मुगल परिवार में यह सर्वविदित था कि बाबर ने हुमायूं को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया था।

बाबर के जीवन के अन्तिम समय में हुमायूं ने कालिंजर पर आक्रमण किया। कालिंजर में एक अभिलेख प्राप्त हुआ है जिस पर रजब 936 हिजरी (फरवरी मार्च 1530 ई०) अंकित है तथा इसमें हुमायूं को 'पादशाह गाजी' सम्बोधित किया है।[4] साधारणतया उत्तराधिकारियों को सम्राट अपनी कुछ उपाधियां धारण करने की आज्ञा देते थे। इससे भी हुमायूं के उत्तराधिकारी मनोनीत होने का समर्थन प्राप्त होता है। नफायसुल मआसिर का लेखक अलाउद्दौला बिन यह्या कजवीनी लिखता है कि "हुमायूं अपने पिता की वसीयत के अनुसार सल्तनत के राजसिंहासन एवं पादशाही के स्थायी स्थान पर आरूढ़ हुए।"[5] अबुल फजल स्पष्ट लिखता है कि बाबर ने ख्वाजा खलीफा, कम्बर अली बेग, तरदी बेग, हिन्दू बेग तथा अन्य अमीरों के सम्मुख उसे राज्य करने के सम्बन्ध में शिक्षा दी तथा अन्त में कहा कि "मेरी शिक्षा का सारांश यह है कि अपने भाइयों की हत्या का, चाहे वे इसके कितने भी पात्र क्यों न हों, विचार न करना।"[6] इन वर्णनों से इस बात में सन्देह नहीं रह जाता कि बाबर की इच्छा अपने पश्चात हुमायूं को ही गद्दी पर बैठाने की थी।

1 अहमद यादगार के वर्णन के लिए देखिए इस पुस्तक का पृ० 31।

2 गुलबदन, हुमायूंनामा, पृ० 24, अकबरनामा 1, पृ० 117।

3 वही, पृ० 62।

4 जरनल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, 1848, पृ० 186।

5 रिजवी, हुमायूं, 1, पृ० 459

6 अकबरनामा, 1, पृ० 117।

बीमारी के समय प्रारम्भ हुआ। बाबर कई महीने बीमार रहा तथा लगभग 6 महीने बिस्तर पर पडा रहा। इस बीच बाबर के पुत्र वहा उपस्थित नही थे। हिन्दाल बाबर की मृत्यु के पश्चात आगरा पहुचा।[1] अस्करी कामरान के साथ काबुल मे था। इस समय मीर खलीफा की शक्ति बहुत बढ गयी थी तथा वह मुगल सम्राट के नाम पर आज्ञापत्र निकालता था। इस परिस्थिति मे उसके मन म आया कि वह किसी ऐसे व्यक्ति को गद्दी पर बैठाये जो उसके अधिकार म रहे। इस तरह यह षडयन्त्र बाबर की बीमारी के समय रचा गया था।

षडयन्त्र का प्रारम्भ तथा अन्त

यह षडयन्त्र बहुत व्यापक नही था तथा इसकी घटनाए भी अधिक वहद नही है। निजामुद्दीन अहमद ही इस षडयन्त्र की घटनाओ के जानने का प्रमुख साधन है यद्यपि इसका समर्थन अबुल फजल तथा अन्य लेखको मे होता है।

निजामुद्दीन अहमद का वर्णन इस प्रकार है [2]

"जब हजरत फिरदौस मकानी बाबर पादशाह का आगरा मे निधन हो गया, तो उन दिनो इस इतिहास के सकलनकर्ता का पिता मुहम्मद मुकीम हरवी उसके सेवको म सम्मिलित था और दीवान ए-ब्यूतात की सेवा हेतु नियुक्त था। क्योकि अमीर निजामुद्दीन अली खलीफा, जिस पर शासन प्रबन्ध के कार्य अवलम्बित थे, भाग्यशाली शाहजादे मुहम्मद हुमायू मिर्जा से किन्ही कारणो से, जो ससार म घटते रहते हैं भयभीत था अत वह उनके पादशाह होने के पक्ष मे न था। जब वह ज्येष्ठ पुत्र के पक्ष मे न था तो छोटे पुत्रो के पक्ष मे कैसे हो सकता था ? क्योकि हजरत फिरदौस मकानी का दामाद महदी ख्वाजा दानी, उदार एव जवान था और अमीर खलीफा की उसम बडी घनिष्ठता थी, अत अमीर खलीफा ने उसे पादशाह बनवाना निश्चय कर लिया। लोगो म यह बात प्रसिद्ध हो गयी। वे महदी ख्वाजा के अभिवादन हेतु जाने लगे। वह भी इस बात को समझकर लोगो से पादशाहो के समान व्यवहार करने लगा।

सयोग से मीर खलीफा महदी ख्वाजा से भेट करने गया हुआ था। वह एक खरगाह (बडा खेमा) म था। मीर खलीफा सकलनकर्ता के पिता मुहम्मद मुकीम एव महदी ख्वाजा के अतिरिक्त उस खरगाह म कोई अन्य न था। मीर खलीफा थोडी देर ही बैठा था कि हजरत फिरदौस मकानी (बाबर) ने उसे बुलवा लिया।

---

1 गुलबदन हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 110।

2 तबकाते अकबरी पृ० 28 29, तथा डे द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, 2, पृ० 43 44।

जब मीर खलीफा, महदी ख्वाजा के खेम से बाहर जाने लगा तो महदी ख्वाजा खरगाह के द्वार तक उसके साथ-साथ उसे पहुचाने गया और द्वार के मध्य म खडा हो गया। सकलनकता का पिता उसके सम्मान के कारण उसके पीछे पीछे रहा। महदी ख्वाजा थोडे बहुत पागलपन के लिए प्रसिद्ध था। वह सकलनकर्ता के पिता की उपस्थिति को भूलकर मीर खलीफा की विदा के उपरान्त दाढी पर हाथ फेर कर कहने लगा, 'ईश्वर ने चाहा तो सवप्रथम मैं तरी खाल खिचवाऊगा।' यह कहने के उपरान्त उसकी दष्टि सकलनकर्ता के पिता पर पडी। उसने उसके कान पकडकर कहा कि 'हे ताजीक! लाल जिह्वा हरे सिर को हवा मे उडा देती है।"[1]

"मेरा पिता विदा होकर बाहर आया और शीघ्रातिशीघ्र मीर खलीफा के पास पहुचकर कहा कि आप मुहम्मद हुमायू मिर्जा एव उनके भाइयो सरीखे योग्य व्यक्तियो के होते हुए नमकहलाली को त्यागकर यह चाहते थे कि राज्य अन्य वश मे चला जाए। इसका परिणाम इसके अतिरिक्त कोई अन्य नही।" यह कहकर उसने महदी ख्वाजा की बात कही। मीर खलीफा ने तत्काल किसी को मुहम्मद हुमायू मिर्जा को शीघ्रातिशीघ्र बुलाने के लिए भेजा। यसावलो को भेजकर उसने महदी ख्वाजा को सूचना भिजवायी कि 'हजरत पादशाह का आदेश है कि तुम अपने घर चले जाओ।' उस समय महदी ख्वाजा के लिए दस्तरख्वान पर भोजन लगवाया जा चुका था। यसावलो ने तत्काल पहुचकर उसे जबरदस्ती उसके घर भेज दिया।

"तदुपरान्त मीर खलीफा ने आदेश दिया कि ढिंढोरा पिटवा दिया जाए कि कोई भी महदी ख्वाजा के घर न जाए और उसके प्रति अभिवादन न करे, और वह भी दरबार मे उपस्थित न हो।"

निजामुद्दीन के वणन से निम्नलिखित बातें स्पष्ट हो जाती है—

(1) खलीफा बाबर के जीवन के अन्त समय बहुत शक्तिशाली हो गया था तथा मुगल साम्राज्य की बागडोर उसके हाथ मे थी।

(2) वह हुमायू पर विश्वास नही करता था। वह उससे भय खाता था तथा उस पर सन्देह करता था।

---

1 निजामुद्दीन के शब्द इस प्रकार है—
"जुवान सुर्ख सरसब्ज मी दिहद बाद।"
यह वाक्य नखशबी के तूतीनामा की एक कहानी पर आधारित है जो सस्कृत के शुक सप्तती (अर्थात् तोते की सत्तर कहानिया) पर आधारित है। इसका अथ था कि यदि मुकीम हरवी यह बात किसी से कहेगा तो वह जीवित नही बचेगा।
होदीवाला, स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री, 1, पृ० 505।

(3) वह बाबर के छोटे पुत्रों को भी गद्दी पर बैठाने के पक्ष में नहीं था।

(4) खलीफा ने यह षडयंत्र अपनी शक्ति को स्थायी बनाने के लिए किया था।

(5) महदी ख्वाजा अपनी जनप्रियता तथा प्रधान मन्त्री से अपने अच्छे सम्बन्ध के कारण चुना गया था।

(6) यह षडयन्त्र खलीफा द्वारा ही प्रारम्भ किया गया था।

(7) महदी ख्वाजा गद्दी पर बैठना चाहता था पर खलीफा के विषय में उसके विचार अच्छे नहीं थे तथा वह उसे नीच समझता था।

(8) निजामुद्दीन ने इस षड्यन्त्र का ज्ञान अपने पिता से प्राप्त किया जो वहां उपस्थित था तथा षड्यन्त्र की असफलता का श्रेय भी उसी को है।

अबुल फजल इस घटना का वर्णन इस प्रकार करता है—

"जब हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी (बाबर) अत्यधिक रुग्ण हो गये तो मीर खलीफा मनुष्य के मानवी स्वभाव[1] के कारण जहां बानी (हुमायू) से शंकित होने की वजह से अल्पदर्शी बनकर महदी ख्वाजा को सिंहासनारूढ़ करना चाहता था और ख्वाजा भी मूर्खता बदमस्ती एवं अनाम के कारण मिथ्या पूर्ण विचारों को अपने मस्तिष्क में स्थान देकर नित्यप्रति दरबार में उपस्थित होकर भीड़भाड़ एकत्र किया करता था। अ ततोगत्वा दूरदर्शी सत्यवादियों द्वारा मीर खलीफा सन्मार्ग पर आ गया और उसने यह विचार त्याग दिया और ख्वाजा को मना कर दिया कि वह दरबार में उपस्थित न हो और यह घोषणा करा दी कि कोई भी उसके घर न जाए। ईश्वर की कृपा से सब काम ठीक हो गया और सत्य अपने केन्द्र पर पहुंच गया।"[2]

तारीखे शाही के लेखक अहमद यादगार ने भी निजामुद्दीन के वर्णन का समर्थन किया है।[3]

इन समकालीन लेखकों के वर्णनों से स्पष्ट है कि यह षडयन्त्र बाबर की बीमारी के समय प्रारम्भ हुआ था तथा उसकी मृत्यु के समय तक इसका अन्त हो गया यद्यपि इसका असर हुमायू के राजतिलक तक रहा।

---

1 अकबरनामा (पृ० 117) आलमे बशरियत' शब्द का प्रयोग करता है।

2 वही।

3 तारीखेशाही, पृ० 130 135। कविता में हुमायूनामा के अनुसार खलीफा ने षडयन्त्र का प्रारम्भ किया। इस पुस्तक से ऐसा अनुमान होता है कि काबुल में कुछ लोग हुमायू को राज व तथा तुर्की अमीरों के नेतृत्व के लिए योग्य नहीं समझते थे। ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 29-30।

हुमायू के शासन काल मे महदी ख्वाजा तथा खलीफा

हुमायू के गद्दी पर बैठने के पश्चात खलीफा शासकीय तथा राजकीय कार्यों से मुक्त कर दिया गया। उसका नाम ही हुमायू के शासन काल म लुप्त हो जाता है। *समकालीन ग्रन्थो मे इसके पश्चात कुछ ही स्थाना मे उसका उल्लेख मिलता* है। 1537 ई० मे उसकी बहन सुल्तानम का विवाह हिन्दाल मिर्जा से हुआ।[1] इस अवसर पर खालीफा ने अमूल्य उपहार दिये। खलीफा के पुत्र मुहिब अली खा तथा खालिग बेग राज्य की सेवा मे रहे।[2] खलीफा का छोटा भाई जुनायद बरलास बाबर के समय जौनपुर तथा अन्य स्थाना का गवनर था तथा हुमायू के राज्यकाल मे अपनी मत्युपयन्त वह हुमायू के लिए युद्ध करता रहा।[3] इस तहर इतना तो स्पष्ट है कि खलीफा के परिवार को कोई हानि नही पहुचायी गयी, न उसे कुछ दण्ड ही दिया गया, किन्तु उसकी शक्ति समाप्त हो गयी। इससे सिद्ध होता है कि उसने हुमायू के गद्दीपर बैठने म अडचनें उपस्थित की थी। वह कब तक जीवित रहा, यह भी बताना कठिन है। वह बाबर से बडा था। ऐसा प्रतीत होता है कि हुमायू के शेरशाह से पराजित होन तथा साम्राज्य खो देने की तिथि (1540 ई०) तक उसकी मत्यु हो चुकी थी।

महदी ख्वाजा के विषय मे भी हम अधिक ज्ञान नही प्राप्त होता। तारीखे इब्राहीमी से पता चलता है कि वह कालपी का गवनर नियुक्त किया गया।[4] इससे स्पष्ट है कि हुमायू ने उसे क्षमा कर दिया। गुलबदन बेगम न भी हिन्दाल के विवाह के वणन के समय उसका उल्लेख किया।[5] ऐसा प्रतीत होता है कि इसके कुछ ही दिन पश्चात उसकी मत्यु हो गयी। कदाचित खानजादा बेगम के कोई पुत्र नही था किन्तु उसकी दूसरी पत्नी से जाफर ख्वाजा नामक एक पुत्र था। महदी ख्वाजा ने अमीर खुसरु की कब्र की चारदीवारी बनवायी तथा सगमरमर के एक फलक पर शिलालख अकित कराया।[6]

---

1 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, प०126-27।

2 ब्लाखमैन, आईने अक्बरी,प० 463 66।

3 असकिन, भाग 2 प०110, 122, 123, 131,133,139, गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, भूमिका, पृ० 26, फुटनोट।

4 तारीखे इब्राहीम, रिजवी, हुमायू, 2, पृ० 4।

5 गुलबदन, हुमायूनामा, पृ० 26।

6 मिर्जा,लाइफ एण्ड वक्स ऑफ अमीर खुसरु, पृ० 138।

षड्यन्त्र की असफलता के कारण

यह षडयन्त्र, जैसा डॉ० ईश्वरी प्रसाद लिखते है, असफल नही हुआ बल्कि उड गया।"[1] वास्तव मे षडयन्त्र की बातो को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि यह एक विचार अथवा योजना की ही भाति था तथा इस योजना को कार्यान्वित करने के प्रयत्न नही हुए। खलीफा ने अपने उम्मीदवार के विचार जानने के बाद तत्काल अपना सहयोग त्याग दिया।

वास्तव मे खलीफा का उम्मीदवार योग्य नही था। निजामुद्दीन के वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि उसका मस्तिष्क ठीक नही था तथा उसमे कुछ पागलपन के चिह्न मौजूद थे।[2] इस बात का समर्थन अहमद यादगार भी करता है।[3] इसमे कोई सन्देह नही कि वह न तो महत्त्वाकाक्षी था न उसमे अपना व्यक्तित्व ही था। अन्यथा खलीफा के पीछे हट जाने पर भी उसने राज्य प्राप्त करने का कुछ न कुछ प्रयत्न अवश्य किया होता। ऐसे व्यक्ति को गद्दी पर बठाने का प्रयास ही गलत था।

महदी ख्वाजा तथा हुमायू मे हुमायू अधिक योग्य था।[4] हुमायू के चारित्रिक दोष, जो बाद मे प्रखर हो उठे तथा उसकी असफलता के कारण बने, अभी तक प्रकट नही हुए थे। महदी ख्वाजा ऐसा मेधावी व्यक्ति भी नही था कि उसे हुमायू से अधिक उपयुक्त कहा जा सके। वश से भी हुमायू का स्थान अधिक ऊचा था। हुमायू की माता माहम बेगम बुद्धिमती महिला थी तथा राज्य काय मे उसकी सहायता भी मूल्यवान थी।

खलीफा की सबसे बडी भूल बाबर के सभी पुत्रो को छोडकर महदी ख्वाजा

---

1 "The plot did not fail but fizzled out," (ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 36)।

2 निजामुद्दीन के शब्द है 'बशायबय, जुनू मन्सूब बूद।' होदीवाला, 1, पृ० 505।

3 तारीखे शाही, पृ० 131।

4 कुछ विद्वानो ने महदी ख्वाजा तथा हुमायू म महदी ख्वाजा को अधिक उपयुक्त बताया है। प्रो० रशब्रुक विलियम्स लिखते है कि 'Khalifah may have been convinced that Mahdi Khwajah would make a better emperor than Humayun Indeed Humayun's conduct and bearing must have caused grave anxiety to all who had the welfare of the kingdom at heart" (विलियम्स, ऐन एम्पायर बिल्डर, पृ० 171)।

का पक्ष लेना था। मुगल वश मे साम्राज्य पुत्रो मे विभाजित होने की परम्परा थी। बाबर के अमीर उसके वश के प्रति स्वामिभक्त थे तथा उसके स्थान पर किसी दूसरे को गद्दी पर बैठाने के प्रयत्न मे गहयुद्ध निश्चित ही होता। हुमायू के सभी भाई इस परिस्थिति मे उसको सहयोग देते।

खलीफा के विचार दोषपूण थे। हुमायू को गद्दी से वचित कर वह बाबर के वश से राजत्व को समाप्त कर देना चाहता था। इस तरह बाबर के सभी भारतीय युद्ध व्यथ हो जाते तथा बाबर के वश का अन्त हो जाता। खलीफा का निणय मुगल साम्राज्य तथा बाबार के वश के लिए मृत्यु सदेश था।

3. हुमायू की समस्याए

बाबर ने जो साम्राज्य स्थापित किया वह उसके जीवन काल मे न तो सगठित हो सका था, न उसके शत्रु ही पूर्ण रूप से पराजित हुए थे। इसके अतिरिक्त उसकी मत्यु के पश्चात कुछ अन्य समस्याए भी सामने आ गयी थी। इस तरह खलीफा का षड्यन्त्र सम्राट हुमायू के भविष्य की कठिनाइयो की सूचना थी। उसकी कठिनाइयो को हम दो भागो मे विभाजित कर सकते हैं—

(1) आन्तरिक समस्याए,

(2) बाह्य समस्याए।

हुमायू की आन्तरिक समस्याए

मुगल साम्राज्य

बाबर की मत्यु के समय मुगल साम्राज्य आक्सस नदी से बिहार तक फैली हुआ था। सिन्ध के पश्चिम, काबुल, गजनी तथा कन्धार पर बाबर का पूर्ण अधिकार था किन्तु हिन्दुकुश के पहाडियो मे रहने वाले कबीले के लोगो ने उसकी अधीनता नाममात्र को ही स्वीकार की थी। सिन्ध नदी, काबुल, गजनी तथा कन्धार के बीच जलालाबाद, पशावर कोहदमन, स्वात तथा बजौर बाबर के अधिकार मे थे। उत्तरी तथा दक्षिणी सिन्ध मे उसके नाम से खुतबा पढा जाता था।[1] इसके पूर्व पजाब, मुल्तान तथा सतलज और बिहार के बीच के भाग (दिल्ली, सिरसा हासी इत्यादि) भी उसके अधिकार मे थे। उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे मालवा, राजपूताना, बयाना, रणथम्भौर ग्वालियर तथा चन्देरी उसके साम्राज्य की सीमा बनाते थे। दक्षिणी बिहार के पहाडी भाग भी पूर्णतया उसके अधिकार मे नही थे। इस क्षेत्र पर अफगान तथा हिन्दू सरदारो का राज्य था।[2] इस तरह उत्तर मे हिमालय दक्षिण मे मालवा तथा बुन्देलखण्ड, पूर्व मे बगाल तथा उत्तर-पश्चिम मे आक्सस उसके साम्राज्य की सीमाए थी। गगा-यमुना के दोआब

1 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 526 27। बाबर के मुल्तान पर अधिकार के लिए देखिए, अर्सकिन 1, पृ० 398। अबुहर, सिरसा, हासी तथा हिसार बाबर के साम्राज्य मे थे किन्तु गनेशगढ हनुमानगढ तथा जीतपुरा उसमे सम्मिलित नही थे। बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 29।

2 शरण, प्राविन्शियल गवनमेन्ट ऑफ दि मुगल्स, पृ० 46 47।

का भाग मुगल साम्राज्य का प्रमुख केन्द्र था।

बाबर ने अपने साम्राज्य का प्रशासकीय विभाजन नहीं किया था। अतएव लोदी सुल्तानो के समय के ही विभाजन पर राज्य का शासन होता था। साम्राज्य दो तरह की राजनीतिक इकाइयो मे बटा हुआ था ऐसी सरकारें जो पूर्ण रूप से शासनाधीन थी तथा वे जो स्थानीय राजाओ अथवा ऐसे जमीदारो के अधीन थी जिन्होंने अधीनता तो स्वीकार की थी किन्तु उन्ह आन्तरिक स्वतन्त्रता प्राप्त थी ऐसे राज्य मुगल सम्राट को निर्धारित कर देते थे। इन राज्यो का क्षेत्रफल मुगल साम्राज्य के लगभग 1/5 के बराबर था।[1] बाबर ने पानीपत तथा खानवा के युद्धो के पश्चात् प्राप्त भूभाग को अपने उमराओ मे विभाजित कर दिया था। ये उमरा उन क्षेत्रो के शासन के लिए उत्तरदायी थे। वहा का राजस्व वसूल करना तथा शासन का उत्तरदायित्व उन पर था। ये उन स्थाना के स्थायी स्वामी नही थे और उनका स्थानान्तरण भी होता था।[2]

शासन प्रबन्ध—मुगल साम्राज्य बडा अवश्य था किन्तु उसका सगठन अपूर्ण था। बाबर स्वय अपनी आत्मकथा मे लिखता है कि योग्य व्यक्तियो को दूरवर्ती परगना मे भेजकर शासन प्रबन्ध कराने का अवसर नही प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त बाबर म शासन की यो यता भी नही थी। बाबर को यह साम्राज्य जल्दी मे प्राप्त हुआ था और इसके सगठन का प्रबन्ध ढीला था।[3] प्रान्तीय केन्द्रो मे गवनर और दीवान तथा नीचे के भागो मे कोतवाल और शिक्दार राज्य के प्रमुख अधिकारी थे। ये अधिकारी जागीरदारो से सहायता प्राप्त करते थे। देहात के भाग केन्द्रीय सरकार से पूण रूप से नियन्त्रित नही थे। बाबर न इसके लिए कोई प्रयत्न नहीं किया था। इसका परिणाम यह हुआ कि शासन केवल शक्ति के बल पर आधारित था।[4] जनसाधारण पर मुगल साम्राज्य की स्थापना का कोई विशेष

---

1 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 520 21। बाबर लिखता है कि भीरा से बिहार तक जो प्रदेश उसके अधीन थे उनका राजस्व बावन करोड था, जिसमे आठ अथवा नौ करोड उन रायो तथा राजाओ के परगनो से प्राप्त होते थे जिन्होंने अधीनता स्वीकार कर ली थी तथा जिन्हे ये परगने स्थायी रूप से दिये गये थे।

2 शरण, प्राविन्शियल गवनमेण्ट ऑफ दि मुगल्स, पृ० 48।

3 "The kingdom had been hastily acquired and its provinces loosely knit" (बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 30)।

4 "The scheme of Government was still saifi (by the sword) not qalami (by the pen)" (कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पृ० 21)।

प्रभाव नहीं हुआ था।[1] मुगल साम्राज्य की जड़ समाज के निचले स्तर तक नहीं पहुंच सकी थी। जनता मुगलों को विदेशी समझती थी जिसके कारण उनमें विद्वेष की भावना थी तथा वे कभी भी विद्रोह कर सकते थे। मुगल साम्राज्य की स्थापना हुए अभी केवल पांच वर्ष हुए थे और यह काल युद्ध और संघर्ष का काल था। जनता में अफगानों के मित्रों की कमी न थी और ये लोग भी दूर-दूर तक फैले हुए थे। इस तरह हुमायूं के सम्मुख शासन को संगठित करने की समस्या सबसे महत्त्वपूर्ण थी।

रोजकोष—मुगल साम्राज्य की आर्थिक अवस्था शोचनीय थी। बाबर ने पानीपत के पश्चात धन का अपव्यय किया। हुमायूं, कामरान, अस्करी तथा अन्य अमीरों को इनाम देने के अतिरिक्त ईराक, खुरासान, समरकन्द में सम्बन्धियों को उपहार भेजे गये और काबुल तथा वरसक की घाटी (बदख्शां में) के प्रत्येक नर-नारी, दास, स्वतन्त्र तथा बालिग एवं नाबालिग को एक एक शाहरुखी इनाम में दी गयी।[2] वह अपने दान के कारण कलन्दर कहा जाता था।[3] इस अपव्यय का परिणाम दो वर्ष के पश्चात् ही स्पष्ट हो गया। वह अपनी आत्मकथा में लिखता है कि अक्टूबर 1529 तक सिकन्दर और इब्राहीम लोदी का कोष समाप्त हो चला था और उसे अपने उच्च अधिकारियों पर तीस प्रतिशत कर लगाना पड़ा।[4] इस तरह जिस समय हुमायूं गद्दी पर बैठा मुगल साम्राज्य

"The administrative system was inefficient" (बनर्जी, हुमायूं, पृ० 30)।

'Had Babur been as successful in administration as he was in fighting the troubles of Humayun's reign would never have occurred As it was he bequeathed to his son a monarchy which could be held together only by continuance of war conditions, which in times of peace was weak, structureless and invertebrate' (विलियम्स, ऐन एम्पायर बिल्डर, पृ० 162)।

1 डॉ० बनर्जी का यह कथन (बनर्जी, हुमायूं, 1, पृ० 31) कि जनता मुगलों के आगमन से इस कारण प्रसन्न थी कि मुगल संस्कृति लोदियों की संस्कृति से अधिक स्वागत योग्य थी, सही नहीं प्रतीत होता, क्योंकि मुगल संस्कृति का जो अर्थ हम समझते हैं उसकी स्थापना बाबर नहीं कर पाया था। ऐसी परिस्थिति में उसकी कल्पना करना गलत होगा।

2 बाबरनामा, बेवरिज, पृ 522 23।

3 अयोध्या की बाबरी मसजिद का शिलालेख।

4 विलियम्स, ऐन एम्पायर बिल्डर, पृ० 162।

की आर्थिक अवस्था शोचनीय थी तथा राजकोष रिक्त था। रशब्रुक विलियम्स का यह कथन सत्य है कि हुमायू की कठिनाइयो मे उसकी आर्थिक अवस्था का बहुत बडा हाथ था।[1]

सेना—बाबर ने अपने जीवन भर युद्ध और सघर्ष किया था। उसकी सेना मे ऐसे लोग काफी सख्या मे थे जिन्होने उसके साथ अनेक वर्षों तक रहकर युद्ध किया था। ऐसी स्थिति म बाबर के साथ उनका व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित हो गया था। बाबर की सेना म भिन्न भिन्न देशो के लोग थे, जैसे चगताई, मुगल, ईरानी, अफगानी तथा भारतीय। इन भिन्न भिन्न धर्मों, सम्प्रदायो और जातियो के व्यक्तियो को एक सूत्र मे बाधने का उत्तरदायित्व बाबर पर था। उसकी मृत्यु के पश्चात् इन लोगो का दृष्टिकोण क्या होगा यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न था। सेना का सगठन कबीलो के आधार पर था तथा उनका नेतृत्व भी उन्ही जातियो के लोगो पर था। व्यक्तिगत तथा कबायली (जातीय) द्वेष के कारण सेना मे पूर्ण एकता असम्भव थी। द्वेष का परिणाम सकट के समय म राज्य के लिए भयकर हो सकता था। इनम बहुत से ऐसे सरदार थे जो वृद्ध थे तथा जिन्हे हुमायू की योग्यता पर अधिक विश्वास नही था। ऐसे लोग कहा तक हुमायू के पक्ष का समर्थन करेंगे, यह भी एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न था। इन अमीरो म ख्वाजा खलीफा तथा ख्वाजा कला ऐसे व्यक्ति भी थे जिन्होने बाबर के साथ अनेक परिस्थितियो मे सुख दुख झेला था। इनके अतिरिक्त कुछ लोग ऐसे भी थे जो रक्त सम्बन्ध से बधे थे। कुछ अन्य लोग भी थे जो बाबर के आमन्त्रण पर भारत आये थे तथा उन्होने बाबर की भारतीय विजयो मे प्रमुख भाग लिया था।

क्या हुमायू म ऐसी योग्यता थी कि वह भिन्न भिन्न व्यक्तियो को एक सूत्र म बाँध सके ? हुमायू ने बाबर के प्रमुख युद्धो म भाग अवश्य लिया था किन्तु उसने अपनी युद्धकला का ऐसा प्रदर्शन नही किया था कि जो बाबर के अनुभवो के समकक्ष उत्साह प्रकट कर सकता। इस विश्वास की आवश्यकता इस कारण और बढ गयी थी क्योकि मुगल साम्राज्य अभी-अभी स्थापित हुआ था और भारत मे अभी भी मुगल विदेशी समझे जाते थे।[2]

हुमायू के भाई

इन कठिन परिस्थितियो म हुमायू को अपने भाइयो स सहायता प्राप्त हो सकती

---

1 विलियम्स, एन ऐम्पायर बिल्डर, पृ० 162।

2 अमीरो के बारे मे यह महत्त्वपूर्ण है कि इन्होने हुमायू का साथ दिया तथा विद्रोह नही किया। जिन लोगो ने हुमायू से विद्रोह किया वे या तो के निकट सम्बन्धी थे अथवा उसके भाई।

थी। किन्तु दुर्भाग्यवश भाइयों का सहयोग उसे न प्राप्त हो सका। हुमायूं के तीन भाई थे—कामरान, अस्करी और हिन्दाल। कामरान बाबर की पत्नी गुलरुख बेगचिक का पुत्र था। उसका जन्म 1514 ई० में तथा अस्करी का 1516 ई० में हुआ था। बाबर की एक और पत्नी दिलदार आगाचह से हिन्दाल का जन्म 1519 ई० में हुआ था। इस तरह बाबर की मृत्यु के समय हुमायूं की अवस्था 23 वर्ष, कामरान की 17 वर्ष अस्करी की 15 वर्ष तथा हिन्दाल की 12 वर्ष थी।

बाबर की आत्मकथा तथा समकालीन इतिहासकारों के वर्णनों से स्पष्ट है कि बाबर ने अपने सभी पुत्रों को शिक्षा तथा शासन का अनुभव प्राप्त करने की सुविधा प्रदान की थी। कामरान 15 वर्ष की अवस्था में काबुल का गवर्नर नियुक्त हुआ तथा हिन्दाल 11 12 वर्ष की अवस्था में बदख्शां का गवर्नर बना। भारत में जैसे हुमायूं ने पानीपत तथा खानवा के युद्धों में भाग लिया था उसी तरह अस्करी 13 वर्ष की अवस्था में घाघरा की लड़ाई में लड़ा। 1522 ई० में जब कामरान की अवस्था केवल आठ वर्ष की थी, बाबर ने इस्लामी कानून पर उसकी शिक्षा के लिए एक कविता लिखी थी। (दर फिकह मुबाइयान)।[1] जनवरी 1526 में जब उसने गाजी खां के पुस्तकालय से हुमायूं को पुस्तकें भेजी तो उसने कामरान के लिए भी कुछ पुस्तकें भेजी। जनवरी 1529 ई० में बाबर ने भारत में लिखी अपनी कविताओं का संग्रह कामरान तथा हुमायूं दोनों को भेजा तथा हिन्दाल को, जिसकी अवस्था केवल 10 11 वर्ष की थी, उसने बाबरी लिपि के अक्षर भेजे।[3]

उपर्युक्त घटनाएं इस बात का प्रमाण हैं कि बाबर अपने चारों पुत्रों को सुखी तथा सम्पन्न देखना चाहता था। इस कारण उन पर विशेष कृपादृष्टि होनी स्वाभाविक थी। शिक्षा के अतिरिक्त बाबर की इच्छा साम्राज्य के विषय में क्या थी, यह बताना कठिन है, किन्तु इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि पांच वर्ष तक शासन करने के कारण कामरान का सम्पर्क काबुल और कन्धार से अधिक हो गया था और ऐसी स्थिति में हुमायूं के लिए इन क्षेत्रों को अपने अधिकार में रखना सरल नहीं था।

इसके अतिरिक्त मृत्यु के पूर्व बाबर ने निश्चित कर दिया था कि हुमायूं और कामरान का भाग छः और पांच के अनुपात में होगा। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि बाबर के चाचा और पिता में भी इसी तरह जागीरों का बंटवारा हुआ था। सबसे बड़े चचा सुलतान अहमद मिर्जा को समरकन्द तथा उसके निकट

1 बनर्जी, हुमायूं, पृ० 51 52।

2 बाबरनामा, बेवरिज, पृ 460।

3 वही, पृ० 642।

के क्षेत्र प्राप्त हुए थे। ये भाग उसके सभी भाइयो मे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण थे। दूसरे चाचा सुल्तान महमूद मिर्जा को उससे कम था। उसके छोटे चचा उलूग मिर्जा को इनसे भी कम भाग प्राप्त हुए थे। इसी तरह बाबर ने भी अपने पुत्रो म विशेषत कामरान का अनुपात निश्चित कर हुमायू के सामने एक बडी सीमा उपस्थित कर दी थी। इस सम्बन्ध म एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि बाबर ने केवल कामरान और हुमायू का ही अनुपात निश्चित क्या किया? अपने दो छोटे पुत्रो के बीच उसने क्या कोई अनुपात निश्चित नही किया? यह कामरान के प्रति प्रेम के कारण था, अथवा बाबर यह समझता था कि कामरान महत्त्वाकाक्षी है तथा अनुपात निश्चित न होने पर वह समस्या उपस्थित करेगा, यह बताना कठिन है।

मृत्यु के पूर्व बाबर ने हुमायू को यह आज्ञा दी थी कि वह अपने भाइयो के प्रति कोई ऐसा व्यवहार न करे जिससे उन्ह दुख और कष्ट हो।[1] इस तरह बाबर ने हुमायू का अपने भाइयो के प्रति नीति को भी निश्चित कर दिया था। इस सम्बन्ध म कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित होते है। नयी परिस्थिति मे हुमायू के प्रति उसके भाइयो का मनोभाव बताना कठिन था। कामरान का अनुपात निश्चित कर बाबर ने उसे प्रोत्साहित करने का तो अवसर दिया ही था साथ ही अपने अन्य पुत्रो म इससे विद्वेष की भावना को भी जन्म दे दिया था। नयी स्थिति म भाइयो के बीच साम्राज्य के विभाजन की माग के लिए हुमायू को तैयार रहना था। सबसे कठिन समस्या इस कारण उपस्थित हो गयी थी कि प्रत्येक भाई के समर्थक कुछ मुगल अमीर थे जो अपने लाभ के लिए इन्ह आपस मे झगडा करने के लिए प्रोत्साहित किया करते थे।

बाबर के सम्बन्धी

हुमायू के गद्दी पर बैठने के समय मध्य एशिया के कई प्रमुख वशो के वशज बाबर की सेना मे उपस्थित थे। इनम कई के साथ बाबर ने वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया था। बादशाह की मृत्यु के पश्चात इनम सशय, भय, तथा आशा का होना स्वाभाविक था। नये शासक के आगमन से ये सम्बन्धी उससे उन्नति का पद, अच्छी जागीरें इत्यादि प्राप्त करना चाहते थे। इनमे से बहुत से ऐसे थे जिन्होने मध्य एशिया म अपने पूर्वजो की भूमि का अधिकार मे रखने म असफल होकर, भारत म शरण ली थी तथा यहा उन्ह बाबर से पद तथा आदर प्राप्त हुआ था।[2]

इस समय मुगल दरबार मे दो वशो के वशज विशेष महत्त्व के थे। यूनुस

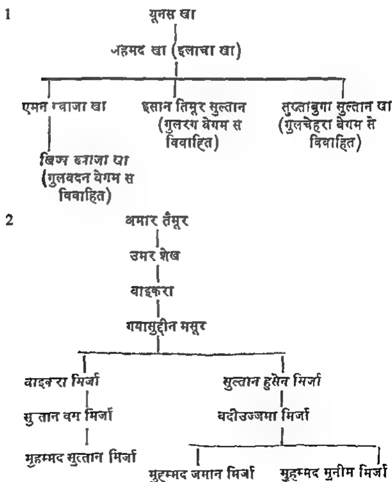
---

1 विलियम्स, एन एम्पायर बिल्डर, प० 174।

2 तारीख खानदान तिमूरिया, तारीखे अलफी।

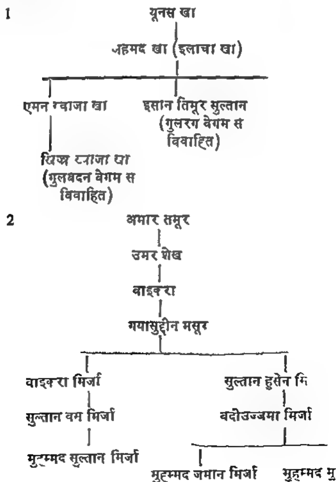
खा के वंश से सम्बंधित व्यक्तियों में इसान तैमूर, तुख्ताबुगा सुल्तान तथा खिज्र ख्वाजा खा प्रमुख थे।[1] बाबर ने अपनी तीन पुत्रियों का विवाह इनसे किया था। इसके अतिरिक्त वली खूब मिर्जा भी था, जिसे मुगल सुल्तान कहा गया है, किन्तु इसके विषय में हमें अधिक ज्ञान प्राप्त नहीं है।

द्वितीय वंश के अमीरों में खुरासान के मिर्जा थे, जिनमें मुहम्मद जमान मिर्जा तथा मुहम्मद सुल्तान मिर्जा प्रमुख थे। मुहम्मद जमान मिर्जा खुरासान के सुल्तान हुसैन बाइकरा का पौत्र था।[2] इसके पितामह की मृत्यु (5 मई 1506 ई०) के पश्चात उजबेकों ने खुरासान पर अधिकार कर लिया। मुहम्मद जमान मिर्जा भागकर काबुल बाबर की शरण में आया। यहां बाबर ने अपनी पुत्री मासूमा



खाँ के वंश से सम्बन्धित व्यक्तियों में ईसान तैमूर, तुख्ता ख्वाजा खाँ प्रमुख थे।[1] बाबर ने अपनी तीन पुत्रियाँ ... था। इसके अतिरिक्त वली ख़ूब मिर्ज़ा भी था, जिसे मुग़ ... किन्तु इसके विषय में हमें अधिक ज्ञान प्राप्त नहीं है।

द्वितीय वंश के अमीरों में खुरासान के मिर्ज़ा थे, जि... तथा मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा प्रमुख थे। मुहम्मद ज़म... सुल्तान हुसैन बाइक़रा का पौत्र था।[2] इसके पितामह की ... के पश्चात् उज़बेगों ने खुरासान पर अधिकार कर लिया ... भागकर काबुल बाबर की शरण में आया। यहाँ बाबर



सुल्तान बेगम म उसका विवाह कर दिया।[1] उसी वप यह बल्ख का गवनर नियुक्त किया गया। माच अप्रल, 1526 ई० म यह काम्कानकरा सुल्तान द्वारा वहा से भगा दिया गया। मुहम्मद जमान भागकर भारत आया तथा आगरा मे बाबर से मिला। खानवा के युद्ध मे तथा पूव म अफगाना के विरुद्ध इसने मुगल सेना के साथ भाग लिया। बाबर ने प्रसन्न होकर इसे (13 अप्रैल 1529 ई० को) सरोपा (सिर से पर तक का वस्त्र), एक तलवार एक पेटी एक तीपूचाक घोडा, तथा छतरी प्रदान की तथा जौनपुर का गवनर बनाया।[3] इसके पश्चात बाबर की बीमारी तथा उसकी मत्यु के समय तक मुहम्मद जमान के विषय मे हमे अधिक जानकारी नही है।

मुहम्मद सुल्तान मिर्जा भी तैमूर का वशज था तथा मुहम्मद जमान मिर्जा का चचेरा भाई था। खुरासान तथा मध्य एशिया से यह भी मुहम्मद जमान मिर्जा के साथ भागकर भारत आ गया था। उच्च वश का होने के कारण यह भी शक्ति प्राप्त करने के लिए सदा उत्सुक तथा उतावला रहता था। बाबर अपने दोना दामादा का आदर करता था तथा उन्ह सुखी रखना चाहता था। राजवश के होने के कारण दोनो मिर्जाआ का राजसी लोभ समाप्त नही हुआ था। बाबर के सद्‌व्यवहार म अमीरा मे भी इनका मान बढ गया था। ये लोग भी वश तथा बाबर के व्यवहार के कारण अपने को गद्दी के निकट उत्तराधिकारिया म से समझते थे। मिर्जाआ का अपन पूवजा के देश मे कोई स्थान नही था। इस तरह भारत मे अपना राज्य स्थापित करने की आकाक्षा सदा इनके मन मे बनी रही। बाबर की दया ने इस तरह हुमायू के राज्य मे इनके विद्रोह का बीज डाल दिया।

मीर मुहम्मद महदी ख्वाजा तथा प्रधान मन्त्री खलीफा का वणन हम ऊपर कर आये है। इन प्रमुख अमीरो के अतिरिक्त भी बहुत से उच्च कुल के तथा योग्य अमीर इस समय भारत मे मुगल सेना मे उपस्थित थे।

हुमायू की बाह्य समस्याए

उत्तरी भारत की राजनीतिक अवस्था

इन आन्तरिक समस्याओ के अतिरिक्त हुमायू के सम्मुख कई महत्त्वपूण बाह्य समस्याए थी। आन्तरिक समस्याए तथा बाह्य समस्याए एक दूसरे को प्रभावित कर सकती थी। मुगल साम्राज्य की सीमा के निकट शक्तिशाली महत्त्वपूण राज्य

1 अहसानत् तवारीख, 1, पृ० 167।

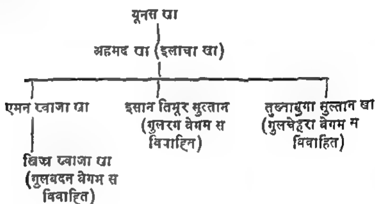
2 वही, प० 197 98, बाबरनामा, बेवरिज, प० 456।

3 बाबरनामा, पृ० 662 64।

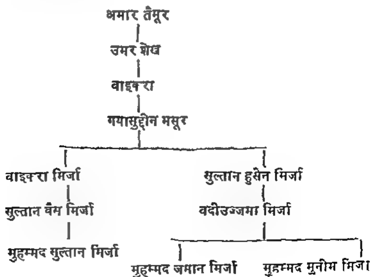
खां के वंश से सम्बन्धित व्यक्तियों में इसान तैमूर, तुख्ताबुगा सुल्तान तथा खिज्र ख्वाजा खां प्रमुख थे।[1] बाबर ने अपनी तीन पुत्रियों का विवाह इनसे किया था। इसके अतिरिक्त वली खूब मिर्जा भी था जिसे मुगल सुल्तान कहा गया है, किन्तु इसके विषय में हमें अधिक ज्ञान प्राप्त नहीं है।

द्वितीय वंश के अमीरों में खुरासान के मिर्जा थे जिनमें मुहम्मद जमान मिर्जा तथा मुहम्मद सुल्तान मिर्जा प्रमुख थे। मुहम्मद जमान मिर्जा खुरासान के सुल्तान हुसेन बाइकरा का पौत्र था।[2] इसके पितामह की मृत्यु (5 मई 1506 ई०) के पश्चात उजबेकों ने खुरासान पर अधिकार कर लिया। मुहम्मद जमान मिर्जा भागकर काबुल बाबर की शरण में आया। यहां बाबर ने अपनी पुत्री मासूमा

1



2



सुल्तान बेगम से उसका विवाह कर दिया।[1] उसी वर्ष यह बल्ख का गवर्नर नियुक्त किया गया। मार्च-अप्रैल, 1526 ई० मे यह कास्कानकरा सुल्तान द्वारा वहा से भगा दिया गया।[2] मुहम्मद जमान भागकर भारत आया तथा आगरा मे बाबर से मिला। खानवा के युद्ध म तथा पूर्व मे अफगानो के विरुद्ध इसने मुगल सेना के साथ भाग लिया। बाबर ने प्रसन्न होकर इसे (13 अप्रैल 1529 ई० को) सरोपा (सिर से पर तक का वस्त्र), एक तलवार, एक पेटी एक तीपूचाक घोडा, तथा छतरी प्रदान की तथा जौनपुर का गवर्नर बनाया।[3] इसके पश्चात बाबर की बीमारी तथा उसकी मृत्यु के समय तक मुहम्मद जमान के विषय म हमे अधिक जानकारी नही हैं।

मुहम्मद सुल्तान मिर्जा भी तैमूर का वशज था तथा मुहम्मद जमान मिर्जा का चचेरा भाई था। खुरासान तथा मध्य एशिया से यह भी मुहम्मद जमान मिर्जा के साथ भागकर भारत आ गया था। उच्च वश का होने के कारण यह भी शक्ति प्राप्त करने के लिए सदा उत्सुक तथा उतावला रहता था। बाबर अपने दोना दामादो का आदर करता था तथा उन्हे सुखी रखना चाहता था। राजवश के होने के कारण दोना मिर्जाओ का राजसी लोभ समाप्त नही हुआ था। बाबर के सदव्यवहार से अमीरो मे भी इनका मान बढ गया था। ये लोग भी वश तथा बाबर के व्यवहार के कारण अपने को गद्दी के निकट उत्तराधिकारियो मे से समझते थे। मिर्जाओ का अपने पूर्वजो के देश म कोई स्थान नही था। इस तरह भारत म अपना राज्य स्थापित करने की आकाक्षा सदा इनके मन मे बनी रही। बाबर की दया ने इस तरह हुमायू के राज्य मे इनके विद्रोह का बीज डाल दिया।

मीर मुहम्मद महदी ख्वाजा तथा प्रधान मन्त्री खलीफा का वर्णन हम ऊपर कर आये है। इन प्रमुख अमीरो के अतिरिक्त भी बहुत से उच्च कुल के तथा योग्य अमीर इस समय भारत मे मुगल सेना म उपस्थित थे।

हुमायू की बाह्य समस्याए

उत्तरी भारत की राजनीतिक अवस्था

इन आन्तरिक समस्याओ के अतिरिक्त हुमायू के सम्मुख कई महत्त्वपूर्ण बाह्य समस्याए थी। आन्तरिक समस्याए तथा बाह्य समस्याए एक दूसरे को प्रभावित कर सकती थी। मुगल साम्राज्य की सीमा के निकट शक्तिशाली महत्त्वपूर्ण राज्य

1 अहसानत् तवारीख, 1, पृ० 167।

2 वही, पृ० 197 98, बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 456।

3 बाबरनामा, पृ० 662 64।

थे। इन राज्यों म मुगल साम्राज्य की दृष्टि म निम्नलिखित राज्य तथा शक्तियां महत्त्वपूर्ण थीं—

1 गुजरात	5 मालवा
2 बिहार म अफगान	6 खानदेश
3 बंगाल	7 कश्मीर
4 सिंध तथा मुल्तान	8 राजपूताना

1 गुजरात

गुजरात मध्य युग के इतिहास म अपनी भौगोलिक परिस्थितियां, संस्कृति तथा उद्योग धन्धो के कारण प्रसिद्ध रहा है। मोती के काम, चित्रकला, तथा भांति भांति के सूती और रेशमी कपडो तलवार तथा कटारों इत्यादि के निर्माण के लिए यह बहुत ही प्रसिद्ध था। यहा से विदेशो को सामान जाता था जिससे बहुत आय हो जाती थी। यहा की उपजाऊ भूमि विशेषत रुई की खेती के लिए प्रसिद्ध थी। अबुल फजल ने आईने अकबरी म गुजरात की एक बाग से तुलना की है जहा तरह तरह के फल पैदा होते थे।[1]

पौराणिक युग म भगवान श्रीकृष्ण की द्वारिका म मृत्यु होने के कारण गुजरात प्राचीन काल से ही हिंदू धर्म का प्रमुख स्थान माना जाता था। प्राचीन काल म यहा कई राजवंशों के उत्थान-पतन हुए। मध्य युग के इतिहास म मुहम्मद गोरी गुजरात के शासक द्वारा पराजित हुआ।[2] 1287 ई० म अलाउद्दीन के सेनानायक उलूग खा तथा नुसरत खा ने गुजरात पर अधिकार कर इसे दिल्ली सल्तनत म मिला दिया।[3] तुगलक साम्राज्य के विघटन के समय दिल्ली सल्तनत द्वारा नियुक्त गुजरात का अंतिम गवर्नर जफर खा जिसकी नियुक्ति 1391 ई० म हुई थी, 1396 ई० म स्वतंत्र हो गया। 1404 ई० में इसने सुल्तान मुजफ्फरशाह की उपाधि धारण की तथा गुजरात म एक नये राज्य की स्थापना की जो मुजफ्फरशाही वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इस वंश म सुल्तान महमूद बेगरा एक बहुत ही प्रसिद्ध सुल्तान हुआ (1458 1511 ई०)। उसकी मृत्यु के पश्चात 1511 ई० म मुजफ्फरशाह द्वितीय गद्दी पर बैठा। यह वीर तथा योग्य शासक था। इसने ईदर, मालवा तथा चित्तौड के साथ युद्ध किया। इसके आठ पुत्र थे जिनमे सिकन्दर सबसे बडा था। इसने अपने प्रत्येक पुत्र को अलग अलग जागीरें दी। बहादुर को कज (अहमदाबाद से 18

1 आईने अकबरी, 2, पृ० 246 47।

2 हबीबुल्ला, फाउण्डेशन आफ दि मुस्लिम रूल इन इण्डिया, पृ० 52 53।

3 लाल, हिस्ट्री ऑफ दि खल्जीज, पृ० 82 86।

मील), कोट (महमूदाबाद से 20 मील) और नवला (वलाह के नजदीक) प्राप्त हुआ।[1] बहादुर इससे सन्तुष्ट नही था। इसके अतिरिक्त बहादुर को अपने बड़े भाई सिकन्दर से भी भय था क्योंकि उसने बहादुर को समाप्त करने की योजना बनायी थी। इस कारण 1525 ई० मे बहादुर दिल्ली चला गया। मार्ग मे वह चित्तौड मे रुका। यहा राणा सागा तथा उनकी माता द्वारा उसका स्वागत हुआ।[2] यहा से वह मेवात आया। हसन खा मेवाती ने गुजरात पर आक्रमण करने मे उसकी सहायता के हेतु अपनी सेना देने का वचन दिया, किन्तु बहादुर ने अस्वीकार करते हुए उत्तर दिया कि अपने पिता के विरुद्ध युद्ध करने का उसका विचार नही है। यहा से बहादुर इब्राहीम के दरबार मे गया।

इस समय उत्तरी भारत मे हलचल मची हुई थी। बाबर भारत पर आक्रमण करने की तैयारी कर चुका था। दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम ने बहादुर का स्वागत किया किन्तु बाबर से लडने की तैयारी मे वह इतना व्यस्त था कि बहादुर की तरफ अधिक ध्यान न दे सका। बहादुर अफगान अमीरो मे बहुत ही जन-प्रिय हो गया और कदाचित् उसे दिल्ली की गद्दी पर बैठाने के लिए षडयन्त्र भी रचा गया।[3] इस कारण इब्राहीम लोदी बहादुर शाह से असन्तुष्ट हो गया। इसमे बहादुर शाह का कोई दोष नही था न उसने इस विचार को प्रोत्साहित ही किया था। बाबर अपनी आत्मकथा मे लिखता है कि जिस समय वह पानीपत के निकट था, बहादुर शाह ने उसको पत्र लिखा था। बाबर ने उसका उत्तर बहुत ही मीठी भाषा

---

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 46।

2 राणा के भतीजे ने बहादुर को अपने घर आमन्त्रित किया। यहा वह एक नर्तकी के रूप को देखकर चकित हो गया। राजपूत कुमार ने उसके निकट आकर कहा, "तुम्हे मालूम है, यह मुझे कहा मिली? यह अहमदनगर (हिम्मतनगर) के काजी की पुत्री है। जब राणा ने उस नगर को लूटा तो मैंने काजी को उसी के घर मे मार डाला तथा इस लडकी को उठा लाया जिससे इसे अन्य राजपूत न उठा ले जाए।" बहादुर इससे इतना क्रोधित हुआ कि उसने इस राजपूत को वही मार डाला। उपस्थित राजपूतो ने बहादुर को दण्ड देना चाहा। बडी कठिनता से राणा की मा के बीच-बचाव से उसकी रक्षा हो सकी। कामिस्सारियट, प० 280।

3 बेले, गुजरात, प० 278, तबकाते अकबरी (डे, भाग 3, प० 321) के अनुसार "क्योंकि अफगान अमीर सुल्तान इब्राहीम से घृणा करते थे अत वे इस बात की इच्छा करने लगे कि उसे हटाकर सुल्तान बहादुर को सिंहासनारूढ कर दें।"

"There seems however, no reason to think that Bahadur was privy to this plot' (कामिस्सारियट, पृ० 281)।

म दिया था तथा उसन अपन पास आमंत्रित किया था। बाबर शिकायत करता है कि बहादुर शाह उसके पास नही आया और बाद म गुजरात चला गया।[1]

इतना स्पष्ट है कि बहादुर शाह ने पानीपत के युद्ध मे भाग नही लिया तथा उसने दूर से ही पानीपत के युद्ध को देखा था।[2] इस युद्ध ने उसके मन पर बहुत प्रभाव डाला। भविष्य म बहादुर शाह की पराजय का एक बहुत बडा कारण उसके मन का भय था जो पानीपत के युद्ध से उसके मन म बैठ गया था। पानीपत के युद्ध का वणन करत हुए उसने बाद म कहा कि यह लडाई शीशे और पत्थर की लडाई थी जिसमे शीशा निश्चय ही टूटता, चाहे पत्थर शीशे पर पटका जाए, या शीशा पत्थर पर, अर्थात अफगाना (शीशा) की पराजय मुगला (पत्थर) के मुकाबिले म निश्चित थी।[3] अफगाना मे बहादुर शाह जनप्रिय हो गया था। इस कारण जौनपुर के अमीर उसके पास आये और उन्होंने उसे जौनपुर की गद्दी पर बैठने के लिए निमन्त्रित किया। बहादुर शाह जौनपुर जान के लिए तैयार था। उसी समय उसे गुजरात म परिस्थितियो क परिवतन का समाचार मिला।

1526 ई० के अप्रैल महीने के प्रथम सप्ताह मे उसके पिता मुजफ्फर शाह की मत्यु हो गयी। उसकी मत्यु के पश्चात अमीरा के सम्मुख उत्तराधिकारी की समस्या आयी। कुछ अमीर मुजफ्फर शाह के प्रथम पुत्र सिकन्दर को, कुछ उसके दूसरे लडके बहादुर का तथा कुछ तीसरे लडके लतीफ खा को गद्दी पर बैठाना चाहत थे। सिकन्दर अपन पिता की मत्यु के बाद उसी दिन गद्दी पर बैठा, किन्तु वह कुछ ही दिन सुलतान रह सका।[4] उसकी मूखता से अमीर बहुत ही परेशान थे। वह जूते या गन्ने को बधवाकर उसे किसी अमीर का नाम देकर अपनी तलवार

---

1 कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, 3, पृ० 321 22। बाबर लिखता है "He had sent beautiful letters to me while I was near Panipat I had replied my royal letters of favour and kind ness summoning him to me He had thought of coming, but changing his mind drew off from Ibrahim's army towards Gujarat ' (बाबरनामा बवरिज, पृ० 534)।

2 मीर अबू तुराब वली, तारीखे गुजरात, पृ० 2 3, कामिस्सारियट, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 281।

3 अरेबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 229, बनर्जी हुमायू 1, पृ० 77।

4 कामिस्सारियट हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 310 11। सिकन्दर 5 अप्रैल 1526 ई० को गद्दी पर बैठा तथा 26 मई 1526 को मार डाला गया। डा० बनर्जी (हुमायू, 1, पृ० 78) लिखते है कि वह पाच दिन शासक रहा तथा 12 अप्रैल को मार डाला गया।

से काटता था। उसका विचार था कि वह इस तरह उनका सिर काट रहा है।[1] उसकी मूखता के कारण इमादुल मुल्क ने 26 मई 1526 ई० को चम्पानीर में, जब वह सोया हुआ था, मार डाला।[2] सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात् इमादुल मुल्क खुशकदम ने उसके छ वर्षीय पुत्र नासिर खा को महमूद द्वितीय के नाम से गद्दी पर बठाया,[3] यद्यपि वास्तविक रूप मे शासन की बागडोर इमादुल मुल्क के ही हाथ मे रही। उसने पद तथा इनाम देकर अमीरो को अपने वश मे करने का प्रयत्न किया। प्रारम्भ से ही इमादुल मुल्क की नीति से कई अमीर सहमत नही थे। विशेपतया गुजरात के तीन प्रमुख अमीर—खुदावन्द खा मसनद अली जो मुजफ्फर द्वितीय के काल मे वजीर रह चुका था, ताज खा नरपाली जिसकी जागीर धुनधुका मे थी, तथा मुजफ्फर का दामाद (सिकन्दर की खास बहन का पति)[4] और सिन्ध का राजकुमार मजलिसे सामी फाथ खा बलूच—उसके कार्यों से असन्तुष्ट थे। अमीरो के विरोध को शान्त करने के लिए इमादुल मुल्क ने निकट के शासको से सहायता लेने का प्रयत्न किया। उसने बरहान निजामशाह के पास जवाहिरात तथा धन भेजकर उस नन्दुरबार पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया। अहमदनगर के शासक ने धन तो स्वीकार कर लिया किन्तु उसने और कुछ नही किया। खुशकदम ने पोल के राजा उदय सिंह से भी चम्पानीर पर आक्रमण करने के लिए प्राथना की। उसने बाबर के पास भी सहायता के लिए पत्र लिखा तथा प्रार्थना की कि यदि बाबर सिन्ध नदी के मार्गो से डयू मे सेना भेजे तो वह उसे एक करोड टनका देगा तथा गुजरात उसकी अधीनता स्वीकार करेगा। फिरिश्ता के अनुसार उसकी यह प्रार्थना बाबर तक नही पहुची, क्योकि डुगरपुर के राजा ने उसे बीच ही म रोक लिया।[5] मन्त्री के इन कार्यों से राष्ट्रवादियो को बडी निराशा हुई तथा उन्होने उसके काय को गुजरात विरोधी समझा। गुजरात के कुछ राष्ट्रीय विचारो के अमीरो ने परामश कर पायन्द खा को बहादुर शाह के पास भेजा और उसे गुजरात की गद्दी पर बैठने के लिए आमन्त्रित किया। पायन्द

1 अरेबिक, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, प० 133।

2 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 4, प० 98 100, बेले, गुजरात, प० 307 308, कामिस्सारियट, पृ० 311। मिराते सिकन्दरी का लेखक लिखता है कि सिकन्दर की मत्यु क पश्चात् गुजरात म मानो शान्ति ही समाप्त हो गयी।

3 कामिस्सारियट, प० 312।

4 वही, प० 313, बेले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, प० 312।

5 कामिस्सारियट, पृ० 313 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 4, पृ० 101 102, बेले, गुजरात, प० 318 19, मीरआते सिकन्दरी, प० 203।

खाँ बहादुर से बागपत में[1] मिला तथा उससे गुजरात चलने की प्रार्थना की। बहादुर के सामने एक कठिन समस्या थी। उसकी आशा के सामने दो राज्य साथ रहे थे। जौनपुर के अमीरों से उसने वहाँ जाने का वचन दे दिया था, किन्तु मातृभूमि के प्रेम ने उसे गुजरात जाने को विवश किया। उसने जौनपुर के अमीरों को परिस्थिति समझाकर क्षमा माँगी और तीव्र गति से गुजरात की तरफ रवाना हो गया।

चित्तौड़ में बहादुर की मुलाकात उसके भाई चाँद खाँ और इब्राहीम खाँ से हुई। चाँद खाँ ने भय से सिसोदिया दरबार में रहने का निश्चय किया और बाद में भागकर उसने माण्डू में शरण ली। दूसरा भाई इब्राहीम खाँ बहादुर शाह के साथ गुजरात रवाना हुआ। चित्तौड़ में बहादुर को सिकन्दर की हत्या का समाचार मिला। उसने सिकन्दर की मौत का बदला लेने की प्रतिज्ञा की, यद्यपि मन में उसे सन्तोष ही हुआ कि एक विघ्न समाप्त हो गया। जैसे-जैसे बहादुर आगे बढ़ता जा रहा था वैसे-वैसे उसकी सेना की संख्या भी बढ़ती जा रही थी और उसे अमीरों का सहयोग मिलता जा रहा था। उसके शत्रु उसकी इस जनप्रियता से भयभीत हुए। इमादुल मुल्क ने बहादुर की प्रगति को रोकने का प्रयत्न किया, किन्तु उसे सफलता नहीं मिली। बिना किसी कठिनाई के वह पाटन पहुँचा और 6 जुलाई 1526 ई० को वह गुजरात का सम्राट घोषित कर दिया गया। 11 जुलाई को अहमदाबाद में दरबार किया गया जहाँ बहुत से अमीर उपस्थित थे। उसी महीने में उसने चम्पानीर पर अधिकार कर लिया। इमादुल मुल्क गिरफ्तार हुआ तथा उसे सिकन्दर के मारने के अपराध में मृत्युदण्ड दिया गया। 26 जुलाई को वह दो साथियों के साथ फाँसी के तख्ते पर लटका दिया गया।[2] 14 अगस्त 1526 ई० को चम्पानीर में बहादुर का पुनः राज्याभिषेक हुआ।

बहादुर ने एक एक करके अपने भाइयों को मरवा डाला, केवल चाँद खाँ जिसने माण्डू में शरण ली थी, बच रहा, क्योंकि मालवा के शासक सुल्तान महमूद द्वितीय ने चाँद खाँ को समर्पण करने से अस्वीकार कर दिया।

बहादुर ने लगभग ग्यारह वर्ष शासन किया (जुलाई 1526 ई० से फरवरी 1537 ई० तक) फिर भी उसकी गणना गुजरात के महान शासकों में होती है।[3] गद्दी

---

1 महाभारत काल में यह व्याघ्रपथ कहलाता था। आजकल यमुना के बायें तट पर मीरात (मेरठ) जिले में, दिल्ली के उत्तर पश्चिम एक छोटा-सा कस्बा है। काम्मिस्सारियट, पृ० 314, टिप्पणी।

2 बेले, गुजरात, पृ० 131 33 काम्मिस्सारियट पृ० 317।

3 The entire country of Gujarat which had been left in darkness by setting of the sun of Government, began

पर बैठने के समय वह अपनी योग्यता, शक्ति तथा धर्मनिष्ठा के लिए प्रसिद्ध था। वह बोखारी सैयिदा के प्रधान हजरत शाह शेख से[1] विशेष प्रभावित था। बहादुर शाह एक महत्त्वाकाक्षी एव योग्य व्यक्ति था। उसने शासन के प्रत्येक अग को प्रभावित किया। गद्दी पर बैठने के समय उसकी अवस्था केवल 20 वर्ष की थी। किन्तु अपनी योग्यता से उसने कुछ ही दिनो म गुजरात का नक्शा ही बदल दिया।

सैन्य सगठन—सबसे प्रथम उसने अपनी सेना का सगठन किया। उसने अपना तोपखाना बहुत ही शक्तिशाली बनाया। दो तुर्की विशेषज्ञो—अमीर मुस्तफा (जो बाद मे रूमी खा के नाम से प्रसिद्ध हुआ) और ख्वाजा सफर (सलमानी)—की सहायता से उसने अपना तोपखाना शक्तिशाली तथा मजबूत कर लिया। उसकी सेना मे लगभग 10,000 विदेशी सैनिक थे।[2] अपने राज्य के हिन्दुओ के प्रति भी उसका व्यवहार अच्छा था। उसने हिन्दुओ को वजीफे दिये तथा उन्हे उच्च और विश्वसनीय स्थानो पर नियुक्त किया। यही नहीं, उसने कोल और भील लोगो के साथ भी अच्छा व्यवहार किया। उसने अपने दरबारे हाल का नाम 'श्रृगार मण्डप' रखा तथा अपने हाथियो के भी इसी तरह सस्कृत मे नाम रखे। अपनी उदार नीति तथा सुशासन के कारण बहादुर ने अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त कर ली।

साम्राज्य विस्तार—गुजरात के निकट कई महत्त्वपूर्ण राज्य थ। बहमनी साम्राज्य के विघटन के पश्चात् उसके पाच राज्यो तथा खानदेश के बीच सघर्ष होता रहता था। मालवा का राज्य तथा राजपूताना के राज्य भी गुजरात के निकट थे। गुजरात के तट पर पुर्तगालियो का प्रभुत्व भी बढ रहा था। बहादुर शाह ने अपनी शक्ति तथा साम्राज्य के विस्तार हेतु इन राज्यो से युद्ध प्रारम्भ कर दिया तथा कुछ ही वर्षों म पश्चिमी भारत के महान शासको तथा विजेताओ मे उसकी गणना होने लगी।

---

again to flourish on the rising of this sun of the kingdom Bahadur Shah "(बेले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, प० 328।)

1 शेख का पूरा नाम सयिद जलालुद्दीन शाह शेख जीयू था। इसका जन्म 853 हि० (1449-50 ई०) म तथा मृत्यु 931 हि० (1524 ई०) म हुई। शेख द्वारा बहादुर शाह के सुल्तान होने की भविष्यवाणी के लिए देखिए, मिरआत सिकन्दरी, पृ० 188-91।

2 ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, प० 48।

सितम्बर 1528ई० म खानदेश[1] तथा वरार के शासका की सम्मिलित सेना (लगभग एक लाख) के साथ वहादुर शाह ने दौलतावाद पर आक्रमण किया। किन्तु दुग की शक्ति तथा अपनी सेना मे आवश्यक वस्तुओं की कमी के कारण उसने घेरा उठा लिया तथा 1529 ई० मे उसने अहमदनगर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। इस शत पर कि बीदर तथा अहमदनगर की मस्जिदो मे उसके नाम से खुतबा पढा जाएगा, उसन सधि कर ली और 1530 ई० के वसत म गुजरात लौट आया।[2] 1531 ई० मे बरहान निजाम शाह 7,000 व्यक्तियो के साथ वहादुर स मिलने आया। बहादुर न उसे निजामुल मुल्क की उपाधि दी। इससे उसकी प्रतिष्ठा और बढ गयी।[3]

1531 ई० म बहादुर शाह ने मालवा को अपने राज्य म मिला लिया। मालवा न अपन निकट के राज्यो को असतुष्ट कर दिया था। चित्ताड के राजा रतनसिंह ने बहादुर के दरवार म मालवा के विरुद्ध यह शिकायत की कि उसके शासक ने अपने पुत्र तथा मत्री सारजा खा को चित्तौड के दक्षिणी जिला को विध्वस करने के लिए भेजा है। रायसीन के राजपूत सरदार सिलहदी ने अपने पुत्र भूपतराय को वहादुर शाह के दरवार मे मालवा से रक्षा हेतु भेजा। माडू से असतुष्ट मुसलमान सरदार भी बहादुर शाह के दरवार मे आये। बहादुर शाह का

---

1 खानदेश का शासक मुहम्मदशाह फारूकी, बहादुर शाह की बहन का पुत्र था।

मुजफ्फर शाह (1511 26 ई०)

सिकन्दर खा, बहादुर खा, लतीफ खा, चाद खा, नासिर खा, पुत्री (खानदेश के आदिल खा से विवाहित)

मुहम्मद द्वितीय

कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया (भाग 3 प० 711) का यह उल्लेख सही नही है कि नासिर खा तथा मुहम्मद खा दो व्यक्ति थे। उसका यह कथन कि चाद खा नासिर खा से छोटा था, इतिहासकारो द्वारा समर्थित नही हैं। (बनर्जी, हुमायू 1 टिप्पणी)।

2 बेले, गुजरात, प० 240 46, अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात, 1, प० 150 54, कामिस्सारियट, प० 321 22।

3 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 4 पृ० 116, बेले, गुजरात, प० 358, कामिस्सारियट, पृ० 322।

मालवा से यह शिकायत थी कि वहा का शासक उसके राज्यारोहण के समय उसे बधाई देने नही आया था। इसके अतिरिक्त मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी ने बहादुर शाह के भाई चाद खा को शरण दी थी। चाद खा बहादुर को गुजरात से हटाकर स्वय गुजरात की गद्दी पर बैठना चाहता था।[1]

इन परिस्थितिया से लाभ उठाकर बहादुर शाह ने मालवा पर आक्रमण किया तथा मार्च 1531ई० मे माडू पर अधिकार कर लिया। मालवा का शासक महमूद मारा गया तथा मालवा पर बहादुर शाह का अधिकार हो गया (28 मार्च 1531ई०)। मालवा की विजय एक महत्त्वपूर्ण विजय थी। असकिन के मतानुसार अब गुजरात की दक्षिण पूर्वी सीमाए तथा मेवाड की दक्षिण-पश्चिमी सीमाए एक दूसरी से मिलती थी। इसके पश्चात् मेवाड तथा गुजरात दोना अधिकता से एक दूसरे के विरोधी हा गये।[2] बहादुर शाह ने राजनीतिक व्यक्तियो को भी शरण दी। जून-जुलाई 1529 ई०(शव्वाल 935 हि०) मे सिन्ध के पदच्युत शासक जाम फीरोज ने उसके यहा शरण ली तथा अपनी पुत्री का विवाह उससे कर दिया।[3] इसी समय राणा सागा का भतीजा नरसिंह देव अपने बहुत से साथियो के साथ उससे आ मिला। अलाउद्दीन आलम खा लोदी (बहलोल लोदी का पुत्र) भी उसके दरबार मे आ उपस्थित हुआ। बाबर के दरबार के कई अन्य अमीर (फतेह खा, कुतुब खा, उमर खा लोदी इत्यादि) भी उससे आ मिले।[4]

उपर्युक्त परिस्थितिया स यह स्पष्ट हो जाता है कि मुगल साम्राज्य को गुजरात की तरफ से कभी भी खतरा उपस्थित हो सकता था। मालवा विजय के

---

1 फिरिश्ता लिखता है कि रजाउल मुल्क नामक गुजराती अमीर बहादुर से असन्तुष्ट होकर बाबर के दरबार मे चला गया। वहा बहादुर शाह को गद्दी स उतारकर चाद खा को गद्दी पर बैठाने के लिए वह तरह-तरह के षडयन्त्र रचता रहता था। रजाउल मुल्क माडू भी आता रहता था तथा चाद खा से बात कर के आगरा लौट जाता था। निजामुद्दीन अहमद तथा अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात के लेखक इसका समर्थन करते है। अरेबिक हिस्ट्री के अनुसार रजाउल मुल्क न हुमायू के काल म भी यह प्रयत्न जारी रखा तथा चाद खा के नाम हुमायू का पत्र लाया। (अरेबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 186, 196 फिरिश्ता ब्रिग्स, 4, प० 265, तबकाते अकबरी, फा, प० 404 405)।

2 असकिन, 2 पृ० 39।

3 बेले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 343, फिरिश्ता, 2, प० 320।

4 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 4, पृ० 112।

पश्चात् मुगल सीमा गुजरात के निकट पहुच गयी थी। बहादुर शाह युवक तथा महत्त्वाकाक्षी था। तीन चार वर्षों म ही उसने कुशल शासक तथा वीर योद्धा के गुण प्रदर्शित किये थे। गुजरात आर्थिक दृष्टि से भी सुदृढ था। उसकी सेना नये अस्त्रा तथा हथियारो से सुसज्जित थी। मालवा की विजय तथा बहादुरशाह की साम्राज्य विस्तार की नीति ने गुजरात के साम्राज्य को मुगल साम्राज्य के बहुत ही निकट ला दिया था। इस परिस्थिति मे हुमायू को गुजरात की ओर से भय स्वाभाविक था।[1]

2 अफगान

पानीपत के प्रथम युद्ध की पराजय ने अफगानो की शक्ति को पूणत जजर कर दिया। फिर भी अफगाना न पूण रूप से पराजय स्वीकार नही की। अधिकतर अफगान भागकर बिहार या बगाल चले गय। 15 वर्षों तक उनके सगठन तथा शक्ति का केन्द्र यही क्षेत्र रहा तथा शेरशाह न इसी केन्द्र से अफगानो का पुन सगठित कर अफगान शक्ति को फिर से स्थापित किया।

इब्राहीम लोदी के राज्यकाल म दरया खा नूहानी बिहार का गवनर था। इब्राहीम के काल म उसने राजसी उपाधि धारण नही की। वस्तुत वह एक स्वतन्त्र शासक की भाति अपन प्रा त म शासन करता था। 1521 ई० मे उसकी मत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बहारखा बिहार का गवनर हुआ।[2] पानीपत म इब्राहीम खा की मृत्यु के पश्चात जो अराजकता फैली तथा अफगाना म जो प्रतिक्रिया हुई उसके परिणामस्वरूप उसन मुहम्मद शाह की उपाधि धारण की, अपन नाम से सिक्के चलाये तथा अपन नाम स खुत्बा पढवाया। इस तरह वह एक स्वतन्त्र शासक बन गया। पानीपत के युद्ध के पश्चात इब्राहीम लोदी का भाई सुल्तान महमूद लोदी उस वश का एक एसा व्यक्ति था जो उनका नेतृत्व कर सकता था। हसन खा मेवाती तथा राणा सागा ने उसे इब्राहीम का उत्तराधिकारी स्वीकार किया तथा एक राष्ट्रीय सघ बनाकार उन्होन बाबर स खानवा मे युद्ध किया। खानवा की पराजय ने राजपूतो की कमर तोड दी। राणा सागा के ही बल पर महमूद लोदी दिल्ली का तख्त प्राप्त करने की आशा करता था। खानवा के पश्चात् उसने मेवाड मे शरण

---

1 'Elated by a sense of his power and invincibility he appeared to have aspired to the Empire of Hindustan, and rashly measured his strength with the rising power of the Mughals under Humayun' (कामिस्सारियट, पृ० 30)।

2 कानूनगो, शेरशाह पृ० 30।

ली। किन्तु इसी बीच राणा सांगा की मृत्यु हो गयी जिसमें राजपूतों की सहायता की आशा भी जाती रही। खानवा के युद्ध के पश्चात् अफगान उमरा बीबन तथा बायजीद ने अफगानों को संगठित कर मुगलों को अवध से भगा दिया तथा लखनऊ पर अधिकार कर लिया। बाबर की सेना के आगमन से वे लोग पीछे हट गये तथा बंगाल की तरफ चले गये। इसी समय अफगानों में हम फरीद नामक एक नौजवान के उत्कर्ष का उल्लेख पाते हैं जो आगे चलकर शेरशाह के नाम से दिल्ली के तख्त पर बैठा।

फरीद का प्रारम्भिक जीवन—शेर खां का पितामह इब्राहीम खां सूर पेशावर के निकट रोह की पहाड़ी[1] में रहकर घोड़े का व्यापार करता था। बहलोल लोदी के समय में इब्राहीम सूर और उसका पुत्र हसन पंजाब आये तथा बजवाड़ा में (होशियारपुर जिले में) बस गये। प्रारम्भ में वे महाबत खां सूर, दाऊद खां शाह खैल की सेवा में रहे। कुछ दिनों पश्चात् इब्राहीम खां ने महाबत को छोड़कर हिसार फिरोजा के जागीरदार जमाल खां सारंगखानी के यहां तथा हसन ने उमर खां सरवानी के यहां नौकरी कर ली। जमाल खां ने इब्राहीम को चालीस घोड़ों को रखने के लिए नारनौल परगने के कुछ गांव जागीर के रूप में दिये। वह उन्नति कर 500 घुड़सवारों का अधिकारी तथा हिसार का जागीरदार बन गया।

इब्राहीम खां की मृत्यु के पश्चात् हसन जमाल की सेवा में चला गया। सिकन्दर लोदी के राज्यकाल में जमाल खां जौनपुर भेजा गया। उसके साथ हसन खां भी गया। जमाल खां को सहसराम, ख्वासपुर तथा टांडा की जागीर दी गई, जहां वह स्थायी रूप से बस गया।

फरीद का जन्म 1472 ई० में हिसार फिरोजा या नारनौल में हुआ था।[2] हसन के चार पत्नियां तथा आठ पुत्र थे। उसके पुत्रों में फरीद तथा निजाम एक अफगान पत्नी से तथा सुलेमान और महमूद सबसे छोटी पत्नी से उत्पन्न हुए थे। इसके अन्य चार भाई अली, यूसुफ, खुरम तथा शादी खां थे। हसन अपनी छोटी पत्नी का अधिक मान करता था। इस कारण फरीद पर उसका वह प्रेम नहीं था जो बड़े लड़के पर होना चाहिए। फरीद दुखी होकर अपने पिता की जागीर छोड़कर

---

1 अफगानी भाषा में इसे शरगरी तथा मुल्तानी भाषा में राहरी कहते हैं।

2 डॉ० कानूनगो के अनुसार शेरशाह का जन्म 1486 ई० में तथा डॉ० परमात्मा शरण के अनुसार उसका जन्म 1472 ई० में हुआ था। समकालीन इतिहासकारों ने शेरशाह के जन्म की तिथि नहीं दी है इस कारण उसकी जन्म तिथि निश्चित करने में कठिनाई है। देखिए कानूनगो शेरशाह पृ० 3, परमात्मा शरण डेट ऑफ प्लेस ऑफ शेरशाह्ज बर्थ—बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी जरनल, मार्च, 1934 ई०। नारनौल आगरा में है।

जौनपुर चला गया, जो उस समय विद्या तथा ज्ञान के लिए 'पूर्व का शिराज' कहा जाता था।[1] यहाँ फरीद ने पूर्ण मन से अध्ययन किया और फारसी का बहुत अच्छा ज्ञान अर्जित करके 'मौलवी की उपाधि' प्राप्त की।[2] अपने व्यवहार तथा योग्यता से वह थोड़े ही दिनों में जनप्रिय हो गया। उसने समकालीन सन्तों तथा विद्वानों से मित्रता स्थापित की तथा शासन का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया।[3] इस बीच हसन खाँ जौनपुर आया। यहाँ इसके मित्रों ने फरीद जैसे योग्य पुत्र का परित्याग करने के कारण उसकी भर्त्सना की। उनके कहने से हसन खाँ ने फरीद को सहसराम की जागीर का प्रबन्धक नियुक्त कर दिया।

जागीर के प्रबन्धक के रूप में फरीद ने ऐसी योग्यता तथा अनुभव प्राप्त किये जो भविष्य में उसके लिए उपयोगी सिद्ध हुए। यहाँ उसने कुछ सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जिन्हें सम्राट होने पर उसने अपने साम्राज्य में भी प्रचलित किया। फरीद ने अपने पिता से कहा था कि वह अपनी जागीर की समृद्धि तथा वैभव बढ़ाने में अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा देगा।[4] उसने जागीर की सम्पूर्ण समस्याओं का अध्ययन किया तथा प्रत्येक समस्या का बुद्धिमानी से समाधान किया।

नये जागीरदार के रूप में फरीद ने अपना शासन न्याय पर आधारित किया। उसकी प्रजा उससे किसी भी समय मिल सकती थी। उनका कथन था कि कृषक सम्पत्ति के साधन हैं।[5] इस कारण उनके सुधार सुख तथा भलाई में ही जागीर का कल्याण है। फरीद ने सैनिकों, मुकद्दमों, पटवारियों तथा किसानों को बुलाया

---

1 कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, 3, पृ० 259।

2 डा० कानूनगो ने अब्बास खाँ के आधार पर लिखा है कि फरीद ने सिकन्दरनामा गुलिस्ताँ, बोस्ताँ, इत्यादि फारसी के अन्य ग्रन्थों को जबानी रट लिया। श्री होदीवाला ने इस कथन को स्वीकार नहीं किया है। प्रथम तो इन ग्रन्थों की 30,000 पंक्तियाँ फरीद ने रटी हों, यह असम्भव मालूम होता है। दूसरे, फिरिश्ता तथा निजामुद्दीन अहमद ने जिन शब्दों का प्रयोग किया है उससे भी यही मालूम होता है कि उसने परीक्षा पास की, न कि इन्हें जबानी याद किया। होदीवाला, स्टडीज इन इण्डोमुस्लिम हिस्ट्री 1, पृ० 446 इलियट तथा डासन, 4 पृ० 311। इसके अतिरिक्त हम यह भी कह सकते हैं कि यदि उसकी साहित्यिक रुचि इतनी तीव्र होती तो उसने कुछ ग्रन्थों की रचना अवश्य की होती।

3 त्रिपाठी, राइज एण्ड फाल ऑफ दि मुगल एम्पायर, पृ० 116।

4 अब्बास खाँ, तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 312।

5 वही, पृ० 314।

तथा उनके समक्ष घोषणा की कि वह किसी को भी कृषकों के ऊपर अत्याचर नहीं करने देगा और जो ऐसा करेगा उसे कठोर दड दिया जाएगा।[1] उसने जमीन की नाप करायी तथा उसके आधार पर लगान निश्चित किया। किसानो को पटटा लिखकर दिया गया जिससे उन्हे निश्चिय रूप से ज्ञात रहे कि उन्हे कितना लगान देना पडेगा। इसके साथ ही साथ उनसे वसूलियत भी लिखायी।

खेती का प्रब ध कर तथा कृषको का विश्वास दिलाकर फरीद ने विद्रोही जमीदारो की तरफ दष्टि की। उसने अपने पिता के कमचारियो को दो सौ घुडसवारो का प्रबन्ध करने की आज्ञा दी। एक छोटी सेना खडी करके तथा सनिको को प्रोत्साहित करके उनकी सहायता से उसने मुकद्दमो तथा जमीदारो को पराजित कर दिया और शान्ति स्थापित की।[2] फरीद ने बेगार तथा अनेक करो का अन्त कर दिया। प्रत्येक गाव म जनता अधिकारो की रक्षा के लिए एक कमचारी नियुक्त किया गया। फरीद के अच्छे प्रबन्ध के कारण लगभग एक हजार कृषक दूसरे स्थानो से आकर उसकी जागीर मे बस गये।[3]

फरीद के जागीर के प्रबन्ध की सभी लेखको ने सराहना की है। अब्बास खा लिखता है कि कुछ ही समय मे फरीद की जागीर के निवासी सुखी हो गये तथा उसकी एक कुशल शासक के रूप मे गणना होने लगी।[4] डॉ० बनर्जी के अनुसार फरीद ने आधुनिक ग्रामीण विकास योजनाओ की नीव डाली तथा अपने प्रबन्ध के कारण वह प्लेटो के दार्शनिक सम्राट के निकट आ जाता है।[5] डा० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार शेरशाह की असाधारण शासकीय योग्यता की छाप उसके परगना के शासन पर स्पष्ट रूप से पडी।[6] सम्पूर्ण कार्यों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि फरीद ने जागीर के प्रबन्ध से यह स्पष्ट कर दिया कि उसमे जन्म से ही शासन की योग्यता है। यह अनुभव उसके लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ तथा उत्तरी भारत का राज्य प्राप्त करने के पश्चात् उसने कुछ ही समय म ऐसा शासन स्थापित किया जो साधारणतया सभव नही होता है।

---

1 कानूनगो शेरशाह, पृ० 17-18, तथा इलियट डासन, 4, पृ० 312 13।

2 फरीद की जागीर के प्रबन्ध के लिए देखिए कानूनगो, शेरशाह पृ० 15-25, इलियट तथा डासन, 4, 314, होदीवाला, 1, पृ० 447।

3 दौलत-ए शेरशाही, ईश्वरी प्रसाद (हुमायू, पृ० 100-101) द्वारा उदधत।

4 तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 317।

5 बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 183 85।

6 ईश्वरी प्रसाद हुमायू पृ० 98 99।

फरीद के जागीर के प्रबन्ध तथा उसकी यशवृद्धि से उसकी सौतेली मा को यह भय हुआ कि कहीं जागीर उसके पुत्रो—सुलेमान तथा अहमद—के हाथ से निकल न जाए। फरीद को जागीर से हटाने के लिए उसने मिया हसन को विवश कर दिया। यह जानते हुए कि फरीद ने जागीर का बहुत ही सुन्दर प्रबन्ध किया है, मिया हसन ने फरीद को जागीर से हटा दिया।

फरीद अपनी जागीर से आगरा की तरफ रवाना हुआ (1519 ई०)। मार्ग में कानपुर के शेख इस्माईल सूर तथा इब्राहीम नामक अफगानो से उसकी मुलाकात हुई[1] जो भविष्य में उसके उत्कर्ष में प्रमुख सहायक बने। आगरा में फरीद ने दौलत खा नामक एक प्रमुख उमरा की सहायता से इब्राहीम लोदी से अपने पिता की जागीर प्राप्त करने का प्रयत्न किया, किन्तु इब्राहीम ने यह कहकर कि ऐसा व्यक्ति जो अपने पिता का विरोध करता है बुरा है, इस समस्या में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया। फरीद को निराशा हुई किन्तु वह अपने सरक्षक दौलत खा के साथ रुका रहा। इसी बीच मिया हसन की मृत्यु हो गयी। सहसराम की जागीर में उस समय फरीद के भाई निजाम, जिसे जागीर पर दृष्टि रखने के लिए फरीद छोड आया था तथा उसके सौतेले भाइयो (सुलेमान तथा अहमद) में जागीर के उत्तराधिकार के लिए सघर्ष प्रारम्भ हो गया। सुलेमान ने जागीर पर अधिकार करके वास्तविक उत्तराधिकारी होने का दावा किया। निजाम ने विरोध किया कि वह सबसे बडा पुत्र न होने के कारण जागीर का अधिकारी नहीं है। किन्तु सुलेमान पर उसका कोई प्रभाव नहीं पडा। पूर्ण स्थिति की सूचना पाकर फरीद ने सबसे बडे पुत्र होने के आधार पर, दौलत खा की सहायता से, इब्राहीम लोदी से इन दो परगनो की जगीरदारी का फरमान प्राप्त किया तथा अपनी जागीर में वापस आ पहुचा।

फरीद के जागीर में फरमान के साथ पहुचने से तथा वहा की जनता के फरीद की ओर आकर्षित होने से सुलेमान ने भागकर चौंध[2] के जागीरदार मुहम्मद खा सूर के यहा शरण ली। मुहम्मद खा तथा मिया हसन का सम्बन्ध

---

1 कानूनगो (शेरशाह प० 28) के अनुसार दूसरा व्यक्ति हबीब खा ककर था। डा० ईश्वरी प्रसाद ने (हुमायू प० 103) दूसरे व्यक्ति का नाम इब्राहीम लिखा है।

2 यह बिहार में रोहतास जिले का एक परगना था। सहसराम से यह लगभग 40 मील पश्चिम में स्थित था। आइन अकबरी में इसे चाकुड या जौद कहा गया है। (आईन अकबरी, 2, प० 168)। चावन्द कदाचित दुर्गा के नाम चामुण्डा से लिया गया है। (होदीवाला, 1, प० 447)।

अच्छा नहीं था। मुहम्मद खां ने देखा कि पारस्परिक झगड़ों से लाभ उठाकर वह मियां हसन की जागीर पर अधिकार कर सकता है। उसने फरीद से अपने वकील द्वारा कहलाया कि वह इस झगड़े का निर्णय करेगा तथा जो उसका निर्णय स्वीकार नहीं करेगा उसके साथ वह कठोरता का बर्ताव करेगा। फरीद ने मुहम्मद खां को सूचित किया कि वह अपने सौतेले भाइयों को अधिक से अधिक जागीर देने के लिए तैयार है, किन्तु वह परगने के शासन को विभाजित नहीं करेगा। मुहम्मद खां ने निश्चित किया कि सैन्य बल द्वारा वह फरीद से सुलेमान को अधिकार दिलाएगा। इस सूचना से फरीद चिन्तित हुआ तथा उसने किसी शक्तिशाली संरक्षक की सहायता प्राप्त करने का निश्चय किया। इसी समय पानीपत के युद्ध तथा उसमें इब्राहीम की मृत्यु की सूचना मिली। फरीद ने देखा कि बिहार के शासक सुल्तान मुहम्मद (बहार खां) के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति उसकी सहायता नहीं कर सकता। सुल्तान मुहम्मद[1] इस समय स्वतन्त्र शासक के रूप में बिहार पर शासन करता था। फरीद ने सुल्तान मुहम्मद के यहां नौकरी कर ली। अपनी योग्यता से उसने सुल्तान मुहम्मद को प्रसन्न कर लिया तथा उसका दाहिना हाथ बन गया।[2] इसी समय उसने बड़ी बहादुरी से एक शेर मारा जिससे प्रसन्न होकर सुल्तान मुहम्मद ने उसे 'शेर खां' की उपाधि दी।[3] सुल्तान मुहम्मद ने उसे अपने राज्य का वकील तथा अपने पुत्र का शिक्षक (अतालीक) नियुक्त किया।[4]

शेर खां के इस उत्कर्ष से सुल्तान मुहम्मद के अन्य अमीरों में विद्वेष फैल गया। उन लोगों ने सुल्तान मुहम्मद से शेर खां की शिकायत की। शेर खां इस समय अपनी जागीर पर चला गया था, जिससे उन्हें विरोध का अवसर मिला। किन्तु सुल्तान मुहम्मद शेर खां से इतना प्रभावित तथा प्रसन्न था कि उसने सुलेमान के पक्ष में शेर खां पर आक्रमण नहीं किया।

चौध के जागीरदार मुहम्मद खां ने प्रारम्भ में जागीर को भाइयों में विभाजित करने की सलाह दी। शेर खां इसके लिए तैयार नहीं था तथा उसने

---

1 सुल्तान मुहम्मद की उपाधि धारण करने के पूर्व उसका सही नाम क्या था, यह निश्चित रूप से पता नहीं चलता। अब्बास उसे बहार खां, अर्सकिन बिहार खां कहता है तथा कम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, भाग 4 में उसे बहादुर खां लिखा गया है।

2 कानूनगो, शेरशाह पृ० 31, अब्बास खां, तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 325।

3 इलियट तथा डासन 4, पृ० 325।

4 वही, पृ० 325 तथा 336।

सफल हुआ। इस विवाह से उसे पत्नी, चुनार का दुग तथा उसका कोष प्राप्त हुआ।[1]

1529 ई० म स्वर्गीय सुल्तान इब्राहीम लोदी का भाई महमूद लोदी खानवा की पराजय तथा राणा सागा की मृत्यु के पश्चात इधर उधर मारा मारा फिर रहा था। बिहार मे सुल्तान मुहम्मद की मत्यु तथा वहा की स्थिति स उसे आशा हुई। बिहार के कुछ प्रमुख उमराओ न उस आमन्त्रित किया। वह बिहार आया। यहा आजम हुमायू ईसा खा, इब्राहीम खा मिया बीवन जीवानी, मिया बायजीद फर्मूली तथा अन्य अमीर उसके साथ हो गये। इस तरह अफगानो का नेतत्व जो शेर खा न अब तक प्राप्त किया था, राजवश का होने के कारण महमूद लोदी के हाथ चला गया। शेर खा का विवश होकर अपनी जागीर सहसराम स ही सन्तोष करना पडा।[2] महमूद लोदी ने शेर खा को प्रसन्न करने के लिए उसे आश्वासन दिया कि यह केवल सकटकालीन स्थिति का प्रबन्ध है तथा ज्यो ही जौनपुर और अन्य जिले अफगानो के अधिकार म आ जाएगे शेर खा को बिहार दे दिया जाएगा। इसी समय बाबर की मत्यु हुई।

हुमायू के राज्यारोहण के समय अफगानो की स्थिति—जिस समय हुमायू गद्दी पर बठा, अफगानो के दो प्रमुख नेता थे—महमूद लोदी और शेर खा। जैसा ऊपर वणन किया गया है, शेर खा न इस बीच पूण अनुभव प्राप्त कर लिया था। अपनी योग्यता स उसने अफगानो के हृदय म स्थान बना लिया था। चुनार के दुग पर अधिकार हो जाने से बिहार के भागो पर वह दृष्टि रख सकता था। महमूद लोदी के आ जाने से उसकी शक्ति मे रुकावट अवश्य आ गयी थी, किन्तु वह बुद्धिमान तथा कूटनीतिज्ञ था और बडी सतकता स राजनीतिक परिवतनो पर दृष्टि लगाये हुए था। महमूद लोदी क पास शेर खा के मुकाबिले मे योग्यता नही थी, जैसा उसके पूव चरित्र तथा कार्यों से स्पष्ट हो जाता है।

---

1 शेर खा को 150 बहुमूल्य जवाहरात, सात मन मोती, 150 मन सोना तथा और भी मूल्यवान वस्तुए तथा आभूषण प्राप्त हुए। (इलियट तथा डासन, 4, पृ० 346)।
डॉ० कानूनगो चुनार के दुग को अधिकत करने की कहानी जिसे अब्बास न लिखा है, स्वीकार नही करते। उसकी विवेचना के लिए देखिए डॉ० कानूनगो, शेरशाह, पृ० 66 71।

2 शेर खा ने महमूद का विरोध क्यो नही किया ? ऐसा प्रतीत होता है कि प्रमुख अफगान अमीर महमूद लोदी के साथ हो गये। इब्राहीम लोदी का भाई होने के कारण अफगान उसका विरोध करने को तैयार नही थे।

के लिए बहुत ही सहायक हुआ। इसके पश्चात् ही बंगाल से युद्ध प्रारम्भ हुआ। इसमें शेर खां विजयी हुआ जिससे उसका मान तथा शक्ति दोनों बढ़े।[1]

शेर खां एक साधारण वंश का था। बिहार में और अफगान उससे उच्च वंश के थे (जैसे लोदी, नूहानी, फरमूली इत्यादि)। ये लोग साधारण घर के व्यक्ति की अधीनता स्वीकार करने में हीनता का अनुभव करते थे। इस कारण वे शेर खां को उसके पद से हटाना चाहते थे। उन्होंने शेर खां को मार डालने का षड्यन्त्र रचा, पर शेर खां को सतर्कता से उन्हें इसमें सफलता नहीं मिली। शेर खां ने संधि करने के लिए शक्ति विभाजन का प्रस्ताव रखा। उसने नूहानियों से कहा कि वे या तो आक्रमण से बंगाल की रक्षा का उत्तरदायित्व लें अथवा आन्तरिक शासन की देख भाल करें। नूहानी इसके लिए तैयार नहीं हुए और उन्होंने निश्चय किया कि वे भागकर नुसरत शाह के पास जाकर, उससे सहायता लेकर शेर खां का विरोध करेंगे। यह सोचकर नूहानी तथा अन्य अमीर जलाल खां के साथ नुसरत शाह से जा मिले। इस पलायन ने शेर खां को अपने मार्ग में शक्ति-संचय तथा संगठन का सुअवसर दिया।

शेर खां ने उसी समय चुनार के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। यह दुर्ग बहुत ही महत्त्वपूर्ण था। सुल्तान इब्राहीम लोदी ने ताज खां सारंगखानी को चुनार का दुर्गपति नियुक्त किया था। पानीपत में युद्ध के पश्चात् बाबर के पूर्वी भागों के अभियान के समय ताज खां ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली। 23 मार्च 1529 ई० को बाबर ने चुनार में दुर्ग का निरीक्षण भी किया।[2] जून 1529 ई० में वह वहां जुनायद बरलास को अपना दुर्गपति नियुक्त करना चाहता था किन्तु अन्य समस्याओं के कारण वह ऐसा नहीं कर सका।[3] ताज खां पर उसकी बुद्धिमती पत्नी लाड मलका[4] का प्रभाव था। एक दिन ताज के सौतेले लड़के ने उसे घायल कर दिया। ताज खां ने अपने पुत्र को मारने के लिए तलवार उठायी किन्तु लड़के ने पिता पर आक्रमण किया जिससे पिता की मृत्यु हो गयी। शेर खां ने इस परिस्थिति से लाभ उठाकर लाड मलका से विवाह का प्रस्ताव किया तथा इसमें वह

1 बनर्जी, हुमायूं, पृ० 190 आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव शेरशाह एण्ड हिज सक्सेसर्स, पृ० 10 11।

2 बाबरनामा, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 282 83।

3 बाबरनामा, बेवरिज, 683 रिजवी बाबर, पृ० 334।

4 अबुल फजल इसका नाम लाड मलका लिखता है तथा उसे चरित्र एवं रूप-रंग में अद्वितीय बतलाता है। (अकबरनामा 1, पृ० 123)। अब्बास उसका नाम लाड मलका लिखता है। उससे कोई पुत्र न था। ताज खां की अन्य पत्नियों के कई पुत्र थे।

सफल हुआ। इस विवाह से उसे पत्नी, चुनार का दुर्ग तथा उसका कोष प्राप्त हुआ।[1]

1529 ई० में स्वर्गीय सुल्तान इब्राहीम लोदी का भाई महमूद लोदी खानवा की पराजय तथा राणा सांगा की मृत्यु के पश्चात इधर उधर मारा मारा फिर रहा था। बिहार में सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु तथा वहां की स्थिति से उसे आशा हुई। बिहार के कुछ प्रमुख उमराओं ने उसे आमंत्रित किया। वह बिहार आया। यहां आजम हुमायूं ईसा खां, इब्राहीम खां, मियां बीबन जीवानी, मियां बायजीद फर्मूली तथा अन्य अमीर उसके साथ हो गये। इस तरह अफगानों का नेतृत्व जो शेर खां ने अभी तक प्राप्त किया था, राजवंश का होने के कारण महमूद लोदी के हाथ चला गया। शेर खां को विवश होकर अपनी जागीर सहसराम में ही सन्तोष करना पड़ा।[2] महमूद लोदी ने शेर खां को प्रसन्न करने के लिए उसे आश्वासन दिया कि यह केवल तात्कालीन स्थिति का प्रबन्ध है तथा ज्यों ही जौनपुर और अन्य जिले अफगानों के अधिकार में आ जाएंगे शेर खां को बिहार दे दिया जाएगा। इसी समय बाबर की मृत्यु हुई।

हुमायूं के राज्यारोहण के समय अफगानों की स्थिति—जिस समय हुमायूं गद्दी पर बैठा, अफगानों के दो प्रमुख नेता थे—महमूद लोदी और शेर खां। जैसा ऊपर वर्णन किया गया है, शेर खां ने इस बीच पूर्ण अनुभव प्राप्त कर लिया था। अपनी योग्यता से उसने अफगानों के हृदय में स्थान बना लिया था। चुनार के दुर्ग पर अधिकार हो जाने से बिहार के भागों पर वह दृष्टि रख सकता था। महमूद लोदी के आ जाने से उसकी शक्ति में रुकावट अवश्य आ गयी थी, किन्तु वह बुद्धिमान तथा कूटनीतिज्ञ था और बड़ी सतर्कता से राजनीतिक परिवर्तनों पर दृष्टि लगाए हुए था। महमूद लोदी के पास शेर खां के मुकाबिले में योग्यता नहीं थी, जैसा उसके पूर्व चरित्र तथा कार्यों से स्पष्ट हो जाता है।

---

1 शेर खां को 150 बहुमूल्य जवाहरात, सात मन मोती, 150 मन सोना तथा और भी मूल्यवान वस्तुएं तथा आभूषण प्राप्त हुए। (इलियट तथा डासन, 4, पृ० 346)।
डॉ० कानूनगो चुनार के दुर्ग का अधिकार करने की कहानी, जिसे अब्बास ने लिखा है स्वीकार नहीं करते। उसकी विवेचना के लिए देखिए डॉ० कानूनगो, शेरशाह पृ० 66 71।

2 शेर खां ने महमूद का विरोध क्यों नहीं किया? ऐसा प्रतीत होता है कि प्रमुख अफगान अमीर महमूद लोदी के साथ हो गये। इब्राहीम लोदी का भाई होने के कारण अफगान उसका विरोध करने को तैयार नहीं थे।

इस तरह जिस समय हुमायू गद्दी पर बठा, विहार मे अफगान अपना सगठन कर रहे थे। लोदी वश का व्यक्ति उनका नेतत्व कर रहा था। शेर खा इसस असन्तुष्ट अवश्य था किन्तु इसमे कोई सदेह नही कि हुमायू के गद्दी पर बठन के समय भी मुगल साम्राज्य को नष्ट कर उसके स्थान पर अफगान साम्राज्य स्थापित करने की दूरवर्ती आशा उसके मन की आखा के सामने नाच रही थी। अफगाना का यह सगठन कितना भयकर होगा, यह हुमायू के गद्दी पर बैठने के समय बताना कठिन था। किन्तु इसम सदेह नही किया जा सकता कि इस नयी परिस्थिति मे—जब पानीपत का विजेता मर चुका था, उसका पुत्र हुमायू अभी नौजवान, अनुभव हीन व्यक्ति था जिसे गद्दी पर बैठाने मे भी मुगल अमीरो को थोडी हिचकिचाहट थी—अफगान पूणरूप से लाभ उठाने के लिए तैयार थ। निस्सदह उनके लिए यह स्वण अवसर था।

3 बगाल

बगाल का प्रान्त दिल्ली के सुल्ताना के लिए प्रारम्भ स ही एक समस्या बना रहा। दिल्ली से दूरी यातायात के साधना की कठिनाइया, आर्थिक असुविधाआ इत्यादि के कारण बगाल के गवनर सदा दिल्ली से स्वतन्त्र होने का प्रयत्न करते रहते थे।

मुहम्मद गोरी द्वारा उत्तरी भारत म तुर्की साम्राज्य स्थापित करन के समय बख्तियार खिलजी ने बगाल पर आक्रमण कर उसे दिल्ली सल्तनत का अग बना लिया। उस समय से लेकर मुहम्मद तुगलक के काल तक यह दिल्ली सल्तनत मे रहा। यद्यपि यहा दिल्ली सल्तनत के विरुद्ध बार-बार विद्राह हुए। फीरोज तुगलक के काल म बगाल पूण रूप से स्वतन्त्र हो गया।[1]

बगाल का स्वण काल हुसैनी वश से प्रारम्भ हाता है। इस वश का प्रथम शासक सैयिद हुसेन अलाउद्दीन हुसेन शाह के नाम से बगाल की गद्दी पर 1493 ई० म बठा। इसकी गणना बगाल के प्रमुख मुस्लिम शासको मे हाती है। इसन अनेक सुधार कर बगाल को शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न किया। जौनपुर का अन्तिम शर्की सम्राट हुसेन शाह भागकर 1495 ई० म बगाल आया। अलाउद्दीन हुसेन शाह न उसको शरण दी। शर्की सुल्तान अपनी मत्यु (1500 ई०) तक यही रहा। 25 वष शासन करन के पश्चात 1518 ई० म अलाउद्दीन हुसेन शाह की मृत्यु हा गयी। उसकी मत्यु के पश्चात उसका सबसे बडा लडका नसीब खा नासि

---

1 हिस्ट्री एण्ड कल्चर आफ दि इण्डियन पीपुल, दि देहली सल्तनत, पृ० 193, 214।

नासिरुद्दीन नुसरत शाह के नाम से गद्दी पर बठा।[1] नुसरत शाह (1519 32 ई०) एक योग्य सुल्तान था तथा गद्दी पर बैठन स पूव उस शासन सचालन तथा शासन दोनो का अनुभव प्राप्त था। उसन तिरहुत पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया तथा पुर्तगालियो को भी, जो बगाल के तट पर पहुच गये थे, रोके रखने का प्रयत्न किया। 1526 ई० मे जिस समय बाबर ने भारत पर आक्रमण किया,नुसरत शाह यहा का शासक था। बाबर ने अपनी आत्मकथा म भारत के पाच प्रमुख मुसलमान शासको म उसका उल्लेख किया है।[2]

पानीपत तथा खानवा के युद्धो के पश्चात बहुत से अफगान नेता भागकर बिहार चले गए। इनमे से बीबन बायजीद तथा कुछ अय अफगानो न बगाल मे शरण ली। नुसरत शाह न उह जागीर दी। उसन स्वय इब्राहीम लोदी की पुत्री से विवाह किया[3] जिससे आवश्यकता पडन पर वह अपने को इब्राहीम लोदी का उत्तराधिकारी घोषित कर सकता था। बाबर को पूव से भय था। इस कारण दिसम्बर 1528 ई० म उसने अस्करी को पूर्वी क्षेत्र की ओर भेजा।

पहली जनवरी 1529 ई० को नुसरत शाह का एक दूत आत्मसमपण का प्राथना-पत्र लेकर बाबर स मिला।[4] यह समपण नाम मात्र का था क्योकि कुछ ही सप्ताह पश्चात बाबर को बिहार म गडबडी की सूचना मिली। बाबर पूव की ओर अग्रसर हुआ। बगाल की सेना को भय हुआ कि बाबर कदाचित् बगाल पर आक्रमण करना चाहता है। गडक तथा गगा के सगम पर दोना सनाए एकत्र हुइ। युद्ध के पश्चात 6 मई 1529 ई० को बगाल की सेना पीछे हट गयी। मुहम्मद मारूफ, जो बगाल की सेना से जा मिला था, पुन बाबर स आ मिला।[5] बायजीद तथा बीबन न आगे बढकर बाबर की अनुपस्थिति से लाभ उठाकर लखनऊ पर अधिकार कर लिया तथा यहा मे चुनार तथा जौनपुर की तरफ बढे। इसी समय मुगल सना के आगमन की सूचना पाकर व भाग गये। बाबर यहा से आगरा चला गया। उसके जीवन काल म इसके पश्चात बगाल म कोई सघष नही हुआ।

1530 ई० म बाबर की मत्यु के समय बगाल की सीमा पर केवल नाममात्र की शान्ति थी। *नुसरत शाह जनप्रिय तथा योग्य शासक था। वह कला तथा* बगला साहित्य का भी पोषक था। उसके समय म अनेक सुदर भवनो का निर्माण

1 कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, 3, प० 272।

2 बाबरनामा, इलियट तथा डासन, 4, प० 260 261।

3 कम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, 3 पृ० 272।

4 विलियम्स, एन एम्पायर बिल्डर, पृ० 168 बाबरनामा, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 284।

5 विलियम्स, ऐन एम्पायर बिल्डर, पृ० 169।

हुआ जिसम बडी सोना मस्जिद बहुत प्रसिद्ध है। इब्राहीम लोदी की पुत्री मे विवाह कर उसने मुगल सम्राटो के लिए लिए भय उत्पन्न कर दिया था। अफगानो के बगाल म शरण लेने स भी वहा मुगल विद्रोही आन्दोलन प्रारम्भ हो सकता था। बगाल के निकट बिहार के भाग मे अफगानो का केन्द्र बन ही रहा था, बगाल के मित्र न रहने म दोनो प्रान्त मिलकर प्रबल प्रतिरोध उपस्थित कर सकते थे।

4 सिंध तथा मुल्तान

तुगलक वश के विघटन के पश्चात सिन्ध के कुछ जिलो पर सिन्ध के जाम शासन करते थे। 1439 ई० जाम निजामुद्दीन (जाम नन्द) गद्दी पर बैठा। उसन 60 वर्ष तक शासन किया। उसके राज्य काल म अरगून जाति के मुगलो का प्रभाव निचले सिन्ध म बढने लगा। 1521 ई० मे बाबर द्वारा कधार म भगाये जाने के पश्चात शाह बेग अरगून न सिन्ध को जीतकर उस पर अधिकार कर लिया तथा जाम फीरोज को वहा स भगा दिया। फीरोज ने भागकर गुजरात म शरण ली। वहा उसने अपनी पुत्री का विवाह गुजरात के बहादुर शाह मे कर दिया।

1524 ई०म शाह बेग अरगून की मृत्यु हो गयी तथा उसके पश्चात उसका पुत्र शाह हुसन गद्दी पर बैठा। उसने एक साल मे अधिक के घेरे के पश्चात मुल्तान को जीतकर उस पर अधिकार कर लिया। उसन ख्वाजा शमसुद्दीन को वहा का गवनर नियुक्त किया। किन्तु कुछ ही दिनो म मुल्तान के सेनापति लगर खा न उसे वहा स भगा दिया था स्वय मुल्तान पर स्वतन्त्र रूप म शासन करने लगा।[1] बाद म उसने कामरान के समक्ष समपण कर दिया। गुजरात के महत्वाकाक्षी सुल्तान के भय से रक्षा हेतु शाह हुसेन न बाबर के नाम म खुत्बा पढकर नाममात्र की अधीनता स्वीकार कर ली। बाबर के प्रधान मन्त्री खलीफा की पुत्री से अपना विवाह कर उसने अपनी स्थिति और दृढ कर ली।

इस तरह सिन्ध का राज्य एक स्वतन्त्र राज्य था तथा इसका प्रभाव मुल्तान तक था यद्यपि मुल्तान बाद म स्वतन्त्र हो गया तथा बाबर की मृत्यु के पश्चात मुगल राजकुमार कामरान की जागीर का एक भाग बन गया।

5 मालवा

मध्य युग म मालवा का महत्वपूर्ण स्थान था। गुजरात तथा मेवाड के निकट

---

1 सिन्ध के सक्षिप्त इतिहास के लिए देखिए कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, 3 पृ० 501 505। हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ दि इण्डियन पीपुल दि देहली सल्तनत पृ० 221 30।

होने के कारण इसका मेवाड से बराबर सघर्ष चलता रहता था। 1436 ई० मे महमूद खा ने मालवा मे खिजली वश की नीव डाली।[1] जिस समय बाबर ने भारत पर आक्रमण किया, मालवा का शासक महमूद शाह द्वितीय था। (1511 31 ई०)। योग्य सुल्तान था। इसकी प्रसार नीति के परिणामस्वरूप इसका सघर्ष निकट के शासको से हुआ। उसने गागरौन पर एक बडी सेना लेकर आक्रमण किया। गागरौन का दुर्गपति हेमकरण था जो मदिनी राव के प्रतिनिधि के रूप म वहा का शासन करता था। इस आक्रमण की सूचना पाकर मदिनी राव ने राणा सागा से सहायता ली। इन दोनो की सम्मिलित सेनाओ न मालवा पर आक्रमण कर दिया। महमूद बुरी तरह पराजित हुआ तथा बदी बनाया गया। राणा ने उसका राजमुकुट तथा बहुमूल्य रत्न तो ले लिये, किन्तु मालवा को अपने साम्राज्य मे नही मिलाया वरन महमूद को ही माडू की गद्दी पर बैठा दिया। महमूद द्वितीय का साम्राज्य अब उसकी राजधानी तथा उसके निकटवर्ती भागो तक ही सीमित रह गया। उसके राज्य के उत्तर पूर्वी जिल पुरबिया राजपूतो के तथा सतवास और उसके दक्षिणी भाग पर सिकन्दर खा का अधिकार था।

1526 ई० म बहादुर शाह के गुजरात की गद्दी पर बठन के पश्चात् महमूद ने बहादुर के भाई चाद खा को शरण दी। बहादुर शाह इससे नाराज हुआ। राणा सागा की मृत्यु के पश्चात् महमूद द्वितीय ने चित्तौड के भू भाग पर भी आक्रमण कर राणा सागा के उत्तराधिकारी रतन सिंह को नाराज कर दिया। रतन सिंह ने मालवा पर आक्रमण किया और सारगपुर तथा उज्जैन तक आगे बढ आया। 1530 ई० म मालवा गुजरात तथा राजपूताना के बीच सघर्ष का विषय बना हुआ था।

6 खानदेश

खानदेश का राज्य ताप्ती नदी की घाटी म स्थित था। इस राज्य का सस्थापक मलिक राज था। फिरोज तुगलक ने उससे प्रसन्न होकर उसे थालनेर तथा कुरोण्डे के जिले, जो स्मरन म थ दिये[3] और बाद म उसे सिपहसालार की

1 कम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, 3 पृ० 353 69।

2 यह अपने को खलीफा उमर फारूक का वशज बताता था। इस कारण यह वश फारुकी कहलाया।

3 इस प्रश्न क विवाद के लिए देखिए कम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, 3, पृ० 294, शेरवानी, दि बहमनीज आफ दी डेक्कन, पृ० 109, फुट नोट 55, फिरिश्ता, ब्रिग्स, 4, पृ० 280 327।

उपाधि से विभूषित किया। फीरोज की मृत्यु के पश्चात वह स्वतन्त्र हो गया। 1399 ई० में उसकी मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र नसीर खां गद्दी पर बैठा। इसने असीरगढ़ के दुर्ग पर अधिकार किया और जैनाबाद और बुरहानपुर नगर बसाये।

प्रारम्भ ही से खानदेश का संघर्ष गुजरात, मालवा तथा अहमदनगर से होता रहता था। नासिर खां की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र मीरान आदिल खां गद्दी पर बैठा। यह इस वंश का प्रसिद्ध शासक हुआ। आदिल खां के कोई पुत्र नहीं था। इस कारण उसकी मृत्यु के पश्चात उसका छोटा भाई दाऊद गद्दी पर बैठा। 1510 ई० में दाऊद की मृत्यु के पश्चात[1] उत्तराधिकार सम्बन्धी संघर्ष हुए। जिस समय बाबर ने भारत पर आक्रमण किया उस समय खानदेश की गद्दी पर मीरान मुहम्मद (मुहम्मद प्रथम) शासन करता था।[2] इसकी माता गुजरात के बहादुर शाह की बहन थी।

दिल्ली से दूर होने के कारण खानदेश का उत्तर की राजनीति से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था। किन्तु बहादुर शाह से सम्बन्ध होने के कारण और गुजरात के उत्कर्ष तथा दिल्ली के संघर्ष के समय खानदेश गुजरात को शक्तिशाली बना सकता था।

7 कश्मीर

पंजाब के उत्तर पश्चिम में कश्मीर का राज्य था। 1399 ई० में शाह मीर ने काश्मीर की गद्दी पर अधिकार कर वहां मुस्लिम राज्य की नींव डाली। इस वंश में जैनुल आबदीन (1420-70ई०) बहुत ही प्रसिद्ध सुल्तान हुआ। उसने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनायी जिसके कारण वह कश्मीर का अकबर कहा जाता है। उसने अपने पूर्व के सुल्तानों द्वारा नष्ट मन्दिरों का पुनर्निर्माण करने की आज्ञा दी तथा देश से निकाले गये ब्राह्मणों को पुनः वापस बुलाया।[3]

जैनुल आबदीन के पश्चात उसका पुत्र हैदर शाह तथा पौत्र हसन कश्मीर के शासक हुए। 1484 ई० में हसन की मृत्यु के पश्चात् उसका सात वर्षीय पुत्र मुहम्मद गद्दी पर बैठा। इसने तीन बार कश्मीर की गद्दी खोई तथा पुनः प्राप्त की। अन्त में चौथी बार सुल्तान बनने के पश्चात उसकी मृत्यु हुई। इस समय

---

1 कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया (3, पृ० 393) के अनुसार उसकी मृत्यु 1508 ई० में हुई, हिस्ट्री एण्ड कलचर आफ दि इण्डियन पीपुल, देलही सल्तनत पृ० 172 के अनुसार 1510 ई० में।

2 निजामुद्दीन अहमद (डे, तबकाते अकबरी 3, पृ० 344) उसे आदिल खां लिखता है, जो गलत है।

3 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 4, पृ० 469।

तथा चक तथा माकरी वशीय सरदारा की शक्ति वढ गयी थी।[1] प्रारम्भ म तो इन दोना म एकता थी किन्तु 1528 ई० के लगभग दोना का सघष प्रारम्भ हो गया। चक सरदारा ने मुहम्मद का भगाकर 1528 ई० म उसके पुत्र इब्राहीम को गद्दी पर बैठाया। इब्राहीम न काजी चक को अपना प्रधान मन्त्री नियुक्त किया। पराजित अब्दाल माकरी न बाबर से सहायता प्राप्त की तथा काजी चक को पराजित कर उसे कश्मीर से भगा दिया (1529 ई०)।

अब नजूक शाह गद्दी पर बैठा, किन्तु एक वष पश्चात् वह भी गद्दी से हटा दिया गया। मुहम्मद चौथी तथा अन्तिम बार 1530 ई० म कश्मीर की गद्दी पर बैठा। काजी चक न अपना स्थान पुन प्राप्त करन का प्रयत्न किया। किन्तु वह कश्मीर के बाहर भगा दिया गया। कुछ ही दिना म वह पुन कश्मीर लौट आया तथा कामरान द्वारा भेजी गयी सना के विरुद्ध कश्मीर की रक्षा के लिए उसन अब्दाल का साथ दिया। मुगल पराजित हुए तथा पजाब लौट गये।[2]

8 राजपूताना

1527 ई० म खानवा के युद्ध म राणा सागा की पराजय ने राजपूता की एकता को समाप्त कर दिया था। मेवाड उस समय बाणोरा और बसवा तक फला हुआ था। अजमेर रणथम्भोर तथा उसके निकट के भागा पर मेवाड का अधिकार था। बूदी राज्य के हाडा शासक भी मेवाड की अधीनता स्वीकार करते थे।

राणा सागा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज (सन्त मीरा का पति) की मृत्यु राणा सागा के ही जीवन काल म हो गयी थी। राणा सागा न अपनी सवप्रिय रानी कर्मावती[3] के प्रभाव म अपन राज्य को अपने जीवन काल में ही अपन पुत्रा म विभाजित कर दिया। रणथम्भोर तथा पचास साठ लाख की जागीर उन्होन विक्रम तथा ऊदा को दे दी तथा शेष राज्य रत्न सिंह को दिया। राणा सागा की इस भूल के परिणाम स्वरूप मेवाड म आन्तरिक सघष हुआ जिससे सिसोदिया वश को बहुत धक्का लगा। राणा सागा के पश्चात रत्नसिंह मेवाड की गद्दी पर बैठा। इस प्रश्न पर रत्न सिंह तथा हाडा रानी कर्मावती म विरोध हुआ। रानी ने विक्रमाजीत को गद्दी

---

1 कल्हण राजतरगिनी मे इन्ह चकरसा तथा मारगसा लिखता है।

2 कैम्ब्रिज हिस्टी ऑफ इण्डिया, 3, पृ० 287।

3 यह बूदी के वश से सम्बन्धित थी। इसे हादी करमेती भी कहते हैं। बाबर इसे पदमावती कहता है, जो गलत है। बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 612।

पर बैठाने के लिए बाबर से सहायता लेनी चाही[1] किन्तु व्यस्तता के कारण बाबर मेवाड़ के पारिवारिक झगड़ों से लाभ नहीं उठा सका।

मेवाड़ की श्री धीरे धीरे कम हो रही थी। रानी कर्मावती के चचेरे भाई हाड़ा सूरज मल तथा रत्न सिंह का झगड़ा भी गम्भीर होता गया। जनवरी 1531 ई०में रत्न सिंह ने मालवा पर आक्रमण किया किन्तु वह मेवाड़ का गौरव नहीं लौटा सका। बहादुर शाह की शक्ति तथा यश बढ़ता जा रहा था। इसी बीच कुछ दिन पश्चात शिकार खेलता हुआ रत्न सिंह बूंदी के निकट पहुंचा। आमन्त्रण पर सूरज मल भी वहां पहुंचा। मार्च अप्रैल 1532 ई० में दोनों आपस में लड़ मरे। इस तरह हाड़ा तथा सिसोदिया के परम्परागत बैर की नींव पड़ी।[2]

रत्न सिंह के पश्चात् उसका छोटा भाई विक्रमाजीत मेवाड़ की गद्दी पर बैठा (1531-36 ई०)। रणथम्भोर का विवाद इस तरह समाप्त हो गया, किन्तु विक्रमाजीत की अयोग्यता के कारण सरदार उससे असन्तुष्ट हो गये तथा मेवाड़ का गौरव समाप्त प्राय हो गया।

मेवाड़ से दक्षिण में बागड़ का राज्य था। 1530 ई० में बहादुर शाह ने बागड़ पर चढ़ाई की। रावल उदय सिंह ने अपने जीवन काल में बागड़ का पूर्वी भाग अपने छोटे पुत्र जगमल को दे दिया था, जिससे उसका ज्येष्ठ पुत्र पृथ्वीराज अप्रसन्न रहता था। खानवा की लड़ाई में उदय सिंह की मृत्यु के पश्चात पृथ्वीराज गद्दी पर बैठा और उसने पूर्वी भाग पर भी अधिकार कर लिया। बहादुर शाह ने पृथ्वी राज को उसके पिता द्वारा किये गये बटवारे को मानने के लिए विवश किया। इस तरह पृथ्वीराज के छोटे भाई जगमल ने बांसवाड़ा राज्य की स्थापना की।[3] इस तरह दो भागों में विभाजित होने के कारण बागड़ कमजोर हो गया था।[4]

मेवाड़ के पश्चिम सिरोही राज्य था जहां देवड़ा चौहान शासन करते थे। सिरोही के निकट जालौर तथा साचौर पर मलिक सिकन्दर खां का अधिकार था। इस प्रदेश के उत्तर मारवाड़ राज्य पर राव गांगा शासन कर रहा था। 1530 ई० के अन्त तक जोधपुर राज्य का अधिकांश भाग राव गांगा के हाथ से निकल गया था और जोधपुर तथा सोजत ही उसके हाथ में रह गये थे। जुलाई

1 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 612 13।

2 रघुबीर सिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ० 23 24।

3 गौरीशंकर हीराचंद ओझा, बांसवाड़ा राज्य का इतिहास पृ० 64 70, ओझा, डूंगरपुर राज्य का इतिहास पृ० 84 86।

4 रघुबीर सिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ० 23।

1531 ई० मे राव गागा के पुत्र मालदेव ने उसे मार डाला तथा स्वय गद्दी पर बैठ गया।[1]

मारवाड के उत्तर जैसलमेर राज्य मे तथा पूव म बीकानेर राज्य था जो राठौरो के अन्तगत था। यहा का शासक राव जैत सिंह था। बीकानेर तथा जोधपुर के राज्यो के बीच स्थित नागौर परगने पर मरखेल खा तथा उसके पुत्र दौलत खा राज्य करते थे। मारवाड के पूव आमेर राज्य पर कछवाहा शासन करते थे तथा यहा का शासक हरिभक्त पथ्वीराज था। इन राज्यो के अतिरिक्त राजपूताना म अय छोटे छोटे राज्य थे जो निकट के राज्यो की अधीनता स्वीकार किये हुए थे।

राजपूताना के उपयु क्त वणन मे यह स्पष्ट है कि वहा अब कोई शक्तिशाली व्यक्ति नही था जिसका नतृत्व अधिकतर राजपूत स्वीकार करते। इसी समय गुजरात की गद्दी पर बैठने के पश्चात् बहादुर शाह न राजपूताने की राजनीति म प्रवेश किया। वह वागड, मेवाड तथा अय राज्यो के झगडो म हस्तक्षेप कर लाभ उठाना चाहता था। मेवाड आन्तरिक झगडो म भी फसा हुआ था। जोधपुर का शासक गागा हुमायू क गद्दी पर बैठने के कुछ ही महीने पश्चात अपने पुत्र मालदेव द्वारा मार डाला गया था। इस तरह राजपूताना मे तात्कालिक भय तो नही था, किन्तु उस पर सतक दृष्टि रखना आवश्यक था।

इन परिस्थितियों म कैसे व्यक्ति की आवश्यकता थी

हुमायू के गद्दी पर बैठने के समय उपयु क्त परिस्थितियो मे यह स्पष्ट हो जाता है कि हुमायू के सामने आन्तरिक और बाह्य दोनो समस्याए जटिल और कठिन थी। ऐसी परिस्थिति म एक ऐसे सवगुणसम्पन्न व असामान्य प्रतिभाशाली व्यक्ति की आवश्यकता थी जो उच्च कोटि का सनिक हो तथा अपने बाहुबल से सभी विघटनकारी शक्तियो को पराजित कर साम्राज्य को एक सूत्र म बाध सके, जो सैनिको मे उत्साह ला सके, जिस पर बाबर के उमरावो, अय अनुभवी सरदारो तथा सैनिको का विश्वास हो तथा जिसके नतत्व मे वे अपना सवस्व अपण करने को तैयार रह। राजकोष रिक्त था, इसके लिए एक उच्च कोटि के वित्त-विशेषज्ञ तथा अथशास्त्री की आवश्यकता थी। समकालीन राजनीतिक परिस्थितियो मे एक उच्च कोटि के कूटनीतिज्ञ की आवश्यकता थी, जो अफगानो को

1 ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास, 1, पृ० 270 83, ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, 1, पृ० 132 33।

2 मुशी देवी प्रसाद, राव जतसीजी का जीवन चरित्र, ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, 1, पृ० 122 138।

चतुराई से अपनी तरफ मिलाकर राज्य का सञ्चालन कर सके। ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो बहादुर शाह के उत्थान को रोक सके, राजपूतों की दुर्बलता से लाभ उठा सके तथा प्रखर दृष्टि से सभी को सन्तुष्ट कर सके।

बाबर शासन का सगठन नहीं कर सकता था। मुगल अभी तक विदेशी समझे जाते थे। बाबर के पुत्र तथा सम्बन्धी षड्यन्त्र कर रहे थे। नये मुगल सम्राट को मेधावी शासक होना चाहिए था जो जनता तथा अमीरों का जीत सके।

वह समय एक ऐसा व्यक्ति चाहता था जो मुगल अमीरों, सरदारों तथा सम्राट के सम्बन्धियों का विश्वास प्राप्त कर सके। उनमें आशा तथा उत्साह का सचार कर सके और उन्हें सन्तुष्ट कर सके। इस तरह हुमायूँ को अपने पिता से बहुत-सी कठिन समस्याएँ उत्तराधिकार में प्राप्त हुई थीं। क्या हुमायूँ ऐसा गुणसम्पन्न व्यक्ति था जो इन परिस्थितियों का सामना कर सकता था ?

हुमायूँ के चरित्र की आलोचना हम बाद में करेंगे किन्तु इस सदर्भ में हमें उसके चरित्र की कुछ कमजोरियाँ याद रखनी चाहिए। हुमायूँ एक सीधा-सादा साधारण सा व्यक्ति था जिसे सर्वगुणसम्पन्न तथा मेधावी नहीं कहा जा सकता। वह एक बड़े पिता का पुत्र था। जिस समय उसका जन्म हुआ बाबर का कठिन जीवन समाप्त प्राय हो चुका था। हुमायूँ लाड-प्यार में पाला गया था। कठिन परिस्थितियाँ जो मनुष्य का वास्तविक निर्माण करती हैं हुमायूँ को प्राप्त नहीं हुई थीं। दुर्भाग्यवश हुमायूँ में हम उत्तरदायित्वहीनता भी पाते हैं। गद्दी पर बैठने के पूर्व उसने उसके कुछ उदाहरण स्पष्ट रूप से दिये जैसे—बाबर के पाचवें भारतीय अभियान में हुमायूँ को उसके पास पहुँचने में देर लगाना तथा दिल्ली के कोष को लूटना। सैनिक योग्यता की दृष्टि से उसमें कठिन परिस्थिति में आनन्द लेने का गुण न था। वह कठिन परिस्थितियों से भागता था। हम उसे आराम से जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति कह सकते हैं जो कठिन परिस्थितियों को, जब तक वे टल सकें, टालना चाहता था। उसमें सैनिक, प्रशासनिक तथा वित्तीय गुण और दूरदर्शिता की कमी भी थी। हुमायूँ ने कदाचित अफीम खाने की भी लत डाल ली थी और उससे पिण्ड छुड़ाना उसके लिए कठिन था। वह एक सुस्त व्यक्ति था जो किसी भी तरह के परिश्रम से बचना चाहता था।

इन कठिन परिस्थितियों में हुमायूँ कहाँ तक सफल होता, यह कहना कठिन है। सयोगवश यदि वह अकबर का पुत्र होता तो कदाचित उसे उन कठिनाइयों का सामना न करना पड़ा होता जो उसे करना पड़ा और सम्भवत वह अपने को जहाँगीर से अधिक योग्य शासक सिद्ध करता।

4. प्रारम्भिक घटनाए

राज्यारोहण

30 दिसम्बर 1530 ई०[1] को तेईस वर्ष की अवस्था मे हुमायू गद्दी पर बैठा। उसी दिन जामा मस्जिद म उसके नाम से खुत्बा पढा गया तथा उत्सव मनाये गये। आगरा के बाजार तथा दुकानें भी इस अवसर पर अत्यन्त ही सुन्दर ढग स सजायी गयी। दरबार हुआ, जिसम छोटे बडे सभी अमीरो तथा उपस्थित लोगो ने नये सम्राट को भेंट प्रस्तुत की। दरबार के नियम के अनुसार हुमायू ने उन्हे पुराने पदो, नौकरियो, भूमि इत्यादि पर पुन नियुक्त किया। उसी दिन हुमायू ने अपने निकट सम्बन्धियो स भेंट की[2] और इन कठिन परिस्थितियो मे उनका स्नेह पाने की आकाक्षा की। प्रथम ही दिन दान के रूप मे स्वर्ण जनता मे वितरित किया।[3] और इस तरह हुमायू ने अपने राज्य का प्रथम दिन प्रसन्नता और खुशी

---

1 हुमायू के गद्दी पर बैठने की तिथि कई तिथिपत्रो (Chronograms) स निश्चित होती है। अजद के आधार पर सभी का जोड 937 हि० होता है। य तिथिपत्र 'वख्तीए जर' तथा 'ख्रैरुल मुलूक' (बादशाहो मे सर्वोत्तम) ह। अकबरनामा, 1, प० 121, तबकाते अकबरी, ड, 2 पृ० 44। हुमायू के गद्दी पर बठने की तिथि की गणना म विद्वानो म मतभेद है। डॉ० बनर्जी तथा हादीवाला इसे 30 दिसम्बर स्वीकार करत है। डॉ० ईश्वरीप्रसाद न 29 दिसम्बर लिखा है। इस प्रश्न के विवाद के लिये देखिये, हादीवाला हिस्टारिकल स्टडीज इन मुगल न्युमिसमेटिक्स, पृ० 262-63, ईश्वरी प्रसाद—लाइफ एण्ड टाइम्स पृ० 24, बनर्जी—हुमायूबादशाह 1, प० 28।

2 गुलबदन, हुमायू नामा, बवरिज, पृ० 110।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 121 22। अबुल फजल न 'कश्ती' शब्द का प्रयाग किया है। कश्ती का अथ नाव भी है तथा समकोण चतुभुज के आकार का थाल भी। अबुल फजल का यह वाक्य "हर्ष और उल्लास की नौकाए प्रसन्नता की नदी म चलवाकर सोने से भरी एक कश्ती उसी दिन बाट दी" स्पष्ट करता है कि उसका अथ थाल स है नाव से नहीं। डा० बनर्जी के अनुसार एक नाव सोने से भरकर वितरित की गयी (बनर्जी, हुमायू 1 प० 28)। डॉ० ईश्वरी प्रसाद, (हुमायू प० 41) लिखते है कि पूरी एक नाव सोने से भरकर जनता म वितरित कर दी गयी। तबकात

से प्रारम्भ किया, जस बाबर की मृत्यु और उसके बाद के उत्तराधिकारी की घटनाएं भूली जा चुकी हों।

इसी समय हिंदाल, जिसने नियन की आकांक्षा बाबर का अपनी मृत्यु तक बनी रही, काबुल से आगरा पहुंचा। हुमायूं ने उसका प्रेम से स्वागत किया तथा बाबर द्वारा छोड़े हुए कोष में से उसे धन दिया।[1]

राज्य का विभाजन

उसका के पश्चात् नये सम्राट ने अपने भाइयों में राज्य का विभाजन किया। कामरान को काबुल और कंधार, अस्करी को हुमायूं की पुरानी जागीर सम्भल तथा हिंदाल को अलवर (मेवात)[2] का जिला प्राप्त हुआ। मिर्जा सुलेमान को बदख्शां के राज्य में अधिकार की स्वीकृति दी गयी। इसके अतिरिक्त जो लोग जिस पद पर थे वह तो उन्हें दिया ही गया, साथ ही उनकी जागीरों में भी वृद्धि की गयी।

कामरान तथा राज्य विभाजन—कामरान अपने प्राप्त भू भाग से सन्तुष्ट नहीं था। बाबर की मृत्यु के पश्चात वह काबुल को अस्करी की देख रेख में छोड़कर एक सेना के साथ भारत रवाना हुआ। पेशावर तथा लमगान पर अधिकार कर उसने पंजाब में प्रवेश किया (1531 ई०)। यहां उसने घोषणा की कि वह अपने भाई को बधाई देने तथा एक स्वामिभक्त सेवक की भांति अपना आदर प्रदर्शित करने जा रहा है किन्तु वास्तव में उसका विचार पवित्र नहीं था तथा वह

अकबरी के अनुवाद में श्री डे ने इसका अनुवाद इस तरह किया है "स्वर्ण तिजोरियां (Coffers) में बांटा गया।" (तबकाते अकबरी, डे 2, पृ० 44 45)।

1 गुलबदन बेगम के अनुसार हिंदाल को अत्यधिक धन दिया गया। निजामुद्दीन के अनुसार दो खजाने उसे दिये गये। देखिए गुलबदन, हुमायूंनामा बेवरिज, पृ० 110, तबकाते अकबरी, डे, पृ० 44 45, टिप्पणी, इलियट तथा डासन, पृ० 5, 188।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 123, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 44 45। अकबरनामा में हिंदाल की जागीर अलवर लिखी है। तबकाते अकबरी में मेवात है। दोनों का एक ही स्थान से तात्पर्य है। तारीखे एलचीए निजामशाह के अनुसार जौनपुर मुहम्मद जमान मिर्जा को दिया गया। यही लेखक कामरान के साम्राज्य प्राप्त करने के विषय में लिखता है कि यह भाग उसे पूर्व निश्चय के आधार पर प्राप्त हुआ। रिजवी, हुमायूं 2, पृ० 10।

कर दिया और सतलज तक के भाग अपने अधिकार में कर लिये। तदुपरान्त उसने अपने दूत को हुमायूँ के पास भेजकर इन भागों को उसे प्रदान करने की प्रार्थना की। जब माँग न देखकर हुमायूँ ने एक फरमान द्वारा कामरान को काबुल, कन्धार तथा पंजाब का भाग भी दे दिया। कामरान ने हुमायूँ का एक कविता में धन्यवाद दिया।[1] उसकी कविता से प्रसन्न होकर अथवा उसकी इच्छा जानकर, उसे सन्तुष्ट करने के अभिप्राय से हुमायूँ ने हिसार फिरोजा का जिला भी कामरान को दे दिया। बाबर ने हिसार फिरोजा का जिला अक्तूबर 1525 ई० में हुमायूँ को उसके अफगानों के ऊपर प्रथम विजय के पश्चात् दिया था।

कामरान के व्यवहार की आलोचना—कामरान का यह व्यवहार मुगलकाल की इस परिस्थिति में कहाँ तक ठीक था, इस पर विद्वान् एकमत नहीं हैं। डॉ० बनर्जी ने कामरान के इस व्यवहार का समर्थन किया है।[2] विद्वान् लेखक के अनुसार हुमायूँ के शासन के प्रथम आठ वर्षों में (1538 ई० तक) हुमायूँ और कामरान का सम्बन्ध अच्छा था। कामरान न तो राजगद्दी के लिए उत्तराधिकार का युद्ध करना चाहता था और न एक स्वतन्त्र राजकुमार की तरह शासन करना चाहता था।[3] हुमायूँ ने मुल्तान, लाहौर तथा सतलज तक के पूर्वी जिलों के अतिरिक्त हिसार फिरोजा का जिला भी कामरान को दे दिया जो मुगल साम्राज्य के उत्तराधिकारी की जागीर समझी जाती थी। उस समय के सिक्कों में (जिसमें से आठ ब्रिटिश म्यूजियम में उपलब्ध हैं) एक पर कामरान को बादशाह और हुमायूँ को अस्सुल्तान अलआजम अर्थात् महान् कहा गया है। इससे यह पता चलता है कि हुमायूँ महान् था और कामरान उससे छोटा था। डा० बनर्जी लिखते हैं कि शाह सुल्तान इत्यादि उपाधियाँ इस काल में राजकुमारों तथा अमीरों को भी दी जाती थीं।

डॉ० बनर्जी के अनुसार अर्सकिन का यह कथन कि कामरान का भू-भाग

1 इस गजल का अर्थ इस प्रकार है "ईश्वर करे तेरा सौन्दर्य दिन प्रति दिन बढ़ता रहे। तेरा भाग्य महान् तथा शुभ हो जो धूल तेरे मार्ग में उठे वह मुझ दुखी के नेत्रों का प्रकाश बन जाए, जो धूल लैला के मार्ग से उठती है, उसका स्थान मजनूँ के नेत्रों में उठता है, जो कोई तेरे चारों तरफ परकार की भाँति न फिरे वह इस क्षेत्र से बाहर चला जाए। हे कामरान, जब तक संसार कायम है संसार की बादशाही हुमायूँ के अधीन रहे।" अकबरनामा 1 पृ० 125 26।

2 बनर्जी, हुमायूँ, 1, पृ० 53 56।

3 'Kamran desired neither to contest the throne of Delhi nor to act as on independent prince' (बनर्जी हुमायूँ, 1, पृ० 54।)

पर्याप्त था, सही नहीं है। बनर्जी लिखते है कि कामरान की जागीर कम थी। उसमे और जागीर मिलाने की आवश्यकता थी। मीर यूनुस अली ने कामरान का विरोध उसके उनवलेपन के कारण किया। वह बाबर की इच्छा से तथा हुमायू की मौन सहमति से अनभिज्ञ था। डॉ० बनर्जी अबुल फजल के इस मत का हवाला देते हैं जिसमे वह विभाजन के विषय मे लिखता है कि हुमायू ने बाबर की वसीयत के आधार पर कामरान की जागीर बढा दी।

डॉ० बनर्जी का यह मत सही नहीं है। कामरान का व्यवहार अनुचित, उग्र और धूर्तता से भरा हुआ था। वह जानता था कि हुमायू कठिन परिस्थिति मे है। इससे लाभ उठाकर वह अधिक से अधिक जागीर अपने अधिकार मे करना चाहता था। डॉ० बनर्जी ने अबुल फजल के मत को पूरा उद्धृत नहीं किया है। अबुल फजल के वर्णन तथा 'धूर्ततापूर्वक', 'दिखाने की निष्ठा' इत्यादि शब्दो के प्रयोग से स्पष्ट हो जाता है कि कामरान के विचार धूर्ततापूर्ण थे तथा वह परिस्थिति मे लाभ उठाना चाहता था।[1]

अबुल फजल स्पष्ट लिखता है कि "वह हिंदुस्तान इस आशय से चल पड़ा कि सम्भवत उसे कोई लाभ प्राप्त हो सके।"[2] उसकी कल्पनाओ के विषय मे वह लिखता है कि "नष्टकारी कल्पनाओ से विनाश के अतिरिक्त प्राप्त ही क्या हो

---

1 अबुल फजल के शब्द इस प्रकार है "मिर्जा कामरान ने अपने आदमियो को पजाब की सरकार के परगने म नियुक्त किया और सतलज नदी तक के जो लुधियाना के नाम से प्रसिद्ध है, स्थान अपने अधिकार मे कर लिये। तदुपरान्त उसने धूर्ततापूर्वक बुद्धिमान राजपूतो को (हजरत जहाबानी की सेवा म) भेजकर निष्ठा एव स्वामिभक्ति प्रदर्शित की और यह प्रार्थना की कि वह महाल उसे ही प्रदान कर दिया जाए। हजरत जहाबानी ने कुछ तो इस कारण कि उसकी उदारता का समुद्र लहरें मार रहा था और कुछ इस कारण कि उन्हे हजरत गेती सितानी फिरदौस मकानी की शिक्षा का ध्यान था, इस महाल को उसकी दिखाव की निष्ठा के कारण उसे प्रदान कर दिया और काबुल, कधार तथा पजाब के प्रदान किये जाने के सम्बन्ध म सम्मानित फरमान जारी कर दिया। मिर्जा न इस उदारता के प्रति जिसकी उसे आशा न थी, कृतज्ञता प्रकट की और सम्मानित दरबार मे उपहार प्रेषित किये। इसके उपरान्त पत्र-व्यवहार के द्वार खुल गये और उसमे हजरत जहाबानी की प्रशसा मे पद्यो की रचना की और उन्हे उनकी सेवा म भेजा।' (अकबरनामा, पृ० 125)।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 124 25। अबुल फजल के शब्द इस प्रकार हैं कि शायद कारे तवानद पश बुर्द।

सकता है ?"[1]

हुमायूं ने कामरान के भू भाग में वृद्धि इस कारण नहीं की कि वह उसे उपयुक्त समझता था बल्कि इस कारण कि उसके सामने कोई अन्य मार्ग नहीं था। कामरान ने जिस भांति लाहौर पर अधिकार किया तथा पंजाब के भागों पर अपने आदमियों द्वारा शासन कराया व उसके इरादे को स्पष्ट बता रहे थे। क्या हुमायूं इतना मूर्ख था कि वह इसे नहीं समझ सकता था ? उसकी कविता के प्रभाव से उसने उसे हिसार फिरोजा नहीं दिया बल्कि वह कामरान को संतुष्ट करना चाहता था।

कामरान का व्यवहार प्रत्येक दृष्टि से निन्दनीय है। उसने नव स्थापित मुगल साम्राज्य के लिए खतरा उपस्थित कर दिया। यदि हुमायूं ने सतर्कता न दिखायी होती तो भयंकर गृहयुद्ध छिड़ सकता था। कामरान का व्यवहार पूर्णरूप से स्वार्थपूर्ण था। उसके भविष्य के कार्यों से स्पष्ट है कि उसमें भ्रातृ प्रेम तथा सद्भावना की कमी थी तथा वह हुमायूं की कठिनाइयों से लाभ उठाना चाहता था।

कामरान का व्यवहार निन्दनीय अवश्य था किन्तु वह न स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना चाहता था न हुमायूं से सम्बन्ध विच्छेद ही करना चाहता था। इसी कारण उसने न अपने नाम खुत्बा पढ़वाया और न कोई ऐसा कार्य किया जिससे उसकी यह इच्छा प्रकट होती हो। वह युद्ध भी नहीं करना चाहता था। केवल शक्ति प्रदर्शन द्वारा जितना राज्य प्राप्त हो सकता था वह उसे अधिकृत करना चाहता था।

साम्राज्य विभाजन की आलोचना—साम्राज्य को अपने भाइयों में विभाजित करना साम्राज्य के संगठन की दृष्टि से कहां तक उपयुक्त था, यह बताना कठिन है। कुछ विद्वानों ने इस विभाजन को हुमायूं की प्रथम भूल माना है।[2] इनका मत है कि साम्राज्य का विभाजन कर हुमायूं ने अपनी शक्ति को कमजोर कर दिया और आगे चलकर जिन कठिनाइयों का उसे सामना करना पड़ा उसका बहुत कुछ उत्तरदायित्व उसकी इसी भूल पर है।

इस विचार के पक्ष में कहा गया है कि कामरान ने हुमायूं के साम्राज्य और खैबर के उस पार के इस्लामी राज्यों के बीच में एक मध्यवर्ती राज्य स्थापित कर दिया। इससे हुमायूं का अन्य इस्लामी राज्यों से सम्बन्ध टूट गया, क्योंकि यह सम्पर्क पंजाब कंधार काबुल के ही मार्ग से स्थापित हो सकता था। इसके अति

---

1 वही। अबुल फजल के ये शब्द हैं
अन्देशये तबाह रा जुज तबाही शुदन चे गुरेज।

2 शर्मा, मुगल एम्पायर इन इण्डिया 1, पृ० 81।

रिक्त मुगल सेना के सैनिक इन्हीं भागों से आते थे। इस तरह इस विभाजन ने हुमायूं की सैनिक शक्ति का स्रोत ही काट दिया तथा भविष्य में उसकी सैनिक पराजयों का प्रारम्भ यहीं से हुआ।[1]

हिसार फिरोजा के दब जाने से दिल्ली और लाहौर के मार्ग की नयी सैनिक सड़क पर कामरान का अधिकार हो गया। हुमायूं को ऐसे भाग प्राप्त हुए जहां मुगल विरोधी भावनाएं थीं तथा मुगल इन भागों में विदेशी समझे जाते थे। ऐसे भागों पर अधिकार रखने में कठिनाइयां थीं। राज्य का जो भाग कामरान को प्राप्त हुआ था, वह इस दृष्टि से अधिक सुरक्षित था। विभाजन से हुमायूं के साम्राज्य का क्षेत्रफल तथा आय भी कम हो गयी थी। हुमायूं के भाइयों में सद्भावना का नितान्त अभाव था। इस विभाजन ने ऐसे व्यक्तियों के हाथ में ऐसी सुविधाएं प्रदान कीं जिनका प्रयोग उन्होंने हुमायूं के ही विरुद्ध किया।

साम्राज्य विभाजन का समर्थन—इन इतिहासकारों के अतिरिक्त अन्य इतिहासकारों ने हुमायूं के निर्णय का समर्थन किया है।[2] उनका विचार है कि परिस्थितियों को देखते हुए विभाजन के अतिरिक्त हुमायूं के सामने अन्य विकल्प नहीं था। साम्राज्य विभाजन की परम्परा तैमूर के वंशजों में बहुत दिनों से चली आती थी। बाबर के पितामह की मृत्यु के पश्चात् बाबर के चाचा और पिता में भी साम्राज्य विभाजन हुआ था। कदाचित् इसी परम्परा का ध्यान में रखकर बाबर ने भी साम्राज्य विभाजन का परामर्श दिया था। यदि हुमायूं ने इस परम्परा का त्याग किया होता तो वह एक नयी प्रणाली और नये नियम का प्रारम्भ करने वाला समझा जाता। इस तरह साम्राज्य का विभाजन कर हुमायूं ने अपने वंश की परम्परा का ही अनुगमन किया।

कामरान पांच वर्ष तक काबुल का शासक रह चुका था। वह वहां के लोगों से परिचित था। इस दृष्टि से हुमायूं इन भागों के लिए एक तरह से परदेशी था। अफगान हुमायूं को बाबर का (जिसने अफगान साम्राज्य को अपहृत किया था) उत्तराधिकारी समझकर उससे शत्रुता रखते थे। इस दृष्टि से कामरान के काबुल से, स्वतन्त्र शासन करने से, अफगानों को अधिकार में रखना सरल था। भय केवल इतना था कि अफगानों की शत्रुता का प्रयोग वह हुमायूं के विरुद्ध न करने लगे।

वास्तविक रूप से हुमायूं ने कामरान को ऐसे ही भाग दिये थे जो उसके पास पहले से थे अथवा जिन पर उसने शक्ति से अधिकार कर लिया था। यदि उसने

---

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायूं, पृ० 46।

2 त्रिपाठी, राइज एण्ड फाल ऑफ दि मुगल एम्पायर, पृ० 68।

अपना उत्तराधिकारी समझे। हिसार फिरोजा की जागीर देने से यह और भी स्पष्ट हो जाता है।

अस्करी तथा हिंदाल—अस्करी तथा हिंदाल को दिल्ली के निकट सम्भल तथा मेवात की जागीरें हुमायूं ने कदाचित् इस कारण दी कि हुमायूं इन पर दृष्टि रख सके। कामरान द्वारा पंजाब पर अधिकार करने की प्रगति से इन भाइयों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वे शान्त रहे। कदाचित् इन्हें यह आशा थी कि कामरान की जागीरों के बढ़ने के साथ इन्हें भी कुछ प्राप्त होगा, किन्तु ऐसा नहीं हुआ। इसके विपरीत अस्करी का तो नुकसान ही हुआ क्योंकि कामरान ने अस्करी को कन्धार तथा जमीनदावर से यह कहकर हटा दिया कि वह हजार लोगों को रोक नहीं सका।[1] किन्तु दोनों भाई सन्तुष्ट न हुए तथा जहां भी अवसर मिला, इन्होंने विद्रोह करने का प्रयत्न किया।

कालिंजर की विजय

कालिंजर[2] का दुर्ग बुंदेलखण्ड के दक्षिण पूर्वी भाग में एक पहाड़ी पर स्थित है। बनावट तथा स्थिति की दृष्टि से मध्ययुग में यह एक शक्तिशाली दुर्ग समझा जाता था। 1022 ई० में गजनी के महमूद ने कालिंजर पर आक्रमण किया। उस समय दुर्ग में पांच लाख मनुष्य, बीस हजार जानवर तथा पांच सौ हाथी थे।[3] राजपूतों तथा दिल्ली के सुल्तानों में इसके लिए बार-बार संघर्ष होता रहा। कभी यह राजपूतों के अधिकार में रहता है कभी तुर्कों के। दिल्ली के सुल्तानों ने भी कई बार कालिंजर पर आक्रमण किया था। इससे इसके महत्त्व का अनुमान लगाया जा सकता है। यह ऐसे स्थान पर स्थित था जहां से मालवा पर बहादुर शाह का अधिकार हो जाने से इस दुर्ग का महत्त्व मुगलों के लिए और भी बढ़ गया था।[4]

---

1 अकबरनामा, 1 पृ० 126।

2 कालिंजर, तहसील गिरवान, जिला बांदा, उत्तर प्रदेश में स्थित है। कालिंजर का दुर्ग बांदा से 35 मील पर गोंड के प्राचीन भाग पर स्थित है। (डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, बांदा, 1909 ई० पृ० 234) इस दुर्ग का नाम शिव के 'कालिंजर' नाम पर रखा गया। यह नाम महाभारत, शिव पुराण तथा टालेमी (Ptolemy) की पुस्तकों में मिलता है।

3 नाजिम, सुल्तान महमूद, पृ० 113।

4 डा० ईश्वरी प्रसाद ने यह मत व्यक्त किया है कि हुमायूं के कालिंजर पर आक्रमण करने का कारण वास्तविक रूप से गुजरात के बहादुर शाह पर आक्रमण करने की पृष्ठभूमि थी, क्योंकि कालिंजर मालवा पर आक्रमण

गद्दी पर बैठने के पश्चात हुमायूं छ मास महीने आगरा म रका रहा। वर्षा ऋतु के प्रारम्भ हाने के पश्चात 1531 ई० मे[1] हुमायू ने कालिजर के दुग पर आक्रमण किया। कदाचित राजकुमार की हैसियत से हुमायू ने कालिजर पर आक्रमण किया था, किन्तु उस समय सन्धि हो गयी थी। कालिजर पर चन्देल शासन करते थे। राजा प्रताप रुद्र ने दुग की रक्षा करने का प्रयत्न किया, किन्तु एक महीने से अधिक वह उसकी रक्षा न कर सका।[2] अन्त मे उसने हुमायू की अधीनता स्वीकार कर ली तथा उसे बारह मन (6720 तोला) सोना दिया। अफगानो के विद्रोह के कारण हुमायू न इन शर्तों को स्वीकार कर लिया। कालिजर का अभियान सम्राट होने के पश्चात हुमायू का प्रथम अभियान था। कालिजर का दुग अपनी शक्ति के लिए तथा चन्देल अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध थे। इस विजय से हुमायू का मान तथा प्रतिष्ठा बढ़ी।

अफगानो से प्रथम सघर्ष

जिस समय हुमायू कालिजर के दुर्ग को घेरे हुए था उसे अफगानो की सक्रियता की सूचना मिली। महमूद लोदी, बीबन तथा बायजीद के नेतृत्व म उन्होने बिहार से मुगल साम्राज्य के पूर्वी भागो मे प्रवेश किया। उन्होने जौनपुर

करने के लिए सुविधाजनक था। गुजरात विजय की आलोचना करते हुए व लिखते है कि हुमायू ने इस तरह बहादुर के विरुद्ध पहली विजय म सफलता प्राप्त की। (इश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 49)।

डा० रामप्रसाद त्रिपाठी का विचार है कि कालिजर के शासक न कालपी पर अधिकार करना चाहा (अगस्त 1531 ई०) बहादुर शाह की मालवा विजय से कालपी का महत्त्व बढ गया। हुमायू को राजा के व्यवहार से सन्देह हुआ तथा उसने कालिजर पर आक्रमण किया (त्रिपाठी, राइज एण्ड फाल आफ दि मुगल एम्पायर, पृ० 68 69)।

1 कालिजर के आक्रमण की तिथि के विषय म समकालीन इतिहासकारो म मतभेद है। अबुल फजल तथा अधिकतर समकालीन इतिहासकार लिखते हैं कि कालिजर के राजा ने 937 हि (1530 31 ई०) म समर्पण किया। इसके विपरीत तारीखे अलफी का लेखक इसे दो वर्ष बाद का बताता है। तारीख अलफी के अनुसार इस दुग का घेरा केवल थोडे समय के लिए था। इससे यह स्पष्ट है कि दो वर्ष तक इसका घेरा नहीं चला होगा। इस बात पर ध्यान देने से हम अबुल फजल की तिथि सही मालूम होती है (अकबरनामा, पृ० 123, तारीखे अलफी, बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 36)।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 123 24।

के मुगल गवनर जुनायद बरलास को भगाकर उस पर अधिकार कर लिया। यहा से आगे बढकर य लोग बाराबकी जिले के दादरा[1] नामक स्थान तक पहुचे। कालिजर के दुग को अधीन करके हुमायू उनकी तरफ अग्रसर हुआ।[2] गगा पार कर गोमती के तट पर दादरा मे अफगाना से भीषण युद्ध कर उन्ह परास्त किया।[3] अफगान

---

1 समकालीन इतिहासकारो ने जिस स्थान पर युद्ध हुआ उसके भिन्न भिन्न नाम दिये है। इलहदाद फैजी सरहिन्दी इसे दादरा लिखता ह। अब्बास लखनऊ के निकट (इलियट तथा डासेन, 4, प० 349) जौहर के अनुसार गोमती नदी के तट पर दौरा नामक स्थान पर (स्वीटट का अग्रेजी अनुवाद, पृ० 3, अर्सकिन, 2, प० 10, टिप्पणी) आईने अकबरी के अनुसार (भाग 2, अग्रेजी अनुवाद, पृ० 100) दादरा लखनऊ सरकार का एक महाल था। हादीवाला के अनुसार यह जौनपुर स 15 मील उत्तर स्थित देउनरु (Deunru) नामक गाव है (हादीवाला, 1, पृ० 450)। डा० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार (हुमाय, प० 50, टिप्पणी, 1) जौनपुर से 48 मील उत्तर है।

आजकल यह बाराबकी जिले के नवाबगज तहसील का एक गाव है जो बाराबकी जिले से 9 मील दक्षिण पव स्थित है। डा० कानूनगो इसे दौरा लिखते, है। हस्तलिखित प्रतियो मे दादरा तथा दौरा दोनो मिलत ह।

2 कालिजर के युद्ध के पश्चात् हुमायू की गतिविधि के विषय मे समकालीन इतिहासकार एकमत नही है। आधुनिक इतिहासकारा ने इस कारण भिन्न भिन्न मत प्रगट किये है। डा० त्रिपाठी क अनुसार हुमायू न सितम्बर 1531 ई० मे कालिजर दुग को अधीन कर लिया। यहा स वह चुनार आया (फरवरी 1532 इ०)। यहा स कामरान के उत्तर पश्चिम से अभियान की सूचना पाकर वह बिना चुनार पर अधिकार किये हुए आगरा चला गया। यहा कामरान से साम्राज्य विभाजन की समस्या का समाधान कर पुन अफगाना के विरुद्ध बढा तथा दौरा नामक स्थान पर उन्ह पराजित किया (अक्टूबर 1532 ई०)। (त्रिपाठी, राइज एण्ड फाल आफ दि मुगल एम्पायर, प० 68 70 तथा 113)।

डा० त्रिपाठी न अपना मत अकबरनामा पर आधारित किया है (अकबरनामा, पृ० 124)। डा० ईश्वरी प्रसाद (हुमायू प० 49) के अनुसार कालिजर स हुमायू अफगाना के विरुद्ध बढा तथा दोरा की लडाई हुई। डॉ० बनर्जी (हुमाय, 1, प० 37) लिखते ह कि कालिंजर स हुमायू सीधे चुनार गया। किन्तु चुनार मे क्या हुआ इसका वे जिक्र नही करत। अफगाना की स्थिति पर प्रकाश डालन के पश्चात वे सीधे दादरा की लडाई का वणन करत ह। उनके अनुसार कालिजर के दुग पर अधिकार जुलाई-अगस्त 1531 ई० मे तथा दादरा का युद्ध अगस्त 1532 ई० म हुआ।

3 दादरा के युद्ध की तिथि के विषय म समकालीन इतिहासकार एकमत

सेना भाग खड़ी हुई तथा उनके दो प्रमुख नेता शेख बायजीद तथा इब्राहीम यूसुफ खैल मारे गये (जुलाई-अगस्त 1531 ई०)।

शेर खां तथा दादरा—शेर खां का दादरा के युद्ध में क्या भाग था? इस विषय में इतिहासकार एकमत नहीं है। अब्बास खां सेरवानी ने इसका वृहत् वर्णन किया है। उसके अनुसार शेर खां ने इस युद्ध में अफगानों के साथ विश्वासघात किया। वह महमूद लोदी के बिहार आ जाने के पश्चात् अपनी जागीर में चला गया था। महमूद लोदी ने उसकी जागीर में जाकर उससे इस युद्ध में भाग लेने की प्रार्थना की तथा उसे साथ लेकर मुगलों के विरुद्ध बढ़ा। शेर खां युद्ध में सम्मिलित तो जरूर हुआ पर उसने छिपे तौर से हिन्दू बेग को एक पत्र लिखा जिसमें उसने अपनी सेना को युद्ध के समय हटा लेने का वचन दिया। जिस समय युद्ध हुआ उस समय शेर खां ने अपनी सेना हटा ली और इस तरह अफगानों की पराजय का वह एक प्रमुख कारण बना। अब्बास के इस मत का समर्थन निजामुद्दीन अहमद, बदायूनी और फिरिश्ता ने भी किया है।[1]

नहीं है। तारीखे अलफी में प्रथम वर्ष की घटनाओं में इसका उल्लेख है। गुलबदन बेगम के अनुसार हुमायूं ने बाबर की मृत्यु के 6 माह उपरान्त बीबन एवं बायजीद के विरुद्ध आक्रमण किया (हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ० 111-12)। जौहर के अनुसार हुमायूं कालिंजर से सीधे अफगानों के विरुद्ध बढ़ा तथा यह घटना उसके गद्दी पर बैठने के पहले वर्ष हुई (तजकीराते अल वाकियाते जौहर का स्टीवर्ट द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, पृ० 3)। वह उसकी तिथि 938 हि० लिखता है। निजामुद्दीन अहमद के अनुसार कालिंजर से हुमायूं अफगानों के विरुद्ध आगे बढ़ा। (तबकाते अकबरी डे, 2 पृ० 47 48 तथा 158 59)। फिरिश्ता के अनुसार भी हुमायूं ने कालिंजर से अफगानों पर आक्रमण किया। (फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 72)। अबुल फजल के अनुसार कालिंजर पर हुमायूं ने गद्दी पर बैठने के पांच ॥ महीने बाद आक्रमण किया। वहां से उसने चुनार पर आक्रमण किया। शेर खां ने सुलह कर ली। इसके पश्चात अफगानों पर हुमायूं ने 939 हि० (1532 33 ई०) में आक्रमण कर उन्हें पराजित किया (अकबरनामा, 1 पृ० 123 124। डा० बनर्जी के अनुसार दादरा का युद्ध अगस्त 1532 ई० में डा० कानूनगो तथा डा० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार जुलाई 1531 ई० तथा डा० रामप्रसाद त्रिपाठी के अनुसार नवम्बर दिसम्बर, 1532 ई० में हुआ (बनर्जी, हुमायूं 1, पृ० 42, कानूनगो शेरशाह पृ० 74, त्रिपाठी, राइज एण्ड फाल आफ दि मुगल एम्पायर, पृ० 113)।

1 तारीखे शेरशाही इलियट तथा डासन 4, पृ० 349, तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 159, फिरिश्ता, ब्रिग्स 2 पृ० 111 112, अर्सकिन, (2, पृ० 10) ने उसे विश्वासघाती कहा है।

डा० कानूनगो अब्बास के इस मत से सहमत नहीं है। वे लिखते हैं कि शेर खां के इस प्रशंसक ने ही उसके चरित्र और इज्जत को सबसे अधिक हानि पहुंचायी है। अपने मत के समर्थन में उन्होंने निम्नलिखित दलीलें दी हैं।[1]

(1) गुलबदन बेगम तथा जौहर अफगानों की पराजय के वर्णन के साथ शेर खां के नाम का उल्लेख नहीं करते।

(2) निजामुद्दीन अहमद, बदायूनी तथा फिरिश्ता, हुमायूं के राज्यकाल में अफगानों के विद्रोह के उल्लेख के समय शेर खां का जिक्र नहीं करते, यद्यपि ये ही लेखक शेर खां के अध्याय में इसका उल्लेख करते हैं।[2]

(3) सभी समकालीन इतिहासकारों ने शेर खां के विश्वासघात की कहानी अब्बास खां से ली है। इस घटना का समकालीन इतिहासकार केवल अब्बास है। बाद के सभी इतिहासकारों ने उसकी नकल की है।

(4) एलफिन्स्टन ने कदाचित् इसको अस्वीकार कर दिया है।[3]

(5) राष्ट्रीय पराजय के कारणों में विश्वासघात प्रायः जोड़ दिया जाता है।

(6) शेर खां अफगान सेना में गौण स्थान लेने के लिए तैयार नहीं था। वह जानता था कि उसकी सैनिक प्रसिद्धि बीबन या बायजीद के बराबर नहीं थी। इस कारण गौण स्थान प्राप्त करने के स्थान पर उसने इस अभियान में भाग न लेना ही ठीक समझा।

(7) शेर खां को इस समय तक राष्ट्रीय स्वतन्त्रता तथा राष्ट्रीय स्वत्व का ज्ञान नहीं था। वह अपने निजी स्वार्थ की ही दृष्टि से मुगलों से बैर करना नहीं चाहता था। हृदय में कदाचित वह लोदी तथा फर्मूली कबीलों के विनाश की कामना करता था, क्योंकि इन्हीं के कारण वह अपना विकास नहीं कर पा रहा था।

(8) चुनार को मुगलों से बचाने के लिए वह तटस्थ नीति अपनाना चाहता था।

समकालीन इतिहासकारों तथा परिस्थितियों के अध्ययन के उपरान्त डॉ० कानूनगो के मत को स्वीकार करना कठिन है। दादरा के युद्ध के समय बीबन,

---

1 कानूनगो, शेरशाह, पृ० 72 75।

2 बदायूनी, रेंकिंग, पृ० 451, तबकाते अकबरी, डे, 2 पृ० 47 48 तथा 159, फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 72 तथा 111-12।

3 एलफिन्स्टन, हिस्ट्री आफ इण्डिया, पृ० 443।

बायजीद या महमूद लोदी के सामने शेर खां का कोई स्थान नहीं था। डा कानूनगो इस बात को स्वयं स्वीकार करते हैं। फिर महमूद लोदी के अधीन युद्ध करने में शेर खां कैसे अपनी मानहानि समझता? गुलबदन बेगम तथा जौहर, मुगल वंश से सम्बन्धित होने के कारण यह लिखना हेय समझते थे कि हुमायूं की विजय वीरता से नहीं वरन शेर खां के सहयोग (अफगानों के प्रति विश्वासघात) से हुई। इसी कारण उन्होंने इसका उल्लेख नहीं किया है।

प्रत्यक्ष विश्वासघात की घटना को राष्ट्रीय पराजय के रूप में अस्वीकार कर देना अथवा किसी घटना का किसी विशेष इतिहासकार द्वारा उल्लेख न किये जाने के कारण यह कहना कि वह हुई ही नहीं अथवा कई इतिहासकारों द्वारा उसी घटना के वर्णन को नकल कहकर अस्वीकार कर देना गलत तर्क है।[1]

निजामुद्दीन, फिरिश्ता तथा बदायूनी ने हुमायूं तथा शेरशाह के राज्यकाल का अलग अलग वर्णन किया है। हुमायूं के राज्यकाल में इस घटना का वर्णन इसलिए नहीं किया गया है क्योंकि वे दो स्थानों पर इसका वर्णन नहीं करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त विश्वासघात का उल्लेख शेर खां के चरित्र वर्णन से अधिक सम्बन्धित था। फिर इन्हीं लेखकों द्वारा एक ही पुस्तक में वर्णित घटना कैसे अस्वीकार की जा सकती है?

यह संघर्ष अफगानों का एक महत्वपूर्ण अभियान था। इसका नेतृत्व लोदी वंश का उत्तराधिकारी कर रहा था। इसमें सभी प्रमुख अफगान सरदार सम्मिलित थे। ऐसी परिस्थिति में शेर खां का इससे अलग रहना असम्भव था। वह जानता था कि यदि वह उनका साथ नहीं देगा तो पुनः कभी भी उनका सहयोग नहीं प्राप्त कर सकेगा। मुगलों से मिलने की बात गुप्त थी। उसे आशा थी कि अफगानों को इसका पता नहीं चलेगा।

अब्बास खां शेर खां का प्रशंसक है उसने शेर खां के कई अनुचित कार्यों का समर्थन किया है।[2] डा० कानूनगो का यह कथन कि शेरशाह के सबसे बड़े प्रशंसक (अब्बास खां) ने उसकी बड़ी मानहानि की है, सत्य नहीं है। अपना इतिहास लिखते समय अब्बास जानता था कि शेर खां के विश्वासघात ने वास्तविक रूप में शेर खां तथा अफगानों का लाभ ही किया, क्योंकि कुछ ही वर्षों में उसने अपनी शक्ति को दृढ़ कर लिया। इस कारण उसे छिपाने के बजाय उसका उल्लेख कर उसने अपने चरित्रनायक की दूरदर्शिता प्रमाणित की।

---

1 बनर्जी, हुमायूं 1, पृ०45।

2 उदाहरणतया रायसीन में राजपूतों तथा पूरनमल की हत्या तथा रोहतास विजय।

डॉ० कानूनगो के विचार के विरुद्ध, डॉ० बनर्जी, डॉ० ईश्वरी प्रसाद तथा डा० रामप्रसाद त्रिपाठी ने अब्बास के वर्णन को स्वीकार किया है तथा वे मानते हैं कि शेर खां ने दादरा के युद्ध में अफगानों को धोखा दिया।[1]

वास्तविक रूप में शेर खां की स्थिति द्विविधापूर्ण थी। चुनार पर उसका अधिकार मुगलों के अधीन व्यक्ति की तरह था। शेर खां ने हिन्दू बेग के साथ पत्र व्यवहार में चुनार पर मुगलों के दावे को अस्वीकार नहीं किया।[2] सहसराम, खवासपुर के जागीदार के नाते उसने महमूद लोदी की अधीनता स्वीकार की थी। इस समय इसके दोनों स्वामियों में संघर्ष था। इस परिस्थिति में शेर खां ने तटस्थ रहने का विचार किया किन्तु जबरदस्ती उसे महमूद लोदी के साथ जाना पड़ा। उसने अनुभव किया कि उसका यह कार्य ठीक नहीं है, क्योंकि अगर मुगल विजयी हुए तो उसे चुनार छोड़ना पड़ेगा। अफगानों की विजय से उसकी स्थिति में विशेष परिवर्तन की कोई आशा नहीं थी, क्योंकि अफगानों में उसका स्थान बीबन, बायजीद तथा महमूद लोदी के बाद आता था। इस कारण वह महमूद लोदी के साथ गया जरूर, किन्तु साथ ही उसने हिन्दू बेग के द्वारा हुमायूं को सूचित कर दिया कि उसने विवश होकर महमूद लोदी का साथ दिया है किन्तु है वह मुगलों के साथ।

दादरा के युद्ध में तटस्थ रहते हुए भी वह वहां मुगलों में न मिलकर सीधा अपनी जागीर में गया। इस तरह उसने तटस्थ रहने का प्रयत्न किया। शेर खां को युद्ध के परिणाम का निश्चय नहीं था। यदि अफगान विजयी भी होते तो वह शेर खां को पूर्ण सहयोग न देने के कारण ताड़ना देते, किन्तु उसे विश्वासघाती नहीं कहते।

दादरा के युद्ध का परिणाम—दादरा के युद्ध ने अफगानों के जीवन में तथा मुगलों की पूर्वी समस्या में एक नया अध्याय प्रारम्भ किया। बायजीद इब्राहीम यूसूफ खैल, इत्यादि प्रमुख अमीरों की मृत्यु ने अफगानों की शक्ति को, जो पानीपत के युद्ध के पश्चात पुनः जागृत हो रही थी, तोड़ डाला। इससे मुगलों को पूर्वी भागों पर अधिकार करने में सुविधा हुई। गंगा तथा घाघरा के बीच का भाग मुगलों के अधिकार में आ गया तथा हुमायूं ने वहां जुनायद बरलास को अपना गवर्नर नियुक्त किया।[3] उसने हिन्दू बेग को शेर खां से वार्ता करने के लिए छोड़ दिया।[4] महमूद

---

1 बनर्जी, हुमायूं 1, पृ० 44 47, ईश्वरी प्रसाद, हुमायूं पृ०, 49 50, त्रिपाठी, राइज एण्ड फाल आफ दि मुगल एम्पायर, पृ० 70।

2 तारीखे दाऊदी, तारीखे सलातीने अफगाना।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 124।

4 तारीखे शेरशाही, इलियट और डासन, 4, पृ० 350।

लोदी इस युद्ध के पश्चात इतना निराश हुआ कि उसने राजनीति म भाग लेने का विचार ही त्याग दिया। वह पटना म साधारण व्यक्ति की भाति जीवन व्यतीत करने लगा तथा यही 949 हिजरी (1542 43 ई०) म उसकी मृत्यु हो गयी।[1] बहुत से अफगान सरदार यहा से भागकर बहादुर शाह के पास गुजरात गये। अब अफगाना के नेतृत्व के लिए केवल शेर खा रह गया और उसको स्वतन्त्रप से अपनी योजनाओ को कार्यान्वित करने का अवसर प्राप्त हुआ।

चुनार के दुग पर आक्रमण

दादरा के युद्ध के पश्चात हुमायू आगरा चला गया[2] दादरा म अफगानो की पराजय के पश्चात् उसे अफगाना का पीछा करना चाहिए था तथा उनकी शक्ति को पूण रूप से चूर कर उनके द्वारा अधिकृत भागो पर अधिकार कर लेना चाहिए था। इस भूल के कारण उसे भविष्य मे अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडा। शेर खा से चुनार के दुग पर अधिकार करने के विषय म वार्ता करने के लिए हुमायू न हिन्दू बेग को नियुक्त किया।[3] हिन्दू बेग न वाता प्रारम्भ की। शेर खा चुनार को समर्पित करने के लिए तयार नही था। हिन्दू बग ने शेर खा के इन विचारो की सूचना हुमायू को दी। चुनार के दुग की स्थिति और महत्ता तथा शेर खा के व्यवहार से खिन्न होकर हुमायू चुनार पर अधिकार करने के लिए आगरा स रवाना हुआ।[4] अपने आग उसने अग्रगामी दल के रूप म कुछ अमीरो को भेजा। उन्होने वहा पहुचकर दुग के घेरे का प्रबन्ध किया।

हुमायू लगभग एक वप आगरा मे रहा था। इस बीच एसा प्रतीत होता है कि उसन अपन दरबार मे कुछ नियम चलाये जिसका वणन ख्वान्दमीर न कानूने हुमायू मे किया है।[5]

---

1 तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० *159 60*।

2 अब्बास लिखता है कि दादरा के पश्चात हुमायू ने हिन्दू बेग को शेर खा स चुनार प्राप्त करन के लिए भेजा। शर खा न इनकार कर दिया। इसके पश्चात हुमायू ने चुनार पर आक्रमण किया। तारीखे शेरशाही इलियट और डासन, 4 पृ० 350) निजामुद्दीन (तबकाते अकबरी डे, प० *160*) स्पष्ट लिखता है कि अफगाना से युद्ध कर हुमायू आगरा चला गया।

3 तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, प० 350।

4 अब्बास, तारीखे शेरशाही इलियट और डासन, *4 प० 350*, तबकाते अकबरी, डे, 2, प० 160, फिरिश्ता, ब्रिग्स 2, 72।

5 ख्वान्दमीर, कानून हुमायूनी, बनी प्रसाद, प० 15 35।

चुनार का दुग बनारस और मिर्जापुर के बीच गगा नदी के तट पर स्थित है। यह दुग एक विशाल चट्टान पर है। मध्ययुग के महत्त्वपूण दुर्गो मे इसकी गणना थी। परम्पराओ के अनुसार यह दुग बहुत ही पुराना है तथा उज्जैन के विक्रमादित्य के भाई भतृहरि ने यहा अपना आश्रम बनाया था। सालहवी शताब्दी मे इब्राहीम लोदी ने यहा राजकोष रखा जिससे इसका महत्त्व और बढ गया।

लगभग चार महीने (सितम्बर से दिसम्बर 1532 ई०) हुमायू चुनार के दुग को घेरे रहा। उसकी सैन्य योजना नाकेबन्दी कर दुग म रहन वाला के लिए ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करनी थी जिससे वे समपण कर दे। कभी कभी रात या दिन म छोटे-छाटे आक्रमण भी होने रहत थे। शेर खा अपन दूसर लडके जलाल खा को इसकी रक्षा के लिए छोडकर स्वय भरकुन्दा[1] की तरफ (बिहार मे) चला गया था। जलाल खा ने बहादुरी से दुग की रक्षा की। दुग के बाहर रहने से शेर खा को अनेक सुविधाए थी। वह दुग म आवश्यक वस्तुओ को पहुचाता रहा। यह दुग इतना शक्तिशाली था कि आवश्यक वस्तुओ के पहुचते रहने पर शत्रु का उस पर अधिकार करना सरल नही था। इसके अतिरिक्त बाहर से बिहार तथा मुगलो की गतिविधि पर भी दष्टि रखने मे सुविधा थी। दुग के बाहर रहने से उसके पतन होने पर उस पर काई आच नही आती तथा उसे बन्दी बनाय जान का भी भय नही था।

इसी समय सूचना मिली कि बहादुर शाह न मालवा पर अधिकार करने के पश्चात एक शक्तिशाली सना के साथ चित्तौड पर आक्रमण कर दिया है। बहादुर शाह की दष्टि मुगल साम्राज्य पर भी थी। हुमायू इससे चिन्तित हुआ क्याकि उसकी अनुपस्थिति म यदि बहादुर शाह दिल्ली, आगरा अथवा पजाब के भागा पर आक्रमण कर देना तो कठिन परिस्थिति आ जाती। इस परिस्थिति मे न चाहते हुए भी हुमायू ने सधि करन का निश्चय किया।[2] शेर खा दुग मे नही रहते हुए भी वहा की परिस्थितिया से अवगत था। उम यह समाचार प्राप्त हुआ कि हुमायू चिन्तित है और दुग का घेरा उठाना चाहता है। शेर खा भी युद्ध को और बढावा नही देना चाहता था, क्याकि बगाल के शासक द्वारा बिहार पर आक्रमण किये जाने का भय था। दोना दला म इन कारणो से सधि हा गयी।

---

1 भरकुन्दा, नहरकुन्दा या बरकुन्दा। इलियट आर डासन, 4, प० 350, होदीवाला 1, प० 450, आइन अकबरी, 2, प० 153।

2 निजामुद्दीन स्पष्ट लिखता है कि चुनार को उसने बिना विजय के इस कारण छोड दिया, क्याकि बहादुर शाह का भय बढ गया था (तबकात अकबरी, डे, 2, प० 160)। अब्बास खा भी यही मत व्यक्त करता है (इलियट तथा डासन, 4, पृ० 351)।

सन्धि की शर्तें—शेर खां ने हुमायूं के प्रति समर्पण किया तथा स्वामिभक्ति की प्रतिज्ञा की। उसने अपने तीसरे पुत्र अब्दुर रशीद (जो कुतुब खां के नाम से प्रसिद्ध था) के नेतृत्व में, 500 सैनिकों की एक अफगान सेना मुगल सम्राट की सेवा के लिए भेजी। हुमायूं चाहता था कि जलाल खां इसका नेतृत्व करे, किन्तु शेर खां इसके लिए तैयार नहीं था। हुमायूं ने अन्त में कुतुब खां को ही स्वीकार कर लिया।[1] चुनार का दुर्ग शेर खां के ही अधिकार में रहा और इसके लिए उसे कर देने की आवश्यकता नहीं थी।[2]

चुनार की सन्धि वास्तविक रूप में शेर खां की विजय तथा हुमायूं की असफलता की सूचक है। इस घेरे का वास्तविक लाभ केवल पांच सौ अफगान सैनिक थे जो मुगलों को प्राप्त हुए थे। ये सैनिक वहां तक मुगल साम्राज्य के लिए शक्तिशाली होते यह सन्देहजनक था। शेर खां ने अधीनता अवश्य स्वीकार की किन्तु यह उसकी कूटनीतिक चाल थी। चुनार पर उसका अधिकार भी बना रहा तथा इसके लिए उसे कोई कर भी नहीं देना पड़ा।

डा० ईश्वरी प्रसाद ने हुमायूं के सन्धि करने की कटु आलोचना की है। उनका विचार है कि यदि हुमायूं ने शेर खां को परास्त कर दिया होता तो उसके उत्कर्ष का मूल ही नष्ट हो गया होता तथा कदाचित मुगलों को निष्कासन का सामना नहीं करना पड़ता।[3] इसमें सन्देह नहीं कि "इस सौदे से शेर खां को मनचाहा अवकाश और अपनी योजना की पूर्ति के लिए प्रोत्साहन मिला, साथ ही हुमायूं की कुछ बदनामी भी हुई।"[4] बदनामी का विशेष कारण यह भी था कि मुगलों ने अन्त में उन्हीं शर्तों को स्वीकार किया जिन्हें उन्होंने प्रारम्भ में अस्वीकार किया था।

हुमायूं की भूल स्वीकार करने के पूर्व हमें याद रखना चाहिए कि परिस्थितियां ऐसी थीं जिनसे विवश होकर हुमायूं को चुनार के दुर्ग का घेरा हटाना पड़ा।

---

1 अब्दुर्रशीद हुमायूं की सेवा में रहा और जब हुमायूं ने बहादुर शाह पर आक्रमण किया तथा मालवा पहुंचा तो वहां से अब्दुर्रशीद भाग खड़ा हुआ (अकबरनामा, 1 पृ० 123 24)। अब्बास इसका नाम कुतुब खां लिखता है (इलियट और डासन, भाग, 4, पृ० 351)।

2 अब्बास खां तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4 पृ० 351, डार्न, हिस्ट्री ऑफ दि अफगान्स, पृ० 103।

3 ईश्वरी प्रसाद, हुमायूं पृ० 61।

4 त्रिपाठी, राइज एण्ड फाल आफ दि मुगल एम्पायर, पृ० 72।

उस समय बहादुर शाह का भय शेर खा ऐसे साधारण व्यक्ति के भय से कही अधिक था। उस समय कोई यह विचार भी नही कर सकता था कि शेर खा हुमायू को हराकर किसी समय दिल्ली का सम्राट बन बैठेगा। इस कारण चुनार के विषय म सधि कर हुमायू ने कोई भूल नही की। वास्तविक रूप मे उसन अफगाना के प्रमुख सरदारा का सहयोग प्राप्त कर लिया।

हुमायू न एक भूल अवश्य की। जिस समय वह आगरा से रवाना हुआ उस समय भी बहादुर शाह की विस्तार नीति का विकास हो चुका था तथा मुगलो के प्रति उसकी नीति भी अस्पष्ट नही थी। हुमायू को स्वय चुनार अभियान का नेतत्व करने के स्थान पर किसी अय व्यक्ति को इसका उत्तरदायित्व सौपना चाहिए था। वह उस व्यक्ति के साथ शक्तिशाली सना भेज सकता था। फिर, सधि के पूव यदि परिस्थितिया प्रतिकूल थी ता उसे सधि करने के बजाय किसी प्रमुख व्यक्ति को अभियान का उत्तरदायित्व सौपकर स्वय वहा से आगरा लौट आना चाहिए था।

आन दोत्सव—जनवरी 1533 ई० मे हुमायू चुनार स आगरा लौटा।[1] उसके सकुशल लौटने के उपलक्ष म माहम बेगम की प्रेरणा से आगरा म आन दोत्सव मनाया गया। दरबार हुआ रोशनी हुई दावते हुइ आगरा के बाजार तथा जन-साधारण के मकान भी इस अवसर पर सजाय गय। हुमायू न अपन अमीरो म पारितोषिक, घोडे और वस्त्र वितरित किये।[2]

हुमायू के इस उत्सव का कारण क्या था? क्या उसन ऐसी विजय प्राप्त की थी जिसके उपलक्ष मे इस तरह का उत्सव मनाया जाता? ऐसी परिस्थिति मे जब बहादुर शाह मुगल साम्राज्य के सम्मुख एक भयकर समस्या उपस्थित कर रहा

1 गुलबदन, जौहर तथा फिरिश्ता के अनुसार हुमायू चुनार से आगरा लौटा। गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, प० 113, जौहर, स्ट्रीवट पृ० 3, फिरिश्ता, ब्रिग्स, प० 72।

2 गुलबदन बेगम के अनुसार 12 कतार ऊट 12 कतार खच्चर, 70 रास तीपूचाक घोडे 100 रास बोझ लादन वाले घाडे बाटे गये। 700 व्यक्तिया को विशेष खिलअतें पहनायी गयी। गुलबदन बेगम के अनुसार 'आईन बन्दी (बाजारो को सजाने की प्रथा) माहम ने प्रारम्भ की। श्रीमती बेवरिज के अनुसार यह सत्य नही है। वास्तव मे माहम के आदेश से कदाचित् इस बार जनसाधारण के घर भी सजाये गय। दखिए हुमायू नामा, बेवरिज, 113 14, प० 113 का तीसरा नोट। निजामुद्दीन अहमद के अनुसार 12,000 व्यक्तिया को विशेष वस्त्र दिये गये। उनमे दो हजार व्यक्तिया को जडाऊ सान के काम किये हुए बेल्ट तथा खिलअत के ऊपर पहनने के वस्त्र दिये गये। तबकाते अकबरी, डे 2, प० 46।

था क्या यह आयोजन उचित था ? डा० बनर्जी लिखते हैं कि हुमायू इन उत्सवो द्वारा बहादुर शाह तथा अन्य सम्राटो पर रोब जमाना चाहता था ।[1] इस मत को स्वीकार करना कठिन है। वास्तविकता तो यह है कि हुमायू को इस तरह के आनन्दोत्सवो का शौक था। इस अवसर पर राजमाता माहम बेगम ने विशेष उत्साह दिखाया। इसका राजनीतिक महत्त्व नही था। इस तरह धन का अपव्यय कहा तक उचित था यह सन्देहजनक है।

ग्वालियर यात्रा

इन उत्सवो के पश्चात हुमायू ग्वालियर गया जो आगरा के दक्षिण-पूर्व लगभग 72 मील की दूरी पर है। यहा वह दो महीने (फरवरी मार्च 1533 ई०) रहा। ग्वालियर जाने का हुमायू का अभिप्राय कूटनीतिक था।[2] बहादुर शाह चित्तौड घेरे हुए था और राजमाता कर्णावती ने हुमायू को राखी भेजकर सहायता के लिए आमन्त्रित किया था। कुछ विद्वानो का मत है कि वह रानी की सहायता के लिए ग्वालियर गया किन्तु यह सोचकर कि बहादुर शाह धर्मयुद्ध म लगा है, उसने उस पर आक्रमण नही किया। वास्तव मे हुमायू को भय था कि चित्तौड के अतिरिक्त बहादुर शाह मुगल साम्राज्य पर भी आक्रमण न कर दे। ग्वालियर से हुमायू बहादुर शाह की गतिविधि पर दृष्टि रखना चाहता था, क्योकि मेवाड विजय से गुजरात की सीमा मुगल सीमा तक पहुच जाती। इसके अतिरिक्त पूरे राजपूताने के सामूहिक साधन बहादुर शाह को प्राप्त हो जाते।

ग्वालियर निवास के दो महीने हुमायू ने उत्सवो म व्यतीत किये। शानदार दरबार तथा जलसे हुए। हुमायू सिक्को से तौला गया, तथा घोडा सहित उसका जुलूस निकाला गया। लोगो को मुफ्त भोजन दिया गया, हाथियो तथा अन्य तरह से आनन्दोत्सव मनाया गया।[3] हुमायू का ग्वालियर निवास व्यर्थ नही गया क्योकि परिस्थितियो को देखकर बहादुर शाह न मार्च 1533 ई० म मेवाड से सन्धि

---

1 बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 58।

2 गुलबदन बेगम लिखती है कि आगरा म हुमायू न माहम बेगम से प्रार्थना की कि आजकल मेरा दिल नही लगता, यदि आपका आदेश हो तो आपके साथ ग्वालियर के लिए रवाना हो जाऊगा। इस तरह वह आनन्द मनाने क अभिप्राय से गया था। (हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 115)। गुलबदन बेगम का यह अनुमान केवल बाहरी आनन्दोत्सव के आधार पर है। वास्तविक कारण का ज्ञान कदाचित उन्हे नही था।

3 Humaun indulged in another series of festivities and

कर ली तथा गुजरात लौट गया।

हुमायूं ने ग्वालियर में अपना समय व्यर्थ में क्यों नष्ट किया ? यदि वह राजपूतों की सहायता के लिए गया था तो उसने इसके लिए सक्रिय कदम क्यों नहीं उठाया ? ऐसा प्रतीत होता है कि हुमायूं बहादुर शाह से उस समय तक युद्ध करने के लिए तैयार नहीं था। यह भी सम्भव है कि वह उपयुक्त समय की प्रतीक्षा कर रहा था, किन्तु इसी समय अपनी माता माहम बेगम की बीमारी की सूचना पाकर उसे आगरा वापस जाना पड़ा।[1]

माहम बेगम की मृत्यु

ग्वालियर में दो माह रहने के पश्चात हुमायूं आगरा लौट आया। उसके शीघ्र लौटने का कारण उसकी मां माहम की बीमारी थी। माहम बेगम पेट के रोग से बीमार थी। हुमायूं ने उसकी चिकित्सा का उचित प्रबन्ध किया, किन्तु वह उसे बचा न सका। 8 मई 1533 ई० को माहम बेगम की मृत्यु हो गयी।[2]

माहम बेगम एक योग्य तथा प्रतिभाशाली महिला थी। बाबर की वही ऐसी पत्नी थी जिसे दिल्ली के तख्त पर बाबर के साथ बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।[3] हुमायूं के गद्दी पर बैठने के पश्चात् माहम का प्रभाव कम नहीं हुआ बल्कि बढ़ा ही। उसने हुमायूं के समय के सामाजिक उत्सवों को संगठित किया। बाबर की मृत्यु के पश्चात् माहम ने आगरा नहीं छोड़ा और बाबर की कब्र की देख रेख

organized durbars as if to announce to Bahadur that though he was ever ready to face the Sultan and had actually come out to meet him, he was not averse to peace" (बनर्जी, हुमायूं, 1, पृ० 59)।

विद्वान लेखक के इस मत को स्वीकार करना कठिन है। यदि हुमायूं इस आनन्दोत्सव द्वारा बहादुर शाह को भयभीत करना चाहता था तो यह उसकी भूल थी। बहादुर शाह इस तरह चक्कर में आने वाला व्यक्ति नहीं था।

1 कामिस्सारियट, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 330, बनर्जी, हुमायूं, 1, पृ० 59 60।

2 गुलबदन बेगम के अनुसार माहम की मृत्यु 13 शव्वाल 940 हिजरी (27 अप्रैल 1534 ई०) को हुई। गुलबदन बेगम की तिथि ठीक नहीं है। इसकी विवेचना के लिए देखिए हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ० 116।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 114।

करती रही। उसका भाई मुहम्मद अली असस बाबर की कब्र का मुतवल्ली नियुक्त हुआ। कुरान पढ़ने वाले आठ व्यक्ति कुरान पढ़ने के लिए नियुक्त किए गए। जब तक माहम जीवित रही बाबर के मजार पर दोनों वक्त का भोजन माहम की जागीर की आय से बांटा जाता था।[1] माहम के मन में सदा यह इच्छा रहती थी कि हुमायूं का पुत्र पैदा हो और उसके लिए वह हुमायूं के विवाह का भी प्रबन्ध करती रहती थी। किन्तु उसकी यह इच्छा उसके जीवन काल में पूरी न हो सकी।[2]

दीन पनाह

माहम की मृत्यु के बाद चालीस दिन तक शोक मनाया गया। उसके पश्चात हुमायूं आगरा से दिल्ली गया। वहां उसने एक नगर का निर्माण किया जो दीन पनाह (धर्म का रक्षक) के नाम से प्रसिद्ध हुआ।[3] इस नगर के निर्माण का विचार हुमायूं के मस्तिष्क में उसके ग्वालियर निवास के समय आया। उसका विचार था कि वह एक ऐसे नगर का निर्माण करे जिसके चारों तरफ ऊंची-ऊंची दीवारें, कई मंजिल के ऊंचे महल तथा सुन्दर उद्यान एवं बगीचे हों और नगर संसार में अद्वितीय हो।[4]

इस नगर का निर्माण स्थल दिल्ली में यमुना के तट पर पुराने किले में निश्चित हुआ। *ज्योतिषियों द्वारा निश्चित शुभ मुहूर्त में हुमायूं ने इस नगर का शिलान्यास* किया (जुलाई-अगस्त 1533ई०)। उसके प्रथम ईंट रखने के पश्चात अन्य उपस्थित आलिमों एवं सैयिदों ने भी ईंटें रखीं और उसी दिन बादशाह के विशेष महल के निर्माण का कार्य प्रारम्भ हो गया। लगभग नौ महीने में शहर की चारदीवारी, उसका ऊपरी भाग तथा द्वार बनकर तैयार हो गया।[5]

---

1 गुलबदन बेगम के अनुसार (बेवरिज, पृ० 111) प्रत्येक दिन प्रातः एक बैल दो भेड़ें तथा पांच बकरियां तथा तीसरे पहर पांच बकरियां वितरण के लिए काटी जाती थीं।

2 गुलबदन, हुमायूंनामा पृ० 112।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 124। अबुल फजल तथा ख्वान्दमीर के अनुसार अब्जद के आधार पर इसकी तिथि 'शहरे पादशाहे दीन पनाह' से निकलती है, जिसका जोड़ 940 हिजरी होता है (ख्वान्दमीर कानूने हुमायूंनी बेनी प्रसाद, पृ० 59 60, गुलबदन, हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ० 117)।

4 ख्वान्दमीर कानूने हुमायूंनी बेनी प्रसाद, पृ० 59 62।

5 वही, पृ० 59 60। शिलान्यास मुहर्रम 940 हि० (जुलाई अगस्त,

डॉ० बनर्जी न हुमायू के दीन पनाह के निमाण की सराहना की है। वे लिखते है कि दीन पनाह नामक नयी राजधानी के निर्माण का काय मूखता का काय नही था। लोदी सुल्ताना की दिल्ली जातीयता, साम्प्रदायिकता तथा सकीणता स परिपूण थी। उसका नया नगर विश्व के बुद्धिमानो का स्वग था जो हर तरह के धमशील व्यक्तियो को आकर्षित करता। दीन पनाह हुमायू की उदार नीति का प्रतीक था फिर भी हुमायू ने मुहम्मद तुगलक की तरह अपने इस आदश का ढिढोरा नही पीटा। उसन कवियो, सूफियो, इतिहासकारो और दाशनिको का स्वागत किया तथा उसके दरबार म भिन्न भिन्न देशो के विद्वान् उपस्थित हुए। उस समय मुस्लिम सस्कृति की राजधानी ईरान, तुर्की या मध्य एशिया का कोई नगर न होकर दिल्ली थी। डॉ० बनर्जी लिखते है कि इसके अतिरिक्त दीन पनाह द्वारा हुमायू ईरान के सफवी सुल्तान तथा तुर्की सुल्तान की धार्मिक कट्टरता की नीति की आलोचना करना चाहता था और यह दिखाना चाहता था कि इन देशो के शासको का माग सही नही है।[1]

डॉ० बनर्जी का मत कल्पनाओ पर आधारित है। कदाचित् हुमायू के मस्तिष्क मे उसका इतना महत्त्व नही था। इसके विषय मे हम केवल यही कह सकते है कि गद्दी पर बैठने के पश्चात् नयी उमग मे हुमायू दिल्ली के अन्य शासको की भाति नयी राजधानी तथा नयी इमारतें बनवाना चाहता था। दीन पनाह का निर्माण उसकी इस इच्छा का ही प्रतीक था। दीन पनाह का कोई राजनीतिक महत्त्व भी था, यह एक सन्देहजनक बात है।

जश्न तथा दावतें

दीन पनाह की स्थापना के बाद जुलाई 1534 ई० मे हुमायू लौटकर आगरा आया और हरम की स्त्रियो के कहने पर उसने दो और जश्नो का प्रबन्ध किया। इनमे से एक 'तिलिस्म का जश्न' था। यह विशेषतया स्त्रियो तक सीमित था। यह जश्न नदी के तट पर तैयार कराये गये एक विशेष प्रकार के भवन म हुआ जिसका

1533 ई०) मे हुआ तथा इमारते शव्वाल 940 हि० के अन्त तक (मई 1534 ई०) म तैयार हो गयी। बेनी प्रसाद लिखते हैं (पृ० 62, टिप्पणी, 1) कि डा० बनर्जी का यह कथन है कि दीन पनाह अप्रैल म बनकर तैयार हो गया, ठीक नही है। दीन पनाह का नगर अब अस्तित्व म नही है केवल दुग की दीवार ही रह गयी है (बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 63 64)।

1 बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 62 63।

नाम तिलिस्म रखा गया।[1] इसके बीच एक अष्टभुज कमरा था जिसके मध्य म एक अष्टभुज हौज था। हौज के मध्य मे एक अष्टभुज चबूतरा था जिस पर बहुमूल्य ईरानी कालीन बिछाये गये। तरुण रूपवतिया, सुदरिया एव सुदर गायिकाए हौज मे बैठी। हुमायू खानजादा बेगम के साथ जडाऊ सिंहासन पर भवन के प्रागण मे बैठा। भवन को भाति भाति से सजाया गया था जिसमे मनोरजन एव भोग विलास की सभी सामग्रिया प्रस्तुत थी। कई हजार अशरफिया इनाम के तौर पर बाटी गयी। नाव पर जनाना बाजार लगाया गया, जो एक तरह से मीना बाजार का प्रारम्भिक रूप कहा जा सकता है।

दूसरा जश्न हिंदाल के विवाह से सम्बन्धित था। हिंदाल का विवाह महदी ख्वाजा की बहन सुल्तानम बेगम से हुआ। यह विवाह माहम बेगम के जीवन काल म ही निश्चित हो गया था किन्तु माहम की बीमारी के कारण उत्सव स्थगित कर दिया गया था। अब उत्सव उसी धूमधाम से मनाया गया।

गुलबदन बेगम ने इन जश्नो तथा दावतो का विस्तृत वणन किया है। इनके वणन से यह स्पष्ट हो जाता है कि हुमायू तथा उसके परिवार की स्त्रिया स्वप्न लोक मे रहती थी। एक तरफ बहादुर तथा दूसरी तरफ अफगाना का उत्कप उनके भविष्य के लिए क्या सजो रहा था इसमे वे बिलकुल अनभिज्ञ थी। यही नही, हुमायू भी मनोरजन तथा विलास म इस तरह आनन्द ले रहा था जसे ससार मे यही सब कुछ हो।

---

1 इस जश्न तथा विशेष घर के लिए देखिए ख्वन्दमीर, कानूने हुमायूनी, बेनी प्रसाद, पृ० 55 59, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 118 26। गुलबदन बेगम ने स्त्रियो का नाम भी दिया है। हुमायू के आनन्दोत्सव की झलक गुलबदन बेगम के निम्नलिखित वणन से मिल सकती है—

"सिंहासन के ऊपर एव नीचे जरदोजी के अदसके लगाए गए और बहुमूल्य मोतिया की लडिया जो डेढ डेढ गज लम्बी थी, लगायी गयी छोटे कमरे म जडाऊ छपरखट (पलग) बिछाया गया था। पानदान सुराही, जडाऊ पेय पात्र तथा खालिस साने चादी के बतन आला पर रखे गय। हजरत पादशाह न कहा "आका जान का यदि आदेश हो तो हौज म जल पहुचा दिया जाए।" आका जान न कहा "बहुत खूब।" व स्वय जाकर जीने पर बठ गयी। लोग असावधान थे कि फव्वारे खोल दिये गये जल निकलन लगा। जवाना मे बडे विचित्र प्रकार का कोलाहल होने लगा। हौज के किनारे एक कमरा था जिसम अभरक की खिडकिया लगी थी। तरुण लोग उसमे बठे थे और बाजीगर करतब दिखा रहे थे।"

2 हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 126 29।

प्रदान किया। हुमायूं को यह विश्वास था कि इस दयापूर्ण व्यवहार से मुहम्मद जमान मिर्जा राजभक्त हो जाएगा। किन्तु ऐसा सम्भव न हो सका, क्योंकि मिर्जा लोग बहुत ही महत्त्वाकांक्षी थे और भारत में अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करना चाहते थे।

द्वितीय विद्रोह—जुलाई 1534 ई० में मुहम्मद जमान मिर्जा, मुहम्मद सुल्तान मिर्जा, उसके पुत्र उलूग मिर्जा तथा एक अन्य राजकुमार वलीखूब मिर्जा ने विद्रोह किया।[1] ऐसा प्रतीत होता है कि इन लोगों ने बहादुर शाह से धन प्राप्त किया था और उसे विश्वास दिला दिया था कि हुमायूं की सेना का अनुशासन ढीला था तथा अमीर असन्तुष्ट थे, इस कारण वह पराजित किया जा सकता था।

हुमायूं ने इनके विरुद्ध आक्रमण किया तथा गंगा के तट पर भोजपुर[2] में अपना पड़ाव डाला। वहां से उसने यादगार नासिर मिर्जा (बाबर के छोटे भाई नासिर मिर्जा का पुत्र) को बिहार के विद्रोह का दमन करने के लिए भेजा। विद्रोहियों ने राजसी सेना का सामना किया किन्तु पराजित हुए और तीनों मिर्जा कई अन्य विद्रोहियों के साथ बन्दी बना लिये गये। प्रमुख विद्रोही मुहम्मद जमान मिर्जा बयाना भेजा गया। हुमायूं ने यह आज्ञा दी कि तीनों प्रमुख मिर्जाओं की आंखों में सलाई डालकर उन्हें अन्धा कर दिया जाए। इन बन्दियों की देख रेख का भार मिर्जा यादगार बेग तगाई को सौंपा गया।[3]

वलीखूब मिर्जा तथा मुहम्मद सुल्तान मिर्जा तो अन्धे बना दिये गये, किन्तु मुहम्मद जमान मिर्जा ने जेलर को अपनी तरफ मिला लिया जिससे उसकी देखने की शक्ति नष्ट नहीं हुई। विद्रोहियों ने यादगार बेग तगाई को अपनी तरफ मिला लिया तथा एक जाली पास के द्वारा भागकर गुजरात चले गये।[4] मुहम्मद सुल्तान

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 124, तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 46 47। निजामुद्दीन मिर्जाओं के विद्रोह को विचित्र घटना लिखता है। (फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 73, हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ० 114)।

2 डा० बनर्जी (हुमायूं, 1 पृ० 69) भोजपुर को बिहार के शाहाबाद जिले में निश्चित करते हैं। यह ठीक नहीं है। भोजपुर उत्तर प्रदेश के फरुखाबाद जिले में एक ग्राम है। यह 26° 17′ उत्तर तथा 79° 41′ पूर्व फतेहगढ़ के दक्षिण 6 मील पर स्थित है।

3 हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ० 114 15, अकबरनामा, 1, पृ० 124, मुन्तखबुत्तवारीख बदायूनी, 1, पृ० 344। यादगार बेग हुमायूं का मामा तथा उसकी स्त्री हाजी बेगम का पिता था।

4 अकबरनामा, 1, पृ० 124।

5 बहादुर शाह तथा मुगल सम्राट

हुमायू के बाह्य शत्रुओ म गुजरात के शासक बहादुर शाह का प्रमुख स्थान था। उसकी प्रगति, कार्यशीलता, तथा विस्तारवादी नीति ने कुछ ही वर्षों म दक्षिण-पश्चिमी भारत की राजनीति म नयी समस्याए उपस्थित कर दी। अपनी प्रगति के मद म बहादुर शाह न एक तरफ तो साम्राज्य विस्तार की नीति अपनायी और दूसरी तरफ उसन मुगल शरणार्थियो को शरण देना प्रारम्भ किया। वह उनकी सहायता के बहाने मुगल साम्राज्य को भी पददलित करन का स्वप्न देखन लगा। बहादुर शाह के राज्यकाल की प्रारम्भिक घटनाओ का वणन किया जा चुका है। मालवा विजय ने बहादुर शाह को राजपूताना के और निकट ला दिया। इस समय भीलसा, उज्जन तथा रायसीन[1] राजपूत सरदार सिलहदी[2] के अधिकार म थे। जब तक ये भाग बहादुर शाह के प्रभाव से अलग रहते तब तक उसकी मालवा विजय अपूण थी। इस तरह उसकी विस्तारवादी नीति तथा इन भागो की सामरिक स्थिति ने उस आकर्षित किया और उसने रायसीन पर अधिकार करने का निश्चय किया।

बहादुर शाह द्वारा रायसीन विजय

बहादुर शाह सिलहदी से कई कारणो से असन्तुष्ट था। उसके गुजरात की गद्दी पर बैठने के पश्चात सिलहदी उसकी सेवा म उपस्थित नही हुआ था।[3] इस मानहानि के बहाने बहादुर शाह ने उसके ऊपर आक्रमण करने का निश्चय किया।

---

1 रायसीन 22° 20′ उत्तर तथा 77° 47′ पूव, भूपाल से 22 मील की दूरी पर स्थित है। सेंट्रल इण्डिया स्टेट गजेटियर सीरीज भूपाल स्टेट, भाग 3, पृ० 113।

2 यह वही सिलहदी है जो राणा सागा के साथ खानवा के युद्ध म लडा था।

3 कहा जाता है कि सिलहदी के हरम का ठाट बाट बहादुर के हरम से कही अधिक था। उसके पास नतकियो के चार दल (अखाडे) थे जो अपनी कला के लिए विख्यात थे। जिस समय नतकिया नत्य करती थी, चालीस युवतिया मशाल दिखाती थी (बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात, प० 366)। डा० बनर्जी (हुमायू, 1, प० 82) मिरात सिकन्दरी के आधार पर

5 बहादुर शाह तथा मुगल सम्राट

हुमायू के बाह्य शत्रुओं में गुजरात के शासक बहादुर शाह का प्रमुख स्थान था। उसकी प्रगति, कार्यशीलता, तथा विस्तारवादी नीति ने कुछ ही वर्षों में दक्षिण-पश्चिमी भारत की राजनीति में नयी समस्याएं उपस्थित कर दी। अपनी प्रगति के मद में बहादुर शाह ने एक तरफ तो साम्राज्य विस्तार की नीति अपनायी और दूसरी तरफ उसने मुगल शरणार्थियों को शरण देना प्रारम्भ किया। वह उनकी सहायता के बहाने मुगल साम्राज्य को भी पददलित करने का स्वप्न देखने लगा। बहादुर शाह के राज्यकाल की प्रारम्भिक घटनाओं का वर्णन किया जा चुका है। मालवा विजय ने बहादुर शाह को राजपूताना के और निकट ला दिया। इस समय भीलसा उज्जैन तथा रायसीन[1] राजपूत सरदार सिलहदी[2] के अधिकार में थे। जब तक ये भाग बहादुर शाह के प्रभाव से अलग रहते तब तक उसकी मालवा विजय अपूर्ण थी। इस तरह उसकी विस्तारवादी नीति तथा इन भागों की सामरिक स्थिति ने उसे आकर्षित किया और उसने रायसीन पर अधिकार करने का निश्चय किया।

बहादुर शाह द्वारा रायसीन विजय

बहादुर शाह सिलहदी से कई कारणों से असन्तुष्ट था। उसके गुजरात की गद्दी पर बैठने के पश्चात् सिलहदी उसकी सेवा में उपस्थित नहीं हुआ था।[3] इस मानहानि के बहाने बहादुर शाह ने उसके ऊपर आक्रमण करने का निश्चय किया।

---

1 रायसीन 22° 20 उत्तर तथा 77° 47' पूर्व, भूपाल से 22 मील की दूरी पर स्थित है। सेंट्रल इण्डिया स्टेट गजेटियर सीरीज भूपाल स्टेट, भाग 3, पृ० 113।

2 यह वही सिलहदी है जो राणा सांगा के साथ खानवा के युद्ध में लड़ा था।

3 कहा जाता है कि सिलहदी के हरम का ठाट-बाट बहादुर के हरम से कहीं अधिक था। उसके पास नर्तकियों के चार दल (अखाड़े) थे जो अपनी कला के लिए विख्यात थे। जिस समय नर्तकियां नृत्य करती थी, चालीस युवतियां मशाल दिखाती थी (बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 366)। डॉ० बनर्जी (हुमायू, 1, पृ० 82) मिरात सिकन्दरी के आधार पर

5 बहादुर शाह तथा मुगल सम्राट

हुमायू के बाह्य शत्रुओ मे गुजरात के शासक बहादुर शाह का प्रमुख स्थान था। उसकी प्रगति, कार्यशीलता, तथा विस्तारवादी नीति ने कुछ ही वर्षों म दक्षिण-पश्चिमी भारत की राजनीति म नयी समस्याए उपस्थित कर दी। अपनी प्रगति के मद मे बहादुर शाह ने एक तरफ तो साम्राज्य विस्तार की नीति अपनायी और दूसरी तरफ उसने मुगल शरणार्थियो को शरण देना प्रारम्भ किया। वह उनकी सहायता के बहाने मुगल साम्राज्य को भी पददलित करने का स्वप्न देखने लगा। बहादुर शाह के राज्यकाल की प्रारम्भिक घटनाओ का वणन किया जा चुका है। मालवा विजय न बहादुर शाह को राजपूताना के और निकट ला दिया। इस समय भीलसा, उज्जन तथा रायसीन[1] राजपूत सरदार सिलहदी[2] के अधिकार म थे। जब तक ये भाग बहादुर शाह के प्रभाव से अलग रहते तब तक उसकी मालवा विजय अपूण थी। इस तरह उसकी विस्तारवादी नीति तथा इन भागो की सामरिक स्थिति ने उसे आकर्षित किया और उसने रायसीन पर अधिकार करने का निश्चय किया।

बहादुर शाह द्वारा रायसीन विजय

बहादुर शाह सिलहदी से कई कारणो से अस तुष्ट था। उसके गुजरात की गद्दी पर बैठने के पश्चात सिलहदी उसकी सेवा मे उपस्थित नही हुआ था।[3] इस मानहानि के बहाने बहादुर शाह ने उसके ऊपर आक्रमण करने का निश्चय किया।

---

1 रायसीन $22^0\ 20'$ उत्तर तथा $77^0\ 47'$ पूर्व, भूपाल से 22 मील की दूरी पर स्थित है। सेंट्रल इण्डिया स्टेट गजेटियर सीरीज भूपाल स्टेट, भाग 3, प० 113।

2 यह वही सिलहदी है जो राणा सागा के साथ खानवा के युद्ध म लडा था।

3 कहा जाता है कि सिलहदी के हरम का ठाट-बाट बहादुर के हरम से कही अधिक था। उसके पास नतकियो के चार दल (अखाडे) थे जो अपनी कला के लिए विख्यात थे। जिस समय नतकिया नृत्य करती थी, चालीस युवतिया मशाल दिखाती थी (बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात प० 366)। डा० बनर्जी (हुमायू, 1, प० 82) मिराते सिकन्दरी के आधार पर

सिलहदी बहादुर की इच्छा से अवगत था। उसने उसे प्रसन्न करने के लिए एक अमीर नस्सन खां को गुजरात भेजा, किन्तु बहादुर शाह इससे सन्तुष्ट नहीं हुआ। 1532 ई० के प्रारम्भ में सिलहदी बहादुर से मिलने गया। उसी समय वह बन्दी बना लिया गया। उसका नाम बदलकर सलाहुद्दीन हो गया। गुजरात के शासक को प्रसन्न करने के लिए सिलहदी मुसलमान हो गया। इसका भी कोई परिणाम नहीं हुआ। बहादुर ने उज्जैन तथा भीलसा पर आक्रमण कर इन पर अधिकार कर लिया तथा एक बलवती सेना के साथ रायसीन के दुर्ग को घेर लिया।

सिलहदी की अनुपस्थिति में उसका भाई लक्ष्मणसिंह[1] उस समय रायसीन के दुर्ग की रक्षा कर रहा था। सिलहदी के पुत्र भूपत का विवाह राणा सांगा की पुत्री से हुआ था। इस सम्बन्ध से रायसीन की रक्षार्थ मेवाड़ से सेना के आगमन की सूचना मिली। इस समाचार से बहादुर सशंकित हुआ, किन्तु उसने रायसीन के दुर्ग का घेरा नहीं उठाया। सिलहदी उस समय बहादुर की सेना के साथ था। गढ़ की सेना से समर्पण कराने तथा अपने परिवार को दुर्ग के बाहर लाने के अभिप्राय से बहादुर से आज्ञा लेकर सिलहदी दुर्ग के अन्दर गया। दुर्ग में अपने सम्बन्धियों तथा अन्य लोगों के बीच पाकर तथा अपनी पत्नी दुर्गादेवी की डांट फटकार से वह पुनः हिन्दू हो गया और दुर्ग में ही रह गया। यह समाचार पाकर बहादुर शाह ने तोपखाने की सहायता से, जिसका नेतृत्व प्रसिद्ध तुर्की तोपची रूमी खां कर रहा था, दुर्ग पर भीषण आक्रमण किया तथा उस पर अधिकार कर लिया। सिलहदी की स्त्री दुर्गादेवी सात सौ स्त्रियों के साथ, जिनमें मुस्लिम स्त्रियां भी थीं, जौहर कर जल मरी।[2] सिलहदी तथा उसका भाई लक्ष्मण सिंह अन्य राजपूतों के साथ लड़ते हुए मारे गये। रायसीन पर बहादुर शाह का अधिकार हो गया। बहादुर

लिखता है कि बहादुर की नाराजगी का कारण सिलहदी द्वारा अपने हरम में बहुत सी मुस्लिम स्त्रियां का रखना था। कामिस्सारियट ने भी इस मत का समर्थन किया है (हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 327)। यह कथन सत्य नहीं प्रतीत होता। बहादुर के आक्रमण का प्रमुख कारण राजनीतिक था जो उसकी साम्राज्य विस्तार नीति का एक अंग था। फिरिश्ता (ब्रिग्स, 4, पृ० 117) स्पष्ट लिखता है कि यह बहाना मात्र था।

1 डा० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार इसका नाम लक्ष्मण सेन था। (हुमायूं, पृ० 62)।

2 बहादुर शाह को दुर्ग विजय के पश्चात जो सोना, चांदी इत्यादि मृत स्त्रियां की राख से प्राप्त हुआ उसे उसने एक अमीर बुरहानुल मुल्क बुनयानी को दिया। सभी सभ्य लोगों ने उसके स्वीकार करने की निन्दा

ने चन्देरी भीलसा तथा रायसीन आलम खा को दे दिये। आलम खा इसके पूर्व मुगल अमीर था। वहा से भागकर वह बहादुर से आ मिला था। इस समय मुगलो के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने मे वह बहादुर को सहायता दे रहा था। बहादुर को आशा थी कि आलम खा पुरबिया राजपूतो को गुजरात के अधीन रखने मे सफल होगा। रायसीन की विजय के पश्चात बहादुर शाह ने मेवाड पर आक्रमण किया।

बहादुर शाह द्वारा चित्तौड का प्रथम घेरा

चित्तौड का दुर्ग मध्य युग मे एक महत्त्वपूर्ण दुर्ग समझा जाता था। राजपूताने पर अधिकार करने के लिए प्रत्येक आक्रमणकारी इसको अधिकृत करना आवश्यक समझता था। राणा सागा की मृत्यु के पश्चात मेवाड की स्थिति का वर्णन हम तीसरे अध्याय मे कर आये है। मेवाड के तत्कालीन राणा विक्रमादित्य (1531-36 ई०) मे राणा सागा का कोई भी गुण नही था, तथा मेवाड की गद्दी के लिए वह पूर्णरूप से अयोग्य था। वह अपना समय खेलकूद, शिकार, शराब तथा स्त्रियो मे व्यतीत करता था। इससे उसे राज्यकार्य देखने का समय नही मिलता था तथा यह कार्य उसके चापलूस अमीर करते थे। उसके दुर्व्यवहार से राजपूत सरदारो मे असतोष फैल गया। बहुत से सरदार जो उसके पूर्वजो का समय देख चुके थे क्रोध से अपनी अपनी जागीरो मे चले गये। उसके राज्य की दुर्व्यवस्था के कारण लोग उसके राज्य को पप्पाबाई का राज्य कहते थे।[1]

बहादुर शाह का राणा सागा और रत्नसिंह से अच्छा सम्बन्ध था। राणा सागा ने बहादुर शाह के गद्दी पर बैठने के समय उसे बधाई दी थी। रत्नसिंह ने भी शत्रुजय के मन्दिर की मरम्मत के लिए उससे आज्ञा प्राप्त की थी।[2] इसके विपरीत विक्रमादित्य ने सिलहदी को बहादुर शाह के विरुद्ध सहायता दी। यद्यपि

की। उसने भी प्राप्त धन दान कर दिया। (बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 356 66, रास, अरबिक हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 224 25)।

रायसीन की विजय के लिए देखिए बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 356 66, फिरिश्ता, ब्रिग्स, 4, पृ० 117-23, कामिस्सारियट, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 327-28, रास, अरेबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात, 1, पृ० 224 25।

1 वीर विनोद, 2, पृ० 27, कैम्ब्रिज हिस्टी आफ इण्डिया, 3, पृ० 530, टाड, एनल्स एण्ड ए टीक्यूटीज आफ राजस्थान, 1, पृ० 248।

2 ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, पृ० 391।

यह केवल सहायता के ही लिए थी फिर भी विक्रमादित्य के इस व्यवहार से बहादुर शाह बहुत नाराज हुआ। उसे यह भी मालूम था कि राणा सागा के अमीर नये राणा के साथ नही हैं। मेवाड के जागीरदारा म पारस्परिक वैमनस्य बढता जा रहा था। राणा सागा के भतीजे नरसिंह देव तथा अन्य विद्रोही जागीरदारा ने बहादुर से चित्तौड पर आक्रमण करने की प्राथना की।[1] बहादुर को चित्तौड पर आक्रमण करने का एक अच्छा बहाना मिला, यद्यपि चित्तौड पर आक्रमण करने के अन्य कारण भी थे। बहादुर शाह जानता था कि मुगलो के विरुद्ध आक्रमण करने के पूव राजपूतो, विशेषतया मेवाड को वश मे करना आवश्यक था। मालवा पर अधिकार करने के पश्चात् वह अब राणा सागा द्वारा अधिकृत मालवा के भाग पर अधिकार करना चाहता था।

बहादुर शाह ने अपने सेनानायका मुहम्मद खा आसिरी तथा खुदावन्द खा के नेतृत्व मे एक अग्रणी दल चित्तौड पर आक्रमण करने के लिए भेजा (1532 ई०) तथा स्वय भी उनके पीछे रवाना हुआ। उसके सेनानायका ने रणथम्भौर,[2] कनार, गागरोन, तिलहटी तथा अन्य स्थाना को अपने अधिकार म कर लिया। जनवरी 1533 ई० मे तातार खा ने चित्तौड के सात द्वारा मे से दो पर अधिकार कर लिया। इस घेरे मे रूमी खा[3] नामक तुर्की तोपची ने बडी योग्यता स तोपा को एव उप

---

1 शर्मा, मेवाड अण्डर दी मुगल्स, पृ० 49।

2 रणथम्भौर का दुग चित्तौड के पतन के पूव या उसके पश्चात् अधिकृत हुआ, यह विवादग्रस्त है। अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात के अनुसार रणथम्भौर पर चित्तौड के घेरे के पूव अधिकार हुआ। डा० बनर्जी ने यह मत स्वीकार किया है (हुमायू, 1, पृ० 85)।

3 16वी सदी मे भूमध्य सागर के भागा म अमीर सालमन रस नामक तुर्की जलसेना नायक का बडा नाम था। तुर्की के शासका न उस पुतगालियो के विरुद्ध दक्षिणी अरब मे भेजा जहा वह स्वय यमन का शासक बन बैठा। 1529 ई० म उसकी हत्या हो गयी। उसकी हत्या का बदला उसकी बहन के लडके मुस्तफा ने लिया और वह स्वय वहा प्रभावशाली बन बैठा। मुस्तफा के पिता बहराम ने 1530 ई० म कुस्तुनतुनिया स इसे बहादुर शाह की सहायता के लिए गुजरात जाने की आज्ञा दी। 1531 ई० म मुस्तफा ड्यू पहुचा। उसी समय पुतगालिया ने ड्यू पर आक्रमण कर दिया था। मुस्तफा ने बहादुर शाह की सेना को सहायता दी तथा उसने बहादुरी से युद्ध किया। पुतगाली भागकर गोवा चले गय। उसकी सामयिक सहायता स बहादुर शाह प्रभावित हुआ। उसने उसे रूमी खा की उपाधि दी, तथा तोपखाने का प्रमुख नि

युक्त स्थान पर स्थिर कर दुर्ग की दीवारों पर गोलाबारी करना प्रारम्भ कर दिया। दुर्ग की रक्षा करना असम्भव जानकर राणा सांगा की विधवा रानी कर्णावती (करमावती) ने हुमायू से सहायता की प्रार्थना की।[1] हुमायू ने राजपूत दूत के साथ अच्छा व्यवहार किया तथा उसे पारितोषिक देकर विदा कर दिया। उसकी प्रार्थना पर वह ग्वालियर तक आया और दो माह वहां रुककर (फरवरी तथा मार्च 1533 ई०) आगरा लौट गया।[2] हुमायू ने इस तरह रानी कर्णावती की कोई भी सहायता नहीं की। विवश होकर चित्तौड़ को निम्नलिखित शर्तों पर आत्मसमर्पण करना पड़ा—

(1) मालवा का जो भाग राणा सांगा ने महमूद द्वितीय से प्राप्त किया था उन्हें मेवाड़ के बहादुर शाह को वापस दे दिया।

(2) मेवाड़ से 10 हाथी, 100 घोड़े और पांच करोड़ टनका बहादुर शाह को प्राप्त हुआ।

(3) गुजरात के सुल्तान का मुकुट जिसे मालवा का शासक महमूद खिलजी प्रथम 1452 ई० में छीन ले गया था तथा जिसे राणा सांगा मालवा से छीन ले गया था, राणा को बहादुर शाह को वापस देना पड़ा।[3] सन्धि के पश्चात् (मार्च

और भड़ौंच का अमीर नियुक्त किया। (व्हाइटवे राइज ऑफ पुर्तगीज पावर इन इण्डिया, पृ० 224 28, डेनवर्स, पुर्तगीज इन इण्डिया, 1, पृ० 400 402, अरबिक हिस्ट्री आफ गुजरात, 1, पृ० 220)। कुछ ही दिनों में उसकी गणना प्रसिद्ध तोपचियों में होने लगी।

1 राजमाता कर्णावती ने हुमायू के पास 'राखी' पदमशाह नामक दूत के हाथ भेजी (शर्मा, मेवाड़ अण्डर दी मुगल्स, पृ० 50 टाड, एनल्स एण्ड एन्टीक्यूटीज आफ राजस्थान, 1, पृ० 364 65, कामिस्सारियट, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 330 31)। कविराज श्यामलदास (वीर विनोद, 2, पृ० 27) लिखते हैं कि विक्रमादित्य स्वयं दिल्ली गया। कम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया (भाग 4, पृ० 22) में भी प्रार्थना-पत्र भेजने का उल्लेख है।

2 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 116। ख्वान्दमीर, कानूने हुमायूनी, डा० बेनी प्रसाद, पृ० 61।

3 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 4, पृ० 124, बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 369 72 कामिस्सारियट, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 329 30। मिराते सिकन्दरी के अनुसार बहादुर शाह को एक करोड़ टनके तथा डॉ० बनर्जी (हुमायू, भाग 1, पृ० 87) के अनुसार पांच करोड़ टनके प्राप्त हुए।

1533 ई०) बहादुर शाह ने अपने दो अमीरा को रणथम्भोर की विजय के लिए तथा तीसरे को अजमेर के लिए भेजा तथा स्वय माडू की तरफ रवाना हो गया।

रानी कर्णावती का निमन्त्रण हुमायू को कहा प्राप्त हुआ यह निश्चयपूर्वक बताना कठिन है। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि चुनार से वापस आने पर यह उसे आगरा म प्राप्त हुआ। हुमायू आगरा से ग्वालियर आया। वह तत्काल युद्ध के लिए तैयार नही था और उस समय केवल अपने साम्राज्य की रक्षा चाहता था। हुमायू के ग्वालियर निवास के कारण ही बहादुर ने शीघ्र मेवाड से सन्धि कर ली क्योकि वह मुगल तथा राजपूता की सम्मिलित शक्ति का सामना नही करना चाहता था।[1]

चित्तौड की सफलता ने बहादुर शाह की शक्ति को और भी बढा दिया। यद्यपि उसे चित्तौड पर अधिकार करने म सफलता नही मिली फिर भी उसे धन तथा यश दोनो प्राप्त हुआ। रणथम्भोर के अधिकार मे आ जाने से सैनिक दृष्टि से एक शक्तिशाली दुग उसके अधिकार म गया।[2] रणथम्भोर, अजमेर तथा नागौर की विजय ने राजपूताने को दो भागो मे विभाजित कर दिया। बहादुर शाह सुविधा से किसी भी समय अलग अलग आक्रमण करके उन पर अधिकार कर सकता था।[3]

बहादुर शाह के दरबार मे मुगल साम्राज्य के शरणार्थी

साम्राज्य विस्तार के साथ साथ बहादुर शाह का दरबार ऐसे लोगा का केन्द्र बनता जा रहा था जो मुगलो से असन्तुष्ट थे। उसके दरबार मे ऐसे कई लोगो ने शरणा ली थी जा मुगला के शत्रु थे। बहादुर का दरबार इस तरह हुमायू के विरुद्ध षड्यन्त्र का केन्द्र बना हुआ था। इन शरणार्थियो को हम दो भागा म विभाजित कर सकते है—अफगान शरणार्थी तथा मुगल शरणार्थी।

अफगान शरणार्थी—अफगान शरणार्थियो म प्रथम आलम खा जिघाट था।

1 बनर्जी, हुमायू 1, पृ० 97 98।

2 रणथम्भोर का दुग चम्बल के तट पर स्थित है। चम्बल नदी कालपी म यमुना स मिलती है। इसी तरह आगरा से थट्टा जाने का माग तथा कन्धार से बुरहानपुर जान का माग एक-दूसरे से अजमेर मे मिलते थे। इस तरह व्यापारिक तथा सनिक दृष्टि स इसका महत्त्व बहुत ही बढ गया था।

3 रघुवीरसिंह, पूव आधुनिक राजस्थान पृ० 25, बनर्जी, हुमायू, 1, पृ 87।

वह कालपी का गवनर रह चुका था तथा 1529 ई० म उसने बिहार के अफगाना के विरुद्ध बाबर की सहायता भी की थी। हुमायू से अस तुष्ट होकर वह गुजरात भाग आया। यहा उसने बहादुर शाह के दरबार मे शरण ली।[1] रायसीन की विजय के पश्चात बहादुर शाह ने भोलसा, चन्देरी, रायसीन तथा उसके आसपास क भाग उसे दे दिय। ये महत्त्वपूण स्थान थे, क्योकि रणथम्भौर, नागौर और अजमर की विजयो के पश्चात बहादुर शाह का साम्राज्य मुगल साम्राज्य के निकट आ गया था। इन स्थानो पर आलम खा जिघाट की नियुक्ति यह प्रमाणित करती है कि वह बहादुर शाह का विश्वासपात्र बन गया था। आलम खा भी अपने नये स्वामी के प्रति अ त तक स्वामिभक्त रहा, जब तक वह मुगलो द्वारा ब न्दी बना कर पगु नही बना दिया गया।

अफगाना म दूसरा व्यक्ति सुल्तान आलम खा अलाउद्दीन लोदी था। यह सुल्तान सिकन्दर लोदी का भाई तथा बहलोल लोदी का पुत्र था। दिल्ली के तख्त पर बैठन की आकाक्षा स उसन बार बार पक्ष परिवतन किया किन्तु उस कभी भी सफलता नही प्राप्त हुई। सिकन्दर लोदी के राजत्व के समय उसने गुजरात क सुल्तान महमूद शाह क यहा शरण ली। इब्राहीम लोदी के समय उसने गुजरात के शासक सुल्तान मुजफ्फर शाह की स्वीकृति से इब्राहीम लोदी का विरोध करन का प्रयास किया। बाबर के आक्रमण के पूव वह उससे मिल गया। बाबर मे उसन स धि की, जिसके अनुसार इब्राहीम को हटाकर आलम खा को दिल्ली की गद्दी पर बठने की योजना बनी। बाबर न अपना चौथा भारतीय आक्रमण आलम खा के पक्ष म किया था[2] तथा काबुल लौटन के पूव उसने दीपालपुर उस दे दिया। आलम खा इन भागो पर अधिकार नही रख सका तथा भागकर पुन काबुल पहुचा। बाबर ने उसके साथ एक सधि की, जिसके अनुसार उसन आलम खा को दिल्ली के तख्त पर बठने का वादा किया तथा आलम खा ने लाहौर तथा उसके पश्चिम के भागो को बाबर को देने की स्वीकृति दी। वहा से बाबर क आज्ञापत्र क साथ वह पजाब आया। यहा वह पुन पजाब के विद्रोही अफगान अमीरो स मिल गया, तथा उनके साथ उसने भी सुल्तान इब्राहीम लोदी

---

1 जफरुल वालेह का लेखक अब्दुल्लाह लिखता है कि आलम खा 12,000 अश्वारोहियो एव 300 हाथियो को लेकर बहादुर स जा मिला। 'सुल्तान (बहादुर) एव हुमायू मे नाममात्र की सधि थी इस कारण सुल्तान (आलम) क प्रति उसने सौजन्यपूण व्यवहार किया।" (रिजवी, हुमायू, 2, पृ० 446)।

2 विलियम्स, ऐन एम्पायर बिल्डर, पृ० 120।

पर आक्रमण किया, किन्तु पराजित हुआ।[1] बाबर के पाचवे तथा अन्तिम आक्रमण के समय वह पुन बाबर से जा मिला। 1527 ई० म बाबर के साथ उसने राणा सांगा के विरुद्ध खानवा के युद्ध म भाग लिया।[2] शीघ्र ही बाबर स उसका मतभेद हो गया तथा बाबर न इस बन्दी बनाकर बदख्शा म किलाए जफर म भेज दिया।[3] वहा से भी आलम खा निकल भागा और गुजरात पहुचा जहा उसका स्वागत हुआ। दिल्ली राज्य पर अपना अधिकार दिखाने के लिए उसने आलम खा के स्थान पर सुल्तान अलाउद्दीन को उपाधि धारण की।

आलम खा अलाउद्दीन लोदी का पुत्र तातार खा[4] भी उसके साथ था। यह नौजवान, महत्त्वाकाक्षी, वीर तथा योग्य व्यक्ति था, किन्तु इसमे जवानी का नशा अधिक तथा अनुभव कम था। तातार खा अपने पिता को दिल्ली के तख्त पर बैठाना चाहता था और इसके लिए वह बहादुर शाह को बार बार प्रोत्साहित करता रहता था। बहादुर शाह तातार खा के सैनिक गुणो स प्रभावित था किन्तु वह उसकी योजनाओ पर अधिक ध्यान नही देता था।

ऐसा प्रतीत होता है कि बहादुर शाह आलम खा क पक्ष म नही था, क्योकि आलम खा को दिल्ली के तख्त पर बठने का गौरव प्राप्त नही था। केवल लोदी वश से सम्बन्धित होन के कारण वह अपने को उसका हकदार समझता था। बाबर ने भी उसका मान नही किया था तथा उसे किसी भी तरह का प्रोत्साहन नही दिया था। यही नही बार बार पक्ष परिवतन कर उसने अपनी स्वार्थान्धता तथा विश्वासहीनता ही प्रदर्शित की थी। गुजरात आन क पूव वह बदख्शा म कई वप तक बन्दी रह चुका था। इन परिस्थितियो म 1534 ई० मे उसे कहा तक स्थानीय समथन प्राप्त होता, यह सन्देहजनक था। आलम खा अलाउद्दीन लोदी की सहायता के लिए बहादुर शाह को मुगलो स युद्ध करना पडता। उनसे युद्ध करने मे वह झिझकता था और सफलता की आशा भी अधिक नही थी। फिर भी लोदी वश के प्रमुख व्यक्ति का अपन दरबार मे रखकर बहादुर शाह अपने पास एक ऐसा अस्त्र

1 विलियम, ऐन एम्पायर बिल्डर, पृ० 121।

2 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 565।

3 अकबरनामा, 1, प० 129।

4 अबुल फजल आलम खा के पुत्रो म केवल तातार खा का उल्लेख करता है (अकबरनामा, 1, प० 129)। मीर अबू तुराब वली के अनुसार उसके दो पुत्र तातार खा तथा फतेह खा थे। (अबू तुराब, तारीखे गुजरात, पृ० 7)।

रखना चाहता था जिसका प्रयोग वह आवश्यकता पडने पर कर सके।

इन प्रमुख अफगान उमराओ के अतिरिक्त बहुत से अफगान बिहार, बगाल तथा अन्य भागो से आकर बहादुर शाह की सेना मे भरती हो गये थ। ये सभी मुगलो से असन्तुष्ट थे तथा उनके विरोध के लिए सदा तत्पर थ। तारीख गुजरात का लेखक अबू तुराब वली लिखता है "सुल्तान बहलोल की सन्तान, जो मुगलो के प्रभुत्व के कारण दुखी एव रुष्ट थी, सुल्तान बहादुर के राज्य के प्रारम्भ म ही उसकी सेवा मे पहुच गयी। वे लोग प्रतिकार तथा अपनी हानि की पूर्ति हेतु समय समय पर हिन्दुस्तान पर चढाई करने के लिए उसे प्रेरित किया करते थे।"[1]

मुगल शरणार्थी—मुगल शरणार्थियो म सबसे प्रमुख मुहम्मद जमान मिर्जा था जिसके विषय म हम पिछले अध्याय मे वणन कर आये हैं। नवम्बर 1534 ई० म मुहम्मद जमान मिर्जा मुगल जेल से भागकर गुजरात पहुचा। बहादुर ने उसका स्वागत किया तथा उसे धन, जागीर और सम्मान दिया[2] जिससे वह अन्य विद्रोही मुगलो को अपने पक्ष म ला सके। मुहम्मद जमान शीघ्र ही बहादुर शाह के दरबार के मुगल शरणार्थियो का नेता बन गया। बहादुर के धन की सहायता से उसने मुगल सनिको को अपने वश मे करने का प्रयत्न किया तथा इस तरह 10,000 मुगल सैनिको को अपने पक्ष मे करा लिया।[3]

इस तरह बहादुर शाह के दरबार म मुगल विरोधी दो दल बन गये। बहादुर इन दोनो दलो का प्रयोग समयानुसार मुगल साम्राज्य के विरुद्ध करना चाहता था। ये दोनो दल परस्पर विरोधी थे किन्तु बहादुर शाह मुगलो की विरोधी भावना के आधार पर अपने नेतृत्व म इन्हे एकत्र करना चाहता था। सुल्तान आलम या अलाउद्दीन लोदी तथा मुहम्मद जमान मिर्जा दोनो दिल्ली के तख्त पर बठना चाहते थे। बहादुर शाह वास्तव म किसी पक्ष म नही था, क्योकि वह स्वय दिल्ली पर अधिकार करना चाहता था, किन्तु वह दोनो म किसी को

---

1 अबू तुराब, तारीखे गुजरात, पृ० 3।

2 मीर अबू तुराब वली तारीखे गुजरात (पृ० 2) मे लिखता है कि हुमायू तथा बहादुर शाह के "पारस्परिक मतभेद एव विरोध का कारण मुहम्मद जमान मिर्जा था।" इस बात का समथन मिराते सिकन्दरी का लेखक सिकन्दर भी करता है। इसी घटना के पश्चात दोनो सम्राटो म पत्र व्यवहार प्रारम्भ हो गया जिसका वणन हम आगे करेंगे। मिराते सिकन्दर, बेले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 375।

3 अकबरनामा, I, पृ० 128।

असन्तुष्ट नही करना चाहता था वरन अपने लिए उनका उपयोग करना चाहता था।

हुमायू तथा बहादुर शाह का कूटनीतिक सम्बन्ध

बहादुर शाह ने अपनी शक्ति को दृढ करने के लिए अन्य राज्यो से कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया। बगाल के शासक नुसरत शाह के साथ उसका अच्छा सम्बन्ध था। उसकी मृत्यु के पश्चात शेर खा के उत्कर्ष को देखकर बहादुर शाह ने उसके पास भी आर्थिक सहायता भेजी।[1] इसका अर्थ था कि आवश्यकता पडने पर वे एक-दूसरे की सहायता करेंगे, अर्थात मुगलो से बहादुर शाह का युद्ध छिडने पर शेर खा लूट तथा विद्रोह कर पूर्वी सीमा पर मुगलो की स्थिति कमजोर कर देगा।

एक तरफ बहादुर शाह हुमायू के शत्रुओ को प्रश्रय दे रहा था तथा दूसरी ओर वह उसे मीठी बातो से भुलावे मे रखना चाहता था। हुमायू के मन से सन्देह मिटाने के लिए, दीन पनाह के शिलान्यास के पश्चात (अगस्त 1533 ई०), उसने काजी अब्दुल कादिर तथा मुहम्मद मुकीम को अपना दूत बनाकर बहुमूल्य भेंट के साथ हुमायू के पास भेजा।[2] उन्होने बहादुर शाह की तरफ से भेंट दी तथा हुमायू की माता की मृत्यु पर सवेदना प्रकट की। हुमायू ने राजभवन के महा-प्रतिहार को उन्हे पहुचाने के लिए भेजा तथा मैत्री पत्र भेजकर सुल्तान को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न किया।[3]

बहादुर शाह ने पुर्तगालियो के साथ भी सन्धि कर ली। 20 जनवरी 1533 ई० को पुर्तगाली जेनरल नूनो द कुनहा ने मलिक तोगा को, जो बहादुर शाह के नाम से बेसीन पर शासन करता था, पराजित कर दिया। बहादुर शाह उस समय चित्तौड पर आक्रमण हेतु जा रहा था। चित्तौड के प्रथम घेरे के पश्चात बहादुर शाह डियू गया, किन्तु पुर्तगालियो को दण्ड देने के स्थान पर उसने उनसे सन्धि कर ली (दिसम्बर 1534 ई०)। इस सन्धि के अनुसार बहादुर शाह ने पुर्तगालियो को बेसीन दे दिया तथा उन्हे अनेक व्यापार सम्बन्धी सुविधाए भी दी। इसके स्थान पर पुर्तगालियो ने सुल्तान की पूर्णरूप से सहायता करने की प्रतिज्ञा की।[4] इस तरह बहादुर शाह

1 वही, पृ० 148।

2 अबू तुराब, तारीखे गुजरात, पृ० 5, अकबरनामा, 1, पृ० 124।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 124।

4 डनवर्स, दि पुर्तगीज इन इण्डिया, 1, पृ० 416-17, ह्वाइटवे, राइज

ने मुगलों पर आक्रमण करने के पूर्व पुर्तगालियों को भी अपने पक्ष में कर लिया।

बहादुर शाह की महान योजना

मुगल तथा अफगान दोनों दलों के पारस्परिक वैमनस्य का बहादुर शाह पूर्ण लाभ उठाना चाहता था। तातार खां तुरंत आक्रमण करना चाहता था, किन्तु मुहम्मद जमान इसके लिए तैयार नहीं था। चित्तौड़ विजय ने बहादुर शाह को उत्साहित कर दिया। सेना इकट्ठी करने के लिए उसने तातार खां को 20 करोड़ पुराने गुजराती टनके दिये।[1] इसकी सहायता से कुछ ही दिनों में उसने लगभग 40,000 सैनिक इकट्ठे कर लिये। बहादुर शाह ने मुगल साम्राज्य पर तीन तरफ से आक्रमण करने की योजना बनायी। वह स्वयं एक चौथाई सेना के साथ चित्तौड़ पर आक्रमण कर, इन अभियानों की गतिविधि पर दृष्टि रखना चाहता था।[2]

इस योजना के अन्तर्गत[3] आलम खां लोदी का एक बड़ी सेना के साथ कालिंजर पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया। इस अभियान का लक्ष्य मुगलों को विभ्रान्त करना था। कालिंजर का दुर्ग अभी तक पूर्ण रूप से हुमायूं के अधिकार में नहीं आया था। जैसा वर्णन किया जा चुका है, कालिंजर के राजा ने समर्पण कर तथा 12 मन सोना हरजाने के रूप में देकर मुगलों से पिंड छुड़ा लिया था। यहां सफलता के पश्चात आलम खां को तातार खां से मिलना था। कदाचित् शेर खां से भी यहां सहायता मिल सकती थी।

एक दूसरी सेना बुरहानुल मुल्क बनियानी के नेतृत्व में दिल्ली की तरफ भेजी गयी। इसका लक्ष्य नागौर, दिल्ली तथा पश्चिमी पंजाब के भागों में उपद्रव करना था। कदाचित इस तरह कंधार, लाहौर, अजमेर के मार्ग पर अधिकार करना था।

आफ पुर्तगीज पावर इन इण्डिया पृ० 236, कामिस्सारियट, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 349-50 द्वारा उद्धृत।

1 अकबरनामा, 1, पृ० 128, अबू तुराब तारीखे गुजरात, पृ० 7 तथा 12,

2 बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 382, बनर्जी हुमायूं, 1, पृ० 93-94।

3 कुछ हस्तलिपियों में मुल्तानी तथा कुछ में बनियानी लिखा है। डॉ० ईश्वरी प्रसाद (पृ० 67-68) ने भूल से इसे तातार खां का पिता लिखा है। तातार खां का पिता सुल्तान अलाउद्दीन था। डॉ० बनर्जी (भाग 1, पृ० 94) इसे बुरहानुल मुल्क नरपाली लिखते हैं।

तीसरी सेना तातार खा के नेतृत्व मे आगरा पर आक्रमण करने के लिए भेजी गयी।[1] वास्तविक रूप मे यह प्रमुख दल था तथा इसी के पास सबसे अधिक सनिक थे। बहादुर शाह ने स्वय मुगल साम्राज्य के किसी भी भाग पर आक्रमण नही किया। वह किसी उपयुक्त स्थान से इन तीना अभियानो पर दृष्टि रखना चाहता था, जिससे आवश्यकता पडने पर इनको सहायता दी जा सके। उसका वास्तविक लक्ष्य मुगल राजधानी थी। इस तरह यदि उपर्युक्त दल पराजित होते तो यह कह-कर कि इन अभियाना से उसका कोई सम्बन्ध नहा था, वह अपना उत्तरदायित्व अस्वीकार कर देता। यदि अभियान सफल होते तो उनकी सहायता कर वह दिल्ली के तख्त पर अधिकार कर लेता।

बहादुर शाह के अनुभवी मत्रिया ने इस योजना की आलोचना की। उनका विचार था कि यह काय स्पष्ट रूप मे मुगलो की मित्रता को तोडने वाला था तथा हुमायू इस अभिमान को स्पष्ट रूप म बहादुर शाह द्वारा प्रोत्साहित समझेगा और उसे धोखा नही दिया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त सेना कई भागा म विभाजित हो जाने से कमजोर हो गयी थी तथा उसकी सफलता की आशा नही थी। यदि वास्तविक रूप म देखा जाए तो बहादुर शाह के परामशदाताओ की सम्मति बहुत कुछ अशो म सत्य थी, किन्तु बहादुर शाह न उस पर ध्यान नही दिया। कदाचित मुगलो से प्रत्यक्ष रूप म युद्ध करने का उसम साहस नही था। बहादुर शाह न स्वय चित्तौड पर आक्रमण करन का निश्चय किया और अपनी सेना लेकर चित्तौड की ओर चल पडा। यहा से वह सभी अफगानो पर दृष्टि रखता था तथा आवश्यकता पडने पर उनकी सहायता कर सकता था।

बहादुर शाह की योजना की असफलता

दुर्भाग्यवश बहादुर शाह की योजना सफल न हो सकी। बहादुर शाह के अभियानो का समाचार पाते ही हुमायू बिहार से लौटकर आगरा चला आया।[2] तातार खा की सेना जोश म मुगल साम्राज्य म घुस गयी। उसने बयाना पर अधिकार कर लिया और आगरा पर आक्रमण करने के लिए कुमक भेजी। आगरे म आतक छा

---

1 मिरात सिकन्दरी के अनुसार तातार खा का लक्ष्य बयाना के रास्ते दिल्ली पर आक्रमण करना था। हुमायू या तो तातार खा से युद्ध करता या दिल्ली पर तातार खा का अधिकार हो जाता। बेले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 382।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 126।

गया। हुमायू ने स्थिति को देखकर तुरन्त अस्करी तथा हिन्दाल को 18,000 अश्वारोहियों[1] तथा कासिम हुसेन सुल्तान, ज़ाहिद बेग, दोस्त बेग, और यादगार नासिर मिर्जा जसे सेनानायकों के साथ, तातार खा के विरुद्ध भेजा। उन्होंने बयाना पर पुनः अधिकार कर लिया। तातार खा मुगल सेना के आगमन के कारण मन्दरल[2] लौट आया। यहा वह अपने 40,000 सनिको के साथ शत्रु की प्रतीक्षा करने लगा। दुर्भाग्यवश उसकी सेना म भाडे के सिपाही थे जो लूट म अधिक दिलचस्पी रखते थे। युद्ध की आशका से य सैनिक धीरे धीरे उसकी सेना छोडकर भागने लगे।[3] उसके अधिकतर सनिक उसे धोखा दकर युद्ध के मैदान से खिसक गये। मन्दरल म जिस समय युद्ध प्रारम्भ हुआ तातार खा के पास केवल 3,000 घुडसवार थे।[4]

हिन्दाल 5 000 अश्वारोहियो के साथ बयाना स आगे बढा। तातार खा न अपनी सेना को भागते हुए देखकर भी स्वय भागन स इनकार कर दिया और कहा कि उसने सुल्तान से धन लिया है, अब उस क्या मुह दिखाएगा।[5] फलस्वरूप एक भीषण युद्ध हुआ। तातार खा बहुत ही बहादुरी स लडता हुआ अपन बचे हुए 300 सनिको के साथ मारा गया (नवम्बर 1534 ई०)। बहादुर शाह ने तातार खा को किसी भी तरह मुगलो स युद्ध करने से मना कर दिया था। मिराते सिकन्दरी के अनुसार उसे यह आज्ञा दी गयी थी कि वह अपनी सेना को ठीक रखे तथा सुल्तान बहादुर शाह की प्रतीक्षा करे।[6] किन्तु

---

1 अबुल फजल उसकी सना की सख्या 18 000, अबू तुराब 15,000 तथा मिराते सिकन्दरी का लेखक 5 000 लिखता है। अकबरनामा 1, पृ० 129, अबू तुराब, तारीखे गुजरात, प० 12, बले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 382।

2 आगरा के दक्षिण बयाना, के समीप 26° 18 उत्तरी तथा 77° 18' पूर्वी पर स्थित।

3 बले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, प० 382, असकिन, हिस्ट्री ऑफ इण्डिया 2, पृ० 46, बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 95।

4 बनर्जी, हुमायू, 1 प० 95; अकबरनामा, 1 प० 129।

5 अबू तुराब, तारीखे गुजरात, पृ० 12 13।

6 बले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात, प० 382। बहादुर शाह की इस आज्ञा का कारण यह था कि उसे भय था कि यदि तातार खा मुगलो पर विजय पाने म सफल होगा तो वह स्वय ही मुगल तख्त पर अधिकार करने का प्रयत्न करेगा।

जोश में तातार खाँ ने उसकी इस राय को भुला दिया। वह पराजित अवश्य हुआ किन्तु उसकी इस पराजय में उसके भाड़े के सिपाहियों का बहुत बड़ा हाथ था जिन्होंने उन्हें धोखा दिया। तातार खाँ युद्ध में लड़ता हुआ शहीद हुआ। उसकी वीरता निस्सन्देह असाधारण थी।

तातार खाँ की मृत्यु के पश्चात् प्रमुख अभियान का अन्त हो गया। इससे बहादुर शाह की योजनाओं को बड़ा भारी धक्का लगा। दिल्ली और कालिंजर के अभियानों में भी सफलता नहीं मिली, यद्यपि इन लोगों ने पंजाब में कुछ गड़बड़ी अवश्य पैदा की। गड़बड़ी का समाचार सुनकर तथा यह अनुभव कर कि गम्भीर परिस्थिति आ गयी है, हुमायूँ ने हिन्दाल और अस्करी को तातार खाँ को हराने के लिए भेजा था। हुमायूँ का यह निश्चय समयानुकूल था तथा इससे उसने योग्य शासक के गुण दिखाये।

बहादुर शाह की योजना की विफलता मन्दरैल में तातार खाँ की पराजय से हुई। तीनों आक्रमणकारी दस्तों की गति तथा शक्ति बराबर नहीं थी। इस कारण इनके आक्रमणों का बराबर प्रभाव होना असम्भव था। उदाहरणार्थ अलाउद्दीन लोदी तथा बुरहानुल मुल्क की सेनाएं तातार खाँ की सेना से कहीं छोटी थीं जिससे उनकी पराजय में अधिक समय नहीं लगा। सच तो यह है कि ये अभियान तो बहादुर शाह का आँख मिचौनी जैसा राजनीतिक कार्य था। वह छिपकर पीछे से मुगलों पर आक्रमण करना चाहता था। अपनी सेना का विभाजन करके उसने अपनी पराजय में स्वयं ही योग दिया। हुमायूँ के तत्काल सेना भेजने के निश्चय तथा उसके भाइयों के सहयोग ने भी इसमें सहायता दी।

इन अभियानों ने बहादुर शाह के विचार को स्पष्ट कर दिया। उसने मुगल साम्राज्य से भागे हुए व्यक्तियों को शरण ही नहीं दी बल्कि उन्हें धन, प्रोत्साहन तथा सहायता भी प्रदान की। इन अभियानों के पश्चात् हुमायूँ को बहादुर शाह से भय हो गया। वास्तव में एक कूटनीतिज्ञ की तरह उसे बहादुर शाह की नीयत को पहले ही समझ लेना चाहिए था। इन परिस्थितियों में अब बहादुर शाह से युद्ध करना आवश्यक हो गया।[1]

हुमायूँ और बहादुर शाह में पत्र-व्यवहार

हुमायूँ के गुजरात अभियान के पूर्व हुमायूँ और बहादुरशाह में पत्र व्यवहार हुआ। ऐसे आठ पत्र—चार हुमायूँ द्वारा तथा चार बहादुर शाह द्वारा लिखे गये। इन पत्रों में पहले छः पत्र संक्षिप्त हैं किन्तु अन्तिम दो पत्र बड़े तथा कूटनीतिक

1 डा० बनर्जी के निम्न मत से सहमत होना कठिन है—

दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इन पत्रों से बहादुर शाह तथा हुमायूं के विचारों के अतिरिक्त समकालीन कूटनीतिक सम्बन्धों पर प्रकाश पड़ता है। इन पत्रों से स्पष्ट हो जाता है कि बहादुर शाह बहुत मीठे मीठे शब्दों से हुमायूं को प्रसन्न करना चाहता था, यद्यपि अन्दर-अन्दर वह सेना तैयार कर मुगल साम्राज्य को समाप्त करने का प्रयत्न करता रहा। इन पत्रों को देखकर इस बात से आश्चर्य होता है कि बहादुर शाह की मनोवृत्ति और कार्यों को देखकर भी हुमायूं ने परिस्थिति की गम्भीरता का अनुमान नहीं किया।

इन पत्रों के विषय में यह भी महत्त्वपूर्ण है कि मध्य युग में स्थायी रूप से कोई राजदूत नहीं रहते थे। कभी-कभी आवश्यकतानुसार एक राज्य दूसरे राज्य में दूत भेजते थे। ये दूत सन्देह की दृष्टि से देखे जाते थे और साधारणतः राज्य विदेशी राजदूतों को बहुत अधिक प्रश्रय नहीं देता था क्योंकि राजदूत जासूसी का भी काम करते थे। यह आक्षेप बहुत अंशों में सत्य भी था। जहांगीर के काल में ईरान और भारत के सम्बन्ध में राजदूतों का कार्य इसका प्रमाण है।[1]

प्रथम पत्र—दीन पनाह के पूर्ण होने के दो माह पश्चात् बहादुर शाह ने हुमायूं को बधाई का पत्र भेजा। हुमायूं ने दूत की आवभगत की तथा उसने इसके उत्तर में एक दूत भेजा जिसे आदेश दिया गया कि वह कुछ मौखिक बातें जो उससे कही गयी थीं बहादुर शाह से कहे। बहादुर शाह ने हुमायूं के दूत का स्वागत किया। सर्वप्रथम उससे दरबार में भेंट की जिसमें सभी प्रमुख अमीर उपस्थित थे। उसके पश्चात् पुनः एक विशेष दरबार में सुल्तान उससे मिला जहां दूत ने समस्त बातें कहीं जिन्हें कहने के लिए वह भेजा गया था। विशेषतया दूत ने तातार खां के विषय में बात की। उसने कहा कि सुल्तान को किसी ऐसे व्यक्ति को शरण नहीं देनी चाहिए जिससे दोनों राज्यों की मित्रता में बाधा उत्पन्न हो। इसी तरह की आशा सुल्तान को हुमायूं से रखनी चाहिए। दोनों में से किसी का एक-दूसरे का विरोध

"Humayun did not complain of Bahadur's aiding Tatar Khan nor did Sultan Bahadur follow the defeat up by other expeditions Humayun kept quiet on the subject, guessing probably that it was purely the outcome of the mad-cap Tatar's enthusiasm Humayun ignored the other two expeditions also For the present he remained perfectly satisfied with the complete discomfiture of the enemy in all the three quarters' (हुमायूं 1 पृ० 96)।

1 बेनी प्रसाद, जहांगीर, पृ० 292 97।

नही करना चाहिए।[1]

हुमायू क दूत को महल के निकट ठहराया गया तथा उसके लिए हर प्रकार की सुविधाए एव आनन्द की वस्तुए प्रस्तुत की गयी। यही नही, उसके लिए बहुत ही अच्छा भत्ता भी निश्चित किया गया। दूत बहादुर शाह के व्यवहार से इतना प्रसन्न हुआ कि उसकी इच्छा हुई कि वह हुमायू को छोडकर बहादुर शाह के साथ रह जाए। अन्त मे बहादुर शाह ने उसे भेंट और पत्र के साथ दिल्ली वापस भेजा। उसने अपने पत्र म केवल यह उल्लेख किया कि हुमायू ने हाजिब (दूत) द्वारा जो बात कहलायी है वह उसे शिरोधाय है।[2]

द्वितीय पत्र—सितम्बर 1534 ई० म हुमायू कालपी गया। वहा का गवनर आलम खा भागकर गुजरात चला गया, जहा उसका स्वागत हुआ। बहादुर शाह ने रायसीन, भीलसा तथा चन्देरी की जागीरें भी उसे दे दी। मुहम्मद जमान मिर्जा का भी उसने उसी तरह स्वागत किया। इससे स्पष्ट था कि बहादुर शाह ने जो आश्वासन प्रथम पत्र म दिया था उस पर वह चलने को तैयार नही था।

हुमायू ने कालपी स दूसरा पत्र लिखा और इसमे उसन मुहम्मद जमान मिर्जा के बहादुर शाह द्वारा स्वागत करने की आलोचना की। उसने बहादुर शाह पर अपनी प्रतिज्ञा भग करने का आरोप लगाया तथा उसे सचेत किया कि इसके दुष्परिणाम का उत्तरदायित्व बहादुर शाह ही पर होगा। पत्र के अन्त मे उसने हजरत मुहम्मद के कथन का उल्लेख किया जिसमे यह कहा गया था कि प्रतिज्ञा पालन धमनिष्ठा का प्रमाण है।[3]

बहादुर शाह का उत्तर हुमायू को आगरा म नवम्बर 1534 ई० मे प्राप्त हुआ। इसकी भाषा बडी सयत थी। बहादुर शाह न लिखा था कि उसने मुहम्मद जमान मिर्जा का स्वागत इस विचार से किया था कि वह हुमायू के लिए पुत्र के समान था। उसने पुन प्रतिज्ञा की कि वह हुमायू की इच्छा का पालन करने का प्रयत्न करेगा।[4] बहादुर शाह हुमायू को विश्वास दिलाकर ऐसी स्थिति म रखना चाहता

1 अरेबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात, पृ० 228, बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 99-100 द्वारा उद्धृत।

2 वही, पृ० 230, वही पृ० 100 101।

3 वही, वही।

4 वही, वही। बहादुर शाह न जिस शेर को शीषक बनाया था उसका अथ है, 'तुम्हारी प्रतिज्ञाए नष्ट न होगी, इस विषय म कोई उपक्षा न की जाएगी।"

था, जिसम हुमाय को उसकी तरफ से कोई भय न प्रतीत हो। वास्तव म बहादुर शाह मुगल विरोधी काय तथा सेना सगठन का आयोजन करता रहा।

तृतीय पत्र—हुमायू का तीसरा पत्र रूपक की भाति है जिसम दो दाशनिक आपस म बातचीत करते है। उनम से एक प्रश्न करता है कि ससार म सबसे असहाय व्यक्ति कौन है? दूसरा उत्तर देता है कि, *'वह व्यक्ति जिसके कोई मित्र नही हैं।'* पहला कहता है, 'नही सबसे असहाय व्यक्ति वह है जिसका मित्र था लकिन उसने उसे खो दिया।[1] इस तरह हुमायू न इशारे से यह प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया कि बहादुर शाह को हुमायू की मित्रता खोने की मूखता नही करनी चाहिए।

बहादुर शाह ने अपने तीसरे उत्तर म युद्ध के पाच कारणो का उल्लेख किया।[2] उसन उससे यह निष्कष निकाला कि इन पाच कारणो म कोई भी एसा कारण नही प्रतीत होता जिसके आधार पर दोनो राज्यो म युद्ध हो। अन्त म उसन लिखा कि उसका किसी से भी वर भाव नही है। उसके धन व्यय करन तथा सना एकत्र करने का उद्देश्य केवल इस्लाम धम का प्रसार जिहाद है। अन्त म उसन लिखा कि यदि और कोई उससे द्वेष करता हो तो भगवान् उसका भला कर।[3]

चतुथ पत्र—हुमायू का चौथा पत्र[4] लम्बा है तथा उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि हुमाय तथा बहादुर शाह का सम्बन्ध धीरे धीरे खराब होता जा रहा था। हुमायू को अब बहादुर शाह के आश्वासनो पर विश्वास नही था। इस कारण उसके

---

1 अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात बनर्जी, हुमायू 1, पृ॰ 102 द्वारा उद्धृत। अन्त म एक शेर है जिसका अथ है, 'मित्रता का पौधा लगा ताकि मनोकामना की सिद्धि के फल लग सके, शत्रुता के पौधे उखाड डाल, कारण कि इसस असख्य कष्ट प्राप्त होते है।'

2 अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात के लेखक अब्दुल्ला ने हाफिज दमिश्की के आदाब ग्रन्थ से युद्ध के निम्नलिखित पाच कारण उद्धृत किय है—
(1) राज्य स्थापित करने की इच्छा (2) अपने राज्य की रक्षा के लिए युद्ध करना (3) न्याय के लिए किसी राज्य पर आक्रमण करना, (4) धन बढान की लिप्सा तथा (5) विजय और लूट इत्यादि के लिए पृथ्वी को युद्ध स भर देना।

3 शेर का अथ है 'हमारी लोक तथा परलोक मे किसी स शत्रुता या वैमनस्य नही, जो कोई हमसे शत्रुता करता हो, उस पर ईश्वर की अनुकम्पा हो।'

4 बनर्जी हुमायू, 1, पृ॰ 103 107।

पत्र मे कुछ कठोरता प्रतीत होती है। पत्र म स्पष्ट कहा गया है कि वहादुर शाह ने सधि की शर्तो का तोडा है। यदि वह मित्रता चाहता है तो वह मुगल विद्राहियो को अपने राज्य से निकाल दे, अथवा उन्हे समर्पित कर दे। इस पत्र म भी हुमायू ने उसको समझान का प्रयत्न किया है कि मुहम्मद जमान मिर्जा का स्वागत किसी भी दृष्टि म न्यायसगत या ठीक नही था और उसने पुन शान्ति की आशा की।

हुमायू के अतिम पत्र का उत्तर[1] सुल्तान मुहम्मद लारा ने लिखा और इस पत्र मे उसने कठोर भाषा का प्रयोग किया। उसन हुमायू के पत्र को विस्मयोत्पादक शब्दो से भरा हुआ (विचित्र शली वाला) तथा उसकी विषयवस्तु को अभिमान से पूण एव निरथक बताया। हुमायू के इस कथन को कि उसक दूता ने मुगल विद्रोहिया को गुजरात से निकालन के लिए कहा था, 'झूठ' कहा।

मुहम्मद जमान मिर्जा के विषय म पत्र लिखा गया है कि वह एक प्रसिद्ध वश का था। उसने उदाहरण देकर यह बात समझान का प्रयत्न किया कि शरण म आये हुए व्यक्ति को शरण दना उसके (वहादुर शाह के) पूवजा की परम्परा है। उसन लिखा कि मुहम्मद जमान मिर्जा उससे (बहादुर शाह से) मित्रता के बन्धना से बधा था तथा वह किसी भी हालत म उस समर्पित करन को तयार नही था। हुमायू की ग्वालियर यात्रा की वहादुर शाह न आलोचना की। उसन लिखा कि वह उस समय पुतगालिया से युद्ध म लगा हुआ था तथा एसी स्थिति म एक मित्र को इस तरह के अभियान मे भाग नही लेना चाहिए था। बहादुर शाह न आग लिखा कि उसके आक्रमण की सूचना से कई स्थाना म लाग विद्रोही हो रह है तथा

---

1 इस पत्र के लिए देखिए बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात, प० 375 80, बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 117 21। वहादुर शाह लिखना पढना नही जानता था। उसका पत्र व्यवहार मुल्ला महमूद मुशी करता था। वह पहले हुमायू के दरवार म था किन्तु हुमायू क अप्रसन्न हान पर वहा स गुजरात भाग आया। यहा वहादुर शाह न उस अपना मुशी नियुक्त किया। हुमायू स अप्रसन्न होने के कारण उसन कठोर पत्र लिखा। जिस समय पत्र पढ़कर सुनाया गया वहादुर शाह शराब के नशे म था। पत्र भेज दिया गया। दूसरे दिन पता चलन पर वहादुर शाह न मलिक नस्सन का पत्र वाहक को रोकन के लिए दौडाया। किन्तु नरवार (25^0 29' उत्तर तथा 77^0 58' पूव) से पोछा करन वाले लौट आय। दूत पत्र लकर जा चुका था। मिराते सिकन्दरी का लखक दु ख स कहता है—

"Every disgrace that fell upon the Sultan's administration and all the calamities which affected his fortunes were due to the scribbling of this insolent man"
(बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात, प० 380)।

उसके नाम से खुत्बा नही पढा जा रहा है। पत्र के अन्त म उसने लिखा कि सभी जानते हैं कि ईश्वर की कृपा से कोई भी सम्राट चाहे उसकी सेना कितनी ही बडी रही हो अभी तक उसके वंश को समाप्त नहीं कर सका है। उसने स्वय एक बडी अफगान सेना इकट्ठी कर ली है तथा हुमायू को अपने दिमाग से घमड हटा देना चाहिए। बहुत दिन नही है जब ईश्वर अपना निणय स्पष्ट करेंगे।

कूटनीतिक पत्रो का महत्त्व

हुमायू तथा बहादुर शाह के इस पत्र-व्यवहार म पर्याप्त समय लगा। इस बीच बहादुर शाह को अवकाश मिला जिसकी उसे नितान्त आवश्यकता थी। इसमे कोई सन्देह नही कि हुमायू न वह सक्रियता नही थी जो उस तुरन्त शत्रु की कूट-नीतिकता को समझकर उस पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित करती। हुमायू ने इस पत्र व्यवहार मे अपना समय व्यय मे नष्ट किया।

हुमायू की दृष्टि स तथा अन्तरराष्ट्रीय कानून की दृष्टि से यदि देखा जाए तो हम यह कह सकते है कि हुमायू युद्ध के स्थान पर शान्तिमय तरीका से पत्र-व्यवहार द्वारा बहादुर शाह से अपना सम्बन्ध सुधारना चाहता था और इस तरह युद्ध के बजाय वह शान्ति का पोषक था, किन्तु हुमायू के जीवन की अन्य घटनाओ को दृष्टि म रखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वास्तविक रूप म यह हुमायू का चारित्रिक दौर्बल्य था और उसम जो आलस्य था उसी के कारण वह पत्र-व्यवहार म समय लगाकर अपने आप को भुलावे मे रखना चाहता था।

पत्रो से यह प्रतीत होता है कि हुमायू न गुजरात दरबार के शरणार्थियो का प्रश्न विशेष रूप स उठाया था। मध्य युग के मुस्लिम शासको म शरणार्थी का स्वागत तथा उसकी सहायता राज्य तथा सुल्तान की मनोवृत्ति पर निभर करती थी। यदि राज्य शक्तिहीन होता था तो वह अपने से शक्तिशाली राज्य स आये हुए शरणार्थियो को शरण दने मे हिचकता था। शरण देने का परिणाम आवश्यकता पडने पर युद्ध होता था। यदि हुमायू का यह दावा, कि एक मित्र राज्य को अपने मित्र राज्य के शत्रु को शरण नही दनी चाहिए स्वीकार कर लिया जाय तो हमे हुमायू के ही जीवन मे दो एक घटनाए याद रखनी होगी। जहा उसन स्वय शरणा-र्थियो के लिए युद्ध किया वहा बगाल के पराजित शासक का गद्दी पर बैठाने के लिए हुमायू ने स्वय शेर खा के विरुद्ध बगाल पर आक्रमण किया। यही नही, उसने उसी कारण शेर खा से लगभग निश्चित हुई सन्धि को तोड दिया जिसका वणन अगले परिच्छेदो म किया गया है। इसी तरह ईरान के शासक शाह तहमास्प ने शरणार्थी हुमायू को एक सेना देकर उसकी सहायता की। इसी तरह बहादुर शाह

ने भी मालवा पर आक्रमण इस कारण किया क्योंकि उसके भाई चाद खा ने वहा शरण ली थी तथा वहा का शासक सुल्तान महमूद उसे समर्पित करने को तैयार नहीं था। इन घटनाओं से यह स्पष्ट है कि किसी शरण में आये हुए अमीर अथवा शासक की सहायता का प्रश्न बहुत कुछ परिस्थितियों तथा शासक की मनोवृत्ति पर निर्भर करता था, यद्यपि मध्य युग में यह मान्यता थी कि शरण में आये हुए व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए।

6 गुजरात अभियान जय तथा पराजय

नवम्बर 1534 ई० म हुमायू आगरा लौट आया। उसने लगभग 18 महाने आगरा, दिल्ली, धौलपुर तथा ग्वालियर म व्यतीत किए। आगरा म कुछ माह कदाचित सेना एकत्र करने मे व्यतीत हुए। उसे बगाल तथा गुजरात दोनो तरफ से भय था। इस कारण पहले किस तरफ आक्रमण करना पडगा, वह यह निश्चय नहीं कर पा रहा था। इस बीच गुजरात की समस्या को शान्ति स सुलझाने क विचार स उसने बहादुर शाह से पत्र-व्यवहार किया, किन्तु बहादुर शाह के अन्तिम पत्र ने तथा उसकी महान योजना ने रही-सही आशा भी समाप्त कर दी।[1] बहादुर शाह की महान् योजना मे अब केवल उसकी ही सना चित्तौड को घेर हुए थी। अत गुजरात पर आक्रमण करना आवश्यक हो गया। हुमायू आगरा स बहादुर शाह के विरुद्ध (दिसम्बर 1534 ई० या 1535 ई० क प्रारम्भ म) रवाना हुआ।

बहादुर शाह द्वारा चित्तौड का दूसरा घेरा

जैसा ऊपर वणन किया जा चुका है, बहादुर शाह की महान् योजना का एक अग चित्तौड पर आक्रमण था। नवम्बर 1534 ई० म एक बडी सना क साथ वह चित्तौड के अभियान पर चल पडा। राणा विक्रमाजीत प्रथम पराजय स सचेत नही हुआ था। बहादुर शाह ने उस लोइचा नामक स्थान पर परास्त किया।[2] बहादुर शाह ने यहा से आगे बढकर चित्तौड का घेरा डाला। यह सघप चित्तौड के दूसरे साके के नाम से प्रसिद्ध है। शासन प्रबध राजमाता कर्णावती ने अपन हाथ मे ले लिया, विक्रमाजीत तथा उदयसिंह बूदी भेज दिये गये और दुग की रक्षा का भार देवलिया प्रतापगढ के रावत बाघसिंह को दिया गया।[3] राजमाता के आमन्त्रण

1 बदायूनी लिखता है कि हुमायू न मुहम्मद जमान मिर्जा को वापस करने के लिए बहादुर शाह को पत्र लिखा। बहादुर शाह न इसका कठोर उत्तर दिया जिसके कारण हुमायू ने गुजरात पर आक्रमण करने का सकल्प कर लिया। (मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 345)। मिराते सिकन्दरी भी इसका समथन करता है (बेले, हिस्टी आफ गुजरात, पृ० 381)।

2 बनर्जी, हुमायू 1, पृ० 88।

3 बाघसिंह ने राणा का स्थान ग्रहण किया, इस कारण उसे दीवानजी कहकर

चित्तौड के पतन तक सारगपुर तथा उज्जन म रुका रहा।[1]

डा० बनर्जी ने हुमायू के बहादुर शाह पर आक्रमण न करने का समथन किया है।[2] उनका विचार है कि वहा रुके रहने से उसने मुस्लिम परम्परा का पालन ही नही किया वल्कि उसे निम्नलिखित लाभ भी हुए—

(1) वह बहादुर शाह के राज्य के कुछ भागो पर अधिकार किय हुए था। आलम खा जो बहादुर शाह की सहायता के लिए चित्तौड गया हुआ था, अपनी जागीर स हाथ धो बैठा।

(2) सारगपुर और उज्जैन म रहकर मालवा निवासियो तथा पुरबिया राजपूतो को अपने पक्ष म करने का हुमायू को सुअवसर मिला।

(3) उसने अपने को माडूगढ तथा गुजरात की सेना के बीच रखकर ऐसी परिस्थिति उपस्थित कर दी थी कि बहादुर शाह उसके कैम्प के माग स ही अपनी राजधानी मे पहुच सकता था।

(4) चित्तौड की विजय के पश्चात यदि बहादुर शाह अपनी भारी तोपो के साथ अहमदाबाद जान का प्रयत्न करता तो हुमायू अपनी हल्की तोपो के साथ उसस अधिक शीघ्रता स वहा पहुच सकता था।

(5) बहादुर शाह और मुगलो के युद्ध मे हुमायू क लिए राजपूतो से अप्रत्यक्ष सहायता पाना सभव था, क्योकि बहादुर शाह के उत्तर और पश्चिम दोनो तरफ राजपूत थे। अनुमानत राजपूतो न हुमायू को भोजन की सामग्री इत्यादि पहुचायी क्योकि उस इसका कष्ट नही हुआ।[3]

डॉ० बनर्जी का यह मत ठीक नही प्रतीत होता। हुमायू यदि इसी समय राजपूतो की सहायता करने के लिए आगे बढ जाता तो यह अधिक सभव था कि राजपूत सदा के लिए उसके मित्र बन जाते और भविष्य म उस जिन कठिनाइयो का सामना करना पडा, कदाचित् उन कठिनाइयो का सामना उसे न करना पडता इस दृष्टि से हुमायू ने एक भारी भूल की तथा उसन एक बहुत बडा अवसर खो

---

1 जौहर, स्टीवट, प० 4, तबकाते अकबरी, डे, 2, प० 49, मुन्तखबुत्त-वारीख, 1, पृ० 346, फिरिश्ता, ब्रिग्स 2, प० 75 76।

2 बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 119 20।

3 हुमायू के पक्ष म हम यह भी कह सकते हैं कि उज्जन म रुककर हुमायू एक केन्द्रीय स्थान पर था। यहा स वह बहादुर शाह के प्रमुख सनिक, अड्डे माडू को खानदेश (जहा का शासक बहादुर शाह का मित्र था तथा बहादुर शाह की सेना म चित्तौड म मौजूद था) से अलग कर सकता था। यहा से वह गुजरात, चित्तौड तथा दक्कन पर दृष्टि रख सकता था।

दिया। वास्तविक रूप म हुमायू राजपूतो की सहायता के महत्त्व को नही समझ सका। यदि उसन इस सुअवसर से लाभ उठाया होता तो उसका भविष्य ही बदल गया होता।[1]

चित्तौड का पतन

बहादुर शाह को जब यह ज्ञात हो गया कि हुमायू उसके विरुद्ध और आगे नही बढेगा तो उसने नयी शक्ति के साथ चित्तौड के घेरे का काय पुन प्रारम्भ किया। इस घेरे का उत्तरदायित्व प्रसिद्ध तोपची रूमी खा को सौपा गया जो अपनी योग्यता के लिए पूरे भारत म प्रसिद्ध था।

माच 1535 ई० के प्रारम्भ मे रूमी खा की तोपो ने दुग के दक्षिण-पश्चिम की रक्षापक्ति को विध्वस करना प्रारम्भ कर दिया। इस भाग के रक्षक हाडा अर्जुन न बहादुरी के साथ इसकी रक्षा का प्रबन्ध किया, किन्तु तोपो के सामन उसको सफलता नही मिली। रूमी खा ने दुग के अन्य भागो पर भी अपनी तोपो स आक्रमण प्रारम्भ कर दिया, जिससे घबराकर राजपूतो की 13,000 स्त्रिया रानी कर्मावती के साथ जौहर करके जल मरी तथा पुरुष प्रमुख द्वार खोलकर युद्ध के लिए बाहर निकल पडे। भैरा पोल पर भीषण युद्ध हुआ, जिसम बहुत मे राजपूत मारे गय। लगभग 3,000 बालको को कुए मे डाल दिया गया, जिमस वे शत्रु के हाथ म न पडे। इस तरह लगभग 32,000 मनुष्य मारे गये।

सघष और नरसहार के पश्चात् बहादुर शाह ने 8 माच 1535 ई० को चित्तौड के दुग पर अधिकार कर लिया। उसमे रूमी खा को यह दुग दन की आशा दिलायी थी किन्तु अमीर रूमी खा के विरुद्ध थ। इस कारण बहादुर शाह ने यह दुग रणथम्भौर के दुगपति नस्रम खा को सौप दिया। उन्ह भय था कि इससे रूमी खा बहुत शक्तिशाली हो जाएगा।

मदसौर

चित्तौड के पतन का समाचार सुनकर हुमायू बहादुर शाह से युद्ध करने के लिए उज्जैन से आगे बढकर म दसौर आया। बहादुर शाह चित्तौड स गुजरात पहुच जाना चाहता था किन्तु मुगलो की सतकता से वह ऐसा करने मे सफल न

1 "Humayun, however, was guided by intuition and ins piration rather than by cool inference from carefully sur veyed facts" (शर्मा, मेवाड अण्डर दि मुगल्स, पृ० 54)।

2 वही, प० 55, वीर विनोद 2, प० 31।

हो सका।

मन्दसौर में दोनों सेनाएं एक दूसरे के आमने-सामने एक झील के निकट पड़ी रहीं।[1] मुगलों के एक अग्रणी दस्ते ने बहादुर शाह की सेना में गड़बड़ी उत्पन्न कर दी, किन्तु उसका कुछ विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। रणनीति के विषय में बहादुर शाह के सेनानायकों में मतभेद था। प्रमुख सेनानायक ताज खां तथा सद्र खां ने हुमायूं की सेना पर तुरन्त आक्रमण करने की राय दी। उनका विचार था कि गुजराती सेना चित्तौड़ की विजय से प्रोत्साहित थी। उस समय आक्रमण करने से सफलता की पूर्ण आशा थी। रूमी खां ने इसका विरोध किया। उसने कहा कि बहादुर शाह की सबसे बड़ी शक्ति उसका तोपखाना था। खुली लड़ाई में तोपखाने का पूर्ण उपयोग कठिन था। उसने मजाक के तौर पर कहा कि शक्तिशाली तोपखाने के रहते हुए साधारण तलवारों तथा तीरों से युद्ध करना मूर्खता है। उसने यह मत प्रकट किया कि चारों तरफ गाड़ियों का घेरा तैयार कर लिया जाए तथा चारों तरफ खाइ खुदवा दी जाए। मुगलों की सेनाएं इनके निकट आते ही बन्दूकों तथा तोपों से मार डाली जाएंगी।[2]

बहादुर शाह ने रूमी खां का विचार कई कारणों से स्वीकार किया। सद्र खां की योजना आक्रमण की थी। इसके विपरीत रूमी खां की योजना में आक्रमण तथा रक्षा दोनों का समावेश था। कदाचित बहादुर शाह मुगलों से खुला युद्ध करने में भय खाता था। सद्र खां ने अपने विचार की पुष्टि के लिए कई शक्तिशाली दलीलें भी दी थीं। चित्तौड़ विजय से जहां गुजराती सेना में उल्लास था वहां मुगल सेना भी थकी नहीं थी। रूमी खां तोपखाने का विशेषज्ञ था। चित्तौड़ की विजय का बहुत कुछ श्रेय उसी को था जिससे उसकी योग्यता का सिक्का जम गया था। इस परिस्थिति में बहादुर शाह ने रूमी खां की योजना को स्वीकार किया।

बहादुर शाह की स्वीकृति पाते ही रूमी खां ने अपना प्रबन्ध प्रारम्भ कर दिया। अपनी सेना के चारों तरफ गाड़ियों तथा आरक्षित तोपों से उसने एक रक्षात्मक दीवार-सी बना दी। एक तरफ झील थी। बाकी तीन तरफ खाइयों से इसे और

1 अकबरनामा, 1, पृ० 130।

2 वही, पृ० 131, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 50, अबू तुराब, पृ० 13 14।

"Flushed with their success at Chitor Bahadur's troops might have overwhelmed the imperial army had they been immediately led to the attack." (कॉम्मिस्सारियट, हिस्ट्री आफ गुजरात पृ० 350)।

भी सुरक्षित कर दिया गया। बहादुर शाह तथा उसकी सेना इस घेरे के अन्दर थी। आक्रामक दल एक घुडसवार दल था। इनका लक्ष्य मुगलो को तग करना तथा एसी परिस्थितिया उपस्थित करना था जिससे मुगल गुजराती तोपो के सम्मुख आ जाए और उन्हे मार डाला जाए। यह योजना बाबर की योजना से, जो उसने पानीपत के युद्ध मे अपनायी थी, मिलती-जुलती थी।[1] बहादुर शाह ने पानीपत के युद्ध मे मुगलो की युद्ध कला को देखा था तथा वह उससे प्रभावित था। इस कारण उसे विश्वास था कि रूमी खा की यह योजना सफल होगी।

प्रारम्भ मे रूमी खा को सफलता मिली। प्रारम्भिक मुठभेडो मे मुगलो को हानि उठानी पडी। 14 अप्रैल 1535 ई०को मुहम्मद जमान मिर्जा ने 500 घुड-सवारो के साथ आक्रमण किया। बहुत-से मुगल सैनिक उसका पीछा करते हुए गुजराती तोपो के सामने आ गये तथा मारे गये।[2] मुगल सैनिक तोपो के निकट जाने मे डरते थे।[3]

हुमायू बहादुर शाह की सेना को घेरे रहा। उसने दो एक बार गुजराती सेना की रक्षापक्ति को नष्ट करने का प्रयत्न किया, किन्तु उसे पीछे लौटना पडा। हुमायू ने अब यह निश्चय किया कि गुजराती सेना को इस तरह घेर लिया जाए कि उसे किसी तरह की सामग्री बाहर से प्राप्त न हो सके। उसने उन मार्गों पर जिनसे गुजराती सेना को आवश्यक सामग्री प्राप्त होती थी अपने आदमी बैठा दिये जिससे गुजराती सेना को आवश्यक वस्तुए न प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त उसने अपने सैनिको को आज्ञा दी कि वे गुजराती सेना के पास न जाए।[4]

इस योजना मे उसे सफलता मिली। गुजराती सेना को खाद्य सामग्री, घोडो का चारा, इंधन इत्यादि के मिलने मे कठिनाई होने लगी, जिससे बहादुर शाह के कम्प मे बहुत परेशानी हुई। अन्न का भाव बढ गया। बहादुर शाह ने बजारा की सहायता से दस हजार लदी बैलगाडिया पर अनाज प्राप्त किया तथा उसे लाने के लिए उसने पाच हजार सैनिक भेजे।[5] किन्तु दुर्भाग्यवश इसकी सूचना हुमायू

---

1 देखिए अकबरनामा का अग्रेजी अनुवाद, भाग 1, पृ० 302, हेनरी वेवरिज का नोट।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 132।

3 तबकाते अक्बरी, डे, 2, पृ० 50।

4 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 4, तबकाते अक्बरी, डे, 2, पृ० 51, अबू तुराब, पृ० 14, बेले, हिस्ट्री ऑफ गुजरात पृ० 384।

5 बेले, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 384 85, दस हजार बैलगाडिया अति-शयोक्ति पूर्ण प्रतीत होती है।

को प्राप्त हो गयी और अपनी सना की सहायता स यह अन मुगला न अपन अधिकार म कर लिया। इससे गुजराती सना को बहुत ही निराशा हुई तथा उनका कष्ट बहुत बढ़ गया।[1]

अप्रल का महीना आ गया था। कुछ ही दिना म वषा प्रारम्भ हा सकती थी। उस समय झील पानी स भर जाता जिसन हुमायू का कठिन परिस्थितिया का सामना करना पडता। वह इस समय शर खा स भी दूर था। मालवा म विदेशी सना तथा युद्ध की ऐसी परिस्थितिया म विद्रोह भी हा सकता था। इस स्थिति म हुमायू न बहादुर शाह की कठिनाइया स लाभ उठाना चाहा तथा उसन बहादुर शाह की सेना पर 25 अप्रल को खुलकर आक्रमण करन का निश्चय किया। बहादुर शाह भी इन परिस्थितिया स घबरा गया था। निराशा की अवस्था म उसन युद्ध स भागने का निश्चय किया। 25 अप्रल की रात को भागन क पहल उसन अपन जवाहिरात तापखाना तथा जानवरा का नष्ट कर दिया जिमस व शत्रु क हाथ न लगे। जिस समय बहादुर शाह क प्रिय हाथिया शिरजा' तथा पतसिगार' की सूडें काटी जा रही थी आर उसकी प्रसिद्ध तोप 'लला' आर मजनू नष्ट की जा रही थी उस समय उसकी आखा म आसू आ गय।[2]

रात्रि म अपन पाच विश्वासपात्र अमीरा क साथ जिसम कद्रशाह (जा बाद म मालवा का शासक हुआ) तथा खानदश के शासक प्रमुख थ, बहादुर शाह पिछल माग स निकलकर एक सुनसान माग म माडू की तरफ रवाना हो गया।[3] प्रारम्भ म शत्रुआ को धाखा दन क लिए वह आगरा क माग स अग्रसर हुआ, कुछ दूर जाकर वह पुन माडू का तरफ लाट पडा।

रात्रि मे बहादुर क खेम स भाग सुनकर हुमायू का उसके पलायन की सूचना मिली। सहसा उस विश्वास नही हुआ। 30 000 सिपाहिया के साथ युद्ध के लिए

---

1 वही पृ० 385। मिरात सिकन्दरी के अनुसार रूमी खा ने इसकी सूचना हुमायू को दे दी थी।

2 अकबरनामा 1 पृ० 132 बले गुजरात पृ० 384 86, फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 126 28 अरबिक हिस्ट्री आफ गुजरात 1 पृ० 232, तथा 239 40 जौहर, स्टीवर्ट पृ० 4 5।

3 तबकाते अकबरी डे, 2 पृ० 21 फिरिश्ता, ब्रिग्स 2 पृ० 76 77, अबू तुराब पृ० 15। अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात पृ० 240 क अनुसार उसके साथ भागने वाला की सख्या दस स कम थी।

तयार होकर हुमायू अपने खेमे म प्रतीक्षा करता रहा।[1] उसने बहादुर शाह को सेना पर उसी समय आक्रमण नही किया, जबकि वह उस समय आक्रमण कर उसकी सेना का पूणतया नष्ट कर सकता था।

डा० बनर्जी न हुमायू के आक्रमण न करने की नीति को सराहना की है। व लिखत है कि हुमायू इतना बहादुर था कि वह शत्रु की कमजोरी से लाभ नहीं उठाना चाहता था। उसी के साथ वे यह भी लिखते ह कि बहादुर शाह की सनिक याग्यताओ का हुमायू को ज्ञान था और इस कारण वह काइ भी खतरा नहीं मोल लना चाहता था, विशेषतया इस कारण कि उसकी नाकेबन्दी की नीति सफल हो रही थी। इसके अतिरिक्त हुमायू अपनी सेना को रात्रि म नियन्त्रित रखना चाहता था जिससे सुविधा के साथ शत्रु पर आक्रमण कर सके।[2]

डा० बनर्जी के मत म परस्पर विरोधी दलीले ह। या तो हुमायू वीर था और बहादुर शाह की कमजोरी से लाभ उठाना नही चाहता था या उससे भयभीत था। य दोना बात एक साथ नही कही जा सकती। वास्तव म यदि हम विचार करे तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस समय बहादुर शाह के खेम म तोप, जानवर एव अन्य सामग्रिया नष्ट की जा रही थी तथा रूमी खा द्वारा हुमायू को बहादुर शाह के पलायन की सूचना भी प्राप्त हुई, उस समय हुमायू का इन बातो पर पूण विश्वास नही हुआ। उस यह भय था कि यह बात उस धोखा देने के लिए कही जा रही है जिसस वह गुजराती सना पर आक्रमण कर दे। यही कारण था कि 30,000 अश्वारोहियो के साथ तयार होकर हुमायू सतकता स प्रतीक्षा करता रहा। उसम खतरा माल लेने की हिम्मत होती ता उसने निश्चय ही बहादर शाह की सना पर आक्रमण कर दिया होता। यह हुमायू की वीरता नही वरन उसकी अदूरदर्शिता का प्रतीक था।

बहादुर शाह के भागने के कारण

शक्तिशाली तोपखाना एव नयी विजय स उल्लसित सना क रहत हुए भी बहादुर शाह ने युद्ध क्या नही किया? हुमायू खाद्य द्वारा वस्तुओ पर रोक लगाने के परिणामस्वरूप उसके खेमे की हालत दिन पर दिन बिगडती जा रही थी। बहादुर शाह की सबस बडी शक्ति उसका तोपखाना था जा रूमी खा द्वारा सचालित था। बहादुर शाह को यह सदह हा गया था कि रूमी खा मुगला स मिला हुआ ह। दिन पर दिन बिगडती हुइ अवस्था स वह घबडा गया तथा रूमी खा की तरफ

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 132।

2 बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 126।

उनका सशय और भी दृढ हो गया। इस कारण वह किसी तरह यहा से भागकर अपने दढ दुर्ग म पहुच जाना चाहता था। रूमी खा के विश्वास घात की सूचना पाते ही उसन अपने एक अफसर को आज्ञा दी कि रूमी खा का मार डाले। उस व्यक्ति न रूमी खा का सूचना दे दी।[1] रूमी खा का हुमायू से पत्र-व्यवहार तो चल ही रहा था, बहादुर शाह को छोडकर भागने का अच्छा अवसर प्राप्त हो गया और वह हुमायू स जा मिला।[2] बहादुर शाह रूमी खा क विश्वासघात स इतना भयभीत था कि उसन अपन पलायन की सूचना अपन विश्वस्त अमीरो को भी नही दी। 80 वष का बूढा खुदावन्द खा, जो पहले मन्त्री रह चुका था, यह समाचार सुनकर आश्चयचकित रह गया।

बहादुर शाह की सेना का पलायन

गुजराती सना बहादुर शाह के भाग जान स बहुत ही निराश्रित हो गयी। न भागन का रास्ता था, न वहा रुकना सभव था। जिसको जहा अवसर मिला, भाग गया। इस बीच सद्र खा तथा इमादुल मुल्क ने बुद्धि तथा साहस से काम लिया। उन्होन जो सना इकट्ठी हो सकती थी, इकट्ठी की तथा रात्रि के पश्चात प्रात अपन झण्डे उडात और बाजे बजाते य दक्षिण की तरफ बढे, जस व पराजित न होकर विजयी हुए हो। इस सेना के साथ खुदावन्द खा भी था। अपनी बुढौती तथा क्षीण स्वास्थ्य के कारण वह घोडे पर नही चढ सकता था और अपने चार हजार सनिको के साथ पालकी पर बठकर माडू की तरफ जा रहा था।[3]

---

1 कामिस्सारियट, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 353 मे Hist des Decouverte, des Protugais by Lafitau के भाग 1, पृ० 212 के आधार पर उदधृत।

2 रूमी खा हुमायू से कहा मिला इस पर समकालीन इतिहासकार एकमत नही है। जौहर के अनुसार रूमी खा मन्दसोर से बहादुर शाह का पीछा करत हुए माग म मिला (जौहर, स्टीवट पृ० 5)। अकबरनामा के अनुसार वह नालचा मे मिला (अकबरनामा 1, पृ० 132 33)। निजामुद्दीन अहमद ने स्थान का उल्लेख नही किया है। मिराते सिकन्दरी के अनुसार रूमी खा बहादुर शाह के भागने के पूव ही भाग गया था (बेल गुजरात, पृ० 385)। इन लेखको के वणन से स्पष्ट है कि रूमी खा मन्दसौर तथा माडू के बीच हुमायू से मिला। मुगल इतिहासकार उसकी सराहना करत है और उसे विश्वासघाती नही कहते। इसके विपरीत गुजराती इतिहासकार उसकी निन्दा करते है।

3 अबू तुराब, पृ० 16।

हुमायू न यादगार नासिर मिर्जा, कासिम हुसेन सुल्तान तथा हिन्दू बेग के नेतत्व मे एक सेना गुजराती सेना का पीछा करन के लिए भेजी। खुदावन्द खा तेजी के साथ भागने मे असमथ था और मुगलो द्वारा बन्दी बना लिया गया।[1] हुमायू ने खुदावन्द खा के साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार किया। मुगलो ने सद्र खा का पीछा किया किन्तु वह पकडा नही जा सका। अपनी सेना के साथ वह माडू के दुग मे बहादुर शाह से जा मिला।

हुमायू ने बहादुर शाह के खेमे का बचा सामान अपने अधिकार मे कर लिया। पूरा खेमा उसी तरह से छोड दिया गया था। खेमे के ठाट-बाट ने मुगलो को आश्चयचकित कर दिया। अबूतुराब वली के अनुसार पूरा खेमा लगभग एक मील के घेरे मे फला हुआ था। खेमा सोने के काम से युक्त मखमल का था तथा उनके खूटे सोने और चादी के थे। इन्हे देखकर हुमायू आश्चयचकित हो गया और उसन कहा था कि इसमे आश्चय की कोई बात नही है क्योकि बहादुर शाह समुद्र और पृथ्वी दोनो का शासक था।[2] इन चीजो के अतिरिक्त मुगलो को बहुत से गुजराती बन्दी प्राप्त हुए जिनम खुदावन्द खा के अतिरिक्त बहादुर शाह का श्वसुर तथा थट्टा का भूतपूव शासक जाम फीरोज भी था। हुमायू ने खुदावन्द खा को सम्मानित किया तथा उसे अपनी सेना म रख लिया। हुमायू ने रूमी खा का भी खिलअत द्वारा स्वागत किया।[3]

---

1 अकबरनामा, 1, प० 133, मासिरे रहीमी, 1, पृ० 526।

2 मिरात सिकन्दरी के अनुसार सुल्तान सिकन्दर लोदी कहा करता था कि दिल्ली की आय गेहू तथा बाजरे मे होती है तथा गुजरात की मूगा तथा मोती से। (बेले, गुजरात, प० 386, कामिस्सारियट, प० 352)।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 132-33। रूमी खा के विषयम मिरात सिकन्दरी का लेखक सिकन्दर अपने पिता की सूचना के आधार पर, जो हुमायू का किताबदार था तथा इस घटना के समय वहा उपस्थित था लिखता है कि जिस समय हुमायू मन्दसौर मे बहादुर शाह के परित्यक्त खेमे म पहुचा तो वहा अन्य वस्तुओ के अतिरिक्त उसे एक तोता भी मिला। हुमायू ने उसे अपने पास रख लिया। जब रूमी खा के स्वागत के लिए उसका नाम लेकर बुलाया गया, तो तोते ने कहा "फट रूमी खा हराम ख्वार, फट रूमी खा हराम ख्वार" (अर्थात रूमी खा हराम ख्वार पर लानत है)। उसन दस बार यह कहा। रूमी खा का सिर नीचा हो गया। हुमायू न उससे कहा 'यदि किसी मनुष्य ने कहा होता तो उसकी जबान खीच ली जाती। लेकिन इस परिन्दे को क्या कहा जाए।' उपस्थित लोग समय गये कि जिस समय रूमी खा बहादुर के खेमे म भाग गया तब बहादुर शाह के दरबारियो ने इन शब्दो का प्रयोग किया होगा जिन्हे तोते न सुना होगा

मुहम्मद जमान मिर्जा जो अब तक बहादुर शाह के साथ था, यहा से भागकर पजाब तथा थट्टा की तरफ चला गया।[1] कामरान की अनुपस्थिति मे उसने पजाब मे लूटमार करना प्रारम्भ कर दिया। बहादुर शाह की इन परिस्थितियो से चितौड ने लाभ उठाया और राजपूतो ने फिर उस पर अधिकार कर लिया।[2]

माडू

हुमायू भी बहादुर शाह का पीछा करता हुआ माडू के निकट पहुचा तथा उसने नालचा मे, जो माडू के दिल्ली दरवाजे से केवल तीन मील की दूरी पर था, अपना पडाव डाला।

माडू का दुग मध्य युग के शक्तिशाली दुर्गों मे समझा जाता था। यह 23 मील की परिधि मे फला हुआ था तथा चारो तरफ मोर्चे वाली दीवारो से रक्षित था।[3] मन्दसौर से भागकर बहादुर शाह ने यही मुगलो का सामना करने की तैयारी की।

गुजराती सेना मन्दसौर के पलायन से हताश हो गयी थी। रूमी खा तथा अन्य सेनानायको के विश्वासघात ने बहादुर शाह को दहला दिया था। हुमायू जानता था कि माडू का दुग इतना शक्तिशाली है कि उसे आसानी से अधिकृत नही किया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त पूव मे शेर खा की गतिविधि पर उसका

और रूमी खा का नाम सुनकर उसने उन्ही शब्दो को दुहरा दिया। (वेले गुजरात, पृ० 386 87, अरबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात, 1, प० 335)।

असकिन 2 प० 55 बनर्जी हुमायू 1 प० 124 ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, प० 73 75। मुगल इतिहासकार उसकी तारीफ करते है। उनका यह दृष्टिकोण तो स्पष्ट ही समझ मे आ जाता है। रूमी खा के जीवन की घटनाओ को देखने से उसके विश्वासघात से हमे आश्चय नही होना चाहिए। वह एक महत्त्वाकाक्षी व्यक्ति था जो अपने स्वाथ के लिए कुछ भी कर सकता था। जब उसे चित्तौड का दुग नही प्राप्त हुआ तो उसे निराशा हुई। ऐसा प्रतीत होता है कि उसे विश्वास हो गया था कि बहादुर शाह से अधिक लाभ नही होगा। इस तरह मुगलो से मिलकर वह अधिक लाभ प्राप्त करना चाहता था।

1 अकबरनामा, 1 प० 132।

2 बनर्जी, हुमाय 1 प० 129, ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास प० 401, शर्मा, मेवाड अण्डर दि मुगल्स प० 58।

3 माडू के दुग के वणन के लिए देखिए, आरकियोलाजिकल सर्वे रिपोट 1912 13, ई० प० 148 51।

ध्यान था। माडू के घेरे म अधिक समय लगने से खतरा उपस्थित होने का भय था। वर्षा ऋतु आ रही थी जिसमे अय कठिनाइया की आशका थी। इस कारण उसने पुन बहादुर शाह से सधि वाता आरम्भ की।

हुमायू ने सैयद अमीर तथा वैराम खा का बहादुर शाह के पास दूत बनाकर यह सदेश लेकर भेजा कि वषा ऋतु मे युद्ध करना ठीक नही है। हुमायू ने यह प्रस्ताव रखा कि गुजरात का वह भाग जो बहादुर को उसके पूवजा द्वारा प्राप्त हुआ था उस पर उसका अधिकार रहे और मालवा तथा अय भागा पर मुगलो का अधिकार हो जाए।[1] हुमायू ने यह भी स्वीकार किया कि उसके प्रस्ताव का कारण खुले युद्ध की कठिनाइया थी। इस तरह दोना प ा म स ध वार्ता प्रारम्भ हुई बहादुर शाह ने भी सधि वाता का स्वागत किया

हुमायू का प्रतिनिधि मौलाना मुहम्मद फरगली (परगली) तथा बहादुर शाह का प्रतिनिधि सद्र खा नालचा और माडू क बीच नीलो सबील पर मिले। गुजरात की तरफ स सद्र खा को सहायता देन क लिए दो शिष्ट मौलवियो को भाग लेने की स्वीकृति भी हुमायू न द दी।[2] सधि वाता प्रारम्भ म सफल नही हुई और हुमायू ने दुग पर आक्रमण की तयारी शुरू कर दी। किन्तु मौलवियो की सहायता से सधि की शर्तें तय हो गयी। इसके अनुसार चित्तौड गुजरात को तथा माडू और उसके निकट के भाग मुगलो का प्राप्त होते।[3] मुगल सम्राट न इसे स्वीकार किया

---

1 सदेश यह था "हमम-तुमम भाईचारा है। कभी कभी सगे भाइया म भी आपस म भगडा तथा मतभेद हो जाता है। क्योकि वषा ऋतु आ गयी है अत हम खेमे म रहन के कष्ट से मुक्ति दिलायी जाए और भाइचार से माडू को हमारे लिए छोड दिया जाए ताकि हम वर्षा ऋतु वहा सुगमता पूवक व्यतीत कर सकें। तुम अपन पूवजा के राज्य गुजरात म शान्ति एव सुख से रहो।" अबू तुराब, तारीखे गुजरात, पृ० 16।

2 य शिष्ट मौलवी इतिहासकार अबू तराब का पिता शाह कुतुबुद्दीन शुकरुल्लाह तथा उसका चचा शाह कमालुद्दीन फुतहुल्लाह थे। अबू तुराब, पृ० 16-17।

3 अबू तुराब, पृ० 16 अकबरनामा, 1, पृ० 133, अरेबिक हिस्ट्री, पृ० 241, डा० बनर्जी न हुमायू के चित्तौड देने की बात का समथन किया है। व लिखत है कि हुमायू न इस कारण इसे स्वीकार किया, क्योकि इसमे उस कोई हानि नही थी और चित्तौड प्राप्त करन की उनकी आकाक्षा भी नहीं थी। राजपूता क उसके साथ सम्पक अच्छे थ और वह उनके ऊपर शासन करन का इच्छुक न था। इसक अतिरिक्त हुमायू जानता था कि बहादुर शाह चित्ताड को अपन अधिकार म नही रखगा। (हुमायू, भाग 1, पृ० 132)।

क्योकि वह माडू पर तुरन्त अधिकार करना चाहता था।

एक व्यक्तिगत पत्र म हुमायू ये सधि की स्वीकति द दी। इसके अनुसार गुजरात तथा चित्तौड बहादुर शाह को प्राप्त हाता—यह निश्चय हुआ कि बहादुर शाह माडू दुग के पश्चिमी द्वार लोजानी से बाहर निकल जाए तथा मुगल उत्तरी द्वार अर्थात् दिल्ली द्वार से प्रवेश करें।

बहादुर शाह ने हुमायू की शर्तों को स्वीकार कर लिया आर उसन अपने सिपाहियो का भी इसकी सूचना दे दी। इसके परिणामस्वरूप सनिको तथा गुजराती अधिकारियो के मन मे यह निश्चय-सा हा गया कि युद्ध समाप्त हा जाएगा। इस तरह उनक मन स युद्ध की सतकता समाप्त हा गयी।

उसी रात लगभग दो सौ मुगल सनिक माडू की दीवार पर सीढिया लगाकर तथा कमन्दा की सहायता स दुग मे प्रवेश कर गये। उन्हान दुग का फाटक खाल दिया तथा अय मुगल सनिका की सहायता म दुग पर अधिकार कर लिया।[1] इसकी सूचना पाकर हुमायू घाडे पर चढकर अपन आदमियो के साथ दुग क फाटक की तरफ आया। दिल्ली दरवाजे से उसने दुग म प्रवेश किया। सद्र खा अपने आदमियो सहित अपन घर के द्वार पर खडा युद्ध करता रहा तथा घायल हान पर भी अपने स्थान पर दढ रहा। अन्त म उसके उच्च पदाधिकारी उसके घोडे की लगाम पकडकर माडू दुग के अन्दर सोनगढ (मुगढ) की ओर ले गये।[2] जिसकी रक्षा का उत्तरदायित्व मुल्तान आलम खा के ऊपर था।

कादिर शाह, जिस पर दुग की रक्षा का उत्तरदायित्व था मुगलो के प्रवेश की सूचना पाकर दुग के बुज से उतरकर घोडा दौडाता बहादुर शाह के शयनागार मे पहुचा। बहादुर शाह के सेवक उसे अन्दर जाने देने को राजी नही हुए। उसकी आवाज सुनकर बहादुर शाह जाग गया तथा उसकी आवाज पहचानकर उसने उसे अन्दर बुलाया। परिस्थिति का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात बहादुर शाह घोडे पर चढकर बाहर निकला। उसक साथ कादिर शाह और भूपत राय भी थे। रूमी खा ने भूपत राय को बहादुर शाह का साथ छोडने के लिए भडकाया था और उन्हे हुमायू द्वारा सदव्यवहार का आश्वासन दिया था। भूपत राय ने फिर भी बहादुर शाह का साथ न छोडा।[3]

---

1 अकबरनामा 1 पृ० 133, कामिस्सारियट पृ० 353।

2 अकबरनामा पृ० 134 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 52।

3 मिरात सिकन्दरी के अनुसार रूमी खा ने भूपत को एक पत्र म लिखा, "तुम्हे मालूम है कि बहादुर शाह ने तुम्हारे वश को क्या हानि पहुचायी है। ऐसे हत्यारे के लिए प्राण देना बुद्धिमानी नही है। बदला लेने का

प्रारम्भ म बहादुर न युद्ध करना चाहा किन्तु सोनगढ पहुचकर उसन अनुभव किया कि स्थिति प्रतिकूल है। उसने माडू छोडकर भागन का निश्चय किया। रात्रि के अधकार मे उनक घोडे रस्सियो मे बाधकर दुग की दीवारो से बाहर निकाले गये और बहादुर शाह कुछ साथियो के साथ वहा से निकल गया। भागत समय मुगल सेना के ऊजबेक सैनिक बुरी ने बहादुर शाह को पहचान लिया।[1] इस सैनिक ने इसकी सूचना अपन सेनानायक कासिम हुसेन को दी। किन्तु कासिम हुसेन ने यह कहकर टाल दिया कि गुजरात का सुल्तान केवल तीन-चार सिपाहियो के साथ नही जाएगा। इस तरह भाग्य ने बहादुर शाह के पलायन मे साथ दिया।

माडू का कत्ले आम—माडू के दुग पर अधिकार करने के पश्चात् मगलवार का दिन होने से हुमायू ने लाल वस्त्र पहना था। उसने कत्ले आम की घोषणा की। तीन दिन तक मुगल सैनिक माडू की गलियो म खून की नदी बहाते रहे।[2] *अन्त म चौथे दिन बच्छु (मम्मू) नामक बहादुर शाह के एक गायक के गान से प्रभा-*वित होकर हुमायू ने हरा वस्त्र पहना तथा कत्ले आम बन्द करने की आज्ञा दी।[3]

समय आ चुका है। जब आक्रमण हो तो अपन अधिकृत फाटको को खोल दो। हुमायू तुम्हारे पिता का स्थान तुम्ह देगा तथा अन्य कृपा प्रदर्शित करेगा। लेखक के अनुसार माडू का राज्य पतन भूपत राय के विश्वासघात से हुआ (बेले, गुजरात, पृ० 387 88)। इसके विपरीत अबुल फजल स्पष्ट लिखता है कि भूपत राय बहादुर शाह के साथ भाग गया। (अकबरनामा, 1, पृ० 133) अबू तुराब भी भूपत की स्वामिभक्ति का समथन करता है (तारीखे गुजरात, पृ० 18)।

1 बुरी, बरी या नूरी पहले सुल्तान बहादुर का सेवक रह चुका था तथा बाद म कासिम हुसेन का सवक हो गया था। (अकबरनामा I पृ० 133) फिरिश्ता लिखता है कि सद्र खा न अपन प्राणो की बाजी लगाकर बहादुर को बचाया था (ब्रिग्स, 2, पृ० 77)।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 134, अरबिक हिस्ट्री, पृ० 233।

3 एक दिन बहादुर शाह का एक गायक कलावन्त मम्मू पकडकर हुमायू क सामने लाया गया। हुमायू बहुत क्रोधित था तथा जिस ओर उसकी नजर जाती थी, अग्नि बरसती थी। खुशहाल बेग न मम्मू का परिचय दिया तथा कहा, 'ह बादशाह, यह मम्मू कलावन्त गायको का बादशाह ह।" बादशाह न उसे क्रोध स देखा। खुशहाल बेग न पुन कहा कि हिन्दुस्तान म ऐसा गायक न होगा।' बादशाह ने कहा "कुछ गा।' मम्मू फारसी सगीत म अद्वितीय था। उसने गाना प्रारम्भ किया। उसका गाना सुनकर बादशाह की दशा म परिवतन हुआ। उसन लाल वस्त्र त्यागकर हरा वस्त्र धारण किया। मम्मू न उससे कहा, 'जो मागना चाह माग ले, तुझे प्रदान कर

कत्ले आम के कारण माडू म शाति-स्थापित करने म कठिनाई नही हुई। सद्र खा घायल अवस्था म हुमायू के सामने लाया गया। हुमायू ने उसे क्षमा कर दिया।[1] अन्य अमीरो के साथ भी दया का बर्ताव किया गया।

सद्र खा जब हुमायू की सेवा म आया तो प्रारम्भ म उसके ऊपर केवल निगरानी रखी गयी। उसने यह आश्वासन दिया था कि वह मुगल सेना छोडकर कही नही जाएगा। वह अपने वचन पर इतना अटल रहा कि बाद म कैम्ब मे उसे गुजरातियो ने भगाने का प्रयत्न किया किन्तु उसने उनके साथ जाना अस्वीकार कर दिया।

जहा सद्र खा के साथ सदव्यवहार हुआ वहा आलम खा के साथ कठोरता का व्यवहार किया गया और उसकी एडी की नसें काटकर उसे जीवन भर के लिए पगु कर दिया गया।[2]

माडू हत्याकाड की आलोचना—हुमायू के माडू निवास तथा दुग पर अधिकार करने की घटनाए हमारे सम्मुख कई प्रश्न उपस्थित करती है तथा हुमायू के चरित्र के कुछ ऐसे अश प्रदर्शित करती है जिन्ह समझना सरल नही है। हुमायू ने स्वय ही सन्धिवार्ता प्रारम्भ की। सन्धिवार्ता मे उसने सदा उदारता दिखायी। इसी कारण उसने बहादुर शाह के दो मौलवियो को भी उसमे भाग लेने दिया तथा बाद मे बहादुर शाह को चित्तौड देने की भी स्वीकृति उसने दी। यही नही, एक फरमान द्वारा उसने सन्धि को पक्का कर दिया। ऐसी परिस्थिति मे उसने दुग पर रात को आक्रमण क्या किया? मुगल गुजराती इतिहासकारो ने भी इस पर प्रकाश नही

दूगा। मझू ने अपने बन्दी सम्बन्धियो की मुक्ति की प्राथना की। मझू घोडे पर बैठाया गया और उसने जिसे कहा उसे मुक्त कर दिया गया। कुछ लोगो ने हुमायू से कहा कि मझू सभी को मुक्त कर रहा है। हुमायू ने कहा 'कोई बात नही। आज यदि वह मुझसे मेरा राज्य भी मागता तो मैं इनकार न करता।' कुछ दिन हुमायू के पास रहकर मझू भागकर पुन बहादुर शाह की सेवा म चला गया। बहादुर शाह ने उसे देखकर कहा, आज मेरा जो खोया हुआ था मुझे मिल गया। (मिराते सिकन्दरी, बेल, गुजरात, पृ० 388 90) मिरात सिकन्दरी के लेखक का पिता उस समय हुमायू के दरबार म था, जब मझू लाया गया था।

1 माडू के पतन के पश्चात सद्र खा के भविष्य के विषय म समकालीन इतिहासकार एकमत नही है। अबुल फजल के अनुसार सद्र खा का उसकी बहादुरी के लिए स्वागत किया गया और उसे मुगल सेना म रखा गया। (अकबरनामा I पृ० 134)। इसके विपरीत मिरात सिकन्दरी का लेखक लिखता है कि सद्र खा बहुत बुरी तरह पराजित हुआ और मार डाला गया (बेले गुजरात पृ० 388)। अबुल फजल का कथन सही है।

2 तबकात अकबरी, डे 2, पृ० 52, नोट 1 अकबरनामा, पृ० 134।

डाला है। या तो हुमायू ने सन्धिवार्ता बहादुर शाह को धोखा देने के लिए की, जिससे वह दुर्ग की रक्षा का प्रबन्ध ढीला कर दे और मुगलो को उस पर अधिकार करने में सुविधा हो, अथवा बीच मे कुछ ऐसी बाते हुई जिनके कारण उसने सन्धि तोडकर आक्रमण किया। जो भी हो, हुमायू का यह कार्य निन्दनीय है। उसने वचन भंग किया तथा गुजरातियो पर यह स्पष्ट हो गया कि मुगलो की बात का कोई विश्वास नही है।

एक तरफ हुमायू ने स्वीकृत सन्धि तोडी और दूसरी तरफ वह इतना क्रोधित हुआ कि तीन दिन तक उसने माडू मे खून की नदिया बहा दी। आखिर उसके क्रोध का कारण क्या था? क्या वह समझता था कि माडू के दुर्गवासी उसका स्वागत करेगे? जो भी हो, इस हत्याकाण्ड से उसने गुजरातियो की सदभावना खो दी। मुगल अब गुजरातियो के समक्ष केवल एक नृशस हत्यारे, झूठे तथा विदेशी रह गये। हुमायू की इन्ही मूर्खताओ के कारण बाद मे गुजरात मे जन आन्दोलन प्रारम्भ हुआ, जिसके परिणामस्वरूप मुगलो को गुजरात से भागना पडा।

चम्पानीर

माडू से भागकर बहादुर शाह अहमदाबाद होता हुआ चम्पानीर पहुचा। चम्पानीर का दुर्ग बडौदा से 25 मील उत्तर स्थित है। 16वी शताब्दी मे यह एक प्रसिद्ध दुर्ग था तथा यहा गुजरात के सुल्तानो ने अपना कोष सचित कर रखा था।

हुमायू माडू मे केवल तीन दिन रहा। उसने सिन्ध के मिर्जा शाह हुसेन अरगून को उत्तर मे गुजरात पर आक्रमण करने के लिए एक पत्र भेजा तथा लिखा कि पाटन मे पहुचने के पश्चात वह हुमायू को सूचित करे तथा उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा करे।[1]

हुमायू 30,000 घुडसवार[2] सेना के साथ बहादुर शाह का पीछा करता हुआ अहमदाबाद पहुचा। यह नगर भी लूटा गया।[3] यहा से बढकर हुमायू चम्पानीर के दुर्ग के निकट पहुचा तथा पिपली दरवाजे के पास स्थित इमादुल मुल्क नामक तालाब के निकट ठहरा। उसने नगर मे प्रवेश किया। किन्तु दुर्ग बहादुर शाह के अधिकार मे ही रहा।

---

1 तारीखे सिन्ध अथवा तारीखे मासूमी, पृ० 162 63।

2 कामिस्सारियट के अनुसार 10,000 (हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 355)।

3 बदायूनी, मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 346, तबकात अकबरी, II, 2, पृ० 53।

बहादुर शाह का साहस हिल गया था। यद्यपि उसने दुग मे आवश्यक वस्तुए जमा कर ली थी, फिर भी हुमायू के पहुचने के समाचार से उसे घबराहट हुई। उसने कोष जवाहरात तथा स्त्रियो को मसनद अली अब्दुल अजीज आसफ खा को, डियू पहुचाने के लिए सुपुर्द किया।[1] दुग का उत्तरदायित्व उसने राजा नरसिंह देव उर्फ कान्ह राज (खा जहा) तथा इख्तियार खा को दिया और केवल 200 सैनिको के साथ कम्बे की तरफ भाग खडा हुआ। नगर छोडने के पूर्व उसने मुहम्मदाबाद-चम्पानीर मे (जो उसी पहाडो पर स्थित था जिस पर चम्पानीर का दुग था) आग लगवा दी।

हुमायू ने नगर (मुहम्मदाबाद चम्पानीर) मे प्रवेश किया और उसने सवप्रथम नगर मे आग बुझाने का प्रबन्ध किया। हिन्दू बेग तथा अधिकाश सेना (लगभग 20 000) को उसने दुग के घेरे के लिए छोड दिया और स्वय लगभग 1,000 घुडसवारो के साथ बहादुर शाह का पीछा करने के लिए रवाना हुआ। हुमायू ने पीछा करने मे तेजी तो दिखाई किन्तु वह बहादुर शाह के कम्बे नगर छोडने के कुछ घण्टे बाद वहा पहुचा।

कैम्बे मे बहादुर शाह ने 100 जहाजो का बेडा पुतगालियो के विरुद्ध युद्ध करने के अभिप्राय से इकट्ठा किया था। नयी परिस्थिति मे उसे भय हुआ कि यह मुगलो के हाथ न लग जाए। इस कारण उसने उसे नष्ट कर दिया तथा यहा से भागकर डियू चला गया।[2]

हुमायू कैम्बे से आगे कई कारणो से नही बढा।[3] उसने केवल एक छोटा

---

1 अरेबिक हिस्ट्री पृ० 243।

2 अकबरनामा 1' पृ० 134। तारीखे फिरिश्ता के अंग्रेजी अनुवादक कर्नल ब्रिग्स तुर्की इतिहासकार फेरदी के आधार पर लिखते है कि बहादुर शाह ने यहा से अपना परिवार तथा हीरे जवाहिरात जो तीन सौ लोहे के सन्दूको मे थे मदीना भेज दिये। इनमे वह सब धन था, जो उसने जूनागढ, चम्पानीर अबूगढ चित्तौड तथा मालवा से प्राप्त किया था। यह धन भारत नही लौटा। यह कुस्तुनतुनिया के Grand Seignsor को प्राप्त हुआ। इस धन के कारण उसे ऐश्वयशाली सुलेमान (Sulaiman the magnificent) कहा जाने लगा। बहादुर शाह ने गुजरात के सुल्तानो की पेटी भी, जो बहुमूल्य थी अपने दूत के द्वारा सुलेमान के पास इस आशा से भेजी कि Grand Seignior मे हुमायू के विरुद्ध उसे सहायता प्राप्त हो। फिरिश्ता ब्रिग्स 4, पृ० 151।

3 अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात का लेखक लिखता है कि डियू से बहादुर शाह ने अपने अमीर महमूद लारी तथा मुहतरम खा को रूमी खा से मिलने

सय दन बहादुर शाह का पीछा करने के लिए भेज दिया। डियू पुर्तगालियों के अधिकार म था। हुमायू का भय था कि आग वढने स उनक साथ सघप होगा। बहादुर शाह उनसे वाता कर रहा था। इसस सघप की ओर भी आशका थी। इसक अतिरिक्त चम्पानीर पर अभी मुगलो का अधिकार नही हुआ था तथा अधिकतर मुगल सना वहो थी। हुमायू के पास कैम्वे म सना कम थी तथा चम्पानीर क कोप[1] पर तत्काल अधिकार करना आवश्यक था।

माडू की घटनाओ के पश्चात वहादुर शाह न सधि की कोई वार्ता प्रारम्भ नहो की। मुगलो पर स उसका विश्वास उठ गया था। बहादुर शाह के एक स्थान स दूसर स्थान के पलायन से स्पष्ट हो जाता ह कि उसके मन मे मुगलो से युद्ध करन का साहम नही रह गया था। माडू के वाद हुमायू न इतनी तजी क साथ वहादुर शाह का पीछा किया जिस दखकर सन्तोप तथा आश्चय होता है। आश्चय इस कारण कि हुमायू म गति का अभाव था तथा अधिकतर वह अपने उत्तरदायित्व को भूलकर एक स्थान पर रुक जाता था। यह कदाचित उसके जीवन की कुछ घटनाओ म ह, जव उसन तजी के साथ विना समय नष्ट किय शत्रु का पीछा किया। सन्तोप इस कारण अनुभव होता है कि आवश्यकता पडने पर हुमायू एक उच्च कोटि के विजेता का गुण भी प्रदर्शित कर सकता था।

चम्पानीर स एक छोटी सेना के साथ वहादुर शाह का पीछा करना हम हुमायू का दुस्साहस भी कह सकत ह। विशेपत जव यह स्पष्ट था कि बहादुर शाह गुजरात म जनप्रिय था और मुगल विरोधी भावनाए उग्र होती जा रही थी।

इसक अतिरिक्त चम्पानीर के दुग को विना अधिकार मे किये हुए आग वढना कहा तक उचित था, इसम सदेह किया जा सकता है। यदि वहादुर न हुमायू पर दो तरफ स आक्रमण कर दिया होता तो कठिन परिस्थिति उपस्थित हो सकती थी। हुमायू के सौभाग्य स इस तरह की घटना नही हुई और इस कारण हुमायू के पक्ष म हम यह कह सकत है कि उसन स्थिति का पूण अध्ययन कर लिया था।

के लिए कम्वे भेजा। इन लोगो न रूमी खा स उसके विश्वासघात की निदा की तथा प्रायश्चित् के लिए उसस कहा कि वह हुमायू का डियू पर आक्रमण करने से रोके। रूमी खा न हुमायू को यह कहकर समझाया कि समुद्री जलवायु उसक लिए हानिकर है तथा इस समय लौटना ही उपयुक्त ह। हुमायू न इस स्वीकार कर लिया, क्योकि इसी समय अहमदावाद म अशान्ति की सूचनाए आयी। अरविक हिस्ट्री, 1, पृ० 256 57, कामिस्सारियट, पृ० 357 358।

1 वनर्जी, हुमायू 1, पृ० 142।

वह जानता था कि गुजरातिया या बहादुर शाह म मुगलो का सामना करन की शक्ति नही है।

गवार तथा कोली जातियो का आक्रमण

हुमायू कम्बे म वहा के गवनर सैयिद शरीफ जिलानी क आतिथ्य का आनन्द ले रहा था। उसी समय बहादुर शाह के दो अधिकारी मलिक अहमद लाड तथा रुक्न दाऊद न हुमायू स बहादुर शाह का बदला लन का विचार किया। उन्होंने 'कोली तथा 'गवार जाति[1] क सरदारो स सहायता ली और रात्रि म मुगल खेम पर आक्रमण कर उस नष्ट करन की योजना बनायी। कम्बे की जनता मुगलो क विरुद्ध थी तथा पूरे गुजरात म मुगल विरोधी भावना विद्यमान थी। सयोग स हुमायू क कम्प म एक नौजवान था जिस कम्बे के निकट बन्दी बनाया गया था। उसकी मा को इस योजना की खबर लगी तो उस अपन पुत्र के प्राणो का भय हुआ (जो हुमायू क खेम म था)। उसन सूचना द्वारा अपन पुत्र की स्वतन्त्रता प्राप्त करन का विचार किया। प्रारम्भ म हुमायू क सनिको न बूढी स्त्री की बात का मजाक उडाया किन्तु अन्त मे व उस हुमायू के पास ले गय। बुढिया न रात्रि म मुगल सना पर छापे की योजना बतायी तथा अन्त म उसने कहा कि 'यदि मेरी बात झूठ निकल तो मेरी तथा मरे पुत्र की हत्या कर दी जाए।" हुमायू न बुढिया तथा उसके पुत्र पर पहरेदार नियुक्त किय तथा आक्रमण स रक्षा की पूण तयारी कर ली। दूसर दिन पाच छ हजार काली तथा गवार लोगो न हुमायू के खेम पर आक्रमण कर दिया। हुमायू की सना तयार थी और उसन इनका सामना किया। आक्रमणकारियो न बडी बहादुरी क साथ युद्ध किया। हुमायू की सना क कई प्रसिद्ध व्यक्ति इस सघष म काम आए। किन्तु आक्रमणकारी पराजित हुए। हुमायू न बुढिया तथा उसके पुत्र को स्वतन्त्र कर दिया।[2]

इस लूट म अबुल फजल क अनुसार बहुत सी अमूल्य पुस्तक भी नष्ट हुइ, इनम मुल्ला सुल्तान अली के हाथ का लिखा हुआ तथा उस्ताद बिहजाद द्वारा

---

1 इन जातियो के विषय म जानन के लिए दखिए बाम्बे गजेटियर, 9 भाग 1 पृ० 237 39, होदीवाला (स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री 1, पृ० 488) क अनुसार वास्तविक शब्द गवार है। डा० ईश्वरी प्रसाद (हुमायू 1 पृ० 77) का विचार है कि कोली तथा गवार जगली जाति के थे।

2 अकबरनामा, पृ० 136 गुलबदन हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 132, अबू तुराब, पृ० 20 21।

पश्चात इख्तियार खा दुगपति हुआ। उसन बहुत ही बहादुरी तथा हिम्मत क साथ दुग की रक्षा की। मुगला का सबस बडी कठिनाई यह थी कि प्रयत्न करन पर भी य पूण रूप स दुग म सामान पहुचन स नही रोक सकत थ। दुग क चारा तरफ जगल था। जिसक अन्दर प्रवश पाना सरल नहा था। इस कारण मुगल ताप सफलता नही प्राप्त कर सकती थी।

चार महीन क पश्चात एक दिन जगल म हुमायू को किसाना का एक दल मिला जो दुग म सामान पहुचाता था। इन्ह बन्दी बनाकर बुरी तरह पीटा गया। इन्होन दुग की दीवार क निकट के चार माग का पता बताया। हुमायू न दखा कि दुग की दीवार 60 स 80 फुट ऊची और इतनी सपाट थी कि उन पर चढना कठिन था। दूसरे दिन चादनी रात्रि म मुगला न दुग पर चढन का प्रयत्न किया। हुमायू न दुग पर बाहर स आक्रमण करन का एसा दिखावा प्रकट किया, जिसस दुग क अन्दर क लोगो को भय न हो। साथ ही उसने सत्तर-अस्सी मोटा कीलें तयार करायी। य कील दुग की दीवार म एक-दूसर के ऊपर ठाकी गयी और इस तरह मुगल इस लोह की साढी की सहायता स ऊपर पहुच। 39 आदमियो क ऊपर पहुचन क बाद बराम खा तथा उसक पश्चात् हुमायू ऊपर पहुचा।[1] इस तरह लगभग 300 आदमी प्रात होते-होते दुग की दीवार पर चढ गय और उन्होने दुग क द्वार पर अधिकार कर लिया, जिसस सुविधा स मुगल दुग म प्रवश कर सके। इख्तियार खा न सघष असम्भव दखकर दूसर दिन दुग का समपण कर दिया।[3] हुमायू न उसके साथ अच्छा व्यवहार किया किन्तु शत्रु क अन्य सनिको के

गयी। इस मुल्ला (अथात इख्तियार खा) म इतनी शक्ति कहा कि वह किले की रक्षा कर सक।'' (बेले, गुजरात, पृ० 390 92)। अरबिक हिस्ट्री आफ गुजरात का लेखक भी इसका समथन करता है (अरेबिक हिस्ट्री, पृ० 235)।

1 अकबरनामा, 1, पृ० 137।

2 अबुल फजल इख्तियार खा की योग्यता की प्रशसा करता है। वह लिखता है कि वह शासन की योग्यता के साथ-साथ ज्ञान विज्ञान, विशष रूप स गणित एव ज्योतिष मे निपुण था तथा कविता भी करता था। अकबरनामा, 1, पृ० 138।

3 चम्पानीर दुग को अधिकृत करने की तिथि म समकालीन इतिहासकारो मे मतभेद है। अबुल फजल के अनुसार चम्पानीर का पतन सफर महीने के पहले सप्ताह मे बदायूनी के अनुसार 9 सफर को तथा अबू तुराब के अनुसार 6 सफर को हुआ। (अबू तुराब, पृ० 24, अकबरनामा 1, पृ०

साथ कठोर व्यवहार किया गया।

चम्पानीर के दुर्ग में बहादुर शाह तथा उसके वंश का राजकोष संचित था। जल्दी से भागने के कारण बहादुर शाह इसे न ले जा सका था। हुमायूं को यह सब कोष प्राप्त हुआ।[1] सम्राट ने प्रसन्नता में सोना चांदी तथा जवाहरात ढालों में भरकर मुगल अमीर तथा सैनिकों में बांट दिये।

कुछ मुगल सैनिकों की दक्षिण-विजय की योजना

धन प्राप्त कर हुमायूं तथा उसके अमीरों को संतोष हुआ तथा वे देवराय तालाब के तट पर अपनी विजयों के पश्चात आराम कर रहे थे। इसी समय एक दिन सम्राट के कुछ निम्न कर्मचारी जैसे किताबदार (पुस्तकालय का प्रबंध करने वाले), सिलहदार (अस्त्र शस्त्र का प्रबंध करने वाले), दावातदार (लेखन सामग्री की व्यवस्था करने वाले), इत्यादि शराब के नशे में शेख शरफुद्दीन यज्दी कृत जफरनामा पढ़ रहे थे। इसमें हजरत साहब किरानी की प्रारम्भिक विजयों का वर्णन था। वे चालीस निष्ठावानों के साथ रहते थे। उन्होंने इन्हें एकता का महत्व समझाया।[2] तथा कहा कि यदि चालीसों व्यक्ति संगठित रहें तो विजय सदा उनकी होगी। इन मुगल कर्मचारियों ने अपनी संख्या गिनी तथा यह जानकर कि ये 400 हैं अर्थात उनकी शक्ति चालीस की शक्ति से दस गुनी है उन्होंने

138) अबुल फजल लिखता है कि उसकी तिथि अव्वल हफ्तय माह सफर के अक्षरों से निकलती है। इसके अनुसार वह तिथि 943 हिजरी सफर माह के पहले हफ्ते (20 से 27 जुलाई 1536 ई०) के बीच पड़ती है।

1 जौहर लिखता है कि सुल्तान बहादुर शाह के कोष का पता नहीं चल रहा था। आलम खां नामक बहादुर शाह के एक विश्वसनीय अमीर से, जो पुनः मुगल अमीर बन गया था, इसका पता था। बात निकलवाने के लिए उसे शराब पिलायी गयी। शराब के नशे में उसने वह हौज तथा कुएं बताये जहां से बहादुर शाह के पूर्वजों द्वारा जमा किया गया कोष प्राप्त हुआ। गुजरात के सुल्तान सोना तथा चांदी पिघलाकर कुएं में डालते जाते थे। (जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 6-7)।

2 एक दिन हजरत साहब किरानी ने अपने 400 साथियों से प्रत्येक को दो-दो बाण लिये और उन्हें एक में बांधकर उन्हें तोड़ने के लिए कहा, पर प्रयत्न करने पर भी वे उन्हें नहीं तोड़ सके। फिर उसने बंडल को खोल दिया और प्रत्येक को दो-दो बाण दिये। इसे उन लोगों ने तोड़ दिया। किरानी ने उन्हें समझाया कि यदि उनमें एकता होगी तो वे जहां भी जाएंगे उनका कोई सामना नहीं कर सकता और उन्हें सफलता प्राप्त होगी। (अकबरनामा, 1, पृ० 139)।

दक्षिण विजय की योजना बनायी तथा तत्काल अभियान के लिए रवाना हो गय।[1]

हुमायू उनके इस मूर्खतापूर्ण अभियान से बहुत नाराज हुआ। उन्होंने आक्रमण की आज्ञा नही ली थी। इन चार सौ व्यक्तियो की दक्षिण पर अधिकार करने की महत्वाकाक्षा असभव थी। इस तरह के कार्यों को प्रश्रय देने से अनुशासनहीनता को प्रोत्साहन मिलता तथा मुगल सेना के यश को बडा धक्का लगता।

दूसरे दिन प्रात हुमायू को इन आदमियो के भागने की सूचना मिली। उन का पीछा करने के लिए तत्काल एक सेना भेजी गयी और उन्हे बदी बनाकर हुमायू के समाने पेश किया गया। उस दिन मगलवार था और हुमायू लाल रग का वस्त्र पहने हुए फौजदारी का न्याय कर रहा था। उनके व्यवहार से क्रोधित होकर सम्राट ने उन्हे कठोर दड दिया। कुछ कत्ल कर दिये गय, कुछ हाथी के पावो के नीचे दबा दिये गय और बहुत से व्यक्तियो के नाक, कान तथा हाथ-पाव काट दिये गय।[2]

उसी दिन सध्या को नमाज के समय इमाम ने फील (अलम तरा कफ या सूरये फील) नामक कुरान का सूरा पढा। इसमे मुहम्मद साहब के जन्म के वर्ष (571 ई०) यमन के बादशाह, अबरहा के हाथियो की एक सेना द्वारा मक्का पर आक्रमण करने तथा ईश्वर के आदेश से पक्षियो द्वारा ककडियो से उन्हे मार भगाने के वर्णन के पश्चात् लिखा है, हे रसूल, क्या तुमने नही देखा कि तुम्हारे ईश्वर ने हाथी वालो के साथ क्या किया? क्या उसने उनकी समस्त योजनाओ का खण्डन नही कर दिया?

हुमायू को ऐसा प्रतीत हुआ कि इमाम ने उसके दण्ड को ध्यान मे रखकर इस विशेष सूरा को पढा है। क्रोधित होकर उसने इमाम को हाथी के नीचे दबा देने की आज्ञा दी। मौलाना मुहम्मद फरगली ने इमाम को बचाने का प्रयत्न किया, किन्तु इसका कोई परिणाम नही हुआ तथा बेचारे इमाम की हत्या कर दी गयी। क्रोध शान्त होने पर हुमायू को इमाम को इतना कठोर दण्ड देने से दुख हुआ। अबुल फजल लिखता है कि हुमायू रात भर रोता तथा विलाप करता रहा।[3]

इन मूर्खों को दण्ड देना तो आवश्यक था, किन्तु हुमायू ने जिस कठोरता से उनके साथ व्यवहार किया वह न्यायसगत नही कहा जा सकता। उसे यह अनुभव करना चाहिए था कि वह एक नये विजय किये हुए स्थान मे था जहा अपने सैनिको

1 अकबरनामा 1, पृ० 139।

2 वही।

3 वही, पृ० 140।

की मूखता तथा अपनी क्रूरता का प्रदशन करना ठीक नही था। इमाम के प्रति उसका व्यवहार पूण रूप से बबर था। हुमायू ने दूरदर्शिता से काम नही लिया।[1]

चम्पानीर विजय की प्रतिक्रिया

चम्पानीर विजय से हुमायू को असख्य धन प्राप्त हुआ। दानी पिता का पुत्र होने के नाते उसन अमीरो तथा सैनिको को उनकी प्रतिष्ठानुसार जितना भी सोना, चादी या जवाहरात उनकी ढाल पर आ सकते थे, उन्हे दिये। अपनी विजय के उपलक्ष्य मे उसन चम्पानीर से अपने नाम के चादी तथा ताबे के सिक्के प्रसारित किय।[2] अबुल फजल लिखता है कि चम्पानीर की विजय तथा अपार धन सम्पत्ति की प्राप्ति के कारण हुमायू शाहाना जश्न मे व्यस्त रहता था तथा भोगविलास की महफिलें आयोजित किया करता था।[3] चम्पानीर के कोप तथा गुजरात की विजय मे जो लाभ प्राप्त हो सकता था उसका उपयोग वह न कर सका। इस तरह उसने समय नष्ट किया।

डॉ० बनर्जी न उसके चम्पानीर मे रुके रहने का समथन किया है। उनका मत है कि दस माह के अन्दर उसने मध्य गुजरात तथा मालवा पर अधिकार कर लिया था। बहादुर शाह गुजरात से बाहर भागकर डियू चला गया था। इस परिस्थिति मे हुमायू कुछ दिन रुककर जीते हुए प्रदेशो मे एक सुदढ शासन प्रबन्ध स्थापित करना चाहता था, जिससे उसे जनता का विश्वास प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त चम्पानीर मे प्राप्त कोप हुमायू अपने सहायको म वितरित करना चाहता था। इसी के साथ-साथ विद्वान् लेखक लिखते हैं कि प्राप्त धन ने उसे अभियानो के प्रति उदासीन बना दिया।[4]

---

1 "Humayun who was never a statesman inflicted sanguinary punishments on that pseudo-adventurers" (बनर्जी, हुमायू, 1, प० 148)। असकिन ने भी इसकी निन्दा की है (भाग 2, प० 69)।

2 कॉम्मिस्सारियट, प० 360 61। लाहौर म्यूजियम मे एक सिक्का है। जिसके एक तरफ 'चम्पानीर की विजय 942 हि०' तथा दूसरी तरफ 'शहर मुकरम मे निर्मित' अकित है। उसी वप के दूसरे सिक्के पर चम्पानीर का नाम 'शहर अल जमा' अकित है। टेलर, दि क्वायन्स आफ गुजरात सल्तनत, J B B R A S 1903, XXI, पृ० 317-18 अकित है।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 138।

4 बनर्जी, हुमायू, 1, प० 140।

डा० बनर्जी एक तरफ तो यह कहते हैं कि हुमायूं के रुकने का कारण शासन प्रबन्ध करना था दूसरी तरफ वे लिखते हैं कि चम्पानीर में प्राप्त धन के परिणाम स्वरूप उसके मन में अभियानों से विरक्ति आ गयी थी। ये दोनों परस्पर विरोधी तर्क हैं। अबुल फजल के वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि हुमायूं भोग विलास में व्यस्त था तथा उसने उचित शासन प्रबन्ध करने में रुचि प्रदर्शित नहीं की। यह लिखने के बाद कि हुमायूं चम्पानीर में धन प्राप्त करने के पश्चात् शाहाना जश्न में व्यस्त रहता था, अबुल फजल का शासन सम्बन्धी यह विचार रखना कि 'शासक को, यदि वह व्यस्त रहे तो, कुछ व्यक्तियों को नियुक्त करना चाहिए जो राजकीय कर्मचारियों तथा उमराओं पर दृष्टि रख सकें,'[1] स्पष्ट करता है कि अबुल फजल का इशारा हुमायूं की तरफ है। असकिन का यह मत सही है कि चम्पानीर की विजय के पश्चात् हुमायूं आमोदोत्सव में लगा रहा तथा उसने शासन के कार्यों में दिलचस्पी नहीं ली।[2]

हुमायूं अपने आनन्दोत्सव में इतना व्यस्त था कि उसने लगान वसूल करने का कोई प्रबन्ध नहीं किया।[3] गुजरात की जनता इससे प्रसन्न नहीं हुई और जमींदारों तथा प्रजा का एक प्रतिनिधि मंडल बहादुर शाह से डियू में मिला तथा इसने सुल्तान से उस वर्ष का लगान वसूल करने के लिए किसी को नियुक्त करने की प्रार्थना की। बहादुर शाह ने अपने अमीरों से प्रस्ताव किया कि कोई व्यक्ति जाकर राजस्व वसूल करे। प्रारम्भ में कोई भी अमीर इस कठिन कार्य के लिए तैयार नहीं था। अन्त में इमादुल मुल्क ने निवेदन किया कि "मैं इस सेवा को स्वीकार करूंगा किन्तु शर्त यह है कि मुझे आवश्यकतानुसार धन व्यय करने का अधिकार प्रदान किया जाए। लोगों को एकत्र करने में जो धन व्यय हो उसका हिसाब मुझसे न मांगा जाए। जो कुछ धन इस व्यय के उपरान्त बचेगा, वह सुल्तान के खजाने में निस्सन्देह भेज दिया जाएगा।' सुल्तान ने इसे स्वीकार कर लिया तथा आज्ञापत्र दे दिया।[4] इसके अतिरिक्त इमादुल मुल्क के कहने पर बहादुर शाह ने अपनी मुहर लगाकर कुछ सादे कागज भी दे दिये जिस पर वह (इमादुल मुल्क) जिसे चाहे जागीर दे सकता था। इस तरह बहादुर शाह का पूर्ण प्रतिनिधि बनकर

1 अकबरनामा 1, पृ० 138 39।

2 असकिन, 2, पृ० 67, ईश्वरी प्रसाद, हुमायूं, पृ० 80, तथा काम्मिस्सा-रियट, पृ० 364 का भी यही मत है।

3 काम्मिस्सारियट, पृ० 366।

4 अबू तुराब, पृ० 26 27।

इमादुल मुल्क बहुत थाडे सनिका के साथ रवाना हुआ।[1] गुजराती जनता ने जिस निष्ठा स लगान वसूल करन के लिए बहादुर शाह को आमन्त्रित किया, ऐसे उदाहरण इतिहास म बहुत कम मिलेंगे। इससे जनता की सच्चाई, बहादुर शाह के प्रति उनकी भक्ति तथा जनता म मुगला की अप्रियता स्पष्ट हा जाती है। बहादुर शाह को जा अमीर आमन्त्रित करन गय थ उनम अधिकतर हिन्दू थे, जिससे यह प्रकट होना है कि बहादुर शाह हिन्दू तथा मुसलमान सभी को प्रिय था।

इमादुल मुल्क की प्रगति इतनी उत्साहवधक थी कि अहमदाबाद पहुचत-पहुचत उसकी सना की सख्या 10,000 हो गयी। माग म राजस्व वसूल करने के लिए कमचारियो को नियुक्त करता हुआ वह आग बढता गया। अहमदाबाद म जूनागढ का हाकिम मुजाहिद खा 10,000 अश्वारोहिया के साथ उसस आ मिला।[2] जिस समय वह वेतवा पहुचा उसके पास 50,000 अश्वारोहिया की सना एकत्र हा चुकी थी।[3] बहादुर शाह न भी पुतगालियो से 500 योरोपीय सनिक लेकर इमादुल मुल्क की सहायता के लिए भेजे।[4]

इमादुल मुल्क की पराजय

इमादुल मुल्क के सैन्य सगठन तथा गतिविधि से मुगला का स्वप्न टूटा।

---

1 अबू तुराब (प० 26-27) के अनुसार 70, अबुल फजल, अकबरनामा, 1, (प० 137-38) के अनुसार 200 अश्वारोही।

2 अबुल फजल (अकबरनामा 1, प० 138) के अनुसार जिस किसी के पास भी दो घाडे थे वह उस एक लाख गुजराती टनक देता था। अबुल फजल के इस कथन मे अतिशयोक्ति प्रतीत होती है। इससे हम केवल यही अनुमान लगा सकत है कि इमादुल मुल्क ने पानी की तरह धन बहाया।

3 अरेबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात, 1, प० 257 58 के अनुसार उसकी सेना 30,000 तथा अबू तुराब के अनुसार (पृ० 27) 50,000 हो गयी। अबुल फजल लिखता है कि उसकी सेना मे 30,000 अश्वारोही अल्प समय म इकट्ठे हो गये। पुन वह लिखता है कि मुजाहिद खा 10,000 अश्वारोहियो के साथ आ मिला (अकबरनामा, 1, प० 138)। इसस 50 000 की सख्या अधिक सम्भव प्रतीत होती है। निजामुद्दीन के अनुसार 50,000 सेना एकत्र हुई (तबकात अकबरी, डे, 2, प० 56)। फिरिश्ता (ब्रिग्स, 2, पृ० 80) इसका समथन करता है।

4 ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, प० 81)

चम्पानीर क दुग म तरदी वग को नियुक्त कर हुमायू अहमदाबाद की ओर बढ़ा, जो गुजराती राष्ट्रवादियों का केन्द्र बन रहा था। निजामुद्दीन अहमद लिखता है कि चम्पानीर छोडने के पूव उसने गुजरात की लूट म प्राप्त धन पुन सैनिको में वितरित किया।[1] महेन्द्री नदी के तट पर पहुचकर हुमायू वहा ठहरा रहा। इमादुल मुल्क तो तैयार हो था। वह युद्ध के लिए आगे बढ़ा। प्रथम संघष अस्करी की सेना से, जो मुगल सेना का अग्रगामी दल था, नरियाद कस्बे तथा महमूदाबाद के बीच म हुआ।[2] मुगल सेना का अग्रणी दल पराजित हुआ तथा निकट के थूहड के वृक्षो के पीछे छिप गया।[3] गुजराती सेना लूटपाट म लग गयी। इस बीच मिर्जा

---

1 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 57।

2 यह युद्ध महमूदाबाद तथा नरियाद क बीच हुआ। डॉ० बनर्जी ने इस युद्ध का नाम महमूदाबाद युद्ध दिया है (हुमायू, 1, पृ० 152 तथा फुटनोट 2)। वे लिखते हैं कि फिरिश्ता ने यह नाम दिया है। फिरिश्ता इस युद्ध को महमूदाबाद के निकट लिखता है। (फिरिश्ता, पृ० 215, ब्रिग्स, 2, पृ० 80) न कि महमूदाबाद म। अबुल फजल (अकबरनामा, 1, पृ० 140) इसे नरियाद कस्बे तथा महमूदाबाद के बीच बतलाता है। निजामुद्दीन भी इसे महमूदाबाद के निकट लिखता है। (तबकात अकबरी, डे 2, पृ० 57)।

3 इस युद्ध की घटनाओ के विषय म समकालीन इतिहासकारो म मतभेद है। अबुल फजल (अकबरनामा, 1, पृ० 140) के अनुसार अस्करी की पराजय होने वाली थी कि यादगार नासिर मिर्जा इत्यादि पहुच गये। फिरिश्ता (ब्रिग्स, 2 पृ० 80) के अनुसार इमादुल मुल्क अस्करी द्वारा पराजित हुआ। निजामुद्दीन अहमद का पिता उस समय अस्करी का वजीर था। उसने इस युद्ध का वणन अपने पिता की सूचना पर किया है। वह लिखता है कि मुगल सेना का अग्रगामी दल अस्करी के नेतत्व म आगे बढा। इमादुल मुल्क की सेना पराजित हुई। हवा बडी गरम थी। उसी समय गुजराती सेना बडी तेजी से आगे बढी। अस्करी अपनी सेना सुव्यवस्थित नहीं कर सका तथा कुछ दूर झाडी की आड म छिप गया। गुजरात वाले लूट मार में व्यस्त हो गये। अस्करी झाडी से बाहर निकला। गुजराती पराजित हुए। (तबकात अक्बरी, डे, 2, पृ० 57 58)। अबू तुराब (तारीखे गुजरात, पृ० 27 28) के अनुसार अस्करी युद्ध न कर सका तथा नवधारा के थूहड के वृक्षो के पीछे चला गया। इमादुल मुल्क की सेना लूटपाट म लग गयी। इसी समय हुमायू की अन्य सेना कासिम हुसेन खा और हिन्दू बेग के नेतत्व म पहुच गयी। अस्करी मिर्जा भी अपनी सेना इकट्ठी कर आ गया। भीषण युद्ध हुआ जिसम गुजराती पराजित हुए।

नियुक्त किया गया तथा उसे अहमदाबाद को अपन शासन का क द्र बनान का आदेश हुआ। उसकी सहायता के लिए हिंदू बेग को 5,000 घुडसवारा क साथ सेनापति नियुक्त किया गया। उस आ ा हुई कि जिस स्थान पर भा कुमुक की आवश्यकता हो मुगल वाइसराय के परामश से वह वहा पहुच जाए।[1]

गुजरात का राज्य पाच भागा म विभाजित कर दिया गया तथा प्रत्य भाग के शासन का उत्तरदायित्व एक-एक अमीर को दिया गया। इस तरह यादगार नासिर को पाटन, कासिम हुसेन सुल्तान को भडोच, नवसारी तथा सूरत, दोस्त इशाक बेग आका को कैम्बे एव बडोदा, मीर बूचका बहादुर को महमूदाबाद, तथा तरदी बेग को चम्पानीर म नियुक्त किया गया।[2] य सभी वाइसराय क प्रति उत्तरदायी थे।

हुमायू ने गुजरात के शासन प्रब ध म योग्यता नही दिखायी। कुछ प्रमुख अमीरा को नियुक्त करन के अतिरिक्त उसन और काई ठास काय नहा किया। गुजरात म कोई खालसा भूमि नही निकाली गयी जिससे उस स्थायी आय होती रहती। अस्करी तथा उसके अधीन भि न भिन्न भागा के शासका म पारस्परिक सम्ब ध भी बहुत स्पष्ट नही था। इस तरह जीत हुए भागा को अधीन रखने के लिए कुछ व्यक्तियो को नियुक्त करने के अतिरिक्त उसका प्रब ध शून्य-सा प्रतीत

राज्य को तलवार की शक्ति स विजय किया है, उस नष्ट नही करना चाहिए। इस राज्य को सुव्यवस्थित करना और इसकी शासन-व्यवस्था को दिल्ली के अधीन करनी चाहिए।"

1 अकबरनामा, 1, पृ० 141।

2 वही, समकालीन इतिहासकारा मे शासन प्रब ध सम्ब धी नियुक्तिया मे मत भिन्नता है। अरबिक हिस्ट्री (भाग 1, पृ० 258) के अनुसार अहमदाबाद मे मिर्जा हिन्दाल, अस्करी तथा हिंदू बेग, नहरवाला पाटन मे यादगार नासिर मिर्जा, भडौच, सूरत एव नवसारी म कासिम हुसेन खा को तथा चम्पानीर मे तरदी बेग को नियुक्त किया गया। मिरात सिकन्दरी के अनुसार हुमायू ने अस्करी को अहमदाबाद, कासिम बेग को भडौच, यादगार नसिर मिर्जा को पाटन तथा बाबा बेग जलेर को चम्पानीर मे नियुक्त किया (वेल, गुजरात, प० 392 93)। निजामुद्दीन अहमद के अनुसार अहमदाबाद मे मिर्जा अस्करी को, नेहरवाला पाटन म मिर्जा यादगार नासिर को, भडौच हिंदू बेग को, चम्पानीर तरदी बेग को तथा बडौदा कासलम हुसेन सुल्तान को दिया गया।(तबकाते अकबरी, डे, ? प० 58)। अबुल फजल का वणन अधिक प्रमाणित है तथा उसे ही स्वीकार किया गया है। दखिए, काम्मिस्सारियट, पृ० 368।

होता है।

गुजरात का प्रबन्ध करने के पश्चात् बहादुर शाह को अन्तिम रूप मे परास्त करने के विचार से हुमायू डियू की तरफ बढा। वह अहमदाबाद से 30 मील की दूरी पर स्थिति धन्दुका नामक स्थान तक पहुच गया, किन्तु इसी समय उस मुगल साम्राज्य स कुछ ऐसी घटनाओ का समाचार प्राप्त हुआ जिससे उसे यह विचार त्यागना पडा।

हुमायू की अनुपस्थिति मे उसके उत्तरी साम्राज्य की स्थिति

हुमायू की मालवा तथा गुजरात म लम्बी अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप उसके साम्राज्य के शासन मे ढीलापन आ गया। कई स्थाना पर विद्राह प्रारम्भ हो गया तथा उसके कमचारियो के लिए वहा शान्ति तथा सुव्यवस्था बनाय रखना कठिन हो गया। मुहम्मद सुल्तान मिर्जा अपने दो पुत्रा के साथ मुगल साम्राज्य के पूर्वी भागा मे अराजकता फलाने का प्रयत्न कर रहा था तथा उसने कन्नौज स जौनपुर तक के भागा पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।[1] आगरा के निकट तथा दोआब मे भी इसकी प्रतिक्रिया हुई तथा यहा से भी विद्रोह की सूचनाए मिली। शेर खा की गतिविधि सशकित करने वाली थी। मालवा के दो अफगान अमीर सिकन्दर खा तथा मल्लू खा ने नमदा नदी के निकट हिन्दिया के भूभाग म विद्रोह कर दिया और वहा के जागीरदार मेहतर जम्बूर को भागकर उज्जैन म शरण लेनी पडी। इस प्रदेश मे नियुक्त मुगल सैनिका न भी भागकर यहा शरण ली। दरवश अली किताबदार ने बहादुरी से दुग की रक्षा करन का प्रयत्न किया, किन्तु वह दुग की रक्षा करते समय मारा गया, जिससे अन्य रक्षका का बडी निराशा हुई तथा उन्होने दुग को समर्पित कर दिया।[2]

गुजरात से माडू

उपयुक्त परिस्थितिया ने हुमायू को चिन्तित कर दिया। बहादुर शाह का पीछा करना छोडकर उसने किसी केन्द्रीय स्थान से अपने साम्राज्य पर दष्टि रखन का निश्चय किया। कैम्बे, बडोदा, सूरत, नन्दावर, असीर गढ होता हुआ हुमायू बुरहानपुर पहुचा। यहा वह एक सप्ताह रहा।[3] उसकी उपस्थिति न दक्षिण के

---

1 इश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 82।

2 अक्बरनामा, 1, प० 141-42।

3 वही, पृ० 142, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० ।

राज्यो को सावधान कर दिया। गुजरात की विजय से उन्हे भय हुआ कि हुमायू अपनी साम्राज्यवादी नीति का प्रसार दक्कन मे भी करना चाहता है। इस परिस्थिति मे बुरहान निजाम शाह, इमाद शाह तथा दक्कन के अन्य शासको ने आत्मसमर्पण के पत्र लिखकर उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।[1] हुमायू को उनके समर्पण से कदाचित आश्चर्य हुआ किन्तु उसे सन्तोष तथा प्रसन्नता हुई, क्योकि उसके साम्राज्य के पूर्वी भाग के समाचार अच्छे नही थे। यहा से हुमायू माडू चला गया। यह स्थान उसे इतना प्रिय लगा कि वह यहा कई महीने रुका रहा तथा उसने इसे साम्राज्य का अस्थायी केन्द्र बना दिया।[2]

यहा से वह मिर्जाओ तथा आगरा पर दृष्टि रख सकता था। बहादुर शाह डियू मे था। मालवा के विद्रोही भाग गये। रणथम्भौर, चित्तौड तथा अजमेर बहादुर के कर्मचारियो के अधीन थे। सूरत रूमी खा सफर के अधीन था। काठियावाड के लोग अब भी बहादुर शाह को ही अपना स्वामी समझते थे। बहादुर शाह शेर खा को मुगलो के विरुद्ध प्रोत्साहित कर रहा था। इन सब कठिनाइयो पर दृष्टि रखने के लिए माडू हुमायू को अधिक उपयुक्त प्रतीत हुआ।

उसी समय इतिहासकार ख्वान्दमीर का देहान्त हो गया। उसकी लाश दिल्ली ले जाकर शेख निजामुद्दीन औलिया एव अमीर खुसरो के रोजे के समीप दफनायी गयी।[3]

गुजरात मे मुक्ति आन्दोलन

हुमायू के गुजरात छोडने के तीन महीने तक गुजरात मे शान्ति रही। साथ ही मालवा तक मुगल साम्राज्य की स्थिति मे सुधार हुआ। सिकन्दर खा सतवास तथा मल्लू खा ने उज्जैन तथा हिन्दिया त्याग दिया, बुरहानुल मुल्क बानियानी रणथम्भौर से भगा दिया गया तथा दरिया खा और मुहाफिज खा रायसीन से हटा दिये गये। मिर्जा हिन्दाल ने मिर्जाओ को हराकर उन्हे जौनपुर की तरफ भगा दिया। शेर खा की प्रगति नगण्य थी।

इन तीन महीनो मे मुगल गुजरात मे अपनी योग्यता प्रदर्शित कर सकते थे। दुर्भाग्यवश उन्होने कोई भी रचनात्मक कार्य नही किया जिससे गुजरात के भिन्न-भिन्न भागो से विद्रोह के समाचार आने लगे। यदि अस्करी ने अच्छे शासक की

---

1 फिरिश्ता ब्रिग्स, 2 पृ० 80 81।

2 अकबरनामा, 1 पृ० 142।

3 फिरिश्ता ब्रिग्स, 2, पृ० 81।

योग्यता दिखायी होती और मुगल अमीरा को अपने मे मिलाकर उसने गुजरात म एक शक्तिशाली शासन की नीव डाली होती तो मुगल साम्राज्य की रक्षा हो सकती थी। दुर्भाग्यवश अस्करी न अपना समय दावतो मे बरबाद किया और उसी के साथ अमीरा न भी उसका अनुकरण किया। साथ ही गुजरात के मुगल अमीरो को अस्करी पर न तो विश्वास था और न उनम एकता थी। इसके परिणामस्वरूप व गुजरात के विद्रोह का सामना न कर सके।

गुजरात मे मुगला न अपने व्यवहार से यह स्पस्ट कर दिया था कि वे विदेशी हैं और गुजरातिया के प्रति उनके हृदय म कोई भी दया तथा ममता नही है। माडू तथा चम्पानीर के दुर्गों म जो हत्याकाड मुगला न किये थे उन्हे गुजरात की जनता अभी भूली नही थी। इसके अतिरिक्त बहादुर शाह गुजरात का जनप्रिय शासक था। पराजय के पश्चात मुगला के दुर्व्यवहार से जनसाधारण के हृदय मे उसके प्रति और भी ममता जाग उठी थी। ऐसी परिस्थिति म गुजरात की जनता बहादुर शाह के साथ थी। स्वय बहादुर शाह गुजरात के निकट डियू के द्वीप मे था। सूरत का गढ उसके अधिकार म था तथा उसके पास एक जहाजी बेडा था जो उसके निकट के समुद्र म चक्कर लगाया करता था। इस तरह बहादुर शाह कभी भी गुजरात पर आक्रमण कर सकता था तथा मुगला स असन्तुष्ट जनता का नतत्व कर सकता था।

मुगल विरोधी प्रथम विद्रोह नवसारी म हुआ। सुल्तान बहादुर शाह का एक अमीर नूरुद्दीन खानजहा शिराजी उसे छोडकर हुमायू से जा मिला था। हुमायू ने उस सूरत का सेनापति नियुक्त किया था। इसका पद हिन्दू बेग के अधीन था। उसने अपन नय स्वामी को छोडकर पुन बहादुर शाह का पक्ष ग्रहण कर लिया। उसने अबदुल्ला खा ऊजबेक पर आक्रमण कर उसे परास्त कर दिया।[1] तथा नवसारी पर अधिकार कर लिया। अबदुल्ला खा यहा स भागकर भडौच चला गया। विद्रोहियो ने रूमी खा सफर[2] क सहयाग मे सूरत पर भी अधिकार कर लिया। खानजहा न स्थल माग से तथा रूमी खा ने समुद्र के मार्ग से भडाच पर आक्रमण किया। इस पर कासिम हुसेन खा[3] के हाथ-पाव फूल गये। वह भागकर चम्पानीर चला गया।

---

1 अबू तुराब, पृ० 29, अकबरनामा, 1, प० 142 43, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 58।

2 यह रूमी खा सफर सूरत के दुग का निर्माता था तथा तोपची रूमी खा से भिन्न था।

3 कासिम हुसेन सुल्तान, सुल्तान हुसेन बाइकरा के वश का था तथा हुमायू का सम्बन्धी था। खानवा के युद्ध म उसने प्रमुख अग का नेतत्व किया

वहा से पुन भागकर वह अहमदाबाद गया। एक गुजराती अमीर सैयिद इसहाक ने, जिस सुल्तान बहादुर ने शिताब खा की उपाधि दी थी, कैम्बे पर अधिकार कर लिया। मलिक सयिद अहमद लाद ने दोस्त इशाक बेग आका को बडौदा से भगाकर उस पर अधिकार कर लिया।[1]

उत्तरी गुजरात म मुगल विरोधी आदोलन ने जोर पकडा। अस्करी ने यादगार नासिर मिर्जा को परामश के लिए पाटन बुलाया। अबू तुराब 'तारीखे गुजरात' में लिखता है कि अस्करी ने उसके पास यह सन्देश भेजा था कि गुजराती लोग पाटन के समीप पहुच गय है, अत यह उचित होगा कि वह अहमदाबाद की ओर रवाना हो ताकि सब लोग मिलकर युद्ध करें। मिर्जा नासिर पाटन नही छोडना चाहता था, किन्तु अस्करी ने उसको लिखा कि यदि वह उसकी बात नही मानेगा तो वह बादशाह का विद्रोही समझा जाएगा। विवश होकर यादगार नासिर को अहमदाबाद जाना पडा।[2] मूखतावश वह अपनी सेना भी साथ लेता गया। सुल्तान बहादुर के दो अमीर, दरिया खा तथा मुहाफिज खा, सुल्तान से मिलने डियू जा रहे थे। माग मे पाटन को अरक्षित पाकर उन्होने उस पर अधिकार कर लिया।[3] गुजरातियो के विद्रोह तथा मुगलो के पलायन की परिस्थिति इस सीमा तक पहुची कि मुगलो के पास गुजरात और मालवा मे केवल तीन प्रमुख स्थान (अहमदाबाद, चम्पानीर तथा माडू) ही रह गय।

मुगलो की स्थिति

अस्करी अपने स्वभाव, व्यवहार तथा योग्यता स न मुगल अमीरो को प्रसन्न कर सका न गुजरात की जनता को। वह अपने वाइसराय के पद का अधिक महत्त्व देना चाहता था तथा गुजरात के सभी मुगल अमीरो को अपने अधीन समझता था। इसके विपरीत मुगल अमीर उसे अपनी ही तरह एक अमीर समझते थे तथा उनम से कुछ जो हुमायू के अधिक विश्वासपात्र थे अस्करी से सावधान थे तथा वे प्रमुख आज्ञाए हुमायू से प्राप्त करना चाहते थे। इस तरह मुगल अमीरो म

था। बाद मे बाबर ने उसे बदायू का गवनर नियुक्त किया। (बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 159)।

1 अबू तुराब, पृ० 21, तबकाते अकबरी डे 2, पृ० 58-59, अकबरनामा, पृ० 143।

2 अबू तुराब पृ० 29।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 143।

न पारस्परिक सद्भावना थी और न अस्करी यह भावना उत्पन्न करने म सफल हुआ।

गुजराती मुक्ति आन्दोलन के प्रसार ने सभी मुगल सनिका को सतक कर दिया। अस्करी तथा हिन्दू बेग वारवार हुमाय के पास माडू सदेश भेज रहे थे तथा उससे सहायता और निश्चित आदेश चाहते थे। दुर्भाग्यवश हुमायू ने उन्ह कोई उत्तर नही दिया इसस उन्ह निराशा हुई। इस परिस्थिति म हिन्दू बेग ने अस्करी को यह सुझाव दिया कि वह अपने नाम से खुत्वा पढे, सिक्के चलाये तथा गुजरात का स्वतन्त्र शासक बन जाए।[1] अस्करी ने प्रारम्भ म यह विचार अस्वीकार कर दिया, किन्तु उसके मन स यह बात निकली नही जसा कि अस्करी की एक दावत से स्पष्ट हो जाता है।

अस्करी की दावत

एक दिन सध्या के समय जब अस्करी अपने मित्रो के साथ बैठकर शराब पी रहा था उसन शराब के नशे म कहा कि वह इश्वर का प्रतिरूप है। गजनफर ने जो उसका दूध भाई था, मजाक मे कहा कि "आप है, किन्तु इस समय शराब क नशे म ह।" जितन लोग निकट थे वे सभी हस पडे। अस्करी कुछ दूरी पर था इसस यह मजाक नही सुन सका। जब उसे यह मजाक बताया गया तो वह बहुत क्रोधित हुआ और उसन गजनफर को बन्दीगृह म बन्द कर दिया। गजनफर वहा से अपन 300 साथियो के साथ भागकर वहादुर शाह से जा मिला।[2] उसने उसे मुगलो की दयनीय स्थिति का ज्ञान कराया तथा उसे आक्रमण करने के लिए प्रेरित

1 डा० बनर्जी न (हुमायू, 1, पृ० 162 63) हिन्दू बेग के इस सुझाव को बुद्धिहीन कहा है। उनका मत है कि इसी के कारण गजनफर को बाद मे बन्दी बनाया गया तथा तरदी बेग के मन म सन्देह उत्पन्न हुआ। डा० ईश्वरी प्रसाद का (हुमायू, पृ० 85) कथन है कि "Hindu Beg a blunt soldier that he was, decided that a do nothing emperor was no master for him" डा० त्रिपाठी का (राइज एण्ड फॉल, प० 82 83) विचार है कि हिन्दू बेग समझता था कि इस सुझाव से सभी अमीरो तथा गुजराती जनता मे यह विश्वास पदा हो जाएगा कि उनके राज्य की एकता तथा भलाई अस्करी को अपना शासक स्वीकार करन से सुरक्षित रहगी। फिरिश्ता (ब्रिग्स, 4, प० 82) स्पष्ट लिखता है कि हिन्दू बेग ने यह सलाह सना का विश्वास प्राप्त करने के लिए दी। फिरिश्ता, ब्रिग्स, 4, पृ० 82। बदायूनी लिखता है कि अस्करी हिन्दू बेग स मिलकर खुत्वा पढवाना चाहता था किन्तु यह सम्भव नहीं हो सका। मुन्तखबुत्तवारीख, 1, प० 534)।

2 तबकाते अकबरी, डे, 2, प० 59-60, फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2 पृ० 81 82।

किया।[1] गजनफर के भागने के परिणामस्वरूप अन्य मुगल अमीर भी अस्करी को छोडकर बहादुर शाह से जा मिले।

बहादुर शाह से सघर्ष

हुमायू के माडू से वापस चले जाने के पश्चात बहादुर शाह डियू म पडा रहा। वहा से गुजरात पर दृष्टि रखकर वह उस पर पुन अधिकार करने के सुयोग की प्रतीक्षा करता रहा। गुजरात की घटनाओ की सूचना उसको मिलती रहती थी। गुजरात के मुक्ति आन्दोलन तथा कई प्रमुख स्थानो पर उसके नाम से अधिकार हो जाने के पश्चात् तथा गजनफर द्वारा मुगलो की दयनीय अवस्था का ज्ञान प्राप्त हो जाने से उसे मुगलो के विरुद्ध आगे बढने मे सुविधा हुई। बहादुर शाह ने डियू से निकलकर सरखेज के निकट अपना पड़ाव डाला।

अहमदाबाद मे मुगल कुछ दिन रहे। किन्तु स्थिति बिगडती जा रही थी। मुगल सेना की सख्या गुजराती सेना से बहुत कम (2 5 के अनुपात म) थी। इसके अतिरिक्त गुजरात की जनता का असहयोग तथा मुगल अमीरो का पारस्परिक मतभेद स्थिति को और भी बिगाड रहा था। प्रारम्भ म अस्करी का विचार गयासपुर म युद्ध करने का था किन्तु इमादुल मुल्क की सेना की शक्ति बढती जा रही थी। अहमदाबाद सुरक्षित नही था। यहा से युद्ध करना भी उपयुक्त न था। इस कारण अस्करी, हिन्दू बेग इत्यादि न अपनी पूर्ण शक्ति को चम्पानीर म केन्द्रित करने का निश्चय किया। इससे सगठित रूप म गुजराती सेना का सामना किया जा सकता था। तथा यदि पराजय भी होती तो मुगल सेना का पूर्ण नाश नहीं होता। विजयी होने पर अहमदाबाद पर अधिकार हो सकता था।[2] अस्करी

अबुल फजल इसका पूरा वर्णन नही करता, वह केवल इतना ही लिखता है कि पारस्परिक असहयोग तथा अल्पदर्शिता के कारण गजनफर 300 अश्वारोहियो सहित बहादुर शाह से जा मिला। (अकबरनामा, 1, पृ० 143)।

1 अकबरनामा, 1, पृ० 143, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 59 60।

2 फिरिश्ता (ब्रिग्स, 4, पृ० 130) लिखता है कि गुजरात के विद्रोह तथा मुगल प्रबन्ध की असफलता को देखकर अस्करी ने मुगल अमीरो की सभा बुलायी तथा उसने कहा कि "सम्राट इस समय माडू म है। गुजरात पर अधिकार रखने और प्रबन्ध की असफलता के पश्चात् हमारा यहा रहना व्यर्थ है। शेर खा पूर्वी बगाल म अपनी सेना दिल्ली पर अधिकार करने के लिए इकट्ठी कर रहा है। इसलिए मैं समझता हू कि हम लोगो को चम्पानीर पहुचकर वहा के कोष पर अधिकार कर आगरा जाना ही श्रेयस्कर है।"

अहमदाबाद से अपनी सेना के साथ चम्पानीर की तरफ रवाना हुआ। मार्ग मे असावल नामक स्थान पर बहादुर शाह तथा अस्करी की सेनाये तीन दिन तक युद्ध के लिए एक-दूसरी के सामने खडी रही। अन्त म अस्करी की सेना बिना युद्ध किये ही चम्पानीर की तरफ बढ गयी।[1] बहादुर शाह को उनके इस तरह भाग जाने से आश्चय हुआ। उसने मुगल सेना का पीछा किया तथा उसके पिछले भाग से, जिसका नेतृत्व यादगार नासिर मिर्जा कर रहा था, युद्ध भी हुआ जिसमे मुगलो की हानि हुई। अस्करी यहा से अपनी सेना के साथ चम्पानीर पहुचा।

चम्पानीर मे तरदी बेग ने उन्हे घोडे तथा रहने का स्थान दिया। अस्करी ने तरदी बेग को परिस्थितियो की भयकरता बतायी और उससे धन की सहायता मागी जिससे वह बहादुर शाह से युद्ध कर पराजय का बदला ले। तरदी बेग ने अस्करी को हुमायू की स्वीकृति के बिना धन देना अस्वीकार कर दिया।[2] हुमायू उस समय माडू मे था जो चम्पानीर से अधिक दूर नही था। तरदी बेग ने हुमायू को अस्करी के कार्यों की सूचना दी। साथ ही उसने यह मत भी प्रकट किया कि अस्करी के विचार पवित्र नही है और उसकी दृष्टि आगरा पर भी है। अस्करी ने तरदी बेग को हर तरह से समझाने का प्रयत्न किया, किन्तु उसने हुमायू की स्वीकृति के बिना सहायता देने से इनकार कर दिया। तरदी बेग से किसी प्रकार की सहायता की आशा न पाकर अस्करी ने षड्यन्त्र रचा। परिस्थिति पर विचार करने के लिए प्रमुख अमीरो की एक गोष्ठी आमन्त्रित हुई जिसमे तरदी बेग भी बुलाया गया। वास्तविक रूप म अस्करी तरदी बेग को अपने अधिकार म करना चाहता था। तरदी बेग को सदेह हो गया और वह तुरन्त दुर्ग मे चला गया तथा उसने अस्करी को अपने सैनिको को दुर्ग से दूर हटाने की आज्ञा दी। उनके हिचकने पर उसने उनके ऊपर गोलियो की वर्षा की।[3] अपनी योजना की असफलता के

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 143, बेले, पृ० 393, अबू तुराब, पृ० 30। "इस कारण कि वे न तो हजरत जहाबानी के प्रति निष्ठावान थे और न उनके विचार ही शुद्ध थे, अत अधकारमय विचारो एव अशुद्ध कल्पनाओ के कारण युद्ध किये बिना चम्पानीर की ओर चल दिये और नाना प्रकार की तबाही प्रकट हुई।" (अकबरनामा, 1, पृ० 143)

2 अकबरनामा, 1, पृ० 144।

3 अबू तुराब (तारीखे गुजरात, पृ० 31) लिखता है कि तरदी बेग अस्करी से मिलने जा रहा था कि एक विश्वासपात्र, जो मिर्जाओ के पास से आ रहा था, मार्ग मे मिल गया। उसने उसके कान म कहा कि "मिर्जाओ ने तुम्हे बन्दी बनाने की योजना बनायी है।" तरदी बेग अबू तुराब के घर

परिणामस्वरूप अस्करी आगरा की ओर रवाना हुआ।

हुमायू का आगरा वापस लौटना

जिस समय गुजरात मे विद्रोह हो रहे थे हुमायू माडू मे पडा था। मालवा मे हुमाय को अस्करी की आगरा यात्रा की सूचना मिली। इस सूचना से उसकी निद्रा भग हुई और अपनी सेना इकट्ठी कर वह भी आगरा की तरफ रवाना हुआ जिससे अस्करी के पहुचने के पहले वह वहा पहुच सके।

मुगलो के पलायन की सूचना पाते ही बहादुर शाह ने महेन्द्री नदी पार की तथा चम्पानीर की तरफ बढा। दुग की रक्षा असम्भव देखकर तरदी बेग ने जितना भी कोष ले जाना सभव था ले लिया तथा हुमायू की तरफ रवाना हो गया। तरदी बग के भागने की सूचना पाते ही बहादुर शाह ने दुग पर अधिकार कर लिया। इस तरह गुजरात पर उसका पुन अधिकार हो गया।[1] जो मुगल चम्पानीर के दुग मे थे उनके साथ बहादुर शाह ने अच्छा व्यवहार किया तथा उन्हे वस्त्र, घोडे एव खर्च देकर वहा से चले जाने की अनुमति दी।

माडू मे तरदी बेग हुमाय से मिला तथा वहा से उसकी सेना के साथ वह आगरा की तरफ रवाना हुआ। आगरा के माग मे चित्तौड के निकट अस्करी और हुमायू की मुलाकात हुई और दोनो भाइयो मे पुन मित्रता स्थापित हुई, जिसमे हरम की स्त्रिया ने भी सहायता दी। इस तरह दोनो भाई बची सेनाए तथा मुगल स्त्रिया के साथ आगरा की तरफ रवाना हुए।

हुमायू ने अस्करी को तो क्षमा कर ही दिया उसके अन्य अमीरा को भी उसने दड नही दिया।[2] आगरा लौटकर हुमायू ने हिन्दू बेग को जौनपुर का गवनर नियुक्त किया तथा कुछ महीने बाद उसे अमीरुल उमरा की उपाधि दी। मिर्जा नासिर को कालपी का गवनर नियुक्त किया गया। इससे स्पष्ट है कि दोना का मतभेद समाप्त हो गया था।

पर उतर गया तथा उसे पता लगाने को भेजा। जब उसे विश्वास हो गया कि अस्करी का सकल्प ठीक नही है तो उसने उन्हे वहा से चले जाने को कहा।

1 अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात (भाग, 1, पृ० 260) के अनुसार गुजरात पर मुगलो का अधिकार हिजरी के महीनो के अनुसार 13 महीने 13 दिन रहा (25 अप्रल 1535 ई० से 24 मई 1536 ई०) रास-अरेबिक हिस्ट्री 1, पृ० 260।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 144।

अस्करी हुमायू क पास जाने के वजाय आगरा की तरफ क्या रवाना हुआ ? अबुल फजल तथा कुछ अय समकालीन इतिहासकारा का मत है कि अस्करी स्वतन्त्र हाना तथा आगरा पर अधिकार करना चाहता था।[1] उसके मन म जो भी इरादा रहा हा प्रारम्भ म उसन न खुत्बा पढा न अपन नाम स सिक्के चलाये, जैसा बाद मे हिन्दाल ने किया। सम्भवत उसका इरादा आगरा मे राजत्व धारण करने का था किन्तु उस इसका अवसर नही मिला।

तरदी वेग के व्यवहार की समीक्षा

तरदी वेग न अस्करी की सहायता क्या नहा की ? तवकात अकवरी का लेखक निजामुद्दीन अहमद लिखता है कि जब अस्करी तथा उसके साथी चम्पानीर पहुचे ता तरदी वग न विद्राह प्रारम्भ कर दिया तथा किला वन्द करक वठा रहा तथा उसने हुमायू के पास सूचना भेजी कि मिर्जा अस्करी न विद्राह करन का निश्चय कर लिया है।[2] इस तरह वह सम्पूण दुर्भाग्य का उत्तरदायित्व तरदी वग पर डालता ह। फिरिश्ता लिखता है कि अस्करी चम्पानीर तथा गुजरात के अन्य भागा पर अधिकार कर अपन नाम स खुत्बा पढना, चाहता था तथा सिक्का चलाना चाहता था।[3] वदायूनी लिखता है कि अस्करी हिन्दू वग की सहायता स अपन नाम से खुत्बा पढना चाहता था।[4] तारीखे गुजरात के लेखक अबू तुराव के अनुसार जिस समय अस्करी चम्पानीर पहुचा, तरदी वेग न प्रारम्भ म उसके साथ सदव्यवहार किया और प्रत्यक व्यक्ति को एक एक घोडा दिया तथा उनका आदर सत्कार किया किन्तु राजसी काष स सम्राट की आज्ञा के बिना एक पैसा भी दन म इनकार कर दिया। उसके बाद जब उसे विश्वास हा गया कि अस्करी उस बन्दी

1 वही, अबू तुराव, (पृ० 31) क अनुसार अस्करी का इरादा आगरा पर अधिकार करने का था।

2 तवकात अकवरी डे, 2, पृ० 61।

3 फिरिश्ता, फा पृ० 216 ब्रिग्स का अनुवाद (भाग 2 प० 82 83) भिन्न है।

4 'मिर्जा अस्करी जो अहमदाबाद म था, पादशाह क पूव की ओर प्रस्थान कर जाने के उपरान्त अमीर हिन्दू वग कूचीन स मिलकर अपन नाम का खुत्बा पढवा दना चाहता था किन्तु यह सम्भव न हुआ। वह साधारण-सा युद्ध करके चम्पानीर पहुचा। वहा के हाकिम तरदी वग न किले की प्रतिरक्षा प्रारम्भ कर दी। अस्करी मिर्जा क विद्राह सम्बधी पत्र दरबार म भेजे।" (बदायूनी, पृ० 347)

बनाना चाहता है तो वह उसके विरुद्ध हो गया।[1] अबू तुराब आगे लिखता है कि मिर्जाओं की दशा शोचनीय थी अत उन्होंने निश्चय किया कि अस्करी बादशाह बने और हिंदू बेग उसका वकील। अन्य मिर्जाओं के नाम पर भी बडी-बडी जागीरें रखी गयी किन्तु तरदी बेग उन्हें माडू जाने के लिए जोर देता रहा तथा अन्त म उसने उनकी सेना पर तोप चलायी। अब्दुल्ला ने अपनी अरबी भाषा म लिखे गुजरात के इतिहास (जफरुल वालेह व मुजफ्फर व आलेह) म अबू तुराब के मत का समर्थन किया है।[2] अबुल फजल के अनुसार मिर्जाओं का विचार चम्पानीर पर अधिकार करना तथा अस्करी को सुल्तान बनाना था।[3]

उपर्युक्त वर्णन स यह स्पष्ट हो जाता है कि अस्करी गुजराती सेना से पराजित होकर चम्पानीर के दुर्गपति स सहायता मागने, आया था। वह तरदी बेग से धन, सैनिक तथा सुरक्षित स्थान चाहता था जिससे सेना सगठित कर बहादुर शाह स पुन युद्ध कर सके। पराजय ने अस्करी को सचेत तथा सजग कर दिया था तथा अब वह अपना खोया यश पुन प्राप्त करना चाहता था। गुजरात इतना शीघ्र तथा इतने कम सघर्ष स मुगलो को प्राप्त हुआ कि अस्करी को आशा थी कि वह सरलता से उस पर शासन कर सकेगा। मुगलो को धन का भी अभाव नही था। कुछ स्वभाव से तथा कुछ परिस्थितिवश अस्करी आनन्द विनोद म लगा रहा। विद्रोहो ने उसकी आखें खोल दी तथा उसने पुन खोया हुआ भू भाग तथा मान प्राप्त करना चाहा।

अस्करी गुजरात का गवर्नर भी था। तरदी बेग उसके अधीन था। इस तरह परिस्थिति तथा वैधानिकता की दृष्टि स उसे पूर्ण आशा थी कि तरदी बेग उसकी सहायता करेगा। सहायता न पाने पर अस्करी की नाराजगी स्वाभाविक थी। अस्करी तरदी बेग को बन्दी बनाकर चम्पानीर मे सचित कोष तथा सेना पर अधिकार करना चाहता था। इसमे भी उसे सफलता नही मिली। गुजरात म केवल चम्पानीर का दुर्ग ही मुगलो के अधिकार मे रह गया था। हुमायू की विरक्ति और तरदी बेग के दुर्व्यवहार के कारण तथा गुजरात म रहना असम्भव जानकर अस्करी आगरा की तरफ रवाना हुआ।

तरदी बेग ने अस्करी के साथ यह दुर्व्यवहार क्या किया? वह उत्तरदायी तथा योग्य व्यक्ति था। प्रान्त के गवर्नर तथा सम्राट के भाई के साथ दुर्व्यवहार उसने बिना कारण नही किया होगा। यह निश्चित है कि तरदी बेग हुमायू के प्रति

---

1 अबू तुराब, पृ० 30 31।

2 रिजवी, हुमायू, 2, पृ० 467।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 144।

स्वामिभक्त था। उसे अस्करी की गतिविधि तथा विचारो का पूर्ण ज्ञान था। उसे यह भी ज्ञात था कि उसके मन मे स्वतन्त्र शासक बनने का भी विचार आ चुका है। इस कारण वह अस्करी के प्रत्येक व्यवहार के प्रति पूर्णतया सतर्क तथा जागरूक था। प्रारम्भ मे उसने सहायता दी। किन्तु यह जानकर कि उसे बन्दी बनाने का षडयन्त्र किया जा रहा है तथा अस्करी हुमायू के विरुद्ध विद्रोह करना चाहता है, उसने उसे दुर्ग के अन्दर नही घुसने दिया।[1]

वैधानिक दृष्टि मे तरदी बेग का व्यवहार गलत था। किन्तु हुमायू के प्रति प्रेरित स्वामिभक्ति की दृष्टि से तथा परिस्थितियो को देखते हुए उसे दोषी नही ठहराया जा सकता।

एक और प्रश्न विचारणीय है। यदि अस्करी हुमायू से क्षमा प्राप्त करना चाहता था तो उसे माडू जाना चाहिए था। वहा जाने के स्थान पर वह आगरा क्यो गया? इसके दो कारण हो सकते हैं या तो वह शर्म से भागकर आगरा जाना चाहता था जहा अपने सम्बन्धियो से मिलकर क्षमायाचना करे, अथवा वह विद्रोह करना चाहता था। अस्करी के मन मे स्वतन्त्र होने का कितना साहस था, यह सन्देहजनक है क्योकि कुछ ही दिन पूर्व, हिन्दू बेग के सुझाव पर, उसे स्वय को गुजरात का स्वतन्त्र शासक घोषित करने का साहस नही हुआ था। आगरा की तरफ बढते समय उसकी गति ऐसी थी कि हुमायू ने उसे चित्तौड मे जा पकडा। यदि वास्तव मे आगरा पर अधिकार करने का उसका इरादा होता, तो उसने निश्चय ही हुमायू के पहुचने के पहले वहा पहुचने का प्रयत्न किया होता।[2] तरदी बेग के असहयोग से कोई लाभ नही हुआ। अस्करी तो गुजरात से गया ही, तरदी बेग को भी चम्पानीर छोडकर निकल जाना पडा और इस तरह गुजरात से मुगल साम्राज्य का अन्त हो गया।

मुगलो के गुजरात से पलायन के कारण

जिस तरह मुगलो ने गुजरात पर आसानी से अधिकार किया था, ठीक उसी तरह वह उनके हाथ से निकल गया। इस दुष्परिणाम के निम्नलिखित कारण थे

1 हुमायू ने गुजरात मे माडू तथा चम्पानीर के हत्याकाड द्वारा गुजरातियो को भयभीत कर दिया। यही नही, माडू मे सन्धि निश्चित करने के पश्चात उसने उसे तोड दिया। इस तरह गुजरातियो के मन मे मुगलो पर से विश्वास तो हट ही गया, साथ ही मुगल विरोधी भावनाओ का जन्म हुआ।

---

1 बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 165।

2 त्रिपाठी, राइज एण्ड फाल, पृ० 85।

2 गुजरात से माडू जाने के पूव हुमायू न गुजरात का उचित प्रबध नही किया। बहुत सी समस्याए उसने वसी ही छोड दी थी। बहादुर शाह जीवित तथा स्वतन्त्र था। मालवा के विद्रोही आजाद थे। सूरत म अब भी बहादुर शाह के अमीर रूमी खा सफर का अधिकार था। बहादुर शाह का जहाजी बेडा समुद्रतट पर चक्कर लगा रहा था, उसको पराजित करन का कोइ प्रबध नही किया गया। काठियावाड पर अब भी बहादुर शाह का अधिकार था तथा बहादुर शाह के अधिकतर अमीर स्वतन्त्र थे। इस परिस्थिति म हुमायू न गुजरात म केवल बहादुर शाह को उसक राज्य से खदेड दन तथा उसके राज्य पर सना के बल पर अधिकार करने के अतिरिक्त सगठन की दृष्टि स कुछ भी नही किया।

3 किसी भी विदेशी भू भाग पर राज्य करन के लिए यह आवश्यक है कि वहा की जनता यह अनुभव करे कि विदशी शासन इसके पूव के शासन स अधिक अच्छा है। मुगलो के लिए यह आवश्यक था कि व गुजरातियो का हृदय जीतन का प्रयत्न करत और एक एस शासन की स्थापना करत जिसस गुजरात क निवासी सन्तुष्ट तथा प्रसन्न हो जाते। मुगलो न गुजरात म सगठित और सुव्यवस्थित शासन की स्थापना करन का भी कोई प्रयत्न नही किया, जिसक परिणामस्वरूप गुजरात के निवासियो को बहादुर शाह तथा उसके शासन का बराबर याद आती रहती थी।

4 अस्करी न अपना दावतो तथा व्यवहार से नइ परिस्थिति म अपन को अयोग्य साबित कर दिया। शासन की दृष्टि से अस्करी तथा बहादुर शाह दोनो म बहादुर शाह को उच्च स्थान प्राप्त था। गुजरात क निवासी एक अयोग्य, विदशी तथा व्यसनी शासन के अधीन कसे रह सकत थ ?

5 मुगल सरदारो म पारस्परिक वमनस्य था तथा सद्भावना का नितान्त अभाव था। एक साथ मिलकर मुगल शक्ति के हित म काय करने म वे असमथ थे। हुमायू न गुजरात मे नियुक्तियो करत समय अस्करी तथा उसके अन्य अमीरो का सम्बन्ध निश्चित नही किया था। इसी कारण वे सब एक मत से अस्करी का समथन देने को तयार नही थे। कुछ तो उसके समथक बने, किन्तु कुछ बराबर हुमायू को ही अपना स्वामी समझते रहे। इस तरह गुजरात के गवनर की गति-विधि पर उसक अधीन कमचारी दृष्टि रखते थ। इसी कारण तरदी बेग ने उसका विरोध किया और मुगल गुजरात में विद्रोह का सामना न कर सके।

6 बहादुर शाह बहुत ही जनप्रिय शासक था और गुजरात की जनता उसके लिए कुछ भी करने को तैयार थी। बहादुर शाह के समथन का आन्दोलन गुजरात का जन आन्दोलन था जिसका सामना करना सरल नही था।

7 अहमदाबाद के मुगल केन्द्र स भिन्न भिन्न जिलो मे स्थित मुगल अफसरो तथा स्थानो पर पूण नियत्रण नही स्थापित हो सका जिसके परिणामस्वरूप व

भाग एक के बाद एक उसके हाथ से निकल गये।

8 हुमायू ने मालवा मे मुगल शासन के स्थायित्व के लिए कुछ प्रबन्ध नही किया। इस तरह यह प्रान्त जिस तरह प्राप्त हुआ था उसी तरह हाथ से निकल गया। हुमायू ने मालवा मे कई माह व्यतीत किये फिर भी उसने वहा के शासन म कोई दिलचस्पी नही ली।

9 हुमायू ने इतनी लापरवाही दिखायी कि उसने चम्पानीर के दुग मे प्राप्त सम्पूर्ण कोष भी नहीं हटाया। तरदी बेग जितना कोष ले जा सकता था ले गया। बाकी पुन बहादुर शाह को प्राप्त हो गया।[1] बुद्धिमानी तो यह थी कि सम्पूण कोष आगरा या दिल्ली भेज दिया गया होता।

10 ऐसा प्रतीत होना है कि मुगलो का गुप्तचर विभाग सजग तथा योग्य नही था। इस कारण हुमायू को अस्करी तथा गुजरात के भिन्न भिन्न भागो का पूण ज्ञान न प्राप्त हो सका। अन्त मे उसे परिस्थितियो के भीषण होने के पश्चात् उसकी सूचना मिली।

11 आगरा वापस लौटने के पूव या पश्चात् भी उसन बहादुर शाह के विषय मे अपना मत नही बदला। यदि उसने सन्धि कर उसे मिला लिया होता तो उससे मुगलो को सहायता प्राप्त होती। गुजरात से मुगल ऐसे भाग आये जस वहा से उनका कोई सम्बन्ध नही था।

12 हुमायू, जो गुजरात के बहुत ही निकट था, शान्ति से क्या बठा रहा? उसने गुजरात की परिस्थिति पर ध्यान क्या नही दिया? गुजरात मे विद्रोह तथा मुगलो की पराजय की सूचनाए प्राप्त करने पर भी उसन गुजरात पर मुगल शासन स्थापित करने का प्रयत्न क्या नही किया? इन प्रश्नो का उत्तर देना कठिन है। क्या हुमायू अस्करी को गुजरात का गवनर बनाकर अथवा एक नये राज्य का निर्माण कर उसे वही स्थापित करना चाहता था? अथवा वह अपनी सुस्ती तथा अफीम के नशे मे इतना व्यस्त था कि उसने इसकी ओर तनिक भी दृष्टिपात नही किया? यदि यह मान भी लिया जाए कि उसके पास गुजरात भेजने के लिए अधिक सेना नही थी, इस कारण उसने सहायता नही भेजी अथवा उससे सैनिक सहायता मागी ही नही गयी तो भी यह बताना कठिन है कि इन विद्रोहो के समय उसने वहा शान्ति स्थापित करने के लिए परामश क्या नही दिया। उसन इस तरह विरक्ति क्या अपना ली? स्पष्ट है कि हुमायू की लापरवाही मुगलो के गुजरात से पलायन का एक प्रमुख कारण बनी।[2]

---

1 काम्मिस्सारियट, पृ० 370-71।

2 'The reasons for the Mughal collapse may be found in

बहादुर शाह की मृत्यु

गुजरात पर पुनः अधिकार करने के पश्चात् बहादुर शाह ने अपने अमीरों से मन्दसौर में रूमी खां की राय मानने के लिए क्षमा मांगी।[1] उसका विश्वास था कि उसकी पराजय का प्रमुख कारण उसकी यही भूल थी। गुजरात की विजय ने उसे पुनः अपने अपूर्ण कार्यों को पूरा करने का समय दिया। किन्तु दुर्भाग्यवश परिस्थिति ठीक तरह से सम्हलने के पहले ही उसकी दुखद मृत्यु हो गयी।

25 अक्तूबर 1535 ई० को जिस समय बहादुर शाह डियू में था उसने पुर्तगालियों के साथ एक सन्धि की। इस सन्धि के द्वारा पुर्तगाली गवर्नर नूनो द कुन्हा ने जल तथा थल दोनों स्थलों पर उसके शत्रुओं के विरुद्ध उसकी सहायता करने की प्रतिज्ञा की। बहादुर शाह ने इसके बदले में डियू में पुर्तगालियों को एक दुर्ग बनाने की आज्ञा दी, किन्तु डियू में प्राप्त आयात कर पर पुर्तगाल के राजा को कोई अधिकार नहीं दिया गया तथा यह बहादुर शाह का ही प्राप्त होता रहा। बहादुर शाह ने बेसीन के सम्बन्ध में प्रारम्भिक सन्धि की भी स्वीकृति दे दी। दोनों दलों ने धर्मपरिवर्तन न करने का भी वचन दिया।[2] यह सन्धि बहादुर शाह की परवशता की चरम सीमा थी, क्योंकि गत 25 वर्षों से पुर्तगाली डियू को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न कर रहे थे किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली थी।[3]

मुगलों के पलायन तथा गुजरात पर बहादुर शाह के इतने शीघ्र अधिकार कर लेने से पुर्तगालियों को आश्चर्य हुआ। वे भूले नहीं थे कि बहादुर शाह की कठिनाई ही उनके प्रसार के लिए सहायक है। इधर पुर्तगालियों तथा बहादुर शाह का सम्बन्ध भी अच्छा नहीं चल रहा था। बहादुर शाह पुर्तगालियों की चाल समझता था, तथा उनकी बढ़ती हुई शक्ति के प्रति वह जागरूक था। परिस्थिति सुधारने पर उसे दुख हुआ कि कठिन परिस्थितियों में उसने पुर्तगालियों को डियू में दुर्ग बनाने की आज्ञा दी।

---

the passive resistance of the people of the country, 1-Humayun's failure to send up reinforcements" (काम्मिस्सारियट पृ० 369)।

1 अरेबिक हिस्ट्री, पृ० 259 60, काम्मिस्सारियट, पृ० 371।

2 बेले, पृ० 394 95, काम्मिस्सारियट, पृ० 363 66।

3 यह सन्धि कितनी महत्त्वपूर्ण थी इसका अनुमान इससे लगा सकते है कि बाटेलहो नामक एक पुर्तगाली एक छोटी सोलह फुट लम्बी, नौ फुट चौड़ी साढ़े चार फुट गहरी नाव में पुर्तगाल के शासक को यह सूचना देने के लिए तेजी से भागकर पुर्तगाल गया। (काम्मिस्सारियट, पृ० 373)।

डियू म दुग बनने के पश्चात् दुग के पुतगालियो तथा डियू नगर के नागरिको म सघप होता रहता था। बहादुर शाह दुग तथा नगर के बीच एक दीवार बनाकर दोनो को अलग कर देना चाहता था। पुतगाली इसके लिए तयार नही थे। यही नही, पुतगाली डियू के ब दरगाह से बहादुर शाह के जहाज भी नही जाने देते थे। इन सब कठिनाइयो को ठीक करने के लिए चम्पानीर के दुग से बहादुर शाह 1536 ई० के अन्त म डियू आया। 13 नवम्बर 1536 ई०को 8 बजे रात म वह बिना पूव सूचना के डियू के दुग मे गया। पुतगाली सतक थे। बहादुर शाह क साथ कुछ ही व्यक्ति थे। आसानी से उसकी हत्या हो सकती थी। किन्तु पुतगाली दुग-पति का साहस नही हुआ। इस भूल के लिए पुतगाली गवनर ने बाद मे दुगपति की भत्सना की। बहादुर शाह उस रात लौट आया।[1] फरवरी 1537ई० मे बहादुर शाह ने पुतगाली गवनर को समुद्रतट पर एक दावत के लिए बुलाया। नूनो को यह सूचना मिली थी कि बहादुर उसे ब दी बनाकर तुर्की के सुल्तान के पास भेजना चाहता ह। उसने इस भय स बीमारी का बहाना कर दावत मे सम्मिलित होना अस्वीकार कर दिया तथा अपने सम्ब धी मनुअल डि सूसा को सुल्तान स क्षमा मागने के लिए भेजा। समाचार पाकर बहादुर शाह न स्वय जाकर नूनो को देखने का निश्चय किया (13 फरवरी 1537 ई०)।

सुरक्षा के प्रब ध के बिना कुछ व्यक्तियो[2] के साथ बहादुर शाह नाव से रवाना हो गया। मिराते सिक दरी के अनुसार बहादुर शाह क अमीरो न उसे समझाया कि बिना हथियार के जाना ठीक नही है कि तु बहादुर शाह न इसे स्वीकार नही किया। नूनो को बहादुर शाह के इस तरह पहुचने की आशा नही थी। उसने जल्दी स उससे मिलने की तैयारी की। बहादुर शाह को कई बातो से स देह हुआ कि पुतगालियो के विचार पवित्र नही है। नूनो स्वस्थ था तथा उसका दावत म न आना एक बहाना मात्र था। बहादुर शाह जल्दी से अपनी नाव पर आ गया तथा उसने नाव चलाने की आज्ञा दी। उसी बीच पुतगालियो की नौकाओ ने उसे घेर लिया। बहादुर शाह ने अपने कुछ बहादुर साथियो के साथ बहादुरी से युद्ध किया किन्तु इतने कम व्यक्तियो के साथ पुतगालियो का सामना करना असम्भव था। कोई और माग न देखकर वह समुद्र मे कूद पडा, किन्तु वह पहचान लिया गया तथा किसी पुतगाली नाविक ने भाले से उसे मार डाला और उसकी लाश को

1 कामिस्सारियट, पृ० 374-75।

2 पुतगाली इतिहासकारो के अनुसार 13, तथा मिरात सिकन्दरी के अनुसार 5। बेल गुजरात, पृ० 395 97, कामिस्सारियट, पृ० 376 तथा 380।

समुद्र मे फेंक दिया, जो तलाश करन पर भी प्राप्त न हो सका।

बहादुर शाह की मत्यु की घटनाओ के विषय म पुर्तगाली तथा भारतीय इतिहासकारो म मतभेद है। इसम कोई स देह नही कि दोनो तरफ से सन्देह था तथा साधारण बातो को भी इसी दष्टि म देखा जाने लगा था। बहादुर शाह पुर्तगालियो को अपने समुद्रतट से बाहर निकालना चाहता था। दूसरी तरफ पुर्तगाली अधिक से अधिक सुविधाए प्राप्त करना चाहते थे। परिस्थितियो को ध्यान म रखने से स्पष्ट है कि बहादुर शाह के प्रति पुर्तगालियो की जो आशकाए थीं वे निराधार थी। यदि बहादुर शाह उन्ह बन्दी बनाना चाहता था तो वह बिना हथियार तथा बिना तैयारी के क्यो पुर्तगाली गवनर से मिलने गया? पुर्तगाली गवनर को बन्दी बनाने से उसको लाभ हो क्या था? बहादुर शाह पुर्तगाली कम्प म केवल छ व्यक्तियो के साथ गया था और वहा उसकी नशस हत्या हुई, इसम कोई स देह नही रह जाता।[1]

बहादुर शाह गुजरात म इतना जनप्रिय था कि लोगो को उसकी मत्यु पर विश्वास नही हुआ तथा कुछ वष तक कई बार गुजरात तथा दक्कन स उसके प्रकट होने की सूचनाए मिलती रही।

बहादुर शाह का चरित्र तथा उसकी पराजय के कारण

भारतीय इतिहास के प्रान्तीय शासको म बहादुरशाह का एक प्रमुख स्थान है। जिस समय वह गद्दी पर बठा गुजरात कठिन स्थिति म था। अपनी योग्यता तथा कार्यो स कुछ ही दिनो म उसने वहा शाति तथा सुशासन स्थापित किया। उसने अपनी सेना को नय हथियारो से सुसज्जित कर दिया जिससे भारत की सेनाओ म उसकी सेना की गणना प्रथम श्रेणी म होन लगी। उसने सात-आठ वर्षों म ही अपने

---

1 बहादुर शाह की मत्यु के लिए देखिए फिरिश्ता, ब्रिग्ग 4, प० 132 41, बाम्बे गजेटियर जिल्द 1 भाग 1, प० 347 51, बेले, प० 294 97, अर्सकिन, 2, प० 91 95, व्हाइटवे, राइज आफ पुर्तगीज पावर इन इण्डिया प० 244 50 अरबिक हिस्ट्री 1, प० 261 62, कामिस्सारियट, प० 372 83, बड हिस्ट्री आफ गुजरात, प० 251 नोट।

2 अबुल फजल लिखता है कि लोगो को उसकी मत्यु का विश्वास नही हुआ तथा कुछ लोगो का विचार है कि वह बचकर भाग गया था। दक्कन म एक व्यक्ति प्रकट हुआ जिसे निजामुल मुल्क ने स्वीकार किया कि वह बहादुर शाह था तथा उसने चौगान खेला। इसी तरह तारीखे गुजरात के लेखक अबू तुराब के आधार पर अबुल फजल लिखता है कि बहादुर शाह के गुरु कुतुबुद्दीन शिराजी की बहादुर शाह से मुलाकात हुई और उसन कुछ ऐसे विषय पर बात की जो बहादुर शाह के अतिरिक्त और कोई नही जानता था। (अकबरनामा, 1, प० 146)।

निकट के राज्यों पर अपना प्रभाव पूर्ण रूप से स्थापित कर लिया। उसने अपनी शक्ति इतनी बढ़ा ली कि वह दिल्ली के बादशाह से भी होड़ लेने के लिए तैयार हो गया। यही नहीं, उसका दरबार मुगल सम्राट से असन्तुष्ट व्यक्तियों का केंद्र बन गया था। समकालीन लेखकों ने उसकी बहादुरी, बुद्धिमानी, जनप्रियता तथा गतिशीलता की प्रशंसा की है। वह अपनी दानशीलता के लिए भी प्रसिद्ध था। कहा जाता है कि संगीतकार उसके दरबार में इतना धन प्राप्त करते थे कि उसके मन्त्री को नकली सिक्कों का प्रयोग करना पड़ता था। गायक मंजू के हुमायूं दरबार से वापस आने पर बहादुर शाह इतना प्रसन्न हुआ कि उसने कहा कि उसका जो कुछ खोया था उसे प्राप्त हो गया तथा ईश्वर से उसके मांगने के लिए कुछ भी नहीं रह गया था।

बहादुर शाह के शासन से उसकी हिंदू प्रजा भी प्रसन्न थी। गुजरात में उसके पक्ष में जन आन्दोलन में हिंदुओं ने भी पूर्ण सहयोग दिया। राजस्व वसूल करने के लिए जो लोग उससे प्रार्थना करने गये उनमें हिन्दू भी थे। राजा नरसिंह देव पर तो उसका विश्वास अटल था। उसकी मृत्यु का समाचार सुनकर ही उसको विश्वास हो गया कि अब चम्पानीर उसके हाथ से निकल गया, यद्यपि इख्तियार खां जैसा योग्य व्यक्ति दुर्ग की रक्षा करने के लिए संलग्न था।

बहादुर शाह के चरित्र में कुछ दोष भी थे। अपने शत्रुओं के प्रति वह क्रूर था तथा अपने भाइयों की हत्याएं कर उसने एक गलत परम्परा स्थापित की। वह शराब भी अधिक पीने लगा था तथा कहा जाता है कि जब वह पुर्तगालियों के पास गया तो उस समय भी वह शराब के नशे में था। कभी-कभी वह बिना सोचे-समझे उतावलेपन में काम करता था। रक्षा का पूर्ण प्रबन्ध किये बिना पुर्तगालियों के पास जाना बुद्धिमानी नहीं थी।

इन दोषों के होते हुए भी बहादुर शाह की महानता में कमी नहीं आती। जिस समय वह गद्दी पर बैठा उसकी अवस्था केवल 20 वर्ष की थी तथा 11 वर्ष के राज्यकाल के पश्चात अपनी मृत्यु के समय वह 31 वर्ष का था। इतनी अल्पायु में उसने जो सफलता प्राप्त की वह साधारणतया सम्भव नहीं होती। बहादुर शाह जैसा योग्य तथा महत्त्वाकांक्षी सुल्तान, जिसकी सेना संगठित तथा शक्तिशाली थी, मुगलों से इतने शीघ्र कैसे पराजित हो गया? सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि उसने मुगलों से खुलकर कभी भी युद्ध नहीं किया। मन्दसौर, चम्पानीर, माण्डू सभी स्थानों से वह भागता ही गया। उसका साहस तब लौटा जब हुमायूं गुजरात से बाहर चला गया था तथा गुजरात में जन आन्दोलन का प्रभाव फैल चुका था। आखिर उसके पलायन का कारण क्या था? उसके जीवन तथा शासन की घटनाओं के अध्ययन से स्पष्ट मालूम होता है कि बहादुर शाह जहां राजपूतों, मालवा के शासकों, पुर्तगालियों इत्यादि के विरुद्ध युद्ध करने में कभी भी

हतोत्साहित नही होता था, वहा मुगलो से युद्ध करने का उसका साहस नही हुआ। ऐसा मालूम होता है कि पानीपत के प्रथम युद्ध ने जिसमे वह दर्शक के रूप मे उपस्थित था, उसके मन मे भय उत्पन्न कर दिया था। इसी कारण उसे मुगलो के विरुद्ध युद्ध करने का साहस नही हुआ। उसने स्वय अफगानो और मुगलो के युद्ध की शीशे तथा पत्थर के युद्ध से तुलना की थी। कदाचित इसी कारण वह मुगलो से भागता रहा। उसकी पराजय का यह प्रमुख कारण था।

बहादुर शाह की मृत्यु के पश्चात् गुजरात

बहादुर शाह की मृत्यु के पश्चात पुर्तगाली गवर्नर ने डियू मे स्थित बहादुर शाह के कोष, तोपखाने इत्यादि पर अधिकार कर लिया। डियू की जनता मे आतंक सा छा गया जिसे बडी कठिनाई से शान्त किया जा सका। गुजरात की जनता तथा अमीरो की निराशा तथा दुख की कोई सीमा नही रही।

मुहम्मद जमान मिर्जा के हुमायूं विरोधी कार्यों का वर्णन किया जा चुका है। बहादुर शाह के मन्दसौर से पलायन के पश्चात मुहम्मद जमान सिंध गया, किन्तु वहा से उसे सफलता नही प्राप्त हुई। वहा से वह लाहौर गया। कामरान उस समय ईरान के शाह से कन्धार की रक्षा मे लगा हुआ था जिसका वर्णन अगले पृष्ठो मे किया गया है। मुहम्मद जमान को अवसर मिला। उसने पहले लाहौर पर अधिकार करना चाहा, किन्तु वहा का अधिकारी कामरान के प्रति स्वामिभक्त बना रहा।[1] मुहम्मद जमान ने लाहौर का घेरा डाला, किन्तु सफलता की आशा नही दिखाई दे रही थी। इसी समय कामरान लाहौर लौट आया। विवश होकर मुहम्मद जमान मिर्जा यहा से भागकर दिल्ली के आसपास चक्कर लगाता रहा (1536 ई० की वर्षा ऋतु मे)। मुगल साम्राज्य मे सफलता की कोई आशा न देखकर कुछ दिन बाद वह पुन गुजरात की तरफ चला गया।

बहादुर शाह के कोई सन्तान नही थी जिसमे उसकी मृत्यु के पश्चात उसके उत्तराधिकारी की समस्या सामने आयी। मुहम्मद जमान मिर्जा ने गुजरात की इस कठिनाई से लाभ उठाया। बहादुर शाह की मृत्यु मे दुखी होने का उसने अभिनय किया तथा हरम की स्त्रियो के सामने कपडे फाडकर पागल की तरह रोता रहा तथा उनके समझाने पर भी शान्त नही हुआ। उसने राजमाता से प्रार्थना की कि सुल्तान बहादुर शाह उसे अपना छोटा भाई समझता था इस कारण उसे वह गोद ले ले। उसे समझाया गया कि गुजरात मे स्त्रिया राजनीति मे भाग नही लेती तथा उसे मन्त्रियो से वार्ता करनी चाहिए। फिर भी मुहम्मद

---

1 अकबरनामा, 1, पृ 126 27।

जमान ने राजमाता तथा हरम की स्त्रिया स लगभग 20 लाख रुपये प्राप्त कर लिया और उसकी सहायता से उसने एक बडी सेना एकत्रित की।[1] बाहर से तो वह पुतगालियो स बहादुर शाह की हत्या का बदला लेन की बात करता था और छिपकर उसने पुतगालियो से सहायता की प्राथना की। अपन पक्ष म करने के लिए उसने उन्ह धन तो दिया ही, इसके अतिरिक्त 27 माच 1537 ई० को उसन एक सधि की जिसके अनुसार उसने मगलौर, दमन तथा समुद्र के किनारे की लगभग ढाई कोस भूमि उन्ह दे दी जैसे वह गुजरात का सुल्तान हो। इसके बदले मे पुतगालियो की सहायता से डियू की शफा मस्जिद म उसके नाम से खुत्बा पढा गया।[2]

इस बीच बहादुर शाह के अमीर मुहम्मद जमान के विरोधी हो गय। बहादुर शाह ने अपना उत्तराधिकारी अपनी बहन के पुत्र खानदश के मीरान मुहम्मद शाह तथा उसके पश्चात अपने स्वर्गीय भाई लतीफ खा के पुत्र महमूद को नियुक्त किया था। अमीर उसकी इस इच्छा के प्रति सहानुभूति रखत थे। इसके अतिरिक्त मुहम्मद जमान के प्रति उनके मन मे कोई प्रेम नही था। वह मुगल सम्राट का सम्बन्धी था और उसके पिछले काय ऐस थ कि उसका विश्वास नही किया जा सकता। गुजरात के मुगल विरोधी जन-आन्दोलन के पश्चात मुगल सम्राट के सम्बन्धी के गद्दी पर बठन की आशा नही थी। इसके अतिरिक्त मुहम्मद जमान अपने व्यसनो से गुजरातियो की घृणा का पात्र बन गया था। गुजरात की गद्दी पर अधिकार करने के दावपेच न उन्ह उसका और विरोधी बना दिया। इमादुल मुल्क मलिक के नेतृत्व म डियू क निकट ऊना म मुहम्मद जमान पराजित हुआ तथा उसकी सेना तितर बितर हो गयी।[3] गुजरात स भागकर वह सिन्ध तथा वहा से उत्तरी भारत चला गया।

बहादुर शाह की बहन का बेटा मीरान मुहम्मद शाह बहादुर शाह क राजत्व काल म उसका बराबर सहयोगी रहा तथा सुल्तान क सभी प्रमुख अभियानो म उसने भाग लिया था। बहादुर शाह की मत्यु के पश्चात् अमीरो न उसे गद्दी पर बठाया, किन्तु उसका शासन अधिक दिन तक न रहा। कुछ ही सप्ताह पश्चात्

---

1 काम्मिस्सारियट, प० 387-88।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 146, काम्मिस्सारियट, प० 388।

3 बले, पृ० 400 401, काम्मिस्सारियट, पृ० 388। इस युद्ध म बाबर क प्रधान मत्री मीर खलीफ़ा क पुत्र हिसामुद्दीन मीराक न बडा वीरता दिखलायी। उसन युद्ध कर गुजराती सना को रोक लिया जिसस मुहम्मद जमान को भगान म सुविधा हुई। (बनर्जी, हुमायू 1, प० 173)।

बहादुर शाह के भाई लतीफ खां का पुत्र महमूद, महमूद तनीव के नाम से, गुजरात का शासक बना (1538 1554 ई०)।

हुमायूं के गुजरात अभियान के समय उसका साम्राज्य

गुजरात अभियान मे हुमायूं को लगभग दो वर्ष लगे। इस बीच की मुगल साम्राज्य की घटनाओ म तीन प्रमुख है (1) कन्धार पर ईरानी आक्रमण, (2) मिर्जाओं का विद्रोह तथा (3) शेर खां का उत्कर्ष।

कधार पर ईरानी आक्रमण—हुमायूं के गुजरात अभियान के समय ईरान म कुछ राजनीतिक घटनाए हुइ, जिनका प्रभाव मुगल साम्राज्य पर भी पडा। ईरान के शासक शाह तहमास्प के मन्त्री शामून न शाह को मारकर उसके भाई साम मिर्जा को, जो हेरात का गवर्नर था, गद्दी पर बठाने का षडयन्त्र रचा किन्तु उसे सफलता नही मिली। शाह के भय से ईरान से भागकर उन लोगो न कन्धार पर आक्रमण किया। कन्धार के दुर्गपति ख्वाजा कला बेग ने बडी बहादुरी से आक्रमण-कारियो का सामना किया। सूचना पाकर कामरान भी तीन हजार अश्वारोहियो के साथ वहा पहुच गया। ईरानी पराजित हुए (फरवरी 1535 ई०)।[1] अप्रल, 1537 ई० मे शाह तहमास्प ने कन्धार पर पुन आक्रमण किया। ख्वाजा कला इस बार दुर्ग की रक्षा न कर सका। उसने शहर खाली कर दिया तथा दीवानखाने को उत्तम फर्श तथा वस्तुओ से सजाकर वह स्वय घटटा एव उच्च भाग से लाहौर

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 135 के अनुसार ख्वाजा कला ने आठ मास तक दुर्ग की रक्षा की।

2 अबुल फजल के अनुसार ख्वाजा कला न बादशाहो की व्यक्तिगत आवश्यकता सम्बन्धी वस्तुओ, भोजन सामग्री इत्यादि को सजाया तथा किले की कुजी शाह के पास भेज दी और कहलाया कि उसके पास किले की रक्षा करने के न साधन हैं न शक्ति है। इस कारण वह जा रहा है तथा एक घर सजाकर अतिथि को सौंपे जा रहा है। वह स्वय शाह के सामने उपस्थित नहा हुआ क्योंकि यह स्वामिभक्ति के विरुद्ध था (अकबरनामा 1 पृ० 135)। बदायूनी के अनुसार उसने दीवानखाने को खूब सजाकर बन्द कर दिया और बाहर निकल गया। वह आगे लिखता है कि शाह तहमास्प ने उसकी प्रशसा की तथा कहा कि "कामरान मिर्जा का भवन बडा ही उत्तम है।" (मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 347 48)। निजामुद्दीन अहमद लिखता है कि वह एक 'चीनीखाना' जो बहुत ही सजाकर तैयार किया था, उत्तम फर्श इत्यादि से सजाकर चला गया। श्री डे न चीनीखाना को चीनी मिट्टी का बना कहा है। (तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 61) अबुल फजल न चीनीखाने का उल्लेख नही किया है।

पहुचा। कामरान उसकी कायरता से क्रुध हुआ तथा एक महीने तक उसने उसे अभिवादन की अनुमति नहीं दी। तयारी कर कुछ दिन पश्चात् उसने मिर्जा हैदर को लाहौर शासन हेतु नियुक्ति किया तथा कधार पर पुन आक्रमण किया।

कधार विजय के पश्चात् शाह तहमास्प ने कधार का शासन बुदाग खा काचार को सौंप दिया तथा ईरान लौट गया। कामरान ने वहा पहुचकर क़िले का अवरोध किया। बुदाग खा किला समर्पित कर वापस चला गया।[1] इस तरह ईरान के शाह से कन्धार की रक्षा करने का श्रेय कामरान को प्राप्त हुआ।

मिर्जाओं का विद्रोह—मुहम्मद जमान मिर्जा के अतिरिक्त मुहम्मद सुल्तान ने भी हुमायू को चैन नहीं लेने दिया। हुमायू के राज्य के प्रारम्भिक वर्षों में उसने मुहम्मद जमान मिर्जा के साथ मिलकर दो बार विद्रोह किया था। दूसरी बार वह अधा बना दिया गया तथा मुहम्मद जमान के ही साथ बन्दीगृह में रखा गया। मुहम्मद जमान के वहा से निकल भागने के पश्चात वह भी भाग गया तथा कहीं छिपा रहा। गुजरात अभियान में हुमायू की व्यस्तता से लाभ उठाकर मुहम्मद सुल्तान मिर्जा ने विरोध करने का विचार किया। वह स्वय तो अधा बना दिया गया था किन्तु उसके कई पुत्र थे[2] जो इधर उधर धूमधाम किया करते थे। जुलाई-अगस्त 1536 ई० में मुहम्मद सुल्तान कन्नौज की तरफ बढा। उसने कन्नौज तथा बिलग्राम पर अधिकार कर लिया। अपने पुत्रों को उसने अन्य स्थानों पर अधिकार करने के लिए भेजा। इस तरह उलुग मिर्जा को जौनपुर की तरफ तथा शाह मिर्जा को कडा मानिकपुर की तरफ भेजा। मिर्जा हिन्दाल एक सेना लेकर अन्य अमीरों के साथ इनके विरुद्ध बढा। कन्नौज के निकट हिन्दाल ने गगा नदी पार किया। यहा युद्ध हुआ जिसमें भीषण आधी के कारण शत्रु तथा मित्र का अन्तर कर पाना कठिन हो गया। सुल्तान मिर्जा जौनपुर की तरफ भागा। हिन्दाल ने बिलग्राम पर अधिकार कर लिया। इसी समय हुमायू के राजधानी में लौटने की सूचना मिली जिससे विद्रोही और भी हताश हो गये। हिन्दाल मिर्जा ने सुल्तान मिर्जा तथा उसके पुत्रों को दूसरी बार भी पराजित कर दिया तथा जौनपुर पर अधिकार कर लिया। विद्रोही बगाल की तरफ भाग गये।[3] इस तरह हिन्दाल ने मुग़ल साम्राज्य की एक कठिन समय में सहायता की।

शेर खा का उत्कर्ष—हुमायू तथा शेर खा के बीच चुनार की सन्धि का वर्णन

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 135-36,, तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 61।

2 उसके 6 पुत्रों का उल्लेख मिलता है। उलुग मिर्जा, शाह मिर्जा, मुहम्मद मिर्जा, इबराहीम मिर्जा, मसूद हुसेन मिर्जा तथा आकिल मिर्जा।

3 जौहर (स्टीवर्ट, पृ० 9-10) लिखता है कि ये लोग भागकर पूर्निया की तरफ चले गये।

चौथे अध्याय मे किया जा चुका है। चुनार से आगरा लौटने के पश्चात् हुमायू ने गुजरात पर आक्रमण किया। इस तरह शर खा को अपनी शक्ति वढान के लिए लगभग चार वप (1532 36 ई०) का समय मिल गया। इस बीच उसन अपने का विहार का शासक ही नही बल्कि अफगाना का एक मात्र नता भी बना लिया।

दौरा के युद्ध के पश्चात् महमूद लादी का प्रभुत्व समाप्त हो गया तब शेर खा अफगानो का एकमात्र नेता बन गया। उसने अफगाना को सेना म भरती किया तथा उन्ह अफगाना क लिए प्राण देन का प्रोत्साहित किया। अब्बास खा लिखता है कि बहुत-से अफगान जो अपनी दुरव्यवस्था के कारण साधु हो गय थे, पुन शर खा की सना म भर्ती हो गये। शेर खा न अफगाना को सैनिक होने के लिए विवश किया तथा जो अफगान सनिक वनन का तयार नही हुए उन्ह उसन मरवा डाला।[1]

चुनार की सधि के परिणामस्वरूप शेर खा का लडका कुतुब खा 500 अफगान सनिको के साथ हुमायू के साथ मालवा गया था। शेर खा इससे चिन्तित था तथा उसे किसी न किसी तरह वापस बुलाना चाहता था। उसकी आज्ञा से कुतुब खा अपने सनिको के साथ मन्दसौर से हुमायू को छोडकर भाग आया। इसस शेर खा को शान्ति मिली। वह जानता था कि उसका पुत्र वास्तव म हुमायू के पास एक बन्धक के रूप मे था तथा उसके मुगल विरोधी कार्यों का बदला उसके पुत्र से लिया जाएगा। सम्भव है कि शेर खा न अपने लडके को बहादुर शाह के कहन स ही बुला लिया हो।[2] इसी बीच शेर खा न काला पहाड की विधवा लडकी बीबी फतेह मलिका से विवाह कर उसका धन प्राप्त कर लिया, किन्तु विवाह के पश्चात् उसने उसके साथ अच्छा व्यवहार नही किया।[3]

आन्तरिक सगठन पूण कर शेर खा ने अपनी पूर्वी सीमा पर दृष्टि डाली। नुसरत शाह की मृत्यु (939 हि, दिसम्बर, 1532 इ०) के पश्चात बगाल कठिन

---

1 तारीखे शेरशाही, इलियट और डासन, 4, पृ० 352।

2 *कानूनगो, शेरशाह,* पृ० 112।

3 अब्बास खा के अनुसार बीबी फतेह मलिका न शेर खा को तीन सौ मन सोना दिया। शेर खा न उसे दो परगने मददेमाश के तौर पर उसके खच के लिए दिये। (इलियट और डासन, 4 पृ० 355 तथा इस विवाह के वणन के लिए पृ 352 55) । डा० कानूनगो शेर खा के इस काय को निन्दा करते हैं। व लिखत है, "This is an indefensible act of spoliation of a helpless woman and deserves unqualified condemnation (शेरशाह पृ० 111)।

परिस्थिति से गुजर रहा था। उसकी मृत्यु के पश्चात उसका लडका अलाउद्दीन फिरोज शाह गद्दी पर बठा। कि तु उसका शासन अधिक दिन नही रहा तथा चार महीन के शासन के पश्चात् महमूद शाह न उसे मार डाला और स्वय बगाल का शासक बन बठा (मई 1533 ई०)। वह पूणतया अयोग्य था तथा परिस्थिति को सुधारन म असमथ था। इस बीच पुतगाली बगाल म आ चुके थे तथा वे बगाल की कठिनाई म लाभ उठाकर अधिक स अधिक सुविधाए प्राप्त करना चाहते थ। महमूद शाह के राजत्व को हाजीपुर का गवनर मखदूम आलम स्वीकार करन का तैयार नही था क्योकि वह उसे नुसरत शाह के पुत्र का हत्यारा समझता था। महमूद न मुगर के हाकिम कुतुब खा के नेतत्व म एक सेना बिहार पर आक्रमण करन क लिए भेजी। शेर खा अफगाना के पारस्परिक झगडा को सुलझान म लगा था। उसन सना इकट्ठी की तथा प्रारम्भ म एसा दिखाया कि वह कुतुब खा से युद्ध करन क लिए तैयार नही है। एक दिन उसन अचानक कुतुब खा की सेना पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध म कुतुब खा मारा गया तथा उसकी सेना हाथी, तोपखाना तथा कोष छाडकर भाग गयी। शेर खा ने अपने पुराने मित्रो, शेख इस्माइल सूर तथा हामिद खा ककर को उनकी इस युद्ध मे प्रदर्शित वीरता के उपलक्ष म क्रमश शुजात खा तथा सरमस्त खा की उपाधि दी।[1]

महमूद शाह ने एक दूसरी सेना मखदूम आलम के विरुद्ध भेजी। शेर खा न अपन मित्र मखदूम आलम के सहायताथ मिर्जा हुसन को भेजा। मखदूम आलम ने अपनी सभी सम्पत्ति शेर खा के पास सुरक्षित रखने के लिए भेजा और कहलाया कि यदि अपनी विजय हुई तो वह इसको वापस ले लेगा। इस युद्ध म मखदूम आलम मारा गया। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका सचित कोष शेर खा को प्राप्त हो गया जो उसकी शक्ति के प्रसार के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ।

शेर खा के उत्कप से नुहानी तथा जलाल खा सतक हो गय। किसी भी तरह शेर खा को अपन अधीन रखने की आशा न देखकर जलाल खा नुहानी अमीरो तथा सना के साथ भागकर बगाल चला गया (सितम्बर 1533 ई०)। महमूद ने कुतुब खा के पुत्र इब्राहीम खा के नेतृत्व म एक सेना शेर खा के विरुद्ध भेजी। उसका लक्ष्य जलाल को पूण रूप से बिहार म स्थापित करने का था। सूरजगढ नामक स्थान पर भीषण युद्ध हुआ (1534 ई०)[2] जिसम शेर खा विजयी हुआ। इस

1 कानूनगो, शेरशाह प० 83 85, स्टीवट, हिस्ट्री आफ बगाल, प०76।

2 इलियट और डासन, 4, प० 334।

3 वही, पृ० 441 42, कानूनगो, शेरशाह प० 98-105।

विजय ने शेर खा को बिहार का वास्तविक शासक बना दिया।[1]

अनुकूल समय देखकर शेर खा ने बगाल पर आक्रमण करने के लिए योग्य सेनापतियो के अधीन अपनी सेना भेजी (1535 ई० के मध्य म)। वह स्वय परिस्थिति का अवलोकन करता रहा क्योकि बहादुर शाह पराजित हो चुका था तथा शेर खा को भय था कि कही हुमायू शीघ्र आगरा न लौट आए। उसे यह भी सन्देह था कि कही सुल्तान महमूद शाह हुमायू से सहायता की प्राथना न करे। यह निश्चय हो जाने पर कि हुमायू इधर नही लौटेगा शेर खा स्वय भी (जनवरी 1536 ई० के मध्य म) बगाल के अभियान पर चल पडा। उसकी सेना म 1,500 नाव तथा 1,500 हाथी भी थे।

तेलियागढी के निकट पुर्तगालियो ने जो महमूद शाह की सहायता कर रहे थे, उसे रोकने का प्रयत्न किया। शेर खा ने उन्हे धोखा दिया तथा अन्य माग से बगाल म प्रवेश कर गया। बगाल की सेना राजधानी की रक्षा के लिए वापस आयी। शेर खा ने गौड को घेर लिया। महमूद शाह को विवश होकर शेर खा को तेरह लाख स्वण दीनार देकर उससे सधि करनी पडी। इसके अतिरिक्त शेर खा को 90 मील लम्बी तथा लगभग 30 मील चौडी भूमि भी प्राप्त हुई।[2]

शेर खा ने प्रारम्भ से ही बहादुर शाह को अपना मित्र बनाने का प्रयत्न किया। दोनो हुमायू के शत्रु थे तथा दोनो की दृष्टि आगरा के तख्त पर थी। इस कारण दोनो एक दूसरे को इस लक्ष्य से सहायता दे रहे थे कि एक दक्षिण-पश्चिम से तथा दूसरा पूव से मुगल साम्राज्य पर आक्रमण करे। अबुल फजल लिखता है कि सुल्तान बहादुर शाह ने शेर खा के पास अनुभवी दूत तथा उपहार भेजकर मित्रता स्थापित की। यही नहीं, बाद म उसने व्यापारियो द्वारा शेर खा की धन से सहायता की।[3] यह धन कदाचित् इस कारण दिया गया था कि शेर खा इसका प्रयोग पूव म विद्रोह करने के लिये करे जिससे हुमायू का ध्यान गुजरात अभियान से हट जाय। बहादुर शाह की पराजय के पश्चात् उसके सेना के बहुत से सिपाही शेर खा की सेना मे भरती हो गये।[4] इस तरह एक तरफ तो अरब सागर म बहादुर शाह का अन्त हुआ और दूसरी तरफ बगाल की खाडी म शेर खा का उदय

---

1 "The victory of Surajgarh gave an air of legitimacy to Sher Khan's virtual assumption of the sovereignty of Bihar" (कानूनगो, शेरशाह, पृ० 105)।

2 कानूनगो, शेरशाह, पृ० 126 27।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 148।

4 इलियट और डासन, 4, पृ० 352।

हुआ।

1536 ई० के अन्त तक शेर खा ने अपनी शक्ति बढा ली थी। बिहार मे वह पूण शक्तिशाली था। बगाल का शासक पराजित हो चुका था तथा शेर खा बगाल पर भी अधिकार करने की योजना बना रहा था। बहादुर शाह की मत्यु के पश्चात् तो वह मुगल विरोधी आन्दोलन का एकमात्र नेता रह गया था। लाद मलिका तथा फतेह मलिका से विवाह कर, मखदूमुल मुल्क के धन का उत्तराधिकारी बनकर तथा बगाल के शासक से धन वसूल कर उसन अपनी आर्थिक स्थिति ठीक कर ली थी। धन की सहायता से उसने सना सगठित कर ली। इस सेना मे अधिकतर अफगान थे, जिनमे कुछ मुगलो से युद्ध भी कर चुके थे तथा जिनम मुगलो को पराजित करने की लालसा ही नहीं थी बल्कि लक्ष्य भी था। य सनिक जोश से परिपूण थे। शेर खा के सहयोगियो म आजम हुमायू सरवानी, मिया बीबन, कुतुब खा, मारूफ फमूली इत्यादि प्रतिभाशाली अमीर भी थे। शेर खा ने अपने कार्यों तथा व्यवहार से उन सभी के मन म विश्वास पदा कर लिया था और वे अपने नेता के लिए हर तरह का बलिदान करने को तैयार थे। इस तरह हुमायू का गुजरात अभियान शेर खा के उत्कष के लिए एक वरदान बन गया।

7 शेर खाँ से संघर्ष

गुजरात अभियान से हुमायूँ निराश तथा दुःखी होकर आगरा लौटा। गुजरात तथा मालवा जिस तरह उसके हाथ से निकल गये वह किसी भी सम्राट के लिए लज्जास्पद था। आखिर गुजरात आक्रमण का परिणाम क्या हुआ? जहाँ तक राज्य का प्रश्न था गुजरात पर बहादुर शाह का अधिकार हो गया, मालवा पर कद्रशाह ने अधिकार कर लिया तथा बहादुर शाह की पराजय के पश्चात् राणा विक्रमादित्य ने चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया।[1] इस तरह गुजरात अभियान के पूर्व की परि-स्थिति पुनः लौट आयी। इसके अतिरिक्त राजनीतिक दृष्टि से मुगल सम्राट के मान तथा मर्यादा को गहरा धक्का लगा। उसकी असफलता के बाद उसकी कमजोरी तथा भूल और अधिक बढ़कर पूरे भारत में फैल गयी। इन कारणों से हुमायूँ के मन में एक ऐसा विषाद घर कर गया जिसे हटाना सरल न था।

आगरा लौटकर भी हुमायूँ के मन से गुजरात का मोह नहीं गया तथा राज-धानी और साम्राज्य का उचित प्रबन्ध कर वह पुनः गुजरात पर आक्रमण कर उसे अपने अधीन करना चाहता था।[2] इसी समय एक अन्य समस्या ने उसे आकर्षित किया। अहमदनगर के शासक बुरहान निजाम शाह ने हुमायूँ को पत्र भेजकर सूचित किया कि गुजरात, खानदेश, बीजापुर तथा बरार के शासक मिलकर उसके राज्य पर आक्रमण करना चाहते हैं। उसने हुमायूँ से प्रार्थना की कि जिस समय इनकी सेनाएँ आक्रमण करें उसी समय हुमायूँ इन राज्यों पर आक्रमण कर दे।[3] यह निमंत्रण बहुत ही आकर्षक था क्योंकि इस अभियान की सफलता से गुजरात अभियान की लज्जा तथा दुःख दूर हो सकता था, किन्तु कई कारणों से हुमायूँ ने इसे स्वीकार नहीं किया। अहमदनगर की सहायता के लिए एक बड़ी सेना की आवश्यकता थी। हुमायूँ के पास उस समय सेना तैयार नहीं थी। उसके साधनों की पूर्ति आगरा पर निर्भर थी तथा अफगानों का संगठन इतना भीषण हो गया

1 फ़िरिश्ता के अनुसार हुमायूँ ने स्वयं गुजरात से लौटते समय राणा को चित्तौड़ का राज्य दे दिया था। ऐतिहासिक दृष्टि से यह सत्य नहीं है। मांडू से हुमायूँ चित्तौड़ के मार्ग से लौटा अवश्य था, किन्तु राणा ने इसके पूर्व ही चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया था। [illegible] अकबर दि ग्रेट मुग़ल पृ० 57 58 बनर्जी, हुमायूँ 1 पृ० 167 68।

2 अकबरनामा 1 पृ० 147।

3 फ़िरिश्ता जिल्द 3 पृ० 228 29।

जा रहा था कि उसका उचित प्रबन्ध किये बिना दक्षिण और पश्चिम के राज्यो पर आक्रमण करना बुद्धिमानी नही थी। इसके अतिरिक्त हुमायू का अवसादी मन गुजरात तथा मालवा की घटनाओ से इतना दु खी तथा निराश था कि उस दिशा मे पुन आक्रमण करने का उस साहस नही हुआ।

हुमायू के आगरा मे रुकने का कारण

हुमायू आगरा मे लगभग एक वर्ष तक रुका रहा।[1] इस समय शेर खा शक्ति का सचय कर रहा था। हुमायू के गुजरात अभियान से लौटने का एक प्रमुख कारण शेर खा की गतिविधि भी थी। फिर तत्काल शेर खा पर आक्रमण करने के स्थान पर उसने अपना समय क्यो बरबाद किया ? बहादुर शाह ने गुजरात पर पुन अधिकार कर लिया था। हुमायू आगरा से उसकी गतिविधि पर दृष्टि रखना चाहता था। विद्रोही मिर्जा भी साम्राज्य के इधर-उधर चक्कर काट रहे थे तथा वे कभी भी राजधानी मे प्रकट हो सकते थे। हुमायू ने अस्करी को सम्भल की तरफ मिर्जाओ के विरुद्ध भेजा किन्तु उनका पता नही चला।[2]

फरवरी 1537 ई० मे बहादुर शाह की मृत्यु हो गयी और मुहम्मद जमान मिर्जा ने गुजरात की गद्दी पर अधिकार करने का प्रयत्न किया। मुहम्मद जमान मिर्जा जैसे व्यक्ति का गुजरात पर शासन करना खतरे से खाली नही था। इसी बीच अहमद नगर का निमन्त्रण भी पहुचा। हुमायू पूर्व या पश्चिम के कार्यक्रम को निश्चित नही कर पा रहा था।

इसी समय जुनायद बरलास की मृत्यु हो गयी। यह योग्य व्यक्ति था तथा जौनपुर के शासक की हैसियत से उसने मुग़ल साम्राज्य की पूर्वी सीमा पर नियन्त्रण तथा शान्ति बनाये रखी थी। उसकी मृत्यु के पश्चात् हुमायू ने इस स्थान पर हिन्दू बेग को नियुक्त किया। यह एक बडा उत्तरदायित्वपूर्ण पद था, क्योकि हिन्दू बेग को साधारण गवर्नर के कार्य के अतिरिक्त शेर खा पर भी दृष्टि रखनी थी। हुमायू ने हिन्दू बेग को आज्ञा दी कि वह शेर खा का पूरा समाचार भेजे।

अब्बास खा लिखता है कि हिन्दू बेग के आगमन का समाचार पाकर शेर खा ने पेशकश भेजकर नये गवर्नर से निवेदन किया कि उसने सम्राट को जो आश्वासन दिया था उससे न तो वह विचलित हुआ था और न उसने मुग़ल राज्य मे हस्तक्षेप ही किया था। उसने हिन्दू बेग से प्रार्थना की कि वह सम्राट को सूचित कर दे कि वह उधर न आये। उसने अपने को एक मुग़ल सेवक एव राजभक्त घोषित किया।

---

1 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज पृ० 133, मुन्तखबुत्तवारीख 1, पृ०348, तबक़ाते अकबरी, डे, 2, पृ० 61।

2 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 11।

शेर खा के पेशकश को देखकर हिंदू बग बडा प्रसन्न हुआ तथा उसन शेर खा के वकील के सामने ही कहा कि शेर खा स कह दो कि जब तक 'मैं जीवित हूँ वह निश्चिन्त रहे। उसे कोई भी हानि नही पहुचा सकेगा।' उसी समय शेर खा के वकील के सामने ही उसने हुमायू के पास पत्र लिखवाया कि, 'शेर खा आपके निष्ठावानो म है। वह हजरत बादशाह के नाम का खुत्वा पढवा तथा सिक्का चलवा रहा है। वह अपने राज्य की सीमा के आगे नही बढा है। सम्राट के वापस होने के बाद उसन कोई अनुचित काय नही किया है जिससे उसकी शिकायत हो।''[1] इस सूचना को पाकर हुमायू पूव की ओर से निश्चिन्त होकर आगरा म रुका रहा।

हुमायू ने गुजरात अभियान स आकर सेना एकत्रित करना प्रारम्भ कर दिया। सैनिको को शिक्षित करने का भी उसने प्रबन्ध किया तथा उनकी शिक्षा के लिए उसने बदख्शा के आदमियो को नियुक्त किया।[2] इसस मालूम होता है कि परिस्थिति की ओर स वह सचेत था। हिन्दू बेग की रिपोट के सम्बन्ध म हमारे सम्मुख दो प्रश्न आते है। प्रथम, क्या हिन्दू बेग की रिपोट सही थी? तथा दूसरा, क्या हुमायू को उसे स्वीकार करना चाहिए था?

अब्बास खा स्पष्ट लिखता है कि हिन्दू बग से रिश्वत स्वीकार कर शेर खा की इच्छा के अनुसार रिपोट भिजवा दी अर्थात हिन्दू बग की रिपोट सही नही थी। रिपोट को पढने से पता चलता है कि हिन्दू बेग ने उस इस तरह लिखवाया था कि वह दोषी न ठहराया जा सके। शेर खा न अपने नाम स न खुत्बा पढवाया था और न अपने नाम का सिक्का ही चलवाया था। उसने मुगल राज्य पर आक्रमण भी नही किया था। फिर उसे विद्रोही कहना सही नही था। हुमायू ने हिन्दू बेग की रिपोट को स्वीकार कर लिया। हिन्दू बेग पर हुमायू का सदा विश्वास बना रहा। इस कारण उसने हिन्दू बेग को जौनपुर के गवनर के पद पर स्थाई कर दिया, अमीरुल उमरा की उपाधि दी तथा अलकृत कुर्सी पर बैठने का सम्मान प्रदान किया।[3]

हिन्दू बेग की रिपोट को स्वीकार करना हुमायू के लिए ठीक नही था। यह सही है कि शेर खा ने अपने नाम से न खुत्बा पढवाया और न सिक्का चलाया था किन्तु उसने कई ऐसे काय किये थे जो उसकी नीति को स्पष्ट प्रकट कर रहे थे। गुजरात अभियान म शेर खा के पुत्र कुतुब खा का अपनी सेना के साथ मुगल सना स भाग आना क्या अपराध नही था? शेर खा ने बिहार की जागीर तथा नये विजित प्रदेशो के लिए दिल्ली को कोई कर या भेट नही दिया था। इसके अतिरिक्त, एक

1 तारीख शेरशाही इलियट तथा डासन 4, पृ० 356।

2 अहमद यादगार, सलातीने अफगेना।

3 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 348।

एस व्यक्ति के लिए जो अपने को मुगलो का अमीर कहे, एक स्वतन्त्र राज्य(बगाल) पर आक्रमण करना, क्या यह स्पष्ट नही कर रहा था कि शेर खा मुगलो को चकमा दे रहा था ? हिन्दू बेग ने गुजरात मे अस्करी को स्वतन्त्र होने का परामर्श दिया था। ऐसे व्यक्ति पर इतना विश्वास करना उचित नही था। हिन्दू बेग पर हुमायू का इतना विश्वास क्यो था, यह बताना कठिन है।

वास्तव मे हुमायू परिस्थिति की भयकरता का अनुमान न लगा सका। वह आनन्दमय जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति था। किसी कार्य की महत्ता समझकर उस पर तत्काल कार्य करना उसके लिए कठिन था। किसी कार्य के प्रारभ करने मे वह अधिकतर देर करता था। इसी कारण गुजरात अभियान मे वह कई स्थानो मे रुका रहा। बाद मे बगाल मे भी इसी तरह उसने कई महीने व्यर्थ बिता दिये। इस तरह दो कठिन अभियानो के बीच आराम करना उसकी प्रकृति बन गयी थी। इसके अतिरिक्त हुमायू किसी भी अभियान या विशेष कार्य करने का निश्चय तत्काल नहीं कर पाता था। फिरिश्ता का यह कथन कि हुमायू ने अफीम की मात्रा बढा दी थी जिससे राजसी कार्यों मे उसकी दिलचस्पी कम हो गयी,[1] केवल यह सकेत करता है कि गुजरात अभियान से प्राप्त अवसाद के कारण उसने अधिक मात्रा मे अफीम खाना प्रारम्भ कर दिया था। निजामुद्दीन तो स्पष्ट लिखता है कि गुजरात से लौटकर हुमायू ने एक वर्ष आमोद प्रमोद मे व्यतीत किया।[2] उपर्युक्त विवेचन से यह साराश निकलता है कि हुमायू, जो प्रकृति से आलसी और आरामतलब था, हिन्दू बेग की रिपोर्ट के पश्चात् आराम से बैठ गया तथा उसने तब तक आखे नही खोली जब तक शेर खा ने बगाल पर आक्रमण नहीं किया।

शेर खा की गतिविधि

हिन्दू बेग के आश्वासन से शेर खा को विश्राम हो गया कि हुमायू अब कुछ दिन उस पर आक्रमण नही करेगा। इस बीच उसने बगाल पर आक्रमण कर उस पर अधिकार करने का निश्चय किया। पिछले बगाल अभियान के समय पुर्तगालियो ने बगाल के शासक महमूद की सहायता की थी जिससे शेर खा को बडी असुविधा हुई थी। ये लोग गुजरात के बहादुर शाह से युद्ध मे लगे थे तथा उसकी मृत्यु के पश्चात उन्हे तुर्की के सुल्तान सुलेमान तथा बहादुर शाह के उत्तराधिकारी के सयुक्त आक्रमण का भय था। इस कारण पुर्तगाली सुल्तान महमूद की सहायता करने की स्थिति मे नहीं थे। यह समय बगाल पर आक्रमण करने के लिए उपयुक्त था। शेर

---

1 फिरिश्ता, ब्रिग्ज, 2, पृ० 83।

2 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 61।

खा ने कर न देने का दोष लगाकर बगाल पर आक्रमण कर दिया।[1] महमूद के लिए शेर खा का सामना करना सरल नही था। वह भागकर गौड म जा छिपा। शेर खा की सेना न नगर की ओर प्रस्थान किया तथा उसके आसपास के स्थानो पर अधिकार कर लिया।

बगाल अभियान

हुमायू का शेर खा के अभियान की सूचना मिली। उसन निश्चय कर लिया कि अब बगाल पर आक्रमण करना ही चाहिए।[2] आक्रमण के पूव उसन राजधानी का प्रबन्ध करना उचित समझा तथा उसने साम्राज्य के भिन्न भिन्न भागा म योग्य व्यक्तिया को नियुक्त किया। इस तरह दिल्ली तथा उसके निकट के स्थाना की रक्षा तथा शासन का उत्तरदायित्व मीर फख्र अली को दिया गया। आगरा म मीर मुहम्मद बख्शी को, कालपी मे यादगार नासिर मिर्जा का और कन्नौज तथा उसके निकट के भागो म बाबर के दामाद नूरुद्दीन मिर्जा को नियुक्त किया गया।[3]

इस तरह राजधानी तथा उसके निकट के भागा का शासन व्यवस्थित करने के पश्चात् हुमायू अस्करी तथा हिन्दाल के साथ 27 जुलाई 1537 ई० को आगरा से रवाना हुआ।[4] उसके साथ उसकी बेगम तथा साम्राज्य के प्रमुख अमीर रूमी खा तरदी बेग, बैराम खा कासिम हुसेन खा उजबेक, जाहिद बेग, जहागीर कुली बेग इत्यादि थे। अधिकतर अमीर नदी के माग से रवाना हुए किन्तु सेना का मुख्य भाग स्थल माग से चला। हुमायू कभी जल माग से नाव पर चलता था तथा कभी घोड़े पर स्थल माग म।

हुमायू के आक्रमण की सूचना पाते ही शेर खा ने इसका प्रतिवाद किया।

---

1 कम्पोस के अनुसार महमूद ने कर देना अस्वीकार किया जिसके उपरान्त शेर खा ने आक्रमण कर दिया। (हिस्ट्री आफ पुर्तगीज इन बगाल, पृ० 40)। डा० कानूनगो के अनुसार उसने महमूद शाह के विरुद्ध अक्तूबर, 1537 ई० के मध्य म अतिक्रमण किया जब हुमायू आगरा म था(शेरशाह, पृ०136)।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 147, मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 348, फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 83 85।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 149।

4 हुमायू किस तिथि को रवाना हुआ, इसम मतभेद है। अबुल फज़ल ने तिथि नही दी है। निज़ामुद्दीन अहमद के अनुसार 14 सफर 942 हिजरी 12 अगस्त 1535 ई० (तबकाते अकबरी डे, 2, पृ०62), फिरिश्ता के अनुसार 18 सफर, 943 हिजरी (27 जुलाई 1537 ई०) (फिरिश्ता फा०, पृ० 216), ब्रिग्स के अनुवाद म (भाग 2, पृ०83) आठ सफर है जो गलत है।

उसने कहा कि उसने मुगलो के विरुद्ध कोई भी कार्य नही किया है। वह न तो अपनी पश्चिमी सीमा के आगे बढा है और न मुगल साम्राज्य के किसी अन्य क्षेत्र मे हस्तक्षेप ही किया है। इसलिए सम्राट को उसका विरोध नही करना चाहिए। हुमायू ने इस प्रतिरोध का कोई भी उत्तर नहा दिया और आगे बढ गया।

हुमायू के अभियान स शेर खा चिन्तित हुआ। उसने गौड के घेरे का प्रबन्ध किया तथा वहा खवास खा को नियुक्त किया। चुनार के दुर्ग की रक्षा का उत्तरदायित्व उसने अपने पुत्र कुतुब खा तथा अन्य अफगानो को सौपा। शेर खा स्वय भरकुण्डा[1] मे अफगान परिवारो के साथ चला गया। वाहर स वह दोनो दुर्गों पर तथा हुमायू की गतिविधि पर दृष्टि रख सकता था।

आगरा से चलकर हुमायू नवम्बर 1537 ई० मे चुनार पहुचा।

मुहम्मद जमान मिर्जा का समपण

आगरा म हुमायू ने अपनी बहन मासूमा सुल्तान बेगम (मुहम्मद जमान मिर्जा की स्त्री) की प्रार्थना पर मुहम्मद जमान को क्षमा कर दिया था। चुनार के समीप मुहम्मद जमान हुमायू के खेम म आया। मिर्जा अस्करी तथा हिन्दाल ने उसका स्वागत किया तथा दूसरे दिन एक ही दरबार म उसे दो बार खिलअत, पेटी एव घोडे प्राप्त हुए। हुमायू का मुहम्मद जमान के प्रति यह आदर उसके बहनोई होने के कारण था। शासन की दृष्टि स इस तरह का व्यवहार कमजोरी का प्रतीक था।

चुनार का घेरा

जिस समय हुमायू चुनार दुर्ग को घेरे हुए था उसी समय शेर खा की सेना गौड को घेरे हुए थी। गौड म बगाल के शासक का राजकोष था। हुमायू के बगाल पहुचने क पूव यदि शेर खा गौड पर अधिकार कर लेता तो उसे यह कोष,

---

1 यह दुर्ग आधुनिक बीरभूमि जिले म स्थित था। आइने अकबरी (भाग 2, पृ० 153) के अनुसार भरकुण्डा शरीफाबाद सरकार का एक परगना था। देखिए ब्लाखमैन का लेख, जनल एशियाटिक सोसाइटी आफ बगाल 1873 ई०, पृ० 223, तथा बीम्स का लेख जनल रायल एशियाटिक सोसाइटी, 1896 ई० । यह स्थान चुनार स 50 मील दक्षिण 24 34′ उत्तर, 83 34 पूर्व स्थित है। होदीवाला 1, पृ० 450, इलियट और डासन, 4, पृ० 350 मे इस बहरकुण्डा कहा गया है, जो गलत है।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 149 50, तथा जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 13।

भू भाग तथा यश भी प्राप्त होता, जिससे उसकी शक्ति बढ़ जाती। यही सब विचार कर हुमायूं के ज्येष्ट अमीर दिलावर खां इत्यादि ने परामर्श दिया कि चुनार विजय की चिन्ता न की जाए तथा मुगल सेना आगे बढ़े जिससे शेर खां के गौड़ के कोष को हस्तगत करने के पूर्व वहां पर पहुंच जाए। इसके विपरीत कुछ अन्य अमीरों की राय थी कि पहले चुनार को जीत लिया जाए उसके बाद आगे बढ़ा जाए। जब हुमायूं ने खानखाना युसुफ खैल से पूछा तो उसने कहा "नौजवानों की राय है कि प्रथम चुनार पर अधिकार किया जाए, ज्येष्ठों की राय है कि गौड़ में अत्यधिक कोष है तथा गौड़ पर प्रथम अधिकार करना उपयुक्त तथा लाभकर है। इसके पश्चात् चुनार पर अधिकार करना सरल होगा।" हुमायूं ने इसका उत्तर दिया कि मैं नौजवान हूं तथा नौजवानों का परामर्श स्वीकार करता हूं। मैं चुनार के दुर्ग को अपने पीछे नहीं छोड़ूंगा।[1]

हुमायूं को चुनार पर अधिकार करने में लगभग 6 महीने लगे। इस बीच शेर खां ने गौड़ पर अधिकार कर उसके कोष को सुरक्षित स्थान पर हटा दिया तथा कुछ दिनों में वह हुमायूं को पराजित करने में सफल हुआ। इस पृष्ठभूमि में कुछ आधुनिक विद्वानों ने हुमायूं के इस निश्चय की आलोचना की है तथा कुछ ने इसका समर्थन किया है।

डॉ० बनर्जी ने हुमायूं के निश्चय का समर्थन किया है।[2] उनके अनुसार (1) हुमायूं को गुजरात का बहुत ही कटु अनुभव था। चम्पानीर के दुर्ग पर अधिकार किए बिना ही वह आगे कैम्बे तक बढ़ गया था। उस अभियान में हुमायूं को प्रारंभ में तो विजय लाभ हुआ, किन्तु कुछ ही दिनों के बाद पूरा प्रान्त उसके हाथ से निकल गया। हुमायूं इस भूल को दुहराना नहीं चाहता था। (2) शेर खां की दृष्टि में चुनार का बहुत महत्त्व था। पांच वर्ष पूर्व उसने मुगलों को चुनार समर्पण करने में आनाकानी की थी। चुनार विजय से अफगानों के दक्षिण बिहार को धक्का लगता। चुनार का कोष यदि हटाया नहीं गया था तो वह भी हुमायूं के हाथ लगने की आशा थी। (3) हुमायूं को यह आशा नहीं थी कि बंगाल का शासक महमूद इतना शीघ्र शेर खां द्वारा पराजित हो जायगा। (4) नवम्बर 1537 ई० में हुमायूं स्वयं अफगानों के विरुद्ध युद्ध कर रहा था और महमूद कहां तक शेर खां का सामना कर सकता और कहां तक नहीं, इसमें उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी।

---

1 तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 357, डार्न, हिस्ट्री आफ दि अफगान्स, पृ० 106। अकबरनामा तथा तबकाते अकबरी में इस परामर्श गोष्ठी का उल्लेख नहीं है। जौहर तथा फिरिश्ता ने भी इसका जिक्र नहीं किया है।

2 बनर्जी, हुमायूं, 1, पृ० 200 202।

हुमायू की महमूद म दिलचस्पी गौड के पतन के बाद तथा उसके हुमायू स मिलने के पश्चात प्रारम्भ होती है। (5) हुमायू शेर खा की योग्यता का ठीक मूल्याकन नही कर सका। (6) मखजाने अफगाना के लेखक का यह विचार सही प्रतीत होता है कि गौड पर आक्रमण करने का परामर्श हुमायू के अमीरो ने वहा के धन के लोभ स दिया न कि किसी और परिस्थिति के कारण। यदि हुमायू चुनार पर अधिकार किये बिना आगे बढ जाता तो महमूद की सहायता के लिए उसे बगाल को पार करना पडता। क्या युद्ध को उत्तरी भारत के अतिम छोर तक ले जाना ठीक था? विद्वान लेखक के अनुसार घटना के पश्चात् बुद्धिमान होना सरल है। हुमायू की वास्तविक भूल शेर खा का सही मूल्याकन न करना था। इसके अतिरिक्त बगाल के शासक द्वारा तत्काल सहायता का कोई अनुरोध नही किया गया था। इस कारण हुमायू ने आराम से कि तु अच्छी तरह चुनार के दुर्ग का घेरा प्रारम्भ किया।[1]

उपर्युक्त तर्कों के अतिरिक्त यह भी कहा जा सकता है कि यदि चुनार शेर खा के अधिकार मे रह जाता और हुमायू आगे बढ जाता तो उसकी सेना पर चुनार की तरफ से तथा बगाल की तरफ से एक साथ आक्रमण हो सकता था, जो अत्यन्त ही भयकर होता। चुनार का दुर्ग अफगानो की शक्ति का प्रतीक था। यह आगरा तथा पटना के बीच पडता था। सैनिक दृष्टि से इसका बहुत महत्त्व था। ऐसे दुर्ग को शेर खा के हाथ मे छोडना न्यायसगत नही था। इसपर अधिकार किये बिना बनारस-बक्सर मार्ग शेर खा के अधिकार म रहता जिससे उसकी शक्ति म वृद्धि होती।

हुमायू के निश्चय के विपक्ष म कहा जा सकता है कि गौड के पतन से शेर खा को धन तथा यश दोनो प्राप्त होता जिससे उसकी शक्ति बहुत अधिक बढ जाती। यही नही, विजय के उल्लास म उसकी सेना म उत्साह भी भर जाता। यदि हुमायू न आगे बढकर बगाल के शासक की सहायता की होती तो वह उसका परम मित्र बन जाता। बगाल तथा मुगल सम्राट दोनो मिलकर, दो तरफ से शेर खा के राज्य तथा शक्ति को चूर चूर कर सकते थे, क्योकि शेर खा की शक्ति का केन्द्र बगाल तथा मुगल साम्राज्य के बीच था। यह कहना सही नही है कि युद्ध को भारत के अन्तिम छोर तक ले जाना ठीक नही था। शेर खा पर आक्रमण करते समय [illegible] जाने की अधिक सम्भावना थी। हुमायू इस बात को जानता था। इसी कारण उसने अपनी राजधानी का ऐसा प्रबन्ध किया जिससे अधिक समय लगने पर भी कोई गडबडी न हो। यह तक कि हुमायू की महमूद म दिलचस्पी उसके मिलने के पश्चात् प्रारम्भ हुई, हुमायू की अदूरदर्शिता प्रदर्शित करता है।

1 बनर्जी, हुमायू, I, पृ० 202।

दोनो तरफ के तर्कों के अध्ययन से तथा बाद की घटनाओं से हम हुमायूं की वास्तविक भूल का अनुमान लगा सकते है। हुमायूं को शेर खां की योग्यता का ठीक अनुमान नही था। वह उसे एक विद्रोही मात्र समझता था। उसे यह आशा थी कि चुनार का दुर्ग बहुत जल्द उसके अधिकार में आ जाएगा किन्तु इस दुर्ग पर अधिकार करने में छ महीने लग गये। इस तरह चुनार की शक्ति का ठीक ज्ञान उसे नही हो सका।[1] सुल्तान महमूद इतना शीघ्र पराजित हो जाएगा, उसे इसकी आशा नही थी। ऐसा प्रतीत होता है कि हुमायूं का जासूसी विभाग उत्तम नहीं था, जिससे शेर खां की गतिविधि इत्यादि की ठीक सूचना उसे नहीं प्राप्त हो सकी। हुमायूं ने निश्चय करते समय एक भयंकर भूल की। ज्येष्ठ अमीरो से उसे यह नही कहना चाहिए था कि वह नौजवान है तथा नौजवानो के मत को ही स्वीकार करेगा। उसकी इस बात से वृद्ध तथा अनुभवी अमीरो को चोट लगी तथा उनके मन में यह विचार आना स्वाभाविक था कि सम्राट ने उनकी मानहानि की है। यदि हुमायूं ने चुनार के घेरे का उत्तरदायित्व किसी अन्य व्यक्ति को दे दिया होता तथा स्वयं बगाल की तरफ रवाना हो गया होता तो अधिक अच्छा होता। इसमें सेना के विभाजन का भय अवश्य था किन्तु उचित धन व्यय कर सेना एकत्रित कर कुछ महीने निश्चय ही बचाये जा सकते थे।

चुनार पर अधिकार

चुनार के दुर्ग पर अधिकार करने का उत्तरदायित्व रूमी खां को सौंपा गया। बहादुर शाह को त्यागने के पश्चात रूमी खां हुमायूं की सेवा में आ गया था। हुमायूं ने उसे मीर आतश का पद दिया। रूमी खां ने दुर्ग का निरीक्षण किया। उसने देखा कि खुश्की के भाग इतने दृढ थे कि सफलता मिलना कठिन था। दुर्ग के कमजोर स्थान का पता लगाने के लिए उसने एक अबीसीनियन दास कुलाफात को बुरी तरह बेंत से मारा। बुरी अवस्था में कुलाफात चुनार के दुर्गपति के पास गया और वहां उसने रूमी खां के व्यवहार की निंदा की और अपनी सेवाए चुनार के दुर्गपति को अर्पित की। अफगानो ने उसके प्रति सद्भावना दिखलायी उसके घावो की मरहम पट्टी की और दुर्ग की बहुत सी बातो की जानकारी उसे होने दी। कुलाफात के द्वारा रूमी खां को चुनार दुर्ग की आतरिक कमजोरियो का ज्ञान हो गया और उसी के अनुसार उसने दुर्ग पर अधिकार करने का प्रयत्न किया।

---

1 तारीखे एलचीए निजाम शाह के अनुसार हुमायूं चुनार दुर्ग को विजय किये बिना ही बगाल की तरफ जाना चाहता था कि, अलीकुली तापची ने, जो हुमायूं का विश्वासपात्र था, उससे कहा कि वह किले को अल्पकाल में ही जीत लेगा। हुमायूं उसकी बात में आ गया। रिज़वी, हुमायूं 2 पृ० 32।

कुलाफात की सूचना पर रूमी खा ने काय प्रारम्भ किया। उसकी योजना
तोपा की सहायता से अधिकार करने की थी। रूमी खा न नौकाओ पर एक
विला कोव या सरकोव तैयार कराया। यह एक तैरता हुआ तोपखाना
काफी ऊचा था। एसा प्रबन्ध था कि इस तोपखाने को ले जाकर किले के न
की दीवार उडायी जा सकती थी। ऐसा भी प्रबन्ध था कि उसी समय स्थल
से भी आक्रमण हो सके। सम्पूण प्रबन्ध के पश्चात् किले पर आक्रमण
भीषण युद्ध हुआ जिसम अफगाना न बडी वीरता दिखायी। सात सौ मुगल
गये तथा रूमी खा के नवनिर्मित सरकोव का एक भाग टूट गया। दूसरे दिन
मरम्मत हुई तथा मुगलो ने आक्रमण करने का पुन प्रबन्ध किया। दुग के अ
ने दुग को बचाना असम्भव जानकर दुग का समर्पित कर दिया।[1]

दुग के समपण के पश्चात् बहुत से अफगान सनिक बन्दी बनाय गय।
के अनुसार 300 तोपचियो के हाथ काट लिए गय जिससे व भविष्य म
अनुभव का प्रयोग न कर सकें। अबुल फजल तथा जौहर दोना लिखते ह कि
ने उन्ह क्षमा कर दिया था। जौहर इसका उत्तरदायित्व रूमी खा पर डालत
अबुल फजल के अनुसार मुईद बेग दूल्दाई न जो हुमायू का विश्वासपात्र
तरह उनके हाथ काटन की आना दी जस सम्राट की आना हा। दाना लि
कि हुमायू इसस बहुत रुष्ट हुआ तथा उसन उसे इसके लिए फटकारा। श
आय तथा क्षमा किय गय इन व्यक्तियो के साथ यह व्यवहार अनुचित था
कहना कि हुमायू की आना के विरुद्ध इनके हाथ काटे गय, यह प्रश्न उपस्थित
है कि हुमायू न उसकी आना का उल्लघन करन वाल व्यक्तियो को क्या
दिया ? यदि दण्ड नही दिया गया तो क्या यह उसकी मौन सहमति नही प्रकट
है ? क्या इसम मुगल सम्राट के अमीरा की अनुशासनहीनता नही प्रकट ह
किसी भी दृष्टि स हुमायू इस अत्याचार के लिए निश्चित ही उत्तरदायी था

1 चुनार दुग की विजय किस तरह हुई इसका वृहद तथा स्पष्ट वणन
कालीन इतिहासकारा म नही मिलता। अबुल फजल न अकबर
(भाग 1, प० 151) म इसका सक्षिप्त वणन किया है। निजा
अहमद ने अपन वणन म मुकाबिला कोव के निर्माण का विशष
किया है (तबकात अकबरी, डे 2, प० 63 64)। जौहर का वणन
अधिक है। उसन कुलाफात क भजन तथा आक्रमण का वणन कि
तजकिरतुल वाकयात, स्टीवर्ट, प० 12 14, तारीखे अलफी।

2 अकबरनामा, 1, प० 151। जौहर स्टीवर्ट, प० 14। अबुल फज
अनुसार हुमायू न दो हजार आदमियो को क्षमा कर दिया दुल्दाई न
लोगो के हाथ काटने की आना दी था। जौहर क अनुसार 300 तोप
के हाथ काट गय।

चुनार विजय के उपलक्ष में हुमायूं ने एक दरबार किया जिसमें उन अमीरों को जिन्होंने इसमें प्रमुख भाग लिया था, इनाम तथा खिलअत प्रदान किये गये। रूमी खाँ को उसकी बहादुरी के पुरस्कार स्वरूप चुनार का गवर्नर नियुक्त किया गया। दुर्भाग्यवश रूमी खाँ इसका उपभोग नहीं कर सका। कुछ ही दिनों में उसके मुग़ल साथियों ने ईर्ष्यावश उसे विष देकर मार डाला। उसकी मृत्यु के पश्चात् चुनार मीर बेग को प्रदान किया गया।[1]

रोहतास दुर्ग पर शेर खाँ का अधिकार

जिस समय हुमायूं चुनार के दुर्ग का घेरा डाले हुए था उसी बीच शेर खाँ ने गौड़ दुर्ग के घेरे को और भी कठोर कर दिया। बिहार तथा बंगाल के अधिकतर भागों पर भी उसने अपना अधिकार स्थापित कर लिया। जलाल खाँ तथा ख्वास खाँ को गौड़ के घेरे का उत्तरदायित्व सौंपकर शेर खाँ पुनः भरकुण्डा के निकट पहुंच गया।

शेर खाँ ने इस बीच अनुभव किया कि भरकुण्डा का दुर्ग उसके तथा अन्य अफगानों के परिवारों को सुरक्षित रखने के लिए काफी नहीं था। गौड़ में प्राप्त धन इत्यादि रखने की समस्या भी थी। इस दृष्टि से उसे रोहतास[2] दुर्ग बहुत ही उपयुक्त प्रतीत हुआ। रोहतास दुर्ग के राजा से उसकी मित्रता थी, विशेषतया उसका ब्राह्मण मन्त्री चूरामणि[3] उसका परम मित्र था। जिस समय जागीर

---

1 अकबरनामा 1 पृ० 151। जौहर का वर्णन अकबरनामा से भिन्न है। जौहर लिखता है कि चुनार की विजय के पश्चात् हुमायूं ने एक शाहाना जश्न आयोजित किया, उसके पश्चात् उसने रूमी खाँ से पूछा कि चुनार का किला कैसा है? रूमी खाँ ने उत्तर दिया कि यदि उसे ऐसा किला प्राप्त हो जाए तो वह किसी को उसके निकट फटकने न दे। हुमायूं ने पूछा कि किला किसको दिया जाए। रूमी खाँ ने उत्तर दिया कि उपस्थित अमीरों में से बेग मीरक के अतिरिक्त कोई योग्य नहीं है। हुमायूं ने दुर्ग मीरक बेग को दे दिया। इससे सभी अमीर रूमी खाँ के शत्रु हो गये तथा उसे विष देकर मार डाला (तज़किरतुल वाक़यात, स्टीवर्ट पृ० 14)।

2 रोहतास दुर्ग के विषय में फ़िरिश्ता (ब्रिग्स 2, पृ० 116 17) लिखता है कि उसने भारत के अनेक पहाड़ी दुर्गों को देखा था किन्तु रोहतास दुर्ग की तुलना में कोई भी नहीं था। यह एक पहाड़ी पर पांच कोस के वर्ग में स्थित था। पानी की सुविधा तथा दुर्ग तक पहुंचने का एक ही मार्ग होने से यह अजेय बन गया था।

3 अब्बास ने राजा का नाम नहीं दिया है किन्तु लिखता है कि उसका मन्त्री चूरामणि नामक एक ब्राह्मण था। अबुल फ़ज़ल के अनुसार राजा का नाम

सम्बन्धी सघर्ष चल रहा था उस समय शेर खा के भाई निजाम ने अपने परिवार के साथ यही शरण ली थी। शेर खा ने चूरामणि को पत्र लिखा था कि वह बडी कठिनाई म था तथा रोहतास का दुर्ग कुछ ही दिनो के लिए उस दे दिया जाए। चूरामणि के कहने से राजा ने इसकी स्वीकृति दे दी। किन्तु जब शेर खा ने भरकुण्डा से अपना परिवार भेजा तो राजा न उन्ह दुर्ग म प्रवेश करने की स्वीकृति नही दी। उसने कहा कि उसने जब निजाम को दुर्ग म शरण दी थी, उस समय उसके पास कम सना थी। अब शर खा की सेना राजा की सेना से अधिक थी। शेर खा न राजा को लिखा कि उसने राजा के कहने स परिवार भरकुण्डा से भेजा था। यदि हुमायू का पता चलेगा तो वह आक्रमण कर अफगाना के परिवार का नाश कर देगा और इसका उत्तरदायित्व राजा पर होगा। शेर खा ने चूरामणि को 6 मन सोना रिश्वत म दिया तथा प्राथना की कि कुछ दिन के लिए दुर्ग उस दे दिया जाए। उसन भय भी दिखाया कि यदि दुर्ग उसे प्राप्त नही होगा तो वह हुमायू स मिल जाएगा और राजा से बदला लेगा। चूरामणि ने राजा को समझाया और धमकी दी कि उसन शेर खा को वचन दे दिया है, यदि उसका वचन भग होगा तो वह आत्महत्या कर लेगा। राजा न विवश होकर अफगानो को प्रवश करन दिया। अफगानो को शेर खा ने डोलियो मे छिपाकर दुर्ग म भेजा तथा शक्ति के बल पर दुर्ग पर अधिकार कर लिया।[1]

चिन्तामन था तथा वह ब्राह्मण था (अकबरनामा, 1, पृ० 153)। फिरिश्ता के अनुसार राजा का नाम हरिकृष्णराय था (ब्रिग्स, 2, प० 115)। असकिन ने राजा का नाम हरीकृष्ण बरकीस लिखा है। (हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर एण्ड हुमायू, 2, प० 147)। हादीवाला के अनुसार (स्टडीज, 1, पृ० 452) बरकोस गलत है। कुछ हस्तलिखित प्रतिया म हरकिसन की जगह बरकिस भी मारजिन मे लिखे होने के कारण हरिकृष्ण के साथ बरकीस भी जोड दिया गया है। असकिन, 2, पृ० 147।

1 शेर खा ने डोली म अफगानो को भेजकर रोहतास दुर्ग पर अधिकार किया था या नही, यह विवादग्रस्त है। तारीखे खाजहा लोदी के अनुसार शेर खा न 1200 डोलिया म दो दो अफगान सनिको को अन्दर भेजा, केवल प्रारम्भ की कुछ डोलिया मे बूढी स्त्रिया थी। अहमद यादगार के अनुसार केवल तीन सौ डोलिया थी, प्रत्यक म दो-दो सनिक तथा चार चार रोहीला पालकी ढोने वाले थे। इन सभी ने अन्दर जाकर मारकाट शुरू कर दी, राजा को मार डाला तथा दुर्ग पर अधिकार कर लिया। फिरिश्ता ने भी डोली की कहानी को स्वीकार किया है। वह लिखता है कि शेर खा ने पालकी ढोन वाले सैनिक भी रखे थे। इसके अतिरिक्त रुपये रखने के पाच सौ बोरो म उसन गोलियार खवायी तथा वश बदले हुए लाठीधारी सनिको द्वारा उन्ह भी अन्दर भेजा। इन लोगा ने अन्दर प्रवेश कर मौका

शेर खा का दुग पर धोख स अधिकार करना उसके चरित्र का कलक है। राजा न बडे बुरे समय निजाम का शरण दी थी। शेर खा न यह सब भुला दिया। राजा के अस्वीकार करन स मालूम हाता है कि उस शेर खा की नीयत पर स देह हा गया था। शेर खा द्वारा चूरामणि का रिश्वत दन ही स प्रतीत हाता है कि वह दुग को हस्तगत करना चाहता था। डोली की कहानी अस्वीकार भी कर दी जाए तो भी शेर खा विश्वासघात क दोष स नहा बच सकता।

बनारस विजय तथा शेर खा से स धि-वार्ता

चुनार की विजय के पश्चात् हुमायू न आग बढकर बनारस पर अधिकार किया। कुछ दिन बनारस म रुककर मुगल सना आग बढकर सान नदी क तट पर मनेर[1] पहुची। जौहर क अनुसार उसका इरादा भरकुण्डा के दुग की तरफ जाने का था,[2] जहा से शेर खा बगाल तथा बिहार की अपनी सनाओ का नियन्त्रित कर रहा था। मनेर म हुमायू ने स धि करने का विचार किया। यह विचार उसके मन म क्या आया यह बताना कठिन है, क्योकि चुनार विजय क पश्चात् उस स धि-वार्ता प्रारम्भ करने के स्थान पर अफगानो को पराजित करने का सकल्प करना चाहिए था। हुमायू ने कबूल हुसन तुकमान को अपना दूत बनाकर भेजा तथा उसन स धि की निम्नलिखित शर्तें रखी [3]

पाते ही राजा के आदमियो पर तथा दुग पर अधिकार कर लिया। फिरिश्ता क अनुसार राजा दुग से भाग गया (ब्रिग्स, 2, पृ० 115-16)। निजामुद्दीन अहमद भी डोली भेजने का वणन करता है। उसके अनुसार 1 000 डोलिया थी तथा प्रत्यक म एक-एक सनिक था। प्रारम्भ की कुछ डोलिया म स्त्रिया थी। राजा के आदमियो ने प्रारम्भ की डोलिया का निरीक्षण किया। इस पर शेर खा न यह कहकर इसका विरोध किया कि पर्दे की स्त्रियो की तलाशी लेन का वह अधिकार नहा देगा। राजा न इसे स्वीकार कर लिया (तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 162 63)। अब्बास सरवानी न तारीखे शेरशाही म डोली की कहानी को अस्वीकार किया है। (इलियट और डासन, 4, पृ० 361 62)। शेर खा के चरित्र, उसकी आवश्यकताए तथा समकालीन इतिहासकारो के वणन स यह कहानी सत्य प्रतीत होती है।

1 मनेर पटना से बीस मील पश्चिम म है। उस समय सोन गगा नदी से यहा मिलती थी। आईने अकबरी, 2, प० 163। यह $25^\circ 38'$ उत्तर तथा $84^\circ 35'$ पूव पर स्थित था।

2 जौहर, स्टीवट, पृ० 15।

3 वही पृ० 15 16। दूत का नाम कुबूल हुसेन तुकमान या कब्ल ।

1 शेर खा मुगलो की सेवा म उपस्थित होगा।
2 शेर खा बगाल के शासक से प्राप्त राजसी छतरी तथा अय राजसी चिह्ना को मुगल सम्राट को समर्पित कर देगा ।
3 शेर खा रोहतास तथा बगाल पर अपना अधिकार त्याग देगा ।
4 चुनार, जौनपुर का प्रात अथवा अय जागीर जो शेर खा पसद करे, उसे प्राप्त होगी।

शेर खा के लिए इन शर्तों को मानन का अथ था पूण रूप से मुगलो के आगे समपण कर देना। कदाचित, चुनार विजय से मुगल इतने प्रसन्न थे कि उह ऐसा अनुमान हुआ कि वे शेर खा से कोई भी शत मनवा लेंग। शेर खा के लिए इन शर्तों को स्वीकार करना असम्भव था। इन शर्तों को स्वीकार करने का अथ था कि उस समय तक शेर खा ने अफगानो के सगठन के लिए जो कुछ भी किया था वह सब समाप्त कर दे। शेर खा ने देखा कि कूटनीति का उत्तर भी उसी तरह देना चाहिए। यदि मुगलो द्वारा प्रस्तुत शर्तें उसने अस्वीकार कर दी होती तो युद्ध की सम्भावना थी। शेर खा तत्काल युद्ध के लिए तयार नही था। गौड मे प्राप्त धन को वह हटाना चाहता था। उसने हुमायू के प्रस्ताव के विरोध म दूसरा प्रस्ताव रखा और कहा कि उसने बगाल को पाच छ वप के परिश्रम से तलवार के बल पर विजय किया है और उसके बहुत से आदमी इसमे मारे गये है।[1] उसने हुमायू के सामने निम्नलिखित दूसरी शर्तें उपस्थित की

1 शेर खा मुग़लो को बिहार समर्पित कर देगा।
2 बगाल शेर खा को प्राप्त होगा तथा उसकी सीमाए वही होगी जो सुल्तान सिकदर के समय थी।
3 शेर खा बगाल से प्राप्त राजत्व के सभी चिह्न मुगल सम्राट के पास भेज देगा।
4 शेर खा प्रत्येक वप दस लाख रुपये बगाल से भेजेगा।
5 मुगल सम्राट अपनी सम्पूण सेना के साथ आगरा लौट जाएगा।
6 शेर खा ने जीवन भर हुमायू का सेवक तथा स्वामिभक्त रहने का वचन दिया।

हुसेन तुकमान था। स्टीवट ने अपने अनुवाद म इसका नाम केवल हुसेन तुकमान दिया है।

1 वही, पृ० 16।

2 अब्बास, तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 362।

ये शर्तें स्वीकृत हो गयी[1] तथा हुमायू ने शेर खा के लिए घोडा तथा खिलअत भेजी । दुर्भाग्यवश इसी समय बगाल से गौड के पतन की सूचना मिली तथा बगाल के पराजित शासक ने अपना एक दूत हुमायू के पास भेजा । कुछ ही दिन बाद वह स्वय भी पराजित एव घायल होकर हुमायू के पास आ पहुचा । महमूद तथा हुमायू के मिलन की पूर्ण घटनाओ का ज्ञान हमे नही है किन्तु इतना स्पष्ट है कि उसने हुमायू से अपने लिए युद्ध करने की प्रार्थना की । उसने ऐसा विश्वास दिलाया कि गौड के अतिरिक्त बगाल का अधिकतर भाग उसके प्रति राजभक्त था तथा बगाल मे भोजन तथा अन्य आवश्यक वस्तुए बहुतायत मे उपलब्ध थी । उसने हुमायू से प्रार्थना की कि वह बगाल पर आक्रमण कर शेर खा को पराजित करे । उसने अपने पूर्ण सहयोग का वचन दिया । इन विश्वासो के परिणामस्वरूप तथा पराजित शासक की सहायता की इच्छा से, हुमायू ने शेर खा से निश्चित सधि को तोड दिया । सम्भव है इस निश्चय मे शेर खा के कुछ व्यवहारो ने सहायता की हो, क्योकि अब तक शेर खा ने कोई भी भू भाग मुगलो को नही दिया था और जब हुमायू के कर्मचारी रोहतासगढ पर अधिकार करने के लिए पहुचे तो उन्हे निराश लौटना पडा । इन परिस्थितियो मे सधि टूट गयी ।

सधिवार्ता के प्रारम्भ तथा विफलता के सम्बन्ध मे कुछ बाते विचारणीय है । हुमायू को सधिवार्ता प्रारम्भ नही करनी चाहिए थी । इससे उसकी कमजोरी प्रकट होती है । यदि उसने यह भूल कर भी दी थी तो सधि की शर्तो के निश्चित हो जाने के पश्चात सधि तोडना ठीक नही था । इससे अफगानो के मन मे यह बात जम गयी कि हुमायू झूठा है और उसकी बात का कोई विश्वास नही । शेर खा ने इसका लाभ भी उठाया और बाद मे उसने सैनिको से कहा कि वह हर तरह से सधि के लिए तैयार था उसने मुगलो को सब कुछ समर्पित कर दिया, फिर भी मुगल सधि के लिए तैयार नही हुए, यद्यपि अफगान केवल रहने का एक स्थान

---

1 ये शर्तें हुमायू द्वारा स्वीकृत हुई अथवा नही, इस विषय मे समकालीन इतिहासकार स्पष्ट नही है । अफगान इतिहासकारो के अनुसार मुगल सम्राट ने ये शर्तें स्वीकार कर ली किन्तु बाद मे सुल्तान महमूद के पहुचने पर इन्हे अस्वीकार कर दिया । तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन 4, पृ० 362 63 । जौहर के वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि सधि की शर्तें अभी निश्चित नही हुई थी तथा बातचीत चल रही थी (जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 16) । गुल बदन बेगम के अनुसार हुमायू इन शर्तो पर विचार कर रहा था कि इसी समय बगाल का शासक पहुचा (हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 133) । सम्भव है कि शेर खा से शर्तो को मनवा कर हुमायू ने यह सोचा कि बगाल के सुल्तान के स्वागत से अपनी पुरानी शर्तें मनवा लेगा । इसी बीच शेर खा यह समझकर कि सधि नही होगी, बगाल की तरफ रवाना हो गया ।

चाहते थे उसे भी देने के लिए मुगल तैयार नही थे। उसने हुमायू को सधि करने के पश्चात उसे तोडने का भी दोष लगाया। अन्त मे उसने कहा कि इस परिस्थिति मे अफगानो के सामने सिवा युद्ध के अन्य कोई मार्ग नही था।[1]

हुमायू ने सुल्तान महमूद की बात का विश्वास कर लिया। उसने वास्तविक स्थिति जानने का प्रयत्न नही किया। यदि वह चाहता तो जान सकता था कि सुल्तान महमूद का अधिकार बगाल मे नाममात्र का रह गया था और उस परिस्थिति मे वहा जाना ठीक नही था। महमूद हुमायू की शरण मे आया था और उसकी सहायता करना हुमायू का नैतिक कर्तव्य था किन्तु प्रत्येक परिस्थिति मे सहायता करना ठीक नही कहा जा सकता। विशेषत जब सधि हो चुकी थी उस समय किसी को सहायता देने के लिए सधि तोडकर झूठा बनना, किसी भी दृष्टि से ठीक नही था।

वास्तव मे शेर खा समय चाहता था, जिससे धीरे धीरे मुगलो का साहस तथा शक्ति कम हो जाए और उसे गौड से कोष हटाने तथा शक्ति सचय करने का समय प्राप्त हो जाए। दुर्भाग्य से हुमायू शेर खा की इस चाल को नही समझ सका। यह महत्त्वपूर्ण है कि बिहार और बगाल मे से एक को समर्पण करने के प्रश्न पर शेरशाह ने बगाल को अपने पास रखना उचित समझा, यद्यपि वह बिहार मे अपने जीवन का एक बहुत बडा भाग बिता चुका था तथा बिहार उसकी जन्मभूमि थी। वस्तुस्थिति को देखते हुए स्पष्ट हो जाता है कि सधि-वार्ता तोडने का उत्तरदायित्व हुमायू पर था। गुजरात अभियान मे भी उसने इसी तरह बहादुर शाह से सधि तोडी थी।

हुमायू का बगाल मे प्रवेश

सधि वार्ता की विफलता के पश्चात हुमायू मनेर से बगाल की तरफ रवाना हुआ। उसने अपनी सेना को दो भागो मे विभाजित किया। मुईद बेग, तरदी बेग, जहागीर कुली इत्यादि के नेतृत्व मे 30,000 अश्वारोहियो का अग्रणी दल आगे-आगे चला। दूसरा दल स्वय हुमायू के नेतृत्व मे अग्रणी दल के सात कोस पीछे चला। कुछ सेना जल मार्ग से तथा कुछ स्थल-मार्ग से चली। पटना तक हुमायू उसी मार्ग से गया जिस मार्ग से बाबर ने अफगानो के विरुद्ध अभियान किया था। इस मार्ग की यात्रा करने से मुगलो की सेना गगा के निकट थी और साथ ही

---

1 तारीखे शेरशाही, इलियट और डासन, 4, पृ० 363 64।

2 वही, पृ० 365 प्रमुख अमीरो के नामो की आलोचना के लिए देखिए होदीवाला, 1, पृ० 453।

बगाल पर आक्रमण करने का यह सबसे सरल माग था। पटना मे, सम्राट के कुछ सहायको ने वर्षा ऋतु के समाप्त होन तक अभियान स्थगित करन का परामश दिया।[1] सुल्तान महमूद ने इसका विरोध किया। उसने हुमायू को समझाया कि ऐसा करने से अफगान बगाल म अधिक शक्तिशाली हो जाएग। हुमायू को यह राय ठीक मालूम हुई तथा उसन कासिम हुसेन सुल्तान का पटना का गवनर नियुक्त किया[2] और मुगेर की तरफ मुगल सना को बढन की आज्ञा दी। जिस समय हुमायू पटना के निकट था शेर खा निकट के एक गाव म रुका हुआ था। मुईद बेग के जासूसो ने इसकी सूचना अपन सेनानायक को दी। मुइद बग को यह पता नही था कि शेर खा की सेना बहुत ही कम है। उसे ऐसा भय हुआ कि शेर खा मुगल सेना पर आक्रमण करने वाला है। उसने हुमायू से परामश करना उचित तथा आवश्यक समझा। उसने तत्काल सम्राट को इसकी सूचना दी। हुमायू ने आज्ञा दी कि सत्य का पता लगाया जाए। उस दिन पूरा समाचार न प्राप्त हो सका। दूसरे दिन पता चला कि शेर खा उस गाव को छोडकर कही और चला गया। शेर खा की माग मे सईफ खा मिला जो अपना परिवार रोहतास पहुचाने जा रहा था। मुग़ल समीप होने के कारण शेर खा ने उसे भागने को कहा। किन्तु यह जानकर कि अफगान नेता के प्राण खतरे म है सईफ खा ने अपना परिवार रोहतास पहुचाने का उत्तरदायित्व शेर खा को सौंपा और स्वय गुगारघर म मुगलो को रोकने क लिए तैयार हो गया।

दूसरे दिन मुग़लो ने शेर खा का पीछा किया। कुछ मील आगे बढने पर उन्होने देखा कि सईफ खा अपने भाइयो के साथ गुगारघर के माग पर खडा था। युद्ध हुआ जो दोपहर तक चलता रहा और मुगल विजयी हुए। सईफ खा के तीन भाई मारे गय और वह स्वय बुरी तरह घायल होकर बेहोश हो गया। वह सम्राट के सामने लाया गया। हुमायू ने उसकी बहादुरी तथा उसकी शेर खा क प्रति स्वामिभक्ति की प्रशसा की तथा उसे स्वतन्त्र कर दिया और उसकी इच्छानुसार उसको शेर खा के पास लौट जाने दिया।[3] इस बीच शेर खा को वहा से निकल जाने की पूण सुविधा मिली। पटना से मुगेर होता हुआ हुमायू भागलपुर पहुचा।[4] यहा से कोलगाव (कहलगाव) के निकट उसने जहागीर कुली बेग तथा बराम खा

---

1 अकबरनामा, 1, प० 151।

2 गुलबदन हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 135।

3 तारीखे शेरशाही, इलियट और डासन, 4, प० 365 67।

4 कहलगाव या कालगाग भागलपुर मे 25 16' उत्तर तथा 87 14' पूव, गगा के दक्षिणी तट पर।

इत्यादि को पाच छ हजार अश्वारोहियो के साथ अग्रगामी दल की तरह गढी भेजा।[1] मार्ग मे कहलगाव के निकट यह सूचना मिली कि अफगानो ने सुल्तान महमूद के दोनो पुत्रो का मार डाला है। सुल्तान महमूद इस दुखद समाचार को न सह सका और उसकी मत्यु हो गयी। सुल्तान की लाश सादुल्लापुर ले जायी गयी जहा दफना दी गयी। हुमायू कहलगाव से चलकर तेलियागढ़ी के निकट पहुचा।

हुमायू के पूर्वी अभियान म बगाल के सुल्तान की मत्यु एक महत्त्वपूण घटना थी। सुल्तान की उपस्थिति से हुमायू को बगाल पर अधिकार करने म बडी सुविधा होती। उसकी मृत्यु के साथ उसके पुत्रो की भी मृत्यु हो गयी थी। इस तरह बगाल के सुल्तान के पक्ष म बगाल पर अधिकार करने का बहाना समाप्त हो गया।

शेर खा ने अपने पुत्र जलाल खा को 13,000 चुने हुए सनिको के साथ तेलियागढी नामक दर्रे पर नियुक्त कर दिया था। उसे यह आज्ञा दी गयी थी कि वह हुमायू को वहा तब तक रोके रहे जब तक गौड से कोष रोहतास न हटा लिया जाए। जलाल खा को सहायता के लिए उसने सेनापति ख्वास खा को भी वही नियुक्त कर दिया। जलाल खा न दर्रे की चोटी पर तोप लगा दी थी जिससे आती हुई मुगल सेना पर आक्रमण किया जा सकता था। इस तरह मुगलो को दर्रे म प्रवेश करते समय बहुत सतकता की आवश्यकता थी।

तेलियागढी से कुछ दूर हुमायू अपना पडाव डाले पडा था। मुगल अपने स्थान से अफगाना को उत्तेजित करते रह जिससे अफगान दर्रे से बाहर आए। शेर खा ने स्पष्ट आना द रखी थी कि अफगान आक्रमण प्रारम्भ न करे। जलाल खा नौजवान था तथा मुगला के अपशब्दा तथा इधर उधर के छिटपुट आक्रमणा स वह परेशान हो गया था। उसन आक्रमण करने का निश्चय कर लिया। एक दिन दोपहर को जब कुछ मुगल सैनिक अफगाना को परेशान करने के पश्चात् अपन खेमे मे लौटकर आराम कर रह थे जलाल खा ने तोपखाना तथा 6,000 घुडसावर सेना के साथ मुगलो पर आक्रमण कर दिया (जुलाई-अगस्त 1538 ई०)।[2] इस युद्ध म बैराम खा ने अपनी वीरता से शत्रु के छक्के छुडा दिये। बहुत से मुगल सनिक तथा कुछ प्रमुख मुगल अमीर मारे गये। मुगल पराजित हुए[3] तथा बचे हुए मुगलो

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 152। गढ़ी सन्थाल परगने मे एक दरी है। उत्तर म गगा नदी तथा दक्षिण म राजमहल की पहाडिया है। अबुल फजल इसे बगाल का द्वार कहता है।

2 मालदा गजेटियर, पृ० 201।

3 तारीखे शेरशाही, इलियट और डासन 4, पृ० 367, अकबरनामा, 1, पृ० 152।

ने भागकर कोलगाव (वहलगाव) म हुमायू को सूचित किया। उसी समय अधड और पानी ने स्थिति को और भी गम्भीर बना दिया। जलाल खा न गढ़ के मार्ग को रोक लिया। एक महीने अफ़ग़ानो के प्रतिरोध तथा प्राकृतिक कठिनाइयो के कारण मुगलो को सफलता नही मिली। इस बीच शेर खा न झारखड[1] के माग स गौड का वाप रोहतास के दुग म हटा दिया तथा अफगान सना को तलियागढी स हटान की उसने जलाल खा को आना दी। अफगान सना के हटन के पश्चात् हुमायू बिना किसी कठिनाई के गौड पहुच गया। यह हुमायू क लिए बहुत बडा सौभाग्य था क्योकि तेलियागढी स उढवनाला तक (लगभग 35 मील) पहाडिया गगा नदी के इतने निकट थी कि यदि अफगान चाहत तो मुगलो का पग-पग पर रोक सकते थे।

हुमायू का बगाल निवास

गौड को अपने अधीन करने क पश्चात् हुमायू के सम्मुख गौड के प्रबध की समस्या आयी। अफगानो ने गौड छोडत समय उसे नष्ट कर दिया था[3] तथा बहुत से आदमी मारे गय थे। बहुत सी लाशें पडी था जिनका अन्तिम सस्कार करन वाला कोई नही था। हुमायू ने लाशें हटवाकर उनका अन्तिम सस्कार कराया तथा नगर की सफाइ करायी। सुल्तान महमूद की लाश भी मगाकर गौड के उपनगर सादुल्लापुर मे दफना दी गयी। शासन के लिए बगाल कई भागो म विभाजित कर

1 झारखण्ड छोटा नागपुर तथा वीरभूमि के जगली भाग को कहा जाता है। मुण्डारी भाषा म 'वीर' शब्द का अर्थ जगल होता है। (बनाक्मन नोट्स फ्राम मुहम्मडन हिस्टारियन्स आन छुटिया नागपुर पचेट एड पालामऊ ज० ए० सोसाइटी बगाल कलकत्ता, 1871 ई० पृ० 111)। अकबरनामा के अनुसार वीरभूमि तथा पचत से रतनपुर तथा रोहतासगढ, दक्षिणी बिहार से उडीसा तक की सरहद का भू भाग झारखण्ड कहलाता था। (होदीवाला, 1, पृ० 453 54)।

2 गौड लखनौती तथा लक्ष्मणावती के नाम से प्रसिद्ध था। यह 25 52' उत्तर तथा 80 10'5 पूव स्थित था। आज गौड म केवल टील है यद्यपि उस समय यह पन्द्रह-बीस मील के क्षेत्र मे फला हुआ था। यहा बगाल के शासको द्वारा निर्मित अनेक इमारतें है जिनमे आदीना मस्जिद, सोना मस्जिद, दाखिल दरवाजा इत्यादि प्रसिद्ध हैं। इसके उत्तर-पश्चिम सादुल्लापुर के उपनगर म महमूद की कब्र है।

3 "Sher Khan burnt and pillaged the city of Gaur and took possession of sixty millions in gold" (कम्पास हिस्ट्री आफ दि पुर्तगीज, प० 40)। यहा शेर खा का तात्पय अफगानो से है।

हुमायू ने अपने अमीरो को वहा पर नियुक्त कर दिया।[1] इसके पश्चात हुमाय ने गौड का नाम बदलकर ज नतावाद[2] कर दिया। बगाल की जलवायु उस बहुत पसन्द आयी।[3] इन कार्यो के अतिरिक्त हुमायू ने सगठन सम्बन्धी कोई अन्य कायवाई नही की यद्यपि वह यहा कई महीने रुका रहा।[4]

बिहार तथा बगाल विशेष कठिनाई के बिना हुमायू के अधिकार म आ गय। तेलियागढी के अतिरिक्त कही भी युद्ध नही हुआ। सिन्ध के शासक मिर्जा शाह हुसेन अरगून ने मीर अलीका अरगून को हुमायू को इस विजय के लिए बधाई देने को भेजा।[5] इससे प्रतीत होता है कि गुजरात के पलायन से जो मानहानि मुगलो की हुई थी उसे इस विजय ने कम कर दिया तथा मुगलो के यश म वद्धि हुइ।

1 जोहर स्टीवट, प० 18।

2 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज प० 134, कानूनगो, शेरशाह, पृ० 178। फिरिश्ता के अनुसार उसने गौड का नाम इसलिए बदल दिया क्योकि गोर का अथ फारसी म कब्र से होता है (ब्रिग्स, 2, प० 84) कदाचित फिरिश्ता न यह अथ अपने अनुमान से लगाया है। स्टीन-गास्स की पर्सियन इगलिश डिक्शनरी म गौर का अथ विधर्मी, अग्निपूजक, कब्रगाह, मरुस्थल, शराब तथा आनन्दोत्सव दिया गया है (प०1101)। बगाल क शासक गियासुद्दीन आजमशाह (1389 ई० 1396 ई०) के सिक्को पर ज नतावाद अकित है (स्मिथ तथा राइट, केटेलाग आफ क्वायन्स इन दि इण्डियन म्यूजियम, 2, प०156 हुमाय को यह मालूम था, यह बताना कठिन है।

3 अकबरनामा, 1, प० 153।

4 हुमायू गौड म कितन दिन रहा, इस विषय म समकालीन इतिहासकार एकमत नही है। गुलबदन बेगम (हुमायूनामा, बेवरिज प०134)के अनुसार वह वहा नौ महीन रहा तारीखे अलफी (रिजवी, हुमायू, 2, प० 53) के अनुसार एक वष बदायूनी (मुन्तखबुत्तवारीख, 1 पृ० 349) क अनुसार दो तीन महीन, निज़ामुद्दीन अहमद, (डे, 2, प० 163) तथा फिरिश्ता, (ब्रिग्स, 2 पृ० 84 85) के अनुसार तीन महीने। डॉ० कानूनगो(शरशाह, प० 178)के अनुसार वह नौ महीने बगाल म रहा। डा० बनर्जी(हुमायू 1, प० 227) के अनुसार आठ महीने (अगस्त 1538 ई०से माच 1539 ई० तक),डा०त्रिपाठी के अनुसार अक्टूबर 1538ई०मे उसने गौड म प्रवेश किया तथा जनवरी 1539 ई०को उसने गौड छोडा (त्रिपाठी, राज, एण्ड फाल० प० 113) अबुल फज़ल (अकबरनामा, 1, प०157) लिखता है कि जिस समय हुमायू गौड से रवाना हुआ, बाढ आ रही थी तथा नदिया पानी स भरी थी। बेवरिज के अनुसार (अकबरनामा का अंग्रेजी अनुवाद प० 341, नोट न०1)हुमायू(सितम्बर 1538 ई० म रवाना हुआ),डॉ० कानूनगो (शरशाह प० 180) के अनुसार माच 1539 ई० म हुमायू गौड से रवाना हुआ।

5 तारीखे सिन्ध, प० 165।

गढी से जलाल खा के हटने के पश्चात् हुमायू ने हिन्दाल को, जिसे तिरहुत तथा पूर्निया दे दिया गया था, उसकी इच्छा से इन भागो से मुगल सेना के लिए आवश्यक वस्तुए लाने की आज्ञा दी।[1] हिन्दाल वहा से बिना आज्ञा के आगरा की तरफ रवाना हो गया। वहा पहुचकर वह स्वय बादशाह बनने का स्वप्न देखने लगा।

हिन्दाल के विद्रोह की सूचना पाकर मीर फख्र अली दिल्ली से आगरा आया। उसने हिन्दाल मिर्जा को समझाने का प्रयत्न किया तथा कठिनाई से उसे जौनपुर जाने के लिए राजी कर लिया। इसी बीच खुसरो बेग कुकुल्ताश, जाहिद बेग, मिर्जा नजर एव कुछ अन्य अमीर हुमायू से असतुष्ट होकर बगाल से भागकर मिर्जा नूरुद्दीन मुहम्मद के पास कन्नौज पहुचे। उसके प्रोत्साहित करने पर ये लोग भी हिन्दाल से जा मिले। इन सब घटनाओ की सूचना पाकर हुमायू ने शेख बहलूल को[3] हिन्दाल को समझाने के लिए भेजा। हिन्दाल ने शेख का स्वागत किया तथा उसे अपने महल मे ठहराया। बहलूल ने उसे समझाकर अपने पक्ष मे कर लिया। चार पाच दिन बाद मिर्जा नूरुद्दीन मुहम्मद कन्नौज से आगरा पहुचा और उसने हिन्दाल को पुन विद्रोह करने तथा अपने नाम से खुत्बा पढने के लिए तैयार कर लिया। किन्तु जब तक शेख बहलूल जीवित था षडयन्त्र की सफलता की आशा नही थी। जिस समय बहलूल हिन्दाल के पूर्वी अभियान की तयारी कर रहा था, षडयन्त्रकारियो ने उस पर यह अभियोग लगाकर कि वह शेर खा को अस्त्र-शस्त्र भेजने की योजना बना रहा था तथा उससे पत्र व्यवहार कर रहा था उसकी निर्मम हत्या कर डाली। हिन्दाल के नाम से खुत्बा पढा गया[4] और उसने अपनी

1 तारीखे शेरशाही के अनुसार जलाल के गढी छोडने के पश्चात हिन्दाल को हुमायू ने आगरा भेजा तथा स्वय गौड की तरफ रवाना हो गया। (इलियट तथा डासन, 4, पृ० 368) अबुल फजल के अनुसार हुमायू ने हिन्दाल को, जिसे तिरहुत एव पूर्निया प्रदान किया गया था, उसकी प्रार्थना पर इस आशय से बिदा कर दिया कि वह अपनी नयी जागीर मे आकर आवश्यक वस्तुओ सहित बगाल पहुच जाये (अकबरनामा, 1, पृ० 152 53)। अबुल फजल का वर्णन सही मालूम होता है क्योंकि, हिन्दाल को उस परिस्थिति मे, जब गौड पर अभी विजय नही हुई थी, भेजना न्यायसगत नही प्रतीत होता है।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 154।

3 शेख बहलूल ग्वालियर के प्रसिद्ध सन्त शेख मुहम्मद गौस सत्तारी का बड़ा भाई था। बील ओरियण्टल बाइओग्राफिकल डिक्शनरी, पृ० 256।

4 अकबरनामा 1, पृ० 155, मुन्तखबुत्तवारीख, पृ० 350 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 85, तारीखे रशीदी एलियस तथा रास, पृ० 470।

स्वतत्रता की घोषणा की।

हिन्दाल के इस व्यवहार से उसकी माता दिलदार बेगम बडी दु खी हुई तथा जब हिन्दाल उसके पास पहुचा तो उसने मातम के कपडे (नीले वस्त्र) धारण किये तथा उससे बहुत नाराज हुई। किन्तु हिन्दाल पर इसका कोई प्रभाव नही पडा। वह आगरा से दिल्ली की ओर रवाना हुआ। यह समाचार सुनकर यादगार नासिर मिर्जा और मीर फख्र अली ने दिल्ली पहुचकर उसकी रक्षा का पूर्ण प्रबन्ध किया। हिन्दाल के आगमन का समाचार पाकर निकट के अधिकाश जागीरदारो ने उसका अभिवादन किया। हिन्दाल ने दिल्ली को घेर लिया। मीर फख्र अली ने कामरान को भी सूचित कर दिया तथा उससे आने की प्राथना की। कामरान ने एक सेना के साथ दिल्ली की तरफ रवाना हुआ। उसके आगमन की सूचना पाकर हिन्दाल दिल्ली का अवरोध त्यागकर आगरा की तरफ रवाना हो गया। फख्र अली जिस तरह हिन्दाल से सशकित था उसी तरह कामरान से भी सतक था। उसने कामरान को दिल्ली पर अधिकार करने का अवसर नही दिया तथा उसे हिन्दाल का पीछा करने के लिए आगरा भेजा। हिन्दाल आगरा से अलवर की तरफ चला गया। दिलदार बेगम तथा अन्य स्त्रियो की मध्यस्थता से हिन्दाल ने क्षमा मागना स्वीकार किया। उसके गले मे कपडा बाधकर उसे कामरान के सम्मुख उपस्थित किया गया। इस तरह हिन्दाल का विद्रोह शान्त हुआ।[1] हिन्दाल के विद्रोह का दुष्परिणाम हुमायू के बगाल अभियान तथा उसके साम्राज्य पर भी पडा। हिन्दाल की जागीर तिरहुत तथा पूर्निया बगाल के प्रवेश द्वार पर थी। उसके भागने से प्रवेश द्वार का सन्तरी ही भाग गया। हुमायू के लिए आवश्यक वस्तुओ का पाना कठिन हो गया जिससे उसकी सेना को अनेक कष्ट उठाने पडे। आगरा मे उसके विद्रोह के कारण केन्द्रीय शासन मे कठिनाइया हुई। शेर खा ने मुगलो के इन सकटो से लाभ उठाया तथा उसने जौनपुर और बिहार के अन्य स्थानो पर अधिकार कर लिया। दिल्ली और आगरा के मुगल अमीर हिन्दाल के विद्रोह से इतने सतक थे कि वे उधर सेना न भेज सके और इस तरह शेर खा के शक्ति सचय मे सहायक बने।

हुमायू के बगाल निवास के समय शेर खा की परिस्थिति कठिन थी। उसके राज्य के तीन तरफ—पूर्व, पश्चिम तथा उत्तर मुगल साम्राज्य था। शेर खा ने अपने राज्य के निकट के भागो को अपने अधीन करने का निश्चय किया। इस तरह उसने बनारस पर आक्रमण कर उसपर अधिकार कर लिया तथा वहा के मुगल हाकिम मीर फजल अली तथा 700 मुगलो को मार डाला।[2] यहा से बढ-

1 अकबरनामा 1, पृ० 156।

2 वही, पृ०153, तारीखे, शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ०368, जौहर

कर उसने जौनपुर का घेरा डाला। हिन्दू बेग की मृत्यु के पश्चात बाबा बेग जलायर वहा का गवनर था। उसने जौनपुर का पूण प्रबध किया तथा आगरा और गौड से सेना मगाने के लिए पत्र लिखा। अफगान जौनपुर पर अधिकार न कर सके।[1] शेर खा ने जौनपुर को छोडकर कनौज तक के भागो का रौद डाला। हैबत खा नीयाजी जलाल खा जालू, सरमस्त खा सरवानी तथा अय अफगान अमीरो ने मिलकर बहराइच पर अधिकार कर लिया तथा वहा से आगे बढ़कर सम्भल स भी मुगलो को निकाल दिया।[2] ख्वास खा को शेर खा ने खानखाना यूसुफ खल के विरुद्ध मुगेर भेजा। ख्वास खा न उसे बन्दी बना लिया। जिसन भी अफगानो का विरोध किया, मारा गया। इस तरह दोआब के दक्षिण-पूर्वी भागो पर मुगल अधिकार समाप्त प्राय हो गया।

शेर खा न इन भागो का कवल अधिकृत ही नही किया वरन इनके शासन का भी प्रबध वह करता जाता था। इस तरह उसन लगान वसूल करने के लिए आमिल तथा शान्ति सुव्यवस्था क लिए अय कमचारी नियुक्त किय।

शेर खा के इन भागो पर अधिकार करन के परिणामस्वरूप बगाल तथा आगरे का यातायात सम्बध प्राय टूट सा गया।[3] सम्भव है कि शेर खा आगरा से बगाल अथवा बगाल स आगरा जाने वाली सूचनाओ को रोककर गलत सूचनाए भेज देता रहा हो। इस तरह हुमायू कई महीने बगाल म ठहरा रहा।

हुमायू के बगाल निवास के कारण

गौड पर अधिकार करने के पश्चात हुमायू इतने दिन वहा क्या रुका रहा? यह एक एतिहासिक पहली है जिसे सुलझाना सरल नही है। साधारणतया बगाल पर

के अनुसार 700 मुगलो को शेर खा ने मार डाला। वह स्थान का उल्लख नही करता। कदाचित व बनारस मे मारे गय थे। डा० कानूनगो (शेरशाह पृ० 175) का मत है कि चुनार का पतन तथा वहा के तोपचियो के हाथ काटन स शेर खा इतना क्रोधित था कि उसका बदला निकालने के लिए उसन क्रूरता का बताव किया।

1 तारीखे शेरशाही के अनुसार मुगल गवनर मारा गया। (इलियट तथा डासन, 4, पृ० 368)। यह सही नही प्रतीत होता क्योकि गुलबदन बेगम तथा अबुल फजल उसके चौसा के युद्ध के समय वहा होन का उल्लख करते है। (हुमायूनामा बेवरिज, पृ० 135, अकबरनामा, I, पृ० 158)।

2 तारीखे शेरशाही इलियट और डासन 4, पृ० 368।

3 अकबरनामा 1, पृ० 157।

अधिकार के पश्चात वहा उचित शासन प्रबन्ध कर हुमाय को आगरा वापस आना चाहिए था। हा यदि बगाल म लगातार युद्ध होता रहता तो उसक ठहरने की आवश्यकता हो सकती थी किन्तु इस तरह का कोई भी सकट नही था। इसके विपरीत उसके साम्राज्य तथा राजधानी म महान सकट था। अफगानो का उत्कष तीव्रता स हो रहा था तथा उसक भाइयो की दष्टि उसके साम्राज्य पर थी। फिर हुमायू न अपना समय क्या नष्ट किया ? समकालीन इतिहासकारो ने इस विषय पर भिन्न भिन्न मत दिय है[1] जो इतन सक्षिप्त है कि उनस पूरी बात समझ मे नही आती। आधुनिक इतिहासकारो म कुछ न कल्पना क आधार पर हुमायू के निवास का समथन करने का प्रयत्न किया है।[2] डॉ० इश्वरी प्रसाद के अनुसार मुगलो ने शासन प्रबन्ध म लापरवाही दिखायी तथा शेर खा स उन्होने इतनी सरलता से

---

1 जौहर के अनुसार हुमायू भोगविलास म व्यस्त हो गया और गाड पर उसका अधिकार करन क एक मास पश्चात किसी को दशन नही हो सका। वह सदा एकान्त महल म रहता था (जौहर स्टीवट, प० 18)। अबुल फजल लिखता है कि हुमायू को बगाल की जलवायु बहुत अच्छी लगी तथा वह भोगविलास म लीन हो गया (अकबरनामा 1, प० 153)। यातायात क रुकावट के कारण सही समाचार शिविर तक नही पहुच पात थे। जो समाचार बगाल पहुचत भी थ उन्ह हुमायू तक पहुचान का किसी का साहस नही होता था क्योकि कोई भी ऐसी बात जिसस दु ख तथा परशानी हो, उसस कहन की मनाही थी (अकबरनामा, 1, पृ० 157)। निजामुद्दीन क अनुसार हुमायू अपना समय आमोद प्रमोद म व्यतीत करता था (तबकात अकबरी, डे, 2 प० 163)। बदायूनी के अनुसार हुमाय को बगाल की जलवायु बहुत पसन्द आयी। उसन उसका नाम जन्नताबाद रखा तथा वहा रह गया। (मुन्तखबुत्त वारीख, 1, पृ० 349)। फिरिश्ता क अनुसार वहा की जलवायु खराब थी जिससे बहुत स ऊट और घोडे मर गय तथा मनुष्य रुग्ण हो गय (फिरिश्ता, 2, प० 217, ब्रिग्स प० 84 85) ब्रिग्स क अनुवाद म घोडा तथा ऊटो के मरन का उल्लख नही है। तारीखे अलफी का लखक भी बगाल की जलवायु की खराबी के कारण घोडो के नष्ट होन का उल्लख करता है(रिजवी हुमायू 2, प०53)। गुलबदन बगम लिखती है कि वह गाड म आराम स सुरक्षित था (हुमायूनामा, बवरिज पृ० 134) खुलासत्तवारीख क अनुसार हुमायू न महल म बहुत-से जश्न किय किन्तु राज्य काय क बार म उदासीन था। तारीखे दाऊदी क अनुसार शर खा न एक बहुत ही सुन्दर स्त्री भेंट कर दी थी जिसक कारण हुमायू न राज्य काय म कोइ दिलचस्पी नही ली। मखजान अफगानी क अनुसार शर खा न महल को इतन सुन्दर ढग स सजा दिया था जिससे हुमायू उसम आनन्द म लीन हो गया(बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 213)।

2 डॉ० बनर्जी न कल्पना क आधार पर जमा व स्वय लिखत हैं, हुमायू क बगाल के निवास क निम्नलिखित कारण दिय है (हुमाय, 1, प० 213 14)।

कुछ भागो पर अधिकार कर लिया था कि वे गव के नशे म चूर थे। अफीम के नशे के कारण हुमायू का राज्य काय से प्राय विरक्ति हो गयी थी। शेर खा के सैनिक हलचलो से आगरा तथा वगाल का यातायात सम्वध टूट गया था जिससे समाचार नही मिल पा रहे थे। यही नही आवश्यक वस्तुए भी उसे नही प्राप्त हो रही थी।[1] डा० त्रिपाठी का विचार है कि वगाल के शासन प्रवध की समस्या आवश्यक वस्तुओ की कमी, हिन्दाल का विद्रोह, यातायात की असुविधा के कारण सही समाचार प्राप्त करने की कठिनाई तथा तैयारी पूण करने के लिए हुमायू को रुकना पडा।

घटनाओ के अध्ययन से प्रतीत होता है कि हुमायू को राज्य काय से पूणत विरक्ति नही हुई थी। सिध के शासक के राजदूत मीर अलीक से वह मिला था। जब उसे हिन्दाल के विद्रोह की सूचना मिली तो उसने शेख वहलूल को उसे समझाने के लिए भेजा था। इससे स्पष्ट है कि अत्यन्त ही आवश्यक राज्य काय उसे करना पडता था। अबुल फजल, जौहर तथा गुलवदन वेगम सभी लिखते हैं कि वहा की जलवायु अच्छी थी, इस कारण फिरिश्ता तथा तारीखे अलफी के इस कथन को कि वहा की जलवायु खराब थी, स्वीकार किया नहीं जा सकता। किन्तु, इसमे कोई सन्देह नही कि हुमायू ने राज्य काय मे पूण रुचि नही ली। इसी समय हिन्दाल जिसे आवश्यक वस्तुए लाने के लिए भेजा गया था, आगरा भाग गया। पशुओ का चारा तथा सेना का भोजन दुष्प्राप्य हो गया, जिससे वहुत से पशुओ की



---

(1) हुमायू अपने भाइयो के प्रति उत्तरदायी था। अस्करी उसके साथ था। सम्राट अस्करी के स्वास्थ्य को खतरे मे नही डालना चाहता था और न अपने अन्य आदमियो को मौत के मुख म डालना चाहता था। (2) दिल्ली तथा गौड का यातायात टूट गया था, जिससे उसे पूरा समाचार नही प्राप्त हो रहा था। (3) वह शेर खा की शक्ति का मूल्याकन नही कर सका, विशेषतया उसे उसकी युद्धक्षेत्र की शक्ति का अनुमान नही था। (4) गौड निवास का प्रारम्भिक भाग, हम कल्पना कर सकते है उसकी वीमारी का समय था। विद्वान लेखक का पहला तथा चौथा तक कोरी कल्पना पर आधारित है। यदि हुमायू वीमार रहता तो मुगल इतिहासकारो ने इसका अवश्य उल्लेख किया होता। क्या वह गुजरात अभियान के पश्चात माडू निवास के समय वीमार था? यदि उसे अस्करी की वीमारी अथवा सेना के स्वास्थ्य की चिन्ता थी तो उसने उसके लिए क्या किया?

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायू प० 122 23।

2 त्रिपाठी राइज एण्ड फाल, प० 93।

मृत्यु हो गयी।[1] सेना म कठिनाइयाँ उपस्थित हो गयी, लोग मौका पाते ही बगाल छोडकर आगरा भाग जाते थे।[2] इस बीच हुमायू आनन्द विनोद तथा जश्न म लगा हुआ था। यह उसके चरित्र का अग था। उसने बहादुर शाह के विरुद्ध आक्रमण करने क पूर्व भी तरह-तरह के जश्न किये थे। प्रकृति स हुमायू आनन्द-प्रिय था जिसके कारण वह शासन क काय को भूल-सा गया था। अबुल फजल लिखता है वह आनन्द मनाने म इतना व्यस्त रहता था कि उसके पास बुरे समाचार भेजने का किसी का साहस नही होता था। सम्भव है उसने मस्ती का पूरा आनन्द लेने के लिए अफीम की माता भी बढा दी हो। सम्राट के साथ उसका हरम भी था तथा बगाल अभियान के प्रारम्भ से पूव उसने वहा के शासन का उचित प्रबन्ध कर दिया था इस कारण उस ओर स वह निश्चित था। हुमायू शेर खा की शक्ति का मूल्याकन नही कर सका। जिस व्यक्ति न एक बार भी खुलकर युद्ध करने का साहस न किया हो तथा प्रत्येक बार भागता रहा हो, क्या वह मुगल साम्राज्य को अधीन करने का स्वप्न म भी साहस करेगा? हुमायू म एक अच्छे शासक की योग्यता नही थी जिसके कारण बगाल को उसके निवास का कोई लाभ नही हुआ।

बगाल अभियान का परिणाम

हुमायू के बगाल अभियान के दो कारण थे। प्रथम शेर खा की शक्ति को चूर करना तथा दूसरा सुल्तान महमूद का बगाल की गद्दी पर बठाना। महमूद की मृत्यु तथा उसके पुत्रा की हत्या से दूसरा लक्ष्य सम्भव न हो सका। शेर खा की शक्ति भी कम न हो सकी। इसके विपरीत उसने अपनी शक्ति और बढा ली। इस तरह हुमायू का अभियान असफल ही कहा जाएगा। राजधानी स अनुपस्थित रहने के कारण वहा अनेक-सी गडबडिया पैदा हो गयी। शेर खा स सधि तोडने के कारण हुमायू का मान बहुत कम हो गया और बहुतो की दृष्टि म वह अविश्वसनीय समझा जाने लगा था। बगाल निवास स मुगलो की अकमण्यता तथा अयोग्यता पूर्ण रूप से स्थापित हो गयी। उसकी सेना की अवस्था भी बिगडती जा रही थी। अनुशासनहीनता, हथियारो की कमी तथा पशुओ की मृत्यु न उसकी सेना को शक्तिहीन सा बना दिया था।

हुमायू के बगाल निवास का स्वप्न तब टूटा जब उसे अपनी राजधानी की हलचल तथा अफगानो द्वारा मुगल साम्राज्य पर आक्रमण के समाचार प्राप्त हुए।

---

1 फिरिश्ता 2 फा०, प० 217।

2 जस जाहिद बेग, खुसरो बेग, कुकुल्ताश इत्यादि। अकबरनामा 1, प० 154, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 18 19।

सकटकालीन परिस्थिति का अनुमान हम इसस लगा सकत है कि वषा क कारण नदिया भर गयी थी तथा माग अवरुद्ध हो गया था और यह समय युद्ध क ि ए उपयुक्त नही था।[1] फिर भी हुमायू न आगरा वापस चलन की आना दी।

वगाल से वापसी

वगाल स लौटते समय किसी को वगाल का गवनर नियुक्त करना आवश्यक था। मुगलो का आत्मवल इतना कम हा गया था कि वगाल की गवनरी स्वीकार करन के लिए प्रारम्भ म कोइ तयार नही हो रहा था। जाहिद वग को बगाल के गवनर का पद स्वीकार करन को कहा गया। वह उसक लिए तयार नहा हुआ। उसन कहा मेरी हत्या क लिए कोइ अय माग न था जो वगाल दिया जा रहा है।" हुमायू इसस वहुत रुष्ट हुआ तथा जाहिद वेग यहा से भागकर आगरा म हिंदाल से जा मिला।[2] अत म 5 000 घुडसवार सना के साथ जहागीर कुली वेग का वगाल म छाडकर हुमायू गगा नदी के उत्तरी तट के माग से आगरा रवाना हुआ।

उत्तरी तट के माग से लौटने के दो कारण थे—(1) ख्वास खा न मुगर जीत लिया था तथा वहा मुगल गवनर खानखाना यूसूफ खैल को गिरफ्तार कर लिया था। इस तरह दक्षिणी तट का माग अरक्षित हो गया था। (2) शर खा की एक सेना गढी के दर्रों को रोके हुए थी जो गगा के दक्षिणी तट पर था।

उसने दिलावर खा लोदी को मुगर को सुरक्षित रखने के लिए भेजा था किन्तु ख्वास खा के विरुद्ध दिलावर खा सफल नही हो सका। मुगर पर अफगाना ने अधिकार कर लिया तथा दिलावर खा को बन्दी बना लिया।

अफगानो ने तेलियागढी के पास हुमायू की सेना को रोकना चाहा। वर्षा आरम्भ हो गयी थी जिससे कठिनाइया और वढ गयी। अधिक वषा के कारण माग कीचड तथा दलदल से भर गया था, अधिकतर घोडे थकान से मर गये। सना का सगठन भी ढीला तथा अस्त-व्यस्त था।[3]

हुमायू कष्ट तथा कठिनाइयो से इतना घबडा गया था कि उसे अपने पर ही विश्वास नही रह गया था। कदाचित उस यह भी भय था कि उसके अय अमीर *विशेपतया अस्करी, उसका साथ छाड देंगे।* इस स्थिति म उसन अस्करी स अग्रणी

---

1 अकबरनामा 1, पृ० 157।

2 जौहर स्टीवट, पृ० 18 19 अकबरनामा 1, पृ० 157।

3 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 163।

दल का नेतत्त्व करने को प्राथन की तथा उसस काई चार वस्तुआ को मागन क लिए कहा। अस्करी ने उससे धन, बगाल से प्राप्त कुछ बहुमूल्य वस्तुए, कुछ हाथी तथा हिजडे मागे।[1] उसकी इस माग का सुनकर उसके अमीर आश्चयचकित हो गय। उन्होने कहा कि उस समय जब कि शेर खा से सघष निश्चित था, वीर सैनिका धन तथा अभियान का उत्तरदायित्व ग्रहण करन के स्थान पर अन्य वस्तुआ का मागना उपयुक्त नही था। अस्करी को उनकी राय पसन्द आयी और उसन हुमायू से अन्य तीन वस्तुए मागी (1) सना की सख्या बढायी जाए, (2) सनिका का भत्ता बढाया जाए, (3) आवश्यकता के लिए पयाप्त धन तयार रहे। उसन अभियान का उत्तरदायित्व भी ग्रहण करने का वचन दिया। हुमायू न उसका सभी शर्तें स्वीकार कर ली।

अस्करी ने गढी पार की तथा वहा से कहलगाव होत हुए मुगेर क निकट पहुचा। सेना अब तक गगा नदी के उत्तरी तट के माग से यात्रा कर रही थी। मुगेर के निकट हुमायू ने एक युद्ध परिपद् की बैठक की। उसन अपने अमीरा स पूछा कि उसे उत्तरी माग से चलना चाहिए अथवा दक्षिणी माग स? बहलूल बग मुल्ला मुहम्मद परगारी तथा अधिकतर अमीरा की राय थी कि सना को उत्तरी तट के माग स ही आग बढना चाहिए। इसके विपरीत मुईद बग न कहा कि हुमायू महान सम्राट था और उस उसी माग से वापस जाना चाहिए जिस माग से वह बगाल गया था अथात् उसे नदी पार कर दक्षिणी माग स यात्रा करनी चाहिए। यदि वह एसा न करेगा तो शेर खा उसकी हसी उडाएगा कि सम्राट ने उसके भय से उत्तरी भाग ग्रहण किया।[2] इस मत को हुमायू न स्वीकार कर लिया और नदी को पार कर वह नदी के दूसरे (दक्षिणी) तट स यात्रा करने लगा।

हुमाय के माग बदलन की इतिहासकारा ने कटु आलोचना की है।[3] इसम कोई सन्देह नही कि हुमायू न भावना से प्रभावित होकर नदी पार करने का निश्चय किया। उसकी सना की अवस्था ठीक नही थी। नदी के दूसरी तरफ के भागा पर अफगानो का अधिकार था। ऐसी परिस्थिति मे दक्षिणी माग म उस पग-पग पर कठिनाइया का सामना करना पडा। जौहर लिखता है कि अफगानो की सना उनक

---

1 जौहर स्टीवट, पृ० 20। इसस अस्करी के चरित्र का अनुमान लगाया जा सकता है।

2 वही, पृ० 21 22, गुलबदन हुमायूनामा, बवरिज प० 135।

3 असकिन, 2 पृ० 155, डॉ० कानूनगो (शेरशाह, पृ० 183) लिखत ह।
Muyyid Beg proved the evil genius of Humayun who was as it were delivered into the hands of the enemy

पीछे-पीछे आ रही थी तथा कभी कभी छोटी मोटी लडाइया भी होती रहती थी। मुगलो की मना की दीन अवस्था का ज्ञान होने से शेर खा को मुगलो से युद्ध करने का प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

हुमायू के निणय के पक्ष मे कहा जा सकता है कि मुगल दक्षिणी माग से परिचित थे तथा उत्तरी माग जगलो इत्यादि के कारण आगे बहुत सुरक्षित नही था। अस्करी न उत्तरी माग से लौटते समय इस कठिनाई की ओर सम्राट का ध्यान आकर्षित किया था। दक्षिणी माग से मुगल चुनार पहुचते, जिसका उस समय तक पतन नही हुआ था। चुनार का दुग बडा था तथा वहा पहुचकर मुगलो को अपनी स्थिति ठीक करने म सुविधा थी। इस माग परिवतन ने शेर खा की आक्रामक नीति को स्थगित कर दिया तथा उसे रक्षात्मक नीति अपनानी पडी। इसके अतिरिक्त इस माग की सुविधा के कारण मुगल सेना और भी तजी से आगे बढने लगी।[1]

दक्षिणी माग से यात्रा करने मे हुमायू को कोई विशेष सुविधा नही हुई। मनेर के निकट उसे अफगानो के साथ एक अनिणायक युद्ध करना पडा। दूसरे दिन अफगाना ने हुमायू की प्रसिद्ध तोप कोहशिकन पर, जिसे रूमी खा ने सफलता के साथ चुनार के दुग मे प्रयोग किया था, अधिकार कर लिया। हुमायू न लोगो को अस्त्र शस्त्र धारण करने की आज्ञा दी।[2] चार दिन बाद हुमायू चौसा[3] पहुचा। उसने कमनासा नदी पार कर उसके पश्चिमी तट पर अपना खेमा स्थापित किया।

हुमायू के बगाल से वापस होने के समय शेर खा रोहतास के निकट के भागो से उसकी गतिविधि को देख रहा था। हुमायू के आगे बढने पर उसने अपने अमीरो से परामश किया। सभी प्रमुख अमीरा ने मुगलो से युद्ध करने का परामश दिया।[4] यह देखकर की अफगानो मे पूण एकता है तथा वे मुगलो से युद्ध करने के लिए तैयार हैं, शेर खा रोहतास की पहाडियो से बाहर निकला तथा मुगलो की ओर अग्रसर हुआ। जिस समय हुमायू चौसा के निकट पहुचा, लगभग उसी समय शेर

---

1 त्रिपाठी, राइज एण्ड फाल, प० 94।

2 जौहर स्टीवट, प० 22, ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 128, फुटनोट, कानूनगो, शेरशाह, प० 184 185।

3 चौसा बिहार प्रान्त म बक्सर तहसील का एक गाव है। बक्सर से चार मील पश्चिम 25° 31 उत्तर तथा 83° 54 पूव, कमनासा नदी के पूर्वी तट पर स्थित है।

4 शेर खा के भाषण तथा इस गाष्ठी के निणय के लिए देखिए तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 369 70।

खा की सना भी उसके निकट पहुचकर विहिया[1] नामक गाव म खेमा डालकर मिट्टी के घेरे-से उसकी रक्षा का प्रबध कर रही थी। दोना सेनाओ के बीच म कमनासा नदी थी। कासिम हुसेन सुल्तान न निवेदन किया कि उसी समय आक्रमण किया जाए क्याकि शेर खा की सेना थकी हुई थी जबकि मुगल सना आराम कर ताजी हो गयी थी। हुमायू को यह मत उचित प्रतीत हुआ। किन्तु उसी समय मुइद बेग ने राय दी कि युद्ध प्रतीक्षा करके करना चाहिए, घबडाना नही चाहिए।[2] हुमायू ने इसे स्वीकार कर लिया तथा युद्ध स्थगित हा गया।

कामरान तथा हिन्दाल आगरा मे थ। वहा का वातावरण बदल गया था। वहा कामरान तथा मुगल अमीरा न शेर खा के विरुद्ध हुमायू की सहायता के लिए चौसा की तरफ जान का भी इरादा किया। इसी समय कुछ लोगो न कामरान का समझाया कि चौसा जान से हुमायू अपने शत्रु का तो नाश कर दगा किन्तु वे (कामरान तथा उसके समथक) फस जाएगे।[3] इस राय से कामरान इत्यादि पुन लौट आय। यह हुमाय का बहुत बडा दुर्भाग्य था। यदि यह मुगल सेना वहा पहुच जाती तो चौसा के युद्ध तथा हुमायू के भविष्य का नक्शा ही बदल जाता।

चौसा का युद्ध

मुगल तथा अफगान सेनाए गगा नदी क दक्षिण तट पर डटी हुई थी। दोना सेनाओ के बीच पतली कमनासा नदी थी। कमनासा यद्यपि छोटी नदी थी फिर भी उसम जल इतना था कि उस आसानी स पार नही किया जा सकता था। कमनासा और गगा के सगम के पतले पश्चिमी भाग म अफगान इकट्ठे थे और

---

1 विहिया शाहाबाद जिले म, शाहाबाद तहसील मे है। अकबरनामा, 1, पृ० 158 के अनुसार विहिया भोजपुर के निकट एक ग्राम है। मखजान अफागेन म इसे गलती स शतया या शुया कहा गया है। डान, पृ० 118 बाबरनामा, वेवरिज पृ० 362 67। विहिया भोजपुर से 25 मील पूव, बक्सर से पाच मील तथा डुमराव से दो मील की दूरी पर है।

2 जौहर, स्टीवट, प० 22-23। 'Had the emperor followed the sound advice tendered by the latter, the history of India might have been different (ईश्वरी प्रसाद, हुमाय, पृ० 129)। Humayun committed another blunder in putting off the battle He could have hoped to succeed by making in immediate attack only बनर्जी 1, प० 224।

3 तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास द्वारा अनुवादित, प० 471, फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 87।

उसके चौडे भाग म मुगल । यदि दोना की परिस्थितियो को दखा जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि अफगानो की स्थिति मुगलो की अपेक्षा खराब थी । वे दोनो नदिया के बीच त्रिकोण के ऊपरी भाग मे पड गये थ । यदि मुगला न कमनासा तथा गगा के बीच के भाग को घेरने का प्रयत्न किया हाता तो अफगान दो तरफ से नदी और एक तरफ से मुगल सना स घिर जात और इस त्रिकोण स भाग निकलना कठिन हो जाता किन्तु दुभाग्यवश दोना सेनाए एक दूसरे के सामने लगभग तीन महीन (1539 इ० क अप्रल स जून तक) खडी रही । इस तरह तीन महीने व्यथ बीत गय ।[1]

शेर खा के युद्ध स्थगित करन के कई कारण थे । उसने ख्वास खा को अपनी सेना के साथ तत्काल आन के लिए दूत भेजा था । वह उसकी प्रतीक्षा मे था । इस बीच वह शक्ति सचय भी करता जा रहा था । शेर खा की दृष्टि आकाश पर भी थी तथा वह चाहता था कि वर्षा प्रारम्भ हो जाए । इसके अतिरिक्त वह उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा म था, एसा अवसर जब वह अफगाना को मुगला के विरुद्ध मानसिक तथा शारीरिक शक्ति स तयार कर ले । उसने अभी तक मुगलो से खुल-कर युद्ध नही किया था । इस कारण वह बिना पूण तयारी तथा विजय की आशा के उनपर आक्रमण करन के लिए तैयार नही था ।

चौसा पहुचन पर मुगल सेना की अवस्था अच्छी नही थी । कामरान के आगरा निवास के कारण सेना मे घबराहट थी । अन्न तथा पशुओ के लिए चारे की कमी थी । इस बीच चुनार से बग मीराक तथा जौनपुर से बाबा बेग जलायर अफ़गाना के भय स भागकर चौसा पहुचे । इनके पहुचने से सहायता जरूर पहुची किन्तु साथ ही भोजन तथा चारे की कठिनाई भी बढ गयी ।[2] अफगानो से परा-जित होकर चुनार तथा जौनपुर से वापस आय हुए मुगल सनिका का, चौसा के मदान म खडे मुगल सनिका तथा सनानायको की मन स्थिति तथा साहस पर क्या प्रभाव पडा होगा, इसका हम अनुमान लगा सकते हैं । सेना की शाचनीय अवस्था देखकर हुमायू ने सहायता लेन के लिए एक द्रुतगामी दूत आगरा भेजा किन्तु आगरा की जो दशा थी उसम वहा स कोइ सहायता न मिल सकी ।

---

1 जौहर, स्टीवट, पृ० 23 के अनुसार दोनो सेनाए दो महीन एक दूसर के सामन डटी रही । हैदर मिर्जा (तारीखे रशादी, एलियस तथा डासन पृ० 470), बदायूनी (मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 350) तथा फिरिश्ता (ब्रिग्स 2, पृ० 85) क अनुसार तीन महीने ।

2 तबक़ात अकबरी, डे, 2, पृ० 68 ।

3 गुलबदन हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 135 ।

इस बीच हुमायु ने पुन सधि वाता प्रारम्भ की। मधि वाता के लिए हुमायु ने शेख खलील[1] को शेर खा के पास दूत वनाकर भेजा। जिस समय हुमायु का दूत पहुचा शेर खा आस्तीन चढाय, वलचा हाथ मे लिये जून के महीन की सम्त गर्मी म अपनी सना के लिए खाइया खोदन म व्यस्त था। दूत को देखते ही उसने हाथ धोय तथा छाया का प्रवध कर जमीन पर बैठ गया और सधि की वार्ता प्रारम्भ कर दी। ऐसा प्रतीत होता है कि सधि की शर्तें भी निश्चित हो गयी। इसक अनुसार यह निश्चय हुआ कि शेर खा को सम्पूण बगाल तथा बिहार की उसकी पुरानी जागीर प्राप्त होगी, शेर खा हुमायू की अधीनता स्वीकार करगा और उसके नाम स खुत्वा पढवाएगा तथा सिक्के चलवाएगा, चुनार का दुग भी शेर खा को प्राप्त होगा।

यह सोचकर कि किसी को यह पता न चले कि मुगलो न कठिनाई म पडकर सधि की है, हुमायू न शेर खा से कहा कि वह नदी का भाग छोड दे जिसस मुगल

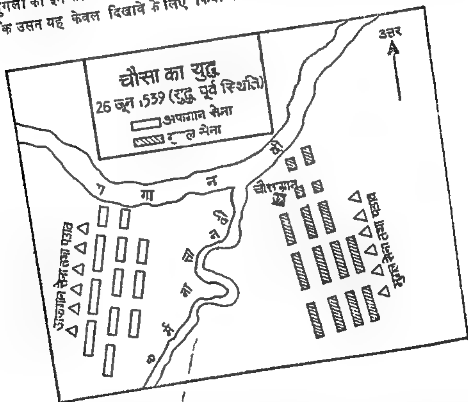
---

1 बदायूनी (मुन्तखवुत्तवारीख, 1 प० 350 51) के अनुसार हुमायू ने शख अजीज को भेजा। वाद म शेर खा न शेख खलील को भेजा। अब्बास क अनुसार (इलियट तथा डासन, 4, प० 371) हुमायू ने शेख खलील को भेजा। ये प्रसिद्ध सन्त शेख फरीद शकरगज के वश के थे। इन्होने सवके सामने शेर खा को सधि के लिए समझाया। इसी बीच उनके मुह स निकला, "यदि तुम शान्ति नही चाहत हो तो युद्ध करो।" शेर खा न इसका उत्तर दिया, "आप जो कुछ कह रहे ह वह मेर लिए शुभ है।" इसके उपरान्त पारितोपिक देकर उसन शेख को विदा कर दिया। पुन उसन उन्ह एकान्त म बुलाया। उसन उन्ह याद दिलाया कि अफगान उनके पूवज शेख फरीद का कितना सम्मान करते थे। उन्ह प्रसन्न कर उसन पूछा कि वह उस राय दे कि वह युद्ध कर या शान्ति। शेख ने जो शेर खा की चापलूसी स फूल गया था, स्वीकार किया कि हुमायू की सेना की हालत खराब थी तथा युद्ध अफगानो के लिए लाभप्रद था। अब्बास के अनुसार इस परामश के पश्चात् शेर खा ने युद्ध का निश्चय कर लिया।

जौहर तथा अब्बास के अनुसार हुमायू ने शेख खलील का शेर खा के पास भेजा। फिरिश्ता, निजामुद्दीन अहमद तथा वदायूनी के अनुसार शेर खा न शेख खलील को भेजा (जौहर, स्टीवट, 23, फिरिश्ता ब्रिग्स, 2, पृ० 87, तवकाते अक्वरी, डे, 2, प० 68, मुन्तखवुत्तवारीख 1, प० 351)। जौहर वहा उपस्थित था तथा अब्बास न इस घटना का अधिक वणन किया है। इनका कथन सत्य प्रतीत होता है। डा० त्रिपाठी, (राइज एण्ड फाल, पृ० 95) लिखते है कि मुगलो की स्थिति अच्छी थी तथा सधिवार्ता शेर खा ने प्रारभ की।

सेना को कमनासा पार करने म कठिनाई न हो। इसके अतिरिक्त उसने यह भी स्वीकार कराया कि नदी के पूर्वी तट पर पहुचने पर शेर खा तथा उसकी सेना कुछ दूर तक मुगलो द्वारा पीछा किय जाने पर हट जाए।[1] यह इस कारण किया गया जिससे मुगलो का मान बढे तथा यह प्रतीत हो कि अफगान अपनी शक्तिहीनता के कारण पराजित हुए है।

हुमायू न इस तरह की शर्तें क्या रखी ? क्या उस शेर खा की नीयत पर सदेह था ? अथवा यह केवल औपचारिक था ? यह बताना कठिन है। शेर खा ने मुगलो की इन शर्तों को स्वीकार कर लिया। बाद की घटनाओ से यह स्पष्ट है कि उसने यह केवल दिखावे के लिए किया था। शेर खा न हुमायू को विश्वास



1 तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 371।

2, बदायूनी (मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 351) के अनुसार शेर खा ने कुरान की शपथ लेकर इन शर्तों को स्वीकार किया। जौहर (स्टीवर्ट, पृ० 23) के अनुसार सधि हो गयी। फिरिश्ता के अनुसार दोनो दलो न शपथ ग्रहण कर सधि की शर्तें स्वीकार की (ब्रिग्स 2 पृ० 87)। तबकात अकबरी (डे, 2, 69) म केवल इतना लिखता है कि सधि निश्चय हो गयी।

दिलाने के लिए मुगल खेमे मे जो अनाज आ रहा था उसमे रुकावट डालना बन्द कर दिया। हुमायू ने भी नदी पार करने के लिए पुल बनाने की आज्ञा दे दी। शेर खा इस बीच ख्वास की प्रतीक्षा कर रहा था। ख्वास खा भी 30 मई 1539 ई० को पहुच गया। ख्वास खा के पहुचने के पश्चात शेर खा ने यह समाचार प्रसारित कर दिया कि झारखण्ड के चेरुह् सरदार या जमीदार उस पर आक्रमण करने आ रहे है। उसने अपने सैनिको को तैयार किया तथा प्राय लगभग आठ मील झारखण्ड की तरफ बढ गया। पर यह कहकर कि चेरुह् सरदार अभी दूर है वह पुन लौट आया दूसरे दिन भी इसी तरह जाकर वह लौट आया। पाच छ दिन शेर खा इस तरह का युद्धाभ्यास करता रहा।[1] इससे मुगलो को विश्वास हो गया कि शेर खा चेरुह् सरदार पर आक्रमण कर रहा है। शेर खा के सैनिको को इससे युद्धाभ्यास भी हो गया तथा उन्हे रात्रि मे बिना शोर तथा गडबडी किये आक्रमण करने की



1 मखजने अफगना के अनुसार पाच छ दिन तक, अब्बास के अनुसार केवल दो दिन ही उसने इस तरह का युद्धाभ्यास किया (डान, पृ० 120, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 372)। शेर खा ने जिस सरदार पर आक्रमण किया उसकी विवेचना के लिए देखिए होदीवाला, 1, पृ० 454।

आदत भी पड गयी।

इसी बीच मानसून प्रारम्भ हो गया था। पानी बरसने लगा था जिससे गगा-कमनासा का पाट भी बढ गया था। चेरुह सरदार पर शेर खा के आक्रमण की सूचना पाकर हुमायू ने शेर खा तथा चेरुह सरदार के युद्ध से अपने को तटस्थ रहने की घोषणा की। हुमायू का यह विचार आश्चयजनक प्रतीत होता है, विशेषत इस कारण कि उसने यहा भी उसी तरह का व्यवहार किया जैसा गुजरात के अभियान म उसने चित्तौड के सबध म किया था।

सातवें दिन शेर खा ने उसी तरह का युद्धाभ्यास किया। 25 जून 1539 ई० को प्रात शेर खा ने ख्वास खा को चुने हुए सनिकों के साथ रवाना कर दिया जसे वह चेरुह सरदार पर आक्रमण करने जा रहा हो। शेख खलील ने पत्र द्वारा हुमायू को सूचित किया कि ख्वास खा सेना के साथ रवाना हो गया है तथा सम्राट को सतक रहना चाहिए जिससे वह उस पर आक्रमण न कर द।[1] किन्तु हुमायू न इस तरफ ध्यान नही दिया तथा उस रात सम्राट तथा मुगल निश्चिन्त थे।

रात्रि म शेर खा ने अपनी सना एकत्र की तथा मुगल सेना के दूसरी तरफ शान्ति के साथ रवाना हुआ। कुछ दूर जाने पर उसने प्रमुख सरदारो की एक विचार गोष्ठी की। ख्वास खा भी जो प्रात रवाना हो गया था, आ मिला। शेर खा ने मुगल सम्राट की धोखेबाजी, अफगानो के प्रति उसके विचार, अपनी स्वामिभक्ति इत्यादि का वणन कर अन्त म कहा कि युद्ध के सिवा अब अफगानो के लिए अन्य माग नही रह गया है। सभी सरदारो न प्रतिज्ञा की कि वे मुगलो को पराजित करने म प्राण की बाजी लगा देंगे।[2] कुछ दूर और जाने के पश्चात उत्साहित अफगान सेना प्रात होने के कुछ पूव मुगल खेमे की तरफ लौट पडी (26 जून 1539 ई०)।[3]

---

1 जौहर, स्टीवट, पृ० 24, कानूनगो, शेरशाह, पृ० 192।

2 शेर खा के भाषण इत्यादि के लिए देखिए तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 373 74।

3 चौसा का युद्ध किस दिन हुआ था इस विषय म डॉ० कानूनगो (शेरशाही पृ० 194) 27 जून, डा० बनर्जी (हुमायू 1, पृ० 228) डा० ईश्वरी प्रसाद (हुमायू, पृ० 134) तथा डॉ० यदुनाथ सरकार (मिलिटरी हिस्ट्री आफ इण्डिया, पृ० 63) 26 जून स्वीकार करते है। बदायूनी (मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 352) इस घटना को 946 हिजरी तथा इसकी तारीख के लिए यह मिसरा लिखता है

'सलामत बुवद पादशाह बसे।' अकबरनामा, 1, पृ० 159 मे इसकी

मुगल सेना शेर खा की गतिविधि से अनभिज्ञ थी। अफगाना की चेरुह सरदार के युद्ध मे व्यस्तता तथा सधि हो जाने की निश्चिन्तता से मुगल सना सुख से सो रही थी। रात की पहरेदारी का उत्तरदायित्व मुहम्मद जमान मिर्जा पर था। ऐस सकट काल म ऐसे व्यक्ति को, जिसने राज्यारोहण के उपरान्त बराबर हुमायू का विरोध किया हो, यह उत्तरदायित्व देना हुमायू की अदूरदर्शिता का स्पष्ट प्रमाण है।

अफगानो ने अपनी सेना को तीन भागा मे विभाजित किया। पहला दल शेर खा के पुत्र जलाल खा, दूसरा शेर खा तथा तीसरा ख्वास खा के नेतृत्व मे था।[1] अफगाना ने कमनासा नदी को पार कर मुगल सेना पर आक्रमण किया। उन्हाने नदी के पुला पर अधिकार कर लिया। जलाल खा ने कमनासा की तरफ के भागा, शेर खा ने उससे आगे बढकर मुगल सेना के मध्य भाग तथा ख्वास खा न गगा के तट के निकट के भाग पर आक्रमण किया। इस तरह मुगल सना तीन तरफ से घिर गयी। उनके दो तरफ नदी थी और बाकी तरफ अफगाना की सेना।

मुगल सेना इतनी बेखबर थी तथा आक्रमण इतना तीव्र था कि मुगला को अपने घोडा पर जीन कसन तथा अस्त्र शस्त्र धारण करन तक का अवसर नही मिला।[2] आक्रमण का समाचार सुनकर हुमायू तैयार होकर बाहर आया। मुगल सेना म गडबडी फल गयी थी और मुगल सैनिका म भगदड मची हुइ थी। हुमायू ने शान्ति स्थापित करन का प्रयत्न किया तथा इस भय से कि कही उसके अन्य सैनिक भाग न जाए, उसने निकट के पुला को तोड दन की आज्ञा दी। इसका परिणाम बहुत ही भयकर हुआ क्योकि जिस समय हुमायू युद्ध मे पराजित होकर भागना चाहता था, इन पुलो के नष्ट हो जाने से भागना एक तरह स असम्भव हो गया।

हुमायू ने मुगल सना को अफगानो के विरुद्ध युद्ध करन के लिए इकट्ठा करने का प्रयत्न किया किन्तु केवल 300 के लगभग सैनिक ही उसके नक्कारे की

तिथि 9 सफर, 946 हि० (26 जून 1539 ई०) दिया है। बेवरिज ने अकबरनामा के अग्रेजी अनुवाद म 7 जून 1539 ई० दिया है जो सही नही है।

1 अकबरनामा, 1, पृ० 159।

2 वही, पृ० 159।
He (Sherkhan) first of all deluded his enemies by signing a peace treaty and then threw them totally off their guard by undertaking a campaign against his local Hindu enemy, the Chero chieftain सरकार मिलिटरी हिस्ट्री आफ इण्डिया पृ० 63।

आवाज पर उसके साथ आ सके। इन सनिका न बल पर भी हुमायू शेर खा स युद्ध करन के लिए तयार हो गया। उसन बडो बहादुरी के साथ अफगाना क एक हाथी को घायल कर दिया जिसम उस स्वय चोट लगी[1]। हुमायू युद्ध करके उसका निणय कर लना चाहता था किन्तु कुछ बुद्धिमान साथिया ने देखा कि यह एक तरह स आत्महत्या ही थी। उन्हान हुमायू के घाडे की लगाम पकडकर उस युद्ध क मैदान स बाहर निकाला। कठिनाई स हुमायू नदी के तीर पर पहुचा। किन्तु पुलो के टूट जाने स नदो पार करना आसान नहीं था। हुमायू ने अपना घोडा नदी म डाल दिया किन्तु नदी की धारा इतनी तज थी कि उसके लिए नदी पार करना असम्भव हो गया। इस परिस्थिति म निजाम नामक एक भिश्ती की मशक की सहायता स हुमायू नदी के दूसरे तट पर पहुचा।[2] जिस समय हुमायू नदी पार कर रहा था इस कठिन पराजय की भयकर परिस्थिति म भी उसका दार्शनिक मस्तिष्क शान्त था। उसने भिश्ती से उसका नाम पूछा और उसस यह सुनकर कि उसका नाम निजाम था उसन उस व्यक्ति के प्रति आभार प्रकट करत हुए कहा कि उसका नाम निजामुद्दीन औलिया[3] होगा। हुमायू ने निजाम को वचन दिया कि

---

1 जौहर, स्टीवट, प० 25।

2 हुमायू क निजाम द्वारा सहायता पान की घटनाओ के विषय म समकालीन इतिहासकारो म थाडी भिन्नता है। जौहर के अनुसार हुमायू न घोडा नदी मे डाल दिया। वह कुछ ही दर म डूब गया। उसी बीच एक व्यक्ति मशक फुलाये दिखायी दिया। उसने सकेत किया कि 'हु बादशाह मशक पकड लें।" उसी की सहायता म हुमायू न नदी पार की। जौहर उसका नाम पूछने तथा उस गद्दी पर बठान क लिए वचन दन का भी वणन करता है, (स्टीवट, पृ० 25 26)। निजामुद्दीन अहमद लिखता है कि सम्राट ने अपना घोडा नदी म डाल दिया वह आधा डूब गया एक भिश्ती की सहायता स वह बचा तथा पानी स निकलकर आगरा की तरफ रवाना हुआ (तबकाते अकबरी डे, 2, पृ० 69)। अबुल फजल के अनुसार हुमायू पुल के निकट पहुचा। वहा पुल टूट चुका था। वह घोडे सहित नदी म कूद पडा। वह घोडे स पृथक हो गया तथा निजाम भिश्ती की मशक की सहायता से उसन नदी पार की। वह भिश्ती से नाम पूछने तथा गद्दी पर बठाने का वचन देने का उल्लेख करता है (अकबरनामा 1, पृ० 195)।

3 निजामुद्दीन औलिया दिल्ली सल्तनत काल के प्रसिद्ध सन्ता म से थ। इनका जन्म बदायू मे 1236 ई० म तथा मत्यु दिल्ली म 1325 ई० म हुई। इनकी मजार दिल्ली मे है जो निजामुद्दीन कहलाती है। इनकी जीवनी के लिए देखिए हबीब, हजरत अमीर खुसरु आफ देहली, प० 29–40, एनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लाम, 3, प० 932।

वह राजसिंहासन पर आरूढ़ हो जाएगा तो उसको आधे दिन तक बादशाह बनाएगा[1] नदी पार कर हुमायू आगरा की तरफ रवाना हुआ।

चौसा के युद्ध का परिणाम

चौसा का युद्ध निर्णयात्मक था और इसने शेर खा की शक्ति मे चार चाद लगा दिए। इस युद्ध मे हुमायू पूर्ण रूप से पराजित हुआ और उसकी सेना नष्ट हो गयी। यही नही, इससे मुगलो के यश को बहुत बडा धक्का लगा। बाबर के आगमन से अबतक के युद्धो मे यह मुगलो की प्रथम पराजय थी।

इस युद्ध मे कुछ प्रमुख अमीर मारे गये। मुहम्मद जमान मिर्जा, जिसने हुमायू के विरुद्ध कई बार विद्रोह किया था, भागने का प्रयत्न किया पर वह डूबकर मर गया। इसके प्रमुख मृत अमीरो मे मौलाना मुहम्मद परग़ली, मौलाना कासिम अली सद्र, थट्टा के मौलाना जलाल भी थे।[2] बाबा बेग जलयार तथा कुचबेग को हुमायू ने अपनी रानी बेगा बेगम को हिफाजत से लाने के लिए भेजा। बेगम के खेमे के पास ये सभी मारे गये। इनके अतिरिक्त लगभग आठ हजार मुगल सेना भी मारी गयी।[3]

कई स्त्रिया भी इस युद्ध मे या तो डूबकर मर गयी या उनका पता न चला। गुलबदन बेगम ने इनमे से कुछ स्त्रियो का नाम दिया है। हुमायू की दो पत्नियाँ—चादबीबी तथा शादबीबी—हुमायू की प्रमुख बेगम बेगा बेगम की पुत्री आकिका तथा सुल्तान हुसेन बैकरा की पुत्री आयशा बेगम इनमे प्रमुख थी। इन खोयी हुई स्त्रियो के अतिरिक्त शेर खा ने हुमायू की प्रमुख पत्नी बेगा बेगम को बन्दी बना लिया। शेर खा ने युद्ध के समय भी बेगा बेगम की रक्षा का प्रबन्ध किया तथा उसने हुक्म जारी किया कि कही भी मुगल स्त्रिया अथवा बच्चो को न मारा जाए और जो मिलें उन्हे बेगा बेगम के खेमे मे भेज दिया जाए। इस तरह लगभग चार हजार स्त्रिया जमा हो गयी।[4]

जिस समय हुमायू को बेगा बेगम का लापता होने का समाचार मिला, उसने अपने चार अमीरो को उसे तलाश करने के लिए भेजा किन्तु उस युद्ध मे तरदी बेग के अतिरिक्त सभी मारे गये और तरदी बेग ने लौटकर परिस्थिति की सूचना दी।

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 159।

2 वही,।

3 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 88।

4 इलियट तथा डासन, 4, पृ० 375-76 तथा पृ० 374 का पहला नोट, चौसा मे लापता तथा मृत मुगल स्त्रियो के लिए देखिए, गुलबदन, हुमायू-नामा, बेवरिज, पृ० 136 37।

बाद मे शेर खा ने बेगा बेगम को हुमायू के पास यह कहकर वापस भेजा कि उन पर कोई अत्याचार नही हुआ है। बेगा बेगम बाद मे हाजी बेगम के नाम स प्रसिद्ध हुई। उस अकबर का विशेष स्नेह प्राप्त था और हुमायू की मत्यु के पश्चात अकबर के राजत्व मे उसने दिल्ली म हुमायू के मकबर का निर्माण कराया।

इस युद्ध ने शेर खा का बगाल तथा बिहार का त काल अधिकारी बना दिया। यह उसकी मुगलो से खुलकर प्रथम लडाई थी। प्रारम्भ का भय समाप्त हो गया। अब वह कभी भी मुगला से लडकर उह पराजित कर सकता था। अविजेय मुगला की पराजय ने अफगान सनिका म अपार उत्साह पैदा कर दिया तथा उह शेर खा के नेतृत्व म कठिन से कठिन काय करने के लिए तयार कर दिया।[1]

चौसा के युद्ध मे हुमायू की पराजय के कारण

चौसा के युद्ध म मुगल पूण रूप स पराजित हो गये। उनकी सेना के अधिकतर सनिक मारे गय अथवा बन्दी बनाये गय। जा बचे वे इधर उधर भाग गय। मुगल अमीर तथा स्त्रिया भी इस युद्ध म पूण रूप से बचायी न जा सकी। स्वय मुगल सम्राट बडी कठिनाई स नगण्य साथिया के साथ भागकर अपने प्राण बचा सका। अफगाना न मुगलो की शक्ति का इस तरह चूर कर दिया कि युद्ध के परिणाम के विषय म स देह नही रह गया।

हुमायू की पराजय का प्रथम कारण उसकी सेना की दुव्यवस्था थी। बहुत से घोडे मारे गये थे या बीमार थ। बगाल मे इतने दिनो रुकने के कारण सैनिको म शिथिलता आ गयी थी। उनके खाने-पीने का प्रब ध भी ठीक नही था। इस तरह युद्ध के लिए जिस तरह की चुस्ती की आवश्यकता होती है वह उसकी सेना म नही थी।

चौसा के मदान मे तीन महीन रुककर हुमायू न शेर खा को उसकी सना को सगठित करने का सुअवसर दिया। इन तीन महीना तक रुकन का मुगला को कोई लाभ नही हुआ। आगरा स कोई सहायता नही प्राप्त हो सकी। इसके विपरीत कामरान तथा अस्करी क आगरा क निकट रहने से हुमायू तथा उसके स्वामिभक्त अमीरा के मन म सशय बना हुआ था। इसके अतिरिक्त हुमायू ने माग बदलकर तथा नदी का पारकर अफगाना का अपनी हीनावस्था का ज्ञान होने दिया तथा सेना को सकट म डाल दिया।

म धि क वातावरण तथा इस विश्वास ने कि अब शेर खा से युद्ध नही करना पडेगा, मुगलो को इस तरह निश्चिन्त कर दिया था कि उहाने रात्रि की सुरक्षा का भी उचित प्रब ध नही किया। जिस समय अफगाना न आक्रमण किया, मुगल

1 कानूनगो, शेरशाह, प॰ 196।

बेखबर सो रहे थे। सबसे बडा दुर्भाग्य तो यह था कि हुमायू ने उस रात्रि की सुरक्षा का उत्तरदायित्व मुहम्मद जमान मिर्जा को सौपा था। ऐसे व्यक्ति को जिसन हुमायू के राज्यारोहण के पश्चात कई वार विद्रोह किया हा, ऐसे उत्तरदायित्व का काय देना किसी भी दृष्टि स उचित नही था। मुहम्मद जमान को हुमायू के भाग्य से क्या रुचि हो सकती थी? जिस समय अफगाना न आक्रमण किया, वह बेखबर था।

चौसा की पराजय शेर खा मे प्रथम श्रेणी के सेनापति का गुण प्रदर्शित करती है। उसने प्रत्येक दृष्टि से अपनी सेना को तयार कर लिया था। उसकी सना का साहस तथा धय ऊचा था और उसके पास युद्ध के सभी सधन उपलब्ध थे। शेर खा न अपनी सेना को रात्रि म शान्ति से आक्रमण करन का भी प्रशिक्षण दे दिया था। नपोलियन ने एक वार कहा था कि युद्ध मे आदमियो का नही वल्कि 'आदमी' का महत्त्व है। शेर खा ने इस युद्ध म अपनी योग्यता से पूण रूप से इस कथन को चरितार्थ कर दिया।

यह कहना कि शेर खा के धाखे से आक्रमण के कारण हुमायू पराजित हुआ[1] बहुत महत्त्वपूण नही है। हुमायू स्वय सधिवार्ता तोडकर मनेर मे बगाल की तरफ बढा था। गुजरात अभियान म उसन माडू के दुग पर सधि निश्चित हा जाने के पश्चात् आक्रमण किया था। फिर यदि शेर खा न उसके साथ उसी तरह का व्यवहार किया तो इसम आश्चय या दुख का कोई कारण नही प्रतीत होता। शत्रु स सदा सतक रहना चाहिए। चौसा के युद्धस्थल म मुगला न जैसी निश्चिन्तता दिखलायी वह परिस्थितियो के प्रति उनकी उदासीनता का स्पष्ट प्रमाण है।

चौसा से आगरा

निजाम भिश्ती की मशक की सहायता से गगा नदी पार कर हुमायू, नदी के दूसरे तट पर बीरपुर के निकट पहुचा। वहा से वह चुनार आया। यहा तीन दिन

1, ' But to these causes of victory we must also add his uttar lack of scruples He felt no qualms of conscience in breaking his word and sanctioning arrangements which were contrary to his declared intentions " (इश्वरी प्रसाद, हुमायू पृ० 136)

2 हुमायू चौसा स चुनार आया या नहा, यह निश्चित रूप नहीं कहा जा सकता। समकालीन इतिहासकारा म केवल गुलबदन बेगम हा लिखती है कि वह चुनार म तीन दिन रुका रहा (हुमायूनामा बेवरिज, पृ० 135)। मार्ग म हुमायू सारनाथ म चौखण्डी स्तूप के निकट रुका रहा। वहा एक अभिलेख है जिसस यह प्रमाणित हाता है। (बगाल पास्ट एण्ड प्रेजेन्ट, जिल्द 63 पृ० 11-17)।

करकर वह आगे बढा। यहा गहोर का शासक राजा वीरभान उससे अरल[1] के निकट मिला। उसने हुमायू की बडी सहायता की। हुमायू के साथी भूख, प्यास तथा थकान से परेशान थे। राजा ने उनके लिए आवश्यक वस्तुओ का प्रबध किया। बहुत से सनिको के पास घोडे नही थे, उनके लिए घोडो का प्रबध किया गया। पाच छ दिन हुमायू यहा रुका रहा। इसी समय सूचना मिली कि अफगानो की सेना हुमायू का पीछा करती हुई उसके निकट पहुच गयी है। वीरभान ने अपने पाच छ हजार सनिको के साथ अफगानो की सेना का माग रोक लिया। इससे हुमायू को आगे बढ़ जाने का अवसर मिला।

अरल से हुमायू कडा पहुचा। कन्नौज के निकट के गगातट के भागो पर अफगानो ने अधिकार कर लिया था। इस कारण यह माग सुरक्षित नही था। गगातट को छोडकर हुमायू यमुनातट के माग से कालपी होते हुए आगरा की तरफ रवाना हुआ। माग मे उसके अपने सनिक उसे छोड छोडकर भागते जा रहे थे। जो अमीर तथा सनिक उसके पास थे उनके हृदय मे भी वह सच्चाई, सहानुभूति तथा स्वामिभक्ति नही थी जिसकी हुमायू को अत्यन्त आवश्यकता थी। कालपी मे कासिम करांचा के पुत्र ने हुमायू के लिए अत्यधिक उपहार (पशकश) का प्रबध किया था। किन्तु उसके पिता ने जो हुमायू के साथ आ रहा था उसे रोक दिया। इस कारण केवल नाममात्र की चीजें हुमायू के सामने पेश की गयी। हुमायू को इसकी सूचना मिल गयी था जिससे उसे बहुत क्रोध आया। उसने पशकश मे से केवल एक जडाऊ जीन (और वह भी कामरान को देने के लिए) ही स्वीकार की तथा अन्य वस्तुए अस्वीकार कर दी।

आगरा मे

हुमायू के आगरा पहुचने[3] की सूचना किसी को नही थी। सबसे पहले उसकी मुलाकात कामरान से हुई। एक दूसरे को देखते ही दोनो भाइयो की आखो मे

1 अरल इलाहाबाद जिले के करछना तहसील मे इलाहाबाद दुग की दूसरी तरफ, यमुना के दाहिने किनारे नैनी स्टेशन के निकट स्थित था।

2 जौहर स्टीवर्ट, पृ० 26 27।

3 चौसा से आगरा पहुचने मे हुमायू ने अधिक समय नही लगाया। हैदर-मिर्जा के अनुसार हुमायू सफर 946 हि० (18 जून 1539 ई० से 17 जुलाई 1539 ई० के बीच) मे आगरा पहुचा। तारीखे रशीदी (एलियट तथा डासन पृ०471)। डा० कानूनगो के अनुसार आगरा पहुचने मे उसने 13 दिन लगाये, अर्थात् वह 10 जुलाई को आगरा पहुचा (शेरशाह पृ० 197, टिप्पणी)। हुमायू माग मे तीन दिन चुनार तथा पाच दिन अरल

आसू भर आये।[2] उसी दिन हुमायू ने अपने सम्बन्धियो से मुलाकात की, इनमे गुलबदन बेगम भी थी। उसने गुलबदन से कहा कि बगाल अभियान के समय तो वह सोचता रहता था कि उसे भी साथ ले गया होता, किन्तु हलचल के बाद उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि वह उसके साथ नही गयी थी। हिन्दाल की माता तथा अन्य व्यक्तियो के कहने से हुमायू ने हिन्दाल को क्षमा कर दिया। वह अलवर से बुलाया गया तथा पुरानी सभी बाते भुलाकर सकट काल मे एकता स्थापित हुई। कामरान तथा अस्करी तो वहा थे ही, मुहम्मद सुल्तान मिर्जा भी अपने पुत्र के साथ आगरा आ पहुचा। उसे भी क्षमा कर दिया गया। इस तरह आगरा मे सभी प्रमुख मुग़ल अमीर तथा स्त्रिया उपस्थित हो गये। हुमायू भी शेर खा से युद्ध के लिए अस्त्र शस्त्र तथा सामग्रिया एकत्र करने मे व्यस्त हो गया।

निज़ाम भिश्ती

हुमायू के आगरा पहुचने के कुछ ही दिन पश्चात् निज़ाम भिश्ती भी पहुचा। हुमायू ने उस आधे दिन के लिए राज सिंहासन पर बैठने दिया। उसे कुछ शासन सम्बन्धी आदेश देने का अधिकार भी दिया गया तथा उसने जो आदेश दिया उसे चलने दिया गया। अमीर तथा अन्य लोगो ने उसका अभिवादन किया। कामरान बीमारी का बहाना कर दरबार म नही गया। हुमायू के इस काय से वह बहुत क्रुद्ध हुआ। उसन हुमायू से कहलाया कि उस समय जब शेर खा निकट था इस तरह का काय उचित न था। भिश्ती को अधिक से अधिक इनाम इत्यादि दिया जा सकता था किन्तु उसे सिंहासन पर बठाने की आवश्यकता नही थी।[3]

कामरान क कथन म बहुत कुछ तथ्य था। निज़ाम एक बहुत ही साधारण एव निम्न कोटि का व्यक्ति था। ऐसे व्यक्ति को मुग़ल सिंहासन पर बैठाने तथा अमीरो द्वारा उसका अभिवादन करने से मुगल सिंहासन की मानहानि हुई। हुमायू

म रुका रहा। क्या हुमायू ने केवल पाच दिन ही मे यह यात्रा पूरी की? यह सम्भव नहीं प्रतीत होता। उसने इससे अधिक समय लगाया होगा।

1 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 70, मु तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 353।

2 अबुल फजल नीम रोज़' शब्द का प्रयोग करता है। (अकबरनामा, 1, पृ० 160) गुलबदन बेगम का वणन अबुल फजल के वणन से कुछ भिन्न है। गुलबदन के अनुसार निज़ाम दो दिन तक सिंहासन पर बैठाया गया और वह जिसको जो चाहता था देने दिया गया। अमीरो को उसे अभिवादन करना पडता था (हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 140)। जौहर के अनुसार (स्टीवर्ट, पृ० 27) उसे केवल दो घटे के लिए ही गद्दी पर बैठाया गया।

3 गुलबदन, हुमायूनामा बेवरिज, पृ० 140।

था यह कार्य एक मजाक बन गया। यह कार्य भावना से प्रभावित था। जिस व्यक्ति ने हुमायू के प्राण बचाये थे तथा जिसके कारण उसे पुन सिंहासन पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, उसके आभार मे वह दबा जा रहा था। हुमायू का यह दृष्टिकोण व्यक्तिगत रूप मे आदर्श कहा जा सकता है किन्तु प्रशासकीय विचार से यह उचित नही था।

विचार-विमर्श

हुमायू जुलाई 1539ई० मे आगरा पहुचा। इस समय से लेकर शेर खा के विरुद्ध पुन आक्रमण करने के समय (मई 1540ई०) तक लगभग दस महीने हुमायू आगरा मे ही रहा। यह समय उसने युद्ध की तयारी तथा शेर खा के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा स्थापित करने मे व्यतीत किया। क्या इतना समय व्यर्थ के विचार विमर्श करने मे बरबाद करना उपयुक्त था? यदि नही तो हुमायू इस बीच क्या करता रहा?

चौसा से लौटने के पश्चात् हुमायू स्वय चालीस दिन बीमार रहा।[1] कदाचित् चौसा के युद्ध से उसे ऐसा मानसिक धक्का लगा जिसे सहना उसके लिए सरल नही था। चौसा के युद्ध मे उसे कुछ घाव भी लगे थे जिससे उसका कष्ट और बढ गया था। इस तरह कुछ दिन यो ही बीत गये।

कामरान की सेना मे बीस हजार बहुत ही अच्छे सैनिक थे।[2] यदि उसने यह सेना हुमायू की सेवा मे उपस्थित कर दी होती तो सभव था कि हुमायू ने अफगानो से चौसा की पराजय का बदला ले लिया होता। किन्तु कामरान अपनी सेना को हुमायू के नेतृत्व मे भेजने के लिए तयार नही था। उसने शेर खा से स्वय युद्ध करने की आज्ञा मागी। हुमायू ने इसकी आज्ञा नही दी तथा उसने कहा कि 'शेर खा ने मुझसे युद्ध किया है और उसका बदला मैं लूगा।' इस तरह दोनो भाइयो मे समझौता न हो सका।

हुमायू ने कामरान के आक्रमण करने का क्या विरोध किया? हुमायू के राज्य काल के प्रारम्भ मे कामरान का व्यवहार अच्छा नही था। हुमायू उसे सशय की

1 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 137।

2 अबुल फजल के वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारभ मे कामरान ने शेर खा के विरुद्ध अपने नेतृत्व मे युद्ध करने के लिए अपनी सेवाए अर्पित की। यह स्वीकार न होने से उसने अपनी सेना नही दी तथा कुछ दिन पश्चात लाहौर चला गया (अकबरनामा, 1, पृ० 161 62)। जौहर ने इस विषय मे कुछ नही लिखा है। बदायूनी (भाग 1, पृ० 353 54) भी लिखता है कि कामरान अपने नेतृत्व मे शेर खा से युद्ध करना चाहता था। उसके अस्वीकार होने पर उसने पजाब जाने का निश्चय किया। निजामुद्दीन अहमद नेतृत्व के प्रश्न का वर्णन नही करता है। फिरिश्ता का वर्णन भी निजामुद्दीन के समान है।

दृष्टि से देखता था। बंगाल से इतने शीघ्र लौटने का एक प्रमुख कारण कामरान की राजधानी में उपस्थिति भी थी। हुमायू का भय था कि यदि कामरान शेर खा को पराजित करने में सफल हो जाता तो उसकी शक्ति में वृद्धि हो जाती तथा वह जनप्रिय भी हो जाता। उस समय वह हुमायू के लिए एक कठिन परिस्थिति उपस्थित कर सकता था। इसके अतिरिक्त कामरान को भेजने से हुमायू की कमजोरी स्पष्ट हो जाती और प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि में हुमायू एक शक्तिहीन मनुष्य समझा जाता। हुमायू के स्वयं युद्ध करने के निश्चयात्मक विचार में आत्मनिर्भरता तथा आत्मविश्वास की झलक मिलती है। वास्तव में यह हुमायू की प्रतिष्ठा का प्रश्न था।[1]

कामरान अपने दृष्टिकोण से अपनी सेना को हुमायू के नेतृत्व में देने के लिए तैयार नहीं था। हुमायू की पराजय के पश्चात कामरान उसे अयोग्य समझने लगा था और उसका विचार था कि हुमायू शेर खा को पराजित करने में सफल नहीं हो सकेगा। हुमायू द्वारा निजाम भिश्ती को गद्दी पर बैठाने के कारण कामरान बहुत नाराज था और उसने हुमायू का इस कार्य के लिए क्षमा नहीं किया। इसके अतिरिक्त कामरान के परामर्शदाता ख्वाजा कला ने गंगा के भाग में किसी भी तरह का अभियान करने की राय नहीं दी और इस परामर्श को कामरान ने स्वीकार कर लिया। वास्तव में दोनों भाइयों में पारस्परिक सद्भावना की कमी थी। ऐसी परिस्थिति में कामरान को यह सन्देह था कि कदाचित हुमायू उसकी सेना का उपयोग उसी के विरुद्ध करें। इसके अतिरिक्त कामरान को अपनी रक्षा के लिए भी सेना की आवश्यकता थी। ईरान की सेना ने कुछ ही दिन पूर्व दो बार कन्धार पर आक्रमण किया था। अपने चुने हुए सैनिकों के अन्त के पश्चात इन भागों पर अधिकार रखना सरल नहीं था। कामरान की काबुल से अनुपस्थिति काल में मध्य एशिया में ऊजबेक नेता ऊबेदुल्ला खा की मृत्यु हो गयी थी।[2] उसकी मृत्यु के पश्चात् योग्य नेता के अभाव में वहा गड़बड़ी का भय था। कामरान कदाचित्

---

1 डा० त्रिपाठी का मत भिन्न है। उनके अनुसार
Humayun had an experience of the strength & resourcefulness of Sherkhan He did not, therefore, encourage Kamran to invite a conflict with him until full preparations were completed Moreover, it was not wise to stake the troops of Kamran which appeared to be the only effective force then available (राइज एण्ड फाल, पृ० 97)

2 अहसानत्तवारीख, 1, पृ० 294-303।

निकट रहकर मध्य एशिया पर दृष्टि रखना चाहता था। इसके अतिरिक्त ऊबैदुल्ला ख़ा की मृत्यु के पश्चात् शाह तहमास्प को अब ऊज़बेगों से भय नहीं था। इस कारण कामरान के प्रान्त पर ईरानी आक्रमण का भय था।

हुमायूं के बंगाल निवास के समय कामरान आगरा आया, किन्तु वह मीर फख़्र अली के सहायता मांगने पर आया था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यहां आकर वह हिन्दाल को सही मार्ग पर लाने में सफल हुआ तथा उसने कोई ऐसा कार्य नहीं किया जो हुमायूं के लिए हानिकर हो। यदि वह चाहता तो अपने 20,000 सैनिकों की सहायता से आगरा तथा दिल्ली पर अधिकार करने का प्रयत्न करता, किन्तु उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया। फिर उसने हुमायूं की सहायता क्यों नहीं की? कदाचित् अपनी सुरक्षा का विचार उसके मन में इतना बढ़ गया था कि वह भाग कर पंजाब जाना चाहता था जिससे वह अपने भू भाग की रक्षा कर सके। इस तरह दोनों भाइयों का विवाद कामरान की सेना के उपयोग का नहीं वरन् उसके नेतृत्व का था।

इसी बीच कामरान बीमार पड़ गया। भारत की जलवायु उसके लिए बहुत अनुकूल नहीं थी। दो-तीन महीने की बीमारी के कारण वह अपने हाथ-पैर का ठीक तरह प्रयोग भी नहीं कर पाता था।[1] उसका रोग इतना अधिक बढ़ गया और वह इतना कमजोर हो गया कि पहचाना भी नहीं जाता था तथा उसके जीवित रहने की आशा भी कम थी।[2] प्रसिद्ध हकीम अबुल बका की दवा से वह कुछ संभला। बीमारी में उसे यह सन्देह हो गया कि हुमायूं तथा उसकी विमाताओं ने मिलकर उसे विष दे दिया है। जब हुमायूं को उसके इस सन्देह का पता चला तो वह स्वयं उसके पास गया तथा उसने शपथ लेकर उसे विश्वास दिलाने का प्रयास किया कि उसका सन्देह निराधार था, किन्तु कामरान को विश्वास नहीं हुआ। उसने लाहौर जाने का निश्चय कर लिया तथा हुमायूं से अनुमति मांगी। उस परिस्थिति में हुमायूं उसको अनुमति देने के लिए तैयार नहीं था तथा उसने उसकी प्रार्थना पर ध्यान ही नहीं दिया। किन्तु कामरान बराबर जाने की ज़िद करता था। कामरान ने हैदर मिर्ज़ा को अपनी तरफ मिला लिया तथा समस्त राज्यकार्य

---

1 तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास, पृ० 472। फिरिश्ता के अनुसार उसकी बीमारी का कारण उसके खानपान में त्रुटियां थीं जिसके कारण उसको पेचिस (रक्तातिसार) का रोग हो गया (ब्रिग्स, 2, प० 89)। निज़ामुद्दीन अहमद उसके रोग के लिए 'अमराजे मुतज़ादा' अर्थात् एक दूसरे के विरुद्ध रोग लिखता है (तबकाते अकबरी, फा० पृ० 44)।

2 गुलबदन, हुमायूंनामा, बेवरिज प० 140 41।

उसे ही सौंप दिया। उसने हैदर मिर्जा से लाहौर चलने की याचना की। उसने दीनता से कहा, "ऐसी स्थिति में जब शत्रुओं ने मेरे राज्य पर एवं रोग ने मेरे शरीर पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया है और मैं रुग्ण हो गया हूं, भ्रातृभाव का हाथ मेरी ओर से मत खींचो तथा इन दो महान संकटों से मेरी रक्षा करो और मुझे लाहौर पहुंचा दो।"[1] हुमायूं को जब इसकी सूचना मिली तो वह बहुत ही चिन्तित हुआ। अत्यन्त द्रवित शब्दों में उसने कामरान से कहा कि, "शेर खां तथा मुगल सम्राट में युद्ध छिड़ा हुआ है। इसी युद्ध पर बाबर के पुत्रों तथा साम्राज्य का भाग्य निर्भर है। यदि हैदर मिर्जा लाहौर चला जाएगा तो वह सुरक्षित स्थान में पहुंच जाएगा तथा बच जाएगा किन्तु बाकी सभी मारे जाएंगे। हुमायूं के पराजय के पश्चात लाहौर के पतन में देर नहीं लगेगी।" उसने हैदर मिर्जा को याद दिलाया कि उसका उत्तरदायित्व केवल कामरान के प्रति ही नहीं बरन् सभी के प्रति था। यदि वह इस तरह चला जाएगा तो सभी यही कहेंगे कि हैदर मिर्जा ने कठिन समय में बाबर के वंशजों के प्रति अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया।[2]

हुमायूं की प्रार्थना पर हैदर मिर्जा तो रुक गया किन्तु, कामरान इस बहुत ही नाराज हुआ। उसने लाहौर जाने का पूर्ण निश्चय कर लिया। उसकी जिद को देखकर हुमायूं ने उससे प्रार्थना की कि यदि वह जाना ही चाहता है तो जाए पर अपनी सेना छोड़ता जाए। कामरान इसके लिए भी तैयार नहीं हुआ। उसने पहले ख्वाजा कलां को लाहौर भेज दिया तथा नाममात्र के कुछ सैनिकों को छोड़कर[3] स्वयं भी चला गया। व्यापारियों तथा अन्य लोगों ने अपने परिवारों की स्त्रियां इत्यादि को भी कामरान के साथ भेज दिया। कामरान ने गुलबदन से भी लाहौर चलने के लिए कहा। प्रारम्भ में तो वह तैयार नहीं हुई किन्तु बाद में हुमायूं के कहने से वह उसके साथ चली गयी।[4]

---

1 तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास, पृ० 472-73।

2 वही, पृ० 473-74, अकबरनामा, 1, पृ० 162।

3 हैदर मिर्जा के अनुसार कामरान ने इस्कन्दर सुल्तान के नेतृत्व में एक हजार सैनिक छोड़े थे (तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास, पृ० 474)। फिरिश्ता इसका समर्थन करता है (ब्रिग्स, 2, पृ० 89)। अबुल फ़ज़ल के अनुसार कामरान ने तीन हजार आदमी मिर्जा अब्दुल्लाह मुग़ल के नेतृत्व में छोड़े (अकबरनामा, 1, पृ० 162)। निज़ामुद्दीन अहमद के अनुसार उसने प्रारम्भ में तो अपनी सेना छोड़ने का वचन दिया था किन्तु बाद में केवल दो हजार सैनिक आगरा में छोड़कर सेना लेकर लाहौर चला गया (तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 71)।

4 गुलबदन, हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ० 141 42।

कामरान के इस तरह हुमायूं को कठिन परिस्थिति में छोड़कर जाने से, मुग़लों की मनःस्थिति तथा साहस पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। सबसे बड़ा दुर्भाग्य तो यह था कि जिस समय कामरान रवाना हुआ उसी समय शेर खां की प्रगति की भयकर सूचनाएं प्राप्त हुई। हैदर मिर्ज़ा, जो उस समय वहां उपस्थित था, स्पष्ट लिखता है कि कामरान मिर्ज़ा के प्रस्थान के साथ ही साथ शेर खां के सौभाग्य की उन्नति तथा चगताई शक्ति का ह्रास प्रारम्भ हो गया।[1] अबुल फज़ल भी कामरान के इस कार्य की निन्दा करता है।[2] उसका सबसे बड़ा अपराध तो यह था कि वह स्वयं ही नहीं गया बल्कि अन्य व्यक्तियों को भी हुमायूं के साथ से भगा ले जाना चाहता था। उसके लाहौर चले जाने का प्रभाव इससे स्पष्ट हो जाता है कि लोग भागकर रक्षित स्थान में जाने लगे। शेर खां का आतंक इतना अधिक था कि उसके पास कोई नहीं गया। भय और आतंक युद्ध की पहली पराजय होती है। मुग़लों का हतोत्साह उनकी पराजय का संकेत कर रहा था।

इस तरह हुमायूं ने लगभग दस महीने बरबाद कर दिये। उसने तैमूर वंशियों, विशेषतया अपने भाइयों को अपने पक्ष में करने का प्रयत्न किया किन्तु उसे सफलता नहीं मिली। पारिवारिक मतभेद, उसका आलसी स्वभाव तथा बीमारी उसके दिना आगरा रहने के प्रमुख कारण थे।

चौसा के युद्ध के पश्चात् शेर खां की गतिविधि

चौसा की विजय ने अफ़गानों का उत्साह तथा यश आकाश तक फैला दिया। शेर खां ने फिर भी अपना समय बरबाद नहीं किया। चौसा के युद्ध के पश्चात् उसने खवास खां को बिहार की तरफ झारखण्ड के चेरूह सरदार के विरुद्ध और जलाल खां बिन जालू तथा हाजी खां बटनी को बंगाल की तरफ भेजा और स्वयं हुमायूं का पीछा करता हुआ आगे बढ़ा।[3] उसने गंगा नदी को पार कर कन्नौज तक के भू-भागों पर अपना अधिकार कर लिया। चौसा की विजय के पश्चात् उसने बरमजीद गौड़[4] को एक सेना के साथ हुमायूं का पीछा करने के लिए भेज दिया। शेर खां

---

1 तारीख़े रशीदी, एलियस तथा रास, पृ० 472।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 161 62।

3 तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 377 डान, हिस्ट्री आफ दी अफगानस पृ० 123।

4 बरमजीद गौड़ एक अफगान तथा मुसलमान था। डा० कानूनगो का यह कथन है कि वह राजपूत था तथा उसका नाम ब्रह्मजीत या ब्रह्मादित्य था (शेरशाह, पृ० 225, 369) सही नहीं है। देखिए होदीवाला, 1, पृ० 457 58।

हुमायू को कदाचित ब दी नहा बनाना चाहता था। इसी कारण उसने उसका पीछा करने म उतनी सक्रियता नही दिखलायी कि तु गगा के पूर्वी तट के भू भागो पर उसने अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

शेर खा के सेनानायको (हाजी खा बटनी तथा जलाल खा बिन जालू) ने गौड को घेर लिया। मुगल सेनापति जहागीर कुली वेग ने उसकी रक्षा करने का प्रयत्न किया। कि तु अफगान सेना अधिक थी तथा आगरा से किसी तरह की सहायता की आशा नही थी। अ त म उसन गौड खाली कर दिया। वह आगरा की तरफ रवाना हुआ, किन्तु अफगाना क इस आश्वासन पर कि उसके प्राण नही लिये जाएगे, उसने समरण कर दिया। इसी समय बिहार का प्रब ध कर शेर खा भी गौड पहुच गया। अफगानो ने अपने वचन का पालन नही किया तथा जहागीर कुली का पाच हजार मुगल सनिको के साथ, जिन्हे हुमायू गौड स आगरा वापस जाते समय छोड आया था, शेर खा की आज्ञा से मार डाला गया।[1] खानखाना युसुफ खल को भी, जिसे मुगेर म अफगाना ने बन्दी बनाया था, मार डाला गया। ख्वास खा ने भी चेरुह सरदार को पराजित कर उसके राज्य को नष्ट कर डाला।

इस तरह शेर खा वास्तव म एक बडे भू भाग का स्वामी बन गया था, किन्तु अभी तक वह केवल अफगाना का नेता था तथा उस वैधानिक स्थान प्राप्त नही हुआ था। उसने गौड म 'अल सुल्तान उल आदिल' की उपाधि धारण की, अपन नाम से सिक्के चलाय तथा उसके नाम स खुत्बा पढा गया। इस तरह उसन राजत्व ग्रहण किया तथा शेर खा स शेरशाह बन गया।

पूण रूप स सुल्तान बनन के लिए दिल्ली तथा आगरा पर अधिकार करना आवश्यक था। खिज्र खा को बगाल का गवनर नियुक्त कर शेरशाह हुमायू से अन्तिम युद्ध करन के लिए 1540 ई० के प्रारम्भ म बगाल स रवाना हुआ। इलाहाबाद के निकट पहुचकर उसन अपने पुत्र कुतुब खा को, मालवा के जागीरदारो को आगरा तथा दिल्ली के निकट गडबडी करन के लिए प्रोत्साहित करने को, माडू भेजा। वह स्वय कन्नौज की तरफ बढ गया। मालवा सारगपुर तथा माडू क शासक मल्लू खा रायसीन तथा चन्देरी के शासक पूरनमल, तथा कुछ अन्य जागीरदारा ने कदाचित् ईसा खा को सहायता का वचन दिया था। कुतुब खा के चन्देरी की तरफ जान की सूचना पात ही हुमायू ने यादगार नासिर मिर्जा, कासिम

1 अकबरनामा, 1, पृ०160, तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 378।

2 शेर खा न अपन का कहा सुल्तान घोषित किया, यह विवादग्रस्त है। समकालीन इतिहासकार एकमत नही है। इसकी विवेचना क लिए देखिए, कानूनगो, शेरशाह, पृ० 200 208।

हुसन खा ऊजबेक तथा इस्कन्दर सुल्तान का एक सना के साथ उसके विरुद्ध भजा।[1] मालवा के सरदारो न मुगला के आगमन की सूचना पाकर कुतब खा की सहायता नही की। कुतुब खा सूर मुगला द्वारा पराजित हुआ तथा मारा गया। शेर खा को अपने पुत्र की मृत्यु का बहुत दु ख हुआ। उसने मालवा के सरदारो को, जिन्होंने वचन देकर भी सहायता नही दी, कभी भी क्षमा नही किया तथा बाद म उसने उनस इसका बदला लिया। कुतुब खा की पराजय स मुगला का कुछ उत्साह-वद्धन हुआ।

हुमायू का आगरा से प्रस्थान

शेरशाह के कन्नौज की तरफ बढन की सूचना पाकर हुमायू आगरा स रवाना हुआ (मई 1540 ई०)। उसने सेना इकट्ठी अवश्य की थी, कि तु जल्दी के कारण सना सगठित न हो पायी थी। इसके अतिरिक्त कामरान तथा कुछ अन्य अमीरो के चले जाने के कारण निराशा का वातावरण फला हुआ था। वीरभान ने (जो अरैल से हुमाय के साथ आगरा आया था)उसे यह सुझाव दिया कि शेर खा से युद्ध करने के स्थान पर पन्ना राज्य की पहाडिया मे मुगल सेना ले जायी जाए तथा उस अच्छी तरह प्रशिक्षित करने के पश्चात् शेरशाह पर आक्रमण किया जाए। हुमायू ने इस परामश को स्वीकार नही किया। वीरभान का सुझाव बहुत कुछ अशो मे विचारणीय था कि तु शेरशाह की बढती हुई शक्ति मे आगरा छोड दने का अथ वास्तव म बिना युद्ध के पराजय स्वीकार करना था। हुमायू ने इस कारण शेरशाह से युद्ध करने का निश्चय किया। बीरभान क इस सुझाव स मुगल सेना की वास्तविक स्थिति का हम अनुमान लगा सकते है।

आगरा मे चलकर हुमाय न कनौज के निकट भोजपुर नामक स्थान पर अपना पडाव डाला। गगा की दूसरी तरफ कनौज के सामन शेरशाह अपनी सेना के साथ डटा हुआ था। मुगला ने गगा नदी पार करके भोजपुर घाट पर एक पुल

---

1 डा० ईश्वरी प्रसाद अब्बास के आधार पर लिखत हैं कि अस्करी तथा हिन्दाल भेजे गये (हुमायू पृ० 142) बदायूनी (मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 354), निजामुद्दीन अहमद (तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 72), फिरिश्ता (ब्रिग्स, 2, पृ० 89), अबुल फजल (अकबरनामा, 1, पृ० 161) के अनुसार यादगार नासिर मिर्जा, कासिम हुसेन सुल्तान, इस्कन्दर सुल्तान भेजे गये। यही सत्य प्रतीत होता है।

2 डा० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार भोजपुर कनौज से 31 मील उत्तर पश्चिम था (हुमायू, प० 143), डॉ० बनर्जी (हुमायू, 1, प० 240, फुटनोट) के अनुसार 23 मील।

तयार किया। अफगानो ने उन्हे रोकना चाहा। एक छोटा सा सघर्ष हुआ।[1] हुमाय की सेना ने नदी पार नही की तथा नदी के किनारे और आगे बढकर कन्नौज के निकट अपना पडाव डाला। अफगान नौकाओ पर मुगल सेना का पीछा कर रहे थे। मुगलो को उन पर तोप चलानी पडी। अफगान इस बार भयभीत नही थे तथा युद्ध के लिए लालायित थे। मुगलो के कन्नौज पहुचने से दोनो सेनाए एक दूसरी के सामने आ गयी।

हुमायू के गगा के तट पर पहुचते ही शेरशाह ने अपने एक दूत द्वारा हुमायू के पास यह सदेश भेजा कि चूकि दोनो सेनाए युद्ध के लिए तयार है इसलिए यह आवश्यक है कि दोनो नदी के एक तरफ हो जाए। उसने कहा कि यदि हुमायू नदी को पार करने के लिए तैयार न हो तो वह स्वय नदी को पार करेगा। नदी पार करते समय दूसरी सेना कुछ मील पीछे हट जाएगी जिससे आक्रमण का भय न रहे। हुमायू ने शेरशाह के इस वचन को एक तरह से चुनौती समझा और उसने स्वय नदी को पार करने की इच्छा प्रकट की। मुगलो के नदी पार करते समय शेर खा दस बारह मील पीछे हट गया। जिस समय हुमायू की सेना नदी पार कर रही थी, शेरशाह के कुछ परामर्शदाताओ ने उससे कहा कि हुमायू पर उसी समय आक्रमण कर दिया जाए, किन्तु शेरशाह ने उन्हे समझाया कि ऐसा करना उचित नही। इस बात से शेरशाह की बहादुरी और उसकी महत्ता का पता चलता है।

हुमायू का नदी पार करना उसकी रणनीति के लिए बहुत सहायक नही हुआ। नदी पार करते समय मुगल सेना की वास्तविक स्थिति का ज्ञान अफगानो को हो गया। इसके अतिरिक्त नदी पार करने के पश्चात जिस स्थान पर मुगलो ने अपना पडाव डाला वहा भूमि नीची थी जिससे मुगलो को बाद मे वर्षा प्रारम्भ होने के पश्चात् बडी कठिनाई हुई। हुमायू ने नदी पार करने का निश्चय भावनावश किया जिससे अफगान यह न समझें कि मुगल कायर है। इसके अतिरिक्त उस समय हुमायू की सेना से उसके सैनिक भाग रहे थे जिससे युद्ध अधिक दिन टालना कठिन मालूम हो रहा था।[2]

---

1 अबुल फजल लिखता है कि 150 मुगल सनिको ने अफगानो की बडी सेना को पराजित कर दिया तथा खेमे मे वापस आये। उसीके पश्चात् अफगानो ने गदबाज नामक हाथी के द्वारा पुल तोडने का प्रयत्न किया तथा उसके स्तम्भो को तोड डाला। उसी समय मुगलो ने तोप चलाई जिससे हाथी के पाव कट गये तथा शत्रु पराजित हुए। (अकबरनामा, 1, पृ० 163)। कदाचित् युद्ध निर्णायक नही था तथा पुल को तोडकर अफगानो ने मुगलो को नदी नही पार करने दिया।

2 तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास, पृ० 274 75।

कन्नौज का युद्ध

दोना सेनाए एक दूसरी के सामने कन्नौज[1] के निकट लगभग एक मह
तक डटी रही। शेरशाह के इतने दिन प्रतीक्षा करने के दो प्रमुख कारण थ। उ
ख्वास खा को चरह सरदार के विरुद्ध खारखण्ड की तरफ भेजा था। उस ख्वा
खा की विजय का समाचार मिल चुका था और वह उसके आगमन की प्रतीक्षा क
रहा था। वर्षा की भी आशा थी जिसस मुगल पडाव म पानी तथा कीचड भर
जाने की सम्भावना थी। हुमायू ने कदाचित युद्ध इन कारण नही प्रारम्भ किया
क्योकि उसको अपने तोपखाने पर विश्वास था तथा वह चाहता था कि युद्ध
शेरशाह ही प्रारम्भ करे जिसस मुग़ल अपन तोपखान स अफग़ान आक्रमणकारियो
का भून डाल। उसकी सना असगठित थी। सम्भव है वह समय प्राप्त कर अपनी
सेना को सगठित करना चाहता था।

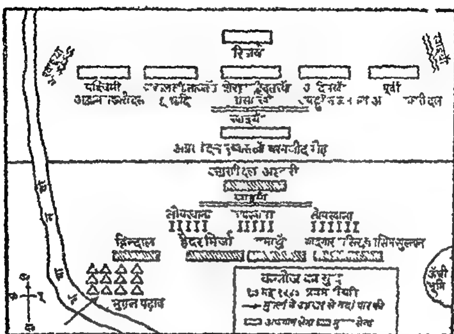
अफगान तथा मुग़ल सनाओ की वास्तविक सख्या क्या थी यह निश्चित रूप
से नही बताया जा सकता, किन्तु इसम कोई सन्देह नही कि हुमायू की सना
अफग़ानो की सना स अनुमानत दुगुनी थी।[2] परन्तु मुगल सना सगठित नही
थी। मुग़ल तोपखाना शक्तिशाली था। इसम सात सौ तोप की गाडिया (गरदून)

---

1 डॉ० कानूनगो इस युद्ध का बिलग्राम का युद्ध कहत ह तथा युद्धस्थल हरदोई जिले म बिलग्राम के निकट निश्चित करत हैं। डा० बनर्जी (हुमायू प० 243) तथा डा० इश्वरी प्रसाद इस कन्नौज का युद्ध कहते हैं। यह युद्ध शेरगढ तथा नानामऊ घाट के बीच के नदी-तट क दूसरी तरफ ऊची जमीन पर हुआ था। शेरशाह न इस विजय के उपलक्ष्य म सिक्के चलाय जिस पर शेरगढ उर्फ कन्नौज अकित है। देखिए डा० इश्वरी प्रसाद हुमायू प० 150 51 कानूनगो शेरशाह प० 216 तथा 219 20 फुटनोट। मिर्जा हैदर इस गगा का युद्ध लिखता है क्योंकि यह गगा के तट पर हुआ था।

2 कन्नौज के युद्ध म दोना दलो की सेनाओ की सख्या कितनी थी, यह निश्चित रूप स नही बताया जा सकता। जौहर के अनुसार आगरा स चलते समय हुमायू की सना म 90,000 अश्वारोही थ, बदायूनी, निज़ामुद्दीन अहमद तथा फिरिश्ता हुमायू की सेना को एक लाख लिखते हैं तथा मिर्ज़ा हैदर दोनो सेनाओ की सख्या दो लाख लिखते है तथा युद्ध म अफगान सेना को 15 000 और मुगल सेना को 40 000। निज़ामुद्दीन अहमद तथा फिरिश्ता के अनुसार शेर खा की सेना पचास हजार, बदायूनी के अनुसार पाच हजार तथा कुछ हस्तलिखित प्रतियो म पचास हज़ार है, जो अधिक सही प्रतीत होती है। (जौहर, स्टीवट प० 29, फिरिश्ता, ब्रिग्स 2, पृ० 90, तबकाते अकबरी, डे पृ० 72 73,

थी, जिनमे से प्रत्येक को चार चार जोडी बैल खीचते थे। इन पर एक एक छोटी तोप (ज़रज़न) लदी हुई थी जिससे पाच सौ मिस्काल का गोला चलाया जाता था तथा उसका निशाना अचूक था। 21 गाडिया ऐसी थी जिन्हे आठ आठ जोडी बैल खीचते थे। इनमे पत्थर के गोलो की जगह पाच हज़ार मिस्काल के पिघलाए

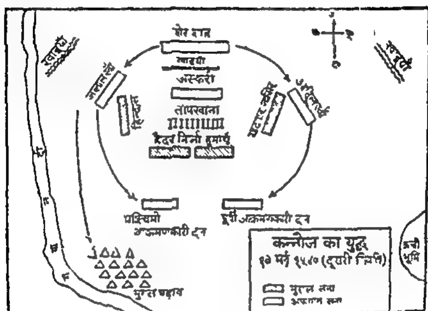


हुए पीतल के गोले चलाये जाते थे तथा उनका मूल्य दो सौ मिस्काल चादी के बराबर था। एक फरसग[1] की दूरी पर जो वस्तु भी दृष्टिगत होती उसे वे मार

मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 354, तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास, पृ० 472-77, इलियट तथा डासन, 5, पृ० 131)। डॉ० कानूनगो ने शेर खा की सेना का केवल 13,000 माना है जो असम्भव प्रतीत होता है क्योंकि अब्बास के अनुसार शेर खा ने सभी स्वस्थ अफ़ग़ानो को सेना मे भर्ती कर लिया था। डॉ० बनर्जी मिर्ज़ा हैदर की सख्या को उलटकर स्वीकार करते है अर्थात मुग़ल सेना 15,000 तथा अफ़ग़ान सेना 40,000 (बनर्जी, हुमायू 1, पृ० 42-43, कानूनगो, शेरशाह पृ० 222) कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, भाग 3, पृ० 35 ने हैदर मिर्ज़ा की सख्या स्वीकार की है। डॉ० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार हुमायू की सेना तैतालीस हज़ार थी (हुमायू, पृ० 144)।

सकते थे।[1]

शेर खां ने अपनी सेना को सात भागों में विभाजित किया था।[2] अग्रणी दल का नेतृत्व ख्वास खां तथा बरमजीद गौड कर रहे थे। मध्य में शेरशाह के नेतृत्व में आज़म हुमायूं सरवानी (जिसे हैबत खां नियाज़ी की उपाधि प्राप्त थी), ईसा खां सरवानी, मरमस्त खां, कुतुब खां लोनी बिजली खां, सईफ खां सरवानी



इत्यादि थे। उसके दाहिने जलाल खां के नेतृत्व में ताज खां जलोई तथा नियाज़ी अफगान इत्यादि[3] तथा बाएं तरफ आदिल खां सूर, राय हुसेन जलवानी तथा

1 तारीखे रशीदी, इलियट तथा डासन, 5, पृ० 131-32, एलियस तथा रास द्वारा अनुवादित पृ० 474, इरविन, आर्मी आफ दि इण्डियन मुगलल्स, पृ० 115।

2 अब्बास खां ने उसके दाहिने, बायें तथा मध्य (अर्थात तीन) के दस्ता का ही वर्णन किया है (इलियट तथा डासन, 4, पृ० 381)। कदाचित उसने दो आक्रमणकारी दस्तों (फ्लैंकिंग डिवीजन्स) तथा अग्रणी दस्ते का उल्लेख नहीं किया है। डॉ० ईश्वरी प्रसाद (हुमायूं, पृ० 146) केवल छः दस्ते लिखते हैं किन्तु युद्ध के प्लान में रिज़र्व तथा अग्रणी दल को लेकर सात होते हैं। हैदर मिर्ज़ा के अनुसार शेरशाह की सेना छः भागों में विभाजित थी। उसने रिज़र्व का उल्लेख नहीं किया है (तारीखे रशीदी, इलियट तथा डासन 5, पृ० 133-34)।

3 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 306, अकबरनामा 1, पृ० 164, डार्न, पृ० 126, इलियट तथा डासन, पृ० 380।

किरानी अफ़गान इत्यादि थे। दाहिने तथा बाये दस्तो के दोनो तरफ़ आक्रमण-कारी दस्ते थे तथा सबसे पीछे रक्षित सेना (रिजव फोर्स) थी। शेरशाह ने इस तरह दाहिने तथा बाये अपने पुत्रा (जलाल खा तथा आदिल खा) को रखकर युद्ध मे अपनी स्थिति मजबूत कर ली थी। पूव तथा पश्चिम म दो खाइया खोदकर अफगान सेना और भी मजबूत बन गयी थी।

मुगल सेना भी अफगान सेना की भाति कई भागो म विभाजित थी। सेना के मध्य मे हैदर मिर्जा तथा हुमायू थे। हैदर मिर्जा हुमायू की बायी ओर था। इस तरह उसका दाया बाजू हुमायू के बायें बाजू की ओर था। हैदर मिर्जा के समस्त सैनिक उसकी बायी तरफ नियुक्त थे तथा उसके साथ चार सौ बहुत ही अनुभवी व्यक्ति थे जिन्हे युद्ध तथा रणक्षेत्र का पूण ज्ञान था।[1] हैदर मिर्जा की बायी तरफ हिन्दाल तथा हुमायू की दाहिनी तरफ यादगार नासिर तथा कासिम हुसेन सुल्तान थे।[2] इन सेनाओ के सामने तोपखाना था। तोपखाने के आगे खाइया तथा उसके आगे अस्करी का अग्रणी दल था। तोपखाने का नेतत्व मुहम्मद खा रूमी, उस्ताद अहमद रूमी तथा हुसेन खलीफा के हाथ मे था।

एक महीने, जब तक दोनो सेनाए एक दूसरी के सामने डटी रही, छिटफुट लडाइया होती रही। इसी बीच वर्षा प्रारम्भ हो गयी। अफगानो ने युद्ध के लिए यही सबसे उपयुक्त समय समझकर मुगलो पर आक्रमण कर दिया। शेरशाह की योजना मुगलो को नदी क बाकी तीन तरफ स घेर लने की थी। बाबर ने पानीपत के युद्ध मे जो तुलगमा युद्ध नीति अपनायी थी वही नीति यहा शेरशाह ने अपनायी। युद्ध के पहले शेरशाह ने अफगानो को एक भाषण द्वारा उत्साहित किया।[3] अफगान सेना के दोनो आक्रमणकारी दस्तो ने आगे बढकर मुगल सेना का घेर लेने का प्रयत्न किया। युद्ध का प्रारम्भ हिन्दाल तथा जलाल खा सूर के युद्ध म हुआ। जलाल खा कठिन परिस्थिति मे फस गया तथा घोडे पर स गिर पडा। सभव था

1 तारीखे रशीदी, इलियट तथा डासन, 5, पृ० 133।

2 डा० ईश्वरी प्रसाद (हुमायू पृ० 146) के अनुसार यादगार नासिर हैदर मिर्जा के बाये तथा अस्करी हुमायू के दाये था। अबुल फजल लिखता है कि जलाल खा इत्यादि मिर्जा हिन्दाल के सामने तथा मुबारिज खा, बहादुर खा इत्यादि यादगार नासिर मिर्जा एव हुसेन खा के समक्ष पहुचे। ख्वास खा, बरमजीद एव अन्य समूह मिर्जा अस्करी के मुकाबले म आये (अकबरनामा, 1, पृ०164-65)। ख्वास खा अग्रणी दल म था, इसलिए अस्करी का मुगल अग्रणी दल म तथा हिन्दाल का हैदर मिर्जा के बाये रहना अधिक सही मालूम होता है। डॉ० बनर्जी ने इसी मत का स्वीकार किया है।

3 तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 381।

कि उसकी सेना पूर्ण रूप से पराजित हो जाती किन्तु उसके अन्य चार सहायक—सरदार जलाल खां जलाई, मियां अयूब कलकापुर, मुहम्मद गुजूर, गाजी मुहब्बिल सिलहदार[1] डटे रहे जिससे हिन्दाल की सेना का प्रभाव कम हो गया। जलाल के दस्ते की यह हालत देखकर शेरशाह स्वयं उसकी सहायता के लिए जाना चाहता था किन्तु कुतुब खां लोदी ने उसे समझाया कि यह उचित नहीं होगा क्योंकि उसके हटने से अफगान सेना यह समझेगी कि केन्द्र भी टूट गया। शेरशाह ने उसका परामर्श मान लिया तथा अन्य कमाण्डरों को उसकी सहायता के लिए भेज दिया।

अग्रणी दस्तों में भी युद्ध प्रारम्भ हो गया। ख्वास खां ने आगे बढ़कर अस्करी की सेना पर आक्रमण कर दिया। किन्तु सबसे अधिक भार यादगार नासिर तथा कासिम हुसैन पर पड़ा। ये दोनों आदिल खां तथा सरमस्त खां द्वारा पीछे हटा दिये गये। दाहिने डिवीजन के सैनिक भागकर मध्य में चले गये, जो हुमायूं के नेतृत्व में था।[2] इनके आने से दल भाग में खलबली तथा हुल्लड़ प्रारम्भ हो गया। इससे अफगानों के आक्रमणकारी दस्तों को मौका मिला और उन्होंने चक्कर से घूमकर मुग़ल सेना के दाहिने भाग पर आक्रमण कर दिया तथा एक दल मुग़लों के पीछे भी उन्हें घेरने के लिए पहुंच गया। इस तरह घिर जाने से मुगल सेना में और भी गड़बड़ी फैल गयी। मुगल अमीरों के पास दासों की बड़ी संख्या थी। प्रत्येक प्रतिष्ठित अमीर जिसके पास सौ सैनिक थे, उसके पास पांच सौ सेवक तथा दास थे।[3] इन दासों ने बड़ी गड़बड़ी मचायी। वे आतंकित होकर अपने स्वामियों से पृथक् हो गये और इधर उधर भागने लगे। वर्षा के कारण मुग़ल पड़ाव, जो नीची जमीन पर था, पानी से भर गया। हैदर मिर्जा ने लिफ्ट की ऊंची जमीन पर सेना को ले जाना चाहा। हुल्लड़, वर्षा तथा कीचड़ में इससे और भी गड़बड़ी पैदा हो गयी। सबसे बड़ा दुर्भाग्य तो यह हुआ कि मुगलों की इतनी बड़ी-बड़ी तोपें धरी ही रह गयीं तथा वे उनका प्रयोग भी न कर सके। अफगानों ने मुग़लों को चारों तरफ से घेरकर मारकाट प्रारम्भ कर दी।

यह सब इतनी शीघ्र हो गया कि मुग़लों को अपना युद्धकौशल दिखाने का अवसर ही नहीं मिला। हैदर मिर्ज़ा, जो इस युद्ध का संचालन कर रहा था, लिखता है कि चग़ताई लोग बिना घायल हुए ही रणक्षेत्र से भाग खड़े हुए। एक तोप भी न चलायी गयी। अफगानों ने भागते हुए मुगल सैनिकों का चार मील तक पीछा किया। मुगल भागकर नदी की तरफ गये तथा अपने प्राण बचाने के

---

1 तारीखे शेरशाही, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 381 82।

2 तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास, 476, अकबरनामा, 1, पृ० 165, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 30।

3 तारीखे रशीदी, इलियट तथा डासन, 5, पृ० 134 35।

लिए नदी म कूद पडे और हजारो की सख्या मे मारे गये।

हुमायू न बहादुरी स युद्ध किया तथा युद्धस्थल पर डटा रहा। इसी समय एक अफगान न हुमायू क घोडे पर आक्रमण किया जिसस उसका घोडा बिगड गया। बडी कठिनाई स अस्करी, यादगार नासिर तथा कुछ अन्य व्यक्तियो को एकत्र कर वह नदी के तट पर आया। इसी समय उस एक हाथी दिखायी दिया। उसने हाथी पर चढकर नदी पार करना चाहा, किन्तु फीलवान के विचार पवित्र नही थे, इसलिए उस मार डाला गया।[1] उसन नदी म अपना घोडा डाल दिया, किन्तु वह घोडे से अलग हो गया। उस शमसुद्दीन मुहम्मद गजनवी ने सहायता दी जिसस बडी कठिनाई से उसने नदी पार की।[2]

कन्नौज के युद्ध से पलायन

कन्नौज से हुमायू आगरा की तरफ रवाना हुआ। मार्ग म भोगाव[3] क किसानो न उसका विरोध किया। उन्होंने बाजार बन्द कर दिया तथा तीन हजार अश्वारोहियो के साथ उस पर आक्रमण किया। हुमायू न उन पर आक्रमण करन के लिए अस्करी से कहा। उसने देर कर दी जिससे यादगार नासिर ने नाराज होकर कहा कि, "तुम लोगो के पारस्परिक विरोध के कारण स्थिति इस सीमा तक पहुच गयी फिर भी सावधान नही होते।" अन्त म हिन्दाल तथा यादगार नासिर मिर्जा न उनस घोर युद्ध कर उन्हे पराजित किया।[4] यहा स चलकर हुमायू आगरा पहुचा। पराजय ने उस इतना निराश कर दिया था कि वह अपन महल म नही गया, प्रसिद्ध सन्त रफीउद्दीन सफवी के निवास पर रुका। आसपास के प्रदेशो म अव्यवस्था थी तथा उपद्रव मचा हुआ था। कन्नौज के युद्ध के पश्चात् शेरशाह न बरमजीद गौड को हुमायू का पीछा करने क लिए भेजा। उसन उस यह आज्ञा दी कि वह मुगलो स युद्ध न करे, केवल उनका पीछा कर।

अफ़गानो की इस सना के आगमन स हुमायू न देखा कि आगरा सुरक्षित नही है। एक रात आगरा म रहकर अपना परिवार तथा जो कोष वह ले जा सकता

1 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 31 32, जौहर के अनुसार साफे बाधकर उस नदी पार करनी पडी।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 166 67, मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 355। यह शमसुद्दीन अकबर की धाय माहम अगा का पति था।

3 उत्तर प्रदेश के मनपुरी जिले म परगना तथा तहसील भोगाव 17° 17' उत्तर तथा 79 14' पूर्व। डिस्ट्रिक्ट गजेटियर मनपुरी जिल्द 10, पृ० 196।

4 जौहर, स्टीवर्ट पृ० 33, अकबरनामा, 1, पृ० 166 67।

था उसे लेकर वह पंजाब की तरफ रवाना हुआ।

कन्नौज के युद्ध का परिणाम

कन्नौज का युद्ध मध्य युग का एक परावर्तन बिन्दु है। इसने मुगलों की सत्ता समाप्त कर अफगानों के सिर पर राजमुकुट रख दिया। चौसा के युद्ध से प्रारम्भ सत्ता-परिवर्तन के कार्य को इस युद्ध ने पूर्णता प्रदान की। मुगल सम्राट हुमायूं कन्नौज के युद्ध के पश्चात् अपने साम्राज्य से निष्कासित हो गया तथा 15 वर्ष तक उसे दर दर की ठोकर खानी पड़ी।

पानीपत के युद्ध में अफगानों की पराजय से उनकी शक्ति तथा यश की जो हानि हुई थी, उसे इस युद्ध ने पुनः स्थापित कर दिया। यही नहीं, जिस युद्धकौशल से मुगलों ने अफगानों को पानीपत के युद्ध में पराजित किया था उसी युद्धकला से अफगानों ने मुगलों को पराजित किया। यह युद्ध अफगानों के युद्धकौशल का प्रतीक था।

हुमायूं की तुलना में शेरशाह अधिक कुशल शासक था। मुगलों को भगाकर उसने एक संगठित शासन की नींव डाली जिसके आधार पर अकबर तथा उसके पश्चात अन्य शासकों ने शासन चलाया। इस तरह हुमायूं की पराजय जनता तथा शासन की दृष्टि में वरदान बन गयी।

युद्ध में मुगलों को बड़ी हानि उठानी पड़ी। उनके बहुत से अमीर मारे गये। दासों तथा सैनिकों में तो जो वहां मौजूद थे वे सभी मारे गये।[1] मुगलों द्वारा परित्यक्त सामान तथा अस्त्र शस्त्र अफगानों ने लूट लिये।

मुगलों के यश को गहरा धक्का लगा। हुमायूं को अब साधारण आदमी भी सहायता देने से डरता था। इस कारण कन्नौज से आगरा के मार्ग में उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

हुमायूं की पराजय के कारण

आगरा से कन्नौज की यात्रा करते समय हुमायूं की सेना की अवस्था कुछ ऐसी थी कि उसे स्वयं युद्ध में सफलता की आशा नहीं थी। सेना जल्दी से एकत्र

---

1 तारीख रशीदी, इलियट तथा डासन, 5 पृ०135। हैदर मिर्जा लिखता है कि हजार आदमी थे, केवल आठ बचे, जिससे इस युद्ध में मुगलों की क्षति का अनुमान लगाया जा सकता है।

की गयी थी तथा प्रशिक्षित नहीं थी। कामरान के लाहौर चले जाने तथा अन्य अमीरों के भाग जाने से स्थिति और भी कमजोर हो गयी थी। हैदर मिर्जा के अनुसार हुमायू की सेना म युद्ध से भागने का नारा लगाया जा रहा था तथा युद्ध-स्थल से भी कितने ही व्यक्ति भाग खडे हुए। इन भागने वालो मे मुहम्मद सुल्तान मिर्जा तथा उसके पुत्र भी थे। युद्धभूमि म हुमायू के दोनो भाइयो, यादगार नासिर मिर्जा, कासिम हुसेन सुल्तान तथा हैदर मिर्जा के अतिरिक्त अन्य कोई प्रमुख सेनानायक नही था। बाबर के समय के सेनानायक अब नही थे। इस तरह मुगल सेना म अनुभवी सेना नायको की कमी थी। स्वय हुमायू मे वह जोश अथवा अर्जित यश नही था जो इस अनियन्त्रित सेना मे शक्ति तथा उत्साह फूक सकता। इसके विपरीत चौसा की पराजय के पश्चात हुमायू के यश तथा मन स्थिति दोनो को ही धक्का लगा था।[1]

दूसरी तरफ अफगान सेना सगठित थी। राष्ट्रीय जागरण की भावना तथा चौसा की विजयने अफगानो को उत्साह से भर दिया था। उनके सेनानायको म कुछ न अल्पकाल म ही बडी प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी तथा उनका नाम लडने वाले सनिको म उत्साह भर देता था। उनका नेता शेरशाह योग्य सनिक या तथा निम्न श्रेणी स उच्च स्थान प्राप्त करने के कारण वह प्रत्येक परिस्थिति के लिए तयार या। वह अफगानो का लाडला था तथा वे उसके लिए अपना प्राण अपण करन म अपना सौभाग्य समझते थे। शेरशाह युद्धकौशल म प्रवीण था। कन्नौज की विजय उसकी युद्धकला की श्रेष्ठता का प्रमाण है। उसने मुगलो की कमजोरी का अध्ययन कर लिया था और उसका पूरा लाभ भी उठाया। युद्ध के पूव उसके भाषण न अफगानो को उत्साह से भर दिया।

गगा नदी पार कर हुमायू एक नयी मुसीबत म फस गया। उसन जो स्थान अपनी सेना के लिए चुना वह ठीक नही था। वह नीचे, नदी के तट पर तथा अफगानो के निकट था। यही नही, युद्ध स्थल तथा उसका पडाव एक ही था। इस तरह युद्ध के समय उसके पडाव के दासो, नौकरो तथा अन्य कमचारियो म बडी गडबडी मचायी। हुमायू जानता था कि वर्षा आने ही वाली है तथा उसका

---

1 अब्बास लिखता है कि हुमायू ने युद्ध के पश्चात् रजीउद्दीन सफवी से कहा कि उसने कुछ दरवेशो को मुगलो के घोडो को मारते हुए देखा था (इलियट तथा डासन 4, पृ० 382)। डॉ० बनर्जी इसके आधार पर लिखते हैं कि हुमायू के दिमाग म कोई गडबडी आ गयी थी (बनर्जी, हुमायू, 1, पृ० 248)।

पडाव नदी के तट पर नीची जमीन पर है। फिर भी उसने तत्काल युद्ध प्रारम्भ नही किया तथा युद्ध के भन्तान म व्यय समय गवाया। इस तरह उसन रक्षात्मक नीति अपनायी तथा शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा करता रहा।[1]

वर्षा न मुगलो की परिस्थिति को अत्यन्त भयकर बना दिया। हैदर मिर्जा की ऊचे स्थान पर चलन की आज्ञा न मुगल सना को और भी अव्यवस्थित कर दिया तथा अफगानो को आक्रमण करन म सुविधा हुई। सबस बडा दुर्भाग्य तो यह था कि अपन भाग्य निर्णायक युद्ध क सचालन का उत्तरदायित्व हुमायू न हैदर मिर्जा को सौप दिया था। चौसा के युद्ध के अनुभव स (जब उसन मुहम्मद जमान मिर्जा को रात की सुरक्षा का उत्तरदायित्व दिया था) उसन कोई लाभ नही उठाया। यही नही, शेरशाह की प्रगति क कारण हुमायू को बडी घबराहट म युद्ध के लिए अग्रसर होना पडा था। इस कारण वह पूर्ण रूप स युद्ध क लिए तैयार नही हो सका था।

---

1 'This battle proved that the army that cannot take the Offensive is doomed and purely passive defence is futile (सरकार, मिलिटरी हिस्ट्री ऑफ इण्डिया पृ० 65)

8 निष्कासन–पजाब तथा सिन्ध मे

आगरा म अधिक दिन रुकना अथवा वहा सेना एकत्र करना हुमायू के लिए असम्भव था। अस्करी, हिन्दाल तथा अन्य प्रमुख अमीर अभी वहा उपस्थित थे, किन्तु भय तथा निराशा ने मुगलो की सक्रियता तथा कायशीलता प्राय समाप्त कर दी थी। अफगान सेना उनका पीछा कर रही थी तथा जनता मुगल विरोधी हो गयी थी। इस परिस्थिति म हुमायू को अपने महल म भी जाने का साहस नही हुआ तथा उसने शेख मुबारक के गुरु सन्त सयिद रफीउद्दीन के यहा ही ठहरना उचित समझा। सन्त न उसे आश्वासन तथा आशीर्वाद दिया कि उसे पुन राज्य प्राप्त होगा। उसने उसे रोटी तथा खरबूजा खाने को दिया तथा परामश दिया कि वह आगरा से लाहौर चला जाय। जो भी कोष साथ ले जाया जा सकता था उसे लेकर अपने सम्बन्धियो तथा स्वामिभक्त सेवको के साथ हुमायू आगरा से रवाना हुआ।[1]

आगरा से लाहौर

हुमायू की मानसिक अवस्था इतनी दयनीय थी कि उसन बडे दु ख से कहा कि उस हलचल म स्त्रियो को साथ ले जाना कठिन है। चौसा के युद्ध म अकीका बीबी (आठ वष की) गायब हो गई थी। हुमायू को बाद म पछतावा हुआ कि उसन उसकी हत्या क्यो नही कर दी। हिन्दाल इससे भयभीत हुआ कि कही हुमायू स्त्रियो की हत्या न कर दे। उसने कहा कि वह अपने प्राण रहते उनकी रक्षा करेगा। उसन अपनी माता तथा प्रमुख स्त्रियो को अपने साथ कर लिया तथा सतकता के साथ अपनी जागीर—अलवर—की तरफ रवाना हुआ।

आगरा से हुमायू सीकरी कस्बे की ओर रवाना हुआ। वह सीकरी म कुछ घण्टे रुका। उसी समय एक बाण आकर गिरा। उसका पता लगाने के लिए जो लोग भेजे गय वे घायल हुए।[3] स्पष्ट था कि शत्रु निकट थे अथवा वहा की जनता मुगल विरोधी थी। वहा रुकना उचित न था। हुमायू वहा से बजौना कस्बे म पहुचा।[4] यहा सूचना मिली कि करमजीद गौड हुमायू का पीछा करता हुआ आ

1 अकबरनामा, 1, पृ० 167।

2 गुलबदन, हुमायूनामा, वेवरिज, पृ० 143।

3 जौहर, स्टीवट, पृ० 34।

4 सामान्य तौर पर भी हुमायू को राजत्व के नियमो का बडा ध्यान था।

रहा है। जौहर, जो उस समय सेना म उपस्थित था, लिखता है कि उस समाचर स सेना म हाहाकार मच गया। कोई किसी को पहचानता नही था अपनी-अपनी वस्तुए छिपाकर लोग तजी से आगे बढ़ने लगे। हुमायू न यहा साहस से काम लिया। उसने लोगो को सान्त्वना दी और कहा कि धैय से काम लेना चाहिए और यदि मौत ही आये तो उसे स्वीकार करना चाहिए। सुरक्षा क लिए उसने अपनी सेना को चार भागो म विभाजित कर दिया। दाए मिर्जा हिन्दाल, बाए यादगार नासिर मिर्जा, मध्य म हुमायू तथा अन्य अमीर उसके पीछे रवाना हुए।[1] इसस लोगो म थोडा साहस आया। यहा स चलकर हुमायू दिल्ली पहुचा (25 मई 1544 ई०)। यहा कासिम हुसेन सुल्तान तथा अय अमीर उससे आकर मिले। यहा रुकना भी ठीक नही था। यहा से आगे बढकर हुमायू रोहतक पहुचा।

हिदाल तथा अस्करी को हुमायू ने अलवर और सम्भल से धन तथा अय वस्तुए लाने के लिए भेजा था। स्त्रियो की रक्षा करता हुआ हिदाल वहा से आ रहा था। माग म कुछ लोगो ने उस पर आक्रमण किया जिसमे उसके घोडे को भी एक तीर लगा। भीषण युद्ध के पश्चात हिन्दाल ने उनकी रक्षा की। अस्करी, हिदाल तथा हैदर मिर्जा रोहतक म हुमायू स आ मिले।[3] मुगलो का सम्मान इतना कम हो गया था कि रोहतक के दुग वाला न उनक पहुचने पर नगर का द्वार ब द कर लिया। मुगलो को युद्ध कर उसपर अधिकार करना पडा। यहा स आगे बढ कर हुमाय सरहिद पहुचा (24 जून 1540ई०)। अफगान मुगलो का पीछा कर रहे थे। उनस मुगल दल की रक्षा करने के विचार से हुमायू ने हिदाल को सरहिद म रुकने की आज्ञा दी। हुमायू ने अभी माछीवारा मे सतलज नदी को पार ही किया था कि उसे शेरशाह के दिल्ली पहुचने की सूचना मिली। बरमजीद गौड तथा कुतुब खा न हिदाल को भी हटने के लिए विवश कर दिया।[4] हिदाल तथा अय मुगल तेजी के साथ लाहौर की तरफ रवाना हुए। हुमाय ने पुन हिन्दाल को जालधर म रुकने की आज्ञा दी। हुमायू के आगे बढने के पश्चात् ही अफगानो न

चलते समय फख्र अली हुमायू के आगे निकल गया जो राज्योचित नियमो के विरुद्ध था। हुमायू इसस बहुत क्रुद्ध हुआ तथा उसने फख्र अली को मृत्यु दण्ड देने की धमकी दी। फख्र अली की स्वामिभक्ति म कोई सदेह नही था। उसने भूल स्वीकार की तथा पीछे चलने लगा। जोहर, स्टीवट पृ०34 35।

1 जौहर (स्टीवट, पृ० 36) तीन भाग लिखता है किन्तु पिछले दल को भी मान लिया जाये तो चार भाग होते है।

2 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 143।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 167।

4 जौहर, स्टीवट, पृ० 36।

भी सतलज का पार किया तथा हिन्दाल को जालन्धर में घेर लिया।[1]

लाहौर में एकता का प्रयत्न

कुछ ही दिन बाद मिर्ज़ा हैदर तथा अन्य लोगों के साथ हुमायूँ लाहौर पहुंचा। वहां दौलत खां की सराय के निकट, कामरान ने सम्राट का स्वागत किया तथा ख्वाजा दोस्त मुहम्मद मुंशी के बाग में, जो अत्यन्त आकर्षक स्थान था, उसे ठहराया गया।[2] कुछ ही दिन बाद मुज़फ्फर तुर्कमान की कुमक के साथ पहुंच जाने से मिर्ज़ा हिन्दाल जालन्धर छोड़कर सकुशल लाहौर पहुंच गया। जालन्धर पर अफगानों का अधिकार हो गया। धीरे धीरे अस्करी तथा सभी प्रमुख अमीर वहां पहुंच गये (जुलाई 1540 ई०)। केवल मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा तथा उलूग मिर्ज़ा इधर उधर लूटमार करने में व्यस्त

लगभग तीन महीने हुमायूँ लाहौर में रुका रहा (जुलाई से अक्टूबर 1540 ई०) इस बीच एक तरफ तो उसने मुगलों में एकता स्थापित करने का प्रयत्न किया और दूसरी तरफ शेरशाह से सन्धि वार्ता भी करता रहा। एकता स्थापित करने के लिए लाहौर में उपस्थित सभी मुगल अमीरों की उसने एक सभा बुलाई (7 जुलाई 1540 ई०)।[4] उपस्थित लोगों ने एकता स्थापित करने के सम्बन्ध में एक प्रतिज्ञापत्र (तज़किरा) पर अपने हस्ताक्षर किये। इसके पश्चात विचार विमर्श की गोष्ठी प्रारम्भ हुई।

हुमायूँ ने अपने प्रारम्भिक भाषण में एकता का महत्त्व समझाया। सुल्तान हुसेन मिर्ज़ा की मृत्यु के पश्चात उसके 18 पुत्रों ने, पारस्परिक वैमनस्य के कारण किस तरह खुरासान खो दिया इसकी याद दिलायी। उसने कहा कि बाबर ने कष्ट तथा परिश्रम से भारत के साम्राज्य का निर्माण किया था। यदि आपसी फूट के कारण यह साम्राज्य हाथ से निकल गया तो बुद्धिमान लोग उन सभी की निन्दा करेंगे। उसने अपील की कि ईर्ष्या त्यागकर अफगान के विरुद्ध युद्ध के विषय में विचार करना चाहिए जिससे उन्हें सम्मान प्राप्त हो सके।[5]

विचार विमर्श में तीन व्यक्तियों ने अपना मत विशेष रूप से प्रकट किया।

---

1 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 36।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 167।

3 तारीखे रशीदी, एलियट तथा रास, पृ० 478।

4 वही, पृ० 477, अकबरनामा, 1, पृ० 168, तबकाते अकबरी, डे, 2 पृ० 74-75।

5 अकबरनामा, 1, पृ० 168।

कामरान ने सुझाव रखा कि लाहौर म रुकना ठीक नहा, हुमायू मिर्जाओ तया सना को लेकर कुछ दिन पवता मे समय व्यतीत करें, कामरान मुगलो क परिवारो को लेकर उन्ह काबुल म सुरक्षित स्थान पर पहुचाकर लौट आयेगा। हिन्दाल ने इसके विरोध म प्रस्ताव रखा कि सभी लोग भक्कर चले जाए और वहा से गुजरात पर आक्रमण किया जाए, दोना प्रान्तो पर अधिकार करने के पश्चात् अफगानो से मुगल साम्राज्य को मुक्त कराने मे कठिनाई नही होगी। हिन्दाल के सुझाव का समर्थन यादगार नासिर मिर्जा ने भी किया। तीसरा सुझाव हैदर मिर्जा का था। उसने कहा था कि मुग़ल सरहिन्द तथा रावलपिंडी की पहाडियो म चले जाए तथा उसपर अधिकार कर लें। वह स्वय थोडी सेना लेकर कश्मीर पर आक्रमण कर उसे दो महीने म अपने अधिकार मे कर लेगा। वह सुरक्षित स्थान था। मुग़ल वहा अपने परिवारो को पहुचा दें। शेरशाह की सबसे बडी शक्ति उसकी बडी-बडी तोपें थी। तोपो को पवतो पर पहुचाना अफगानो के लिए कठिन होगा। उसकी विशाल सना खाद्य सामग्री के अभाव म नष्ट हो जाएगी।[1] इस तरह मुग़ल अपने लक्ष्य मे सफल होगे। कामरान ने हैदर मिर्जा के प्रस्ताव का विरोध किया। उसने कहा कि उन लोगो के पास परिवार वालो की सख्या बहुत बडी थी। इन सबको पवतो मे भेजने का अथ उन्ह नष्ट करना था। वाद विवाद से कुछ भी तथ्य नही निकला। इस तरह कठिन परिस्थिति मे तथा प्रतिज्ञा करने पर भी मुगलो म एकता स्थापित न हो सकी।

एकता के प्रयत्न की विफलता के लिए उत्तरदायी कौन था? अबुल फजल तथा मिर्जा हैदर ने इसका उत्तरदायी कामरान को ठहराया है।[2] अबुल फजल लिखता है कि कामरान अपने स्वाथ मे चाहता था कि सभी छिन्न भिन्न हो जाए और वह स्वय काबुल जाकर वहा विलासमय जीवन व्यतीत कर सके। हैदर मिर्जा के अनुसार कामरान ने कोई बात निश्चित नही होने दी। आधुनिक लेखको न भी कामरान की स्वाथपरता की आलोचना की है।[3]

इसम कोई सन्देह नही कि कामरान का व्यवहार सहृदयता से दूर था। उन कठिनाइयो म उसे आख मूदकर हुमायू की सहायता करनी चाहिए थी। किन्तु

1 अकबरनामा, 1, पृ० 169, मासीरे रहीमी, 1, पृ० 540, तारीखे रशीदी एलियट तथा डासन, पृ० 479 80।

2 अकबरनामा, I, पृ० 168 69, तारीखे रशीदी, पृ० 481।

3 अर्सकिन, 2, पृ० 197, 200, डा० ईश्वरी प्रसाद हुमायू, पृ० 160।

कामरान के पक्ष में कहा जा सकता है कि उसे अपनी जागीर बचाने की चिन्ता थी। उसने देखा कि हुमायूं, अस्करी तथा हिंदाल ने अपना भू भाग तो खो ही दिया है अब वे उसके प्रदेश पर भी अधिकार करना चाहते है। पंजाब पर अधिकार रखना सरल नही था काबुल तथा अफगानिस्तान की इतनी आय नही थी कि सबका खर्च चल सके। इस कारण वह स्वयं हुमायूं को छोडकर काबुल चला जाना चाहता था। उसकी भूल केवल इतनी थी कि उसे समझना चाहिए था कि वह अकेले शेरशाह से काबुल भी नही बचा सकेगा। इसके अतिरिक्त केवल कामरान ही नही, बल्कि अन्य अमीर भी इतने भयभीत थे कि वे पुन शेरशाह से युद्ध करने के लिए तैयार नही थे। मुगलो के साधन भी इस समय सीमित थे। इस कारण हुमायूं को छोडकर इस बात में शेष सभी लोगो म मतैक्य था कि शेरशाह से तत्काल युद्ध न किया जाए।

जो प्रस्ताव रखे गये थे उन सभी मे कोई न-कोई दोष अवश्य था। हिंदाल के सुझाव के अनुसार भक्कर म अधिक समय इतने लोगो के साथ मुगलो का रुकना कठिन था, फिर भी यह सुझाव बहुत अनुपयुक्त नही था। बहादुर शाह की मृत्यु के पश्चात गुजरात कठिन परिस्थितियो से गुजर रहा था। उत्तराधिकार की समस्या तथा अन्य कठिनाइयो ने वहा की शान्ति समाप्त कर दी थी। ऐसी स्थिति म उस पर अधिकार करना कठिन नही था। मालवा पर अभी शेरशाह का अधिकार नही हुआ था। इस तरह अफगानो से युद्ध करने के लिए वह उपयुक्त स्थान था। कामरान का प्रस्ताव तो अपने को बचाने का था। वह किसी तरह काबुल के भाग को शेरशाह तथा हुमायूं दोनो से सुरक्षित रखना चाहता था। इसके अतिरिक्त मुगल अमीरो के परिवारो को अपने अधिकार म काबुल म रखकर वह एक तरह से अधिकतर लोगो को अपने नियन्त्रण म रखना चाहता था। हैदर मिर्जा ने अपनी योजना म यह नही कहा कि सब मिलकर कश्मीर विजय करे, बल्कि वह अकेला विजय हेतु जाता और अन्य मुगल उसकी प्रतीक्षा करते। मुगल परिवारो को इस बीच पर्वतो मे रखना भी खतरे से खाली नही था। मुगलो का सबसे बडा दुर्भाग्य तो यह था कि सभी अपने प्रस्ताव को सबसे अधिक उपयुक्त समझते थे तथा झुकने के लिए तैयार नही थे। इस तरह किसी निश्चय पर पहुचना असम्भव हो गया।

शेरशाह से सन्धि-वार्ता

कन्नौज के युद्ध के पश्चात शेरशाह ने गंगा नदी को पार किया तथा हुमायूं का पीछा करने के लिए उसने बरमजीद गौड को भेजा किन्तु उसने यह आदेश दिया था कि वह हुमायूं से युद्ध न करे। उसने एक दूसरी सेना सम्भल के विरुद्ध भेजी। हुमायूं के आगरा से चले जाने के पश्चात् बरमजीद गौड ने आगरा म प्रवेश

किया तथा बहुत से मुगलों को, जो वहां उपस्थित थे, मार डाला। ये मुगल सैनिक नहीं थे तथा इनके मारने का कोई कारण नहीं था। कुछ दिन पश्चात आगरा पहुंचने पर शेरशाह ने बरमजीद के इस कार्य के लिए उसकी भर्त्सना की किन्तु उसे कोई दण्ड नहीं दिया गया। यहां से उसने ख्वास खां तथा बरमजीद को हुमायूं का पीछा करने के लिए भेजा। इन्हीं के भय से हुमायूं लाहौर की तरफ तेजी से भागता गया। कुछ दिन आगरा में बिताकर शेरशाह दिल्ली गया। उसने हाजी खां बटनी को मेवात का गवर्नर नियुक्त किया। दिल्ली का समुचित प्रबंध करने के पश्चात वह वहां से पंजाब की तरफ रवाना हुआ।

इसी बीच कामरान ने अपने सद्र काजी अब्दुल्ला को गुप्त रूप से शेरशाह के पास दिल्ली भेजा। कामरान ने शेरशाह को यह आश्वासन दिया कि यदि पहले की भांति पंजाब उसके पास रहने दिया जाए तो वह थोड़े समय में योग्य सेवाएं करने में सफल होगा।[1] उसका अभिप्राय था कि वह हुमायूं को मरवा डालेगा या बन्दी बनाकर शेरशाह को समर्पित कर देगा। शेरशाह ने कामरान के दूत का स्वागत किया। उसे यह जानकर संतोष हुआ कि मुगल पारस्परिक वैमनस्य के कारण एकता नहीं स्थापित कर सकेंगे। शेरशाह कामरान को हुमायूं से अलग तो करना चाहता था किन्तु वह जानता था कि उसकी वास्तविक लड़ाई हुमायूं से है। परिस्थिति का सही ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसने सद्र के साथ अपना दूत भी लाहौर भेजा। कामरान ने शेरशाह के दूत का स्वागत किया तथा उसके लिए एक जश्न किया जिसमें उसने हुमायूं को भी आमंत्रित किया और सम्राट इसमें सम्मिलित भी हुआ। कामरान इस तरह अपना महत्त्व दिखाना चाहता था। वह यह प्रमाणित करना चाहता था कि वह हुमायूं से बड़ा है। इस जश्न में हुमायूं का सम्मिलित होना उपयुक्त नहीं था।

लाहौर में शेरशाह का एक दूत हुमायूं से भी मिला। हुमायूं ने भी उसके स्वागत में एक दावत दी। कामरान सतर्क तथा सशंकित था। उसने हुमायूं से प्रार्थना की कि उसे भी जश्न में बुलाया जाए तथा उसने हुमायूं ही के पास बैठने की इच्छा प्रकट की।[3] कामरान ने यह प्रार्थना अस्करी और हिन्दाल से अपना महत्त्व बढ़ाने तथा हुमायूं और शेरशाह के दूत की बातों पर दृष्टि रखने के लिए की थी।

---

1 अकबरनामा, 1 पृ० 169 अबुल फजल के शब्द इस प्रकार हैं—
व मजमूने मक्तूब चुना नविश्त कि अगर पंजाब बदस्तूर साबिक बरमन मकर्रर दारंद दर अन्दक जमान कारहाय शायस्ता व तक्दीम रसानम।

2 वही, पृ० 170।

3 गुलबदन, हुमायूंनामा, बेवरिज पृ०, 144 45।

दावत के पश्चात हुमायूं ने शेरशाह के पास एक कविता भेजी जिसका अर्थ था कि वह शेर खां को अपना मित्र समझता था, किन्तु उसके व्यवहार से उसे निराशा हुई है।[1] शेरशाह ने हुमायूं की इस कविता का कोई उत्तर नहीं दिया।

हुमायूं ने पुनः कामरान के सद्र काजी अब्दुल्ला के साथ मुजफ्फर वेग को शेरशाह के पास यह लिखकर भेजा कि उसने पूरा हिंदुस्तान उसके लिए छोड़ दिया है, अब सरहिंद दोनों राज्यों की सीमा हो जाए। शेरशाह जानता था कि मुगल शक्तिहीन है। उसने उन्हीं शब्दों में उत्तर दिया—"मैंने आपके लिए काबुल छोड़ दिया। आप वहीं जाएं।"[2]

शेरशाह की इन बातों से हुमायूं को बड़ी निराशा हुई तथा सन्धिवार्ता समाप्त हो गई।

हुमायूं तथा कामरान दोनों ही शेरशाह से अलग-अलग सन्धिवार्ता कर रहे थे। इस कारण यह प्रश्न उठता है कि वैधानिक दृष्टि से पंजाब तथा काबुल के भागों पर किसका अधिकार था। कन्नौज की पराजय के पश्चात 1540 ई० में लाहौर पहुंचने पर हुमायूं यह समझता था कि उसका साम्राज्य छोटा होकर बदख्शां से सरहिंद तक ही सीमित रह गया है। इसी कारण उसने सरहिंद को मुगल तथा अफगान राज्यों की सीमा बनाने के लिए शेरशाह से कहा। सिक्का तथा खुत्बा अब भी हुमायूं के नाम से चलता था।[3] कामरान स्वतन्त्र रूप से सन्धिवार्ता अवश्य कर रहा था किंतु हुमायूं की वैधानिकता को उसने कभी चुनौती नहीं दी थी। इस तरह वैधानिक दृष्टि से तो यहां का शासक हुमायूं था किंतु वास्तव में ये भाग कामरान के थे। दोनों भाई शेरशाह को अलग-अलग प्रसन्न कर अपने पक्ष में

---

1 कविता इस प्रकार थी—

दर आइना गरचे खुद नुमाई बाशद
पैवस्ता ज खेशतन जुदाई बाशद।
खुद रा ब मिसल गोर दीदन अजब अस्त,
ई बुल अजबो कारे खुदाई बाशद।

अर्थात यद्यपि दर्पण में अपना चेहरा देखा जा सकता है फिर भी वह अपने से अलग रहता है। अपने आपको दूसरे के रूप में देखना यह बड़े आश्चर्य की बात है, यह चमत्कार ईश्वर का कार्य है। गुलबदन, हुमायूंनामा, पृ० 48)।

2 गुलबदन, हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ० 144।

3 कैटलाग आफ क्वायन्स, इंडियन म्यूजियम, कलकत्ता, नं० 4, कैटलाग आफ क्वायन्स, प्राविन्शियल म्यूजियम, लखनऊ नं० 3 लाहौर से 946 हिजरी तक हुमायूं के सिक्के मिलते हैं।

किया तथा बहुत स मुगला को, जो वहा उपस्थित थ, मार डाला। य मुगल सनिक नही थ तथा इनके मारन का कोई कारण नही था। कुछ दिन पश्चात आगरा पहुचन पर शरशाह न बरमजीद क इस काय के लिए उसकी भत्सना की किन्तु उस कोई दण्ड नही दिया गया। यहा स उसन ख्वास खा तथा बरमजीद को हुमायूं का पीछा करन क लिए भेजा। इनके भय स हुमायू लाहौर की तरफ तजी स भागता गया। कुछ दिन आगरा म बिताकर शरशाह दिल्ली गया। उसन हाजी खा बटनी को मेवात का गवनर नियुक्त किया। दिल्ली का समुचित प्रबन्ध करन क पश्चात वह वहा स पजाब की तरफ रवाना हुआ।

इसी बीच कामरान न अपन सद्र काजी अब्दुल्ला को गुप्त रूप स शरशाह के पास दिल्ली भेजा। कामरान न शरशाह को यह आश्वासन दिया कि यदि पहल की भाति पजाब उसके पास रहन दिया जाए तो वह थोडे समय म योग्य सवाए करन म सफल होगा।[1] उसका अभिप्राय था कि वह हुमायू को मरवा डालगा या बन्दी बनाकर शेरशाह को समर्पित कर दगा। शेरशाह न कामरान के दूत का स्वागत किया। उस यह जानकर सन्तोष हुआ कि मुगल पारस्परिक वमनस्य क कारण एकता नही स्थापित कर सकेंगे। शेरशाह कामरान को हुमायू स अलग करना चाहता था किन्तु वह जानता था कि उसकी वास्तविक लडाई हुमायू स है। परिस्थिति का सही ज्ञान प्राप्त करन क लिए उसन सद्र क साथ अपना दूत भी लाहौर भेजा। कामरान न शरशाह क दूत का स्वागत किया तथा उसक लिए एक जश्न किया जिसम उसन हुमायू को भी आमन्त्रित किया[2] और सम्राट इसम सम्मिलित भी हुआ। कामरान इस तरह अपना महत्त्व दिखाना चाहता था। वह यह प्रमाणित करना चाहता था कि वह हुमायू स बडा है। इस जश्न म हुमायू का सम्मिलित होना उपयुक्त नही था।

लाहौर म शरशाह का एक दूत हुमायू स भी मिला। हुमायू ने भी उसके स्वागत म एक दावत दी। कामरान सतक तथा सशकित था। उसन हुमायू से प्राथना की कि उस भी जश्न म बुलाया जाए तथा उसन हुमायू ही क पास बठन की इच्छा प्रकट की।[3] कामरान न यह प्राथना अस्करी और हिन्दाल स अपना महत्त्व बढाने तथा हुमायू और शेरशाह के दूत की वार्ता पर दृष्टि रखने के लिए की थी।

---

1 अकबरनामा 1 पृ० 169 अबुल फजल के शब्द इस प्रकार है—
व मजमूनें मकतूब चुना नविश्त कि अगर पजाब बदस्तूर साबिक बरमन मुकर्रर दारद दर अन्दक जमान कारहाय शायेस्ता व तकदीम रसानम।

2 वही पृ० 170।

3 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज पृ०, 144 45।

दावत के पश्चात हुमायूं ने शेरशाह के पास एक कविता भेजी जिसका अर्थ था कि वह शेर खां को अपना मित्र समझता था, किन्तु उसके व्यवहार से उसे निराशा हुई है।[1] शेरशाह ने हुमायूं की इस कविता का कोई उत्तर नहीं दिया।

हुमायूं ने पुनः कामरान के सद्र काजी अब्दुल्ला के साथ मुजफ्फर बेग को शेरशाह के पास यह लिखकर भेजा कि उसने पूरा हिंदुस्तान उसके लिए छोड़ दिया है अब सरहिंद दोनों राज्यों की सीमा हो जाए। शेरशाह जानता था कि मुगल शक्तिहीन है। उसने उन्हीं शब्दों में उत्तर दिया—"मैंने आपके लिए काबुल छोड़ दिया। आप वहीं जाएं।"[2]

शेरशाह की इन बातों से हुमायूं को बड़ी निराशा हुई तथा संधिवार्ता समाप्त हो गई।

हुमायूं तथा कामरान दोनों ही शेरशाह से अलग-अलग संधिवार्ता कर रहे थे। इस कारण यह प्रश्न उठता है कि वैधानिक दृष्टि से पंजाब तथा काबुल के भागों पर किसका अधिकार था। कन्नौज की पराजय के पश्चात 1540 ई० में लाहौर पहुंचने पर हुमायूं यह समझता था कि उसका साम्राज्य छोटा होकर बदख्शां से सरहिंद तक ही सीमित रह गया है। इसी कारण उसने सरहिन्द को मुगल तथा अफगान राज्यों की सीमा बनने के लिए शेरशाह से कहा। सिक्का तथा खुत्बा अब भी हुमायूं के नाम में चलता था।[3] कामरान स्वतन्त्र रूप से संधिवार्ता अवश्य कर रहा था किन्तु हुमायूं की वैधानिकता को उसने कभी चुनौती नहीं दी थी। इस तरह वैधानिक दृष्टि से तो यहां का शासक हुमायूं था किन्तु वास्तव में ये भाग कामरान के थे। दोनों भाई शेरशाह को अलग-अलग प्रसन्न कर अपने पक्ष में

---

1 कविता इस प्रकार थी—

दर आइना गरचे खुद नुमाई बाशद
पैवस्ता ज खेशतन जुदाई बाशद।
खुद रा ब मिसले गोर दीदन अजब अस्त,
ईं बुल अजबो कारे खुदाई बाशद।

अर्थात यद्यपि दर्पण में अपना चेहरा देखा जा सकता है फिर भी वह अपने से अलग रहता है। अपने आपको दूसरे के रूप में देखना यह बड़े आश्चर्य की बात है, यह चमत्कार ईश्वर का कार्य है। गुलबदन, हुमायूंनामा, पृ० 48)।

2 गुलबदन, हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ० 144।

3 कैटलाग आफ क्वायन्स इंडियन म्यूजियम, कलकत्ता, नं० 4, कैटलाग आफ क्वायन्स, प्राविन्शियल म्यूजियम, लखनऊ नं० 3, लाहौर से 946 हिजरी तक हुमायूं के सिक्के मिलते हैं।

करने मे लगे हुए थे। यह देखकर कि पजाब हाथ स निकला जा रहा है, कामरान बावला हो गया और उस मन स्थिति म उसन हुमायू को समाप्त करन के लिए शेरशाह को पत्र लिखा, जिसस उसके भाग्य का शत्रु ही समाप्त हो जाए।

शेरशाह को मुगलो की पारस्परिक वार्ता की सूचना थी। उनके मतभेद तथा उनकी वार्ता की विफलता से उसे प्रसन्नता हुई। कामरान तथा हुमायू की सधि-वार्ता ने मुगलो की कमजोरी का और भी स्पष्ट कर दिया। इस परिस्थिति म उन्ह पराजित करना तथा पजाब से निकालना कठिन नही था। शेरशाह ने हुमायू को जो कठोर उत्तर भेजा वह उसके द्वारा मुगलो की कमजोरी स लाभ उठाने का प्रमाण है।

शेरशाह जानता था कि पजाब म कोई प्राकृतिक सीमारेखा या क्षेत्र नही था। यदि सरहिन्द सीमा माना जाता तो मुगलो और अफगानो का सघप निरन्तर होता रहता। मुगलो मे एकता की कमी थी। इस समय उनस अपनी शर्तें मनवायी जा सकती थी। इस दृष्टि से शेरशाह का प्रस्ताव पूणतया व्यावहारिक था। इसके अतिरिक्त मुगलो को पानीपत के पूव जो भाग प्राप्त थे वही तक शेरशाह उन्ह सीमित रखना चाहता था और इब्राहीम लोदी के साम्राज्य की सीमाओ को अफगानो और मुगलो की सीमाए समझता था।

शेरशाह ने मुगलो को अफगानिस्तान के भागो पर अधिकार रखने की स्वीकृति क्यो दी? ये भाग उसकी तथा उस जाति की जन्मभूमि थे। अफगान सैनिको को भर्ती करन का यही केन्द्र था तथा इसके बिना मुस्लिम राज्यो से सम्बन्ध असम्भव था। उस परिस्थिति म मुगलो का उन भागो से भी निकाल देन का विचार कोरी कल्पना नही थी। वास्तव मे शेरशाह का यह निश्चय हुमायू के प्रति सद्भावना के कारण नही था,[1] वरन उसकी सूझबूझ का परिणाम था। शेरशाह का जन्म भारत म हुआ था। इस कारण अफगानिस्तान के प्रति उसका प्रेम मुगलो अथवा अन्य अफगानो की भाति नही था। उसने स्वय अपनी जागीर के विभाजन के प्रश्न पर कहा था कि रोह (अफगानिस्तान) का कानून यहाँ नही चलेगा। वह यह भी समझता था कि इन भागो पर अधिकार करने म बराबर सघष होता रहेगा क्याकि मुगलो को बदख्शा तथा मध्य एशिया से अफगानिस्तान के भागो पर आक्रमण करने म सुविधा होती। शेरशाह अपन को लोदी साम्राज्य का उत्तराधिकारी

1 "The abstention from an attack on the Mughals at Kabul and a free permission to them to settle there, must be pronounced a generous gesture on the part of the Afghan King" (बनर्जी, हुमायू पृ० 12)।

समझता था, इस कारण उसकी सीमा तक अपने को सीमित रखता था। फिर भी शेरशाह सतर्क था तथा उसने इस पर दृष्टि रखी कि मुगल अफगानों को अपनी सेना में न रख सकें। इसके लिए वह अफगानिस्तान से आये हुए अफगानों को पारितोषिक तथा धन देकर अपनी तरफ मिलाये रखता था। अफगान राष्ट्रीयता की भावना से भी उसे इसमें सहायता मिली।

मुगलों की दशा अत्यन्त ही दयनीय थी। एकता स्थापित करने का हुमायूँ का प्रयत्न विफल हो गया। कामरान का व्यवहार स्वार्थपूर्ण तथा निराशाजनक था। उसकी दृष्टि इतनी संकुचित हो गयी थी कि यदि शेरशाह ने थोड़ा भी प्रश्रय दिया होता तो वह हुमायूँ को गिरफ्तार कर अफगानों को समर्पित कर देता। किन्तु शेरशाह ने कामरान से इस तरह की कोई माँग नहीं की। क्या शेरशाह इसे नीच कार्य समझता था? अथवा उसे कामरान पर विश्वास नहीं था? मुगल सम्राट को बन्दी बनाकर रखने या मार डालने में क्या उसे विद्रोह तथा अन्य कठिनाइयों का भय था? इन प्रश्नों का निश्चित रूप से उत्तर देना कठिन है।

लाहौर से विदाई

शेरशाह ने मुगलों के मतभेद से लाभ उठाया। मुगलों को पंजाब से भगाने में अब किसी तरह के संघर्ष का भय नहीं था। उसने आगे बढ़कर सरहिन्द पर अधिकार कर लिया तथा उसी महीने सतलज पार कर उसने सुल्तानपुर[1] में प्रवेश किया। शेरशाह के इतने निकट पहुँचने की सूचना ने मुगलों को कँपा दिया। लाहौर पर कब आक्रमण हो जाएगा, कहा नहीं जा सकता था।

कामरान ने देखा कि पंजाब उसके हाथ से निकल गया। वह इसके लिए हुमायूँ को उत्तरदायी समझता था। सम्राट से उसका विश्वास उठ गया था। काबुल तथा कंधार बचाने की उसकी उत्सुकता बढ़ गयी। वह बारबार अफगानिस्तान जाने पर जोर देने लगा। हुमायूँ के लिए उसे अनुमति देने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं था। उसने कामरान को आशीर्वाद दिया तथा उसे जाने की अनुमति दे दी।[2] हैदर मिर्जा कश्मीर जाने के लिए उत्सुक था। जो सैनिक उसके साथ जाना चाहते थे उन्हें लेकर कश्मीर पर आक्रमण करने की अनुमति भी हुमायूँ ने उसे दे दी।

हुमायूँ के सामने अब तीन मार्ग थे—बदख्शाँ, कश्मीर या सिंध की तरफ

1 कपूरथला कस्बे से 16 मील दक्षिण, $31^{0}13'$ उत्तर तथा $75^{0}15'$ पूर्व।

2 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 39।

तरफ रवाना हुआ।[1] इस तरह अपने सभी भाइयों द्वारा परित्यक्त हुमायूं अपने कुछ विश्वासपात्र सैनिकों के साथ झेलम के पश्चिमी किनारे से होता हुआ 31 दिसम्बर 1540 ई० को उच्च पहुंचा।[2] मार्ग में उसे बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जल तथा अनाज का अभाव था। एक सेर बाजरे के लिए एक अशर्फी खर्च करने पर भी अन्न मिलना कठिन था।[3]

उच्च में

हिन्दाल ने हुमायूं का साथ तो छोड़ दिया किन्तु उसे बहुत अधिक सफलता नहीं प्राप्त हुई। बीस दिन बिना अन्न और जल के वह इधर उधर मारा-मारा फिरा। हुमायूं के उच्च पहुंचने के कुछ दिन पूर्व वह सम्राट के दल से मिला। दोनों भाइयों में पुनः सुलह हुई। दोनों उच्च पहुंचे और यहां से एक योजना के अनुसार कार्य प्रारम्भ हुआ।[4]

उच्च में हुमायूं को बख्शू लंगाह से कुछ सहायता की आशा थी। यह उस बिलोच वंश का था जो 1525 26 ई० में मुल्तान पर राज्य करता था। किन्तु उस वर्ष मिर्जा शाह हुसैन अरगून से पराजित होकर वह उच्च की तरफ चला गया था। उससे सहायता पाने की आशा से हुमायूं ने उसके पास खिलअत भेजी और उसे खानेजहां की उपाधि, झण्डा एवं नक्कारा प्रदान करने का आश्वासन दिया। हुमायूं का संवाद पाकर बख्शू विशेष उत्साहित नहीं हुआ। वह जानता था कि एक निर्वासित शक्तिहीन भूतपूर्व सम्राट से प्राप्त सम्मान का कोई अर्थ नहीं। फिर भी हुमायूं की तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसने खाने-पीने की सामग्री से उसकी सहायता की तथा व्यापारियों को उसके पड़ाव में खाने के सामान ले जाने की आज्ञा दी। किन्तु वह स्वयं उपस्थित नहीं हुआ। इस तरह हुमायूं को अन्न से लदी 100 नावें प्राप्त हुई। नौकाओं की सहायता से वह चेनाब नदी पार कर भक्कर पहुंचा (26जनवरी 1541 ई०)।[5]

---

1 अकबरनामा, I, पृ० 171।

2 वही, पृ० 172। उच्च 29⁰ 14′ उत्तर तथा 71⁰ 4′ पूर्व में भावलपुर के दक्षिण पूर्व में 38 मील पर स्थित है

3 बदायूनी, मुन्तखबुत्तवारीख, I पृ० 356, अकबरनामा, I, पृ० 171।

4 अकबरनामा, I, पृ० 171-72।

5 वही, पृ०172, गुलबदन, हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ०148। भक्कर सिन्ध

खुशाव म शेरशाह न ख्वास खा तथा अन्य अफगान सरदारा का, हुमायू को पजाव मे भगान के लिए नियुक्त किया। हुमायू के सहायका की मख्या इतनी कम थी कि यदि ख्वास खा चाहता तो हुमायू को गिरफ्तार कर सकता था, किन्तु एसा प्रतीत होता है कि अफगाना का लक्ष्य हुमायू को पजाव से भगा'दना था न कि उसका बनाना।[1]

सिन्ध मे

पजाव पार कर हुमायू सिन्ध नदी के पूर्वी तट पर स्थित राहरी पहुचा। यह भक्कर का एक प्रसिद्ध नगर था। यहा हुमायू चारवाग नामक उद्यान म ठहरा। उसके अन्य सहयागी भी वहा आकर रुके, किन्तु सभी के ठहरन क लिए वहा पर्याप्त स्थान नही था, इस कारण हिन्दाल अपन साथिया के साथ चार-पाच कोस दक्षिण रुका। बाद मे नदी को पार कर उसन नदी क दूसरे तट पर अपना पडाव डाला।[2]

उत्तर मे पजाव, पूव म राजपूताना, दक्षिण पूव म गुजरात तथा पश्चिम म बिलूचिस्तान एव दक्षिण-पश्चिम म समुद्र स घिरा हान क कारण मध्य युग म सिन्ध का महत्त्वपूर्ण स्थान था। सिन्ध के शासक शाह हुसन न मुगला के साथ अच्छा सम्बन्ध बनाये रखने का प्रयत्न किया था। उसन बाबर क नाम म खुत्वा पढकर उससे अपनी रक्षा कर ली थी।[3] गुजरात अभियान क समय हुमायू की प्राथना पर शाह हुसन न उत्तर से गुजरात पर उस समय आक्रमण किया जिस समय हुमायू दूसरी तरफ स आक्रमण कर रहा था। शाह हुसन न रादनपुर क माग स बढकर पाटन को घेर लिया। उसक एक सनापति सुल्तान महमूद न महमूदाबाद तक बढकर, वहा तक के भाग को नष्ट कर दिया। अरगून मुलतान के आक्रमण का कोई परिणम नही हुआ क्याकि सिन्ध क अमीर इस अभियान क पक्ष म नहा थ।[4]

नदी पर एक द्वीप है। यह 27^0 43′ उत्तर तथा 68^0 56′ पूव म सक्कर तथा रोहरी के बीच म स्थित था।

1 अबुल फजल (अकबरनामा, 1, प० 172) लिखना है कि यद्यपि मुगला की सेना कम थी किन्तु ख्वास खा तथा अफगान मना को युद्ध करने का साहस नही हुआ।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 172-73 राहरी कस्बा, 27^0 41′, उत्तर तथा 68^0 56′ पूव सिन्ध नदी के पूर्वी तट पर स्थित है।

3 तारीखे मासूमी, पृ० 142।

4 वही, पृ० 162 64।

शाह हुसैन बुद्धिमान था। वह अपने राज्य की रक्षा के लिए सतर्क था। इसी कारण जब उसने अपने एक दूत मीर अलीका अरगून, को हुमायूं के पास स बंगाल विजय पर बधाई देने के लिए गौड़ भेजा तो उसी के साथ उसने मीर यश मुहम्मद अरगून को कामरान के पास उसकी कंधार विजय पर बधाई देने के लिए आगरा भेजा।[1] वास्तव में दोनों दूत मुगलों की अवस्था का पता लगाने के लिए भेजे गये थे। चौसा के युद्ध के पश्चात ही उसे भय हुआ कि मुगल सिन्ध में आ सकते हैं, इस कारण उसने उच्च से भक्कर तक नदी के दोनों तरफ की कृषि को बरबाद करने की आज्ञा दी।[2] कन्नौज के युद्ध के पश्चात् वह और भी सतर्क हो गया। उसने भक्कर के दुर्ग को आवश्यक वस्तुओं से भर दिया तथा निकट के स्थानों को नष्ट कर दिया। इस तरह उसने अपनी रक्षा का पूर्ण प्रबंध कर लिया था।

भक्कर का गवर्नर इस समय सुल्तान महमूद था। हुमायूं की सेना के पहुंचने ही सुल्तान महमूद ने इस आक्रमण समझा और मुगलों का सामना करने के लिए तैयार हो गया। रोहरी का दुर्ग उसने नष्ट कर दिया और स्वयं भक्कर के द्वीप दुर्ग में अपनी सेना के साथ चला गया। अपने साथ वह अपनी नावें भी लेता गया जिससे हुमायूं उन पर अधिकार न कर सके। हुमायूं ने उसे दुर्ग को समर्पित करने और स्वयं उपस्थित होने के लिए लिखा। सुल्तान महमूद ने अपने स्वामी शाह हुसैन और अरगून की आज्ञा के बिना दुर्ग का समर्पित करना अस्वीकार कर दिया किन्तु उसने हुमायूं के साथ सद्‌व्यवहार किया। उसने अन्न तथा आवश्यक वस्तुएं बाजार के सुपरिंटेंडेंट महतर अशरफ के नेतृत्व में हुमायूं के पास भेज दीं।[3]

डा० बनर्जी लिखते हैं कि भक्कर के गवर्नर को हुमायूं तथा शाह हुसैन के पत्र व्यवहार का ज्ञान नहीं था, इसी कारण उसने सम्राट का विरोध किया।[4]

विद्वान लेखक का मत ठीक नहीं प्रतीत होता। शाह हुसैन का अपने राज्य तथा दुर्ग की रक्षा का प्रबंध करना, जिनका वर्णन किया जा चुका है, तथा बाद

1 तारीखे मासूमी, पृ० 165।

2 वही, पृ० 166, इलियट तथा डासन, 1, पृ० 317।

3 तारीखे मासूमी (पृ० 168) के अनुसार उसने 500 गदहों के बोझ के बराबर अनाज एवं भोजन सामग्री भेजी।

4 बनर्जी, हुमायूं 2, पृ० 26।

म भी शाह हुसेन क दुग का समर्पित न करना प्रमाणित करता ह कि गवनर को अपने स्वामी की इच्छा का नान था। फिर पत्र व्यवहार के समय दुग पर आक्रमण करना हुमायू के लिए उचित न था।

भक्कर के दुग को अधीन करन मे असफल होकर हुमायू ने दा प्रतिनिधिया, अमीर ताहीर तथा अमीर समन्दर को शाह हुसन अरगून के पास सन्देश लकर भेजा। इसमे उसन सिन्ध म विना सूचना के आने क लिए क्षमा मागी तथा उसे आश्वासन दिया कि वह सिन्ध पर अधिकार नही करना चाहता था और केवल परिस्थिति वश उसके राज्य म पहुच गया था। उसन शाह हुसेन अरगून से अपने लिए गुजरात पर आक्रमण करन म सहायता देन की प्राथना की।

हुमायू के अमीर किसी सुरक्षित स्थान के लिए चिन्तित थ जहा व अपने परिवारा को रख सकत। उनकी वाता को ध्यान म रखकर हुमायू ने सिन्ध के शासक के पास निम्नलिखित शर्तें दूत द्वारा भेजी [2]

1 शाह हुसन मुगलो की अधीनता स्वीकार करे।

2 वह स्वय हुमायू के सामने उपस्थित हो।

3 गुजरात विजय मे शाह हुसेन मुगलो की सहायता करे।

4 कुछ समय के लिए शाह हुसेन भक्कर का दुग मुगलो को समर्पित कर द जिससे वे अपना परिवार वहा सुरक्षित रख सकें।

इसी समय बहुत से दरीजा एव साफियानी जाति के लोग हुमायू की सेना म भर्ती हो गय जिससे उसकी सना तथा सहायका की सख्या बहुत अधिक बढ गयी।[3] अनाज की कमी स भाव बहुत अधिक बढ गया तथा अकाल की स्थिति हो गयी। सहायका की सख्या बढने से हुमायू के मन म आशा का सचार हुआ कि यदि आवश्यकता पडी तो वह शक्ति से भी इन भू भागा पर अधिकार कर सकेगा। शुक्रवार की नमाज के समय रोहरी की मस्जिद म उसके नाम स खुत्वा पढा गया।[4] अकाल स बचने के लिए यादगार नासिर मिर्जा को नदी की दूसरी

1 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 148, तवकात अकबरी, डे, 2, प० 77।

2 अकबरनामा 1, प० 173, गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, प० 148-49, तारीखे मासूमी, पृ० 168।

3 तारीखे मासूमी, (प० 170) के अनुसार दो लाख। कदाचित वह सख्या अतिशयोक्तिपूण है।

4 वही पृ० 170। जौहर उस समय वहा उपस्थित था किन्तु वह उसका उल्लेख नही करता।

तरफ तथा हिन्दाल को सेहवान के निकट पातर म[1] पडाव डालने का प्रब ध करना पडा।

शाह हु सन न हुमायू के दूत का स्वागत किया। अपने उत्तर मे उसने हुमायू से गुजरात अभियान म सहायता देने तथा स्वय उपस्थित होने की बात कही किन्तु वह रोहरी का दुग मुगलो को समर्पित करने के लिए तैयार नही था। उसने मुगलो को रोहरी छोडकर हाजकान[2] जाने की सलाह दी, क्योकि वहा अनाज की अधिकता थी तथा निकट होने के कारण शाह हुसेन को वहा उपस्थित होने मे सुविधा थी।[3]

शाह हुसन न अपनी सतकता नही छोडी। वह जानता था कि हुमायू को खुलकर सहायता देने का अथ शेरशाह को आमन्त्रित करना था। हुमायू एक निष्कासित शासक था। उसके पास न इतने साधन थे न यश था कि वह अफगानो से युद्ध कर सकता। अधिक सम्भव था कि मुगल सुविधा पाकर सिन्ध म ही जम रहते और इस तरह शाह हुसेन का राज्य ही समाप्त हो जाता। इस परिस्थिति म शाह हुसेन ने मुगल सम्राट का अन्न तथा मीठी बातो से सन्तोष तो दिलाया किन्तु वह किसी तरह इन्हे अपन राज्य के बाहर निकालना चाहता था। इसी कारण हुमायू द्वारा भेजे गए दूत को वह उसकी स्वीकृति से ही रोके रहा तथा हुमायू को स्पष्ट उत्तर न देकर उसको कई महीने भुलावे म डाले रखा। रोहरी के दुग की रक्षा का भी उसन उचित प्रब ध किया था, यद्यपि उस हुमायू के स्वभाव का ज्ञान था तथा वह समझता था कि हुमायू जिस उद्यान म ठहरा था उसकी सुन्दरता को छोडकर वह स्वय रोहरी पर आक्रमण नही करेगा।[4] रोहरी के दुर्ग की रक्षा का प्रबन्ध कर वह स्वय सीविस्तान पर आक्रमण करने के लिए

---

1 आधुनिक पात कुहना' ग्राम क पास। आइने अकबरी, 2 पृ० 342 के अनुमार यह मुल्तान के सूबे के सीविस्तान सरकार म था। देखिए मेजर जनरल एम० आर० हेग, दि इण्डस डेल्टा कन्ट्री, पृ०91, बेवरिज द्वारा अकबरनामा का अंग्रेजी अनुवाद, पृ० 362, टिप्पणी 2।

2 बन्स, नरेटिव आफ सि ध, आईन अकबरी 2, प० 341। हाजकान, जाजकान या चाचकान थटटा के पूव, रन के पश्चिम म सि ध की शाखा पर स्थित था। अकबर के समय म यह मुल्तान सूबे की सरकार म था। इसम 11 महल थे जिनका राजस्व 1 17,84,586 दाम था।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 173 74।

4 तारीखे मासूमी, पृ० 169।

रवाना हो गया।

कुछ दिन रोहरी के उद्यान मे रुकने के पश्चात् हुमायू ने पुन अपने मीरे माल (कोषाध्यक्ष) अब्दुल गफूर को शाह हुसेन को बुलाने के लिए भेजा। शाह हुसेन ने उत्तर दिया की उसकी लडकी (माह चुचक) से कामरान का विवाह निश्चित था और वह उसके प्रब ध मे लगे होने के कारण उपस्थित होने म असमर्थ था।"[1]

शाह हुसेन के उत्तर के पश्चात् अब उससे सघर्ष के अतिरिक्त अन्य मार्ग नही था। हुमायू ने इस बीच कई महीने व्यर्थ की वार्ता मे व्यतीत कर दिये जिसका कोई परिणाम नही हुआ। इसी समय हिन्दाल के कन्धार जाने की सूचना मिली।[2] मुगल दल के अधिकतर अमीर उसका साथ छोडकर चले ही गये थे। हिन्दाल के चले जाने पर स्थिति और भी बिगड जाती। अत हुमायू इस समाचार से चिन्तित हुआ। हिन्दाल से मिलकर उसे समझाना आवश्यक था, यह सोचकर वह पातर पहुचा। उसने वहा हिन्दाल से उसकी कन्धार यात्रा के विषय मे पूछा। हिन्दाल ने उसे निराधार बताया जिससे हुमायू को बडा सन्तोष हुआ।

हमीदा बानो से विवाह

हुमायू पातर मे कुछ दिन रहा। इस बीच एक दिन वह हिन्दाल की मा दिलदार बेगम से मिलने गया। वहा सभी स्त्रिया उससे मिलने तथा उसका स्वागत करने आयी। इन स्त्रियो मे हुमायू की दृष्टि एक 14 वर्ष की लडकी पर पडी। हुमायू ने हिन्दाल से उसके विषय म पूछा। हिन्दाल ने उत्तर दिया कि वह उसके शिक्षक मीर बाबा दोस्त[3] की पुत्री हमीदा बानो थी। यह जानकर

---

1 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 149।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 147, तबकात अकबरी, 2, डे, पृ० 77, गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 149।

3 मीर बाबा दोस्त ईरान का निवासी था तथा हुमायू के समय सद्र के पद पर नियुक्त हुआ था। (तारीखे मासूमी, पृ० 171 के अनुसार उसका नाम शेख अली अकबर जामी था। इसकी विवेचना के लिए देखिए गुलबदन बेगम के हुमायूनामा के अंग्रेजी अनुवाद म बेवरिज की टिप्पणी पृ० 237 41) बाद मे अकबर के समय यह तीन हजार का मनसबदार नियुक्त हुआ। जौहर ने मीर बाबा दोस्त को हिन्दाल का आखुन्द कहा है। आखुन्द का अर्थ शिक्षक या धर्म प्रचारक है।

कि उसकी मगनी तव तक नही हुई थी, हुमायू न अपने निकट ही खडे हमीदा वानो के भाई ख्वाजा मुअज्जम से कहा कि "यह लडका मेरा अपना सम्बधी हाता है" और हमीदा वाना स भी कहा कि "यह भी मरी सम्बधी है।"[1] दूसर दिन हुमायू न दिलदार वेगम से हमीदा वानो से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। हिदाल हुमायू की इस वात को सुनकर क्रोधित हुआ और उसन कहा, "आप मुझ उत्साहित करने तथा सात्वना देने नही आए है, वल्कि अपन लिए दुल्हन का प्रवध करने आए है। अगर आप इसी तरह का विचार रखगे तो मैं यहा से आपको छोडकर चला जाऊगा।"[2] मिर्जा हिदाल न आग कहा कि वह हमीदा वानो को अपनी वहन और पुत्री की तरह समझता है। हुमायू वादशाह था और सम्भव था कि दोना की न वन सक।[3] हुमायू इससे वडा नाराज हुआ और वहा से उठकर चला गया।

हुमाय का यह व्यवहार अनुचित था। निष्कासन की कठिन परिस्थिति म, अपने स 19 वप छाटी लडकी से, प्रथम बार ही दखकर, विवाह का प्रस्ताव करना उसके चरित्र की दुवलता का द्योतक है। हुमायू की अवस्था इस समय लगभग 33 वप की थी और हमीदा वानो 14 वप की थी। देखन म भी दोना म वहुत अन्तर था। हुमायू के कई पत्निया थो। गुलबदन वेगम न 6 पत्निया का उल्लख किया है।[4] जिनमे से 4 कदाचित् उस समय उसके साथ थी। एसी परिस्थिति मे एक लडकी को दखकर उससे तुरन्त विवाह करने का प्रस्ताव उच्छृखलता का प्रतीक है। हिदाल हमीदा वानो को अपनी वहन समझता था और उसकी कम उम्र होन के कारण उसे अपनी लडकी की तरह मानता था। इस परिस्थिति मे हुमायू के इस प्रस्ताव स उसका क्रोधित होना स्वाभाविक था।

हुमायू के क्रोधित होकर चले जाने स दिलदार वेगम को बहुत दुख हुआ।

---

1 हुमायू ने कदाचित यह इस कारण कहा क्योकि उसकी माता माहम वेगम भी शेख अहमद जाम जिन्दापील स सम्बधित थी, जिसस हमीदा का परिवार भी था।

2 जौहर, रिजवी मुगल कालीन भारत, हुमायू, भाग 1, पृ० 624

3 हुमायूनामा, पृ० 52।
"हजरत पादशाह अद मवादा मआशे नेक न शवद" ता वायसे कुलफत शवद।

4 हुमायू की पत्निया क लिए इस पुस्तक का ग्यारहवा अध्याय दखिए।

उन्होंने अपन पुन हिंदाल को उसके व्यवहार के लिए टाटा और उससे कहा कि बादशाह के सामने उस इस तरह का व्यवहार नही करना चाहिए। इस समस्या को दिलदार बेगम ने स्वय अपने हाथ मे लिया और उन्होंने हुमायू को एक पत्र लिखा जिसमे उन्होंने उसके क्रोधित होकर चले जाने पर आश्चय तथा दुख प्रकट किया और उसे सूचित किया कि हमीदा बानो की माता ने इस प्रश्न पर दिलचस्पी लेनी प्रारम्भ कर दी है और लडकी की स्वीकृति के लिए प्रयत्नशील है।[1] हुमायू इससे बडा प्रसन्न हुआ। उसे कुछ आशा हुई कि उसकी मनाकामना पूरी होगी। उसने दिलदार बेगम को लिखा कि वे जो भी प्रयत्न करेंगी वह उसे स्वीकार करेगा, और जहा तक 'निर्वाह व्यय' का प्रश्न था जो कुछ भी वे चाहे वह स्वीकार कर लेगा। अन्त म उसने लिखा कि उसकी आखें मार्ग पर लगी हुई है।[2]

दिलदार बेगम ने हिन्दाल को समझा बुझाकर उससे इस विवाह की स्वीकृति ले ली। हुमायू का मन देखकर उन्होंने एक मजलिस उसके स्वागत म बुलायी। बादशाह ने दिलदार बेगम से मुलाकात के अवसर पर हमीदा बानो से मुलाकात करने की इच्छा प्रकट की। हमीदा बानो बुलायी गयी पर वह नही आयी। फिर सुभान कुली को उसे बुलाने के लिए भेजा गया किन्तु हमीदा बानो आने के लिए फिर भी तयार नही हुई। वह बार बार कहती रही कि 'बादशाह से भेंट करना एक बार ही जायज है, दूसरी बार नामहरम (जिसके सामने स्त्रियो का जाना उचित नही) है। मैं नही जाऊगी।" चालीस दिन तक हमीदा बानो को समझाने का प्रयत्न होता रहा। एक दिन दिलदार बेगम ने कहा कि "आखिर तुम किसी न विवाह तो करोगी ही, फिर बादशाह से अच्छा कौन होगा ?' हमीदा बानो ने उत्तर दिया 'मैं किसी से विवाह जरूर करूगी, लेकिन वह ऐसा मनुष्य होगा जिसके गरीबान मेरे हाथ छू सकें, न कि ऐसा जिसके दामन को भी मैं न छू सकू।"[3]

---

1 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 150।

2 वही।

3 गुलबदन के शब्द इस प्रकार है—
आरे ब कसे ख्वाहम रसीद कि दस्ते मन ब गरबान ऊ बरसद न आकि ब कसे बेरसम कि दस्त मन मीदानम ब दामन ऊ रसद (हुमायूनामा, फा० प० 53)।
डा० बनर्जी (भाग 2,प०34) ने इसका अथ यह लगाया है कि हुमायू बहुत लम्बा था तथा हमीदा कद मे उससे बहुत छोटी थी। यह अथ ठीक नही है। यह वाक्य अलकारिक है तथा इसमे हुमायू तथा हमीदा के सामाजिक स्तर की भिन्नता की तरफ इशारा है। हमीदा बानो का इस तरह हुमाय

कि उसकी मगनी तब तक नही हुई थी, हुमायू ने अपने निकट ही खडे हमीदा बानो के भाई ख्वाजा मुअज्जम से कहा कि "यह लडका मेरा अपना सम्बन्धी होता है" और हमीदा बानो से भी कहा कि "यह भी मेरी सम्बन्धी है।"[1] दूसरे दिन हुमायू ने दिलदार बेगम से हमीदा बानो से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। हिन्दाल हुमायू की इस बात को सुनकर क्रोधित हुआ और उसने कहा, 'आप मुझे उत्साहित करने तथा सान्त्वना देने नही आए है, बल्कि अपने लिए दुल्हन का प्रबन्ध करने आए हैं। अगर आप इसी तरह का विचार रखेंगे तो मैं यहा से आपको छोडकर चला जाऊगा।"[2] मिर्जा हिन्दाल ने आगे कहा कि वह हमीदा बानो को अपनी बहन और पुत्री की तरह समझता है। हुमायू बादशाह था और सम्भव था कि दोनो की न बन सके।[3] हुमायू इससे बडा नाराज हुआ और वहा से उठकर चला गया।

हुमायू का यह व्यवहार अनुचित था। निष्कासन की कठिन परिस्थिति मे, अपने से 19 वर्ष छोटी लडकी से, प्रथम बार ही देखकर, विवाह का प्रस्ताव करना उसके चरित्र की दुर्बलता का द्योतक है। हुमायू की अवस्था इस समय लगभग 33 वर्ष की थी और हमीदा बानो 14 वर्ष की थी। दखने मे भी दोनो मे बहुत अन्तर था। हुमायू के कई पत्निया थी। गुलबदन बेगम ने 6 पत्नियो का उल्लेख किया है।[4] जिनमे से 4 कदाचित उस समय उसके साथ थी। ऐसी परिस्थिति मे एक लडकी को देखकर उससे तुरन्त विवाह करने का प्रस्ताव उच्छृङ्खलता का प्रतीक है। हिन्दाल हमीदा बानो को अपनी बहन समझता था और उसकी कम उम्र होने के कारण उसे अपनी लडकी की तरह मानता था। इस परिस्थिति मे हुमायू के इस प्रस्ताव से उसका क्रोधित होना स्वाभाविक था।

हुमायू के क्रोधित होकर चले जाने से दिलदार बेगम को बहुत दुख हुआ।

---

1 हुमायू ने कदाचित यह इस कारण कहा क्योकि उसकी माता माहम बेगम भी शेख अहमद जाम जिन्दापील से सम्बन्धित थी, जिससे हमीदा का परिवार भी था।

2 जौहर रिजवी मुगल कालीन भारत, हुमायू, भाग 1, पृ० 624

3 हुमायूनामा पृ० 52।
'हजरत पादशाह अन्द मबादा मआशे नेक न शवद ता बायसे कुलफत शवद।

4 हुमायू की पत्नियो के लिए इस पुस्तक का ग्यारहवा अध्याय देखिए।

उन्हान अपन पुत्र हिन्दाल को उसक यवहार के लिए डाटा और उसस कहा कि बादशाह के सामन उस इस तरह का व्यवहार नही करना चाहिए। इस समस्या को दिलदार बगम न स्वय अपने हाथ म लिया और उन्होन हुमायू को एक पत्र लिखा जिसम उन्हान उसके क्रोधित होकर चले जान पर आश्चय तथा दुख प्रकट किया और उस सूचित किया कि हमीदा बानो की माता न इस प्रश्न पर दिलचस्पी लेनी प्रारम्भ कर दी है और लडकी की स्वीकृति के लिए प्रयत्नशील ह।[1] हुमायू इससे बडा प्रसन्न हुआ। उस कुछ आशा हुई कि उसकी मनोकामना पूरी होगी। उसने दिलदार बेगम का लिखा कि व जो भी प्रयत्न करेंगी वह उसे स्वीकार करेगा, और जहा तक 'निवाह-व्यय' का प्रश्न था जो कुछ भी वे चाह वह स्वीकार कर लेगा। अन्त म उसन लिखा कि उसकी आखे माग पर लगी हुई है।[2]

दिलदार बेगम न हिन्दाल का समझा बुझाकर उससे इस विवाह की स्वीकृति ले ली। हुमायू का मन देखकर उन्होन एक मजलिस उसके स्वागत मे बुलायी। बादशाह न दिलदार बेगम म मुलाकात के अवसर पर हमीदा बानो स मुलाकात करन की इच्छा प्रकट की। हमीदा बानो बुलायी गयी पर वह नही आयी। फिर सुभान कुली का उस बुलान के लिए भेजा गया किन्तु हमीदा बानो आने के लिए फिर भी तयार नही हुई। वह बार बार कहती रही कि बादशाह से भेट करना एक बार ही जायज है, दूसरी बार नामहरम (जिसके सामने स्त्रियो का जाना उचित नही) है। मैं नही जाऊगी। चालीस दिन तक हमीदा बानो को समझाने का प्रयत्न होता रहा। एक दिन दिलदार बेगम न कहा कि "आखिर तुम किसी स विवाह तो करोगी ही, फिर बादशाह स अच्छा कौन होगा ?" हमीदा बानो ने उत्तर दिया 'मैं किसी से विवाह जरूर करूँगी, लकिन वह ऐसा मनुष्य होगा जिसके गरीबान मेरे हाथ छू सक, न कि ऐसा जिसके दामन को भी मैं न छू सकू।'[3]

---

1 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 150।

2 वही।

3 गुलबदन के शब्द इस प्रकार है—
आरे ब कसे ख्वाहम रसीद कि दस्ते मन ब गरेबान ऊ बरसद न आकि ब कसे बेरसम कि दस्त मन मीदानम ब दामन ऊ रसद (हुमायूनामा, फा० प० 53)।
डा० बनर्जी (भाग 2,प०34) ने इसका अथ यह लगाया है कि हुमायू बहुत लम्बा था तथा हमीदा कद म उससे बहुत छोटी थी। यह अथ ठीक नही है। यह वाक्य अलकारिक है तथा इसस हुमायू तथा हमीदा के सामाजिक स्तर की भिन्नता की तरफ इशारा है। हमीदा बानो का इस तरह हुमायू

अर्थात दोना मे इतना सामाजिक अन्तर था कि यह विवाह उचित नहा था। दिलदार वगम न उस बहुत समझाया, अन्त म बडी कठिनता स हमीदा बानो विवाह के लिए तयार हुई।[1]

29 अगस्त 1541 इ० को दोना का विवाह सम्पन्न हुआ। हुमायू न, जो स्वय ज्योतिपशास्त्र का ज्ञाता था, दिन और समय निश्चित किया। जव निश्चित समय म दर हान लगी ता हुमायू न मीर अवुल वका को तुरन्त समय से विवाह सम्पन्न करने के लिए जल्दवाजी की। विवाह क पश्चात मीर अवुल वका को दो लाख सिक्के 'निकाहाना' क रूप म दिये गय।[2]

हुमायू और हमीदा वाना का विवाह कइ दृष्टिया स महत्त्वपूण है। यह एक

की लम्बाइ की तरफ इशारा करना असम्भव प्रतीत होता है। यदि उसका यह अथ हाता ता गुलवदन वगम, जिसन इसका वणन किया है, ऐसा न लिखती, क्योकि इसस हमीदा की बेशर्मी प्रकट होती है।

1 हमीदा वाना न हुमायू से विवाह करना क्या अस्वीकार किया, इस विषय म डा० विंसेंट स्मिथ और सर रिचाड वन (स्मिथ, अक्वर, प० 13, कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, 4, प० 38) का यह सुझाव कि वह किसी दूसर का प्यार करती थी ओर उसको मगनी हा चुकी थी, सत्य नही है क्याकि यह समकालीन इतिहासकारो द्वारा समर्थित नही है। केवल जौहर लिखता है कि विवाह सम्बन्धी वातचीत चल रही थी। मागनी हा गयी थी या हमीदा वानो किसी अन्य से प्रेम करती थी यह किसी भी समकालीन इतिहासकार न नही लिखा है। गुलवदन वेगम ने स्पष्ट रूप स हमीदा वानो के इस विवाह के अस्वीकार करन का कारण लिखा है और कदाचित वही कारण मुख्य था। दोना उपयुक्त लेखको के विचार इस दृष्टि स काल्पनिक ह। श्रीमती वेवरिज के अनुसार हमीदा वानो की प्रारम्भिक अस्वीकृति का कारण हुमायू की कई पत्नियो का होना था। (हुमायूनामा का अग्रेजी अनुवाद, प० 150, नोट 1)

2 दो लाख चादी के सिक्के देना उस समय हुमायू के लिए असम्भव प्रतीत होता है। कदाचित् दो लाख रुपय नही बल्कि दो लाख दाम (पाच हजार रुपय) उसे दिय गय। (वनर्जी, हुमायू 2, प० 37 नोट 3) विवाह की तिथि के विषय म अवुल फजल केवल 948 हि० लिखता है। गुलबदन वगम कवल इतना ही कहती है कि विवाह सोमवार, जुमादिउल अव्वल 948 हि० को हुआ, किस तिथि को हुआ यह वह नही लिखती। डा० वनर्जी इसस प्रथम सप्ताह (29 अगस्त) निश्चित करत हैं तया डॉ० ईश्वरी प्रसाद न श्रीमती वेवरिज क मत को स्वीकार किया है (सितम्बर 1541 इ०)। (वनर्जी 2, प० 37, हुमायूनामा, वेवरिज, प० 151; ईश्वरी प्रसाद हुमायू, प० 207)।

शिआ-सुन्नी विवाह था। उस समय जब इस्लाम के इन दो सम्प्रदायो मे पारस्परिक वमनस्य अपनी सीमा पर था, इस विवाह स हुमायू की उदारता प्रकट होती ह। इस विवाह के 14 महीन पश्चात हमीदा बानो के गभ से अकबर का जन्म हुआ जा भारत का ही नही वल्कि विश्व के महान शासक के रूप मे विख्यात हुआ। दोनो की आयु म काफी अन्तर था फिर भी दोनो का पारिवारिक जीवन बहुत ही सुखी रहा। इसस इस विवाह की सफलता प्रकट होती है।

हिन्दाल का पलायन

हुमायू की गतिविधि तथा मरुभूमि की कठिनाइयो से हिन्दाल परेशान तो था ही, इसी समय कन्धार के गवनर कराचा खा ने उस कन्धार आने के लिए आमन्त्रित किया।[1] हिन्दाल इसके प्रति आकर्षित भी हुआ, किन्तु हुमायू को छोडने का वह पूण निश्चय नही कर पा रहा था। हमीदा स हुमायू के विवाह करन के पश्चात अपना विरोध प्रदर्शित करन के बहाने यहा से कन्धार रवाना होन का उसे अच्छा अवसर मिला। विवाह के पश्चात ही हुमायू को छोडकर वह कन्धार की तरफ रवाना हो गया।

हुमायू के भाइया म हिन्दाल ही उसके साथ रह गया था। उसके जान स मुगल दल को और भी निराशा हुई। हुमायू के भाइयो मे हिन्दाल उसके साथ रहना अवश्य चाहता था, किन्तु एसा सम्भव नही हो पाता था और वह कुछ दिन साथ रहकर भाग खडा होता था। इस बार भी वसा ही हुआ। वास्तव मे हिन्दाल के हृदय म दो विरोधी भावनाओ का सघप हो रहा था। एक तरफ हुमायू के साथ मिलकर सहयोग करन की प्रवत्ति उसम थी और दूसरी तरफ समकालीन परिस्थितियो तथा अपन अन्य भाइया की आकाक्षाओ को देखकर वह भी हुमायू के प्रभाव से अलग होकर स्वतन्त्र होन का प्रयत्न करना चाहता था। इस परिस्थिति मे उसकी द्वितीय प्रवृत्ति न विजय पायी और उसने हुमायू का त्याग दिया। जिस परिस्थिति म हुमायू था, उसमे उस छोडना मुगलो के लिए बहुत बडी कमजोरी का कारण बना।

अबुल बका की मृत्यु

हुमायू का चचेरा भाई यादगार नासिर मिर्जा हिन्दाल के अधिक समीप था। कन्धार जाते समय हिन्दाल ने उससे भी साथ चलन के लिए कहा। हुमायू इससे

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 174।

बहुत ही चिन्तित हुआ। सभी सम्बंधियो ने उसका साथ छोड दिया था। यदि नासिर मिर्जा भी चला जाता तो हुमायू की शक्ति को बहुत बडा धक्का लगता। हमीदा बानो स विवाह के तीन ही दिन पश्चात हुमायू पातर स राहरी आया। शाह हुसन अरगून की शर्तो का अस्वीकार करन क पश्चात् अब भक्कर क दुग पर शक्ति से अधिकार करन के अतिरिक्त अय कोई माग नही था। इसक लिए आपसी एकता आवश्यक थी। हुमायू न इस कारण यादगार नासिर को सम्मान के लिए अबुल बका को भेजा। वह बाबर के समय का एक प्रमुख अमीर था। उसी न हुमायू की बीमारी क समय बाबर स कोई बहुमूल्य वस्तु न्योछावर करन की सलाह दी थी।[1] मुगलो म उसका विशेष आदर तथा सम्मान था।

मीर अबुल बका ने नासिर मिर्जा से मुलाकात की तथा निम्नलिखित शर्तों पर उसे हुमायू की सहायता करने पर राजी किया[2]

1 यादगार नासिर सिन्ध नदी पारकर हुमायू से मिलेगा तथा हुमायू की सेवा म रहकर उसकी सहायता करेगा।

2 हिन्दुस्तान विजय के पश्चात यादगार नासिर का, उसकी सेवा के पुरस्कार स्वरूप, हुमायू अपन साम्राज्य का एक तिहाई भाग देगा।

3 हिन्दुस्तान की विजय के पूव यदि हुमायू काबुल पर अधिकार करेगा तो यादगार नासिर का गजनी चीख तथा लाहगढ[3] के भाग प्राप्त होगे। ये स्थान बाबर ने अपने छोटे भाइ नासिर मिर्जा की पत्नी अर्थात् यादगार नासिर की माता को दिय थे।

इस प्रकार एक तरह स साम्राज्य क विभाजन की शत स्वीकृत हुई। हुमायू की इन शर्तों को स्वीकार करने की आलोचना की जा सकती है, किन्तु उसकी परिस्थितियो पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उसने कोई भूल नही की। यादगार नासिर मिर्जा से सहयोग प्राप्त करने का इस सन्धि के अतिरिक्त अन्य कोई माग नही था।

भक्कर के दुगवासियो को हिन्दाल के कन्धार जान तथा यादगार नासिर के उसका साथ देन की सूचना थी। उन्ह इससे प्रसन्नता थी, क्योकि इससे मुगलो

1 अकबरनामा I पृ० 116 तथा 118।

2 वही, पृ० 174 75।

3 लाहगढ अब लोगर कहलाता है तथा गजनी जिले म है। बाबर के अनुसार यह काबुल का एक तूमान परगना था। चीख लोहगढ के परगने म एक गाव है। आइन अकबरी, 2, पृ० 410, बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 217 म चीख का वणन है।

की आक्रामक शक्ति कम हो जाती।

यादगार नासिर मिर्जा के विचार परिवर्तन से भक्कर दुर्ग के रक्षकों को बहुत निराशा हुई। उन्होंने इस सबकी जड़ अबुल बका को ही समझा। मीर 18 जमादि उल अव्वल 948 हि०[1] को यादगार नासिर से मिलकर दूसरे दिन लौट रहा था। मार्ग में भक्कर के रक्षकों ने उस पर आक्रमण किया। वह घायल हुआ तथा दूसरे दिन उसकी मृत्यु हो गयी।[2] हुमायूं को इससे बहुत दुःख हुआ, क्योंकि मीर अबुल बका ने उसकी सहायता करने में अपने प्राण खोये थे। ऐसे समय जब सभी उसे छोड़कर भाग रहे थे, ऐसे उपयोगी व्यक्ति उसके साथ नहीं थे।

सेहवान पर आक्रमण

पातर से भक्कर लौटने पर शाह हुसेन अरगून के दूत शेख मीरक ने हुमायूं से मुलाकात की। शाह हुसेन ने अन्य शर्तों को स्वीकार कर लिया था किन्तु वह हुमायूं के सामने उपस्थित होने को तैयार नहीं था। वास्तव में वह हुमायूं को धोखे में रखना चाहता था। हुमायूं ने दूत को विदा किया तथा शाह हुसेन को सामने उपस्थित होने के लिए कहा। कुछ दिन व्यतीत होने पर भी शाह हुसेन नहीं आया। युद्ध के अतिरिक्त अब अन्य कोई मार्ग नहीं था।

यादगार नासिर नदी पार कर हुमायूं से आ मिला था। विचार विमर्श के पश्चात यादगार नासिर को भक्कर दुर्ग के अभियान के लिए छोड़कर हुमायूं थट्टा की तरफ रवाना हुआ (सितम्बर 1541 ई०, 1 जमादि उल आखिर 948 हि०) मार्ग में सेहवान के निकट कुछ सिन्धियों ने हुमायूं के दल पर आक्रमण किया, किन्तु हुमायूं के दल ने उन्हें मार भगाया। 6 नवम्बर 1541 ई० (17

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 174। हिजरी वर्ष को सभी स्वीकार करते हैं किन्तु इसके दिन तथा अंग्रेजी तिथि के विषय में मतभेद है। डा० बनर्जी के अनुसार 18 जमादिउल अव्वल 948 हि० को बृहस्पतिवार 9, सितम्बर 1541 ई० था। बेवरिज अकबरनामा के अंग्रेजी अनुवाद में 11 सितम्बर लिखते हैं। कुछ समकालीन इतिहासकारों ने उस दिन मंगलवार लिखा है। बनर्जी, हुमायूं 2, पृ० 43, नोट 2।

2 अकबरनामा, पृ० 175, असकिन' 2, पृ० 222, श्रीमती बेवरिज (हुमायूंनामा पृ० 151) लिखती हैं कि उसे मुल्तान भक्करी के पास भेजा गया, वह बीमार पड़ा था उसकी मृत्यु हो गयी। उनका यह वर्णन सही नहीं है।

राजव, 648 हि०) को हुमायू सहवान[1] कस्ब म पहुचा और उसने दुग का घेरा प्रारम्भ किया।

सेहवान का घेरा काफी दिना तक चला। शाह हुसन ने भक्कर के दुग म आवश्यक वस्तुए जमा कर दी और स्वय सेहवान तथा भक्कर के बीच चक्कर लगाता रहा, जिससे मुगलो को खाने पीने की वस्तुए न प्राप्त हो सकें तथा उसक दुग रक्षको को किसी तरह की कमी न हो। इस बीच मुगला का काफी कष्ट हुआ। खाने-पीने तथा युद्ध सामग्री की कमी तथा बीमारियो के अतिरिक्त बाढ ने मुगला के कष्ट का और भीषण बना दिया। इस परिस्थिति म बहुत-स अमीर तथा सिपाही हुमायू को छोडकर भागने लगे। शाह हुसेन एस व्यक्तिया को प्रोत्साहित करता था तथा उह धन और पद दकर अपनी ओर कर लता था। मीर ताहिरसद्र तथा ख्वाजा गियासुद्दीन जामी जसे व्यक्ति भी हुमायू को छोडकर शाह हुसेन स जा मिले। इसी तरह मीर बरका, मिर्जा हसन, जफर अली, ख्वाजा महीब अली बख्शी हुमायू को छोडकर यादगार नासिर स भक्कर म जा मिले।[2] इसी बीच हुमायू का पता चला कि मुनीम खाँ, फजील बेग तथा अय लोग भाग जाना चाहते हैं। हुमायू ने भागने वाला का रोकने के लिए उनके नेता मुनीम खा को ब दी बना लिया।

दूसरी तरफ यादगार नासिर मिजा रोहूरी म डटा हुआ था। इस तरह मुगल सेना दो भागा म बटी हुई थी। सिधिया न तीन बार यादगार नासिर पर आक्रमण किया। अन्तिम बार के आक्रमण म मुगला ने बहुत-स शत्रुआ को मार डाला। इस तरह यादगार नासिर को पराजित करन म असफल होकर शाह हुसेन ने एक दूसरा पडयन्त्र रचा।

सेहवान म हुमायू की स्थिति दिन प्रतिदिन खराब होती जा रही थी। स्थिति यहा तक पहुच गयी कि शाह हुसन क पडाव पर आक्रमण करन के लिए अलीबेग ज नायर पाच सौ सिपाहियो का भी प्रब ध न कर सका।[3] इस दुदशा की अवस्था म हुमायू न यादगार नासिर से सहायता मागी। यादगार नासिर ने तरदी बेग तथा कासिम बेग को सना के साथ भेजा तथा स्वय हुमायू की सहायता के लिए जाने की तैयारी की। शाह हुसेन इससे सतक हुआ। उसने यादगार नासिर को फुसलाकर

---

1 सेहवान $26^0 26'$ उत्तर तथा $67^0 54'$ पूव म स्थित था। तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 79, नोट 2)

2 अकबरनामा, 1, पृ० 176।

3 जौहर, स्टीवट, पृ० 46।

अपने पक्ष मे करने की योजना बनायी। उसने बाबर कुली को यादगार नासिर के पास भेजकर कहलाया कि उसके कोई पुत्र नही है और वह यादगार नासिर से अपनी पुत्री का विवाह कर उसे अपना राज्य देना चाहता है।[1] यही नही, उसने यह भी अश्वासन दिया कि दोनो मिलकर सरलता से गुजरात पर अधिकार कर सकेंगे। यादगार नासिर इस कुचक्र मे फस गया। उसने हुमायू की सहायता की माग पर ध्यान नही दिया तथा प्रारम्भ मे सहायतार्थ भेजी गयी सेना को भी वापस बुला लिया। सेहवान का घेरा चलाना असम्भव था। हुमायू को विवश होकर सेहवान का घेरा उठाना पडा। बचे हुए सैनिको को लेकर वह भक्कर की तरफ रवाना हुआ।

मार्ग मे हुमायू को अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडा। वह घोडे से गिर पडा जिससे उसके हाथ पाव मे चोट लगी। सिन्धी सेना ने एक बार अचानक आक्रमण कर दिया और मुगल महिलाओ को नगे पैर भागकर अपनी रक्षा करनी पडी।[2] हुमायू ने निराश होकर मुनीम खा को शाह हुसेन से मुगलो के प्रति उदारता दिखाने की प्रार्थना करने के लिए भेजा। शाह हुसेन ने उसकी प्रार्थना अस्वीकार कर दी किन्तु हुमायू को अधिक तग नही किया गया।

भक्कर पहुचकर हुमायू को और निराशा हुई। यहा यादगार नासिर नदी पार करने के लिए उसे नावें देने को तैयार नही था। रात मे उसने सिन्धियो से नावें हटा लेने को कह दिया और प्रात उसने हुमायू से यह कहकर क्षमा माग ली कि शत्रु नावें लेकर भाग गये।[3] इस समय स्थानीय दो जमीदारो—झाला तथा गन्जम—की सहायता से हुमायू ने सिन्ध नदी पार की। हुमायू के नदी पार करने की सूचना से यादगार नासिर इन जमीदारो से बडा नाराज हुआ। कुछ अरगून सैनिको को मारकर उनके सिरो के साथ वह नाटकीय ढग से हुमायू के सामने उपस्थित हुआ जिससे उसका सन्देह मिट जाए। हुमायू ने उसे क्षमा कर दिया। शाह हुसेन के कहने पर यादगार नासिर ने दोनो जमीदारो को हुमायू के खेमे से जहा वे शाह हुसेन के डर से छिपे हुए थे, पकडकर शाह हुसेन को दे दिया। शाह हुसेन ने उन्हे मार डाला।[4] इस तरह हुमायू की मूर्खता से उसके आपत्तिकाल के

1 तारीखे मासूमी, पृ० 174, अकबरनामा 1, पृ० 177, तबकाते अकबरी डे, 2, पृ० 81।

2 जौहर स्टीवर्ट, पृ० 47, अंग्रेजी अनुवाद मे स्त्रियो के अर्धनग्न अवस्था मे भागने का उल्लेख है।

3 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 82।

4 अकबरनामा, पृ० 178, तबकाते अकबरी, डे, पृ० 82 83।

दो सहायकों की निमम हत्या हुई।

यादगार नासिर हुमायूं के आदमियों को भडकाता रहा और हुमायूं के खेमे से इनका भागना इतना साधारण हो गया कि उसको रात्रि के लिए हुमायूं को एक बार रात भर जागना पडा। यादगार नासिर अब खुले रूप से हुमायूं का विरोध करने लगा। वह उसे राहरी में पडाव डालने देने के लिए भी तयार नहीं था। यहां नहीं, एक बार उसने हुमायूं पर छापा मारने का भी विचार किया।[1] बडी कठि-नाई से उसे रोका जा सका। हुमायूं के लिए आपत्तिकाल की ये कठिनाइयां असह-नीय थी। मुगल पडाव में दुर्भिक्ष की अवस्था थी। मित्र, सम्बन्धी सभी उसे धोखा दे रहे थे। किसी का विश्वास नहीं किया जा सकता था। इस मानसिक कष्ट की अवस्था में चारों तरफ से निराश हुमायूं ने सन्यास लेने का विचार किया और राजत्व त्यागकर कावा जाने का विचार करने लगा। ऐसी कठिन स्थिति में उसने जोधपुर जाने का विचार किया। वहां के शासक मालदेव ने कुछ दिन पूर्व उसे आमन्त्रित किया था।

मालदेव तथा हुमायूं

राजपूताना के इतिहास में राठौर वंश का प्रमुख स्थान है। बारहवीं सदी के अन्त में यहां का शासक जयचन्द (1170 94 ई०) था। मुहम्मद गोरी के द्वारा चन्दवार के युद्ध में पराजित होने के पश्चात् इस वंश की शक्ति को बहुत बडा धक्का लगा, किन्तु इस वंश का अन्त नहीं हुआ। यहां से भागकर ये लोग जोधपुर चले गये, जो बाद में इस राज्य का केन्द्र बना। जिस समय मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई उस समय जोधपुर पर मालदेव राज्य करता था। राव मालदेव, राव गांगा का ज्येष्ठ पुत्र था। इसका जन्म 5 दिसम्बर, 1511 ई० को हुआ था। गांगा का स्वभाव विनम्र और सुशील था। उसने अपना राज्य बढाने का कोई प्रयत्न नहीं किया। इसके विपरीत मालदेव उग्र स्वभाव का और महत्वाकांक्षी था। इस कारण वह अपने पिता का विरोध करता था। एक दिन जब अफीम की पिनक में गांगा ऊपर की मंजिल के झरोखे में बैठा था, मालदेव ने पीछे से जाकर उसे उठा-कर नीचे फेंक दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गयी।[2] पिता को मारकर जिस समय मालदेव जोधपुर की गद्दी पर बैठा उस समय उसके अधिकार में केवल सोजत

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 178, तबकाते अकबरी, 2 82 83।

2 ओझा, जोधपुर का इतिहास, 1, पृ० 280 81 रेऊ, मारवाड का इतिहास, 1, पृ०115, कविराज श्यामलदास, वीरविनोद, 2, पृ०808।

ुर शाह के उत्कष स उसे कठिनाई
। के पारस्परिक झगडो से लाभ
क राज्यो पर अधिकार कर जोधपुर
हुमायू शेर तथा खा म कन्नौज की
।र, जसलमर पर तो मालदेव का
भी उसके अधिकार म थे। इसके
था।[1] राजपूताने म उसकी शक्ति
के पश्चात उसकी सीमा मुगल सीमा
अजमेर तथा नागौर दिल्ली शासन
ा के निकट था तथा उसके पास
।[2] वह महत्त्वाकाक्षी भी था। इस
सघप असम्भव नही था।

का निमनण मिला।[3] जिसम
आ जाए तो वह उसकी सहायता
? मुगल-अफगान सघप म जोधपुर
तु मालदेव निश्शक तथा बहादुर
। । इस परिस्थिति म उसे अपनी
। । कछ राजनीतिक घटनाए एसी
त। हुई।

न हिस्टी, अध्याय 12, हुमायू
के अनुसार उस समय उसकी
और कोइ व्यक्ति हिदुआ म
83 84।

र सिह, पूव आधुनिक राजस्थान
। सना 80,000 थी।

अनुसार मालदेव न कई बार उस
बुल फजल भी लिखता है कि उसन
अश्वासन दिया था। अकबरनामा,
पृ० 266 67) मालदेव
ई० के बीच प्राप्त हुआ होगा।

महत्त्वाकाक्षी मालदव न राज्य विस्तार की इच्छा स प्रेरित हाकर कुपा की अध्यक्षता म एक वडी सना वीकानर की तरफ रवाना की।[1] चढाइ की खबर पाकर वीकानेर के शासक राव जतसी न अपन मन्त्री नगराज म सलाह कर उसे शेरशाह के पास सहायता हेतु भेजा।[2] नगराज तथा कल्याण मल क लौटन के पहले ही मालदव न वीकानर पर आक्रमण कर, जतसी का युद्ध म मारकर उसके राज्य पर अधिकार कर लिया।[3] बीकानेर द्वारा शरशाह म सहायता मागने की सूचना पाकर ही मालदेव न हुमायू को आमन्त्रित किया था। एसा प्रतीत होता है कि उसे भय था कि वह शेरशाह म बीकानेर की रक्षा नही कर सकेगा। इसी कारण हुमायू के जोधपुर राज्य म प्रवेश करन के पश्चात ही उसन उस बीकानर देन का अश्वासन दिया।[4] हुमायू को आमन्त्रित करन क पश्चात शरशाह स युद्ध अनिवाय था। मालदेव इसके लिए तैयार था। हुमायू के निष्कासन का वह अस्थायी समझता था। मुगल सम्राट को दिल्ली तख्त पर बठाकर वह उत्तरी भारत की राजनीति को नियन्त्रित कर सकता था।[5] मालदेव का निमत्रण हुमायू के राजपूतो के प्रति प्रेम के कारण नही था।[6] प्रथम दो मुगल सम्राटा न कभी राजपूतों की सहायता नही की जिसस यह निष्कष निकाला जा सक। वास्तव म यह मालदेव की अपने रक्षाथ तथा अपनी स्थिति को सुदृढ बनाने क लिए था। मालदेव बुद्धिमान राजनीतिज्ञ था। निमत्रण भेजन के पूव उसन लाभ-हानि का अनुमान लगा लिया हागा, क्योकि इसमे असफलता का अथ उसका विनाश था।[7] परिस्थिति भी मालदेव के पक्ष मे थी। शेरशाह अभी अपने शासन और साम्राज्य को पूण रूप स

1 जोधपुर राज्य की ख्याति, 1, प० 69, ओझा, जाधपुर का इतिहास, 1, उद्धृत, प० 292।

2 जय सोम का कमचन्द वशात कीत्तन काव्यम, आझा, जाधपुर का इतिहास, जिल्द 1, प० 292।

3 रेऊ मारवाड का इतिहास, 1, प० 125 26, यह घटना 1598 विक्रमी (1541 42 ई०) की है। ओझा, जाधपुर का इतिहास, 1, प० 292 93।

4 गुलबदन, हुमायूनामा, वेवरिज, प० 154।

5 डा० ईश्वरी प्रसाद, हुमाय, प० 210।

6 Probably, he also considered Humayun personally a friend of the Rajputs and was aware of his relations with the Sisodias of Mewer" बनर्जी, हुमायू, 2 प०59 का यह विचार सत्य नही है।

7 कानूनगो, शेरशाह, प० 266।

संगठित नहीं कर सका था। बंगाल में खिज्र खाँ के विद्रोह के परिणामस्वरूप शेरशाह अपनी सेना के एक भाग के साथ पूर्वी अभियान में लगा था। लगभग 50,000 अफगान सेना गक्खर के विरुद्ध लगी हुई थी। इस तरह शेरशाह की अधिकतर सेना के दो भाग उसके साम्राज्य के पूर्वी तथा पश्चिमी सीमाओं में व्यस्त थे। दोनों भागों की सेनाओं को एकत्र करने में काफी समय लग जाता। ग्वालियर अब भी शेरशाह के अधिकार में नहीं आया था और शेरशाह का सेनापति शुजात खाँ उसका घेरा डाले हुए पड़ा था। मालवा के सरदार शेरशाह के विरुद्ध थे। राजपूत सेनाएं स्थायी नहीं थी, बल्कि समय पर इकट्ठी की जाती थी। मालदेव की सेना उस समय उसके पास थी। ऐसी परिस्थिति में यदि हुमायूं 1541 ई० की वर्षा ऋतु में जोधपुर आ जाता तो संभव था कि मालदेव उसकी सहायता कर उसे दिल्ली के तख्त पर बैठाने में सफल होता। किन्तु इस बीच हुमायूं सिन्ध के भागों में मारा मारा फिरता रहा तथा सिंध की विजय में लगा रहा, जिस पर अधिकार करना वह अधिक आवश्यक समझता था। सिंध की कठिनाइयां, हिन्दाल का पलायन, यादगार नासिर का विद्रोह तथा सिंध पर विजय पाना असम्भव देखकर हुमायूं को जोधपुर के निमंत्रण की याद आयी।

हुमायूं की जोधपुर यात्रा

चारों तरफ से निराश होकर हुमायूं ने जोधपुर जाने का विचार किया। उसने यादगार नासिर को वह प्रदेश समर्पित कर दिया तथा उसे यह चेतावनी दी कि शाह हुसेन अरगून उसे भक्कर पर अधिकार नहीं करने देगा। भक्कर को छोड़कर हुमायूं उच्च आया (मई 1542 ई०)। मार्ग में उसे जल, अन्न तथा जानवरों के लिए चारे का बहुत कष्ट हुआ। उच्च में उसने बख्शु लंगाह से सहायता मांगी, किन्तु इस बार उसने सहायता नहीं दी। मार्ग में मुगलों पर आक्रमण कर लोग उन्हें लूट भी लेते थे। स्थिति इतनी खराब हो गयी कि मुगलों को बेर तथा इसी प्रकार के जंगली फलों को खाकर समय काटना पड़ा।[1] इस तरह हुमायूं को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उच्च से दिलावरा, वासिलपुर होते हुए 31 जुलाई 1542 ई० को बीकानेर से 12 कोस पर हुमायूं ने पड़ाव डाला। मार्ग में अली बेग ने सुझाव दिया कि दिलावरा के दुर्ग पर अधिकार कर लिया जाए किन्तु हुमायूं ने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि इससे मालदेव नाराज हो

1 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 52 53।

जाएगा।[1]

मालदव के राज्य म पहुचने के पश्चात् हुमायू को एसा आभास हुआ कि मालदेव कदाचित उसकी सहायता नही करेगा। अबुल फजल लिखता है कि हुमायू के साथियो को मालदेव से धोखे का भय हुआ तथा उन्होने हुमायू को सतक रहन के लिए कहा। हुमायू ने मीर समन्दर को अपना दूत बनाकर मालदव के दरबार म भेजा। लौटकर मीर समन्दर ने सूचना दी कि मालदव यद्यपि स्वामिभक्ति की बात करता है पर उसस सहायता की आशा नही है और उसके विचार पवित्र नही है।[2]

मुगलो की अवस्था इस समय बहुत ही शोचनीय थी। अन्न तथा पानी क बिना उन्हे बहुत कष्ट उठाना पडा।[3] हुमायू की सना फलोदी परगन म पहुची। यहा उन्हे आवश्यक वस्तुए प्राप्त हुइ। मालदव ने भी सूखे मेव, अशर्फिया स लदा ऊट, कवच तथा एक पत्र भेजा, जिसम हुमायू का स्वागत करते हुए उसने लिखा कि 'मैं आपको बीकानेर देता हू।[4] इसी बीच हुमायू का एक दरबान राजू भागकर मालदेव के पास आया। वहा उसने मालदेव को सूचित किया कि हुमायू के पास कुछ बहुमूल्य हीरे जवाहरात ह। यही सूचना एक दूसर व्यक्ति जान मुहम्मद इशाक आका स भी मिली। स्थिति का पता लगान क लिए मालदेव ने नागौर के सनकाई नामक अपने एक विश्वासपात्र सेवक को एक व्यापारी क भेश म हुमायू के पास भेजा। उसने यह प्रकट किया कि वह हुमायू से हीरे खरीदना चाहता है। हुमायू ने इसका उत्तर दिया कि ऐसे अमूल्य हीर खरीद नही जा सकत। व या तो तलवार के जोर से प्राप्त किय जा सकत हैं या किसी सम्राट

---

1 जौहर, स्टीवट, प० 53। हुमायू ने उत्तर दिया, "इस दुग पर अधिकार जमा लेने से मैं ससार का बादशाह न हो जाऊगा पर मालदेव जरूर नाराज हो जाएगा।"

2 अकबरनामा 1, प० 171 80।

3 जौहर लिखता है कि माग मे हुमायू को एक मुगल मिला जिसस उसने ऋण लिया था। वह प्यास के कारण मरने मरन को हुआ था। हुमायू न उससे कहा, 'जो ऋण मुझ पर है यदि उसे तू जल की एक करौती के बदले मे क्षमा कर दे तो तुझे जल पिलाऊगा।" मुगल न इसे स्वीकार किया। हुमायू न कुछ लोगो को साक्षी बनाया और जल मुगल को दिया (जौहर स्टीवट, प० 54)। इससे हुमायू के चरित्र, पानी की कठिनाई तथा हुमायू के धन की कमी प्रमाणित होती है।

4 गुलबदन हुमायूनामा बेवारिज, पृ० 154 जौहर, स्टीवट, प० 55।

से दान द्वारा प्राप्त हो सकते है।[1] इस वार्ता ने तथा मालदेव के इस बने हुए व्यापारी के आगमन ने हुमायू को सशंकित कर दिया।

हुमायू ने एक दूसरे दूत रायमल सोनी को मालदेव के पास भेजा। सन्देह इतना अधिक हो गया था कि उसमे यह कहा गया कि यदि वह लिखकर परिस्थितियों की सूचना न दे सके तो संकेत द्वारा इसकी सूचना दे। संकेत के लिए निश्चित हुआ कि यदि वह एक हाथ की पांचों अंगुलियों को मोड ले तो इसका अनुमान लगाया जाए कि मालदेव विश्वसनीय व्यक्ति है, किन्तु यदि उसे धोखे का भय हो तो केवल सबसे छोटी अंगुली दबाकर इशारा करे।[2]

रायमल सोनी को भेजने के पश्चात हुमायू ने फलोदी से आगे बढ़कर कुलय योगी (या योगी तालाब) नामक स्थान पर अपना पडाव डाला। यहा रायमल द्वारा भेजा गया संदेशवाहक आया। उसने अपनी कनिष्ठा बन्द की, जिससे मालदेव से धोखे का संकेत मिला। इससे हुमायू के मुगल दल में बडी बेचैनी हुई। हुमायू फिर भी निराश नहा हुआ। उसे आशा थी कि मालदेव निश्चय ही उसकी सहायता करेगा। इसके अतिरिक्त मार्ग की कठिनाइयो तथा अन्य कोई सहायक न होने से भी उसने पुनः एक बार मालदेव के विचारो के विषय में पता लगाने का प्रयत्न किया। उसने तीसरी बार शमसुद्दीन अतका खा को मालदेव के पास भेजा।

शेरशाह तथा मालदेव

शेरशाह की पंजाब विजय तथा उसकी मुगलो से संधि वार्ता का वर्णन हम ऊपर कर आये है। शेरशाह मुगलो को पंजाब से पूर्णतया हटा देना चाहता था। इसी हेतु उसने ख्वास खा को हुमायू का, तथा कुतुब खा को कामरान का पीछा करने के लिए नियुक्त किया था। कामरान के सिंध नदी के पार करने के पश्चात कुतुब खा सिंध नदी से लौट आया। ख्वास खा भी हुमायू के सिंध प्रवेश करने के पश्चात पंचनद से लौट आया।[3] शेरशाह कुछ दिन खुशाब में शासन प्रबंध करने के लिए रुका रहा। बिलोच लोगो को अधीन रखने के लिए उसने रोहतास नामक दुर्ग का निर्माण प्रारम्भ किया। हैदर मिर्जा ने कश्मीर पर अधिकार कर लिया था। कश्मीर के भूतपूर्व शासक काजी चक ने सहायता

1 अकबरनामा 1, पृ० 180, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 55।

2 अकबरनामा, 1 पृ० 180।

3 कानूनगो, शेरशाह, पृ० 231।

देकर शेरशाह ने हैदर मिर्जा को व्यस्त रखा। इसी समय उसे बगाल म खिज्र खा के विरोध की सूचना मिली। हैबत खा नियाजी, ख्वास खा तथा अन्य सरदारो को 50 000 सेना के साथ गक्खर प्रदेश म छोडकर वह बगाल चला गया (मार्च 1541 ई०)।

बगाल म शान्ति स्थापित कर तथा वहा का शासन सगठित कर शेरशाह ने मालवा पर आक्रमण किया। इस समय मालवा म तीन स्वतन्त्र सरदार शासन करत थ। माडू, उज्जैन तथा सारगपुर म मल्लू खा रायसीन म पूरनमल तथा हिन्दीया तथा सवास म मुईन खा। शेरशाह क पहुचत ही हुमायू द्वारा नियुक्त मुहम्मद कासिम न ग्वालियर समर्पित कर दिया। गागरोन म रायसीन के राजा प्रतापशाह के शक्तिशाली सहायक पूरनमल न उसकी अधीनता स्वीकार की। कादिर शाह न भी शेरशाह की अधीनता स्वीकार की, किन्तु एक रात वह भागकर गुजरात चला गया। मुईन खा न भी अधीनता स्वीकार की। शेरशाह को कादिर के भागने का अनुभव था। उसन मुईन खा का बन्दी बना लिया तथा उसका राज्य अपने अधीन कर लिया।[1] पूरा मालवा बिना खून बहाये शेरशाह के अधिकार म गया। शासन प्रबन्ध करने के लिए वहा अपने अधिकारी नियुक्त कर शेरशाह न रणथम्भौर की ओर कूच किया। दुर्ग के प्रबन्धक उस्मान खा न बिना युद्ध के किला उसके सुपुर्द कर दिया। वहा अपने अधिकारी नियुक्त कर शेरशाह आगरा लौटा। इस तरफ शेरशाह ने बिलोचिस्तान से बगाल तथा मालवा म जितन समय म शान्ति स्थापित की तथा शत्रुओ को पराजित किया, उतने समय हुमायू सिन्ध म कठिन परिस्थितियो म घूमता रहा। इससे दोनो की शक्ति तथा योग्यता का मूल्याकन हो सकता है।

आगरा पहुचने के कुछ ही दिन बाद शेरशाह को हुमायू की जोधपुर यात्रा, की सूचना मिली। जसा ऊपर वर्णन किया जा चुका है, शेरशाह मुगलो को हिन्दुस्तान की भूमि से भगा देना चाहता था। वह मालदेव की शक्ति को जानता था। जोधपुर दिल्ली से अधिक दूर नही था। रणथम्भौर तथा मालवा को अधीन करने के पश्चात् आगरा की स्थिति सुरक्षा की दृष्टि से अच्छी हो गयी थी। फिर भी झज्जर[2] मालदेव के अधिकार म था। यह दिल्ली से केवल 30 मील की दूरी पर था।

---

1 शेरशाह क मालवा विजय के लिए देखिए—कानूनगो, शेरशाह, पृ० 249 62, आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, शेरशाह एण्ड हिज सक्सेसस, पृ० 42 43।

2 28^0 $35'$ अक्षाश तथा 78^0 $43'$ देशान्तर पर स्थित।

हुमायूं के आगमन की सूचना से शेरशाह का सशंकित होना स्वाभाविक था। व्यर्थ के कूटनीतिक पत्र-व्यवहार का अवसर नहीं था। शेरशाह प्रत्येक कार्य को तत्काल तथा व्यावहारिक ढंग से करने का अभ्यासी था। वह आगरा से नागौर की तरफ तत्काल रवाना हो गया। कुछ दूर आगे बढ़ने के पश्चात उसने अपना एक दूत मालदेव के पास भेजा। उसने मालदेव को सूचित किया कि या तो वह स्वयं हुमायूं को जोधपुर से भगा दे या यदि उसको कठिनाई हो तो वह अफगानों को ऐसा करने के लिए सुविधा दे। अर्थ स्पष्ट था, यदि हुमायूं ने जोधपुर में प्रवेश किया तो अफगान दूसरी तरफ से जोधपुर में प्रवेश कर मुगलों को वहां से निकाल देंगे। शेरशाह ने नागौर तथा उसके निकट के भागों पर जो जोधपुर के भाग थे, अधिकार कर ही लिया था। जोधपुर पहुंचने में उसे अधिक समय नहीं लगता। शेरशाह उस समय मालदेव से युद्ध करना नहीं चाहता था, इस कारण उसने लिखा कि यदि मालदेव हुमायूं को भगा देगा तो वह नागौर पर उसका अधिकार स्वीकार कर लेगा और अलवर तथा अन्य स्थान जो वह चाहेगा उसे देगा।[1]

हुमायूं की जोधपुर से वापसी,

जिस समय अतका खां मालदेव के दरबार में पहुंचा, उसी समय शेरशाह का दूत भी वहां पहुंचा। मालदेव के लिए बड़ी कठिन परिस्थिति थी। वह हुमायूं और शेरशाह दोनों से बचना चाहता था। किन्तु उसे अब अपने को या तो अफगानों का मित्र घोषित करना था या मुगलों का। मुगल पक्ष लेने का अर्थ था शेरशाह का जोधपुर पर आक्रमण। मालदेव युद्ध करने की परिस्थिति में नहीं था। उसकी सेना तैयार नहीं थी। मुगलों की अवस्था ऐसी नहीं थी कि वे अफगानों से मालदेव की रक्षा करते। मालदेव ने शेरशाह के दूत को दिखाने के लिए अपने कुछ सैनिकों को मुगलों के पड़ाव की दिशा में भेजा, जिससे अफगान दूत को यह विश्वास हो जाए कि मालदेव शेरशाह के पत्र के अनुसार कार्य करने को तैयार है, साथ ही मालदेव ने अतका खां को रोक लिया, जिससे वह भी देख ले कि सेना भेजी जा रही है, तथा हुमायूं को इसकी सूचना दे दे। अतका खां ने राजपूत सेना को जाते हुए देखा।[2] उसके मन में पहले से मालदेव पर संशय तो था ही, उसे विश्वास हो गया कि मालदेव का विचार मुगलों पर आक्रमण करने का है। बिना अनुमति

1 गुलबदन, हुमायूंनामा, बेवरिज पृ०, 154।

2 तबकात अकबरी, डे 2 पृ० 85। यदि मालदेव का विचार वास्तव में हुमायूं के ऊपर आक्रमण कर उसे बन्दी बनाना होता तो उसने अतका खां को बन्दी बना लिया होता या उससे छिपकर सेना भेजता।

लिये ही उसने वहा से भाग जाने का निश्चय किया। हुमायू का भूतपूव पुस्तकाध्यक्ष मुल्ला सुख उस समय मालदव की सेवा म था। उसने भी हुमायू को सूचित किया कि हुमायू आगे न बढे, जहा है वहा से फौरन वापस लौट जाए, मालदव उस (हुमायू को) ब दी बनाना चाहता है, मुगल उस पर बिलकुल विश्वास न कर। उसने अपन भूतपूव सम्राट को यह भी सूचित किया कि अफगान नता न मालदव क पास हुमायू को किसी भी तरह गिरफ्तार करने के लिए दूत भेजा है तथा उसके बदल म उसे अलवर और नागौर देने का वचन दिया है।[1] अतका खा मालदव के दरबार से बिना मालदेव की आज्ञा लिय ही लौट आया और उसन हुमायू को सूचित किया कि रुकन का समय नही है। मुगल पडाव म हलचल मच गयी। भागने की तयारी होन लगी।

मुगल पडाव उठाने की तैयारी कर रहे थे, उसी समय दो गुप्तचरो को ब दी बनाकर प्रस्तुत किया गया। अभी उनसे पूछताछ की जा रही थी कि उनम स एक न महमूद गिदबाज की कमर से तलवार खीच ली और सबस पहले उसी पर आक्रमण कर दिया। उसके बाद उसन बाकी ग्वालियरी को घायल कर दिया। दूसरे गुप्तचर न एक की कमर स कटार खीच ली तथा कुछ लोगो को घायल कर दिया और हुमायू क घोडे की भी हत्या कर दी। बडी कठिनता स इन दोनो की हत्या की जा सकी।[2] इसी समय शोर हुआ कि मालदेव आ गया। हलचल मच गयी। मुगल अमीर अपन स्वाथ म कितने लीन थे तथा हुमायू की अवस्था कितनी हीन हो गयी थी, यह गुलबदन के वणन स स्पष्ट हो जाता है। वह लिखती है कि इस हलचल म कोई ऐसा घोडा नही था जिस पर गभवती हमीदा बेगम भाग सकती। हुमायू ने तरदी बेग से घोडा देने को कहा किन्तु उसन इनकार कर दिया।

---

1 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 154।

2 वही। समकालीन इतिहासकारो म इस घटना के विषय मे भिन्नताए है। अबुल फजल (अकबरनामा, 1, पृ० 180) क अनुसार हीरे खरीदने के बहाने इन लोगो न मुगल पडाव मे प्रवेश किया। निजामुद्दीन (तबकाते अकबरी डे, पृ० 86) लिखता है कि दो गुप्तचर पकडे गय, अभी उनस पूछ ताछ हो ही रही थी कि उन्होने आक्रमण कर दिया। बदायूनी (मुन्तखबुत्त वारीख, पृ० 440) के अनुसार दो गुप्तचर पडाव के पास पकडे गये तथा उन लोगो को मृत्यु दण्ड दिया गया। उसी समय एक ने आक्रमण कर दिया। जौहर (स्टीवर्ट, पृ० 55 56) के अनुसार पथ प्रदशन के लिए दो ऊटवान पकडे गये। इनके ऊटो को राजसी ऊटो के साथ बाधने को कहा गया तथा हुमायू ने आज्ञा दी कि इनके हथियार छीनकर उन्ह ब दी बना दिया जाए। उसी समय उन लोगो ने आक्रमण किया।

हुमायू न अपना घाडा इसके लिए दन और स्वय जौहर के ऊट पर यात्रा करने का विचार व्यक्त किया। सौभाग्य से माहम अगा के पति नदीम वेग ने अपनी माता का घाडा वेगम को दिया और स्वय ऊट पर सवार हाकर रवाना हुआ।[1]

जोगी तालाव से चलकर हुमायू फलौदी पहुचा। राजपूत मुगलो का पीछा कर रहे थे। तरदी वेग और मुनीम खा को कुछ सनिका के साथ स्त्रिया की रक्षा के लिए नियुक्त कर हुमायू आग बढा। फलौदी से हुमायू सातलमेर पहुचा।[2] माग म राजपूता के दल स मुगला का युद्ध हुआ।[3] मुगल सना की सख्या कम थी फिर भी राजपूता न जमकर युद्ध नही किया। कदाचित् य मुगला स लडकर हुमायू को वन्दी नही बनाना चाहत थे। माग की कठिनाइया असहनीय थी। हवा गम थी। घाडे तथा चौपाये घुटने तक बालू म धस जात थे। अधिकाश स्त्रिया तथा पुरुप पैदल थे। सबस बडा कष्ट जल का था। तीन-तीन दिन उन्हे बिना जल क रहना पडा। पानी के लिए आपस मे लडाई हाती थी। डोल ज्योही कुए स बाहर निकाला जाता त्योही लोग उस पर टूट पडत थे, जिमस रस्सी टूट जाती थी। अनक व्यक्ति प्यास से मर गय और नष्ट हा गय।[4] इस तरह कठिनाइया का सहता हुआ हुमायू जसलमेर के निकट पहुचा (13 अगस्त 1542 ई०)।

जसलमर राज्य म गा हत्या वर्जित थी। हुमायू के आदमियो ने यहा कुछ गायो की हत्या कर दी यहा का शासक रावल लोनकरन इससे बहुत नाराज हुआ। उसने मुगल सम्राट क पास,अपना दूत भेजकर इसकी शिकायत की तथा स्पष्टीकरण मागा। मुगलो न इसके लिए क्षमा मागन क बजाय दूत को बन्दी बना लिया। रावल लोनकरन न अपने आदमियो द्वारा ऐसा प्रबन्ध किया कि मुगला को जल न प्राप्त हा सके। रावल के पुत्र मालदेव ने मुगला पर आक्रमण कर उनके कुछ

---

1 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ०154-55।

2 बनर्जी, हुमायू, 2, पृ० 69।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 181, गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 155-56, निजामुद्दीन के अनुसार शखअली वेग के नेतृत्व मे 22 मुगलो न सख्या मे अपने से एक बडी राजपूत सेना को पराजित किया। (तबकात अकबरी डे, 2, पृ० 84) बदायूनी (मुन्तखबुत्तवारीख, पृ० 440) का वणन भी निजामुद्दीन ही जसा है। जौहर के अनुसार भी मुगल सेना की सख्या कम थी (स्टीवट, पृ० 57)।

4 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज पृ०155 57।

के पत्र के कारण हुमायू तत्काल अमरकोट की ओर चल पडा।[1]

मारवाड की हस्तलिखित पुस्तको म इस घटना का वणन इस प्रकार है—

"शेरशाह से हारकर जब बादशाह हुमायू मालदेव जो स सहायता प्राप्त करन को जोधपुर के निकट आकर ठहरा, तब रावजी ने उसका बडा आदर-सत्कार किया। इसके बाद हुमायू न जोधपुर के निकट रहना अनुचित समझ फलौदी म अपना मुकाम करने की इच्छा प्रकट की। इस उन्होने भी सहष स्वीकार कर लिया। जब इसी के अनुसार वह देइसट स फलौदी को रवाना हुआ तब माग के ग्रामो म होन वाले उपद्रव को रोकने के लिए इ होने अपने सनिक भी उसके पीछे भेज दिये। परन्तु शाही लश्कर को इससे उलटा यह सन्देह हो गया कि शायद य लोग माग मे हमको मारकर शाही खजाना लूटन को ही साथ हुए हैं।

"इसके बाद एक दुघटना और हो गयी। जिस समय हुमायू फलौदी पहुचा उस समय उसके कुछ सैनिको न मिलकर एक गाय को मार डाला। इससे रावजी की सेना मे घोर असन्तोष फैल गया। यह देख हुमायू का स देह और भी बढ गया और वह फलौदी को छोड सि ध की तरफ चल पडा। परन्तु रावजी के सनिको ने समझा कि हि दुओ के धम का अपमान करने के लिए ही शाही सनिको ने यह गोवध किया है। इसस वे लोग उत्तेजित हो गय और उ होने जाते हुए बादशाह का पीछा किया। सातलमेर म पहुचते पहुचते दोनो पक्षो के बीच मुठभेड हो गयी। परन्तु थ त म अपने आदमियो की सख्या की अधिकता के कारण हुमायू बचकर निकल गया और जसलमेर होता हुआ अमरकोट जा पहुचा।"[2]

मुगल इतिहासकारो के वणनो से निम्नलिखित बातें प्रकट होती हैं—

1 मालदव ने हुमायू को आमन्त्रित किया।

2 निमन्त्रण के कई महीने बाद हुमायू जोधपुर पहुचा।

3 हुमायू के जोधपुर पहुचते ही शेरशाह ने मालदेव के राज्य मे पहुचकर उस चेतावनी दी कि वह उसे अपने राज्य स बाहर निकाल दे।

4 हुमायू के जोधपुर म प्रवेश करने पर प्रारम्भ म मालदेव ने आश्वासन दिया किन्तु वह हुमायू के सामने उपस्थित नही हुआ।

5 मुगल दूत अतका खा तथा शेरशाह का दूत एक साथ मालदेव के

---

1 तबकाते अकबरी डे, 2, प० 85 86।

2 रेऊ, मारवाड का इतिहास, 1, पृ० 127, वीर विनोद, 2, पृ० 809 मे कविराज श्यामलदास लिखते है कि बादशाह के साथियो ने गाय मारी जिससे मालदेव नाराज हुआ। उसकी नाराजगी की खबर पाकर हुमायू डरकर अमरकोट चला गया।

दरबार मे पहुच ।

6 मालदेव ने हुमायू के पीछे एक सेना भेजी जिसकी शक्ति तथा सख्या मुगलो से कही अधिक थी फिर भी कोई मुगल बदी नही बनाया गया, यद्यपि एक साधारण युद्ध हुआ ।

7 मालदेव न अपने जासूस हुमायू के खेमे म भेजकर उसकी स्थिति का पता लगाने का प्रयत्न किया ।

उपर्युक्त वणन तथा घटनाओ के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि जिस समय मालदेव ने हुमायू को निमन्त्रित किया था उस समय की अपेक्षा जब हुमायू आया तब परिस्थितिपूण रूप से बदल चुकी थी । शेरशाह बगाल से लौट आया था मालवा पर उसका अधिकार हो चुका था और वह जोधपुर के राज्य म प्रवेश कर अपनी सेना के साथ उस पर आक्रमण करने को तयार था । मालदेव की सेना भी कदाचित तैयार नही थी । मुगल सेना नाममात्र की थी । अफगान सेना का सामना करना असम्भव था । इस तरह हुमायू के आगमन के समय मारवाड की पूर्वी तथा दक्षिणी-पूर्वी सीमा पर राजनीतिक परिस्थिति ही बदल गयी थी । यदि मालदेव न बुद्धिमानी न दिखायी होती तो शेरशाह ने जोधपुर पर आक्रमण कर दिया होता और मुगल तो भाग ही जाते, मालदेव भी पददलित होता । हुमायू की सबसे बडी भूल यह थी कि जिस समय निमत्रण दिया गया, उस समय वह न आकर कई महीन बाद आया । इसम मालदेव का दोष नही था । मालदेव ने हुमायू के प्रति कठोरता नहा दिखायी । उसके व्यवहार से उसकी कठिनाई तथा असमजस स्पष्ट प्रकट होता है । यदि वह चाहता तो हुमायू को बन्दी बना सकता था, किन्तु वह ऐसा करना नही चाहता था । वह चाहता था कि किसी तरह हुमायू जोधपुर से चला जाए । यह मालदेव के पक्ष मे ही नही बल्कि हुमायू के पक्ष म भी ठीक था । ऐसा प्रतीत होता है कि मालदेव को हुमायू की शक्ति का अनुमान नही था । जिस तरह हुमायू न अपन दूत भेजे तथा मालदेव की वास्तविक नीयत का पता लगाना चाहा उसी तरह मालदेव ने भी अपने गुप्तचर भेजे । दुभाग्यवश य गुप्तचर पकडे गये जिससे मुगल सशकित हो गये । मारवाड के समकालीन इतिहासकारो के वणन से भी यह साबित होता है कि यह सब विषम परिस्थितियो तथा सन्देह का परिणाम था । मालदेव का इसमे कोई दोष नही था । अबुल फजल तथा निजामुद्दीन अहमद के वणन से यह स्पष्ट हो जाता है, वे भी पूण रूप से मालदेव को विश्वासघाती नहीं मानत । शेरशाह के प्रभाव का वे स्पष्ट उल्लेख करते है जिससे प्रमाणित होता है कि राज्य की सुरक्षा के लिए उसके सामने और कोई माग नही था । वास्तव मे उन कठिन परिस्थितियो म मालदेव हमारी सहानुभूति का पात्र है । उसने विश्वास-

धान का प्रश्न ही नही उठता।[1]

अमरकोट मे

हुमायू अमरकोट बडी बुरी अवस्था म पहुचा। उसके पास न धन था न कपडे। साथियो, सैनिका तथा सहयोगिया की सख्या भी कम थी। जो थे भी उन्ह कई महीनो स वेतन नही मिला था जिससे वे शोर मचाते रहते थे।[2] हुमायू ने तरदी वेग स बीस प्रतिशत ब्याज पर 80,000 अशर्फिया का ऋण लिया।[3] जौहर के अनुसार सब लोगा की तलासी ली गयी तथा जिसके पास जितना धन था। सब इकट्ठा किया गया। बाद मे प्रत्येक व्यक्ति का आधा धन वापस कर दिया गया और केवल आधा ही लिया गया।[4] प्राप्त धन सेवका तथा साथ के लोगा म वितरित कर दिया गया। केवल धन ही नही, लोगो से उनके आधे कपडे भी लिय गय, जिन्ह हुमायू ने अपने लिए रख लिया। इस तरह धन एकत्र कर हुमायू ने सेना को दिया जिससे उन लोगा न घोडे, हथियार तथा अन्य आवश्यक वस्तुयें खरीदी।

अमरकोट मे हुमायू लगभग दो महीने रहा (22 अगस्त से 11 अक्टूबर 1542 ई० के बीच) यहा राणा तथा मुगला ने मिलकर शाह हुसेन अरगून पर आक्रमण करने की तैयारी की। राणा भी शाह हुसने से प्रसन्न नही था। वह उसमे अपने पिता की मृत्यु का बदला लेना चाहता था। उसने दो हजार अपनी तथा पाच हजार अपने मित्रा की सनाए[5] हुमायू की सवा के लिए देन का वचन दिया। इससे हुमायू को बडी आशा हुई। अपने परिवारा को अमरकोट के दुग म रखकर ये लोग जून के[6] विरुद्ध रवाना हुए। (राजब 1, 949 हि०)।

---

1 कानूनगो, शेरशाह, पृ० 276, ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, प० 211, त्रिपाठी, राइज एण्ड फाल, प० 105।

2 जौहर, स्टीवट, पृ० 62, हुमायूनामा, बवरिज, प० 157।

3 गुलबदन, हुमायूनामा, वेवरिज, पृ० 157।

4 जौहर, स्टीवट, प० 63 64।

5 वही, पृ० 62। गुलबदन वेगम (हुमायूनामा, वेवरिज, प० 157) दो-तीन हजार अच्छी सेना लिखती है।

6 अबुल फजल के अनुसार जून जाजकान सरकार का एक महाल था तथा इसका लगान 31,65,418 दाम था। (आईने अकबरी 2, पृ० 341)

राणा तथा मुगल सेना 15 कोस पर पड़ाव डाले हुए थी। उसी समय तरदी बेग ने हुमायू को हमीदा बानो के पुत्र जन्म की सूचना दी। हुमायू की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उस मरुभूमि में जश्न मनाने तथा नियमानुसार अमीरों और अन्य लोगों को इनाम देने के लिए धन नहीं था। हुमायू ने ईश्वर को धन्यवाद दिया। वितरित करने के लिए वस्तुओं के अभाव में उसने जौहर से कस्तूरी मंगाकर, उसे तोड़कर अमीरों में बांटते हुए कहा कि उसके पास पुत्र के जन्म के अवसर पर यही वितरित करने को है। "भगवान इस पुत्र का नाम और यश इस कस्तूरी की सुगन्ध की तरह फैलाये।"[1] इस तरह विश्व के महान सम्राट अकबर का जन्मोत्सव मनाया गया। तरदी बेग को इस शुभ सूचना देने का उपहार स्वरूप उसके पुराने अपराधों को क्षमा कर दिया गया।[2]

अकबर की जन्म-तिथि

अकबर की जन्म तिथि के विषय में समकालीन तथा आधुनिक इतिहासकारों में मतभेद है। अबुल फजल के अनुसार अकबर का जन्म रविवार, 5 रजब 949 हि० अर्थात् 15 अक्टूबर 1542 ई० को हुआ। इस तिथि को अन्य समकालीन इतिहासकारों ने भी स्वीकार किया।[3] इसके विपरीत जौहर लिखता है कि अकबर

यह बहुत ही उपजाऊ महाल था। सम्भवतः यह थट्टा तथा सहवान के मध्य में सिंध के पूर्वी तट पर था। हेग के अनुसार सिंध डेल्टा प्रदेश में अमरकोट से 75 मील दक्षिण पश्चिम तथा थट्टा से 50 मील उत्तर पूर्व में रन के बायें तट पर (मेजर जनरल एम० आर० हेग, दि इण्डस डेल्टा कन्ट्री, पृ०92 93)। जून का नगर उस समय सिंध के प्रसिद्ध नगरों में से था। आज यहां केवल उसके भग्नावशेष हैं जो आधुनिक टाडो गुलाम हैदर के दक्षिण पूर्व में दो मील पर है। 1658 ई० में राजकुमार दारा शिकोह कुछ समय के लिए भागता हुआ यहीं ठहरा था और यहीं उसकी पत्नी नादिरा बेगम की मृत्यु हुई थी।

1 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 66।

2 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ०158।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 183, तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 89 90, मुन्तखबुत्तवारीख (पृ० 441 42) तथा फिरिश्ता (ब्रिग्स, 2, पृ० 95) के अनुसार अकबर का जन्म रविवार रात्रि में 5 रजब, 949 को हुआ था। गुलबदन बेगम (हुमायूनामा, बेवरिज पृ०157) के अनुसार अकबर रविवार के प्रातः चौथी रजब को पैदा हुआ था।

का जन्म शनिवार 14 शाबान, 949 हि० को हुआ था।[1] कुछ विद्वानों ने[2] जौहर की तिथि को ही सही माना है। इनमें डॉ० विंसेंट स्मिथ प्रमुख हैं। वे लिखते हैं कि अबुल फजल ने जान-बूझकर अकबर की जन्म तिथि बदल दी। इन विद्वानों का मत है कि जन्म के समय जौहर उपस्थित था, इस कारण उसके द्वारा लिखी गयी तिथि अधिक विश्वसनीय है। जौहर के गलत तिथि लिखने का कोई कारण नहीं हो सकता है। अकबर की असली जन्म तिथि बाद में उसे जादू-टोने से बचाने के लिए बदल दी गयी, क्योंकि मुगलों को यह भय था कि यदि अकबर की सही जन्म तिथि का पता लग जाएगा तो जादू-टोने से उसकी हानि की जा सकती है। पाँचवीं रजब का दिन यह जानकर चुना गया क्योंकि इसी दिन पैगम्बर मुहम्मद साहब गर्भ में आये थे। रविवार को चुनने का कारण ईरानियों में इसकी महत्ता का होना बताया जाता है।

इन विद्वानों के मत का खण्डन आधुनिक इतिहासकारों ने किया है।[3] अब यह सर्वसम्मति से स्वीकृत है कि अबुल फजल द्वारा दी गई तिथि सही है। जौहर के संस्मरण अबुल फजल के अकबरनामा के लिए लिखे गये थे। यदि अबुल फजल ने जानबूझकर तिथि बदली तो वह आसानी से जौहर की तिथि ही बदल देता।[4] इसके अतिरिक्त अपना संस्मरण लिखने के समय जौहर के पास कोई लिखित नोट नहीं थे। इस तरह उसे अपनी स्मृति पर ही निर्भर होना पड़ा। वह अधिक पढ़ा लिखा नहीं था और संस्मरण लिखते समय बूढ़ा भी हो गया था। अतएव उसकी तिथि पर अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता है। इसी कारण उसकी तिथि और दिन में भी अंतर है। 14 शाबान शनिवार नहीं

---

1 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 65।

2 जाफर शरीफ, इस्लाम इन इंडिया, कविराज श्यामलदास, बर्थ डेट आफ अकबर, जरनल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, 1886, पृ० 80 88, विंसेंट स्मिथ, बर्थ आफ अकबर, इण्डियन एन्टीक्वेरी, 1915 पृ० 238।

3 बनर्जी, दी बर्थ आफ अकबर, प्रोसीडिंग्स ऑफ दि इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस कलकत्ता, 1939, पृ०1002 12, बनर्जी, हुमायूं 2 पृ०75 86। डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, दि डेट आफ अकबर्स बर्थ, हिस्ट्री एण्ड पोलिटिकल साइन्स जनरल, आगरा कालेज, आगरा, जिल्द 2, नम्बर पृ० 12 13। इस पुस्तक के लेखक का लेख—सम्राट अकबर की जन्म तिथि, सरस्वती, इलाहाबाद, अप्रल 1946 ई०।

4 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 90 91, नोट 1।

था वल्कि वृहस्पतिवार का दिन था। अपने पूरे संस्मरण में जौहर ने केवल पांच तिथियों का उल्लेख किया है और उनमें से तीन तिथियां गलत साबित हो चुकी हैं। गुलबदन बेगम ने अपने संस्मरण में वही तिथि दी है जिसे अबुल फजल ने स्वीकार किया था। गुलबदन बेगम स्त्री थी तथा अकबर की माता हमीदा बानो से उसकी घनिष्टता थी। तिथि लिखने के पूर्व उसने निश्चय ही उससे पूछा होगा। मां होने के नाते हमीदा बानो को निश्चय ही अकबर की तिथि याद होगी। इस तरह सही तिथि को जानने के लिए वह अच्छी परिस्थिति में थी। अबुल फजल ने जौहर, गुलबदन बेगम इत्यादि की तिथियों का अध्ययन करने के पश्चात अकबर की जन्म तिथि का उल्लेख किया है। तिथियों के उल्लेख की दृष्टि से अबुल फजल बहुत ही विश्वसनीय इतिहासकार है। यदि यह मान भी लिया जाए कि अकबर की जन्म तिथि अंधविश्वास के कारण बदली गयी तो और किसी मुगल राजकुमार की तिथि क्या नहीं बदली गयी? इसके अतिरिक्त जो दान पुण्य उस जन्म तिथि के दिन होते थे वे कदाचित सभी व्यर्थ जाते। यदि मुगल इतने अंधविश्वासी थे तो क्यों वे इस तरह की भूल करते कि उन्हें कोई पुण्य भी न प्राप्त हो? फिर यदि अबुल फजल ने तिथि बदली तो अकबरनामा की रचना के समय अकबर बालक नहीं रह गया था वरन प्रौढ़ता को प्राप्त हो चुका था, उस समय टोने का भय भी उतना नहीं रह गया था। इन सब बातों से यह स्पष्ट है कि अकबर का जन्म 15 अक्टूबर 1542 ई० को हुआ था तथा अबुल फजल द्वारा दी गयी तिथि सही है।

जून में

पुनर्जन्म के आनन्दोत्सव के लिए न समय था न सुविधा। हुमायूं अपनी सेना के साथ पांच दिन चलकर जून नगर के निकट पहुंचा। यहां अरगून गवर्नर जानी बेग अपनी सेना के साथ मुगलों का विरोध करने के लिए तैयार था। हुमायूं ने शत्रु पर आक्रमण कर उसे पीछे हटा दिया। यहां से हुमायूं ने जून नगर में प्रवेश किया तथा बागेआईना में ठहरा। यहां उसने जीते हुए ग्रामों को अपने अमीरों में वितरित किया। कुछ दिन बाद अमरकोट से स्त्रियों को भी बुला लिया गया। हमीदा बानो तथा अकबर दिसम्बर 1542 ई० को जून पहुंचे।[1]

काबुल तथा बदख्शां की स्थिति

कामरान मिर्जा के 1541 ई० में हुमायूं का साथ छोड़ने का वर्णन हम ऊपर

1 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 67, गुलबदन, हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ० 158, अकबरनामा, 1, पृ० 184-85।

कर आये हैं। कामरान सिंध नदी पार कर काबुल तथा कंधार चला गया।

अपनी शक्ति सुदृढ़ करने के लिए कामरान बदख्शां पर भी अपनी शक्ति स्थापित करना चाहता था। उसने मिर्जा सुलेमान को अपने नाम से खुत्बा पढ़वाने के लिए लिखा। मिर्जा सुलेमान के अस्वीकार करने पर बदख्शां पर आक्रमण कर दिया। युद्ध हुआ। सामना करना असम्भव जानकर मिर्जा सुलेमान ने समर्पण कर दिया तथा कामरान के नाम से खुत्बा पढ़कर और सिक्का चलाने का वचन देकर उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। सुलेमान के कुछ प्रदेश लेकर अपने आदमियों में वितरित कर कामरान काबुल वापस गया।[1]

यह स्थिति अधिक दिन तक न चली। कामरान की असावधानी से लाभ उठाकर सुलेमान मिर्जा ने बदख्शां के उन भागों पर, जिन्हें कामरान ने छीन लिया था, पुनः अधिकार कर लिया। कामरान ने दूसरी बार उस पर चढ़ाई की। सुलेमान ने अपने को किलए जफर में बन्द कर लिया। खाद्य सामग्री की कमी होने लगी। उसके अधिकांश अमीरों ने कामरान की अधीनता स्वीकार कर ली। सुलेमान को विवश होकर समर्पण करना पड़ा। कामरान ने शासन प्रबन्ध के लिए वहां अपने आदमी नियुक्त किये तथा सुलेमान मिर्जा और उसके पुत्र इब्राहीम को बन्दीगृह में डाल दिया (8 अक्टूबर 1541ई०, 17 जमादि उस्सानी, 948 हि०)।[2]

कामरान ने कराचा बेग को कंधार में नियुक्त किया था। कराचा बेग हिन्दाल का मित्र था। सिंध से हुमायूं का छोड़कर कराचा बेग के निमन्त्रण पर हिन्दाल कंधार चला गया तथा अपने मित्र की सहायता से उसने कंधार पर अधिकार कर लिया।[3] कामरान हिन्दाल के लाहौर के व्यवहार से अप्रसन्न था ही, इस समाचार ने उसे और भी क्रोधित कर दिया। शक्तिशाली सेना के साथ उसने कंधार पर आक्रमण किया। इसी बीच यादगार नासिर मिर्जा भी सिंध से निराश होकर कंधार पहुंचा। हुमायूं के जोधपुर चले जाने के पश्चात यादगार नासिर को आशा थी कि शाह हुसन से उसका सम्बन्ध और भी निकटतम हो जाएगा किन्तु उसे निराशा हुई। दो महीने में ही स्पष्ट हो गया कि सिंध के शासक से उसे कोई सहायता नहीं मिलेगी। हुमायूं के पास जाने में उसे शर्म का अनुभव हुआ। अन्य मार्ग न देखकर वह कंधार पहुंचा। उसके वहां पहुंचने के समय कामरान कंधार घेरे हुए था कुछ ही दिनों में हिन्दाल ने दुर्ग समर्पित कर दिया। कामरान हिन्दाल

1 अकबरनामा, 1, पृ० 200।

2 वही पृ० 200 201।

3 गुलबदन, हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ० 160। अकबरनामा, 1, पृ० 201।

को ब दी बनाकर यादगार नासिर के साथ काबुल लौट आया। अस्करी अब तक गजनी का गवनर था। क धार के दुग तथा नगर म कामरान न अस्करी को नियुक्त किया। प्रारम्भ मे कामरान ने हि दाल के साथ कठोर व्यवहार किया किन्तु बाद मे उसे स्वत त्र कर दिया गया तथा उसे जूये शाही[1] की जागीर दी गयी।

सिन्ध मे अन्तिम दिन

यादगार नासिर के सि ध से निकल जाने से शाह हुसेन को सास लने का अवसर मिला। मुगलो के सिन्ध से निकल जान के पश्चात् उसने अपन दुर्गों की मरम्मत करायी तथा रक्षा का अन्य प्रब ध किया। इसी समय उसे हुमायू के पुन वापस आने, जानी बेग की पराजय तथा हुमायू क जून निवास की सूचना मिली। मुगलो का सामना करने के लिए नयी शक्ति से वह थटटा आया और वहा से आगे बढकर उसने जून स आठ मील की दूरी पर पडाव डाला।[2]

जून म हुमायू न निकट के शासको स सहयोग प्राप्त का करने का प्रयत्न किया। उसकी अपील पर 'सूदा' एव 'समीचा' तथा 'कच्छ' एव 'जाम' के जमीदार पन्द्रह सालह हजार अश्वारोहियो क साथ उसकी सेवा म आ गये।[3] इसम हुमायू को बडी आशा हुई।

जून म हुमायू को कठिन परिस्थितियो का सामना करना पडा। सुल्तान महमूद भक्कारी के नेतत्व म सि धी बारबार मुगलो पर आक्रमण कर रहे थ। इन्ही आक्रमणो म एक दिन शेख अली बेग की मत्यु हो गयी।[4] इसस हुमायू को बडा दु ख हुआ, क्योकि वह उस समय उसका प्रमुख सहायक था। शाह हुसन अरगून ने हुमायू के सहायको तथा अमीरो को अपन पक्ष म करने का प्रयत्न किया और उसन

---

1 अकबरनामा, 1, प० 200। जूये शाही, आधुनिक जलालाबाद है। बदायूनी के अनुसार उस गजनी दिया गया (मुन्तखबुत्तवारीख, पृ०442), गुलबदन के अनुसार कामरान न गजनी दन की प्रतिज्ञा की थी किन्तु बाद म लमगानात एव तनगीहार उस दिये गय। (गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, प० 162)

2 तारीखे मासूमी, पृ० 178 79, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 68।

3 जौहर, स्टीवर्ट, 67 68, गुलबदन (हुमायूनामा, बेवरिज, पृ०158) क अनुसार उनके आन से सेना की सख्या 10,000 तक पहुची।

4 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, प० 159, तबकात अकबरी, डे, 2, प० 92 93, अकबरनामा, 1, पृ० 185।

कुछ लोगो को अपने पक्ष म कर भी लिया। इनम बाबर के प्रधान मन्त्री निजामुद्दीन खलीफा का पुत्र खालिद बेग प्रमुख था।

बैराम खा का आगमन

कन्नौज की पराजय के पश्चात बैराम खा हुमायू स अलग हो गया था। अफगानो क उत्तरी भारत पर अधिकार करन के पश्चात बैराम खा ने सम्भल म मिया अब्दुल वहाब तथा लखनोर के राजा मित्र सेन के यहा शरण ली। उस भाग के प्रमुख अफगान नसीर खा के प्रभाव से राजा मित्र सेन न बैराम खा को उसे समर्पित कर दिया। नसीर खा न उसे ईसा खा को समर्पित कर दिया। ईसा खा बैराम खा की योग्यता स परिचित था। उसन उसका शेरशाह स परिचय कराया। शेरशाह न उठकर उसका स्वागत किया तथा उसे गले लगा लिया और उसे उच्च स्थान प्रदान किया। बैराम खा फिर भी हुमायू के प्रति स्वामिभक्त रहा तथा अवसर पाकर एक दिन वह ग्वालियर के भूतपूर्व गवनर अबुल कासिम के साथ बुरहानपुर से भाग खडा हुआ। पीछा करन वाले अफगानो द्वारा दोनो पकडे गय। शेरशाह की आज्ञा थी कि बैराम खा को मार डाला जाए और अबुल कासिम को भागने दिया जाए। पीछा करन वाल अफगान बैराम खा को नही पहचानते थ। पकडे जान पर दोनो न ही अपन को बैराम खा कहा। दोनो बन्दियो म अबुल कासिम अधिक सुन्दर था उसे ही बैराम खा समझकर अफगान उसे बन्दी बना कर शेरशाह के सामने ले गये। इस तरह बैराम खा को भागने का अवसर मिला। शेरशाह अबुल कासिम से बहुत नाराज हुआ और उसने उसे मरवा डाला। बैराम खा यहा से भागकर गुजरात पहुचा और वहा से वह सिन्ध म हुमायू से मिला।[1] उसके आगमन से इस कठिन परिस्थिति म, जब सभी भाग रहे थे, हुमायू बडा प्रसन्न हुआ। उसका स्वागत करते हुए उसन कहा, "हमारे दु ख का साथी आ गया।"[2]

---

1 बैराम के सक्षिप्त प्रारम्भिक जीवन तथा इस घटना के लिए देखिए, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 69, बनर्जी, हुमायू, 2 पृ० 90 91 पृ० 90 का चौथा नोट, इलियट तथा डासन 5, पृ० 215, नोट, अकबरनामा, 1, पृ० 185 86।

2 'शरीके दर्दे मा आमद।'

शाह हुसेन स अन्तिम सघर्ष

शाह हुसन ने राणा बीरसाल को हुमायू से अलग करने का प्रयत्न किया। शाह हुसेन द्वारा भेजी गयी खिलअत और कटार राणा ने हुमायू को भिजवा दी[1] तथा किसी भी प्रलोभन पर वह मुगल सम्राट को छोडन को तैयार नही हुआ। दुर्भाग्यवश, कुछ समय बाद तरदी बेग तथा ख्वाजा गाजी[2] से किसी बात पर वाद विवाद होने के कारण बीर साल नाराज हो गया तथा यह कहकर चला गया कि "मुगलो की सहायता करना समय तथा शक्ति का दुरुपयोग है।" बीर साल के जान के पश्चात् सदा, समीचा तथा अन्य जातियो के लोग भी चल गय।[3] इनके जाने से भगदड मच गयी। अन्य लोग भी, जिन्हे हुमायू मे पूण आस्था नही थी, जाने लगे। इस तरह हुमायू के बहुत स सहयोगी उसे छोडकर चले गय। उनके चले जान स शाह हुसन को अवसर मिला तथा वह मुगल सेना पर अचानक आक्रमण करने की तैयारी करने लगा। जौहर लिखता है कि मुनीम खा मुगल पडाव का परित्याग कर शाह हुसन से जा मिला। उसन उस सूचित किया कि हुमायू का पडाव मदान म है जहा रक्षा तथा शरण का कोई प्रबन्ध नही है। सौभाग्य से हुमायू को भी मुनीम खा की इस बात का पता चल गया। यह समाचार पात ही हुमायू न फौरन खाइया खोदन की आज्ञा दी और डडा लेकर खाइया खादन के लिए उसन स्वय विभिन्न स्थानो पर लोगो को नियुक्त किया। तीन दिन म रक्षात्मक खाई बनकर तयार हो गयी। जब शाह हुसन आया तो खाइयो से रक्षित मुगल पडाव देखकर मुनीम खा पर नाराज हुआ।[4]

शाह हुसेन निराश नही हुआ उसने नाकेबन्दी कर मुगल पडाव म पहुचने वाली आवश्यक वस्तुओ को रोक दिया। हुमायू की अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी। उसके पास शत्रु पर आक्रमण करने के लिए न तोपे थी न इतने आदमी ही कि शत्रु का सामना किया जा सके। चारो तरफ स खाइयो द्वारा घिरा हुमायू

---

1 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 68 के अनुसार एक कुत्ते को वह खिलअत पहनाकर तथा कटार बाधकर शाह हुसेन के पास भेजा गया जिससे शाह हुसेन बडा शर्मिन्दा हुआ।

2 गुलबदन ने (बेवरिज, प० 158) इसका नाम तारदी मुहम्मद खा तथा जौहर न (स्टीवर्ट, पृ० 69) ख्वाजा गाजी लिखा है।

3 जौहर, स्टीवर्ट पृ० 69, हुमायूनामा, बेवरिज, प० 169।

4 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 69।

यह व्यक्ति एक समय हुमायू की सेना म था। उसी रात्रि म जाकर बराम खा को अस्करी के विचारो की सूचना दे दी। यह सूचना पाकर प्रारम्भ मे तो हुमायू चिन्तित नही हुआ क्योकि अब भी उसे उन पर पूण अविश्वास नही था। वह अपने भाइयो से लडने को तैयार नही था, किन्तु पुन परिस्थिति समझकर वह भयभीत हुआ। वह समझ गया कि यदि बचना है तो तत्काल काय करना होगा। उसने निश्चय किया कि वह ईरान होता हुआ मक्का चला जाएगा। अस्करी के कोई पुत्र नही था और उसे आशा थी कि अस्करी तथा उसकी स्त्री अकबर की देखभाल करेंगे। इस तरह बालक अकबर को दो धायो के साथ वही छोडकर, हमीदा बानो बेगम तथा कुछ साथियो के साथ हुमायू वहा से ईरान की ओर अग्रसर हुआ।[1]

हुमायू के रवाना होने के कुछ ही देर बाद वहा अस्करी पहुचा। उसे हुमायू के भाग जाने से निराशा हुई। यह सूचना पाकर कि अकबर खेमे म छोड दिया गया है उसने उस पर अधिकार कर लिया। उसने अकबर तथा अय लोगो के साथ सदव्यवहार किया।[2] अकबर उसकी दो धायो, जीजी अनगा तथा माहम अनगा और हुमायू द्वारा छोडी गयी वस्तुओ को लेकर वह कधार लौट गया (15 दिसम्बर 1543 ई०)। उसने अपने महल के पास अकबर के रहने का प्रबध किया और उसकी देख रेख अपनी स्त्री सुल्तान बेगम को सुपुद कर दी। सुल्तान बेगम ने अकबर के साथ बहुत ही प्रेम और सहृदयता का व्यवहार किया। अस्करी ने इस तरफ कोई विशेष ध्यान नही दिया। केवल दो बार अकबर से उसके सम्बध का ज्ञान हमे प्राप्त है। धायो के कहने से अकबर को बुरी नजर से बचाने के लिए

पृ० 190, जय बहादुर या जी बहादुर ऊजबक लिखता है। इलियट तथा डासन, 5, पृ० 215, मे उसका नाम हवाली या जवानी लिखा है। इसके विवचन के लिए देखिए, होदीवाला, स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री, 1, पृ० 510।

1 घोडो की कमी थी। हुमायू ने तरदी बग से घोडा मांगा, उसने इनकार कर दिया। कोई माग न देखकर हमीदा तथा हुमायू एक ही घोडे पर चढकर आगे बढे। जौहर, स्टीवट, 76, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 95, अकबरनामा, 1, पृ० 191।

2 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 165 66, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 95, अकबरनामा, 1 पृ० 193, जौहर, स्टीवट पृ० 77 के अनुसार जब अकबर उसे समर्पित किया गया तो उसने उसे गोद म उठा लिया तथा उसे हृदय से लगा लिया।

उसने एक बार अपने साफे से उसे मारा तथा दूसरी बार हसन अब्दाल की दरगाह पर उसने अक्बर को मुडन के लिए ले जाने की आज्ञा दी।[1]

हुमायू मुस्तग से सीस्तान की तरफ रवाना हुआ। उसके साथियो की सख्या तीस से अधिक नही थी जिसमे केवल दो स्त्रिया[2]—हमीदा बानो और हसन अली ईशक आगा की बिलोच पत्नी थी। मुस्तग से हुमायू गरमसीर पहुचा। मार्ग मे ठड से उसे बहुत कष्ट उठाना पडा। अस्करी के पीछे आने का भय लगा हुआ था। एक बार उन्हे रात भर बरफ मे रहना पडा। असहनीय ठड थी। पास मे न इधन था न भोजन। भूख से सभी व्याकुल थे। अत मे एक घोडा मारा गया। उबालने के लिए बर्तन के अभाव मे ढाल तथा शिरस्त्राण मे मास पकाकर खाना पडा।[3] बिलोच प्रदेश मे कुछ लोग उन्हे बन्दी बनाकर अस्करी को समर्पित करना चाहते थे। उस समय अली ईशक आगा की बिलोच बीवी ने उनकी भाषा मे बात करके हुमायू की सहायता की। कामरान ने बिलोच सरदार मलिक हाती को एक फरमान द्वारा हुमायू को बन्दी बनाकर उसके पास भेजने के लिए लिखा था तथा इसके लिए उसने बहुत पारितोषिक देने का वादा किया था। हुमायू से मिलकर सरदार के विचार बदल गये। उसने हुमायू के साथ उदारता का व्यवहार किया। वह हुमायू को अपने खेमे मे लाया तथा उसके लिए आवश्यक वस्तुए प्रदान की।[4] यहा से जब हुमायू रवाना हुआ तो बिलोच सरदार ने उसे गरमसीर पहुचा दिया। यहा का प्रमुख अधिकारी मीर अब्दुल हई अस्करी द्वारा नियुक्त हुआ था। अपने स्वामी के भय से वह स्वय तो उपस्थित नही हुआ किन्तु हुमायू के लिए उसने कुछ आवश्यक वस्तुए भेज दी। अस्करी का मालगुजारी वसूल करने का अधिकारी, ख्वाजा

1 अकबरनामा, 1, पृ० 194 95। तुर्की मे यह प्रथा थी कि जब पुत्र अपने पाव चलने लगता तो पिता या पिता का बडा भाई या जो कोई उसके स्थान पर होता, पगडी सिर पर से उतारकर बालक के चलते समय उसे मारता था और बालक गिर पडता था।

2 तबकाते अकबरी, डे 2, पृ० 95 के अनुसार उसके साथ केवल 22 आदमी थे। फिरिश्ता तथा बदायूनी इसका समर्थन करते है। गुलबदन (बेवरिज, पृ० 166) तीस आदमी तथा दो स्त्रिया लिखती है। जौहर (स्टीवर्ट, पृ० 76) चालीस पुरुष तथा दो स्त्रिया लिखता है।

3 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ 166 67।

4 वही, पृ० 167, अकबरनामा 1, पृ० 202।

जलालुद्दीन महमूद,[1] बाबा हाजी के दुग मे लगान वसूली के लिए आया हुआ था। हुमायू के बुलाने पर वह उपस्थित हुआ। उसने अपनी सेवा तथा धन हुमायू को अर्पित किया। आपत्ति काल मे यह बहुत बडी सहायता थी। हुमायू ने प्राप्त वस्तुए अपने सहायको मे वितरित की तथा ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को 'बादशाह की व्यक्तिगत सम्पत्ति का अधीक्षक' नियुक्त किया।[2]

कठिनाइयो मे हुमायू ने पुन ससार से विरक्त होने का विचार किया किन्तु अपने आपत्तिकाल के साथियो के समझाने से उसने यह विचार स्थगित कर दिया। भाइयो से सहायता की कोई आशा नही थी इसके विपरीत कामरान के प्रदेश मे अधिक दिन रहने से सघर्ष का भय था। केवल एक माग था—ईरान के शाह से सहायता प्राप्त करना। हुमायू ने ईरान के शाह तहमास्प को एक निष्ठायुक्त पत्र लिखा (28 दिसम्बर 1543 ई०)। पत्र में उसने ईरान मे प्रवेश करने तथा शाह से मुलाकात करने की प्रार्थना की थी। इस पत्र को जय बहादुर द्वारा भेजा गया।

उत्तर प्राप्त होने तक हुमायू का विचार गरमसीर मे रुकने का था। इसी समय सूचना मिली कि अस्करी उसका पीछा करता हुआ आ रहा है। रुकने तथा सोचने का समय नही था। हुमायू ने बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये हेलमन्द नदी पार की तथा ईरान के सीस्तान प्रान्त मे प्रवेश किया।[3]

1 आईने अकबरी 1, पृ० 384। बाद मे यह व्यक्ति अकबर का दीवान हुआ तथा इसे ढाई हजार का मनसबदार नियुक्त कर गजनी भेजा गया। बाद मे मुनीम खा के अकबर के राज्य के तीसरे वर्ष इनकी हत्या करा दी। मआसिरुल उमरा, भाग 1 पृ० 615-18।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 202।

3 वही, पृ० 204।

9 ईरान-यात्रा तथा भाइयो से सघर्ष

हुमाय ने ईरान के सीस्तान प्रान्त म कठिन परिस्थिति म प्रवेश किया । तब तक शाह न उसके प्राथना पत्र का उत्तर भी नही दिया था ।[1] औपचारिक दृष्टि से हुमायू को शाह की आज्ञा के लिए प्रतीक्षा करनी चाहिए थी, पर इसके लिए समय नही था । सीस्तान के गवनर अहमद सुल्तान शामलू का कदाचित हुमाय के प्राथना पत्र का ज्ञान था । उसन निष्कासित मुगल सम्राट का उचित स्वागत करन का प्रबन्ध किया । हुमायू के सीस्तान प्रान्त मे प्रवेश करत ही शामलू ने अपने एक प्रमुख व्यक्ति को हुमाय का स्वागत करने के लिए भेजा । नगर से तीन चार मील पर पहुँचने पर अपने प्रमुख अमीरो के साथ उसने सम्राट का स्वागत किया । नगर मे गवनर ने अपना निवास स्थान हुमायू को रहने के लिए दिया तथा अपनी स्त्रिया, माता तथा अन्य स्त्रिया को हमीदा बानो का स्वागत करने के लिए भेजा । हुमायू को उपहार भी दिय गय । अहमद सुल्तान शामलू के भाई हुसेन कुली मिर्जा ने हुमायू को कुछ पुस्तके भेट की तथा दोना म शिआ सुन्नी सिद्धान्तो पर वार्तालाप हुआ जिसमे हुमायू को बडी प्रसन्नता हुई । राजसी स्वागत के अतिरिक्त बहुत दिना के बाद हुमायू को आराम प्राप्त हुआ ।[2]

हुमायू का स्वागत करने के पश्चात ही अहमद सुल्तान शामलू ने शाह के पुत्र तथा हिरात के गवनर सुल्तान मुहम्मद मिर्जा को हुमायू के आगमन की सूचना भेज दी और शाह से हुमायू को हिरात के माग से दरबार मे भेजने की आज्ञा मागी ।[3]

---

1 जौहर क अनुसार हुमाय ने ईरान के शाह के पास सीस्तान से पत्र लिखा (स्टीवट, पृ० 80), अबुल फजल (अकबरनामा, 1, पृ० 203) के अनुसार उसने गरमसीर स पत्र लिखा । जौहर तथा अबुल फजल के द्वारा दी गयी पत्र की विषयवस्तु एक ही है । सम्भव है हुमायू ने सीस्तान प्रवेश करने पर दूसरा पत्र भी लिखा हो । किन्तु दूसरे पत्र की प्रतिलिपि हमें प्राप्त नहीं है । र, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 7 8 ।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 204, जौहर, स्टवट, पृ० 79 । बायजीद, ब्यात तजकिरये हुमायू व अकबर, पृ० 8, तबकात अकबरी, डे, 2 पृ० 96 ।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 205 ।

इसी समय दो मुगल अमीर, हाजी मुहम्मद तथा हसन काका, अस्करी को छोडकर हुमाय से आ मिले। इन लोगो न हुमायू को परामश दिया कि वह पुन लौटकर कधार पर अधिकार करे। इन लोगो न वहा के कुछ अमीरो से सहायता मिलने की भी आशा दिलायी, किन्तु हुमायू न इनकी बात स्वीकार नही की तथा बैराम खा के इस मत का समयन किया कि ईरान के शाह से मुलाकात करने के पश्चात् कायक्रम निश्चित करना चाहिए।[1]

हुमायू का पत्र तथा यह सूचना पाकर कि शरणार्थी सम्राट ने सीस्तान म प्रवेश किया है शाह तहमास्प बहुत प्रसन्न हुआ। तीन दिन तक कजवीन म इस खुशी म नक्कारे बजते रहे। शाह न हुमायू के दूत को विदा कर दिया और गवनरो तथा अफसरो को सूचना भिजवा दी कि हुमायू का राजसी स्वागत होना चाहिए और उसकी आवश्यकता की सभी वस्तुए उसके लिए उपलब्ध होनी चाहिए।[2] आज्ञापत्र से स्पष्ट है कि हुमायू का शानदार स्वागत किया गया।

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 204।

2 खुरासान के हाकिम क नाम जो पत्र भेजा गया उससे अन्य पत्रा का अनुमान लगाया जा सकता है। शाह के इस पत्र के लिए देखिए अकबरनामा 1 पृ० 206-13। शाह के पत्र मे हुमायू के स्वागत के लिए प्रत्येक बात का बहुत रूप म उल्लेख है। कितने व्यक्ति उसका स्वागत करे, क्या भोजन दिया जाए शरबत किस चीज का हो, इत्यादि का भी ब्यौरा है। पत्र मे कहा गया है कि शाही भोजन के 1200 थाल प्रति दिन बादशाह के दरबार म पश किये जाए। जब हुमायू पडाव करे तो गुलाब का शरबत एव स्वादिष्ट नीबू का रस तयार रखा जाए और उसे बरफ के साथ दिया जाए। शरबत के बाद मशहद के मुश्की सेब, तरबूज एव अगूर इत्यादि सफेद रोटी के साथ दिये जाय। सफेद रोटी घी तथा दूध म सानकर बनायी गयी हो जिसमे पोस्ता तथा राजियाना (एक तरह का बीज) पडा हो। भोजन के बाद मिठाइया एव फालूदा, जो मिश्री एव उत्तम प्रकार की साफ की गयी शक्कर से तयार किया गया हो, तरह-तरह क मुरब्बे, गुलाव इत्यादि से खुशबूदार की गयी सेवइ इत्यादि दी जाए। दरबार म स्वागत के दिन प्रत्येक अमीर को नौ घोडे उपहार स्वरूप भेट किये जाए जिसमे तीन बादशाह के लिए हा, एक अमीरे मुअज्जम' बैराम खा के लिए हो और पाच अन्य प्रतिष्ठित अमीरो के लिए। नगर मे पहुचने के एक दिन पूव ईदगाह उद्यान के सामने ऐसे खेमे लगवाने की आना हुई जिनके भीतर लाल अतलस, बीच म बारीक मलमल और ऊपर इस्फहानी मलमल लगायी गयी हा।

कुछ दिन सीस्तान मे व्यतीत कर हुमायू हिरात के रवाना हुआ। मार्ग मे फराह[1] के निकट उससे शाह के दूत, जो हुमायू के पत्र का उत्तर ला रहा था तथा शाह के दरबार से लौटते हुए अपने दूत, जय बहादुर (चूली बहादुर) से मुलाकात हुई। हुमायू का यहा शाह का पत्र प्राप्त हुआ जिसमे उसने ईरान मे हुमायू के आगमन का स्वागत किया था तथा उसके शीघ्र मिलने की आशा व्यक्त की थी।[2]

हिरात मे

सीस्तान से हुमायू ने हिरात मे प्रवेश किया। मार्ग मे जहा भी हुमायू का पडाव पडता वहा कोई-न-कोई प्रतिष्ठित एव सम्मानित व्यक्ति उसका स्वागत करता तथा उसके लिए आवश्यक वस्तुओ का प्रबन्ध करता। हिरात मे उसका शानदार स्वागत हुआ। शाह तहमास्प के ज्येष्ठ पुत्र, हिरात के गवर्नर, मुहम्मद खा ने प्रमुख लोगो के साथ नगर के तीन-चार मील बाहर उसका स्वागत किया। नगर मे प्रवेश करते समय हिरात के बूढे तथा जवान सभी ने दो कतारो मे खडे होकर हुमायू का अभिवादन किया। उसे हिरात की सबसे सुन्दर इमारत मजिले बेगम मे ठहराया गया। दो तीन दिन बाद मुहम्मद खा ने जहाआरा बाग मे उसका स्वागत किया। इसमे नगर के सभी लोग आये हुए थे जिससे समस्त मैदान भरा हुआ था, मानो ईद या नौरोज हो। इस जलसे मे गायन, नृत्य और भोजन का वृहत् प्रबन्ध किया गया। हुमायू के स्वागत मे कुछ कविताए पढी गयी जिसे सुनकर उसकी आखो मे आसू आ गये है।

हुमायू कुछ दिन हिरात मे रुका रहा।[3] प्रत्येक सप्ताह उसे शाह द्वारा भेजे

---

1 32°26' उत्तर तथा 62°8' पूर्व हिरात के दक्षिण 164 मील। अब यह नगर नष्ट हो गया है।

2 इस पत्र की फारसी प्रतिलिपि के लिए देखिये रे, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 67-68।

3 हिरात मे हुमायू कितने दिन रुका रहा, इसके विषय मे समकालीन इतिहासकार एकमत नही है। अबुल फजल के अनुसार हुमायू 27 जनवरी 1544 ई० का पहुचा (अकबरनामा 1, पृ० 214), जौहर के अनुसार हुमायू वहा एक महीने रहा (स्टीवर्ट, पृ० 86) वह फरवरी के अन्त तक वहा रहा तथा नौरोज भी वहा मनाया जो 21 मार्च का पडा। इससे स्पष्ट है कि वह उसके बाद चला अर्थात डेढ-दो महीने वह वहा रुका रहा।

गय उपहार तथा शुभ कामनाए प्राप्त होती रही। यहा हुमायू न नौराज क त्यौहार से सम्बधित जलसे भी देखे जो ईरान म बहुत शान स मनाय जाते थे। इस जलस मे हुमायू राजसिंहासन पर बैठाया गया। उसके दाहिने राजकुमार मुहम्मद मिर्जा और बाये सद्र मीर मुहम्मद यूसुफ बैठाय गये। गान तथा मनोरजन हुआ और हुमायू को बहुत-सी वस्तुए भेट के रूप म प्राप्त हुई।

हिरात म समय बडे आनन्द म व्यतीत हुआ। नित्य किसी स्थान का सर होती थी। हुमायू ने हिरात के प्रमुख स्थानो, सन्ता के मकबरा और बगीचा की सैर की। हर समय आमोद प्रमाद की महफिलें आयोजित होती रहती थी। भोग-विलास तथा आनन्द की सभी वस्तुए उपलब्ध थी।[1]

हिरात से कजवीन

हिरात से हुमायू ने मशहद जान की अनुमति के लिए शाह का एक पत्र लिखा। शाह न इस पत्र का उत्तर भेजा जिसम उसने हुमायू के मशहद जान की स्वीकृत दी।[2] हिरात से हुमायू मशहद की तरफ रवाना हुआ। माग मे वह जाम पहुचा। यहा उसने कई धार्मिक स्थाना के दशन किय और प्राथना की जिनम शिहाबुद्दीन अहमद अलजामी का मजार भी था।[3] अहमद अलजामी हुमायू की मा माहम बेगम तथा उसकी पत्नी हमीदा बानो के पूवज थे।

जाम मे कुछ दिन रहने के पश्चात् हुमायू मशहद पहुचा (15 मुहरम 950 हि० 8 अप्रैल 1544 ई०)। यहा भी उसका स्वागत हुआ। और वह बहुत ही सुदर स्थान, चहार बाग मे ठहराया गया। मशहद मे वह चालीस दिन रुका

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 214, हुमायूनामा, बेवरिज पृ० 169।

2 इन दोनो पत्रो क लिए देखिए र, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 15 18।

3 जाम के मजार मे एक अभिलेख है जो हुमायू के यहा आन की यादगार म लिखा गया था। हुमायू ने यहा एक कविता भी अपन हाथ से अहमदेजाम के मकबरे के संगमरमर पत्थर पर लिखी। मासीरे रहीमी का लेखक अबुल बाकी 1611 ई० मे यहा आया था और उसने हुमाय की इस कविता को पढ़ा था। दुर्भाग्य स इसने अपनी पुस्तक म इस कविता को नही लिखा है। हुमायू ने जाम म कब कविता लिखी, इसकी तिथि के विषय म मतभेद है। कुछ लेखका का मत है कि हुमायू वहा दुबारा आया था। रे हुमायू इन पर्सिया, पृ० 18 19।

रहा। यहा वह अपना समय कभी-कभी रात भर प्रार्थनाओ मे बिताता था। यहा उसने इमाम अली के मजार की यात्रा की तथा वहा के नियम के अनुसार इबादत की तथा दीपक बुझाया। उसने वहा अपना धनुष लटकाने के लिए दिया।[1] मशहद मे हुमायू को शाह का एक पत्र प्राप्त हुआ जिस मे उसने हुमायू से कजवीन आने के लिए लिखा था।

मशहद से हुमायू नीशापुर, सब्जबार,[2] दामगान विस्ताम, सामनाम और सूफीयाबाद होता हुआ दस पहुचा। यहा से हुमायू ने बैराम खा को शाह के पास अपने दूत के रूप म भेजा। शाह तहमास्प कजवीन म था।[3] बैराम खा के उपस्थित होने पर उन्होने उससे कहा कि वह शिआ लोगो की तरह बाल काट ले और ईरानी टोपी (ताज) पहने। बैराम खा ने कहा कि वह एक दूसरे शासक का सेवक है और यह केवल अपने स्वामी की आज्ञा से ही वसा कर सकता है। शाह तहमास्प इससे बहुत नाराज हुआ और उससे कहा कि बैराम खा की जो इच्छा हो करे। उसे डराने के लिए शाह ने कुछ बदियो[4] को उन्हे सुन्नी कहकर फासी देने की आज्ञा दी। शाह ने हुमायू को पत्र लिखा कि वह अपने स्थान पर रहे तथा बूबक बेग को भेज दे।

---

1 जौहर, स्टीवट, पृ० 87 88।

2 नीशापुर 36^0 12' उत्तर तथा 28^0, 40' पूर्व मे स्थित है। यह खुरासान के चार प्रमुख नगरो म एक था। सब्जवार नीशापुर के पश्चिम 64 मील पर स्थित है।

3 अबुल फजल के अनुसार बैराम खा ने शाह से सुल्तानिया तथा सूरलीक के बीच मुलाकात की तथा कजवीन लौट आया। मासीरे रहीमी से ऐसा प्रतीत होता है कि बैराम खा का शाह के दरबार म जोरदार स्वागत हुआ। बायजीद के वणन स ऐसा प्रतीत होता है कि बैराम खा कजवीन स हुमायू का पत्र लेकर जनजाम म जाकर मिला तथा लौट आया। निजामुद्दीन अहमद लिखता है कि बैराम खा कजवीन भेजा गया। वह सूरलीक म शाह से मिला तथा उसका उत्तर लेकर हुमायू के पास लौट आया। शाह ने हुमायू के आने पर प्रसन्नता प्रकट की थी। बदायूनी तथा फिरिश्ता का वणन सक्षिप्त है। जौहर द्वारा वणन इन सबस भिन्न है जो यहा दिया गया है। सफवी इतिहासकारो द्वारा शाह की विरोधी बाता का वणन न होना स्वाभाविक है। जौहर का वणन सही है। अकबरनामा, I, प० 216 तबकात अकबरी, डे, 2, प० 98 99 बदायूनी मुन्तखबुत्तवारीख प० 444, बायजीद, प० 32, फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, प० 154 55।

4 जौहर, स्टीवट, प० 90 91। ये बन्दी चिरागकुश कहलाते थ।

वूबक वेग ने शाह से मिलकर उसका क्रोध शान्त किया जिससे शाह ने हुमायू को कज़वीन आने की अनुमति दी। दस से चलकर हुमायू कज़वीन आया। यहा वह तीन दिन तक रुका रहा। यहा वैराम खा आकर उससे मिला। शाह इस बीच गरमी व्यतीत करने के लिए कज़वीन से सुल्तानिया चला गया था। शाह स मिलने के लिए हुमायू यहा से चौथे दिन सुल्तनिया की तरफ़ रवाना हुआ।

शाह तहमास्प से मुलाकात

अवहर तथा सुल्तानिया के माग मे हुमायू की शाह तहमास्प से मुलाकात हुई।[1] शाह के पडाव तक पहुचने म जब हुमायू को एक दिन की दूरी बाकी रह गई तो शाह के वज़ीर काज़ी जहा कज़वीनी तथा अन्य अमीरो ने आगे बढ़कर हुमायू का स्वागत किया। कुछ और चलने के पश्चात् राजसी परिवार के व्यक्तियो, शाह के भाई शाह मिर्ज़ा और वहराम मिर्ज़ा एव अन्य लोगो ने मुगलिया सम्राट का स्वागत किया तथा उपहार दिए।[2] यहा से शाह के भाइयो के साथ उससे मिलने के लिए हुमायू आगे बढा।

हुमायू से मिलने के समय शाह न आगे बढकर हुमायू का स्वागत किया।[3] और हुमायू को गले लगाकर अपन कालीन पर अपनी दाहिनी तरफ़ बैठाया। उसने हुमायू से उसके स्वास्थ्य तथा यात्रा के बारे मे पूछा। शाह ने इसके पश्चात्

---

1 दोना सम्राटो का मिलन कहा हुआ, यह विवादग्रस्त है। अकबरनामा, 1, पृ० 216 के अनुसार अवहर तथा सुल्तानिया के बीच म, बायज़ीद के अनुसार ये जनजाम (सुल्तानिया से 21 मील) म मिले, बदायूनी के अनुसार सूरलीक इलाक, निज़ामुद्दीन के अनुसार विलाक सूरलीक, फ़िरिश्ता के अनुसार अवहर तथा सुल्तानिया के बीच बीलाक कदार म, तथा तारीखे रहीमी के अनुसार सुल्तानिया म। बायज़ीद पृ० 32, बदायूनी मुन्तखबुत्तवारीख, पृ० 444, फ़िरिश्ता, ब्रिग्स, 2, प० 154–55, तबकाते अकबरी, डे, 2, प० 99।

2 वहराम मिर्ज़ा ने हुमायू का एक घोडा, वस्त्र तथा शिआ टोपी दी। हुमायू ने एक वस्त्र तो पहन लिया पर शिआ टोपी नही पहनी। जौहर लिखता है कि जो घोडा उसे उपहार मे दिया गया था वह साधारण नही था और उसे हुमायू की घुडसवारी की योग्यता जानने के लिए दिया गया था। जौहर, स्टीवट, प० 93।

3 अबुल फ़ज़ल के अनुसार दोना शासको की मिलन तिथि जमादिउल अव्वल 951 हि० (21 जुलाई तथा 19 अगस्त 1544 ई० के बीच) थी। श्री रे के अनुसार दाना का मिलन अगस्त के तीसरे सप्ताह म हुआ। देखिए, रे, हुमायू इन पर्सिया, प० 26।

हुमायू से ईरानी ताज पहनने के लिए कहा। हुमायू ने इसे स्वीकार कर लिया और शाह से कहा कि ताज बडप्पन की निशानी है और वह उसे प्रसन्नता से पहनेगा। शाह तहमास्प ने स्वय अपने हाथ से यह ईरानी टोपी हुमायू के सिर पर रख दी। शाह से मिलने के पश्चात हुमायू बहराम मिर्जा के महल मे ठहराया गया। यहा हुमायू के बाल शिआ लोगो के बालो की तरह काटे गये।[1]

हुमायू के ईरान निवास को हम तीन कालो मे विभाजित कर सकते है—

(1) प्रारम्भ मे शाह ने हुमायू को शिआ बनाने का प्रयत्न किया, इसके पश्चात्। (2) लगभग दो माह तक दोना शासको म मतभेद रहा तथा इस बीच एक-दूसरे से न मुलाकात हुई और न किसी तरह का पत्र व्यवहार हुआ। (3) अन्त मे दोना के मतभेद दूर हो गये और शाह ने हुमायू को सहायता देकर विदा किया।

शाह से मतभेद

ईरान म हुमायू का भव्य स्वागत हुआ था तथा शाह न स्वय उसमे दिलचस्पी ली थी। दोना का मिलन भी मधुर था किन्तु यह अधिक दिन नही रहा। हुमायू के स्वागत के पश्चात् दूसरे दिन सुबह शाह सुल्तानिया जा रहा था। हुमायू शाह से मिलने गया, किन्तु शाह ने हुमायू की बातो का उत्तर नहीं दिया। इससे हुमायू को बहुत दु ख हुआ। दोनो शासक सुल्तानिया की तरफ रवाना हुए। शाह ने हुमायू के पास यह समाचार भेजा कि यदि वह शिआ मत स्वीकार कर लेगा तो वह उसे हर तरह की सहायता देने के लिए तैयार है और यदि वह ऐसा नही करेगा तो उसे आग मे फेंक दिया जाएगा। हुमायू ने इसका उत्तर दिया कि उसे राजत्व की आकाक्षा नही है और उसने मक्का जाने के लिए शाह से ईरान से केवल गुजरने की अनुमति मागी थी। शाह ने फिर दूसरा सवाद भेजा जिसमे उसने हुमायू से कहलवाया कि शाह सुन्नियो के विरुद्ध एक युद्ध की घोषणा करना चाहता है और यह सौभाग्य है कि एक सुन्नी बादशाह उसके अधिकार म आ गया है। इसके पश्चात शाह ने काजी जहा को हुमायू के पास भेजा। काजी जहा ने हुमायू को परामर्श दिया कि जिन परिस्थितियो म हुमायू था उसमे शाह से सुलह कर लेना अधिक युक्तिसगत था। हुमायू न काजी जहा से सभी बातें लिखित रूप मे पेश करने के लिए कहा। काजी जहा ने तीन कागज शाह तहमास्प की स्वीकृति से उसके सामने पेश किये। हुमायू ने दो को तो स्वीकार कर लिया किन्तु तीसरे को स्वीकार करने के लिए वह तैयार नही था। काजी जहा ने उसे समझाया कि उसे इस समय तीसरा भी स्वीकार कर लेना चाहिए। हुमायू ने अन्त म यह कहकर कि धार्मिक विचारो मे जबरदस्ती नही होनी चाहिए विवश होकर तीसरे पत्र

1 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 95।

पर भी हस्ताक्षर कर दिय ।1

शाह तथा उसके अमीर हुमायू के इस व्यवहार से सन्तुष्ट हुए । शाह ने इसके पश्चात शिकार का प्रबन्ध किया और हुमायू को कई स्थानो पर शिकार के लिए ले जाया गया । यहा हुमायू न अपनी तीरदाजी की योग्यता का प्रमाण दिया ।

हुमायू ने शाह को बहुत-से हीरे तथा लाल पत्थर भेंट किये । इसम एक बहुत ही बडा था जो कदाचित कोहिनूर था ।[2] इसे देखकर शाह बहुत प्रभावित हुआ और उसने बराम बेग को खा की उपाधि से विभूषित किया । इस तरह दूसरे के सेवक को उपाधि देने का नियम नही था । इससे हुमायू की हीनावस्था का अनुमान होता है । बराम न, जसा ऊपर वणन किया जा चुका है, शाह से शिआ टोपी पहनन स इनकार कर दिया था किन्तु जब अपन स्वामी को ही शिआ मत स्वीकार करने की विवशता को जानकर बराम ने खा की उपाधि स्वीकार कर ली ।

मतभेद के कारण

ईरान मे प्रवेश करन के पश्चात हुमायू का शानदार स्वागत हुआ था । उसके शिआ मत की औपचारिकता स्वीकार करन के पश्चात दोनो का सम्बन्ध और दढ होना चाहिए था । इसके विपरीत दोना म फिर कसे मतभेद पदा हो गया ? वास्तव म कई कारणो न मिलकर यह परिस्थिति उपस्थित कर दी ।

हुमायू के कुछ अमीर, जस रोशन बेग कोका, ख्वाजा गाजी दीवान तथा मुहम्मद नजावाज, जो कामरान क सवक थे हज स लौटकर यही थे । ये लोग शाह से हुमायू के विरुद्ध बातें करत थ तथा वे उसे विश्वास दिलाना चाहते थ कि अपन दुव्यवहार के कारण ही हुमायू को अपन भाइयो से अलग होना पडा था । वे लोग कहत थ कि यदि उन्हे कुछ सेना मिल जाए तो व कधार जीतकर शाह को समर्पित कर दगे । कधार प्राप्त करन का स्वप्न शाह के लिए आकर्षक था । कुछ किजिलबाश तथा तुकमान लोगा न, जो कदाचित कामरान द्वारा धन प्राप्त कर उसके पक्ष म शाह को भडकाना चाहते थे शाह को यह विश्वास दिलाया कि यदि

---

1 जौहर स्टीवट पृ० 95 96 । जौहर की हस्तलिखित प्रतियो म इस घटना के वणन म कही कही भिन्नताए हैं । देखिए, र, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 28 29, अर्सकिन, 2, पृ० 286 ।

2 एच० बेवरिज, 'बाबस डायमण्ड' एशियाटिक क्वाटरली रिव्यू अप्रल, 1899 ई० म लेख, हुमायूनामा बेवरिज, पृ० 173, नोट 1 शाह न इस पुन दक्खन के निजाम शाह को भेज दिया । बनर्जी, हुमायू, 2, पृ० 120, नोट 1 अकबरनामा, 1 पृ० 217, जौहर स्टीवट, पृ० 99 100 ।

3 हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 173 74, जौहर, स्टीवट पृ० 100, 105 ।

वह हुमायूँ की सहायता करेगा तो वह भी अपने पिता बाबर की ही तरह ईरानी सेना को नष्ट कर देगा, जैसे शाह इस्माईल सफ़वी से सहायता पाकर बाबर ने बेग वज़ीर तथा 12 000 अश्वारोहियों को, जो उसकी सहायता के लिए दिए गए थे, नष्ट कर दिया था।[1]

गुजरात अभियान में सफलता प्राप्त करने के पश्चात् हुमायूँ ने 12 उत्तम बाणों पर अपना नाम तथा 11 साधारण तीरों पर शाह तहमास्प का नाम लिखा था। इस तरह उसने सफ़वी शासक को हीन स्थान दिया था। शाह ने जब हुमायूँ से ऐसा करने का कारण पूछा। हुमायूँ ने इसका उत्तर दिया कि हिन्दुस्तान का क्षेत्रफल सफ़वी शासक के राज्य से बड़ा है। शाह ने कहा कि यह अभिमान का फल है कि हुमायूँ एक साधारण व्यक्ति से पराजित होकर इस अवस्था को प्राप्त हुआ है। हुमायूँ ने इसका उत्तर दिया कि यह सब ईश्वर की लीला है। इसके अतिरिक्त एक और मनोरंजक घटना हुई। फ़िरिश्ता लिखता है कि बातचीत में एक दिन शाह ने हुमायूँ से उसकी पराजय का कारण पूछा। हुमायूँ ने इसे अपने भाइयों के विरोध का परिणाम बताया। शाह ने कहा, 'आपका अपने भाइयों के प्रति व्यवहार ठीक नहीं था।" उसी समय भोजन तैयार था। बहराम मिर्ज़ा नौकर की तरह सुराही लिए हाथ धुलाने के लिए खड़ा था। शाह ने उसकी तरफ़ देखकर कहा कि भाइयों के साथ ऐसा व्यवहार होना चाहिए। बहराम मिर्ज़ा इससे नाराज़ हुआ तथा उसने साथियों को डरा दिया कि हुमायूँ की बातों से रुष्ट होकर शाह उन्हें मार डालेगा।[2]

इन कारणों के अतिरिक्त वास्तविक कारण राजनीतिक तथा धार्मिक थे। शिआ तथा सुन्नी सम्प्रदायों में उस युग में वैमनस्य तथा संघर्ष था। ईरान का शाह तहमास्प एक कट्टर शिआ था और वह शिआ धर्म फैलाना चाहता था। हुमायूँ सुन्नी था और उसके अधिकतर अनुयायी भी सुन्नी थे। इस परिस्थिति में दोनों शासकों में धार्मिक कारणों से मतभेद स्वाभाविक था। शाह के बैराम खाँ तथा हुमायूँ के साथ के व्यवहार से भी यह बात स्पष्ट हो जाती है। धार्मिक

1 बाबरनामा, बेवरिज, पृ० 361, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 101।

2 *फ़िरिश्ता ब्रिग्स*, 2, पृ० *155 56*, *निज़ामुद्दीन (तबक़ाते अकबरी*, 2, पृ० 99) भी लगभग समर्थन करता है यद्यपि उसका वर्णन संक्षिप्त है। बदायूनी (मुन्तख़बुत्तवारीख़, पृ० 444) के अनुसार हुमायूँ ने अपने भाइयों को अपनी पराजय का कारण बताने से बहराम नाराज़ हुआ तथा उसका विरोध करने लगा। उसने बाबर की सहायता के दुष्परिणाम का भी हवाला दिया। अबुल फ़ज़ल (अकबरनामा, 1, पृ० 216 17) ने भी लिखा है कि शाह ने हुमायूँ के दुर्भाग्य का कारण उसके भाइयों को बताया।

जाएगा। शाह को इस सहायता के लिए कधार प्राप्त होगा जो हुमायू राजकुमार मुराद को समर्पित कर देगा। हुमायू शाह की भतीजी (शाह की बहन तथा मासूम बेग की पुत्री) से विवाह करेगा।[1] शाह ने कुमक की सूची हुमायू को दी। उसने अपने पुत्र सुल्तान मुहम्मद मिर्जा को खुरासान से आवश्यक सहायता देने का आदेश दिया। शाह ने हुमायू को 3,000 तुमान नकद तथा घोडे, ऊट, ईरानी कपडे, राजसी तम्बू इत्यादि वस्तुए दी जिनका मूल्य लगभग 20,000 तुमान था।[2] निश्चित हुआ कि हुमायू की सहायता के लिए दी गयी सेना सीस्तान मे उसकी प्रतीक्षा करेगी।

पुन मित्रता हो जाने के पश्चात एक दावत हुई तथा जलसे हुए। तीन दिना तक जश्न होता रहा।

शाह से विदाई

जश्न तथा दावतो के पश्चात दूसरे दिन प्रात हुमायू शाह से मिलने गया। तीन तह किये हुए एक छोटे कालीन पर शाह बठा हुआ था। हुमायू के लिए उस पर बठने का स्थान नही था। शाह वसे ही बैठा रहा। कोई स्थान न देखकर हुमायू जमीन पर बैठने म सकोच कर रहा था। सौभाग्यवश वहा हाजी मुहम्मद कुश्का नामक मुगल उपस्थित था। परिस्थिति देखकर उसने सूझ से काम लिया तथा उसने अपना निषग (तूणीर, तरकस) फाडकर जमीन पर बिछा दिया जिस पर हुमायू बैठा।[3] शाह का यह व्यवहार आश्चय म डालन वाला है। एक तरफ स्वागत का समारोह तथा दूसरी तरफ साधारण शिष्टता भी न प्रदर्शित करना, एक पहेली प्रतीत होती है।

दोना शासक तख्ते सुलेमान स (जहा वे ठहरे थे) आग बढकर आठ मील पर रुके। यहा शाह ने हुमायू के स्वागत म पुन एक दावत दी। इसम हिन्दुस्तानी भोजन भी बना। शाह ने चावल (खुश्का) दाल के साथ बहुत पसन्द किया तथा उसन इसकी प्रशसा की।[4] यहा स दोनो शासक मियाना आय। विदा का अवसर

बदायूनी भी 10,000 लिखता है यद्यपि एक हस्तलिखित प्रति म 12,000 है।

1 जोहर, स्टीवट, पृ० 110। कदाचित यह विवाह सम्पन्न नहीं हुआ।

2 तुमान एक सिक्का था जो मगोल, ईरानियो और तुर्कों द्वारा प्रयाग किया जाता था। एक तुमान 15½ डालर के बराबर था। इसकी विवचना क लिए देखिए इश्वरी प्रसाद, हुमायू, प० 277, नाट 2।

3 जोहर, स्टीवट, प० 107।

4 वही, प० 108।

आया। क्या हो रही थी। औपचारिकता के अनुसार शाह दो सब और चाकू लेकर खड़ा हो गया और कहा "हुमायू बादशाह आपसे विदा लेना हू, इसे ले लें।" हुमायू ने अन्तिम उपहार स्वीकार किया। शाह ने फातहा पढ़ा और दोनो विदा हुए।

क्या हुमायू ने शिआ मत स्वीकार किया ?

हुमायू के ईरान निवास की घटनाओ का नान बहुत स्पष्ट नही है। मुगल इतिहासकार, विशेषतया अबुल फज़ल, इस बात को ध्यान म रखते हुए भी कि हुमायू शरणार्थी के रूप म ईरान आया हुआ था, किसी ऐसी बात का वणन नही करना चाहते थे जिससे मुगल वश की हीनता प्रदर्शित हो। इसीलिए हुमायू के शिआ मत स्वीकार करने अथवा शाह की आज्ञाओ का विवशता म स्वीकार करने के विषय म वे मौन है। इस कारण यह निश्चय करना कठिन है कि हुमायू ने शिआ मत स्वीकार किया अथवा नही फिर भी अ य इतिहासकारो तथा घटनाओ से हम उसकी वास्तविक स्थिति का अनुमान लगा सकते है।

जसा ऊपर वणन किया जा चुका है हुमायू ने शिआ टोपी पहनी, शिआ जसे बाल कटवाये तथा काज़ी जहा के प्रभाव से अथवा शाह के क्रोध के भय स उन तीनो पर्चों पर हस्ताक्षर कर दिय जो शिआ धम के सिद्धान्ता स सम्ब धित थे। कट्टर सु नी मुल्ला बदायूनी का वणन इस विषय म उल्लेखनीय है। वह लिखता है कि दोना सम्राटो म पुन मेल हो जाने के पश्चात पुन शिकार तथा जश्न का दौर प्रारम्भ हुआ। इसके पश्चात् शाह ने हुमायू से शिआ मत स्वीकार करने तथा तबर्रा (इस धम के बाद के अनुयायी जो कुछ सम्मानित सहाबा के विरुद्ध कहते है) कहने के लिए आग्रह किया। हुमायू ने वाद विवाद के बाद एक कागज पर यह सब लिखकर लाने को कहा। व लोग अपने समस्त धार्मिक विश्वासो को लिखकर लाये। बादशाह ने उन्ह पढ़ा तथा 12 इमामो का उल्लेख अपने खुत्बे म किया।[1] ईरान म हुमायू न शिआ धम से सम्ब धित स्थानो तथा हज़रत अली के मज़ार की यात्रा की। इस तरह बाहर स उसने शिआ मत स्वीकार करन जसा व्यवहार किया। सम्भव है इन कार्यों म उसकी स्त्री हमीदा बानो तथा बराम

1 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 445।

2 Humayun acted as any other man would have done in similar circumstances He adopted the Shia creed under duress and protested to the Shah that compulsion in religious matters was forbidden by the Prophet of Islam इश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 238।
Not only Humayun was converted to the Shiah faith but it seems his followers also were converted रे, हुमायू हृन पर्सिया, पृ० 36।

खा का प्रभाव पडा हो।

हुमायू उदार व्यक्ति था। अपनी उदारता के कारण वह शिआ तथा सुन्नियो मे वैसा भेद नही रखता था, जैसे ईरान का शाह रखता था। ईरान मे रहते हुए हुमायू ने बहुत-से शिआ स्थानो की यात्रा की और शिआ मत के प्रति सहृदयता का भी परिचय दिया। भारत लौटने के पश्चात उसने कई ऐसे अधिकारी नियुक्त किये जो शिआ थे। उसकी कविताओ से भी अनुमान होता है कि उसके मन म अली तथा शिआओ के सिद्धान्तो के प्रति श्रद्धा थी। भारत विजय के पश्चात बहुत शीघ्र उसकी मृत्यु हो गयी और उसके शिआ मत दर्शन का पूर्ण प्रभाव हमारे सम्मुख नही आता।

हुमायू ईरान म प्रवेश करने को तैयार नही था। वह जानता था कि वह एक बडे साम्राज्य का शासक रह चुका है। वह स्वय ईरान के शाह को मुगल सम्राट से छोटा समझता था। हीनावस्था मे एक शरणार्थी के रूप म वहा जाने मे उसे लज्जा का अनुभव हो रहा था। वह भी जानता था कि ईरान शिआ राज्य है। शाह की कट्टरता का भी उसे ज्ञान था। बाबर का शिआ मत किस स्थिति मे स्वीकार करना पडा था, यह भी वह भूला नही था। शिआ मत स्वीकार करने के कारण ही बाबर को अन्तिम बार समरकन्द खोना पडा था।[1] उसके अधिकतर अमीर सुन्नी थे। शिआ होने पर उनकी सहायता प्राप्त करना कठिन था। फिर काबुल, खुरासान तथा अफगानिस्तान के अधिकतर मुसलमान सुन्नी थे, उन पर शिआ मत स्वीकार करने के पश्चात शासन करना कठिन था। इन सब कठिनाइयो को जानते हुए भी उसे विवश होकर ईरान जाना पडा और उसे वही करना पडा जिसका उसको भय था। प्रारम्भ म उसने विरोध किया किन्तु अन्त मे उसने समर्पण कर दिया।

---

1 सन 1510 ई० मे ईरान के शाह ने शबानी खा उजबेक को पराजित कर दिया। शबानी मारा गया। शाह इस्माईल ने बाबर की विधवा बहन खानजादा बेगम को, जो शबानी से विवाहित थी, बाबर के पास वापस भेज दिया। शाह ने बाबर को समरकन्द इस शर्त पर दिया कि वह शिआ मत का प्रसार करेगा, शाह के नाम से खुत्बा पढा जाएगा और सिक्का चलेगा। अक्तूबर 1511 ई० म बाबर ने समरकन्द मे प्रवेश किया। वहा के निवासियो को आशा थी कि समरकन्द पर अधिकार हो जाने पर वह शिआ मत के चिह्नो को समाप्त कर देगा। बाबर के ऐसा न करने पर जनता तथा अमीर विद्रोही हुए। बाबर को वहा से भागना पडा। ईरानी सेना पराजित हुई तथा उनका नेता नज्म मारा गया। ईरानी इतिहासकार अपनी सेना के पराजय का उत्तरदायित्व बाबर पर डालते है। देखिए विलियम्स, एन एम्पायर बिल्डर, पृ० 100 109।

हुमायू का धम परिवतन सच्चे दिल से नही था। वह राजनीतिक सुविधा तथा परिस्थितिया का परिणाम था। उसन इसे वास्तविक धम परिवतन की तरह नहीं लिया। वदायूनी लिखता है कि एक वार शेख हमीद न हुमायू स शिकायत की कि उसके सनिको के अधिकतर नामा म अली रहता है।[1] इसका अथ था कि वे सब शिआ मत स प्रभावित थे। हुमायू इसस वहुत नाराज हुआ तथा उसने क्रोध से कहा कि उसके पितामह का ही नाम उमर शेख था। इससे स्पष्ट है कि ईरान से वापस आने के पश्चात् वह अपने को शिआ धर्मावलम्वी स्वीकार करने को तैयार नही था। मृत्यु के समय वह पूण रूप स सुन्नी था या शिआ, यह वताना कठिन है।[2] पर इतना निश्चय है कि वह समकालीन कटटरता की तुलना म कही उदार था।

ईरान निवास के समय हुमायू के प्रमुख सहयोगी

ईरान मे वैराम खा ने हुमायू की वडी सहायता की। उसी ने हुमायू को ईरान जाने के लिए परामश दिया था। वैराम खा स्वय शिआ था और उसके पूवज ईरान के शासक रह चुके थे। ईरान म वैराम खा अपने सम्वन्धिया से मिला किन्तु उसके लिए यह गौरव की वात है कि वह हुमायू के साथ रहा। शाह तहमास्व वराम खा को अपनी सेवा म रखना चाहता था और उसने उसे दियारवक्र तथा अजरवाइजान की जागीर भी देने का वायदा किया, किन्तु वराम खा ने इस स्वीकार नही किया। यही नही, शिआ होते हुए भी उसने ईरानी टोपी पहनने स इनकार कर दिया और ईरान छोडकर हुमायू के साथ साथ रहा। वह हुमायू का सेवक पहले था शिआ वाद म। हुमायू के दूत तथा परामशदाता के रूप म वैराम खा ईरान म उसके लिए बहुत बडी शक्ति सिद्ध हुआ। ईरान के शाह वहराम मिर्जा ने जब हुमायू के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा तो उसके विरुद्ध वैराम खा ने हुमायू को शान्ति से काम लेने के लिए उपयुक्त राय दी। क धार विजय तथा इसके पश्चात भी उसकी स्वामिभक्ति से हुमायू को वल मिला। वैराम खा के अतिरिक्त

---

1 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, प० 468।

2 "We cannot say whether he formally abandoned the Shiah creed and died as a Sunni Apparently therefore it seems that Humayun died as a Shiah, yet this much can be said that he was never a sincere convert to the shiah faith " रे, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 63।

हुमायू की पत्नी हमीदा बानो ने भी उसकी वडी सहायता की। उसने शाह की वहन को अपने स्वभाव तथा वातचीत से प्रभावित कर लिया। जैसा वर्णन किया जा चुका है, शाह की वहन ही ने उसके क्रोध को शान्त कर उसे हुमायू की सहायता करने के लिए तत्पर किया।

ईरान से विदाई

शाह से विदा लेकर हुमायू बहराम मिर्जा के साथ तबरेज की तरफ रवाना हुआ। सियान तक दोना साथ आये। विदा होते समय हुमायू ने एक हीरे की अगूठी बहराम को दी जो हुमायू की माता का स्मृति चिह्न था। शुभ कामनाओ के साथ दोनो विदा हुए।

तबरेज के गवर्नर ने नगर के बाहर जाकर हुमायू का स्वागत किया। शाह तहमास्प के निर्देश के अनुसार पूरा नगर हुमायू के स्वागत के लिए सजाया गया था। यहा हुमायू की मुलाकात अब्दुस्समद नामक चित्रकार से हुई।[1] कुछ दिन पश्चात् यह हुमायू की सेवा मे आ गया और मुगल चित्रकला का जन्मदाता बना। हुमायू ने उसको अपनी सेवा म आमन्त्रित किया था, किन्तु उस समय वह इसके लिए तैयार नही हुआ। इसके अतिरिक्त इतिहासकार वायजीद भी यही से हुमायू के साथ हो गया। तबरेज मे, जौहर के अनुसार, हुमायू पाच दिन रहा। यहा उसे तबरेज के प्रसिद्ध खेल—भेडियो की दौड तथा पैदल चौगान—दिखाये गये। हुमायू ने यहा प्राचीन काल के अवशेषो तथा नगर के प्रमुख भवनो की सैर की।

तबरेज से चार दिन की यात्रा के पश्चात हुमायू अदर्बेल के निकट पहुचा। अदर्बेल के गवर्नर तथा प्रमुख अमीरो ने हुमायू का स्वागत किया। यहा एक सप्ताह रहा। यहा उसने सफवी वश के सस्थापक शेख शफीउद्दीन तथा शाह इस्माईल की मजारो का दर्शन किया तथा यहा उसने कुछ उपहार भी दिये।[2] पूर्व निश्चय के अनुसार वह यहा शाह की भतीजी से विवाह करना चाहता था जो कदाचित सम्पन्न

---

1 अकबरनामा 1, पृ० 220।

2 मोरियर अपनी पुस्तक 'ए जर्नी थ्रू पर्सिया', आरमीनिया एण्ड एशिया माइनर टू कान्सटेन्टीनोपल' (भाग 2, पृ० 254 55) मे लिखता है कि शाह इस्माईल की कब्र पर हुमायू द्वारा दी गयी बहुत ही सुन्दर हाथी दात, मौजेक, कछुए के खोल इत्यादि से वनी तह चढी हुई एक सुनहली सुराही है। रे, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 42, नोट 5 द्वारा उद्धृत।

न हो सका ।[1] यहा से हुमायू लाल सागर[2] की तरफ रवाना हुआ किन्तु कुहरे के कारण वह पुन अर्दबेल लौट आया और यहा स कज़वीन की तरफ लौट गया ।

हुमायू के कज़वीन पहुचने के समय ही शाह तहमास्प भी वहा पहुचा। यह सुनकर कि हुमायू भी वहा था, उस आश्चय हुआ। उसन आज्ञा दी कि हुमायू फौरन कज़वीन स चला जाए। इस तरह हुमाय को विवश हाकर शाह की आज्ञा से कज़वीन छोडना पडा।[3]

यहा स हुमायू दस हाता हुआ सब्ज़वार पहुचा। दस म हमीदा बानो न एक पुत्री को जन्म दिया।[4] यहा म हुमायू मशहद पहुचा। यहा के गवनर तथा अमीरो न हुमायू का स्वागत किया। हुमाय न इमाम अली तथा अन्य मकबरो की पुन यात्रा की। मशहद स वह जाम (29 दिसम्बर 1544 ई०) हाता हुआ सीस्तान पहुचा। यहा लगभग 15 दिना तक वह रुका रहा। यहा हुमायू ने शाहज़ादा मुराद क नेतत्व म मुगल सम्राट की सहायता के लिए दी गयी ईरानी सेना का निरीक्षण किया। इस सना म 12 000 घुडसवार तथा शाह के अगरक्षक दल के 300 सनिक भी थे। शाहज़ादा मुराद अभी बच्चा था। इस तरह वास्तविक रूप म ईरानी सना का अभिभावक बुदाग खा था ।

कन्धार विजय

सीस्तान स हुमायू न ईरान के शाह के साम्राज्य को छोडकर कामरान के राज्य म प्रवेश किया। हुमायू न ईरानी सनानायको स बुस्त दुग पर अधिकार करने के लिए कहा किन्तु उन्होन यह कहकर प्रारम्भ म अस्वीकार कर दिया कि यह शाह की आज्ञा के विरुद्ध है। हुमायू न उन्ह आश्वासन दिया कि वह इस विषय मे शाह स आज्ञा ले लेगा। यहा से हुमायू ने गरमसीर म प्रवेश किया। यहा मीर अब्दुल हई ने लकी का दुग हुमायू को समर्पित कर दिया।

ईरानी सेना ने बुस्त के दुग को घेरा। यह दुग कामरान के अधिकार म था। दुग के रक्षको ने युद्ध किया किन्तु वे पराजित हुए और उन्होने दुग समर्पित कर दिया।

1 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 110, असकिन, 2, पृ० 295, रे, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 42।

2 जौहर इसे 'दरियाए कुलजुम' लिखता है जिसका अथ लाल सागर है। कदाचित उसका अथ कस्पियन सागर स है, क्योकि लाल सागर बहुत दूर है। जौहर स्टीवर्ट पृ० 110।

3 यह हुमायू की दूसरी कज़वीन यात्रा थी। इसका वणन केवल जौहर तथा मसीरे रहीमी म मिलता है। रे, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 44।

4 बायज़ीद पृ० 39 40।

इसी समय सूचना मिली कि मिर्जा अस्करी क धार से खजाने के साथ भागना चाहता है। यह समाचार सुनकर हुमायू ने अपने विश्वसनीय सेवको के साथ 5,000 ईरानी सैनिको को क धार इस आशय से भेजा कि वे अस्करी को कोष हटाने स रोके।[1] हुमायू के आक्रमण की सूचना पाकर अस्करी न कामरान को सहायता के लिए लिखा। कामरान ने कुछ सेना कासिम हुसेन के साथ भेजी तथा उसने यह आदेश दिया कि हुमायू का सामना किया जाए और दुग का समपण न किया जाए।

बालक अकबर इस समय क धार मे था। कामरान ने कुरबान करावल बेगी को काबुल से अकबर को बुलाने के लिए भेजा। अस्करी के कुछ अमीरो न परामश दिया कि बालक को हुमायू को समर्पित कर दिया जाए, किन्तु अस्करी ने अकबर को काबुल भेजना ही ठीक समझा और शीतऋतु, बरफ तथा वर्षा के बावजूद उन्ह काबुल भेज दिया। बालक के साथ उसकी धाय, माहम अनगा, जीजी अनगा, अतगा खा तथा अन्य अमीर भी भेजे गये।[2]

कन्धार के निकट मिर्जा अस्करी के सनिका तथा हुमायू द्वारा भेजी गयी कुमुक मे युद्ध हुआ जिसमे बहुत से ईरानी मारे गये। किन्तु ईरानियो न अस्करी तथा उसकी सेना को दुग मे शरण लेने के लिए विवश कर दिया। 21 माच 1545 ई० के लगभग हुमायू भी दुग के निकट जा पहुचा।

कन्धार का दुर्ग

मध्य युग म कन्धार का दुग अपनी स्थिति तथा शक्ति के कारण बहुत ही महत्त्वपूण समझा जाता था। यह दुग भारत स अफगानिस्तान और ईरान के सबधो के बीच एक महत्त्वपूण कडी था।[3]

ईरान के शाह तथा मुगल सम्राटा म कन्धार के लिए बराबर सघर्ष होता

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 228, बायजीद, पृ० 40।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 224-25।

3 अबुल फज़ल (अकबरनामा, 1, पृ० 231) लिखता है कि कन्धार का किला मिट्टी का बना हुआ था जिससे उसका तोडना कठिन था तथा उसकी दीवार की चौडाई साठ गज थी। साठ गज कदाचित भूल है। अबुल फज़ल ने शस्त (60) नही बल्कि 'शश (6) लिखा होगा।
In an age when Kabul was part of Delhi Empire Qandhar was our indispensable first line of defence'
सरकार, शार्ट हिस्ट्री आव औरगजेब, पृ० 21 22।'

रहता था। बाबर की मृत्यु के पश्चात् साम मिर्जा ने कई बार कन्धार पर अधिकार करने का प्रयत्न किया, किन्तु उसे सफलता नही मिली थी।[1] इसके पश्चात् दोनो देशा का कूटनीतिक सम्पर्क स्थगित रहा। हुमायूं के ईरान म प्रवेश करने के पश्चात कन्धार के दुर्ग को प्राप्त करने के आश्वासन से शाह ने उसे सहायता दना स्वीकार किया था।

बैराम खा की काबुल यात्रा

कन्धार पर शक्ति द्वारा अधिकार करने की कठिनाई का अनुभव कर हुमायूं ने बैराम खा को कामरान के पास दूत बनाकर काबुल भेजने का निश्चय किया।[2] यह कूटनीति यात्रा थी। बैराम खा का लक्ष्य केवल कामरान से ही मिलना नही था वरन् अस्करी, हिन्दाल तथा अन्य मुग़ल अमीरो से मिलकर उन्हे हुमायूं के पक्ष मे लाने का प्रयत्न करना था। इसके अतिरिक्त कामरान की वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करना भी आवश्यक था। बालक अकबर के विषय म भी हुमीदा बानो तथा हुमायूं को उत्कठा थी। इस यात्रा का उद्देश्य उसके विषय म भी पता लगाना था। बैराम खा अपने साथ कामरान तथा सुलेमान मिर्जा के नाम शाह का पत्र भी ले गया था।

काबुल पहुचने पर कामरान ने बैराम खा का स्वागत किया किन्तु उस पर दृष्टि रखी गयी। तीन दिन पश्चात् बैराम खा से कामरान की मुलाकात हुई।[3]

---

1 इस्लामिक कल्चर, (1934 ई०) पृ० 464 इस पुस्तक के पिछले पृष्ठो मे हुमायूं के शासन के प्रारम्भ मे कन्धार पर ईरानी आक्रमण का वर्णन किया जा चुका है।

2 निजामुद्दीन अहमद (तबकात अकबरी, ख, 2, पृ० 101), तथा बदायूनी (मुन्तखबुत्तवारीख 1 पृ० 446) के अनुसार बैराम खा कन्धार के घेरे के तीन महीने पश्चात् भेजा गया। फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 157 के अनुसार दुर्ग के 6 महीने के घेरे के बाद भेजा गया।

3 बायजीद पृ० 44 47, तबकात अकबरी, 2 पृ० 101-2। अबुल फ़ज़ल लिखता है कि बैराम खा को सन्देह था कि कामरान कही फ़रमाना को उठकर स्वीकार न करे और बैठा ही रहे। इस कारण वह अपने साथ एक कुरान उपहारस्वरूप भी लेता गया था। कुरान देखकर कामरान सम्मान प्रदर्शित करने के लिए उठकर सीधा खडा हो गया। बैराम खा ने इसी बीच, जब कामरान खडा था इन फरमाना को प्रस्तुत किया। अकबरनामा 1, पृ० 230।

दोनो म चार घटे तक वार्ता हुई। इसके पश्चात् उसने सुलेमान मिर्जा तथा हिंदाल से भी मुलाकत की। ये दोनो कामरान के अधिकार मे बन्दी के रूप म थे। कामरान ने बराम खा को इनसे मिलने की आज्ञा तो दी किन्तु मिलते समय उसने अपना एक विश्वासपात्र व्यक्ति भी साथ कर दिया जिससे कोई गुप्त वार्ता न हो सके। बैराम खा ने यादगार नासिर मिर्जा से भी मुलाकात की तथा बालक अकबर से मिलकर उसके विषय म जानकारी प्राप्त की। इस तरह प्रमुख व्यक्तियो से मिलकर बैराम खा कन्धार वापस आया।

बैराम खा की काबुल यात्रा सफल रही। कामरान को भय हुआ कि इस बार हुमायू निश्चित ही सफल होगा। उसने सन्धि-वार्ता के लिए खानजादा बेगम को कन्धार भेजा तथा हिंदाल को आजाद कर दिया। सुलेमान मिर्जा को भी स्वतन्त्र कर उन्ह बदख्शा का प्रदेश वापस कर दिया गया।[1] इस तरह कामरान ने निकट के व्यक्तियो का सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न किया, किन्तु उस सफलता नहीं मिली। हिन्दाल तथा बहुत स अमीर हुमाय से जा मिले। सुलेमान मिर्जा तथा यादगार नासिर मिर्जा बदख्शा चले गये।

इधर कन्धार का घेरा चलता रहा। हुमायू ने और भी शक्ति स दुग पर चारा तरफ से आक्रमण आरम्भ कर दिया किन्तु अस्करी ने समपण नही किया। बैराम खा के काबुल से वापस आने तथा बहुत से अमीरो के काबुल से भागकर हुमायू की सेना मे आ मिलने स अस्करी और भी निराश हुआ। इसी समय एक रात मुगलो न दुग चहार दर की तरफ एक तोपखाना स्थापित कर लिया। दूसरे दिन प्रात ईरानी सेना उस तरफ से आक्रमण करने के लिए बढी। इसी बीच अस्करी ने सन्धि के लिए मीर ताहिर को दूत बनाकर भेजा तथा हुमायू से खानजादा बेगम के पहुचने तक लडाई बन्द करने के लिए प्राथना की। वास्तव म यह मिर्जा अस्करी की केवल चाल थी। कामरान ने अस्करी को लिखा था कि वह सहायता के लिए आ रहा है, तबतक अस्करी दुग को समर्पित न करे। अस्करी इस तरह समय चाहता था जिसस वह तब तक अपनी शक्ति को सगठित कर ले।

कन्धार पर अधिकार

इस बीच इतने दिनो तक कन्धार के दुग पर घेरा डाले हुए ईरानी सनिक थक गये थे और वे ईरान वापस लौट जाना चाहते थे। आक्रमण के समय उन्ह यह आशा थी कि हुमायू क पहुचते ही अस्करी, हिन्दाल तथा कामरान के बहुत से अमीर और सनिक हुमायू के पास चले आएगे और इस तरह उन्ह शीघ्र ही सफलता प्राप्त हो जायगी। दुग के इतन दिनो के घेरे ने उन्ह निराश कर दिया। इसी समय कामरान

1 बायजीद, पृ० 47-49।

के न्धार आन की सूचना मिली जिससे वे और भी आतंकित हुए।

सौभाग्यवश बैराम खां की कूटनीति के फलस्वरूप,बहुत स प्रमुख अमीर (जैसे उलुग मिर्जा, कासिम हुसेन सुल्तान इत्यादि) कामरान का साथ छोडकर हुमायूं के साथ आ गये। कामरान कन्धार की सहायता हेतु न आ सका। अस्करी के सहभागी भी उसे त्यागकर जाने लगे। निराश होकर अन्त म अस्करी न दुग का साढे पाच महीने के घेरे क पश्चात् उसे समर्पित कर दिया। (3 सितम्बर 1545ई०)।[1] वह काबुल जाना चाहता था किन्तु हुमायूं ने इसकी आज्ञा नही दी।

खानजादा बेगम दुग से बाहर आयी और उन्होने मिर्जा अस्करी क लिए हुमायूं स क्षमा मागी। अस्करी के गल म तलवार लटकाकर उसे हुमायूं के सामने पेश किया गया। अन्य अमीर भी हुमायूं क सामने लाये गये। इस समय अस्करी को उसका मूल पत्र दिखाया जो उसने, हुमायूं के मरुभूमि म रहते समय, अपने बिलोच सहायको को लिखा था। अस्करी इससे बहुत ही शरमिन्दा हुआ। हुमायूं ने उसे कुछ दिन के लिए बन्दी बनाने की आज्ञा दी।[2]

दुग के आत्म समपण के पश्चात् हुमायूं ने ईरानियो को आज्ञा दी कि व दुग निवासियो को दुग से निकलने के लिए तीन दिन का समय दें और इस बीच उन्हे किसी भी तरह परेशान न किया जाए। कन्धार पर अधिकार करने के पश्चात् हुमायूं ने दुग का शाहजादा मुराद, बुदाग खा तथा उसके साथियो को समर्पित कर दिया और स्वय उसने चारबाग मे पडाव डाला। प्रारम्भ म दुग म प्राप्त कोष पर हुमायूं ने अपनी तथा बुदाग खा की मुहरे लगा दी। बाद मे उसने कोष शाह के पास भेज दिया। शाह ने प्रसन्न होकर हुमायूं को 9 वस्त्र तथा एक द्रुतगामी खच्चर भेजा। शाह के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने क लिए हुमायूं खच्चर पर पाच छ कदम चढकर उतर आया।[3]

अस्करी के समपण के पश्चात् ही ईरानियो तथा हुमायूं म मतभेद प्रारम्भ हो गया। इस सम्बन्ध म तीन बात प्रमुख थी, दुग, दुग म प्राप्त कोष का वितरण तथा अस्करी का भविष्य। ईरानी चाहते थे कि दुग पर उनका अधिकार हो जाए और कोष को अधिकार म करके तथा अस्करी का बन्दी बनाकर वे शाह के पास भेज दे। हुमायूं ने दुग तो समर्पित कर दिया तथा कोष भी दे दिया, किन्तु वह अस्करी को समर्पित करने के लिए तयार नहीं था।

हुमायूं अपने सनिको के साथ चारबाग म पडाव डाले पडा था। बुदाग बेग तथा ईरानी सैनिक क धार के दुग म थे। इस बीच कुछ परिस्थितियां तथा कारणो

---

1 रे, हुमायूं इन पर्सिया, 52 नोट 4।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 235 36।

3 रे, हुमायूं इन पर्सिया, पृ० 53।

के परिणामस्वरूप हुमायू ने कधार पर अधिकार करने का निश्चय किया। हुमायू न बुदाग बेग क पास सूचना भेजी कि वह अस्करी को दुग के अन्दर बन्दी रखना चाहता है। मुगलो की योजना थी कि अस्करी के दुग मे प्रवेश करते समय दुग पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया जाए। प्रमुख मुगल अमीर इस योजना के अनुसार निश्चित स्थानो पर नियुक्त कर दिये गये थे। दुग के ईरानियो को सन्देह हो गया और उन्होने कुछ दिनो तक किसी को भी दुग के भीतर नही जाने दिया। कुछ हिन्दुस्तानी तथा मुगल ऊटो पर घास तथा इधन बेचने के बहाने दुग के अन्दर गये और पुन लौट आये। एक रात अपने गट्ठरो मे हथियार छिपाकर ये लोग दुग के अन्दर प्रवेश कर गये। दरबानो को इन्होने मार डाला तथा दुग का फाटक खोल दिया। हाजी मुहम्मद तथा उलूग मिर्जा मासूर फाटक पर नियुक्त थे। इन लोगो ने पहले प्रवेश किया। बैराम खा ने गन्दीगान फाटक से प्रवेश किया। ईरानी सैनिक इस अचानक आक्रमण के लिए तैयार नही थे। दुग की रक्षा करना असम्भव देखकर बुदाग बेग ने दुग छोड दिया तथा ईरानी सेना के साथ अपने देश लौट गया। हुमायू ने कधार पर अधिकार कर बैराम खा को वहा का दुगपति नियुक्त किया।[1] इसके पश्चात उसने शाह को एक पत्र भेजा जिसमे उसन लिखा कि "बुदाग का व्यवहार ठीक नही था, शाहजादा मुराद की मत्यु हो चुकी थी, इस कारण बैराम खा को, जो कि शाह का स्वामिभक्त सेवक है, कधार जागीर के रूप म दिया गया। शाह न हुमायू के इस प्रबध को स्वीकार किया।

क्या हुमायू ने विश्वासघात किया ?

मुगल इतिहासकारो ने हुमायू के कधार के दुग से ईरानियो को भगाकर अधिकार करन का समथन किया है। इसके विपरीत ईरानी इतिहासकारो ने हुमायू के इस काय की निन्दा की है। मुगल इतिहासकारो के अनुसार अभियान म अधिक दिन लग जाने के कारण ईरानी थक गये थ। कधार पर अधिकार करने के बाद बहुत से ईरानी सनिक हुमायू स आज्ञा लिये बिना ही वापस लौटकर

1 कधार के दुग पर हुमायू ने पुन कब अधिकार किया इसकी तिथि समकालीन इतिहासकारो ने नही दी है। जौहर लिखता है (स्टीवर्ट, पृ० 115) कि ईरानियो को दुग देने के पश्चात हुमायू एक महीने खलीजा बाग मे रुका रहा। ईरानियो को दुग 7 सितम्बर 1445 ई० को दिया गया था। अनुमानत अक्तूबर के दूसरे सप्ताह मे उसन कन्धार पर पुन अधिकार किया।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 240 41, बायजीद, पृ० 50 51, रे, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 56-57।

ईरान चले गये।[1] शाह के साथ जो संधि हुई थी उसके अनुसार उसे काबुल की विजय तक हुमायूं की सेवा में रहना चाहिए था। ईरानी सैनिकों में हुमायूं की सहायता करने का उत्साह भी नहीं था। बुदाग बेग तथा उसके आदमी कंधार की जनता पर अत्याचार कर रहे थे।[2] जिससे जनता आतंकित थी तथा वे लोग हुमायूं से न्याय की आशा करते थे। शाहजादा मुराद की मृत्यु हो गयी थी।[3] कंधार के दुर्ग को छोड़ने से हुमायूं को भय हुआ कि वह तुर्कमानों के हाथ में चला जाएगा। कंधार विजय के पश्चात् हुमायूं काबुल पर आक्रमण करना चाहता था। आक्रमण के पूर्व परिवार को किसी सुरक्षित स्थान में रखना आवश्यक था। जाड़ा प्रारम्भ हो गया था जिससे मुगल कष्ट में थे। हुमायूं ने बुदाग बेग से कुछ सामान तथा स्त्रियों को रखने के लिए दुर्ग में स्थान की मांग की। बुदाग बेग ने इसे अस्वीकार कर दिया। काबुल अभियान में स्त्रियों को ले जाना उपयुक्त न था। हुमायूं के प्रमुख अमीरों ने इस पर उसे परामर्श दिया कि दुर्ग पर अधिकार कर लेना चाहिए।[4] जौहर के अनुसार कंधार पर पुनः अधिकार का कारण ईरानियों द्वारा असकरी को बन्दी बनाकर ले जाने की मांग तथा हुमायूं के पड़ाव में आवश्यक सामग्रियों के ले जाने में उत्पन्न की हुई बाधा थी।[5]

मुगल इतिहासकारों के विरुद्ध ईरानी इतिहासकार उपर्युक्त दलीलों को अस्वीकार करते हैं। वे हुमायूं तथा मुगलों को प्रतिज्ञा तोड़ने के कारण विश्वासघाती समझते हैं। उनका मत है कि शाह के पुत्र मुराद की मृत्यु भी कंधार

---

1 अकबरनामा 1, पृ० 238।

2 वही 1, पृ० 238-39, मुन्तखबुत्तवारीख 1, पृ० 447 48।

3 ईरानी इतिहासकारों के अनुसार शाह के पुत्र की मृत्यु कंधार अभियान के पूर्व ही हो गयी थी। (अब्दुर्रहीम मुगल रिलेशन्स विद पर्शिया, इस्लामिक कल्चर 1934 ई०, पृ० 464 65)। इसके विपरीत मुगल इतिहासकारों के अनुसार बुदाग बेग के कंधार पर अधिकार करने के पश्चात उसकी मृत्यु हुई। फिरिश्ता के अनुसार (ब्रिग्स, 2, पृ० 159) कंधार ईरानियों को समर्पित करने के पश्चात हुमायूं काबुल पर आक्रमण करने को रवाना हुआ। मार्ग में मुराद की मृत्यु सुनकर वह लौट आया और बुदाग बेग द्वारा दुर्ग में प्रवेश न करने देने पर उसने दुर्ग का पुनः अवरोध किया।

4 अकबरनामा 1 पृ० 239 40, बायजीद पृ० 50। बदायूनी लिखता है कि शीत ऋतु की ठंड से बचने के लिए उसने दुर्ग में स्थान मांगा (मुन्तखबुत्तवारीख 1 पृ० 447)।

5 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 115।

पर अधिकार होने के पूव ही (दुग के अवरोध के समय) हो गयी थी। इस कारण यह कहना कि राजकुमार की मत्यु के कारण उस पर अधिकार किया गया, गलत है। मुगल कामरान के आक्रमण के लिए एक स्थान चाहते थे। इस कारण बराम खा के कहन पर उन्होने धोखे से दुग पर अधिकार कर लिया। इसके अतिरिक्त दुग के अ दर कुछ किजीलवाश दुग के सुनियो द्वारा मार डाले गये थे।[1] ईरानी सेना क धार से वापस नही गयी, बल्कि उसकी सहायता से ही बाद मे काबुल जीता गया। काबुल की विजय के पश्चात् शाह ने हुमायू को काबुल विजय पर बधाई दन के लिए तथा उससे कधार वापस मागने के लिए दूत भेजा किन्तु हुमायू ने उसे झूठे आश्वासन देकर लौटा दिया।

दोना पक्षा के कथनो के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि परिस्थितिया की विषमता तथा अन्य कारणो से दोनो दलो म गलतफहमी हो गयी। मुगल तथा ईरानियो का सहयोग दोनो के स्वाथ के कारण था। फिर भी दोनो मे शत्रुता के कुछ मूल कारण थे। दोनो म धार्मिक मतभेद था। अल्पकालीन सहयोग स दोनो का मतभेद गया नही तथा पारस्परिक धार्मिक सघप हाते रहे। क धार के दुग के अधिकतर निवासी सुन्नी थे, ईरानिया द्वारा उन पर अत्याचार की सूचना भी मुगला को प्राप्त हुई। इस तरह दोना दला म धार्मिक उत्तेजना जागत हुई। यह मतभेद अस्करी का बन्दी बनाकर शाह के पास न भेजन से और भी बढ गया। ईरानी एक तरफ तो सहायक होन के कारण मुगलो स अपने को उच्च समझते थे,[3] दूसरी तरफ उन्हे बराबर यह भय लगा रहता था कि कही हुमाय भी बाबर की तरह धोखा न दे। इस तरह दोना दला म परस्पर अविश्वास बढा तथा वे एक-दूसरे से सतक रहने लग। हुमायू तथा शाह मे कोई लिखित सि नही हुई थी। सम्भव है सभी ईरानी सनिको को इसका पूण ज्ञान न हो। इस बीच मुराद की मृत्यु बुदाग बेग के मुगला के परिवारा को दुग म शरण दने से इनकार करने, हुमायू के सहयोगियो को किसी सुरक्षित स्थान की आवश्यक्ता पर जोर देन तथा शीत ऋतु की भयकरता आदि से विवश होकर हुमायू को क धार पर अधिकार करना पडा।[4]

1 इस्लामिक कल्चर 1934 ई०, पृ० 465।

2 बदायूनी (मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 448) लिखता है कि एक दिन एक ईरानी सनिक ने प्रथम तीन खलीफाओ के विरुद्ध तबर्रा कहा जिससे यादगार नासिर मिर्जा बहुत ही नाराज हुआ और उसन बाण से उस व्यक्ति का मार डाला।

3 फिरिश्ता के अनुसार ईरानी मुगलो के अधीन रहने स असन्तुष्ट थ। ब्रिग्स, 2, पृ० 158।

4 बनर्जी, हुमायू, 2, पृ० 142।

न्याय की दृष्टि से हुमायू का कन्धार पर अधिकार उचित नही कहा जा सकता। हुमायू न शाह स इस शर्त पर सहायता ली कि वह कन्धार विजय करके ईरानिया को दे देगा। उसन ऐसा किया भी। यदि ईरानी सनिक जनता पर अत्याचार करत थे, अथवा ईरानी सनापतिया न हुमायू का जाडे म शरण देने स इनकार किया था, या शर्त के अनुसार काबुल, गजनी और बदख्शा पर अधिकार करन मे हुमायू की सहायता नही की, तो हुमायू के लिए यह उचित था कि वह शाह को इसकी सूचना देता और उसके उत्तर के पश्चात् काय करता। हुमायू न ऐसा कुछ भी नही किया और शाह को सूचित किय बिना ही उसन कन्धार के दुग पर अधिकार कर लिया।[1]

न्याय की दृष्टि से जो भी कहा जाए, व्यावहारिकता की दृष्टि स हुमायू न बुद्धिमानी का काय किया। उसन अरम खा को कन्धार का दुग द दिया और शाह को लिखा कि उसन केवल शाह के अधिकारिया म परिवतन ही किया है। शाह ने इसे स्वीकार कर लिया। ईरानी इतिहासकारा के अनुसार हुमायू न एक दूसरे दूत, काजी जैनुद्दीन शैंधाली को भी शाह के पास यह विश्वास दिलान के लिए भजा कि वह अपनी शक्ति सचित करन के पश्चात कन्धार लौटा देगा।[2] हुमायू के काबुल पर अधिकार करन के पश्चात् शाह न एक दूत, वलद बेग, को भेजकर हुमायू को बधाई दी तथा कन्धार समर्पित करन को कहा, किन्तु हुमायू न बदख्शा विजय के पश्चात ऐसा करने का आश्वासन दिया।[3] हिन्दुस्तान की विजय के पश्चात् हुमायू के क्या विचार थे, यह बताना कठिन है।

हुमायू के ईरान निवास का महत्त्व तथा परिणाम

हुमायू को ईरान म शरण मिली तथा ईरानिया की सहायता स उसन कन्धार के दुग पर अधिकार किया। यदि ईरान के शाह ने उस शरण न दी होती तो सभव था कि वह कामरान के हाथ पड जाता, और इसका क्या परिणाम होता इसकी हम केवल कल्पना कर सकत ह। यही नही, यदि शाह ने हुमायू को गिरफ्तार कर लिया होता या उस मार डाला होता तब भी कोई एसी शक्ति नही थी जो शाह से इसके लिए जवाब तलब करती। शाह की सहायता इस दृष्टि से महत्त्वपूण थी। किन्तु इसके पश्चात् की विजया की सफलता का श्रेय हुमायू को है। इसम शाह या उसके सनिका से कोई विशेष सहयोग नही प्राप्त हुआ था।

1 रे, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 60 61।

2 अब्दुरहीम का लेख, इस्लामिक कल्चर, 1934 इ०, पृ० 465 66।

3 वही, पृ० 466, अकबरनामा 1, पृ० 249।

शाह ने सहायता अवश्य दी थी कि तु उसका व्यवहार दया, प्रेम सज्जनता, अपमान घ णा तथा नीचता का सम्मिश्रण है। एक तरफ तो उसने शानदार स्वागत किया, दावतें दी, गले मिला, अपनी भतीजी से विवाह का वचन दिया, सनिक तथा धन दिया, और दूसरी तरफ, उसने हुमायू को आग म जलान की धमकी दी, उसे शिआ मत स्वीकार करन पर विवश किया तथा विदा के दूसरे दिन हुमायू जब मिलन गया तो उसने बठने को भी न पूछा। इस परस्पर विरोधी व्यवहार से उसकी सहायता का मूल्य बहुत ही कम हो जाता है।[1]

हुमायू के ईरान निवास का प्रभाव स्वय उस पर तथा मुगल सस्कृति पर पडा। इससे मुगलो से ईरान का कूटनीतिक सम्ब ध स्थापित हुआ। अकबर के राज्य ग्रहण करने के पश्चात, इस सम्पक के परिणामस्वरूप बहुत स अमीर, सनिक तथा साहित्य और कला के विशेषज्ञ ईरान से भारत आये और इस तरह ईरानी कला तथा साहित्य का प्रभाव मुगल साहित्य और कला पर पडा। अब्दुस्समद तथा मीर सैयिद अली न आगे चलकर मुगल चित्रकला को ज म दिया। इसी तरह मुगल वास्तु कला पर भी ईरानी प्रभाव पडा। हुमाय का मकबरा इसका स्पष्ट उदाहरण है। इस तरह हुमायू का ईरान निवास व्यथ नही गया।[2]

काबुल की प्रथम विजय

क धार पर अधिकार करने के पश्चात हुमायू ने विजित भाग अपन राज्य के उच्च पदाधिकारियो को प्रदान कर दिये। इस तरह उलूग मिर्जा को तीरी का प्रदेश, हाजी मुहम्मद खा को लहू के परगन, इस्माईल बेग को जमीनदावर, शेर अफगन को किलात तथा हदर सुल्तान को शाल प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त अन्य अमीरो को भी जागीरें प्राप्त हुइ।[3]

इस बीच अस्करी हुमायू की निगरानी स भागकर एक अफगान के घर म जा छिपा। अफगान न स्वय जाकर इसकी सूचना दी। हुमायू न ख्वाजा अम्बर नाजिर को उसे पकडने के लिए भेजा। अस्करी ऊनी कालीन के नीचे छिपा हुआ था जहा से

---

1 सर० जे० मैलकम, हिस्ट्री ऑफ पर्सिया, 2, पृ० 509, रे, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 58।

2 "The exile of Humayun in Iran though humiliating and painful was not altogether barren in its result र, हुमायू इन पर्सिया, पृ० 62।

3 अकबरनामा 1, पृ० 241।

पकड़कर उसे लाया गया।[1] हुमायूं ने उसे माहम अनगा के पति नदीम कोकलताश के संरक्षण में रख दिया।

कन्धार विजय के उपरान्त हुमायूं ने काबुल विजय करने का निश्चय किया। इसी बीच कुछ व्यापारियों ने कन्धार से जाते हुए ईरानी सैनिकों से उनके घोड़े खरीद लिये थे और उन्हें हुमायूं तथा उसके साथियों के हाथ उधार बेच दिये। उन्होंने इस बात की लिखा-पढ़ी कर ली कि वे मुगलों द्वारा हिन्दुस्तान की विजय के पश्चात इसका मूल्य लेंगे। हुमायूं के इस सौदे से स्पष्ट प्रतीत होता है कि उस समय हुमायूं के पास धन की कमी थी तथा व्यापारियों का यह आशा थी कि कदाचित हुमायूं भारत पर अधिकार कर लेगा।

अपनी सेना को तैयार कर हुमायूं काबुल की तरफ रवाना हुआ। दवा बेग हजारा की सहायता से उसने तीरी के दुर्ग में प्रवेश किया। तीन दिनों की बीमारी के पश्चात केवल चक में उसकी बुआ खानजादा बेगम की मृत्यु हो गयी।[3] वह वहीं दफनायी गयी तथा बाद में उसकी लाश काबुल ले जायी गयी जहां वह बाबर की कब्र के पास स्थायी रूप से दफना दी गयी।

मार्ग में हुमायूं को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कठिन मार्ग तथा जाड़े की कड़ी ठंड के साथ ही पड़ाव में महामारी फैल गयी जिससे बहुत से लोगों की मृत्यु हुई। इस समय हुमायूं के पास लगभग 2000 सैनिक और 71 अफसर थे।[4] वह शीघ्रातिशीघ्र काबुल पहुंच जाना चाहता था। मार्ग की कठिनाइयों को देखकर हिन्दाल ने सुझाव दिया कि अभियान स्थगित कर दिया जाय तथा जाड़े में सेना कन्धार में निवास करे। हुमायूं को यह परामर्श अच्छा

---

1 अकबरनामा, 1 पृ० 241।

2 वही पृ० 242। डॉ० बनर्जी का यह कथन कि इस घटना से यह पता चलता है कि हुमायूं भारतीय जनता का विश्वासपात्र था तथा इससे लोगों का उसके प्रति प्रेम प्रकट होता है, (बनर्जी, हुमायूं, 2, पृ० 146, नोट 2) सत्य नहीं प्रतीत होता। वास्तविक रूप में ये व्यापारी थे और व्यापार में इस तरह का सौदा होता रहता था। वे स्वयं ही लिखते हैं कि व्यापारियों ने इन घोड़ों की कीमत स्वयं निश्चित की। उन्होंने इन घोड़ों का मुंह मांगे दाम में विक्रय किया। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने खतरा लेकर यह सौदा किया। ये व्यापारी काबुल के थे। हिन्दुस्तानी शब्द का प्रयोग इस लिए किया गया है कि काबुल भी उस समय हिन्दुस्तान का एक भाग समझा जाता था। इस घटना से हुमायूं की आर्थिक कठिनाई का पता चलता है।

3 हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ० 175-76 अकबरनामा, 1, पृ० 242।

4 बायजीद, पृ० 52, अकबरनामा, 1, पृ० 243।

नही लगा और उसन हिन्दाल से कहलाया कि वह अपना काय देखता रहे और उसकी चिन्ता न करे। यदि वह आराम चाहता है ता अपनी जागीर जमीनदावर मे जाडा व्यतीत कर। इससे स्पष्ट होता है कि हुमायू म पहले की कमजोरी कम हो गयी थी। हिन्दाल ने यह सुझाव सच्चे हृदय से दिया था। उसने हुमायू से क्षमा मागी और उसके साथ रवाना हो गया।

कामरान सतक था। उसने काबुल के दुग की रक्षा का प्रबन्ध किया। उसने एक बडी सेना एकत्र की तथा कासिम बरलास की एक सेना के साथ हुमायू को खिमार के दर्रे पर रोकने के लिए भेजा और मीर आतिश कासिम मुखलिस तुरबाती को वहा तोपखाना स्थापित करने की आज्ञा दी। उसे आशा थी कि वह हुमायू को सरलता से पराजित कर देगा। किन्तु भाग्य हुमायू के साथ था। ख्वाजा मुअज्जम, हाजी मुहम्मद तथा शेर अफगन के नेतृत्व म हुमायू की सेना ने खिमार दर्रे पर अधिकार कर कासिम बरलास को पीछे हटा दिया।

हुमायू की प्रगति के परिणामस्वरूप कामरान के बहुत स सहयोगी उसे छोडकर हुमाय से आ मिले। इन व्यक्तियो म कामरान का प्रधान मन्त्री बाबुस बेग, मीर आतिश तुरबानी तथा मीर अज सयिद अब्बास भी थे।[1] कामरान इससे बहुत ही चिन्तित हुआ। उसन देखा की सघष व्यथ है अत सन्धि करने का निश्चय किया। वार्ता के लिए उसने ख्वाजा खावन्द महमूद तथा ख्वाजा अब्दुल खालिक को अपना दूत बनाकर भेजा। य लाग हुमाय से बात कर कामरान के पास लौट गये तथा कह गये कि यदि कामरान तैयार हो गया तो व दोपहर तक वापस आएगे। उनके न लौटन पर हुमायू ने रोशन इशाक बग का कामरान क पास भेजा। हुमायू कामरान को इस शत पर क्षमा करने के लिए तैयार था कि वह स्वय आकर क्षमा मागे। कामरान ने इसका कोई उत्तर नही दिया। फिर भी हुमायू का सन्धि की आशा थी। इस कारण उसने सनिक कायवाइया स्थगित कर दी।

कामरान का सास लेने का अवसर मिला। किन्तु उसका साहस समाप्त हो गया था। उसन देखा कि उसके निकट जितन भी व्यक्ति ह उनमे वह किसी का विश्वास नही कर सकता। अद्धरात्रि म उसन 12,000 सिपाहियो को बरखास्त कर दिया और अपन लडके मिर्जा इब्राहीम तथा स्त्री के साथ दुग छोडकर गजनी के तरफ रवाना हुआ। हुमायू ने हिन्दाल के नतत्व म 700 भाले युक्त सिपाहियो को कामरान का पीछा करने के लिए भेजा। उसका लक्ष्य था कि या तो कामरान

1 बायजीद, पृ० 55 57, जौहर स्टीवट, पृ० 118 अकबरनामा, 1, पृ० 243 44।

2 जौहर, स्टीवट, पृ० 119 20, बायजीद, पृ० 57 58।

को गिरफ्तार कर लिया जाए या उसे इन भागो से भगा दिया जाए। कामरान एक स्थान से दूसरे स्थान को भागता गया और भागकर वह हजारा जिले म पहुचा। यहा उसन अपनी लडकी का विवाह किया। यहा से भागकर वह सिन्ध की तरफ रवाना हुआ जहा उसने मिर्जा शाह हुसेन अरगून की लडकी से विवाह किया और वही रहने लगा।[1]

हुमायू को कामरान के भागने की सूचना मिली। उसने बाबुस बेग को नागरिको के रक्षार्थ तथा नगर पर अधिकार करने के लिए भेजा तथा स्वय काबुल मे प्रवेश किया (17 नवम्बर 1545 ई०)। यहा नागरिको ने नगर मे हुमायू के स्वागत मे रोशनी की। हुमायू ने सावजनिक क्षमा की घोषणा की तथा अपने सेवको को जागीरे प्रदान की। इस तरह हिन्दाल को गजनी, तथा उलूक मिर्जा को जमीनदावर एव तौरनी प्राप्त हुए। चौसा तथा कन्नौज के युद्ध मे मारे गय लोगो के परिवारो को भी दान दिया गया।

अकबर स मिले हुए हुमायू को दो वप से अधिक हो गये थ और गुलबदन बेगम तथा दिलदार बेगम से वह पाच वप से नही मिला था। काबुल विजय के पश्चात् इन सब लोगो से उसकी मुलाकात हुइ।[3] इसके पश्चात् हुमायू अकबर के खतने के सिलसिले मे दावतो तथा जलसा मे व्यस्त रहा।[4] इसी समय ईरान के

---

1 तबकाते अकबरी डे, 2 प० 107, अकबरनामा, 1, प० 257, मुन्तखबुत्त-वारीख, 1, प० 449।

2 बायजीद, निजामुद्दीन अहमद, बदायूनी तथा फिरिश्ता के अनुसार 10 रमजान 952 हि० और गुलबदन बेगम तथा अबुल फजल के अनुसार 12 रमजान 952 हि० (17 नवम्बर 1545 ई०) को काबुल पर हुमायू ने अधिकार किया। गुलबदन तथा अबुल फजल द्वारा दी गयी तिथि सही है। इस तिथि की विवेचना के लिए देखिए अर्सकिन 2, प० 325 नोट 2, अकबरनामा, बेवरिज, प० 480 नोट 2 इश्वरी प्रसाद, हुमायू, प० 255 56, नोट 6, तबकात अकबरी डे, 2, प० 106 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2 पृ० 160, मुन्तखबुत्तवारीख, 1 प० 449।

3 अबुल फजल लिखता है कि इस समय अकबर की बुद्धि परीक्षा हुई। एक शाहाना जश्न का आयोजन किया गया। अन्त पुर की सभी स्त्रिया आयी। अकबर लाया गया। उसने अपनी माता हमीदा बानो को 'दवी प्रकाश द्वारा पहचान लिया (अकबरनामा, 1, प० 247)। अकबर का यह पहचानना दैवी प्रकाश के कारण नही वरन् मातस्नेह के कारण था। बालक अकबर न देखा होगा कि उपस्थित महिलाओ म हमीदा बानो ही उसस मिलने को सबसे अधिक विह्वल है। यह स्वाभाविक था। माता न बालक को लगभग दो वप से नही देखा था और अकबर उसकी गोद म जा बठा।

4 अकबरनामा, 1, प० 248 49, बायजीद, पृ० 60, हुमायनामा, बेवरिज, पृ० 178 79।

शाह का दूत हुमाय के काबुल विजय के उपलक्ष्य मे बधाई देने तथा कन्धार का दुग प्राप्त करन की आशा से आया।

यादगार मिर्जा काबुल से बदख्शा चला गया था जिसका वणन किया जा चुका है। वह भी हुमायू के पास वापस लौट आया। इसने हुमायू के साथ बहुत अच्छा व्यवहार नही किया था, कि तु हुमायू ने इसे क्षमा कर दिया। यादगार नासिर मिर्ज़ा न अपनी आदत नही छोडी। हुमायू इसस बहुत क्रोधित हुआ और यह निश्चय हो जान पर कि वह पुन उसका विरोध करने पर उतारु है, उसने उसे ब दी बना लिया।[1] इसी समय मुईद बेग की मत्यु हो गयी। यह हुमायू के लिए एक दुर्भाग्य समझा जाता था और ईरानी इसे जीवित शतान कहते थे।

बदख्शा विजय

कामरान से अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त कर सुलेमान मिर्जा बदख्शा चला गया था। यह उसके पूवजा का राज्य था, इसपर अधिकार करने म उसे अधिक कठिनाई नही हुई। उसन अपनी शक्ति सगठित की तथा खुस्त अन्दराव तथा कु दूज पर भी अधिकार कर लिया। य भाग बदख्शा के अधिकार क्षेत्र म नही आते थे। मिर्ज़ा सुलेमान न अपने नाम से खुत्बा पढवाया तथा एक स्वतन्त्र शासक की भाति खुल्लम-खुल्ला विरोध प्रारम्भ कर दिया। हुमायू ने कई बार उसके पास फरमान भेजकर उसे काबुल बुलाया पर वह हर बार टालमटाल करता रहा और उपस्थित न हुआ। उसके कुछ सहयोगियो ने उसे डरा दिया था कि उसके काबुल पहुचते ही हुमायू बदख्शा पर अधिकार कर लेगा। इस कारण हुमायू के फरमान के उत्तर मे उसने लिखा कि कामरान ने बदख्शा लौटाते समय उससे कसम खिला ली थी कि वह बिना युद्ध किये हुमायू के सामने उपस्थित नही होगा। हुमायू की इच्छा थी कि सुलेमान मिर्ज़ा का राज्य उतना ही रहन दिया जाए जितना बाबर ने उसके पिता को दिया था कि तु सुलेमान के इस पत्र से स्पष्ट हो गया कि युद्ध के अतिरिक्त अन्य माग नही था।

यादगार नासिर का अन्त

यादगार नासिर मिर्जा ने हुमायू के भाइया की तरह उसे सदा धोखा दिया था। बदख्शा अभियान क समय यदि उसे काबुल म ही ब दी रखा जाता तो भय था कि कही वह पुन कोइ कठिनाई न उपस्थित कर दे। इसी बीच सूचना मिली कि वह भागन का प्रयत्न कर रहा है। उसके अपराधा की सूची बनी और उसपर

1 अकबरनामा, 1, पृ० 249 50।

2 बायजीद, प० 61, जौहर, स्टीवर्ट प० 122, अकबरनामा, 1, प० 51।

तीस अपराध लगाय गय। उस मृत्यु-दण्ड दिया गया और मुहम्मद अली तगाई का, जिसके सुपुर्द काबुल की प्रतिरक्षा थी, यह काय सौंपा गया, किन्तु उसन निवदन किया कि उसन जीवन म एक गौरया भी नहीं मारी ह, उसक लिए यह काय असम्भव है। हुमायू न यह काय मुहम्मद कासिम मौजी को सौंपा, जिसन उसको हत्या कर दी। बाद म उसकी लाश कजबीन ल जायी गयी जहा उस नासिर मिर्जा (बाबर का छोटा भाई) के कब्रिस्तान म दफन कर दिया गया।[1]

बदख्शा अभियान

सुलमान मिर्जा स किसी भी तरह समपण की आशा न दखकर 1546 ई० म एक बडी सना के साथ हुमायू ने बदख्शा की तरफ प्रस्थान किया। ईरानी दूत क साथ आय हुए कुछ ईरानी सनिक तथा कूटनीतिज्ञ भी हुमायू के साथ ही बदख्शा रवाना हुए।[2] प्रस्थान के पूव हुमायू न मीर मुहम्मद अली को काबुल की सुरक्षा क लिए नियुक्त कर दिया तथा बन्दी अस्करी को अपने साथ रखन का निश्चय किया जिसस उसकी अनुपस्थिति म वह कुछ गडबडी न करे।

सुलेमान जानता था कि हुमायू उसपर आक्रमण करेगा। इस कारण उसन युद्ध की तैयारी कर ली थी तथा शत्रु की प्रतीक्षा कर रहा था। तीरगरान नामक स्थान पर दोना सनाओ म भीषण युद्ध हुआ। इस युद्ध म ईरान के शाह के अगरक्षक दल क सनिका न बडी बहादुरी दिखायी। सुलेमान भी बहादुरी से लडा किन्तु हुमायू के सनिका के सामन वह खडा न रह सका। उसके सनिक भागन लगे और उसे भी भागकर खुस्त मे शरण लनी पडी। उसके बहुत-से सनिका न हुमायू की सेना म प्रवश किया। सुलेमान खुस्त स भागकर कुलाब चला गया।[3] हुमायू ने आग बढ़कर खुस्त पर अधिकार किया। वहा से कलागान होता हुआ किश्म पहुचा। बदख्शा के अधिकाश उच्च पदाधिकारियो न समपण कर दिया।

किश्म म हुमायू ने बदख्शा के अधिकृत भाग अपने आदमियो म बाट दिय। इस तरह हिन्दाल को कुन्दुज तथा उसक निकट के भाग, मुनीम खा को खुस्त तथा बाबुस को तालीकान प्राप्त हुआ।[4] बदख्शा की व्यवस्था करने के पश्चात् हुमायू न जाडे भर किला-ए-जफर म रहकर बदख्शा की स्थिति को पूण रूप से व्यवस्थित करने का निश्चय किया। इस विचार स वह किला-ए-जफर की तरफ रवाना हुआ, किन्तु माग म शाखदान नामक स्थान पर वह अचानक बीमार पड गया (15 नवम्बर

1 बायजीद, पृ० 61 62, अकबरनामा 1, पृ० 251।

2 अकबरनामा 1, प० 252।

3 वही, प० 151-52, बनर्जी, 2, पृ० 157 58, बायजीद, प० 70।

4 अकबरनामा, 1, प० 253।

1546ई०) । चार दिन तक बेहोश रहा। इस बीच उसके शत्रुओं ने यह अफवाह फैला दी कि उसकी मृत्यु हो गयी है। इस समाचार ने पुन राजनीतिक भूकम्प ला दिया। मिर्ज़ा सुलेमान के समर्थक सिर उठाने लगे। यही नही, हुमायू के समर्थक भी परिस्थिति से लाभ उठाने का अवसर ढूढने लगे। मिर्ज़ा हिन्दाल भी कुत्सित विचारो सहित अन्य अमीरो को लेकर काकटा नदी के तट तक पहुच गया।[1] मध्य युग मे सम्राटो के व्यक्तित्व का कितना महत्त्व था तथा केवल उसकी मृत्यु की सूचना से ही कितनी गडबडिया हो सकती थी इन घटनाओ से हम इसकी कल्पना कर सकते है। हुमायू की बेहोशी मे कराचा बेग ने साहस, दृढता तथा स्वामिभक्ति का प्रदर्शन किया। गडबडी मे उसे भय हुआ कि बन्दी अस्करी कही भाग न जाए, इस कारण उसने उसे अपने खेमे मे लाकर रखा तथा सतर्कता बरती। पाचवे दिन होश आते ही हुमायू ने सबको समझाने के लिए कराचा बेग को भेजा और फज़ील बेग को काबुल रवाना किया जिससे वहा गलत अफवाह न फैल सके।[2]

हुमायू को पूर्ण स्वस्थ होने मे दो माह लगे। उसकी बीमारी मे हमीदा बानो तथा मौलाना बायजीद ने, जो चिकित्साशास्त्र का उत्तम ज्ञाता था, उसकी बडी सेवा की।

काबुल पर कामरान का पुन अधिकार

हुमायू की बीमारी से कामरान ने लाभ उठाया। जैसा ऊपर वर्णन किया जा चुका है, वह सिन्ध मे शाह हुसेन अरगून के साथ रह रहा था। उसने शाह हुसेन से एक हज़ार अश्वारोही लिये तथा किलात आया। यहा कुछ अफगान व्यापारियो से उसने जबरदस्ती घोडे छीन लिये। गजनी के मार्ग मे उसने पुन कुछ घोडे छीने और इस तरह लूट-पाट से आवश्यक वस्तुए एकत्र करता हुआ वह ग़ज़नी पहुचा। गजनी हिन्दाल मिर्ज़ा की जागीर थी किन्तु इस समय हिन्दाल वहा नही था। वहा का शासन गवर्नर ज़ाहिद बेग के अधिकार मे था। वह अच्छा शासक नही था। जिस समय कामरान पहुचा, ज़ाहिद बेग शराब के नशे मे बेहोश अपने बिस्तर पर सो रहा था। अब्दुर्रहमान कस्साब की सहायता से कामरान के सैनिक कमन्द द्वारा किले मे प्रवेश कर गये। कामरान ने बिना कठिनाइयो के ग़ज़नी पर अधिकार कर लिया। ज़ाहिद बेग पकडकर उसके सामने लाया गया और मार डाला गया।[3]

कामरान ने अपने दामाद दौलत सुल्तान को ग़ज़नी के शासन हेतु नियुक्त

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 253।

2 वही, पृ० 253 54, जौहर, स्टीवर्ट, 123 24।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 258, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 109।

अथवा राक्षस की यह प्रथा है? ऐसा आदेश देने वाले की जिह्वा क्यों न गूंगी हो गयी? अबुल फ़ज़ल का क्रोध स्वाभाविक है।

कामरान ने यह काम क्यों किया? वह चाहता था कि हुमायूं अपनी गोलाबारी बन्द कर दे। वह जानता था कि अकबर को किले की दीवार के ऊपर रखने की सूचना पाते ही हुमायूं गोलाबारी बन्द कर देगा। हुआ भी वैसा ही। यदि उसका लक्ष्य अकबर को मारने का होता तो अन्य साधनों से भी वह ऐसा कर सकता था। *गुलबदन के वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि इसकी सूचना भी किसी ने हुमायूं को* जाकर दी[1] जिससे कामरान के लक्ष्य की पूर्ति तथा अकबर की रक्षा हो गयी।

हुमायूं ने किले का अवरोध और कठोर कर दिया। इसी समय जमीनदावर से उलूग़ मिर्ज़ा, किलात से कासिम हुसैन खां शैबानी, क़न्धार से शाह कुली सुल्तान तथा कुछ अन्य लोग बदख्शां में हुमायूं की सेवा में आ उपस्थित हुए।[2] इससे हुमायूं को काफी शक्ति मिली तथा कामरान भी भयभीत हुआ।

सब तरफ से निराश होकर कामरान ने कठोर नीति को त्याग कर दया तथा पारितोषिक की प्रतिज्ञा कर अमीरों का अपने वश में करने का प्रयत्न किया, किन्तु दुर्ग के भीतर अमीरों में निराशा बढ़ती गयी। उन्हें स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि आज नहीं तो कल निश्चय ही दुर्ग पर हुमायूं अधिकार कर लेगा। यदि वे इस समय हुमायूं से मिल जायेंगे तो उन्हें अधिक लाभ होगा। इसी समय कामरान को पता चला कि हुमायूं की सहायता को और लोग भी आ गये हैं और दुर्ग की रक्षा करना अब असम्भव है। उसके हाथ-पैर फूल गये। 27 अप्रैल 1547 ई० की मध्य रात्रि में कामरान चुपके से काबुल के दुर्ग के दिल्ली दरवाजे से निकलकर भाग गया।[3] हुमायूं ने हिन्दाल तथा अन्य अमीरों को कामरान का पीछा करने के लिए भेजा। उन लोगों ने कामरान को पकड़ लिया। कामरान के पास भागने के लिए घोड़ा भी नहीं था और वह एक आदमी के कन्धे पर बैठकर भागने का प्रयत्न कर

---

1 हुमायूंनामा, पृ० 81, बेवरिज, पृ० 183। गुलबदन उस समय वहां मौजूद थी, उसके शब्द इस प्रकार हैं—
(*आखिर मरदुम व अर्जे अकदस अशरफ रसानीदन्द कि मिर्ज़ा मोहम्मद अकबर रा दर रूबरू निगाह दाश्तए अन्द।*)

2 अकबरनामा, 1 पृ० 266।

3 बायज़ीद (पृ० 84) के अनुसार कामरान ने मिर्ज़ा हिन्दाल से सम्पर्क स्थापित कर लिया था। भागते समय पहरेदारों ने उसे पहचानकर पकड़ लिया। कामरान ने उसे घूस के तौर पर एक थैली दे दी। पहरेदार ने उसे छोड़ दिया और वह भाग गया। निज़ामुद्दीन के अनुसार ख्वाजा खिज्र की तरफ एक छेद बनाया गया और कामरान नंगे पैर भाग गया (तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 113)।

रहा था। हिंदाल को कामरान पर दया आयी, उसने उसे एक घोड़ा दिया तथा उसे भाग जाने दिया। इस तरह कर्तव्य को त्यागकर हिंदाल ने भाई के प्रेम से प्रभावित होकर उसे भागने में सहायता की।[1]

कामरान के दुर्ग को छोड़कर भाग जाने के पश्चात् हुमायूं ने काबुल के दुर्ग में प्रवेश किया। पूरी रात उसके सैनिक नगर में लूटपाट करते रहे। कामरान के साथ सहयोग करने के कारण हुमायूं दुर्गवासियों से नाराज था। वह उन्हें दण्ड देना चाहता था। इसी से उसने अपने सैनिकों को उस रात कत्ले आम से नहीं रोका। कुछ धार्मिक व्यक्ति भी कामरान के साथ सहयोग करने के अपराध में मार डाले गये।[2] अभागे नागरिकों के प्रति हुमायूं का यह व्यवहार न्यायसंगत नहीं था। पिछले अध्याय में हम वर्णन कर आये हैं कि गुजरात अभियान के समय भी हुमायूं ने इसी तरह का व्यवहार किया था। काबुल के शासक तमय किन्तु अभागे निवासियों के लिए कठिन अग्नि परीक्षा थी। उन पर कामरान ने भी अत्याचार किया और हुमायूं ने भी।

कामरान का पलायन तथा हुमायूं से संघर्ष

काबुल के दुर्ग से निकलकर कामरान ने बदख्शां जाने का विचार किया। रात में केवल एक सेवक अली कुली कुरची के साथ वह सजिद आया। मार्ग में हजारा लोगों ने उसका सामान लूट लिया। उसे पहचानकर उन लोगों ने उसे जुहाक तथा बमियान भेज दिया। जुहाक में उसकी मुलाकात अपने पुराने सेवक मिर्जा बेग तथा शेर अली से हो गयी। उसने कुछ सेना भी एकत्र कर ली और उसकी सहायता से गुरी दुर्ग के हाकिम मिर्जा बेग बरलास को पराजित कर ...

1 अकबरनामा (भाग 1, पृ० 268) के अनुसार हाजी मुहम्मद खां एवं अन्य लोग जो कामरान का पीछा करने के लिए भेजे गये थे उस तक पहुंच गये किन्तु कृतघ्नता के प्राचीन जादू एवं प्रभाव के कारण उसे ऐसा समझकर छोड़ दिया, मानो उसे देखा न हो। जौहर के अनुसार हिंदाल ने कामरान को एक आदमी की पीठ पर भागते हुए देखा तथा उसने एक घोड़ा देकर उसे भागने में सहायता दी (स्टीवर्ट पृ० 127-28)। निजामुद्दीन अहमद तथा बदायूनी के अनुसार हुमायूं ने हाजी मुहम्मद खां को कुछ सैनिकों के साथ कामरान का पीछा करने के लिए भेजा। जब हाजी मुहम्मद कामरान के निकट आया तो उसने उसे पहचानकर तुर्की भाषा में कहा 'क्या मैंने तुम्हारे पिता बाबा कुश्का की हत्या की है?' हाजी मुहम्मद खां उपेक्षा करके लौट आया। बायजीद, पृ० 84, तबकाते अकबरी, जि० 2, पृ० 113-14, मुन्तखबुत्तवारीख, पृ० 450।

2 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 128।

पर अधिकार कर लिया।[1] शर अली को वही छोडकर वह स्वय सुलेमान मिर्जा स सहायता की आशा स बदख्शा गया, कितु सुलेमान मिर्जा स उस कोई सहायता न प्राप्त हुई। चारा तरफ स निराश होकर उसने ऊजबेको स सहायता लेने का विचार किया तथा बल्ख की तरफ रवाना हुआ।

चगताइयो तथा ऊजबेका का पारस्परिक सघर्ष पुश्तैनी था। बल्ख उस समय पीर मुहम्मद खा के अधिकार म था। उसने कामरान का स्वागत किया। चगताइयो (मुगलो) का आपस म लडाकर वह लाभ उठाना चाहता था। कामरान को और कही से आशा नही थी। दोना म एक सधि हुई जिसक अनुसार पीर मुहम्मद ने कामरान को बदख्शा तथा काबुल विजय करने म पूर्ण सहायता देने का वचन दिया। इसक बदले म कामरान न इन प्रदेशो पर अधिकार होने के पश्चात् बदख्शा ऊजबेको को देने का आश्वासन दिया। इस तरह पीर मुहम्मद तथा बल्ख की सेना की सहायता से कामरान न पुन युद्ध आरम्भ किया।

काबुल पर अधिकार करने के पश्चात हुमायू न कराचा खा को कामरान के विरुद्ध भेजा। उसने हिदाल तथा सुलेमान मिर्जा को इस अभियान मे कराचा खा को सहायता देने की आज्ञा दी। कराचा खा न मिर्जाओ के साथ गूरी के किले पर आक्रमण किया। शेर अली ने उनका डटकर सामना किया किन्तु वे किले पर अधिक दिन अधिकार न रख सके और भाग खडे हुए। हुमायू की सेना ने गूरी पर अधिकार कर लिया।[2] यहा स सेना कामरान क विरुद्ध आग बढी।

ऊजबेको की सहायता से कामरान की शक्ति बढ गयी। उसने एक एक करके किला ए जफर, बगलान, किश्म, तालीकान इत्यादि पर अधिकार कर लिया। हुमायू की सेना परजित हुई। हिदाल को कुन्दुज के दुर्ग म शरण लेनी पडी और कराचा खा को सहायता के लिए काबुल जाना पडा।

बदख्शा की इस दुरवस्था की सूचना पाकर हुमायू काबुल स बदख्शा की तरफ रवाना हुआ (जनवरी 1547 ई०)। कठोर जाडा पड रहा था। यात्रा कठिन थी, फिर भी हुमायू ने साहस नही छोडा और गूरबन्द[4] तक पहुच गया। यहा उसकी मुलाकात कराचा खा स हुई। भाग म कबायलियो ने उसका सामान लूट लिया था। काबुल जाकर वहा से आवश्यक वस्तुए एकत्र कर पुन वापस आने की अनुमति लेकर वह काबुल चला गया। हुमायू गूरबन्द से आगे बढकर गुलबहार म कराचा खा की प्रतीक्षा करता रहा। इस बीच बरफ पडने लगी जिसके कारण

---

1 अकबरनामा, I, पृ० 268 69।

2 बायजीद, प० 84।

3 अकबरनामा, I, पृ० 269।

4 काबुल से 40 मील उत्तर।

हिंदूकुश के मार्ग बन्द हो गये। आगे बढ़ना असम्भव देखकर हुमायूँ को पुनः काबुल लौट आना पड़ा।[1]

काबुल लौटने के पश्चात शुभ दिन तथा शुभ मुहूर्त में अकबर का विद्यारम्भ हुआ।(7 शव्वाल 954 हि० अर्थात 20 नवम्बर 1547ई०)। हुमायूँ ने उस समय के प्रख्यात विद्वान मुल्लाज़ादा मुल्ला ईसामुद्दीन इब्राहीम को अपने पुत्र का शिक्षक नियुक्त किया। इसामुद्दीन को कबूतरबाज़ी का बहुत शौक था, इस कारण बालक की शिक्षा का उचित प्रबन्ध नहीं हो सका। हुमायूँ ने कुछ ही दिन बाद उसे बदलकर मौलाना बायजीद को इस कार्य के लिए नियुक्त किया।

कामरान शान्त नहीं था। हुमायूँ के सहयोगियों को अपने पक्ष में करने का प्रयत्न वह बराबर करता रहा। इसके परिणामस्वरूप लगभग 3,000 अश्वारोही तथा कुछ बहुत ही विश्वासपात्र अमीर, जैसे कराचा खाँ,[3] बाबुस बेग, ईस्माइल बेग दुल्दाई इत्यादि उसे छोड़कर बदख्शाँ में कामरान से जा मिले। इतने आदमियों

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 269 70।

2 अकबरनामा, 1 पृ० 270 71। अकबर साक्षर था या नहीं, इस प्रश्न की विवेचना के लिए देखिए, बनर्जी, हुमायूँ, 2, पृ० 269-73। एम० एल० राय चौधरी, वाज़ अकबर इललिटरेट, इण्डियन हिस्टारिकल क्वाटरली, 1940 ई० पृ० 727 37।

3 कराचा खाँ ने हुमायूँ की अस्वस्थता में उसकी बड़ी सेवा की थी। उसकी शक्ति बढ़ गयी थी इससे वह घमंडी हो गया था। वह समझता था कि उसके बिना हुमायूँ का कोई भी कार्य नहीं हो सकेगा। उसके तात्कालिक नाराज़ होने का कारण यह था कि उसने दीवान ख्वाजा गाज़ी को 10 तूमान सरकारी राजकोष से अपने नाम पर देने के लिए परवाना लिख दिया। नियमानुसार न होने के कारण दीवान ने यह धन देने से इनकार कर दिया। कराचा बहुत अप्रसन्न हुआ। हुमायूँ ने अकबर को कराचा खाँ के पास उसे समझाने के लिए भेजना चाहा किन्तु एक सहयोगी के यह कहने पर कि राज्य के कर्मचारी के सम्मुख राजकुमार का जाना न्याय संगत नहीं है हुमायूँ ने अकबर को नहीं भेजा क्योंकि उसे यह भय हुआ कि कहीं वह अकबर को बंधक के रूप में न रख ले। एक दूसरे व्यक्ति को कराचा खाँ के पास भेजा गया। इस बार कराचा ने यह शर्त रखी कि ख्वाजा गाज़ी को उसे समर्पित कर दिया जाए। हुमायूँ ने कराचा खाँ के पास एक अन्य दूत भेजा और उसे सूचित किया कि वह एक वज़ीर है और ख्वाजा गाज़ी एक-न-एक दिन उसके अधीन आ ही जायगा, किन्तु कराचा खाँ को इससे सन्तोष नहीं हुआ और वह कामरान के पास भाग गया। जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 128 29, बायज़ीद, पृ० 85 का वर्णन भिन्न है, अकबरनामा, 1, पृ० 272, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 115।

पर अधिकार कर लिया।[1] शेर अली को वही छोडकर वह स्वय सुलमान मिर्जा से सहायता की आशा से बदख्शा गया, कि तु सुलमान मिर्जा से उस कोइ सहायता न प्राप्त हुई। चारा तरफ से निराश हाकर उसने ऊजवेको से सहायता लेन का विचार किया तथा बल्ख की तरफ रवाना हुआ।

चगताइया तथा ऊजवेको का पारस्परिक सघप पुश्तैनी था। बल्ख उस समय पीर मुहम्मद खा के अधिकार म था। उसने कामरान का स्वागत किया। चगताइया (मुगला) को आपस म लडाकर वह लाभ उठाना चाहता था। कामरान को और कही से आशा नही थी। दोना म एक सधि हुई जिसक अनुसार पीर मुहम्मद ने कामरान को बदख्शा तथा काबुल विजय करने म पूण सहायता देने का वचन दिया। इसके बदले म कामरान ने इन प्रदेशा पर अधिकार होने के पश्चात बदख्शा ऊजवेका का देने का आश्वासन दिया।[2] इस तरह पीर मुहम्मद तथा बल्ख की सेना की सहायता से कामरान ने पुन युद्ध आरम्भ किया।

काबुल पर अधिकार करने के पश्चात हुमायू ने कराचा खा को कामरान के विरुद्ध भेजा। उसने हि दाल तथा सुलेमान मिर्जा को इस अभियान म कराचा खा को सहायता देने की आज्ञा दी। कराचा खा न मिर्जाआ के साथ गूरी के किले पर आक्रमण किया। शेर अली न उसका डटकर सामना किया किन्तु वे किले पर अधिक दिन अधिकार न रख सके और भाग खडे हुए। हुमायू की सेना ने गूरी पर अधिकार कर लिया।[3] यहा से सेना कामरान के विरुद्ध आगे बढी।

ऊजवेका की सहायता से कामरान की शक्ति बढ गयी। उसने एक एक करके किला ए जफर, बगलान, किश्म, तालीकान इत्यादि पर अधिकार कर लिया। हुमायू की सेना पराजित हुई। हि दाल को कुन्दुज के दुग म शरण लेनी पडी और कराचा खा को सहायता के लिए काबुल जाना पडा।

बदख्शा की इस दुरवस्था की सूचना पाकर हुमायू काबुल से बदख्शा की तरफ रवाना हुआ (जनवरी 1547 ई०)। कठोर जाडा पड रहा था। यात्रा कठिन थी, फिर भी हुमायू ने साहस नही छोडा और गूरब द[4] तक पहुच गया। यहा उसकी मुलाकात कराचा खा से हुई। माग म कबायलिया ने उसका सामान लूट लिया था। काबुल जाकर वहा से आवश्यक वस्तुए एकत्र कर पुन वापस आने की अनुमति लेकर वह काबुल चला गया। हुमायू गूरबन्द से आग बढकर गुलबहार म कराचा खा की प्रतीक्षा करता रहा। इस बीच बरफ पडने लगी जिसके कारण

1 अकबरनामा, 1, पृ० 268 69।

2 बायजीद, प० 84।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 269।

4 काबुल से 40 मील उत्तर।

हिन्दूकुश के मार्ग बन्द हो गये। आगे बढ़ना असम्भव देखकर हुमायूं को पुन काबुल लौट आना पड़ा।[1]

काबुल लौटने के पश्चात् शुभ दिन तथा शुभ मुहूर्त में अकबर का विद्यारम्भ हुआ।(7 शव्वाल 954 हि० अर्थात् 20 नवम्बर 1547ई०)। हुमायूं ने उस समय के प्रख्यात विद्वान् मुल्लाजादा मुल्ला ईसामुद्दीन इब्राहीम को अपने पुत्र का शिक्षक नियुक्त किया। ईसामुद्दीन को कबूतरबाज़ी का बहुत शौक था, इस कारण बालक की शिक्षा का उचित प्रबन्ध नहीं हो सका। हुमायूं ने कुछ ही दिन बाद उसे बदलकर मौलाना बायज़ीद को इस कार्य के लिए नियुक्त किया।

कामरान शान्त नहीं था। हुमायूं के सहयोगियों को अपने पक्ष में करने का प्रयत्न वह बराबर करता रहा। इसके परिणामस्वरूप लगभग 3,000 अश्वारोही तथा कुछ बहुत ही विश्वासपात्र अमीर, जैसे कराचा खां,[2] बाबूस बेग, ईस्माईल बेग दुल्दाई इत्यादि उसे छोड़कर बदख्शां में कामरान से जा मिले। इतने आदमियों

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 269-70।

2 अकबरनामा, 1 पृ० 270-71। अकबर साक्षर था या नहीं, इस प्रश्न की विवेचना के लिए देखिए बनर्जी, हुमायूं, 2, पृ० 269 73। एम० एल० राय चौधरी, वाज अकबर इललिटरेट, इण्डियन हिस्टारिकल क्वार्टरली, 1940, ई० पृ० 727-37।

3 कराचा खां ने हुमायूं की अस्वस्थता में उसकी बड़ी सेवा की थी। उसकी शक्ति बढ़ गयी थी इससे वह घमंडी हो गया था। वह समझता था कि उसके बिना हुमायूं का कोई भी कार्य नहीं हो सकेगा। उससे तात्कालिक नाराज होने का कारण यह था कि उसने दीवान ख्वाजा गाज़ी को 10 तुमान सरकारी राजकोष से अपने नाम पर देने के लिए परवाना लिख दिया। नियमानुसार न होने के कारण दीवान ने यह धन देने से इनकार कर दिया। कराचा बहुत अप्रसन्न हुआ। हुमायूं ने अकबर को कराचा खां के पास उसे समझाने के लिए भेजना चाहा किन्तु एक सहयोगी के यह कहने पर कि राज्य के कर्मचारी के सम्मुख राजकुमार का जाना न्याय संगत नहीं है हुमायूं ने अकबर को नहीं भेजा, क्योंकि उसे यह भय हुआ कि कहीं वह अकबर को बंधक के रूप में न रख ले। एक दूसरे व्यक्ति को कराचा खां के पास भेजा गया। इस बार कराचा ने यह शर्त रखी कि ख्वाजा गाज़ी को उसे समर्पित कर दिया जाए। हुमायूं ने कराचा खां के पास एक अन्य दूत भेजा और उसे सूचित किया कि वह एक वज़ीर है और ख्वाजा गाज़ी एक न-एक दिन उसके अधीन आ ही जायेगा, किन्तु कराचा खां को इससे सन्तोष नहीं हुआ और वह कामरान के पास भाग गया। जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 128 29, बायज़ीद, पृ० 85 का वर्णन भिन्न है, अकबरनामा, 1, पृ० 272, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 115।

के पलायन से हुमायूं की शक्ति को धक्का लगा। उसने कराचा खां का पीछा करने का प्रयत्न किया किन्तु ये पकड़े न जा सके। हुमायूं काबुल में रुका रहा तथा जोरों से अभियान की तैयारी करने लगा।

12 जून 1548 ई० को हुमायूं ने कामरान से युद्ध करने के लिए काबुल से कूच किया। इस बीच उसकी शक्ति बढ़ती जा रही थी। हुमायूं कराबाग से गुलबहार पहुंचा और यहां से हमीदा बानो और अकबर को काबुल भेज दिया।[1] काबुल के दुर्ग की रक्षा के लिए उसने मुहम्मद कासिम खां मौजी को नियुक्त किया। यहां से अमीरों के साथ हिन्दूकुश होता हुआ वह अन्दराब के दुर्ग के निकट पहुंचा। इस पर बिना कठिनाई के उसका अधिकार हो गया। यहां हिन्दाल कुन्दूज से वापस आकर हुमायूं से मिला और अपने साथ वह कामरान के प्रमुख सहयोगी शेर अली को बन्दी के रूप में लेता आया। शेर अली ने सदा एक सच्चे सैनिक की तरह कामरान का साथ दिया था। वह एक योग्य शासक था। इस कारण हुमायूं ने उसका सहर्ष स्वागत किया। उसने उसे क्षमा कर दिया, खिलअत प्रदान की तथा गूरी की जागीर प्रदान की।[2]

कामरान भी सतर्क था। उसने तालीकान दुर्ग को कराचा खां की सहायता से अच्छी तरह मजबूत बना लिया। वह स्वयं किश्म और किला ए जफर के निकट सेना के साथ डटा हुआ था। उसने यह नीति शत्रु को धोखा देने के लिए अपनायी थी, जिससे शत्रु की सेना को यह अन्दाज न हो कि कामरान के पास युद्ध करने की शक्ति है।

हुमायूं ने मिर्ज़ा हिन्दाल को बेगी नदी पार करने की आज्ञा दी। पूरी सेना ने अभी नदी को पार नहीं किया था जब कामरान की सेना ने उस पार आक्रमण कर दिया। यह एक बहुत ही उपयुक्त समय था, क्योंकि हिन्दाल नदी के एक तरफ और हुमायूं अपनी बाकी सेना के साथ दूसरी तरफ था। हिन्दाल की सेना पराजित हुई और उसका सामान लूट लिया गया। सौभाग्य से उसी समय हुमायूं पहुंच गया।[3] यदि कामरान ने इस विजय से लाभ उठाकर हुमायूं की सेना का पीछा किया होता तो सम्भव था उसे हुमायूं को पराजित करने में सफलता मिलती, किन्तु

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 275।

2 वही, पृ० 276।

3 जौहर लिखता है कि पराजय की सूचना पाकर हुमायूं ने पूछा कि पुस्तकालय का क्या हुआ? यह सुनकर कि वह सुरक्षित है, उसे सन्तोष हुआ (जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 132)।

कामरान युद्ध के पश्चात तालीकान के दुग मे जा छिपा । जो सामान उसने भागते समय छोड दिया था उस हुमायू की सेना ने लूट लिया और तालीकान के दुग के निकट की भूमि को रौद डाला। जो बन्दी बनाये गये उन्हे मत्यु दण्ड दिया गया। हुमायू ने पूण शक्ति के साथ तालीकान के दुग पर आक्रमण किया। पुन हुमायू ने कामरान का पत्र लिखकर सघर्ष समाप्त करने के लिए कहा, किन्तु इस शान्ति-प्रस्ताव को कामरान न स्वीकार नही किया।[1] उसे आशा थी कि उसे ऊजवेको से सहायता मिलेगी।

सन्धि तथा मिलन

निराश होकर हुमायू ने दुग का घेरा और भी कठोर कर दिया। इस घेरे का सामना करना कामरान के लिए कठिन हो गया। विवश होकर उसने मीर अरब मक्की को, जिसे हुमायू का विश्वास प्राप्त था, सन्धि वार्ता के लिए भेजा और अन्त म निम्नलिखित शर्तों पर सन्धि निश्चित हुई—

1 विद्रोही अधिकारियो की गरदनें बाधकर उन्हे हुमायू के दरबार म भेज दिया जाए।

2 हुमायू के नाम से खुत्बा पढा जाए।

3 कामरान स्वय गुप्त रूप स मक्का चला जाए।

सन्धि होने के पश्चात् 17 अगस्त 1548 ई०[2] को सद्र मौलाना अब्दुल बाकी न नगर मे प्रवश किया और हुमायू के नाम से खुत्बा पढा गया। दुग का घेरा हटा लिया गया जिससे वह मक्का चला जाए।

हुमायू ने तालिकान के दुग म प्रवेश किया। उसने सावजनिक क्षमा की घोषणा की। कराचा खा भी उसके सामने लाया गया और उस भी क्षमा कर दिया गया। मक्का की तरफ कुछ दूर यात्रा करन क पश्चात हुमायू द्वारा क्षमा किय जान की

---

1 अकबरनामा, 1, प० 278; बायजीद, प० 91 92 जौहर, स्टीवट, पृ० 132 33, तबकाते अकबरी, डे 2, पृ० 117-18। कामरान न हुमायू के सन्धि करने के प्रस्ताव म एक शेर पढा जिसका अथ था कि राज्य रूपी नववधू का वही आलिगन कर सकता है जो चमकती हुई तलवार के अधरो का चुम्बन कर सके अर्थात युद्ध कर सके। शेर इस प्रकार था—

अरुसे मुल्क कसे दर कनार गीरद चुस्त
कि बोसा बर लबे शमशीरे, आबदार दिहद।

2 अबुल फजल के अनुसार 12 राजब 955 हि, बेवरिज के अनुसार यह 12 अगस्त थी, अर्सकिन 17 अगस्त लिखते है जो सही है। डा० बनर्जी भी 12 अगस्त लिखत है। बनर्जी हुमायू 2, पृ० 176, अकबरनामा, 1, पृ० 279 80, असकिन, 2, पृ० 357।

के पलायन से हुमायूं की शक्ति को धक्का लगा। उसने कराचा खा का पीछा करने का प्रयत्न किया किन्तु ये पकड़े न जा सके। हुमायूं काबुल में रुका रहा तथा जोरों से अभियान की तयारी करने लगा।

12 जून 1548 ई० को हुमायूं ने कामरान से युद्ध करने के लिए काबुल से कूच किया। इस बीच उसकी शक्ति बढ़ती जा रही थी। हुमायूं कराबाग से गुलबहार पहुंचा और यहा से हमीदा बानो और अकबर को काबुल भेज दिया।[1] काबुल के दुर्ग की रक्षा के लिए उसने मुहम्मद कासिम खा मौजी को नियुक्त किया। यहा से अमीरों के साथ हिंदूकुश होता हुआ वह अन्दराब के दुर्ग के निकट पहुंचा। इस पर बिना कठिनाई के उसका अधिकार हो गया। यहा हिन्दाल कुन्दूज से वापस आकर हुमायूं से मिला और अपने साथ वह कामरान के प्रमुख सहयोगी शेर अली को बन्दी के रूप में लेता आया। शेर अली ने सदा एक सच्चे सैनिक की तरह कामरान का साथ दिया था। वह एक योग्य शासक था। इस कारण हुमायूं ने उसका सहर्ष स्वागत किया। उसने उसे क्षमा कर दिया, खिलअत प्रदान की तथा गूरी की जागीर प्रदान की।

कामरान भी सतर्क था। उसने तालीकान दुर्ग को कराचा खा की सहायता से अच्छी तरह मजबूत बना लिया। वह स्वयं किश्म और किला-ए-जफर के निकट सेना के साथ डटा हुआ था। उसने यह नीति शत्रु को धोखा देने के लिए अपनायी थी, जिससे शत्रु की सेना को यह अन्दाज न हो कि कामरान के पास युद्ध करने की शक्ति है।

हुमायूं ने मिर्जा हिन्दाल को बेगी नदी पार करने की आज्ञा दी। पूरी सेना ने अभी नदी को पार नहीं किया था जब कामरान की सेना ने उस पार आक्रमण कर दिया। यह एक बहुत ही उपयुक्त समय था, क्योंकि हिन्दाल नदी के एक तरफ और हुमायूं अपनी बाकी सेना के साथ दूसरी तरफ था। हिन्दाल की सेना पराजित हुई और उसका सामान लूट लिया गया। सौभाग्य से उसी समय हुमायूं पहुंच गया।[2] यदि कामरान ने इस विजय से लाभ उठाकर हुमायूं की सेना का पीछा किया होता तो सम्भव था उसे हुमायूं को पराजित करने में सफलता मिलती, किन्तु

---

1 अकबरनामा, I, पृ० 275।

2 वही, पृ० 276।

3 जौहर लिखता है कि पराजय की सूचना पाकर हुमायूं ने पूछा कि पुस्तकालय का क्या हुआ? यह सुनकर कि वह सुरक्षित है, उसे सन्तोष हुआ (जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 132)।

कामरान युद्ध के पश्चात् तालीकान के दुर्ग मे जा छिपा। जो सामान उसने भागते समय छोड दिया था उसे हुमायू की सेना ने लूट लिया और तालीकान के दुर्ग के निकट की भूमि को रौंद डाला। जो बन्दी बनाये गये उन्हें मृत्यु दण्ड दिया गया। हुमायूं ने पूर्ण शक्ति के साथ तालीकान के दुर्ग पर आक्रमण किया। पुनः हुमायू ने कामरान को पत्र लिखकर संघर्ष समाप्त करने के लिए कहा, किन्तु इस शान्ति-प्रस्ताव को कामरान ने स्वीकार नहीं किया।[1] उसे आशा थी कि उसे ऊजबेकों से सहायता मिलेगी।

सन्धि तथा मिलन

निराश होकर हुमायू ने दुर्ग का घेरा और भी कठोर कर दिया। इस घेरे का सामना करना कामरान के लिए कठिन हो गया। विवश होकर उसने मीर अरब मक्की को, जिसे हुमायूं का विश्वास प्राप्त था, सन्धि वार्ता के लिए भेजा और अन्त में निम्नलिखित शर्तों पर सन्धि निश्चित हुई—

1 विद्रोही अधिकारियों की गरदनें बांधकर उन्हें हुमायू के दरबार में भेज दिया जाए।

2 हुमायू के नाम से खुत्बा पढा जाए।

3 कामरान स्वयं गुप्त रूप से मक्का चला जाए।

सन्धि होने के पश्चात 17 अगस्त 1548 ई०[2] को सद्र मौलाना अब्दुल बाकी ने नगर में प्रवेश किया और हुमायू के नाम से खुत्बा पढा गया। दुर्ग का घेरा हटा लिया गया जिससे वह मक्का चला जाए।

हुमायूं ने तालिकान के दुर्ग में प्रवेश किया। उसने सार्वजनिक क्षमा की घोषणा की। कराचा खां भी उसके सामने लाया गया और उसे भी क्षमा कर दिया गया। मक्का की तरफ कुछ दूर यात्रा करने के पश्चात हुमायू द्वारा क्षमा किये जाने की

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 278; बायजीद, पृ० 91-92, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 132 33, तबकाते अकबरी, डे 2, पृ० 117 18। कामरान ने हुमायू के सन्धि करने के प्रस्ताव में एक शेर पढा जिसका अर्थ था कि राज्य रूपी नववधू का वही आलिंगन कर सकता है जो चमकती हुई तलवार के अधरों का चुम्बन कर सके अर्थात युद्ध कर सके। शेर इस प्रकार था—

अरुस मुल्क कसे दर कनार गीरद चुस्त,
कि बोसा बर लबे शमशीरे, आबदार दिहद।

2 अबुल फजल के अनुसार 12 रजब 955 हि, बेवरिज के अनुसार यह 12 अगस्त थी, अर्सकिन 17 अगस्त लिखते हैं जो सही है। डा० बनर्जी भी 12 अगस्त लिखते हैं। बनर्जी हुमायू 2 पृ० 176, अकबरनामा, 1, पृ० 279-80, अर्सकिन, 2, पृ० 357।

उमरा नियुक्त किया तथा हिन्दाल के साथ शेर अली उसका मन्त्री बनाकर भेजा गया।[1]

कामरान अपनी जागीर से सन्तुष्ट नही हुआ और उसने फरमान प्राप्त होने पर कहा कि वह काबुल तथा बदख्शा का मालिक रह चुका है। कुलाब तो बदख्शा का एक परगना मात्र है। मै इस जागीर को कैसे स्वीकार कर सकता हू ? हुसेन कुली, जो वहा उपस्थित था, उसने इसका जवाब दिया कि यह आश्चर्य की बात है कि इतने अपराधो के बाद भी उसे जागीर दी गयी और वह उसे स्वीकार नही कर रहा था। कामरान ने इसका अर्थ समझ लिया। पुन विद्रोह करने का उसम तत्काल साहस नही था। किन्तु इससे स्पष्ट हो जाता है कि उसका हृदय साफ नहा था। परिस्थिति को समझकर उसने प्राप्त जागीर स्वीकार कर ली।

जागीरो के विभाजन के पश्चात सभी व्यक्ति अपनी अपनी जागीरा पर अधिकार करने के लिए रवाना हो गये। हुमायू स्वय काबुल की तरफ रवाना हुआ। चारो भाइयो ने एक ही प्याले स शबत पिया। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अब चारो भाइया म मेल-मिलाप हो जाएगा। हुमायू यहा से यात्रा कर 5 अक्तूबर 1548 ई० को काबुल पहुचा[2] जहा उसकी अपने पुत्र अक्बर से भट हुई।

कामरान का हृदय अब भी कलुषित था। उसने चारो तरफ से निराश होकर हुमायू को समपण किया था। हज्ज के लिए जाने का उसका विचार धार्मिक विश्वास के कारण नही, बल्कि परिस्थितिया के कारण था। हुमायू ने जा जागीर दी थी उससे उसका असन्तोष इस बात का प्रमाण है कि वह इस जागीर को हुमायू की दया न समझकर यह समझता था कि हुमायू ने उसका अपमान किया है। हम याद रखना चाहिए कि इस समय हुमायू के पास काबुल, बदख्शा तथा भारत का पुराना राज्य नही था बल्कि उसका राज्य सीमित था। कामरान को जागीर उसके भरण-पोषण के लिए दी गयी थी, जिसको उसे प्रसन्नता के साथ स्वीकार करना चाहिए था।

लाहौर स अलग होने के पश्चात् चारो भाइया का यह प्रथम स्नेहपूर्ण मिलन

---

1 बनर्जी हुमायू, 2, प० 178, ईश्वरी प्रसाद हुमायू, प० 286, जौहर, स्टीवर्ट, प० 135, हुमायूनामा, बेवरिज, प० 186 87।

2 अबुल फजल के अनुसार काबुल प्रवेश की तिथि शुक्रवार, 2 रमजान 955 हि० थी। बायजीद के अनुसार यह 955 का तीर का महीना था। डा० बनर्जी तथा डॉ० ईश्वरी प्रसाद ने 5 अक्तूबर 1548 ई० स्वीकार किया है। अक्बरनामा, 1, प० 284, बनर्जी हुमायू, 2, प० 179, ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 287।

उमरा नियुक्त किया तथा हिन्दाल के साथ शेर अली उसका मन्त्री बनाकर भेजा गया।[1]

कामरान अपनी जागीर से सन्तुष्ट नही हुआ और उसने फरमान प्राप्त होने पर कहा कि वह काबुल तथा बदख्शा का मालिक रह चुका है। कुलाब तो बदख्शा का एक परगना मात्र है। मै इस जागीर को कैसे स्वीकार कर सकता हू? हुसेन कुली, जो वहा उपस्थित था, उसने इसका जवाब दिया कि यह आश्चर्य की बात है कि इतने अपराधो के बाद भी उसे जागीर दी गयी और वह उसे स्वीकार नही कर रहा था। कामरान ने इसका अर्थ समझ लिया। पुन विद्रोह करने का उसमे तत्काल साहस नही था। किन्तु इससे स्पष्ट हो जाता है कि उसका हृदय साफ नही था। परिस्थिति को समझकर उसने प्राप्त जागीर स्वीकार कर ली।

जागीरो के विभाजन के पश्चात् सभी व्यक्ति अपनी अपनी जागीरो पर अधिकार करने के लिए रवाना हो गये। हुमायू स्वय काबुल की तरफ रवाना हुआ। चारो भाइयो ने एक ही प्याले से शर्बत पिया। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अब चारो भाइयो मे मेल मिलाप हो जाएगा। हुमायू यहा से यात्रा कर 5 अक्तूबर 1548 ई० को काबुल पहुचा[2] जहा उसकी अपने पुत्र अक्बर से भेट हुई।

कामरान का हृदय अब भी कलुषित था। उसने चारो तरफ से निराश होकर हुमायू को समर्पण किया था। हज्ज के लिए जाने का उसका विचार धार्मिक विश्वास के कारण नही, बल्कि परिस्थितियो के कारण था। हुमायू ने जो जागीर दी थी उससे उसका असन्तोष इस बात का प्रमाण है कि वह इस जागीर को हुमायू की दया न समझकर यह समझता था कि हुमायू ने उसका अपमान किया है। हमे याद रखना चाहिए कि इस समय हुमायू के पास काबुल, बदख्शा तथा भारत का पुराना राज्य नही था बल्कि उसका राज्य सीमित था। कामरान को जागीर उसके भरण-पोषण के लिए दी गयी थी, जिसको उसे प्रसन्नता के साथ स्वीकार करना चाहिए था।

लाहौर से अलग होने के पश्चात् चारो भाइयो का यह प्रथम स्नेहपूर्ण मिलन

---

1 बनर्जी, हुमायू 2, पृ० 178, ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 286, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 135, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 186 87।

2 अबुल फज़ल के अनुसार काबुल प्रवेश की तिथि शुक्रवार, 2 रमज़ान 955 हि० थी। बायजीद के अनुसार यह 955 का तीर का महीना था। डा० बनर्जी तथा डा० ईश्वरी प्रसाद ने 5 अक्तूबर 1548 ई० स्वीकार किया है। अक्बरनामा, 1, पृ० 284, बनर्जी, हुमायू, 2, पृ० 179, ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 287।

उमरा नियुक्त किया तथा हिन्दाल के साथ शेर अली उसका मन्त्री वनाकर भेजा गया ।[1]

कामरान अपनी जागीर से सन्तुष्ट नही हुआ और उसने फरमान प्राप्त होने पर कहा कि वह काबुल तथा वदख्शा का मालिक रह चुका है। कुलाब तो वदख्शा का एक परगना मात्र है। मै इस जागीर को कैसे स्वीकार कर सकता हू ? हुसेन कुली, जो वहा उपस्थित था, उसने इसका जवाब दिया कि यह आश्चर्य की बात है कि इतने अपराधो के बाद भी उसे जागीर दी गयी और वह उसे स्वीकार नही कर रहा था। कामरान ने इसका अर्थ समझ लिया। पुन विद्रोह करने का उसमे तत्काल साहस नही था। किन्तु इससे स्पष्ट हो जाता है कि उसका हृदय साफ नही था। परिस्थिति को समझकर उसने प्राप्त जागीर स्वीकार कर ली।

जागीरो के विभाजन के पश्चात सभी व्यक्ति अपनी अपनी जागीरो पर अधिकार करने के लिए रवाना हो गये। हुमायू स्वय काबुल की तरफ रवाना हुआ। चारो भाइयो ने एक ही प्याले मे शर्बत पिया। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अब चारो भाइयो म मेल मिलाप हो जाएगा। हुमायू यहा से यात्रा कर 5 अक्तूबर 1548 ई० को काबुल पहुचा जहा उसकी अपने पुत्र अकबर से भेट हुई।

कामरान का हृदय अब भी कलुषित था। उसने चारो तरफ से निराश होकर हुमायू को समर्पण किया था। हज्ज के लिए जाने का उसका विचार धार्मिक विश्वास के कारण नही, बल्कि परिस्थितियो के कारण था। हुमायू ने जो जागीर दी थी उससे उसका असन्तोष इस बात का प्रमाण है कि वह इस जागीर को हुमायू की दया न समझकर यह समझता था कि हुमायू ने उसका अपमान किया है। हम याद रखना चाहिए कि इस समय हुमायू के पास काबुल, बदख्शा तथा भारत का पुराना राज्य नही था बल्कि उसका राज्य सीमित था। कामरान को जागीर उसके भरण पोषण के लिए दी गयी थी, जिसको उसे प्रसन्नता के साथ स्वीकार करना चाहिए था।

लाहौर से अलग होने के पश्चात चारो भाइयो का यह प्रथम स्नेहपूर्ण मिलन

---

1 बनर्जी, हुमायू, 2, प० 178, ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, प० 286, जौहर, स्टीवर्ट, प० 135, हुमायूनामा, वेवरिज, प० 186 87।

2 अबुल फज्ल के अनुसार काबुल प्रवेश की तिथि शुक्रवार, 2 रमजान 955 हि० थी। बायजीद के अनुसार यह 955 का तीर का महीना था। डा० बनर्जी तथा डा० ईश्वरी प्रसाद ने 5 अक्तूबर 1548 ई० स्वीकार किया है। अकबरनामा, 1, पृ० 284, बनर्जी, हुमायू, 2, प० 179, ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 287।

बेग मिर्जा तथा उसका भाई मुहम्मद शाह मिर्जा इस बीच मार डाले गये[1] जिससे हुमायू को शान्ति मिली।

बल्ख अभियान

भाइयो के सघर्ष से निश्चिन्त होकर हुमायू ने बल्ख पर आक्रमण करने का निश्चय किया। इसके कई कारण थे। ऊजबेक सरदार पीर मुहम्मद खा ने कामरान की सहायता की थी जिसके कारण हुमायू बहुत नाराज था तथा वह उसे दण्ड देना चाहता था। इसके अतिरिक्त बल्ख का भाग बहुत ही उपजाऊ था। कामरान अपनी प्राप्त जागीर से प्रसन्न नही था। हुमायू बल्ख विजय कर उसे कामरान को देना चाहता था।[2] वास्तव मे बल्ख अभियान का कारण साम्राज्य विस्तार, शक्ति सचय तथा अपने पूर्वजो के राज्य पर अधिकार करने की हुमायू की आकाक्षा थी।

परिस्थितिया बल्ख-आक्रमण के अनुकूल थी। बदख्शा पर हुमायू का अधिकार हो गया था। कामरान ने समर्पण कर दिया था, भाइयो मे कम से-कम बाहर से मित्रता प्रकट हो रही थी, उसके दो शत्रुओ की मृत्यु हो चुकी थी। अनुकूल परिस्थिति देखकर हुमायू ने पीर मुहम्मद पर आक्रमण करने का निश्चय किया। उसने कामरान, हिन्दाल, अस्करी, मिर्जा इब्राहीम तथा सुलेमान को बल्ख अभियान के लिए सेना लेकर आने का आदेश दिया।[3]

फरवरी 1549 ई० मे हुमायू काबुल से बल्ख अभियान के लिए रवाना हुआ।[4] यूरत चालाक[5] नामक स्थान पर वह एक महीना रुका रहा। यहा गजनी से मुहम्मद खा तथा बदख्शा से मिर्जा इब्राहीम अपनी सेनाओ के साथ उससे आ मिले। इस पड़ाव से ख्वाजा दोस्त खाबन्द को मिर्जा कामरान को बुलाने के लिए कोलाब भेजा गया। यहा से अन्दराब, तालीकान, नारी होते हुए वे नीलबर घाटी मे पहुचे। यहा मिर्जा हिन्दाल तथा सुलेमान भी आ मिले। अस्करी तथा कामरान जिनके पहुचने की आशा थी, नही आये। हुमायू ने यहा से इब्राहीम को बदख्शा भेज दिया जिससे

---

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायू पृ० 288।

2 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 136।

3 बायजीद, पृ० 106 107, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 136, अकबरनामा, 1, पृ० 285।

4 अबुल फजल के अनुसार 956 हि० के प्रारम्भ मे वह रवाना हुआ। यह वर्ष 30 जनवरी 1549 ई० से प्रारम्भ हुआ। अकबरनामा, 1, पृ० 285।

5 काबुल के उत्तर-पश्चिम दो मील पर।

यदि कामरान आक्रमण करे तो वह उसकी रक्षा कर सके।[1]

हुमाय यहा से आगे वक्लान होता हुआ ऐबक नामक स्थान पर पहुचा, जो बल्ख के अधीन था। हुमायू ने ऐबक के दुग का घेरा डाला। दुगवासियो को आवश्यक्ता की वस्तुए प्राप्त न होने के कारण दुग के हाकिम ख्वाजा माक को दुग समर्पित करना पडा।

यदि हुमाय न इस विजय से लाभ उठाया होता तो उसे बल्ख पर अधिकार करने म अधिक कठिनाई नही होती। युद्ध परिषद की बैठक म हुमायू न पीर मुहम्मद के अतालीक ख्वाजा माक से ऊजबेको से युद्ध के विषय म उसका मत पूछा। उसने दो मत उपस्थित किय। उसने कहा कि हुमायू बन्दी बनाय गय ऊजबेको को, जो उसके पडाव म हैं, मार डाल और उसके बाद तुरन्त बल्ख पर आक्रमण कर दे। यदि इसम कठिनाइया हो तो उसका दूसरा सुझाव यह था कि पीर मुहम्मद के साथ सधि कर ली जाए और ग्रुल्म के एक तरफ का भाग पीर मुहम्मद को दे दिया जाए तथा दूसरी तरफ का भाग हुमायू रख ले। प्राप्त भाग पर हुमायू के नाम से खुतबा पढा जाए, सिक्का चलाया जाए तथा इस पर हुमायू का पूण अधिकार रहे। हुमायू न इन दो मतो म स किसी को स्वीकार नहीं किया।[2] उसने ऊजबक बदियो को काबुल भेज दिया तथा स्वय बल्ख की तरफ रवाना हुआ।

खुल्म, बाबा शाभू होता हुआ हुमायू बल्ख क निकट पहुचा। ऊजबेको ने शाह मुहम्मद सुल्तान हिसारी तथा वक्कास सुल्तान क नतृत्व म मुगलो पर आक्रमण कर उनके एक दल को पराजित कर दिया। दूसरे दिन भीषण युद्ध हुआ। मुगलो न बहादुरी से युद्ध किया तथा ऊजबको को बल्ख नदी के उस पार भगा दिया।[3] यदि उन्होने तत्काल आक्रमण किया होता तो वे बल्ख पर अधिकार कर सकते थ किन्तु इसी समय यह समाचार प्राप्त हुआ कि कामरान न काबुल पर अधिकार कर लिया है। हुमायू के साथ क सनिक तथा अमीर जिन्होन अपने परिवारो को काबुल म छोड दिया था, अपने परिवारो की रक्षा के लिए चिंतित हो उठे। वे आग बढने के लिए तयार नही थे। इसी समय यह सूचना भी मिली कि बुखारा स अब्दुल अजीज अपनी सेना लेकर पीर मुहम्मद की सहायता के लिए आ रहा है। इससे और भी आतक छा गया। सफलता की आशा बहुत कम थी। इस परिस्थिति म हुमायू ने लौटन का निश्चय किया।[4] ऐबक होते हुए उसने दरयेगज म आकर पडाव डाला।

1 अकबरनामा, 1, पृ० 286।
2 वही, पृ० 287, बायजीद पृ० 109।
3 अकबरनामा, 1, पृ० 289।
4 वही, पृ० 289 90, बायजीद, पृ० 113, तबकाते अकबरी ३, 2, पृ० 120 21।

यहा कुछ दिन रुककर वह परिस्थिति का अवलोकन करना चाहता था। आवश्यक होने पर यहा से काबुल भी जाया जा सकता था तथा ऊजबेको से युद्ध भी किया जा सकता था।

बदख्शा से वापसी

दुर्भाग्यवश हुमायू की सेना को पीछे लौटते हुए देखकर ऊजबको ने उसका पीछा किया तथा आक्रमण किया। हुमायू की सेना के पिछले भाग मे हिन्दाल, सुलेमान तथा हुसेन कुली थे। ऊजबेको के आक्रमण से हिन्दाल भाग्य से ही बच सका। हुमाय पर भी हमला हुआ। एक ऊजबेक के तीर से हुमायू का तसरुना जेरीन नामक घोडा मारा गया। चारो तरफ भगदड मच गयी। सेना मे शान्ति स्थापित रखना कठिन हो गया। मुगल सेना के बहुत से सैनिक मारे गय। हुमायू ने सनिको को एकत्र कर युद्ध करना चाहा, किन्तु यह असम्भव था। विवश होकर वह काहमद, गुरब द होता हुआ 23 सितम्बर 1549 ई० (1 रमजान 956 हि०) को काबुल पहुचा।[1] मिर्जा सुलमान बदख्शा तथा हिन्दाल कु दूज अन्य अमीर काबुल वापस आय। इस तरह हुमायू की विजय उसकी पराजय मे परिवर्तित हो गयी। इसका प्रमुख कारण उसके सनिको तथा अमीरो मे अफवाहो का आतक था जो कामरान की गतिविधि तथा उसके अमानुषिक अत्याचारो के कारण था जिसे लोग अभी भूल नही थे। हुमायू का बल्ख पर अधिकार करने का स्वप्न समाप्त हो गया और वह फिर कभी पूरा नही हो सका।

काबुल लौटकर हुमायू ने एबक म बन्दी बनाय गय ऊजबको को मुक्त कर दिया। उनके स्वदेश लौटने पर पीर मुहम्मद हुमायू की उदारता सुनकर प्रसन्न हुआ और उसने भी बन्दी बनाये गय हुमायू के सेवको को स्वतन्त्र कर दिया।[2] हुमायू ने ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को दूत बनाकर ईरान भेजा था। कुछ कारण वश वह कन्धार म ठहर गया था। उसे वापस बुला लिया गया। इसी समय प्रसिद्ध चित्रकार अब्दुस्समद एव मीर सयिद अली ने हुमायू की सेवा स्वीकार की।[3] मुगल चित्रकला के इतिहास म यह महत्त्वपूर्ण घटना थी, क्योकि इन्ही चित्रकारो ने मुगल चित्रकला की नीव डाली।

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 290 91।

2 वही, पृ० 291।

3 वही, पृ० 292।

कामरान का विद्रोह

जसा ऊपर वणन किया जा चुका है, मित्रता होने के पश्चात् कामरान अपनी जागीर कुलाब चला गया था। कुछ ही समय म चाकर बेग से असन्तुष्ट होकर उसने उसे वहा से निकाल दिया। हुमायू के आदेश पर भी वह बल्ख अभियान म नही गया तथा जिस समय हुमायू बल्ख अभियान की तरफ गया हुआ था वह काबुल पर आक्रमण करने का विचार कर रहा था। हुमायू के बल्ख अभियान की असफलता तथा उसकी पराजय स उसन लाभ उठान का निश्चय किया। स्वाथ लिप्सा से कामरान की बुद्धि कितनी भ्रष्ट हो गयी थी, इसका अनुमान हम इसी स लगा सकते है कि ऊजबेका को अपनी तरफ मिलान के लिए उसन सुलेमान की स्त्री के पास प्रेम पत्र लिखा।[1]

जिस समय हुमायू बल्ख की समस्या म व्यस्त था, अस्करी को कुलाब म छोडकर कामरान ने बदख्शा पर आक्रमण किया। सुलेमान को तालीकान छाडकर किला ए ज़फर म शरण लेनी पडी। कामरान ने तालीकान पर अधिकार कर लिया और यहा स आग बढकर उसने किला ए-ज़फर को घेर लिया किन्तु वह उसे अपने अधिकार म न कर सका। उसे वम ही छोडकर उसने कुन्दूज पर आक्रमण किया। यहा हिन्दाल ने उसका सामना किया। कामरान ने हिन्दाल को अपनी तरफ मिलान का प्रयत्न किया, किन्तु हिन्दाल उसकी बातो म न आया। इससे निराश हाकर कामरान न ऊजबेको से सहायता मागी। ऊजबेक मुग़लो के पारस्परिक झगडा से सदा लाभ उठाना चाहते थे। उन लोगो ने उसकी सहायता के लिए एक शक्तिशाली सेना भेजी। इस परिस्थिति म हिन्दाल ने बुद्धिमानी से काम लिया। उसने कुछ जाली पत्र कामरान को लिखे जिससे ऐसा प्रकट होता था कि कामरान और हिन्दाल मिलकर ऊजबेको का नाश करना चाहते हैं। ऊजबेक लोग इससे बहुत डरे। कामरान के समझाने पर भी उनका सन्देह नहीं गया तथा उन्हाने उस त्याग दिया। कामरान को विवश होकर कुन्दुज का घरा उठाना पडा।[2]

1 गुलबदन बेगम (हुमायूनामा बेवरिज पृ० 193) कामरान तथा सुलेमान मिर्ज़ा की शत्रुता का वणन करती हुई लिखती है कि तरखान बेगा नामक एक कुटनी के बहकाने से कामरान ने एक पत्र तथा एक रूमाल सुलमान की स्त्री हरम बेगम के पास भेजा तथा अपने अत्यधिक प्रेम का उल्लेख किया। हरम बेगम इससे बहुत ही क्रोधित हुई। उसने अपन पति तथा पुत्र को बुलाकर ललकारा कि उनकी नामर्दी के कारण ही कामरान को ऐसा अपमानजनक पत्र लिखने का साहस हुआ है। पिता तथा पुत्र इससे कामरान के शत्रु हो गये।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 293।

इसी समय यह भी सूचना मिली कि चाकर वेग ने काबुल पर आक्रमण कर अस्करी को घेर लिया है और उसे भागकर दुग म शरण लेने पर विवश कर दिया है। कामरान ने सहायक सेना भेजी। इस सहायता के पहुचने के पश्चात् चाकर वेग ने घेरा उठा लिया। कु दूज से वापस लौटते ममय कामरान के पडाव का ऊजबेका ने हिन्दाल का पडाव समझकर लूट लिया। इससे कामरान को बडी हानि हुई। विवश होकर उसे अपने साथिया तथा अस्करी के साथ तालीकान के दुग म शरण लेनी पडी।[1] सुलेमान और हि दाल कामरान के विरुद्ध बढे। निराश होकर कामरान को बदख्शा छोडना पडा। यहा से भागकर उसने हजारा प्रदेश म शरण ली।

किवचाक का युद्ध

इसी समय काबुल से कराचा खा ने कामरान को काबुल पर अधिकार करने के लिए आमन्त्रित किया। कामरान ने इस निम त्रण से लाभ उठाना चाहा। हुमायू को धोखा देने के लिए जिसस वह तयार न रहे उसने एक पत्र लिखा तथा क्षमा-याचना की।

हुमायू कामरान की चाल समझ गया था। वह सतक था। उसने रक्षा की तैयारी कर ली तथा निकट के दर्रों की रक्षा का प्रब ध कर दिया। स्वय काबुल का अकबर तथा कासिम बरलास के नतत्व म छोडकर हुमायू गूरब द के दर्रे की तरफ रवाना हुआ। हुमायू को अपने अमीरो के असन्ताप का पूण ज्ञान नही था। उसने हाजी मुहम्मद के परामश पर अपनी सेना को दो भागा म बाट दिया। एक भाग हाजी मुहम्मद खा के अधीन जूहाक तथा बामियान की रक्षा हेतु भेजा और वह स्वय एक छोटी टुकडी के साथ किवचाक दर्रे के निकट पडाव डाले हुए था। हुमायू के कई प्रमुख अमीर कामरान से मिले हुए थे। कामरान ने बुद्धि स काम लिया प्रारम्भ मे वह जुहाक तथा बमियान के माग स काबुल पर आक्रमण करना चहता था किन्तु इस माग की रक्षा हाजी मुहम्मद खा एक बडी सेना के साथ कर रहा था। कामरान ने किबचक के दर्रे पर आक्रमण करने का निश्चय किया, जिसकी रक्षा हुमाय एक छोटी कुमुक के साथ कर रहा था।

हुमायू के कई प्रमुख अमीर कामरान से मिले हुए थे। कामरान के आक्रमण की सूचना मिलते ही हलचल मच गयी, फिर भी कराचा खा यही कहता रहा कि कामरान क्षमा-याचना करने आ रहा है। कामरान के आक्रमण स हुमायू की सेना छिन्न भिन्न हो गयी। उसके कई प्रमुख अमीर मारे गय। हुमायू ने शक्ति भर

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 293। बाद म यह पता चलने पर कि उन्होन कामरान को लूटा था ऊजबेका ने सामान वापस कर दिया।

युद्ध किया किन्तु भागते हुए सनिको को रोकना असम्भव था। उसकी सेना पूर्णतया पराजित हो गयी। हुमायूं को युद्ध का मैदान छोड़कर भागना पड़ा। जिस समय वह भाग रहा था, कामरान के बाबा बेग ने पीछे से उसके मुकुट पर तलवार से वार किया। वह पुन हुमायूं पर आक्रमण करना चाहता था किन्तु फहरत खां[1] ने उसे भगा दिया। हुमायूं को किसी प्रकार से बचाकर उसके सनिक युद्धक्षेत्र से बाहर ले गये। हुमायूं को करारी चोट लगी थी। खून तेजी से निकल रहा था जिससे वह इतना कमजोर हो गया कि उसने अपना जीवा[2] निकाल कर सन्दल खां नामक अपने नौकर को दे दिया। कामरान के सनिकों द्वारा पीछा किये जाने के समय भार के कारण उसने हुमायूं का खून से लथपथ जीवा फेंक दिया।

हुमायूं केवल 11 व्यक्तियों के साथ बमियान तथा जुहाक की तरफ रवाना हुआ। बहुत सा खून निकल जाने के कारण वह इतना कमजोर हो गया था कि कठिनाई से चल सकता था। कठोर शीत तथा कमजोरी के कारण वह एक स्थान पर बेहोश हो गया। उसे भेड़ की खाल के कपड़े में गरम होने के लिए लपेटा गया। बहुत कठिनाई से हुमायूं एक सुरक्षित स्थान में पहुंचा। सौभाग्य से यहां 300 सनिकों के साथ सुल्तान मुहम्मद उससे मिला। यहां आगे का कार्यक्रम निश्चित करने के लिए हुमायूं ने अपनी युद्ध परिषद की बैठक की। कुछ अमीर कन्धार पर, कुछ बदख्शां पर और अन्य काबुल पर आक्रमण करने की राय दे रहे थे। अन्त में यह निश्चय हुआ कि बदख्शां की तरफ चला जाए।

यहां से हुमायूं ने शाह मुहम्मद को ग़ज़नी की रक्षा के लिए भेजा और अकबर के पास एक पत्र भेजकर उसे अपनी पराजय की सूचना दी। इसके पश्चात् हुमायूं कोहमद होता हुआ आगे बढ़ा। सौभाग्य से मार्ग में कुछ व्यापारियों से उसे 2,000 घोड़े इस शर्त पर उधार मिल गये कि शत्रुओं पर विजय के पश्चात् उन्हें रुपये दिये जाएंगे[3]। इससे हुमायूं को बहुत बड़ी सहायता मिली। हुमायूं आगे बढ़ा।

---

1 महतर सकाही या सकाई जो फरहत खां के नाम से प्रसिद्ध था। क़िबचाक के युद्ध के लिए देखिये जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 138 39, बायजीद, पृ० 127-130, अकबरनामा, 1, पृ० 296 98।

2 रेशम अथवा सूती लबादा जिसमें रुई भरी होती है। यह बहुत ही मजबूत होता है, इतना कि तलवार से भी कठिनता से कटता है। जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 139, नोट।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 299, बायजीद पृ० 131 तथा जौहर, स्टीवर्ट पृ० 142 में घोड़ों की संख्या के विषय में भिन्नता है। जौहर वहां उपस्थित था। वह लिखता है कि प्रारम्भ में 300 तथा बाद में 1700 घोड़े अर्थात 2 000 घोड़े उनसे लिये गये। अबुल फज़ल के अनुसार इन घोड़ों का मूल्य चौगुना पांच गुना निश्चित किया गया।

खजन नामक गाव के निकट उसकी हिन्दाल से मुलाकात हुई। यहा से उसका दल आगे बढा और अन्दराव पहुचा। इस तरह तीन महीने इधर उधर भटकने म बीते।

कामरान का तीसरी बार काबुल पर अधिकार

किवचाक के युद्ध के पश्चात् कामरान की शक्ति बहुत अधिक बढ गयी थी। विजय के पश्चात् घायल कराचा खा उसके सामने लाया गया। कामरान ने उसका आदर किया। इसी के पश्चात कोलाब के बाबा बेग ने आकर हुमायू के घायल होने की सूचना दी। कामरान इससे बहुत प्रसन्न हुआ। वह यहा से आगे बढा। चारीकारान नामक स्थान पर एक व्यक्ति ने हुमायू का खून से लथपथ जीबा कामरान को दिया। उससे कामरान को यह विश्वास हो गया कि हुमायू की मृत्यु हो गयी है। बिना भय के वह आराम से काबुल की तरफ रवाना हुआ। उसने बहुत-से अफसरो को यह बताकर कि हुमायू की मृत्यु हो गयी है, अपने पक्ष मे कर लिया। काबुल के गवनर कासिम खा बरलास ने प्रारम्भ मे इस पर विश्वास नही किया, किन्तु हुमायू का खून से लथपथ जीबा देखकर उसे भी विश्वास हो गया कि हुमायू की मृत्यु हो गयी है। अन्त मे उसने दुग कामरान को समर्पित कर दिया।[1]

कामरान ने काबुल म सचित हुमायू के कोष पर अधिकार कर लिया तथा उसके प्रमुख अधिकारियो को बन्दी बना लिया। दीवान ख्वाजा सुल्तान अली भी बन्दी बनाया गया तथा उसके घर पर भी कामरान ने अधिकार कर लिया। हुमायू के सहायको को दण्ड देकर उसने उन्हे डरा दिया। अकबर भी बन्दी बनाया गया। इस तरह कामरान ने काबुल पर पूण रूप से अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। इसके पश्चात् उसने अपने आदमियो को जागीरें प्रदान की। अस्करी को जूयेशाही, कराचा खा को गजनी, और यासीन दौलत खा को गूरबन्द तथा उसके निकट के स्थान प्राप्त हुये।[2]

पारस्परिक सहयोग के लिए शपथ ग्रहण

भारत म निष्कासन के पश्चात् हुमायू के सम्मुख किसी बाहरी शत्रु से नही बल्कि अपने भाइयो, विशेषतया कामरान के साथ सघर्ष करना पडा। कामरान उसके भाग्य का कलक बन गया था। इस पारस्परिक सघर्ष म बहुत ही कम अमीरो पर विश्वास किया जा सकता था। अधिकाश अमीर अपने साथियो के साथ कभी कामरान की तरफ रहते और कभी हुमायू से क्षमा मागकर उसकी तरफ हो जाते

1 अकबरनामा, 1 पृ० 301, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 145।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 301।

थ। हुमायू के साथी स्वामिभक्त अमीरा को यह देखकर बडा कष्ट होता था कि वे अनेक कठिनइयो को सहन कर अपने प्राणा को खतरे म डालकर कामरान से युद्ध करते, किन्तु व दी बन जान के पश्चात् कामरान क्षमा माग लेता और पुन दोना भाइया मे सुलह हो जाती। कुछ दिनो के बाद पुन कामरान विद्राह करता और इस तरह सघष चलता रहता था।

हुमाय ने अमीरा को उनके विश्वासघात से रोकने के लिए उन्ह शपथ ग्रहण करन तथा प्रण करने के लिए कहा, जिससे वे उसे धोखा न दें। हाजी मुहम्मद खा ने हुमायू की बात सुनकर कहा कि हुमायू तथा उसके सेवका का सम्बध स्थिर करने के लिए यह आवश्यक है कि बादशाह भी प्रतिना करे कि उसके शुभचिन्तक उसके लाभ के लिए यदि कोई काय करने को कहें तो वह उसे स्वीकार करेगा। हिन्दाल को यह सुझाव पसन्द नहीं आया और उसने कहा कि बादशाह के मान की दष्टि से यह ठीक नही है, किन्तु हुमायू ने इसे स्वीकार कर लिया। अमीरा तथा हुमाय ने पारस्परिक सहयोग की शपथ ग्रहण की।[1]

हुमायू तथा अमीरा के नाटकीय ढग से शपथ ग्रहण करने की घटनाए कई दष्टिया से महत्त्वपूर्ण है। हुमायू तथा उसके अमीरो को एक-दूसरे पर विश्वास न था। अमीरो के विश्वासघात स हुमायू परेशान हो गया था। साथ ही अमीर भी उसकी दया की नीति से तग आ गय थ। इसलिए दोना एक-दूसरे को शपथ द्वारा बाधना चाहते थे।[2] यह कहना कि हुमायू न केवल महत्त्वपूण बातो म ही अपने को सीमित किया था,[3] सत्य नही है। वास्तव म इसस और भी कठिन परिस्थिति उपस्थित हो जाती है। मतभेद की अवस्था मे अमीरा तथा हुमायू के लिए यह निश्चय करना कि विषय महत्त्वपूण था अथवा नही, सरल नही था। अमीरो ने भविष्य म इस शपथ को कोई महत्त्व नही दिया। इस तरह इसका केवल क्षणिक

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 302।

2 "The great Amirs did not displace the monarch, but placed restraints upon his power This led, necessarily, to a standing council, which, had not everything else been adverse, might have proved the first step, one element of a better Government" (असकिन 2, पृ० 390।

3 'The Emperor hence forth found himself in a position which was at once stronger and less independent, he could rely upon the support of his nobles, but he had bound himself to respect their opinion in matters of importance" (ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 302।

भावात्मक महत्त्व ही हुआ।

हुमायू का काबुल पर तीसरी बार अधिकार

कामरान ने काबुल पर अधिकार कर लिया था। हुमायू के लिए कामरान को पराजित कर काबुल तथा अन्य स्थानो पर अधिकार करना आवश्यक था। तीन महीने मे हुमायू ने अपनी तैयारी पूरी कर ली तथा अन्दराब से आगे बढ़कर वह उश्तुर कराम के समीप पहुचा। कामरान अपनी सेना के साथ सघर्ष के लिए तैयार था। हुमायू युद्ध नही करना चाहता था। उसने मीर शाह सुल्तान को शान्ति का सन्देश लेकर कामरान के पास भेजा। इस समय कामरान अच्छी स्थिति मे था। उसने यह शर्त रखी कि काबुल पर उसका अधिकार रहे और कन्धार पर हुमायू का। हुमायू ने पुन यह प्रस्ताव रखा कि काबुल अकबर को दे दिया जाय और कामरान की लडकी से अकबर का विवाह कर दिया जाए। कामरान इस प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए तैयार था, किन्तु कामरान के अमीर दोनो भाइयो मे सुलह नही चाहते थे। उन्होने इस सन्धि का विरोध किया। कराचा खा ने तो और भी जोरदार शब्दो मे कहा कि जब तक वह जीवित रहेगा काबुल पर हुमायू का अधिकार नही होने देगा।[1] इस तरह यह सन्धि-वार्ता भी टूट गयी। सन्धि वार्ता की विफलता के पश्चात कामरान की सेना के कई अमीर भागकर हुमायू की सेना मे आ मिले। इनसे हुमायू को कामरान की स्थिति का पता लगा। उश्तुर कराम[2] नामक स्थान पर दोनो सेनाओ मे भीषण युद्ध हुआ। इसमे कराचा खा ने कामरान की तरफ से बहुत ही भीषण युद्ध किया, किन्तु वह गोली से घायल होकर गिर पडा। वह पकडा गया तथा वही मार डाला गया। कामरान के बहुत से सैनिक मारे गये तथा उसकी सेना पूर्णतया पराजित हुई।[3] कामरान को भेष बदलकर कुछ सैनिको के साथ भागना पडा। अस्करी हुमायू के सैनिको द्वारा बन्दी बना लिया गया तथा कामरान की सेना का बहुत सा सामान हुमायू को प्राप्त हुआ।

हुमायू ने काबुल मे प्रवेश किया। यहा अकबर से उसकी मुलाकात हुई। उसे सुरक्षित देखकर हुमायू को बहुत प्रसन्नता हुई। कामरान ने अकबर पर कोई अत्याचार नही किया था। इस खुशी मे हुमायू ने दरिद्रो और अपाहिजो को दान

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 303, कराचा खा ने कहा "सरे मा व काबुल"।

2 पजशीर नदी के निकट एक दर्रा। इसे उश्तुर गिराम भी कहा गया है।

3 *हुमायूनामा*, बेवरिज, पृ० 196, *अकबरनामा, 1,* पृ० 303 304, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 147।

दिया । इसी समय हुमायू को किताबो के व बक्स प्राप्त हुए जो किबचाक के युद्ध म खो गये थे । इहे प्राप्त कर हुमायू को बडी प्रसन्नता हुई जिससे उसके पुस्तक प्रेम का पता चलता है।

काबुल पर अधिकार करने क पश्चात् हुमायू ने भिन्न भिन व्यक्तियो को जागीरें तथा इनाम दिये। अकबर को चोख नामक गाव मिला जो लुहूगुर के तूमान म था । सुलेमान को बदख्शा वापस जाने की आज्ञा हुई किन्तु उसका पुत्र इब्राहीम रोक लिया गया तथा अकबर की सौतेली बहन बख्शी बानो से उसकी मगनी कर दी गयी ।[1] हाजी मुहम्मद बकालत दरेखाना (महल का मुख्य अधिकारी) नियुक्त किया गया ।

उश्तुर कराम की पराजय के पश्चात कामरान केवल आठ साथियो के साथ भागा । अफगानो ने मार्ग मे उसका सामान लूट लिया । भागने में सुविधा के उद्देश्य स कामरान न अपने बाल तथा दाढ़ी मुडवा डाली और एक कलन्दर के वेश मे मन्दरावर पहुचा ।[2] सौभाग्य स यहा उसे 15,000 सेना इकट्ठी करने म सफलता मिली । उसने पुन अपनी पुरानी नीति के आधार पर हुमायू के बहुत-से अमीरो को अपने पक्ष म करने का प्रयत्न किया । सेना के साथ कामरान काबुल के आसपास के भागो का चक्कर लगा रहा था । हुमायू ने बहादुर खा तथा मुहम्मद कुली बरलास के नेतृत्व म उसका पीछा करने के लिए एक सेना भेजी । सामना करना असम्भव जानकर कामरान भाग खडा हुआ । यहा स भागकर उसने अफगानिस्तान म शरण ली । हुमायू की सेना उसे भगाकर काबुल वापस आ गयी ।

अस्करी का निर्वासन

कामरान से छुट्टी पाकर हुमायू ने बदख्शा के शासक मिर्जा सुलेमान को अपने पक्ष म करने का प्रयत्न किया । उसने उसके पास उसकी पुत्री शाहजादी खानम से विवाह करने का प्रस्ताव भेजा जिससे सम्बन्ध स्थापित हो जाने से बदख्शा की ओर से उसका हृदय शान्त हो जाय । सुलेमान मिर्जा की स्त्री हरम बेगम प्रारम्भ में साधारण दूत से प्रस्ताव भेजने से अप्रसन्न हुई किन्तु बाद मे हुमायू के यह आश्वासन देने पर कि उसके मान के अनुकूल उचित व्यक्ति भेजे जाएगे तथा वह स्वय आकर बहू को ले जाएगा, वह सन्तुष्ट हो गयी । लडकी अभी छोटी थी, इस कारण विवाह कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया ।[3]

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 306 ।

2 जलालाबाद स 16 मील उत्तर-पश्चिम मे । अकबरनामा, 1, पृ० 307 ।

3 बनर्जी, हुमायू, 2, पृ० 196, अकबरनामा, 1, पृ० 307, बायजीद, पृ० 141 44 ने इनस सम्बन्धित घटनाओ का वृहद उल्लेख किया है।

अस्करी बन्दी के रूप म हुमायू के पास था, किन्तु कब तक उसे इस परिस्थिति मे रखा जाएगा, यह एक कठिन प्रश्न था। उससे किसी भी तरह की स्वामिभक्ति की आशा करना व्यर्थ था। हुमायू ने अस्करी को बदख्शा भेज दिया (1551 ई०) तथा उसकी प्रार्थना पर उसे हज्ज करने की अनुमति दे दी। सुलेमान को यह आज्ञा दी गयी कि वह अस्करी को बल्ख के मार्ग से मक्का भेज दे। अस्करी मक्का मदीना चला गया और वही 1557 58 ई० मे उसकी मृत्यु हुई।[1]

कामरान की भाति अस्करी ने भी हुमायू को बहुत कष्ट दिया था। गुजरात विजय के पश्चात् हुमायू ने उसे वहा का शासक नियुक्त किया, किन्तु अपनी मूर्खता के कारण उसने उसे खो दिया। बगाल अभियान से लौटते समय उसने हुमायू की अच्छी सहायता की थी। चौसा तथा कन्नौज की पराजय के पश्चात् उसने हुमायू का साथ पजाब मे ही छोड दिया। उसी के भय से हुमायू को ईरान भागना पडा था। कन्धार का दुर्ग हुमायू ने उसी से छीना था तथा उसके बारबार विश्वासघात करने पर भी उसे क्षमा ही करता रहा। अन्त म विवश होकर उसे निष्कासित करना पडा। वह दयालु तथा सभ्य प्रकृति का था। हुमायू के साथ सघर्ष होने पर भी अकबर के प्रति उसका व्यवहार अच्छा रहा।

हिन्दाल की मृत्यु

कामरान ने जलालाबाद से बारह मील उत्तर पश्चिम स्थित चारबाग दुर्ग का घेरा डाला। यह सूचना पाकर हुमायू ने पुन उसका पीछा किया। कामरान भाग कर पेशावर चला गया। इस बीच हाजी मुहम्मद को कामरान ने अपनी तरफ मिलाने का प्रयत्न किया। सौभाग्य से बैराम खा कन्धार से काबुल आते समय गजनी म हाजी मुहम्मद से मिला। उसने समझाकर उसे हुमायू के पक्ष म कर लिया। इस बीच कामरान दूसरे मार्ग से काबुल के निकट पहुच गया था, किन्तु यह सूचना पाकर कि दुर्ग के रक्षक सतर्क है उसने आक्रमण करने का विचार त्याग दिया और लमगान की तरफ भाग गया। हुमायू ने लमगान तक कामरान का पीछा किया। वहा से उसने बैराम खा को कामरान का पीछा करने के लिए भेजा। कामरान को विवश होकर भागकर सिन्ध नदी के उस पार चले जाना पडा।

हुमायू ने इस बीच अनुभव किया कि उसके अमीरो मे हाजी मुहम्मद खा तथा शाह मुहम्मद अब भी विश्वासघात करने मे लगे हुए है। ये दोनो भाई योग्य सैनिक

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 308, फिरिश्ता के अनुसार अरब के मार्ग म (961 हि० सन 1553 54 ई०) अस्करी की मृत्यु हो गयी। अबुल फज़ल की तिथि सही है। उसके एक पुत्री थी। जिसका विवाह अकबर ने यूसुफ खा मशहदी से कर दिया। ब्रिग्स, 2, पृ० 168।

थे, किन्तु इन पर विश्वास नही किया जा सकता था। हुमायू ने इन्हे दण्ड देने का निश्चय किया। इन पर 102 अभियोग लगाये गय तथा इन्ह मृत्यु-दण्ड दे दिया गया।[1] इस दण्ड से स्पष्ट है कि हुमायू ने पहले की दयालुता त्याग दी थी। काबुल के निवास के समय शाह अबुल माली के व्यक्तित्व से तथा उसके गुणो से प्रभावित होकर उसन उसे अपनी सेवा म नियुक्त किया। बाद म अबुल माली एक बहुत ही प्रसिद्ध अमीर हुआ। हुमायू ने यहा शासकीय नियुक्तिया की तथा अपने आदमियो म जागीरें वितरित की। इस तरह बैराम खा का कन्धार, हिन्दाल को गजनी, गिरदीज, बगश तथा लुहूगुर प्रदान किया गया। कुन्दूज मीर बरका एव मिर्जा हसन को दिया गया। इसी तरह अन्य अमीरा को भी जागीरें दी गयी। ख्वाजा गाजी को ईरान म दूत बनाकर भेजा गया।[2]

1551 ई० के प्रारम्भ म एक सेना के साथ कामरान काबुल के निकट पुन दिखायी दिया, किन्तु निकट के लोगो से किसी तरह की सहायता की आशा न पाकर उसे बहुत ही निराशा हुई। हुमायू ने तत्काल उसका पीछा किया। हिन्दाल सियाहआब नदी के तट पर अपने सनिको के साथ रुका हुआ था। कामरान ने उस पर रात को आक्रमण किया जिसम उसके बहुत से सनिक मारे गये। हुमायू आगे बढता गया तथा जलालबाग से आग जिरयार[3] म पडाव डालकर, खाइया खोदकर उसने अपनी स्थिति मजबूत कर ली। 23 नवम्बर 1551 ई० को अफगान सैनिका के साथ कामरान ने हुमायू के पडाव पर आक्रमण किया। अधेरी रात म शत्रु और मित्र को पहचानना कठिन था। इस युद्ध म हिन्दाल मिर्जा लडता हुआ अफगाना द्वारा मारा गया।[4] उस समय उसकी अवस्था केवल 23 वप की थी।

युद्ध के उपरान्त हुमायू ने हिन्दाल के विषय मे पूछताछ की, किन्तु किसी व्यक्ति म इस दुखद समाचार को देने का साहस नही था। हुमायू ने जोर से हिन्दाल को पुकारा किन्तु उसे कोई उत्तर नही मिला। बाद मे उसे अब्दुल हई ने एक दोहे द्वारा उसकी मत्यु की सूचना दी। हुमायू इस समाचार से बहुत ही दुखी हुआ। बाद म हिन्दाल का अगूठा हुमायू के सामने लाया गया। उसे देखते ही हुमायू ने दुख से अपना साफा उतारकर जमीन पर फेंक दिया। हिन्दाल पहले

1 अकबरनामा, 1, पृ० 309 11। जौहर इस घटना को कामरान के अधे बनाय जाने के बाद वणन करता है। जौहर, स्टीवट, प० 159।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 311।

3 काबुल नदी के दक्षिण एक छोटा सा कस्बा।

4 जौहर स्टीवट, पृ० 148 49 अकबरनामा 1, प० 313, बायजीद, पृ० 146 47, गुलबदन बेगम ने (हुमायूनामा बेवरिज, पृ० 198 99) अपने भाई की मत्यु का बहुत ही हृदय विदारक वणन किया है।

जुयीशाही म दफनाया गया। बाद म उसकी लाश काबुल ले जायी गयी जहा बाबर की कब्र के निकट उसे दफनाया गया।[1] उसकी जागीर तथा उसके परिचारक अकबर को दे दिये गये। हिंदाल की माता तथा बहनो के साथ सवेदना प्रकट करने के लिए हुमायू ने अकबर को काबुल भेजा। उसे आज्ञा दी गयी कि वह वहा से गजनी चला जाए। हुमायू स्वय 1551-52 ई० के जाडे भर बेहसूद म रुका रहा।

हुमायू के राज्यारोहण के पश्चात् हिंदाल को अलवर की जागीर प्राप्त हुई थी। वह हुमायू के साथ बगाल अभियान म गया था, किन्तु हुमायू को वही छोड कर वह आगरा आ गया और यहा उसने स्वतत्र होने का प्रयत्न किया। हुमायू के निष्कासन के समय वह उसके साथ कुछ दिन सिंध म रहा। हमीदा बानो से हुमायू के विवाह के पश्चात वह हुमायू को छोडकर कधार चला गया था।

हुमायू के ईरान से लौटने के पश्चात् वह पुन हुमायू से जा मिला तथा उसके साथ लगभग 6 वर्ष (1545-51 ई०) रहा तथा उसके लिए लडता हुआ शहीद हुआ। तीनो भाइयो म हिन्दाल ने ही हुमायू का सबसे कम कष्ट दिया था। उसकी मृत्यु का समाचार सुनकर काबुल मे मातम छा गया। गुलबदन के शब्दो म वहा की दीवारे तथा दरवाजे भी आसू बहा रहे थे। उसकी बहन गुलचेहरा उसके दु ख म रोते-रोते पागल हो गयी।

कामरान मिर्जा इस युद्ध के पश्चात, जिसम हिंदाल मारा गया था, भागकर अफगानो की शरण म चला गया। यहा इन लोगो ने उसकी सहायता की। प्रत्येक कबीला या जमीदार एक सप्ताह तक कामरान को अपने पास रखता और फिर कामरान वहा से हटकर दूसरे स्थान को चला जाता था। इस तरह हुमायू के लिए कामरान को पकडना सरल नही था। जब तक जाडा रहा, हुमायू बेहसूद (हजारा प्रदेश) मे पडा रहा। 1552 ई० के वसन्त मे उसने कामरान पर आक्रमण करने की तैयारी की। कामरान के दो सैनिक पकडे गये जिनसे हुमायू को कामरान के निवास का पता चला। हुमायू ने आक्रमण किया। अफगान सनिको की सख्या 12,000 के लगभग थी। युद्ध म कामरान पराजित हुआ और अफगान बहुत से जानवर छोडकर भाग गये जिन पर हुमायू का अधिकार हो गया। यह जानकर कि अफगान कबीले कामरान की मदद कर रहे है, उसने एक सेना भेजकर उनके गावो को नष्ट करने की आज्ञा दी तथा उनकी स्त्रियो को बन्दी बनाया गया। हुमायू के सनिक कामरान के पडाव तक पहुच गये, किन्तु अधेरा होने के कारण कामरान को न पकड सके। उसके स्थान पर उन लोगो ने बेग मुलूक को पकड लिया जो

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 314, हुमायूनामा, बेवरिज, प० 199, ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, प० 313।

2 हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 200।

बराबर कामरान के साथ रहता था। अफगानो की बहुत हानि हुई और यह देखकर कि यह सब कामरान का शरण देने के कारण थी, उन्होने कामरान को सहायता देनी बन्द कर दी।[1]

इस्लाम शाह के दरबार मे कामरान

अफगानो से किसी भी तरह की सहायता की आशा न पाकर कामरान ने भारत के सूरवंश के शासक इस्लाम शाह के दरबार मे जाने का निश्चय किया। इस समय इस्लाम शाह चेनाब के तट पर वन नामक स्थान मे रुका हुआ था। कामरान ने खैबर दर्रे के समीप से शाह बूदाग खां को इस्लाम शाह के पास भेजा। सूर शासक ने उसका स्वागत किया तथा कामरान को सूचित किया कि वह उसी क्षेत्र मे उसकी प्रतीक्षा करे क्योंकि उसके पास कुमुक भेजने तथा उसके व्यय का प्रबन्ध किया जा रहा था। अभी दूत मिर्जा के पास पहुचा भी न था कि कामरान ने अली मुहम्मद अस्प को भी इस्लाम शाह के पास भेजा। जब वह वन के निकट पहुचा तो इस्लाम शाह ने अपने लडके आवाज खां को कुछ अमीरो के साथ उसका स्वागत करने के लिए भेजा।[2] कामरान इस स्वागत से प्रसन्न नहीं हुआ तथा उसने शाह बूदाग को, जिसने उसे इस्लाम शाह से सहायता लेने के लिए प्रोत्साहित किया था, एकान्त मे फटकारा।

जब कामरान इस्लाम शाह से मिला उस समय इस्लाम शाह अपने सिंहासन पर बैठा हुआ था। अभिवादन मे देर करते देखकर एक अफगान ने उसका गला पकडकर कोर्निस करने पर विवश कर दिया। दरबार मे उसके प्रवेश करने पर एक अधिकारी ने चिल्लाकर कहा, "बादशाह सलामत, एक नजर काबुल के मुकद्दम के पुत्र कामरान के ऊपर डालें जो आशीर्वाद लेने आया है। इस्लाम शाह ने प्रारम्भ मे उस पर ध्यान नही दिया और जब तीन बार कामरान के आगमन के विषय मे पुकार लगायी गयी तब उसने कृपा भाव से उसकी तरफ देखा। राजसी निवास के निकट ही कामरान को खेमा दिया गया तथा उसे एक घोडा, वस्त्र, दास और एक हिजडा देने की आज्ञा दी गयी। इन वस्तुओ से कामरान को अत्यधिक निराशा हुई।[3]

---

1 जौहर स्टीवर्ट, पृ० 150, अकबरनामा, 1, पृ० 320 21, बनर्जी, हुमायूं, 2, पृ० 202 203।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 325, बदायूनी के अनुसार हेमू भी, जो हुमायूं की मृत्यु के पश्चात् कुछ समय के लिए दिल्ली के तख्त पर बैठा था, अफगान सैनिको के साथ भेजा गया। मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 389।

3 अर्सकिन, 2, पृ० 408 4 9, ईश्वरी प्रसाद, हुमायूं, पृ० 316 17, राय, सक्सेसर्स ऑफ शेरशाह, पृ० 37 38।

बाद मे भी कामरान के साथ राजसी व्यवहार नही हुआ। बहुत से लोग उसका मजाक उडाते थे। कुछ लोग कामरान के दरबार मे आने पर "मोर आया, मोर आया" कहकर जोर से चिल्लाते थे। कामरान ने जब अपने सेवक से पूछा तो उसने कहा कि विशेष लोगो के लिए इस तरह का शब्द प्रयोग किया जाता है। कामरान को नाराजगी तो थी ही, उसने क्रोध म कहा कि "फिर तो इस्लाम शाह प्रथम श्रेणी का मोर है और शेरशाह उससे बडा मोर।" कामरान का क्रोध देखकर इस्लाम शाह ने *आज्ञा दी कि मिर्जा के साथ मजाक न किया जाए। दोनो व्यक्तियो* म कविता पर चर्चा भी होती थी और कभी-कभी इनमे बदमजगी हो जाती थी। बदायूनी लिखता है कि इसी तरह एक शेर सुनकर इस्लाम शाह बहुत नाराज हुआ और उसने कामरान को बन्दी बनाने की आज्ञा दी।[1]

पजाब की समस्याओ को सुलझाने के पश्चात इस्लाम शाह दिल्ली वापस गया और अपने साथ कामरान को एक बन्दी की भाति लेता गया। कामरान ने ऐसी परिस्थिति मे भागने का निश्चय किया। अपने एक विश्वासपात्र सेवक जोगी खा की सहायता से उसने माछीवारा के निकट के राजा बख्खू नामक जमीदार से सम्पर्क स्थापित किया। एक रात स्त्री के वेश म बुर्का पहनकर वह भाग गया। घोडे के *व्यापारियो के साथ वह गक्खर लोगो के देश म गया। गक्खर सरदार सुल्तान* आदम अब भी हुमायू के प्रति स्वामिभक्त था इसलिए वह मिर्जा को सहायता देने के लिए तैयार नही हुआ। उसने कामरान पर पहरा बैठा दिया तथा हुमायू को सूचित कर दिया।[2]

इस्लाम शाह ने कामरान के साथ सद्व्यवहार क्यो नही किया? आवश्यकता पडने पर उसे अपने पक्ष म कर वह हुमायू के विरुद्ध उसे लडा सकता था, किन्तु उसने कामरान के साथ ऐसा व्यवहार किया जिससे कामरान नाराज हो गया और उसके

---

1 बदायूनी, 1, पृ० 390, शेर इस प्रकार था
गर्दिशे गरदूने गरदान गरद ना रा गद कद
बर सरे अहले तमीजा व नाकिसा रा मद कद
अर्थात् आकाश के चक्कर ने महान लोगो को मिट्टी मे मिला दिया और योग्य लोगो के सर पर अयोग्य लोगो को बठा दिया।
कामरान के मुडे हुए सिर को देखकर इस्लाम शाह ने मजाक म कहा, 'क्या आपके यहा की स्त्रिया आपकी तरह ही सिर मुडाती है?" कामरान ने तुरन्त जवाब दिया, "वे अफगान शासको की तरह मूछे रखती है।" बनर्जी, हुमायू, 2, पृ० 204-205 नोट 4। दोनो की कविता के विषय म चर्चा के लिए देखिए तारीखे दाऊदी, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 498।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 323।

हाथ से निकल भागा। इस्लाम शाह का यह व्यवहार कुछ उसकी उद्दण्ड प्रकृति के कारण तथा कुछ इस कारण था कि उसने सिन्धु को अपनी तथा मुगलों की सीमा मान लिया था। वह सिन्धु नदी के उस पार के राजनीतिक परिवर्तनों में तब तक दिलचस्पी नहीं लेना चाहता था जब तक उसके साम्राज्य पर उसका प्रभाव नहीं पड़ता। कामरान जैसे विश्वासघाती व्यक्ति को सहायता देकर वह व्यर्थ का संघर्ष नहीं चाहता था। गुलबदन बेगम के वर्णन का यदि विश्वास किया जाए तो वह कदाचित कामरान जैसे व्यक्ति को, जो अपने भाई से युद्ध कर रहा हो और जिसने अपने एक भाई को मार डाला हो, घृणा की दृष्टि से देखता था और ऐसे व्यक्ति पर वह किसी भी तरह का विश्वास करने के लिए तैयार नहीं था।[1]

कामरान का अन्त

सुल्तान आदम गक्खर की सूचना पाकर हुमायूं ने सिन्धु नदी पार कर गक्खर भूमि में प्रवेश किया। हुमायूं के साथ बड़ी सेना देखकर प्रारम्भ में आदम को भय हुआ कि कहीं हुमायूं उसी से युद्ध न करे। किन्तु जब मुनीम खां ने उसे विश्वास दिलाया कि हुमायूं की नीयत किसी तरह बुरी नहीं है तो आदम ने परहाल नामक स्थान पर हुमायूं का स्वागत किया। कामरान ने हुमायूं के सामने उपस्थित होने में बहाना बनाना चाहा किन्तु उसको जबरदस्ती ले जाकर समर्पण कराया गया।[2]

इतना विरोध करने पर भी हुमायूं ने कामरान को अपनी दाहिनी ओर बैठाया और अकबर को बायीं तरफ। कुछ देर बाद तरबूज लाये गये। एक तरबूज में से हुमायूं तथा कामरान ने और दूसरे में से अकबर तथा अबुल माली ने खाया। अन्य लोगों को भी तरबूज वितरित किये गये। हुमायूं ने आदम गक्खर से पान मंगाकर वितरित किये। वहां से ये लोग पड़ाव में गये। वहां सभा आयोजित हुई। पूरी रात संगीत, वादन तथा आमोद प्रमोद में व्यतीत हुई। दूसरी रात भी इसी तरह बीती। इस तरह इस शान से जश्न मनाया जा रहा था जैसे कामरान का स्वागत हो रहा हो, क्योंकि वह भी इन जश्नों में भाग ले रहा था।[3] तीसरे दिन सुल्तान आदम गक्खर की बधाई में दावत हुई। उसे पताका तथा नक्कारा, जो राजसी चिह्न समझे जाते थे, प्रदान किये गये और उसे विदा कर दिया गया। दावत के बाद कामरान का प्रश्न आया। जौहर को कामरान की पहरेदारी का भार सौंपा गया।

---

1 हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ० 200।

2 तबकाते अकबरी, डे, 2 पृ० 128, अकबरनामा, 1, पृ० 327।

3 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 152 53।

कामरान की गिरफ्तारी के पश्चात् हुमायू के अमीरो मे उसके भविष्य के विषय म परामश प्रारम्भ हुआ। अधिकतर व्यक्ति यह समझते थे कि ऐसे व्यक्ति के लिए मृत्यु-दण्ड ही एकमात्र दण्ड है, किन्तु हुमाय स्वय उसे मृत्यु दण्ड देने के लिए तैयार नही था। काजियो ने भी अपना मत कामरान को कठोर दण्ड देन के लिए ही प्रकट किया। जैसा कि ऊपर वणन किया जा चुका है, अमीरो ने हुमायू से प्रतिज्ञा करा ली थी कि वह ऐसी विशेष परिस्थितियो मे उनके मत को स्वीकार करेगा। अमीरो का निश्चयात्मक मत था कि कामरान को मृत्यु दण्ड दिया जाए। बहुत कठिनाई से हुमायू ने अन्त म अपनी स्वीकृति दी कि कामरान को अधा कर दिया जाए।[1]

जौहर लिखता है कि कामरान ने उससे एक दिन दुख से कहा कि उसने रमजान का व्रत केवल 6 दिन ही किया है। जौहर से उसने प्राथना की कि वह उसके लिए बाकी दिन व्रत कर दे। कामरान को विश्वास था कि उसे मृत्यु दण्ड दिया जाएगा। जौहर ने उसे आश्वासन दिया कि उसे निराश नही होना चाहिए और वह स्वय रमजान के व्रत को पूरा करेगा किन्तु कामरान को विश्वास नही हुआ।

कामरान को अधा बनाने का काम अली दोस्त को सौपा गया था। अनेक अपराध तथा अत्याचार करने पर भी कामरान मौत से डरता था। उसने जौहर से पूछा कि क्या उसकी हत्या की जाएगी। जौहर ने उत्तर दिया, "पादशाही के स्वभाव को पादशाह ही जानता है।" अबुल फजल लिखता है कि जब उसे अधा करने वाले उसके निकट पहुचे तो कामरान ने समझा की उसकी हत्या करने आये है तथा वह तत्काल मुक्का तानकर उनकी तरफ दौडा। अली दोस्त ने कहा, "मिर्जा धैय धारण करो। हत्या का आदेश नही है। घबराहट किस कारण है ? इस कारण कि तुमने इसके पूव सयिद अली एव अय निरपराध लोगो को अधा कर दिया था, अत तुम्हे भी अधा बना दिया जाएगा।" कामरान न यह सुनकर समपण कर दिया। वह लेट गया। उसके मुह मे कपडा ठूस दिया गया। उसकी आखो पर पचास बार नश्तर लगाये गये। किन्तु कामरान ने उफ तक नही किया। यहा तक कि उस आदमी से जो उसके घुटनो को दबाये हुए था, उसने कहा कि "तू घुटनो पर क्यो बैठा है ? मेरे कष्टो को बढाने से तुम्हारा क्या लाभ है ?" उसके बाद उसकी खून से तर आखो पर नमक छिडका गया। वह इस दद को न सह सका तथा अल्लाह अल्लाह कहकर कराह उठा। उसने कहा कि उसने जो कुछ किया था उसका बदला उसको मिल गया।[2] जौहर, जो उस समय उपस्थित था, इस दृश्य

1 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 128, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 201, बायजीद, पृ० 156 57, अकबरनामा, 1, पृ० 327-28।

2 जौहर, स्टीवट, *154 55*, *उसकी आखो म नश्तर लगाने की तिथि*

हाथ से निकल भागा। इस्लाम शाह का यह व्यवहार कुछ उसकी उद
कारण तथा कुछ इस कारण था कि उसने सिंध को अपनी तथा मुग
मान लिया था। वह सिंधु नदी के उस पार के राजनीतिक परिवत
दिलचस्पी नही लेना चाहता था जब तक उसके साम्राज्य पर उसक
पडता। कामरान जसे विश्वासघाती व्यक्ति को सहायता देकर वह द
नही चाहता था। गुलबदन बेगम के वणन का यदि विश्वास किया
कदाचित् कामरान जैसे व्यक्ति को, जो अपने भाई से युद्ध कर रहा ह
अपने एक भाई को मार डाला हो, घृणा की दृष्टि से देखता था अ
पर वह किसी भी तरह का विश्वास करने के लिए तैयार नही था।[1]

कामरान का अन्त

सुल्तान आदम गक्खर की सूचना पाकर हुमायूं ने सिंध नदी प
भूमि मे प्रवेश किया। हुमायूं के साथ बडी सेना देखकर प्रारम्भ म
हुआ कि कही हुमायूं उसी से युद्ध न करे। किन्तु जब मुनीम ख़ा
दिलाया कि हुमायूं की नीयत किसी तरह बुरी नही है तो आदम न
स्थान पर हुमायूं का स्वागत किया। कामरान ने हुमायूं के सामन
बहाना बनाना चाहा किन्तु उसको जबरदस्ती ले जाकर समपण क

इतना विरोध करने पर भी हुमायूं ने कामरान को अपनी दा
और अकबर को बायी तरफ। कुछ देर बाद तरबूज लाये गय। र
हुमायूं तथा कामरान ने और दूसरे म से अकबर तथा अबुल माली
लोगो को भी तरबूज वितरित किये गये। हुमायूं न आदम गक्खर
वितरित किये। वहा से ये लोग पडाव म गय। वहा सभा आय
रात सगीत, वादन तथा आमोद प्रमोद म व्यतीत हुई। दूसरी रा
बीती। इस तरह इस शान स जश्न मनाया जा रहा था जैसे काम
हो रहा हो, क्योकि वह भी इन जश्नो म भाग ले रहा था।[3] तीः
आदम गक्खर की बधाई म दावत हुई। उसे पताका तथा नक्क़ा
चिह्न समझे जाते थे, प्रदान किये गये और उस विदा कर दिया।
बाद कामरान का प्रश्न आया। जौहर को कामरान की पहरेदारी
गया।

---

1 हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ० 200।

2 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 128, अकबरनामा, 1, पृ० 327।

3 जौहर, स्टीवर्ट पृ० 152 53।

कामरान की गिरफ्तारी के पश्चात् हुमायू के अमीरो मे उसके भविष्य के विषय मे परामर्श प्रारम्भ हुआ। अधिकतर व्यक्ति यह समझते थे कि ऐसे व्यक्ति के लिए मृत्यु-दण्ड ही एकमात्र दण्ड है, किन्तु हुमायू स्वय उसे मृत्यु-दण्ड देने के लिए तयार नही था। काजियो ने भी अपना मत कामरान को कठोर दण्ड देने के लिए ही प्रकट किया। जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है, अमीरो ने हुमायू से प्रतिज्ञा करा ली थी कि वह ऐसी विशेष परिस्थितियो मे उनके मत को स्वीकार करेगा। अमीरो का निश्चयात्मक मत था कि कामरान को मृत्यु-दण्ड दिया जाए। बहुत कठिनाई से हुमायू ने अन्त मे अपनी स्वीकृति दी कि कामरान को अधा कर दिया जाए।[1]

जौहर लिखता है कि कामरान ने उससे एक दिन दुख से कहा कि उसने रमजान का व्रत केवल 6 दिन ही किया है। जौहर से उसने प्रार्थना की कि वह उसके लिए बाकी दिन व्रत कर दे। कामरान को विश्वास था कि उसे मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। जौहर ने उसे आश्वासन दिया कि उसे निराश नही होना चाहिए और वह स्वय रमजान के व्रत को पूरा करेगा किन्तु कामरान को विश्वास नही हुआ।

कामरान को अधा बनाने का काम अली दोस्त को सौपा गया था। अनेक अपराध तथा अत्याचार करने पर भी कामरान मौत से डरता था। उसने जौहर से पूछा कि क्या उसकी हत्या की जाएगी। जौहर ने उत्तर दिया, 'पादशाही के स्वभाव को पादशाह ही जानता है।" अबुल फजल लिखता है कि जब उसे अधा करने वाले उसके निकट पहुचे तो कामरान ने समझा कि उसकी हत्या करने आये हैं तथा वह तत्काल मुक्का तानकर उनकी तरफ दौडा। अली दोस्त ने कहा, मिर्जा धैर्य धारण करो। हत्या का आदेश नही है। घबराहट किस कारण है? इस कारण कि तुमने इसके पूर्व सयिद अली एव अन्य निरपराध लोगो को अधा कर दिया था, अत तुम्हे भी अधा बना दिया जाएगा।" कामरान ने यह सुनकर समर्पण कर दिया। वह लेट गया। उसके मुह मे कपडा ठूस दिया गया। उसकी आखो पर पचास बार नश्तर लगाये गये। किन्तु कामरान ने उफ तक नही किया। यहा तक कि उस आदमी से जो उसके घुटनो को दबाये हुए था, उसने कहा कि 'तू घुटनो पर क्यो बैठा है? मेरे कष्टो को बढ़ाने से तुम्हारा क्या लाभ है?" उसके बाद उसकी खून से तर आखो पर नमक छिडका गया। वह इस दर्द को न सह सका तथा अल्लाह अल्लाह कहकर कराह उठा। उसने कहा कि उसने जो कुछ किया था उसका बदला उसको मिल गया।[2] जौहर, जो उस समय उपस्थित था, इस दृश्य

1 तबकाते अकबरी, के, 2, पृ० 128, हुमायूनामा, बेवरिज, पृ० 201, बायजीद, पृ० 156-57, अकबरनामा, 1, पृ० 327 28।

2 जौहर, स्टीवर्ट, 154 55, उसकी आखो मे नश्तर लगाने की तिथि

कामरान की गिरफ्तारी के पश्चात् हुमायूं के अमीरों मे उसके भविष्य के विषय में परामर्श प्रारम्भ हुआ। अधिकतर व्यक्ति यह समझते थे कि ऐसे व्यक्ति के लिए मृत्यु-दण्ड ही एकमात्र दण्ड है, किन्तु हुमायूं स्वयं उसे मृत्यु दण्ड देने के लिए तैयार नही था। काजियो ने भी अपना मत कामरान को कठोर दण्ड देने के लिए ही प्रकट किया। जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है, अमीरों ने हुमायूं से प्रतिज्ञा करा ली थी कि वह ऐसी विशेष परिस्थितियों मे उनके मत को स्वीकार करेगा। अमीरो का निश्चयात्मक मत था कि कामरान को मृत्यु-दण्ड दिया जाए। बहुत कठिनाई से हुमायूं ने अन्त में अपनी स्वीकृति दी कि कामरान को अंधा कर दिया जाए।[1]

जौहर लिखता है कि कामरान ने उससे एक दिन दुख से कहा कि उसने रमजान का व्रत केवल 6 दिन ही किया है। जौहर से उसने प्रार्थना की कि वह उसके लिए बाकी दिन व्रत कर दे। कामरान को विश्वास था कि उसे मृत्यु दण्ड दिया जाएगा। जौहर ने उसे आश्वासन दिया कि उसे निराश नही होना चाहिए और वह स्वयं रमजान के व्रत को पूरा करेगा किन्तु कामरान को विश्वास नही हुआ।

कामरान को अंधा बनाने का काम अली दोस्त को सौंपा गया था। अनेक अपराध तथा अत्याचार करने पर भी कामरान मौत से डरता था। उसने जौहर से पूछा कि क्या उसकी हत्या की जाएगी। जौहर ने उत्तर दिया, 'पादशाही के स्वभाव को पादशाह ही जानता है।" अबुल फजल लिखता है कि जब उसे अंधा करने वाले उसके निकट पहुंचे तो कामरान ने समझा की उसकी हत्या करने आये हैं तथा वह तत्काल मुक्का तानकर उनकी तरफ दौड़ा। अली दोस्त ने कहा, 'मिर्जा धैर्य धारण करो। हत्या का आदेश नही है। घबराहट किस कारण है? इस कारण कि तुमने इसके पूर्व सैयिद अली एवं अन्य निरपराध लोगों को अंधा कर दिया था, अतः तुम्हें भी अंधा बना दिया जाएगा।"कामरान ने यह सुनकर समर्पण कर दिया। वह लेट गया। उसके मुंह में कपडा ठूस दिया गया। उसकी आंखों पर पचास बार नश्तर लगाये गये। किन्तु कामरान ने उफ तक नही किया। यहां तक कि उस आदमी से जो उसके घुटनो को दबाये हुए था, उसने कहा कि "तू घुटनों पर क्यों बैठा है? मेरे कष्टों को बढ़ाने से तुम्हारा क्या लाभ है?' उसके बाद उसकी खून से तर आंखों पर नमक छिड़का गया। वह इस दर्द को न सह सका तथा अल्लाह अल्लाह कहकर कराह उठा। उसने कहा कि उसने जो कुछ किया था उसका बदला उसको मिल गया।[2] जौहर, जो उस समय उपस्थित था, इस दृश्य

1 तबक़ाते अकबरी, डे, 2, पृ० 128, हुमायूंनामा, बेवरिज, पृ० 201, बायजीद, पृ० 156 57, अकबरनामा, 1, पृ० 327 28।

2 जौहर, स्टीवर्ट, 154-55, उसकी आंखों में नश्तर लगाने की विधि

को देखकर वहा खडा न रह सका और अनुमति के बिना ही अपने खेमे मे चला गया।

अधा बनाये जाने के पश्चात कामरान काबुल, जहा उसने शान से राज्य किया था, जाने के लिए तयार नही हुआ। उसने अपनी इच्छा प्रकट की कि उसे मक्का जाने की आज्ञा दी जाए। सिधु नदी के निकट कामरान ने हुमायू से विदा होने के पहले मिलने की इच्छा प्रकट की। इस शर्त पर उसे मिलने की इजाजत दी गयी कि कामरान ऐसी दुखमय भावना न प्रकट करेगा जिससे हुमायू को कष्ट हो। कामरान की आखो पर रूमाल बाध दिया गया और वह हुमायू के सामने लाया गया। उसे देखते ही हुमायू अपने आसू न रोक सका, किन्तु अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार कामरान ने अपने को जब्त रखा। कामरान ने हुमायू के स्वागत म एक कविता पढी[1] और उसने कहा कि जो कुछ उस पर गुजरी है वह उसी के बुरे कर्मों के कारण है। हुमायू ने कामरान से दु ख से कहा कि जो कुछ हुआ वह उससे शर्मिन्दा है लेकिन वह स्वय इसके लिए उत्तरदायी नही है। हुमायू ने कामरान के साथ कुरान का पहला अध्याय पढा। कामरान ने हुमायू से प्राथना की कि उसके परिवार तथा आश्रितो की देखभाल हुमायू करे। हुमायू के चले जाने के पश्चात कामरान फूट-फूटकर रोने लगा।[2]

कामरान की विदाई का दृश्य एक हृदय विदारक दृश्य था। जिसने अपने जीवन मे भाई को भाई न समझा और अपने स्वार्थ के लिए हत्याए करने म नही चूका, आज वही कामरान अपने भाग्य पर रो रहा था। उसके अनेक सेवको म केवल एक चिलमा कोका[3] जाने के लिए तयार हुआ। सबसे ऊचा आदर्श उसकी पत्नी चोचक बेगम का था। उसने अपने अधे पति के साथ निष्कासन म जाने का निश्चय किया। मक्का जाते समय वे लोग थट्टा से गुजरे। वहा बेगम के पिता शाह हुसन ने उसे रुकने के लिए कहा, किन्तु वह तैयार नहीं हुइ। उसने उत्तर दिया कि 'आपने मुझे मिर्जा के सुपुर्द उस समय किया था जब मिर्जा अधे न

अबुल फजल के अनुसार 960 हि० का अत(नवम्बर, 1553 ई०) था। असकिन जौहर के इस वाक्य के आधार पर कि रमजान महीने के 6 दिन बीत गये थे, 'रमजान 960 हि०(17 अगस्त 1953 ई०), निश्चित करते है। अकबरनामा, 1, पृ०328 31, असकिन 2, पृ० 413।

1 बनर्जी, हुमायू, 2, पृ० 208।

2 बायजीद, पृ० 159, अकबरनामा, 1, पृ० 330 31।

3 यह मिर्जा कामरान के काका हमदम का पुत्र था। कामरान की मृत्यु के बाद यह हिन्दुस्तान लौट आया। अकबर के समय म इसे खानेआलम की उपाधि दी गयी। मार्च 1575 ई० म अफगानो से युद्ध करता हुआ मारा गया।

थे। इस समय यदि मैं साथ छोड दू तो दुनिया यही कहेगी कि शाह की लडकी ने दुख म अपने पति का साथ छोड दिया और मेरे नाम को बुरा कलक लगगा।"[1] यह कहकर वह कामरान के साथ जाकर उसकी नाव म बठ गयी।

कामरान यहा स मक्का चला गया और वही 5 अक्टूबर 1557 ई० को अपने जीवन के 49वें वप म उसकी मृत्यु हो गयी।[2]

कामरान के चरित्र का सिंहावलोकन

कामरान हुमायू के दुख का एक बहुत बडा कारण था। लगभग 20 वप तक उसने हुमायू के साथ सघप किया। निष्कासन काल मे तो हुमायू का सारा समय वास्तव म कामरान के साथ युद्ध करने मे ही बीता।

कामरान को बाबर का स्नेह प्राप्त था और उसने उसे हर तरह से शिक्षित और योग्य बनाने का प्रयत्न किया था। कामरान म कुछ गुण थे जिनका उचित प्रयोग करने पर वह एक सफल शासक बन सकता था तथा जीवन म सफलता प्राप्त कर सकता था। वह एक बहादुर व्यक्ति था और युद्ध म अपने प्राणा की बाजी लगा देने म कभी भयभीत नही होता था। उसने बाबर के समय युद्धो म भाग लिया था और बाद म भी अफगानो, ईरानिया तथा मध्य एशिया की अनेक जातिया के साथ उसका सघर्ष हुआ। 1535 ई० म उसने साम मिर्जा तथा ईरानी सना को भी पराजित किया था। उसके युद्ध के समय की घटनाओ को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि कामरान म व्यक्तियो तथा भिन्न भिन्न जातिया को अपने पक्ष म करने की अद्भुत क्षमता थी। इसी कारण अफगानो ने उसे जी जान से सहायता दी तथा काबुल पर उसने बार बार अधिकार किया। कामरान कवि भी था और इस्लाम शाह के दरबार मे दोनो के बीच कविता पर वाद विवाद भी हुआ। तारीखे दाऊदी का लेखक अब्दुल्ला लिखता है कि कामरान मिर्जा एक उच्च कोटि का कवि था तथा इस्लाम शाह से उसकी इस विषय पर वार्ता होती रहती थी। प्रथम मुलाकात म कामरान की योग्यता की परीक्षा लेने के लिए इस्लाम शाह ने तीन दोहे कहे तथा कामरान से उनकी समीक्षा करने को कहा। कामरान ने उत्तर दिया कि उसका एक दोहा ईराक के कवि का, दूसरा हिदुस्तान के कवि का तथा तीसरा अफगान कवि का रचा हुआ है। इस्लाम शाह ने सबके सामने कामरान की

---

1 तारीखे मासूमी, पृ० 183।

2 तबकाते अक्बरी, डे, 2, प० 129, नोट 2, असकिन, 2, पृ० 419, अक्बरनामा, 1, पृ० 331।

१८ ८ को पणसा की।[1] इससे कामरान की साहित्यिक अभिरुचि का पता २ ११ है।

कामरान के चरित्र के एक बहुत बडे गुण का पता हमे उसके अकबर के प्रति व्यवहार से चलता है। अकबर कई वर्षों तक उसके पास रहा और ऐसी परिस्थिति में जब कि अकबर के पिता के साथ उसका भयकर युद्ध चल रहा था, उसने कभी भी अकबर की हत्या करने का प्रयत्न नही किया। यदि वह चाहता तो किसी भी समय अकबर की हत्या कर सकता था। केवल एक बार अपनी रक्षा हेतु उसने अकबर को काबुल के किले की दीवार पर रख दिया था जिसका वर्णन किया जा चुका है। वह हुमायूँ से लडने के लिए तैयार था किन्तु उसके पुत्र के प्रति उसकी कोई दुर्भावना नही थी।

कामरान के चरित्र के कुछ विशेष दोष स्पष्ट रूप से हमारे सम्मुख आते हैं। वह बहुत ही स्वार्थी व्यक्ति था और अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए नीच से नीच काम करने के लिए तत्पर रहता था। वह अपनी बातों पर अटल नही रहता था और अधिकतर उसकी बातें धोखे से भरी होती थी। हुमायूँ के प्रति बार-बार क्षमा याचनाए इस बात की स्पष्ट उदाहरण है। कामरान क्रूर भी था। उसने काबुल के निवासियो के प्रति जिस तरह का व्यवहार किया वह उसकी क्रूरता का स्पष्ट प्रमाण है। प्रारम्भ में वह शराब से घृणा करता था किन्तु बाद में उसने शराब पीना प्रारम्भ किया और इसमे उसने अति कर दी। कामरान में राजनीतिक दूर दृष्टि का अभाव था। यदि उसने बुद्धिमानी से काम लिया होता और अपने भाई से सहयोग कर सूर वश के शासको से युद्ध किया होता तो इस सम्मिलित शक्ति का सामना सम्भवतः शेरशाह भी नही कर पाता। दोनो भाइयो के सघर्ष में हजारो व्यक्ति मारे गए। यदि कामरान को हुमायूँ का दुर्दैव एव उसके दुर्भाग्य का प्रतीक कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी।

इन सब त्रुटियो के होते हुए भी कामरान के चरित्र का एक आन्तरिक भाग है, जिससे उसकी सहृदयता प्रकट होती है। हुमायूँ के सामने आने पर वह ऐसा व्यवहार करता था कि वह हर तरह से उससे सहयोग करने के लिए तयार है, किन्तु परोक्ष में यह शुभ भावना दुर्भावना में परिणित हो जाती थी।

कामरान का दण्ड तथा हुमायूँ

कामरान की विदाई की घटनाओ ने हुमायूँ को उद्वेलित तथा दुखी कर दिया

---

1 इलियट तथा डासन, 4, पृ० 498, कामरान की कविताओ का एक सग्रह एशियाटिक सोसाइटी बगाल के पुस्तकालय में है। देखिए, मौलवी अब्दुल वली के ऐटीक्वेरी, (1914 ०), पृ० 219 24।

था। उसे बराबर यही अनुभव होता था कि अपने भाई को अंधा बनाकर उसने बहुत बडा पाप किया। इसी कारण काबुल पहुचने पर जब स्त्रियो ने कामरान के दण्ड तथा निष्कासन पर उसे बधाइया दी तो उसने दुखी होकर कहा कि यह बधाई का अवसर नही है, क्योकि कामरान की आखो पर सलाई फेरना उसकी अपनी आखो पर सलाई फेरने जैसा था।[1] यह सोचकर कि कोई उसे दोषी न ठहराये उसने काशगर के शासक अब्दुर रशीद को भी पत्र लिखकर इन घटनाओ की सूचना दी।[2]

कामरान का निष्कासन हुमायू के जीवन का एक युग समाप्त करता है। 15 वर्षों से जो सघर्ष चलता आ रहा था उसका अन्त हो गया। हुमायू के भविष्य निर्माण की आन्तरिक बाधा समाप्त हो गयी।

कश्मीर विजय का विचार तथा काबुल वापसी

हुमायू ने इसी समय जनजूहा कबीले के जमीदार बीरराना पर आक्रमण किया, जिसने किसी भी शासक को समर्पण नही किया था। वह वीरता से लडा, किन्तु पराजित हुआ। अबुल फजल लिखता है कि इस युद्ध मे मुगलो की तरफ से ख्वाजा क़ासिम महदी तथा कुछ अन्य लोग शहीद हुए। आदम गक्खर के कहने पर हुमायू ने उसे क्षमा कर दिया तथा उसकी भूमि उसे लौटा दी गयी।[3] यहा से आगे बढकर हुमायू ने निकट के जमीदार राजा शकर के पचास गावो को लूटा तथा बहुत से आदमियो को बन्दी बनाया। उनका धन तथा सम्पत्ति प्राप्त कर इन बदियो को पुन स्वतन्त्र कर दिया गया। इससे सेना को काफी धन मिला।[4]

कश्मीर विजय के पश्चात हैदर मिर्ज़ा ने हुमायू को वहा आने के लिए निमन्त्रित किया था जिसका वर्णन किया जा चुका है। उस समय हुमायू वहा जाने की परिस्थिति मे न था, जिससे वह वहा न जा सका। उसने अब कश्मीर विजय करने का निश्चय किया, किन्तु उसके सहायक अमीर इसके लिए तयार नही थे। हैदर मिर्ज़ा की मृत्यु हो चुकी थी। भय था कि हुमायू के कश्मीर मे प्रवेश करने के पश्चात अफगान पहाडी दर्रों को बन्द कर हुमायू की आक्रमणकारी सेना तथा काबुल का सम्बन्ध तोड देंगे जिससे कठिन परिस्थिति उपस्थित हो जाएगी। मुग़ल सेना की सख्या कम थी तथा अफगान बडी सख्या मे रोहतास के दुर्ग मे एकत्र हो

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 332।

2 वही।

3 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 129, अकबरनामा, 1, पृ० 329, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 156।

4 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 156।

रहे थे। हुमायू के कश्मीर प्रवेश करने पर वे सरलता से उसकी पिछली रक्षा पक्ति तोड देते। इन कारणो का हवाला देकर आदम गक्खर ने भी कश्मीर पर आक्रमण न करने का परामश दिया। अमीरा ने भी कश्मीर को कूप तथा वन्दीगृह बताकर उसकी निंदा की और कश्मीर अभियान का विरोध किया। हुमायू का आक्रमण न करने का निश्चय सुनकर अधिकाश सैनिक भागकर काबुल चले गये।[1] हुमायू को विवश होकर काबुल लौटने की आज्ञा देनी पडी। कुछ दूर चलकर कामरान से अतिम बार उसकी मुलाकात हुई जिसका वणन किया जा चुका है। यहा से उसन सिन्धु नदी पार की तथा बिकराम के दुग (पेशावर) का, जिसे अफगानो न नष्ट कर दिया था, पुन निर्माण करने की आज्ञा दी। काम वडी शीघ्रता से हुआ। दुग म सिकन्दर खा ऊजवेक को नियुक्त कर[2] हुमायू काबुल की तरफ रवाना हुआ तथा 961 हि० के प्रारम्भ (दिसम्बर 1553 ई०) म वहा पहुचा।

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 329-30, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 157, तबकाते अववरी, डे, 2, पृ० 129।

2 तबकाते अववरी, डे, 2, पृ० 129 30, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 158, अकबरनामा, 1, पृ० 331-32।

10 द्वितीय राजत्व तथा मृत्यु

हुमायूं के प्रति शेरशाह की नीति

एक तरफ मुगल साम्राज्य का पतन हुआ तथा हुमायूं का निवासन और दूसरी तरफ मुगल साम्राज्य की नीव पर सूर अफगानो ने एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की। चौसा तथा कन्नौज के युद्धो म हुमायूं को पराजित करने के पश्चात् शेरशाह पूर्णरूप से भारत का शासक बन गया। उसने अपने राज्यकाल म मालवा, मुल्तान, सिंध इत्यादि भागो का जीतकर, उत्तरी भारत को एक सूत्र मे बाध दिया और एक सगठित, सुव्यवस्थित शासन प्रणाली की भी स्थापना की।[1] शासनकर्ता के रूप म शेरशाह का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह कथन कि मुगल साम्राज्य की नीव हुमायूं के निष्कासन काल म पडी इस अथ म सत्य प्रतीत होता है, कि जो शासन प्रणाली तथा शेरशाह ने हुमायूं के निष्कासन काल म स्थापित की वही मुगल साम्राज्य क सगठन का आधारशिला भी बनी तथा बाद म भी उसी आधार पर देश का सगठन हुआ।

हुमायूं तथा शेरशाह क सम्बन्धो का उल्लेख हम पिछले अध्यायो मे कर चुके हैं। हुमायूं की पराजय के पश्चात शेरशाह मुगल सम्राट के प्रति तीन तरह की नीति बरत सकता था—

(1) आक्रमणकारी नीति, अर्थात वह काबुल क ओर तथा अन्य प्रदेश जो मुगलो क अधिकार मे थे, उन्हे युद्ध द्वारा अपने अधिकार म कर लेता।

(2) कूटनीतिक नीति, अर्थात शांति की नीति बरतते हुए कामरान या अन्य किसी व्यक्ति को सहायता देकर हुमायु को युद्ध म व्यस्त रखता।

(3) रक्षात्मक नीति, अर्थात हुमायूं को सिंधु नदी के पश्चिम की तरफ भगाकर अपने साम्राज्य की सीमा का पूर्णतया सुरक्षित कर देता जिससे इन भागो पर हुमायूं के आक्रमण का भय नही रहता।

---

1 शेरशाह के शासन प्रबन्ध के लिए देखिए कानूनगो, शेरशाह पृ० 347-415, शरन, दि प्राविंसियल गवनमेंट आफ दि मुगल्स, पृ० 49 60, तथा 161 64, ए० एल० श्रीवास्तव, शेरशाह एण्ड हिज सक्सेसर्स पृ० 56 91।

शेरशाह बुद्धिमान शासक था। उमन विचार किया कि सिन्धु नदी के पश्चिमी भागा पर आक्रमण करने तथा उन्हे अपन साम्राज्य म मिलाने का प्रयत्न खतरे स खाली नही था। इस आक्रमण के परिणामस्वरूप उसका अपना साम्राज्य भी खतरे म पड जाता। इसके अतिरिक्त जब हुमायू का ईरान के शाह स सहायता मिल गयी, उस परिस्थिति म हुमायू स युद्ध करन का अर्थ ईरान के शाह के साथ युद्ध करना हाता। इस कारण शेरशाह न हुमायू का काबुल या सिन्धु नदी क पश्चिमी भागा स निकालन का प्रयत्न नही किया। शेरशाह हुमायू के शत्रुओ विशेषत उसके भाइया को सहायता देकर उसे आन्तरिक समस्याओ म ही व्यस्त रख सकता था। उसने कश्मीर म यही नीति अपनायी थी तथा वह काजी चक का हैदर मिर्जा के विरुद्ध बराबर लडाता रहा। हुमायू के साथ उसे इस तरह की नीति की आवश्यकता नही पडी, क्योकि कामरान तथा उसके भाई स्वय ही आपस म लड रहे थे। यदि शेरशाह के दरबार म कामरान उसी तरह सहायता के लिए उपस्थित हुआ होता, जस इस्लाम शाह के दरबार म गया था, तो कदाचित शेरशाह को इस नीति पर अमल करने का अवसर मिलता। तीसरी नीति अपनी सीमा का सुरक्षित रखने तथा हुमायू पर सतर्क दृष्टि रखने की थी, जिसस वह पुन अपना साम्राज्य वापस करने के प्रयास म सफल न हो सके। शेरशाह न इस नीति को अपनाना ठीक समझा तथा वह इसम सफल हुआ।

हुमायू की पराजय के पश्चात् शेरशाह उस सिन्ध नदी के उस पार भगा देना चाहता था और हुमायू की इस प्रार्थना को, कि पजाब उसे दे दिया जाय, उसन अस्वीकार कर दिया। जब तक हुमायू सिन्ध तथा राजपूताने म रहा, शेरशाह सदा सतर्क रहा। मालदेव से हुमायू के मिलन की सम्भावना देखते ही उसने तत्काल मालदेव पर आक्रमण करने की तैयारी कर ली। इससे यह स्पष्ट है कि शेरशाह हुमायू को किसी भी तरह एसी परिस्थिति म नही देखना चाहता था जिसस उसके राज्य को भय हो। हुमायू तथा मुगलो से अपने साम्राज्य की रक्षा के लिए उसने गक्खर के भागो को जीतकर अपने राज्य म मिलाने का प्रयत्न किया। रोहतास का प्रसिद्ध दुर्ग उसने कश्मीर से हैदर मिर्जा तथा अफगानिस्तान की तरफ से मुगलो के आक्रमण से बचाव के लिए बनाया। शेरशाह ने मुल्तान और सिन्ध को जीतकर अपने राज्य की सीमा को और भी शक्तिशाली बना दिया। इस तरह शेरशाह को अपन साम्राज्य को सगठित करन का अवसर मिला। जब तक शेरशाह जीवित रहा, हुमायू अपनी ही समस्याओ म व्यस्त रहा तथा सूर साम्राज्य पर आक्रमण करने का उसे न अवसर मिला, न सुविधा।

हुमायू तथा इस्लाम शाह

दुर्भाग्यवश शेरशाह अधिक दिना तक जीवित न रह सका। कालिजर के दुर्ग

के निकट अत्यन्त आकस्मिक परिस्थितियो मे उसकी मृत्यु हो गयी (22 मई 1545 ई०)। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका दूसरा पुत्र जलाल खा इस्लाम शाह के नाम से गद्दी पर बैठा। इस्लाम शाह एक योग्य शासक था और उसने शेरशाह के साम्राज्य को और भी शक्तिशाली बनाया। वह योग्य पिता का योग्य उत्तराधिकारी था। उसे साहित्य मे रुचि थी। साहित्यिक गोष्ठी मे वह वाक्चातुय तथा रसिकता के साथ अरबी तथा फारसी की कविताओ पर दाद देता था। वह स्वय भी आशु कवि था। धार्मिक ग्रथो का भी उसने अध्ययन किया था तथा इन विषयो पर वह विचार विमश करता रहता था। मध्य युग के उच्च वग म मद्यपान तथा अय व्यसनो का विशेष प्रचार था। किन्तु इस्लाम शाह का जीवन सयमित था। वह अच्छा सनिक था तथा अपने सैनिक गुणो के लिए प्रसिद्ध था। इन गुणो के होते हुए भी वह अभिमानी, अविश्वासी, प्रतिहिंसक, तथा निदयी था। कभी-कभी उसका व्यवहार इतना पाशविक होता कि देखने वालो को कपा देता था।

इस्लाम शाह एक अच्छा शासक था। उसने शरियत के आधार पर 80 पष्ठो का एक कानून का कोड तयार कराया। वह कोड राज्य के प्रत्यक जिले म भेज दिया गया जिसस राजसी कमचारियो को याय करने म सुविधा हो। शेरशाह ने दो दो मील पर सराया (विश्राम गृहा) की स्थापना की थी। इस्लाम शाह न इनके बीच एक-एक और सराय बनवायी। सेना म सुधार कर उसन गति तथा शक्ति प्रदान की। अफगान अमीरो की शक्ति को उसने नष्ट करन का प्रयत्न किया। उनके सभी हाथी छीन लिये और उनके पास केवल हथिनिया रहने दी। बहुत स अमीर अपने अखाडे म नतकिया रखत थे। उसन इ ह भी छीन लिया जिसस अमीरो का सामाजिक मनोरजन भी समाप्त हो गया। उसके शासन काल म साम्राज्य के भिन्न भिन्न भागो म प्रत्यक शुक्रवार को दरबार होता था। वहा एक शामियान म तख्त पर इस्लाम शाह का जूता तथा तूणीर रखा जाता तथा अमीरो का उसके सामने झुककर वैसा ही अभिवादन करना पडता जसे वहा इस्लाम शाह ही बठा हो। वहा राजसी नियम तथा आनाए सुनायी जाती थी।[1]

अफगान, जो अपनी उद्दण्डता, घमड, तथा लडाकू आदतो के लिए प्रसिद्ध थे, ऐसी आज्ञाओ से बहुत ही नाराज हुए। परिणामस्वरूप उ होंने विद्रोह कर दिया। इन विद्रोहो को दबाने म इस्लाम शाह का बहुत समय लगा। उसन शक्ति, क्रूरता तथा बुद्धिमानी से इन विद्रोहियो को दबा दिया। इनम नियाजियो का विद्रोह सबस कठोर था। इसी समय महदवी आन्दोलन न भी उसके साम्राज्य म जोर पकडा।

1 इस्लाम शाह के नियमो के लिए देखिए इलियट तथा डासन 5 पृ० 486-88, ए० एल० श्रीवास्तव, शेरशाह एण्ड हिज सक्सेसस पृ० 115-18, राय, सक्सेसस आफ शेरशाह, प० 54 60।

इस्लाम शाह ने इसके नेता के प्रति भी ऐसा ही कठोर व्यवहार किया।[1] नियाजियों के प्रति निर्दयता और अफगान सैनिकों के प्रति रूखे व्यवहार के कारण उसे मार डालने के दो बार प्रयत्न हुए, किन्तु दोनों बार वह बच गया।

हुमायूँ के प्रति इस्लाम शाह ने भी शेर शाह की ही तरह आक्रमणकारी नीति नहीं अपनायी। कामरान के सहायता मांगने के लिए आने पर भी उसने उसे सहायता देना उचित नहीं समझा। उसकी नीति सतर्कता और सीमा रक्षा की थी। पश्चिमी पंजाब की रक्षा के सम्बन्ध में उसे नियाजी अफगानों से युद्ध करना पड़ा और उन्हें नष्ट करने में उसे सफलता प्राप्त हुई। गक्खर लोगों पर आक्रमण कर उसने उनकी भूमि को रौंद डाला। उसने शेरशाह द्वारा प्रारम्भ किया गया रोहतास का दुर्ग पूरा किया। इसके अतिरिक्त उसने मानकोट के दुर्ग का निर्माण किया। इस्लाम शाह हुमायूँ की गतिविधि के प्रति इतना सतर्क था कि अपनी सीमा पर वह उसका विरोध करने के लिए प्रत्येक दृष्टि से तैयार रहता था। 1553 ई० में जब हुमायूँ सिन्धु नदी पार कर कामरान को बन्दी बनाने के लिए नीलाब पहुँचा उस समय इस्लाम शाह बीमार था और उसके गले में दवा के लिए जोंकें लगायी गयी थीं। उसने जोंकों की पट्टी उतार कर फेंक दी और अपनी सेना को तुरन्त सीमा की तरफ बढ़ने की आज्ञा दी। यह जानकर कि बहुत बड़ी तोपों को सीमा तक पहुँचाने के लिए हाथी उपलब्ध नहीं हैं उसने अफगान सैनिकों का जानवरों की तरह प्रयोग किया। उसकी 60 तोपों के तोपखाने को घसीटने के लिए 60,000 अफगान सैनिकों का प्रयोग हुआ और 12 मील प्रतिदिन की गति से उसकी सेना सीमा की तरफ बढ़ी। हुमायूँ के वापस लौटने की सूचना पाकर इस्लाम शाह वहाँ लुधियाना से ग्वालियर वापस चला गया।

उसकी गति ने हुमायूँ को भी आश्चर्यचकित कर दिया। इस घटना से इस्लाम शाह की सतर्कता स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है। जब तक इस्लाम शाह जीवित रहा, हुमायूँ को भारत पर आक्रमण करने का साहस नहीं हुआ।

सूर साम्राज्य का विघटन

लगभग 9 वर्ष शासन करने के पश्चात् 30 अक्टूबर 1553 ई० को भगन्दर की बीमारी से इस्लाम शाह की मृत्यु हो गयी। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका 12 वर्षीय पुत्र फीरोज गद्दी पर बैठा, किन्तु उसका शासन अधिक दिन नहीं रहा। उसके मामा और चाचा मुबारिज खाँ ने उसे मार डाला और स्वयं मुहम्मद आदिल

1 इस्लाम शाह के विद्रोह दमन तथा महदवी आन्दोलन के लिए देखिए राय सक्सेसस आफ शेरशाह पृ० 10-36, त्रिपाठी राइज एण्ड फॉल, पृ० 143-52, तारीखे दाऊदी, इलियट तथा डासन, 4, पृ० 501-503।

शाह के नाम से गद्दी पर बैठा। मुहम्मद आदिल शाह के राजत्व काल (1553-57 ई०) में सूर साम्राज्य का विघटन हो गया।

शेरशाह ने जिस राष्ट्रीय भावना को जागृत किया था वह समाप्त हो गयी। अफगान अमीरों की दबी वासनाएं तथा महत्वाकांक्षाएं पुनः जागृत हो गयीं। मुबारिज खां व्यभिचारी और मूर्ख था। एक अच्छे गायक के अतिरिक्त उसमें अन्य कोई भी गुण नहीं थे। क्षणिक प्रसिद्धि के लिए वह अपव्यय करता। उदाहरणतया, उसने 500 रुपये मूल्य का सोना लगवाकर तीर बनवाये थे। वह ये तीर चलाता और जो ये तीर प्राप्त कर उसके सामने उपस्थित होता उसे 500 रुपये दिये जाते। उसकी इन मूर्खताओं के कारण लोग उसे आदिल शाह के स्थान पर अधली (अंधा) या अदिली (मूर्ख) कहते थे। सौभाग्य से उसके एक हिन्दू अधिकारी हेमू ने उसकी बड़ी सहायता की। हेमू प्रारम्भ में रिवाड़ी में शोरे का सौदागर था, इस्लाम शाह ने उसे बाजारों का निरीक्षक नियुक्त कर दिया था। अपनी योग्यता से धीरे धीरे बढ़ते-बढ़ते वह अत्यन्त शक्तिशाली तथा वास्तविक शासनकर्ता बन गया।

आदिल शाह ने अफगान नेताओं के विरुद्ध इस्लाम शाह की नीति का अनुसरण किया। उसने नये अमीरों को प्रोत्साहित किया तथा पुराने अमीरों को, जिनसे उसे भय था, दबाने का प्रयत्न किया। ग्वालियर में जागीर वितरण के समय दरबार ही में तलवारें चल गयीं। आदिल शाह ने कन्नौज की जागीर शाह मुहम्मद फर्मूली से लेकर सरमस्त खां सरवानी को दे दी। इससे फर्मूली बहुत नाराज हुआ। शाह मुहम्मद फर्मूली के पुत्र सिकन्दर ने दरबार ही में सरमस्त को मार डाला। वह स्वयं मारा गया और आदिल शाह को जनानखाने में भागकर अपने प्राण बचाने पड़े।[1] इस घटना के पश्चात् उसकी हालत तेजी से बिगड़ने लगी। ताज खां करांनी ने विद्रोह किया। आदिल शाह ने छिबरामऊ में उसे पराजित किया। वहां से भागकर ताज खां चुनार गया जहां हेमू ने उसे पुनः पराजित किया तथा बंगाल की सीमा तक भगा दिया।

आदिल शाह ने इब्राहीम खां सूर को बन्दी बनाना चाहा। वह गाजी खां का पुत्र तथा आदिल शाह का बहनोई था। आदिल की बहन को इसका पता चल गया। उसने अपने पति को चुनार के दुर्ग में भागने में सहायता दी। वह भागकर बयाना गया। आदिल शाह ने ईसा खां नियाजी को उसके विरुद्ध भेजा, किन्तु इब्राहीम ने उसे कालपी में पराजित कर दिया। इस विजय ने उसे उत्साहित किया। आगे बढ़कर उसने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। उसने इब्राहीम शाह

1 राय, सक्सेसन आफ शेरशाह, पृ० 65 66।

की उपाधि धारण की तथा अपने को सुल्तान घोषित किया। उसने आगरा पर भी अधिकार कर लिया। कई अमीर भी उससे आ मिले। इस तरह वह शक्तिशाली हो गया। आदिल शाह उसके विरुद्ध दिल्ली की तरफ बढ़ा। यमुना के निकट इब्राहीम सूर ने आदिल को इस शर्त पर समर्पण का वचन दिया कि उसका साथ देने वाले अमीरों को हानि नहीं पहुंचायी जाएगी। आदिल ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया तथा उसने अपने अमीरों को इब्राहीम को विश्वास दिलाने के लिए भेजा। इब्राहीम ने इन्हें अपने पक्ष में कर लिया, जिससे आदिल को विवश होकर चुनार वापस लौट जाना पड़ा। इस तरह दिल्ली तथा आगरा उसके हाथ से निकल गये।

इब्राहीम के विरोध से उत्साहित होकर पंजाब के गवर्नर अहमद खां सूर ने भी विद्रोह कर दिया। वह 10,000 सेना के साथ दिल्ली पर अधिकार करने के लिए रवाना हुआ। इब्राहीम 80,000 सैनिकों के साथ युद्ध के लिए आगे बढ़ा। इतनी बड़ी सेना देखकर अहमद ने संधि करनी चाही। उसने इब्राहीम को इस शर्त पर समर्थन करने का वचन दिया, कि वह उसे पंजाब प्रदेश देने का वचन दे। इब्राहीम ने इसे अस्वीकार कर दिया। आगरा से पश्चिम 18 मील दूर फरह[1] नामक स्थान पर युद्ध हुआ (सन् 1555 ई०) जिसमें इब्राहीम पराजित हुआ तथा सम्भल भाग गया। अहमद ने सिकन्दर की उपाधि धारण की तथा अपने को सुल्तान घोषित किया।

बंगाल के गवर्नर मुहम्मद खां सूर ने भी इस अराजकता से लाभ उठाया। उसने शमसुद्दीन मुहम्मद शाह गाजी की उपाधि धारण की तथा दिल्ली सल्तनत से अलग अपने को स्वतन्त्र शासक घोषित किया।

मालवा में शुजात खां गवर्नर था। इस्लाम शाह की मृत्यु के पश्चात् जो गड़बड़ी हुई उससे लाभ उठाकर वह भी स्वतन्त्र हो गया। 1555 ई० में उसकी मृत्यु हो गयी और उसके पश्चात् उसका लड़का बाज बहादुर मालवा का स्वतन्त्र शासक बन बैठा।

1555 ई० में उत्तरी भारत की राजनैतिक अवस्था

सूर साम्राज्य के विघटन के परिणामस्वरूप शेरशाह का साम्राज्य पांच सल्तनतों में विभाजित हो गया था। पंजाब में सिकन्दर सूर, सम्भल और दोआब में इब्राहीम सूर, चुनार से बिहार तक के भाग में आदिल शाह, मालवा में बाज बहादुर तथा बंगाल में मुहम्मद खां सूर अलग-अलग सुल्तान बने हुए थे। प्रत्येक शासक पूरे साम्राज्य पर अधिकार करना चाहता था तथा अन्य चार उत्तरा-

1 27° 19′ उत्तर तथा 77° 49′ पूर्व स्थिति।

धिकारियो को पराजित करने के अवसर की प्रतीक्षा करता रहता था।

बहादुर शाह की मत्यु के पश्चात् गुजरात की शान्ति का अन्त हो गया। सुल्तान शक्तिहीन थे जिसस अमीरो की शक्ति बहुत बढ गयी। आन्तरिक विद्रोह ने शासन शक्ति को जर्जर कर दिया। बहादुर की मृत्यु के पश्चात् महमूद तृतीय गद्दी पर बैठा (1538 54 ई०)। उसका शासन वास्तव म अमीरो के संघर्ष का काल था। उसकी मत्यु के पश्चात् सुल्तान अहमद शाह तृतीय (1554 61 ई०) गुजरात का सुल्तान हुआ। वह बालक था, इस कारण शासन का काय इतिमाद खा के अधिकार मे था।[1] गुजरात अन्य राज्यो की कमजोरी से लाभ उठाने की परिस्थिति म नही था।

सिन्ध की स्थिति भी अच्छी नही थी। हुमायू के सिन्ध से विदा होने के कुछ दिन पश्चात शाह हुसेन अरगून ज्वर से पीडित हो गया जिसमे वह अशक्त हो गया। उसकी इस स्थिति म उसके अमीरो न मिर्जा मुहम्मद ईसा तरखान को अपना शासक चुन लिया। शाह हुसेन तथा भक्कर के गवनर सुल्तान महमूद ने ईसा तरखान का बराबर विरोध किया था किन्तु उन्ह विवश होकर सिन्ध का बहुत सा भाग उसे देकर उससे सन्धि करनी पडी। 1556 ई० म शाह हुसेन की मृत्यु हो गयी जिससे पूरा सिन्ध ईसा तरखान के हाथ मे आ गया। मुहम्मद ईसा तरखान की भी मत्यु 1567 ई० म हो गयी। उसके पश्चात् उसका पुत्र मिर्जा मुहम्मद बाकी तरखान गद्दी पर बठा।

राणा सागा की मत्यु (30 जनवरी 1528 ई०) के पश्चात मेवाड म आन्तरिक सघर्ष प्रारम्भ हुआ जिसस गुजरात तथा अन्य राज्यो न लाभ उठाया। अनेक कठिनाइयो के पश्चात उदयसिंह मेवाड के राणा हुए, किन्तु उनमे राणा सागा का वह तेज न था। ये दिन मेवाड के पतन के दिन थे। शेरशाह ने मालदेव को पराजित कर जोधपुर का उत्कर्ष भी समाप्त कर दिया था। राजस्थान म न अन्य कोई राज्य था न कोई नेता जो किसी बाहरी शत्रु से लोहा ले सकता।

इस तरह सम्पूर्ण उत्तरी भारत छोटे छोटे राज्यो म विभाजित हो गया था, जो परस्पर युद्ध करते रहते थे। कोई ऐसा नेता नही था जो इन शक्तियो को एकत्र करता। पंजाब अरक्षित हो गया था। हुमायू के सिंहासन म उसके भाइयो तथा अफगानो का विशेष हाथ था। उसके भाइयो की मत्यु हो चुकी थी। अफगान साम्राज्य टूट चुका था। हुमायू के लिए अपने खोये हुए साम्राज्य को पुन प्राप्त करने का इससे अधिक उपयुक्त अन्य अवसर न था।

---

1 कामिस्सारियट, हिस्ट्री आफ गुजरात, पृ० 414।

2 कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, 3, पृ० 502।

भारतीय अभियान

हिंदुस्तान पर आक्रमण करने के पूर्व, 1553 ई० के अन्त तथा 1554 ई० के प्रारम्भ तक, हुमायूं काबुल में रहकर भारतीय अभियान के उद्देश्य से आवश्यक वस्तुओं को एकत्र करने में व्यस्त रहा। इसी बीच कुछ अमीरों ने हुमायूं से कन्धार के हाकिम बैराम खां के विषय में 'झूठी सच्ची बात' कही तथा उसे यह सन्देह दिलाया कि वह ईरान के शाह से मिलकर षडयन्त्र रच रहा है। कन्धार को अरक्षित छोड़कर हिंदुस्तान के अभियान में जाना उचित नहीं था। हुमायूं ने काबुल में अली कुली खां को नियुक्त किया तथा शीत ऋतु के प्रारम्भ में कन्धार की ओर प्रस्थान किया (961 हि० दिसम्बर 1553 ई०)। उसका विचार था कि कन्धार में मुनीम खां या अन्य किसी को नियुक्त कर वह बैराम खां को अपने साथ काबुल वापस लाएगा।[1]

हुमायूं के आगमन की सूचना प्राप्त कर बैराम खां ने कन्धार से सात मील[2] आगे बढ़कर अन्दाम नामक स्थान में उसका स्वागत किया। हुमायूं के स्वागत करने में उसने इतनी भक्ति तथा जोश दिखलाया कि यह स्पष्ट हो गया कि उसके विरुद्ध जो बातें कही गयी थीं वे सत्य नहीं थीं। बैराम खां ने जान दोस्तव का प्रबन्ध किया जिसमें विद्वान, धार्मिक व्यक्ति तथा सैनिक भी उपस्थित थे। इस स्वागत समारोह में उसने अपने निजी कोष से भी खर्च किया।

अबुल फजल लिखता है कि बैराम खां ने सेवा एवं स्वामिभक्ति प्रदर्शित करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। प्रत्येक प्रबन्ध की वह स्वयं देख रेख करता था तथा जिस किसी वस्तु की आवश्यकता होती हुमायूं के सामने उपस्थित की जाती। इस तरह शीत ऋतु आमोद प्रमोद में व्यतीत हुई।[3] ख्वाजा गाजी, जिसे हुमायूं ने दूत बनाकर ईरान भेजा था, वहां से वापस आया। उसकी सेवा से प्रसन्न होकर हुमायूं ने उसे वित्त विभाग में इशराफे दीवान के पद पर नियुक्त किया।

इस आमोद प्रमोद में एक दुखदायी घटना हुई जो हुमायूं के कमजोर चरित्र, समकालीन धर्मान्धता तथा अकबर के राज्यारोहण के प्रारम्भिक काल में अमीरों

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 332 33, बायजीद, पृ० 170 71, तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 130, मुन्तखबुत्तवारीख, पृ० 455।

2 अकबरनामा के अनुसार दस फरसख। एक फरसख 18,000 फुट लम्बा होता है। अकबरनामा की कुछ हस्तलिखित प्रतियों में दो फरसख लिखा है। दो फरसख लगभग सात मील के बराबर हुआ। यह अधिक न्यायसंगत प्रतीत होता है। डॉ० ईश्वरी प्रसाद ने 40 मील या दस फरसख स्वीकार किया है (हुमायूं, पृ० 339)।

3 अकबरनामा, 1 पृ० 333।

के पारस्परिक संघर्ष की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। अबुल माली हुमायू का एक प्रिय सेवक था। सम्राट की विशेष कृपा के कारण उसका दिमाग बहुत चढ गया था। वह कट्टर सुन्नी था। धर्मान्धता म उसने मीरे शिकार करावेग के पिता शेर अली बेग की, शिआ होने के नाते, हत्या कर दी। अबुल माली ने खुले दरबार म घोषणा की थी कि वह 'इस दुष्ट शिआ की हत्या कर दगा"[1] फिर भी हुमायू ने उसे दण्ड नही दिया। अबुल माली हुमायू की कृपा के कारण छूट गया किन्तु अनुशासन की दृष्टि से यह ठीक नही था। शिआ अमीरो म इससे असन्तोष फैलना स्वाभाविक था। इस घटना से हुमायू की कमजोरी स्पष्ट रूप स प्रमाणित होती है।

हुमायू कन्धार म तीन महीने तक रुका रहा। इस बीच 18 अप्रैल 1554 ई० को चोचक बेगम (जूजूक बेगम) के गर्भ से हुमायू के पुत्र मिर्जा हकीम का जन्म हुआ।[2]

हुमायू अपनी यात्राओ म सन्त तथा विद्वानो के दर्शन करने तथा उनसे वार्तालाप करने के अवसर से नही चूकता था। यहा भी उसने मौलाना जैनुद्दीन महमूद कमानगर से भेंट की। ये उस समय के प्रमुख सूफी थे तथा बैराम खाँ उनका शिष्य हो गया था। हुमायू उनसे कई बार मिला तथा दोनो म अनेक विषयो पर विचार विनिमय हुआ।[3] हुमायू कन्धार मे बैराम खा की जगह मुनीम खा को नियुक्त करना चाहता था और उसने मुनीम खा से इस तरह का प्रस्ताव भी किया किन्तु उसने हुमायू को परामर्श दिया कि उन परिस्थितियो म जब कुछ शिआ अमीरो म असन्तोष था, एक विश्वसनीय शिआ अमीर के पद म परिवर्तन के लिए समय उपयुक्त न था। हुमायू ने इस परामर्श को स्वीकार कर लिया।[4]

कन्धार को बैराम खा के अधिकार मे रहने देकर हुमायू ने बुद्धिमानी का कार्य किया। शिआ अमीरो तथा सैनिको मे असन्तोष फैल रहा था। इस परिस्थिति म यह आज्ञा विश्वासघात को प्रश्रय देती। इसके अतिरिक्त कन्धार पर अधिकार करने के पश्चात हुमायू न वहा बैराम खा को नियुक्त किया था तथा ईरान के शाह को इस तरह का पत्र लिखा था जिससे ऐसा आभास मिलता था कि उसी के सेवक को कन्धार का हाकिम नियुक्त किया गया हो। परिवर्तन के फलस्वरूप उधर से भी भय की आशंका हो सकती थी।

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 334।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 332, बायजीद, पृ० 175-76 की तिथि सही नही है।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 333, मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 455-56।

4 अकबरनामा, 1, पृ० 334, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 130, बायजीद, पृ० 170 71, मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 458।

कन्धार से प्रस्थान करने के पूर्व हुमायूं ने कन्धार के दुर्ग पर बैराम खां की नियुक्ति की पुनः स्वीकृति दे दी, जिससे किसी के मन में शाह तथा हुमायूं के बीच वैमनस्य फैलाने का अवसर न मिले। हुमायूं ने जागीरों में परिवर्तन भी किया। इस तरह जमीनदावर ख्वाजा मुअज्जम से लेकर अली कुली के भाई बहादुर खां को दे दिया गया। उसने बैराम खां को आज्ञा दी कि कन्धार का उचित प्रबन्ध करने के उपरान्त वह हुमायूं से काबुल में मिले जिससे हिन्दुस्तान पर आक्रमण के पूर्व वह उसकी सहायता कर सके।[1] यह सब निश्चित कर हुमायूं काबुल की तरफ रवाना हुआ। बैराम खां की तत्परता तथा स्वामिभक्ति का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि शीघ्र प्रबन्ध करके वह हुमायूं के अग्रसर होने के कुछ दिन बाद ही रवाना हो गया तथा हुमायूं से गजनी में जा मिला (31 जुलाई 1554 ई०)। सम्राट को बैराम खां के पहुंचने से बड़ी प्रसन्नता हुई तथा उसके आगमन के उपलक्ष्य में उसने दावत दी तथा जश्न मनाया। बैराम खां के आगमन में जश्न तथा खुशियां क्यों मनायी गयी? क्या बैराम खां का चरित्र सचमुच सन्देहजनक था? ऐसा प्रतीत होता है कि हुमायूं को बैराम खां से बहुत अधिक भय था और उसके आ जाने से उसने एकता तथा शक्ति का अनुभव किया।

गजनी से पूरा दल काबुल गया (अक्टूबर नवम्बर 1554 ई०, 961 हि०)[2]। काबुल में हुमायूं सेना तथा युद्ध सामग्री एकत्र करने में व्यस्त हो गया। सैनिकों को भर्ती करने के लिए मध्य एशिया के अन्य भागों से लोगों को आमन्त्रित किया गया। हिन्दुस्तान में इस्लाम शाह की मृत्यु हो चुकी थी जिसके पश्चात् उसका साम्राज्य छिन्न भिन्न हो गया था। भारतीय अभियान का यही सबसे उपयुक्त समय था। इसी समय दिल्ली तथा आगरा के कुछ नागरिकों ने इस्लाम शाह सूर की मृत्यु तथा अफगानों के पारस्परिक संघर्ष की सूचना दी तथा उसे इस अवसर से लाभ उठाकर अपने साम्राज्य को पुनः प्राप्त करने के लिए आमन्त्रित किया।[3]

हुमायूं का काबुल से प्रस्थान

आक्रमण के पूर्व काबुल, कन्धार तथा अन्य भागों का प्रबन्ध आवश्यक था। हुमायूं ने अपने पुत्र मिर्जा हकीम को काबुल का गवर्नर नियुक्त किया। वह अभी बच्चा था। इस कारण वास्तविक शासन के लिए मुनीम खां को उसका संरक्षक नियुक्त किया गया। अस्त्र शस्त्रों का प्रबन्ध करने के लिए बैराम खां का काबुल में

---

1 जौहर स्टीवर्ट पृ० 158 59 अकबरनामा, 1, पृ० 334, तबकात अकबरी, ड, 2, पृ० 130।

2 अकबरनामा 1, पृ० 334।

3 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 172।

छोड दिया गया। उसे आज्ञा दी गयी कि वह प्रबन्ध कर शीघ्र प्रमुख सेना से आ मिले। इसी प्रकार अन्य प्रबन्ध कर शुभ नक्षत्र म (जिल हिज्जा 961 हि०, 12 नवम्बर 1554 ई०) केवल तीन हजार सैनिकों के साथ हुमायू भारतीय अभियान के लिए काबुल से रवाना हुआ।[1] अपने पिता की भांति हुमायू ने अभियान के पूर्व दो प्रतिज्ञाए की। प्रथम, वह युद्ध के समय बन्दी नही बनाएगा तथा दूसरी, अभियान के काल तक मास नही खाएगा।

सुरखाब, लमगानात, जलालाबाद होता हुआ हुमायू बिकराम (पशावर) पहुचा (25 दिसम्बर 1554 ई०)। बैराम खा भी 5,000 सनिकों के साथ सिन्धु नदी के निकट हुमायू की सेना से आ मिला। हुमायू की सेना मे सैनिकों के अतिरिक्त बहुत से गायक एव वादक भी थ। अक्बर, जिसकी अवस्था बारह वर्ष से कुछ अधिक थी, उसके साथ था।

सिन्धु नदी पार कर सेना ने पजाब म प्रवेश किया। पजाब मे अधिक रुकावट नही हुई। जसा ऊपर वर्णन किया जा चुका है, इस समय पजाब सिकन्दर शाह सूर के अधिकार म था। हुमायू के आक्रमण ने उसे कठिन परिस्थिति म डाल दिया। पश्चिम स हुमायू तथा दक्षिण-पूर्व से मुहम्मद आदिल शाह सूर उसके प्रदेश को अधिकृत करना चाहत थ। दो तरफा युद्ध से रक्षा के लिए सिकन्दर शाह सूर न अपना केन्द्र लाहौर से दिल्ली हटा लिया। पजाब की रक्षा हेतु रोहतास दुर्ग की मोर्चाबन्दी कर उसने वहा तातार खा काशी को नियुक्त कर दिया।[2] सिकन्दर न आदम खा गक्खर स भी सन्धि कर ली थी तथा उसकी स्वामिभक्ति की गारण्टी के लिए उसने उसके पुत्र को बन्धक के रूप म अपने पास रख लिया था।[3] इस तरह सिकन्दर को आशा थी कि हुमायू का पजाब म सफलता नही मिलेगी।

सिन्ध नदी पार करन के पश्चात हुमायू न आदम खा गक्खर को सहायता दन के लिए आमन्त्रित किया किन्तु उसन हुमायू का साथ देने स इनकार कर दिया। उसन हुमायू को सूचित किया कि उसन सिकन्दर सूर से सन्धि कर ली है और

---

1 बायजीद पृ० 176 87, अकबरनामा, 1 पृ० 340 41। इतन कम सनिकों के साथ रवाना होने स प्रकट होता है कि हुमायू के प्रयत्न बहुत जनप्रिय न हुए। बायजीद न सेना के साथ के 202 प्रमुख व्यक्तियों, 29 गायक एव वादकों क नाम दिय है, इनक अतिरिक्त उसन अकबर के साथ के 56 व्यक्तियों तथा बराम खा के साथ के 54 व्यक्तियों के नाम भी दिय है। अबुल फजल न 57 प्रमुख सहायकों तथा विश्वास पात्रों के नाम दिये हैं।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 341, मुन्तखबुत्तवारीख 1, पृ० 459।

3 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 160, अकबरनामा, 1 पृ० 341।

उसका स्वागत किया।[1] हुमायू ने अपने अमीरो तथा सेवको मे जागीर वितरित की तथा लगान वसूल करने का प्रबन्ध किया। निष्कासन काल मे जौहर ने उसकी बडी सेवा की थी। उसे उपहार देने का समय आ गया था। उसे हैबतपुर का परगना दिया गया। उसके बुद्धिमत्तापूर्ण प्रबन्ध से प्रसन्न होकर हुमायू ने उसे तातार खा लोदी का कोष एव जागीर भी प्रदान किये।

इसी समय सूचना मिली कि अफगान नेता शाह बाज खा 12,000 अफगान सैनिको के साथ[2] दीपालपुर के निकट मुगलो से युद्ध के लिए तैयार है। हुमायू ने शाह अबुल माली अली कुली शबानी इत्यादि को उसके विरुद्ध भेजा। अफगानो ने बडी शक्ति से मुगलो पर आक्रमण किया। अबुल माली शत्रु के आक्रमण से अपने घोडे से गिरते गिरते बचा। मुगल बडी बहादुरी से लडे। अफगान पराजित हुए तथा मैदान छोडकर भाग गये। बहुत से हाथी घोडे तथा अन्य सामान मुगलो के हाथ लगा।

हरियाना मे बराम खा ने नसीब खा अफगान को पराजित किया। यहा भी मुगलो को बहुत सा सामान प्राप्त हुआ। हुमायू ने प्रतिज्ञा की था कि वह इस अभियान मे किसी को बन्दी नही बनाएगा। इस कारण युद्ध मे प्राप्त स्त्रिया तथा बच्चो को उसने नसीब खा के पास भेज दिया।[3] इस तरह हरियाना पर भी मुगलो का अधिकार हो गया। मुगल सेना यहा से जालधर पहुची। अफगान यहा से भी भाग गये और मुगलो ने जालन्धर पर अधिकार कर लिया।

पजाब मे एक के बाद एक स्थान पर मुगलो का अधिकार होते देखकर आश्चर्य होता है। वास्तव मे अफगानो का साहस समाप्त हो गया था तथा कुशल नेतृत्व के अभाव से उनमे भगदड मच गयी थी। आतक यहा तक फैल गया था कि किसी भी अश्वारोही को मुगल वेश मे देखकर अफगान भाग खडे होते तथा मुडकर पीछे देखते तक न थे।[4] अफगान सैनिक तथा अमीर अपने स्वार्थ मे रहते थे और अपने-

---

1 जौहर (स्टीवर्ट पृ० 164) लिखता है कि सयिद तथा नगर के प्रमुख लोग सयिद अब्दुल्ला के नेतृत्व मे उसका स्वागत करने आये। वहा भी उनमे दो दल थे—एक मखदूमुलमुल्क के नेतृत्व मे तथा दूसरा मिया हाजी महदी के नेतृत्व मे। हुमायू ने कठिनाई से दोनो दलो मे सुलह करायी।

2 जौहर (स्टीवर्ट, पृ० 166) के अनुसार अफगान सैनिको की सख्या 12 000 तथा मुगल सैनिको की सख्या 800 थी, बायजीद (पृ० 190) अफगान सैनिको की सख्या 20 000 लिखता है।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 343।

4 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 459।

अपने परिवार की रक्षा का प्रबन्ध करने में व्यस्त थे। शेरशाह के समय की सामूहिक एकता तथा जोश समाप्त हो गया था। मुग़ल अमीरों में भी केवल बाह्य एकता थी। इस समय भी बैराम खां तथा तरदी बेग में नीति के विषय में मतभेद हो गया। तरदी बेग चाहता था कि वह भाग हुए अफ़गानों का पीछा करे। बैराम खां ने इसकी अनुमति न दी। तरदी बेग के सेवक बातूं खां तथा ख्वाजा मुअज्जम में तू-तू मैं-मैं हो गयी तथा तलवार चल गयी। यह स्थिति इतनी गम्भीर हो गया कि हुमायूं को हस्तक्षेप करना पड़ा। उसने फरमान तथा मौखिक सन्देश द्वारा दोनों दलों को समझाया। बैराम खां जालन्धर में ठहर गया। हुमायूं ने प्रत्येक व्यक्ति को अलग-अलग परगने देकर उन्हें सन्तुष्ट किया।[1]

माछीवारा का युद्ध

बैराम खां ने सिकन्दर ऊज़बेक को माछीवारा में नियुक्त किया। वहां पहुंचकर सिकन्दर ऊज़बेक ने देखा कि मुग़ल सेना शक्तिशाली है इस कारण आगे बढ़कर उसने सरहिन्द पर भी अधिकार कर लिया। सरहिन्द पर मुग़ल आधिपत्य की सूचना पाकर सिकन्दर सूर को भय हुआ कि मुगल अब दिल्ली पर भी आक्रमण कर देंगे। वह स्वयं आदिल शाह सूर से युद्ध करने में व्यस्त था, इस कारण उसने मुग़लों को सरहिन्द से भगाने के लिए तातार खां काशी के नेतृत्व में अफ़गान सेना भेजी। सिकन्दर ऊज़बेक ने देखा कि अफ़गानों का सामना करना कठिन है। इस कारण सरहिन्द छोड़कर वह बैराम खां के पास जालन्धर लौट आया। उसके इस पलायन से बैराम खां बहुत ही क्रुद्ध हुआ। उसने उसकी अनुशासनहीनता तथा कायरता के लिए उसकी भर्त्सना की।[2]

बैराम खां के नेतृत्व में मुग़ल सेना जालन्धर से माछीवारा[3] पहुंची। तरदी बेग ने यह मत रखा कि वर्षा ऋतु के अन्त तक वहीं रुका जाए, सभी पुलों पर अधिकार कर शत्रु को सतलज पार करने से रोक दिया जाए और वर्षा ऋतु की समाप्ति के पश्चात अफ़गान सेना पर आक्रमण किया जाए। बैराम खां इस मत से सहमत नहीं था, उसका विचार था कि इससे समय नष्ट होगा सेना में शिथिलता आ जाएगी जिससे हानि की सम्भावना है। वह तत्काल नदी के उस पार चला

1 अकबरनामा, 1, पृ० 344।

2 वही।

3 इसे माचीवारा, माछीवारा या माछीवाड़ा भी लिखा गया है। यह लुधियाना जिला पंजाब में 30° 55' उत्तर तथा 75° 12' पूर्व में समराला तहसील में, समराला कस्बे से 6 मील तथा लुधियाना से 27 मील पर स्थित है।

जाना चाहता था। उसके इस मत का समर्थन कई प्रमुख अमीरों ने भी किया तथा उसकी आज्ञा से सेना ने नदी पार की। विवश होकर तरदी बेग तथा उसके समर्थकों को भी नदी पार करनी पड़ी। उसके सामने अफगान सेना युद्ध के लिए तैयार खड़ी थी।

बैराम खां ने मुगल सेना को चार दस्तों में विभाजित किया। दाहिनी ओर का दस्ता खिज्र खां हजारा, बायीं तरफ का तरदी बेग, मध्य का बैराम खां तथा अग्रणी दल सिकन्दर खां ऊजबेक के नेतृत्व में था।

इस तरह मुगल सेना भी युद्ध के लिए तैयार हो गयी। अफगान सेना में 30,000 अश्वारोही थे। मुगल सेना की ठीक संख्या बताना कठिन है, किन्तु मुगलों की सेना अफगान सेना से बहुत कम थी।[1] अफगान तत्काल युद्ध के लिए आगे बढ़े। इनके तत्काल अग्रसर होने के कई कारण थे। प्रथम, मुगल सेना की संख्या कम थी, अधिक प्रतीक्षा करने पर इसकी संख्या बढ़ सकती थी, दूसरे, नदी पार करने के पश्चात मुगल सेना अभी पूर्णतया संगठित नहीं हो पायी थी। इस कारण अफगानों के लिए तुरन्त आक्रमण करना अधिक लाभप्रद था।

मुगलों ने दिन के तीसरे पहर में नदी पार की (12 मई 1555 ई०)। सायंकाल के निकट दोनों सेनाओं में मुठभेड़ हुई। भीषण युद्ध होने लगा। अफगान सैनिकों के निकट एक गांव था। यह गांव उनकी रक्षा के लिए उपयुक्त था। गांव के मकान छप्पर के बने थे। अंधकार के बीच गांव में आग लग गयी। छप्पर के मकान धू धू कर जलने लगे। अफगान सेना गांव के निकट होने के कारण प्रकाश में थी। मुगल सेना अंधेरे में होने के कारण सुरक्षित थी तथा अफगान उन्हें नहीं देख सकते थे। तेज हवा चलने लगी, जिससे आग तथा उसके साथ प्रकाश और तेज हो गया। बैराम खां तथा अन्य मुगल सरदारों ने चारों तरफ से अफगानों का घेर

1 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2 पृ० 174, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 167, अकबरनामा, 1, पृ० 345, बायजीद, पृ० 191, तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 132।

2 फिरिश्ता के अनुसार शीत ऋतु होने के कारण अफगान लोग आग जलाये हुए जाग रहे थे। वह लिखता है कि "अफगानों ने, जो अपनी बुद्धिहीनता के लिए प्रसिद्ध हैं आग बुझाने की जगह प्रकाश बढ़ाने के लिए जितनी लकड़ी या चारा लश्कर में था सबका सब एकबार ही आग में डाल दिया (फिरिश्ता ब्रिग्स, पृ० 174-75)। बदायूनी के अनुसार अफगान लोगों ने उजड़े हुए गांव में शरण ली। जैसे ही मुगल सेना दृष्टिगत हुई उन्होंने छप्परों में आग लगा दी। (मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 460)। निजामुद्दीन अहमद लिखता है कि मुगलों के आक्रमण से घबराकर अफगानों ने समीप के गांव में आग लगा दी (तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 133)। अकबरनामा (भाग 1, पृ० 345) में स्पष्ट नहीं है कि आग कैसे लगी।

लिया। अफगान बुरी तरह मारे गय। इस तरह तीन पहर रात्रि तक युद्ध चलता रहा। लगभग 10 घटे मे ही युद्ध का निणय हो गया। अफगान पराजित हुए तथा भाग गय। अफ़गान सनिको द्वारा छोडा हुआ बहुत सा सामान, हाथी, घाड तथा कोष, मुगलो के हाथ लगा।

माछीवारा के युद्ध का परिणाम

इम युद्ध म अफगान अधिक सख्या म मार गये। इसके विपरीत मुगल सना के अधिक सैनिक हता हत नही हुए। मुगला ने अफगाना क सामान, हाथी, घाडे, कोष इत्यादि पर अधिकार कर लिया। इस युद्ध क दूसर दिन बराम खा ने आग बढकर सरहिन्द पर बिना किसी विशप सघष क अधिकार कर लिया। इस युद्ध के परिणामस्वरूप पूरा पजाब, सरहिन्द हिसार फिरोजा तथा दिल्ली प्रदेश के भी कुछ भाग मुगला के अधिकार म आ गय।[1] इम विजय न एक तरफ मुगला का उत्साहित किया और दूसरी तरफ अफगाना की घबराहट तथा निराशा को और भी बढा दिया।

युद्ध के पूव बराम खा ने अपनी सेना की कमी की ओर हुमायू का ध्यान आकर्पित किया था, कि तु हुमायू न यह कहकर उसकी बात को टाल दिया कि अबुल माली ने केवल 700 घुडसवारा के साथ अफगाना को इसके पूव पराजित किया था। जो भी हो, इमम कोई सन्देह नही कि मुगलो न इतनी थोडी सेना क साथ युद्ध कर एक बहुत बडा साहस दिखाया।

हुमायू इस युद्ध म उपस्थित नही था और विजय का श्रेय वास्तव म बराम खा का मिलना चाहिए था। यदि उसने तरदी बेग की बात मान ली होती तो युद्ध इतना शीघ्र न होता और इसका परिणाम क्या होता, यह बताना कठिन है। अफगाना की पराजय का एक प्रमुख कारण परिस्थितिया थी। गाव म आग लगने से स्थिति बिलकुल बदल गयी। यदि प्रकाश न होता तो मुगल अफ़गाना को इतनी सुविधा से पराजित कर सकते, यह स देहजनक है। इसके अतिरिक्त मुगला के अस्त्र-शस्त्र अफगाना क मुकाबले म उत्तम थ।

सरहिन्द का युद्ध

माछीवारा क युद्ध म अपनी सेना की पराजय की सूचना स सिक दर शाह सूर स्तब्ध हो गया। कुछ ही समय पूव उसन इब्राहीम सूर को अपनी छोटी सेना की सहायता स पराजित किया था। मुगलो के सरहिन्द पर अधिकार करने की सूचना

1 तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 133।
2 मुन्तख़बुत्तवारीख, 1, पृ० 459 60।

पाकर उसने स्वय मुगलो से युद्ध करने का निश्चय किया। उसने अपने अफसरो से निष्ठा की प्रतिज्ञा करायी तथा 80,000 अश्वारोही सेना, युद्ध के हाथी तथा तोपखाने के साथ वह सरहिन्द की तरफ रवाना हुआ। वहा पहुचकर उसने सरहिन्द के दुर्ग का घेरा डाला। बैराम खा ने अपनी सुरक्षा का प्रबन्ध तो किया ही, साथ ही उसने हुमायू के पास परिस्थिति की सूचना देते हुए उससे सहायता भेजने तथा पधारने की प्रार्थना की।[1]

मुहब्बत खा द्वारा माछीवारा की विजय की सूचना तथा लूट मे प्राप्त सामग्री पाकर हुमायू को बडी प्रसन्नता हुई उसने बैराम खा को 'खान खानन' तथा 'यार वफादार' की उपाधि दी।[2] बैराम खा के छोटे-बडे सभी सेवको के नाम राजसी दफ्तर मे लिख लिये गये और उन्हे उन्नति प्राप्त हुई। हुमायू को जिस समय सरहिन्द पर अफगान सेना के आक्रमण की सूचना मिली उस समय वह पेट के दर्द (कोलज) से ग्रस्त था जिसके कारण वह स्वय तत्काल अग्रसर होने मे विवश था। उसने अकबर को सरहिन्द की तरफ रवाना किया तथा बैराम खा को सूचित किया कि स्वस्थ होते ही वह यात्रा के लिए रवाना हो जाएगा।

स्वस्थ होते ही हुमायू सरहिन्द की तरफ रवाना हुआ। लाहौर के निकट अकबर की सेना से उसकी मुलाकात हुई। निष्कासन के पश्चात् हुमायू बुद्धिमान हो गया था। लाहौर से आगे बढने के पूर्व उसने वहा का प्रबन्ध करना आवश्यक समझा। फरहत खा को लाहौर का शिकदार, बाबूस बेग को पजाब का फौजदार मिर्जा शाह सुल्तान को अमीन तथा मेहतर जौहर को खजानादार नियुक्त किया गया।[3] यहा से हुमायू अपनी सेना के साथ सरहिन्द की तरफ रवाना हुआ। 28 मई 1555 ई० (7 रजब 962 हि०) को अपनी सेना के साथ वह सरहिन्द पहुच गया।

अफगान सेना ने अपना पडाव सरहिन्द दिल्ली मार्ग पर स्थापित किया जिससे यदि मुगल दिल्ली की तरह बढे तो उन्हे रोका जा सके। उन्होने शेरशाह की तरह अपने पडाव के चारो तरफ खाइया खुदवाकर पूर्ण रूप से मोर्चाबन्दी कर ली थी। इसके विपरीत मुगल सेना सरहिन्द मे डटी हुई थी। इस तरह अफगान तथा मुगल

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 346।

2 फिरिश्ता के अनुसार हुमायू ने उसे यारे वफादार के अतिरिक्त हमदम गमगुसार (दुख दर्द का सखी) की उपाधि दी (फिरिश्ता फा०, पृ० 242)। मासिरुल उमरा के अनुसार उसे 'यार वफादार', बिरादर नेकूसियार' तथा 'फरजन्द सआदतमन्द' की उपाधि भी दी गयी। ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 347 द्वारा उद्धृत।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 346।

युद्ध की प्रतीक्षा करने लगे।

दोनो दलो की सख्या निश्चित रूप से बताना कठिन है किन्तु साधारण अनुमान से प्रतीत होता है कि अफगान सेना मुगल सेना की चौगुनी थी अर्थात मुगल सेना 10,000 तथा अफगान सेना 40,000 से कम नहीं थी।[1]

पच्चीस दिन तक[2] दोनो सेनाए एक-दूसरे के आक्रमण की प्रतीक्षा करती रही। इस बीच छोटी मोटी लडाइया होती रही। हुमायू ने गुजरात अभियान मे जिस तरह मन्दसौर मे बहादुर शाह के उपभोग की वस्तुओ के लिए नाकबन्दी की थी, उसी नीति का उसने यहा भी अपनाया। हुमायू अपने अश्वारोहियो को भेजकर अफगान सेना को उपभोग की आवश्यक वस्तुए रसद इत्यादि को पहुचने को अव्यवस्थित करता रहता था। बार बार की इस तरह की घटनाओ से अफगान सेना परेशान होती रहती थी। एक दिन तरदी बेग ने अफगानो की एक सेना पर, जो सिकन्दर के भाई काला पहाड के नेतृत्व मे थी, आक्रमण किया। काला पहाड मारा गया तथा मुगलो को बहुत सा लूट का सामान प्राप्त हुआ।[3] अफगान इस पराजय से क्रोधित हुए तथा तत्काल युद्ध के लिए आगे बढे।

हुमायू ने अपनी सेना को चार भागो मे विभाजित किया। एक हुमायू, दूसरी अकबर तीसरी शाह अबुल माली तथा तरदी बेग और चौथी बैराम खा के नेतृत्व मे थी।[4] हुमायू का यह विभाजन मुगलो की युद्ध प्रणाली के आधार पर था तथा

---

1 बायजीद के अनुसार अफगान सेना की सख्या 1,00,000, जौहर तथा फिरिश्ता के अनुसार 80 000 थी। निजामुद्दीन अहमद के अनुसार अफगान सेना मुगल सेना से चौगुनी थी। मुगल सेना की सख्या जौहर के अनुसार 5,000 तथा बायजीद के अनुसार 10,000 थी। बायजीद (पृ० 192 93) ने मुगल अफसरो की लम्बी सूची दी है। तबकाते अकबरी डे, 2, पृ० 133-34, फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 175, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 168, बायजीद, पृ० 180।

2 अबुल फजल 40 दिन लिखता है (अकबरनामा, 1, पृ० 348) तथा जौहर एक महीना (स्टीवर्ट, पृ० 169)। डॉ० ईश्वरी प्रसाद लिखते है कि दोनो सेनाए डेढ महीने तक एक दूसरे के सामने डटी रही (हुमायू, पृ० 349)। हुमायू 7 रजब (28 मई) को सरहिन्द पहुचा। सरहिन्द की लडाई 2 शाबान (22 जून) को हुई। इस तरह पच्चीस दिन हुए।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 348 49।

4 अकबरनामा, 1 पृ० 346। जौहर (स्टीवर्ट, पृ० 170) के अनुसार एक दल सिकन्दर खा ऊजबेक के नेतृत्व मे था। उसने अकबर का नाम नहीं दिया है। ऐसा प्रतीत होता है कि अकबर को जिसकी अवस्था 13 वर्ष से कम थी नाममात्र के लिए इस दल का नेतृत्व दिया गया था। उसकी सहायता के लिए सिकन्दर खा ऊजबेक, अब्दुल्ला खा ऊजबेक इत्यादि भी थे।

सेना दायें, बायें, मध्य तथा अग्रगामी दल के रूप मे विभाजित थी। 22 जून 1555 ई० को अकबर के पहरे की बारी थी।[1] अफगानो ने उसी दिन युद्ध प्रारम्भ किया। उन्होंने बैराम खा के दल पर आक्रमण किया। अफगानो के भीषण आक्रमण, विशेषतया उनके हाथियो के आतक से बैराम खा के सिपाही भयभीत हो गये। सेना मे अफवाह फैल गयी कि बैराम खा मारा गया। हुमायू ने इसका पता लगाने के लिए आदमी भेजे, तथा यह जानकर कि यह समाचार निराधार है उसे सन्तोष हुआ। बैराम खा न अपनी सेना को पीछे हटाकर पहले से तैयार रक्षा पक्ति मे शरण लेने की आज्ञा दी। अफगानो ने रक्षा-पक्ति पर बार-बार आक्रमण किया किन्तु वे उसे तोडने म असफल रहे। इसी समय हुमायू की आज्ञा से तरदी बेग तथा शाह अबुल माली ने सिकन्दर सूर की सेना पर, जो आगे बढ आई थी, तत्काल सामने से चक्कर लगाकर उसके पिछले भाग पर आक्रमण किया। अफगान चारो तरफ स मुगल सैनिको द्वारा घिर गय। भीषण मार-काट प्रारम्भ हो गयी। अफगान पराजित हुए तथा मारे गये। जो बचे वे लडाई के मैदान से भाग खडे हुए। सिकन्दर सूर ने भागकर शिवालिक की पहाडियो मे शरण ली। समकालीन धारणाओ के अनुसार बैराम खा ने मृत अफगानो की खोपडिया का एक विजय-स्तम्भ (पिरामिड) बनाया तथा उसका नाम सिरे मजिल' रखा।[3]

युद्ध के पश्चात एक मनोरजक प्रश्न उपस्थित हुआ। विजय की घोषणा किसके नाम से की जाए? वास्तव मे विजय का श्रेय बराम खा को मिलना चाहिए था। इसी के नाम से युद्ध की घोषणा होनी चाहिए थी, किन्तु हुमायू के प्रिय अबुल माली न अपना दावा भी उपस्थित किया। उसके अनुसार माछीवारा के युद्ध के पूव उसने अफगानो को पराजित किया था और इस तरह उनकी पराजय की पृष्ठभूमि तयार की थी। इस दृष्टि से उसका विचार था कि उसी को युद्ध का विजेता घोषित

---

1 अकबरनामा (भाग 1, पृ० 348-49) के अनुसार जिस दिन युद्ध हुआ उस दिन अकबर के सेवको के (नौबत तरदद्दु) की बारी थी। निजामुद्दीन तथा फिरिश्ता इस (नौबत करावली) तथा बदायूनी (मुन्तखबुत्तवारीख, 1, प० 460) (नौबते यज्क) लिखते हैं। श्री डे ने इसका अनुवाद "Turn of the command of the advance guard" किया है। तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 134, नोट 2। ब्रिग्स न इसका अनुवाद "While the prince Akbar was visiting the pickets of the camp" किया है (फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, प० 175)।

2 जौहर, स्टीवट, प० 170।

3 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, प० 461।

करना चाहिए। इस कठिन परिस्थिति म हुमायू ने यह निणय दिया कि युद्ध की घोषणा अकबर के नाम स की जाय।[1] इस तरह उसन इस आन्तरिक सघर्ष को समाप्त करने का प्रयत्न किया। इस घटना से बैराम खा तथा अबुल माली म मुगल साम्राज्य म प्रमुख अमीर बनने के सघप का बीजारोपण हुआ। किन्तु बराम खा की योग्यता तथा हुमायू द्वारा दी गयी उपाधिया से स्पष्ट था कि दोना अमीरा म किसका स्थान ऊचा था।

अफगानो के पराजय के कारण

सरहिन्द की पराजय न अफगाना के प्रतिरोध का अन्त कर दिया तथा वे इस तरह छिन्न भिन्न हो गय कि मुगला को दिल्ली तथा अय भागा पर अधिकार करन म कोई कठिनाई नही हुई। अफगाना की पराजय तथा पतन के क्या कारण थे?

शेरशाह तथा इस्लाम शाह की मत्यु के पश्चात सूर अफगाना की एकता समाप्त हो गयी थी। पारस्परिक सघप न उनकी शक्ति का क्षीण कर दिया था तथा उनके साम्राज्य और उनके सरदारो का कई भागा म विभाजित कर दिया था। उनके सगठित साम्राज्य मे अराजकता व्याप्त हो गयी थी। इस तरह शत्रु से युद्ध करन क आवश्यक साधनो का अन्त हो चुका था। सिकन्दर शाह सूर पर ही मुगलो के आक्रमण को रोकने का उत्तरदायित्व पडा। उसम सनिक योग्यता नही थी। शत्रु का सिधु नदी पर या उसके उत्तरी दर्रों पर ही रोकना चाहिए था। सिकन्दर ने लाहौर तथा पजाब के अन्य भागा को अरक्षित छोड दिया। रोहतास के दुगपति ने कायरता दिखायी तथा आदम गक्खर तटस्थ बन गया। इस तरह पजाब म माछीवारा तक का भाग बिना सघप के मुगला के अधीन आ गया। माछीवारा के युद्ध म अफगाना की पराजय बहुत-कुछ परिस्थितिया के कारण थी।

अफगाना के विपरीत मुगला के सेनानायक योग्य तथा अनुभवी थे। बराम खा जैसा अनुभवी, सूझबूझवाला, साहसी तथा युद्धकला प्रवीण अफगानो म कोई नही था। तरदी बेग, अबुल माली सिकन्दर खा ऊजबेक अब्दुला खा ऊजबेक इत्यादि उच्चकोटि के अन्य सेनानायक भी थे। उनके अस्त्र-शस्त्र भी अफगाना से अच्छे थे। मुगला की सबसे बडी शक्ति उनके आक्रमण की गति थी। बैराम खा की बुद्धि न सबसे अधिक सहायता दी। अफ़गानो की सफलता सम्भव थी यदि सूर के उत्तराधिकारियो ने शत्रु से लडने का सम्मिलित प्रयत्न किया होता, किन्तु यह असम्भव था।

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 350।

दिल्ली पर अधिकार

सरहिन्द की विजय ने अफगानो का प्रतिरोध प्राय समाप्त कर दिया। इस विजय के पश्चात् सबसे प्रमुख तथा महत्वपूण काय दिल्ली पर अधिकार करना था। हुमायू ने सिकन्दर ऊजबेक को दिल्ली पर अधिकार करने के लिए भेजा और वह स्वय उसके पीछे-पीछे रवाना हुआ। वर्षा के कारण कुछ दिन उसे समाना म रुकना पडा। यहा की जलवायु भी उसके स्वास्थ्य के लिए अधिक लाभप्रद थी। दिल्ली पर अधिकार कर सिकन्दर ऊजबेक ने हुमायू को वहा तुरन्त आने के लिए आमत्रित किया। हुमायू ने अबुल माली को पजाब का हाकिम नियुक्त किया। उसे आज्ञा दी गयी कि वह अपना केन्द्र जालन्धर मे रखे और इस बात का ध्यान रखे कि काबुल और दिल्ली के बीच यातायात मे गडबडी न हो। समाना स रवाना होकर हुमायू 20 जुलाई 1555 ई० को सलीमगढ पहुचा। यहा से 23 जुलाई 1555 ई० को उसने दिल्ली म प्रवश किया[1] तथा दूसरी बार मुगल तख्त पर बठा।

द्वितीय राजत्व

दिल्ली पर अधिकार हो जाने के पश्चात हुमायू ने अपने को हिन्दुस्तान का बादशाह अवश्य घोपित किया किन्तु उसकी वास्तविक शक्ति तथा अधिकार नाममात्र को थे। सूर वश के उत्तराधिकारी अभी जीवित थे। सिकन्दर सूर सरहिन्द के युद्ध स भागकर शिवालिक पहाडियो म चला गया था तथा वहा से वह मुगलो को पजाब से भगाने की तयारी कर रहा था। दिल्ली से दक्षिण बयाना म इब्राहीम सूर दिल्ली हाथ से निकल जाने से दुखी था। चुनार, आगरा तथा उसके निकट के भागो पर मुहम्मद शाह आदिल शाह सूर का अधिकार था। इसका सेनापति हमू योग्य तथा वीर था। मुहम्मद शाह सूर बगाल म शक्ति सचय कर रहा था। इसके अतिरिक्त भिन्न भिन्न भागो मे स्थानीय अमीरो का प्रभुत्व था तथा मुगलो के लिए इन्ह पराजित कर उनसे अधीनता स्वीकार कराना सरल नहीं था। हिसार म रुस्तम खा अनेक अफगान अमीरो को एकत्र कर मुगलो का विरोध करने की तयारी कर रहा था। बदायू मे राय हुसेन जलवानी, मालवा म बाज़ बहादुर तथा अन्य भागो म भी अफगान सरदार अपना अधिकार जमाये हुए थ

नियुक्तियां तथा जागीर वितरण

गद्दी पर बैठन के पश्चात हुमायू न अपने अमीरो मे जागीरो का वितरण किया तथा शासन के लिए भिन्न भिन्न स्थानो पर अपने आदमियो को नियुक्त

---

1 अकबरनामा 1, पृ० 351, फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, प० 176-77, तबकाते अकबरी, डे, 2, पृ० 135।

किया। अकबर को हिसार तथा उस क्षेत्र की सरकार प्रदान की गयी तथा उसे गद्दी का उत्तराधिकारी घोषित किया गया। बैराम खां को सरहिन्द की सरकार एवं अन्य परगने तर्दी बेग को मवात, सिकन्दर खां उज़बक को आगरा, अली कुली खां को सम्भल तथा हैदर मुहम्मद खां आख्ता बेगी को बयाना में नियुक्त किया गया। अबुल माली पंजाब का गवर्नर नियुक्त किया जा चुका था। तर्दी बेग को दिल्ली की गवर्नरी प्राप्त हुई।[1] मुस्तफाबाद के परगने का राजस्व मुहम्मद साहब की आत्मा की शांति के हेतु दान-पुण्य के लिए वक़्फ़ कर दिया गया।[2]

इन नियुक्तियों में अबुल माली को सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। यह कुछ तो हुमायूं के पक्षपात के कारण था और कुछ उसे सन्तुष्ट करने के लिए था। हुमायूं अबुल माली को ठीक न समझ सका और जैसा आगे वर्णन किया गया है, उसने अपने पद का दुरुपयोग किया।

हिसार पर अधिकार

नियुक्त अमीर भिन्न भिन्न स्थानों पर अधिकार करने के लिए रवाना हो गये। शमसुद्दीन अतका खां अकबर के प्रतिनिधि के रूप में हिसार पर अधिकार करने के लिए रवाना हुआ। रुस्तम खां ने 2,000 सैनिकों के साथ मुग़लों का विरोध किया, किन्तु अतका खां के 400 सैनिकों ने बड़ी वीरता से युद्ध किया तथा अफ़ग़ान सेना को पीछे हटा दिया। रुस्तम खां ने हिसार के दुर्ग में शरण ली। तेईस दिन के घेरे के पश्चात् हिसार ने समर्पण कर दिया। रुस्तम खां पराजित हुआ तथा 700 बन्दियों के साथ दिल्ली भेज दिया गया। उसकी वीरता के कारण हुमायूं उसे क्षमा करने तथा उसे जागीर देने के लिए तैयार था किन्तु उसकी शर्त यह थी कि वह अपने लड़के को बन्धक के रूप में बिकराम (पेशावर) के दुर्ग में रहने दे। रुस्तम ने इस शर्त को स्वीकार नहीं किया। विवश होकर उसे बन्दी बना कर बेग मुहम्मद इशक आका के सुपुर्द कर दिया गया।[3]

कम्बर दीवाना की हत्या

बदायूं राय हुसेन जलवानी नामक अफ़ग़ान के अधिकार में था। सरहिन्द के युद्ध के पश्चात जिस समय हुमायूं दिल्ली रवाना हुआ, कम्बर अली दीवाना नामक

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 351। फ़िरिश्ता ब्रिग्स, 2, पृ० 177।

2 मुन्तख़बुत्तवारीख़, 1, पृ० 462 में बदायूनी लिखता है कि इस परगने की आय 30-40 लाख टनका थी। आईने अकबरी 2, पृ० 301 में इस परगने की आय 7 4,96,691 दाम दी गयी है।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 352।

एक मुग़ल, सेना एकत्र कर बिना राजसी आज्ञा के सम्भल पहुच गया। वह लूट-पाट करता रहता था तथा लूट का धन लोगो मे बाट देता था। वह लोगो को अत्यधिक भोजन कराया करता था तथा कहता था, "खाओ, धन ईश्वर का दिया है और प्राण भी ईश्वर के दिये हुए है। कम्बर दीवाना ईश्वर का बकावल (भोजन का प्रबन्धक) है।[1] उसके पुत्र अरिफुल्लाह ने बदायू पर अधिकार कर लिया। कम्बर ने आगे बढकर कान्त गोला[2] पर रुक्न खा नामक अफगान को पराजित किया और मल्लावा[3] तक के भागो पर अधिकार कर लिया। दीवान एक स्वतन्त्र व्यक्ति की तरह काय कर रहा था, किन्तु वह हुमायू को स्वामिभक्ति के पत्र भी लिखता रहता था। शक्ति बढने के साथ उसका मन भी बढने लगा और वह सुल्तान और खा की उपाधिया, पताका एव नक्कारा भी लोगो को प्रदान करने लगा। य अधिकार स्वतन्त्र शासको को ही प्राप्त होते थे। ऐसी स्थिति मे यह आवश्यक था कि इस व्यक्ति की रोकथाम की जाए। हुमायू ने अली कुली खा शबानी[4] को दीवाना के विरुद्ध भेजा। उसे आज्ञा दी गयी कि यदि दीवाना दरबार म आना स्वीकार न कर तो उसे दण्ड दिया जाय। अली कुली के बुलाने पर दीवान ने दरबार म आना अस्वीकार कर दिया तथा कहला भेजा कि 'जिस प्रकार बादशाह का तू दास है, मैं भी हू। मैंने यह प्रदेश अपनी तलवार के बल से विजय किया है।[5] फलत युद्ध हुआ। दीवाना पराजित हुआ तथा भागकर बदायू के दुग मे छिप गया। यहा से उसने हुमायू को प्राथना-पत्र लिखा। अली कुली इस बहादुर आदमी का क्षमा दिलाना चाहता था। उसने मुहम्मद बेग तुकमान एव मुल्ला गयासुद्दीन को उससे वार्ता के लिए दुग म भेजा किन्तु दीवाना ने उन्हे बन्दी बना लिया। इन दोनो दूतो ने किले के लोगो को अपने पक्ष म करके दीवाना को बन्दी बना लिया। दीवाना फिर भी समपण करने के लिए राजी नही हुआ। विवश होकर

---

1 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 465।

2 जिला शाहजहापुर, उत्तर प्रदेश।

3 मुन्तखबुत्तवारीख के अग्रेजी अनुवादक रैंकिंग ने इसे पजाब का पहाडी किला मलाऊ बताया है। मल्लावा हरदोई जिले मे है। अधिक सम्भव है कि वही स्थान हो क्योकि शाहजहापुर तथा हरदोई जिले पास-पास है।

4 अकबरनामा, 1, पृ० 353 मे इस शबानी तथा कुछ अन्य ग्रथो म इसके स्थान पर सीस्तानी लिखा है। तबकात अकबरी, डे 2, पृ० 136 फुटनोट 1, इलियट तथा डासन, 5, प० 1

5 अकबरनाम, 1, पृ० 353, बदायूनी के अनुसार (मुन्तखबुत्तवारीख 1, प० 564 वह कहा करता था 'मैं बादशाह का तुझसे अधिक विश्वासपात्र हू। मेरा यह सिर तथा बादशाही मुकुट जुडवा बालक के समान है।"

अली कुली ने दीवाना की हत्या करा दी (18 जनवरी 15ˢ6 ई०) तथा उसका कटा सिर हुमायू के पास भेज दिया। इसी बीच हुमायू ने क़ासिम मुखलिस को दीवाना के सम्भल, बदायू तथा कान्तगोला जीतने के उपलक्ष्य मे उसे क्षमा करने और यदि सम्भव हो तो पारितोषिक देने के लिए आज्ञा-पत्र भेजा। मुखलिस के पहुचने के पूर्व ही दीवाना मर चुका था। हुमायू अली कुली पर बहुत नाराज हुआ और उसकी इस जल्दबाजी के लिए बुरा भला कहा। उसने लिखा 'जब वह (कम्बर) स्वामि-भक्ति प्रदर्शित करना चाहता था और सेवा म उपस्थित होना चाहता था तो तुमने युद्ध क्या होने दिया और वह जब बन्दी बना लिया गया था तो मेरी आज्ञा के बिना क्या मरवा डाला?"[1]

अली कुली का दीवाना को मरवा डालना अनुचित नही था। दीवाना का व्यवहार, अनुमति के बिना स्थानो पर अधिकार करना, उपाधियो का वितरण करना, बन्दी होने के बाद भी अली कुली के साथ अच्छा व्यवहार न करना, ये बाते उसका उग्र व्यवहार प्रदर्शित करती थी। ऐसे व्यक्ति के साथ कडाई करना आवश्यक था। फिर भी हुमायू उसे क्षमा करना चाहता था। यह कुछ तो इस कारण था कि मुगल अभी अपना प्रभुत्व स्थापित नही कर पाये थे और अफगानो का विरोध करने के लिए ऐसे व्यक्तियो की आवश्यकता थी तथा कुछ हुमायू के स्वभाव के कारण था।

गाजी खा की हत्या

अफगान सरदार गाजी खा बयाना का गवर्नर था। मुगल अमीर हैदर मुहम्मद आख्तावेगी ने बयाना पर अधिकार कर उसे पराजित कर दिया। गाजी खा दुर्ग म छिप गया। बाद म उसने इस शर्त पर समर्पण किया कि उसे क्षमा करा दिया जाएगा। हैदर मुहम्मद ने अपना वचन न रखा तथा उसकी सम्पत्ति के लोभ म उसकी हत्या कर दी। बदायूनी के अनुसार दूसरे दिन गडे धन की पूछताछ हुई। हैदर मुहम्मद ने दूध पीते बच्चो से बडो तक की हत्या करा दी। उसके इस व्यवहार से हुमायू बहुत नाराज हुआ। उसने शिहाबुद्दीन अहमद खा को जो मीर बयूतात था, इस घटना की छानबीन तथा गाजी खा की सम्पत्ति का पता लगाने के लिए भेजा। जो धन गाजी खा से प्राप्त हुआ था हैदर मुहम्मद ने उसे छीन लिया। बदायूनी के अनुसार हैदर मुहम्मद ने बहुमूल्य रत्नो को छिपा लिया तथा अन्य वस्तुए समर्पित कर दी।[3] हुमायू उसे दण्ड देना चाहता था, किन्तु वह

1 अकबरनामा, 1, पृ० 354।

2 मुन्तखबुत्तवारीख, 1 पृ० 463 64।

3 वही।

हिंदुस्तान म हाल ही मे आया था इस कारण उसने ऐसा करना उचित नही समझा।[1]

मिर्ज़ा सुलेमान द्वारा अन्दराव पर अधिकार

अन्दराव तथा इश्किमीश तरदी वेग की जागीर थी। हिंदुस्तान म हुमायू के साथ आने क समय उसन मुकीम खा को इन भागो की देखभाल के लिए नियुक्त कर दिया था। सुलेमान इन भागा पर अधिकार करना चाहता था। प्रारम्भ म उसन मुकीम खा को अपनी तरफ मिलाने का प्रयत्न किया किन्तु इसम सफल न होने से उसने अन्दराव पर आक्रमण कर उस पर घेरा डाला। युद्ध करना कठिन समझकर मुकीम खा अपन परिवार के साथ दुग से बाहर आया और युद्ध करते हुए बहुत कठिनता से उसने काबुल के दुग मे शरण ली। इस तरह हुमायू तथा उसक अमीरो की अनुपस्थिति के परिणाम स्वरूप ये भाग उसके हाथ स निकल गये।

सिकन्दर सूर तथा पजाब की समस्या

सिकन्दर सूर पजाब के भागा मे छिपा हुआ था। हुमायू ने मीर शाह अबुल माली को पजाब का गवनर बनाया था तथा आना दी थी कि वह सिकन्दर सूर से उस प्रदेश की रक्षा करे। उसस कहा गया है कि वह जालन्धर को अपना केन्द्र बनाये। इस आज्ञा की परवाह न कर वह जालन्धर स लाहौर पहुच गया। अबुल माली घमडी था। वह जनता को कष्ट पहुचाता था तथा शाही आदेश की परवाह नही करता था। अपने अधीन अफसरा के प्रति भी वह दुव्यहार करता तथा लाहौर म बहुत ठाठवाट स रहता था।[3] उसने लाहौर के शिकदार फरहात खा का हटाकर उसकी जगह अपना आदमी नियुक्त किया तथा शाही कोष का दुरुपयोग करन लगा। वह अमीरा का परेशान करता था तथा उनके कोष को भी हडप लेता था। हुमायू को उसके इन कार्या की सूचना मिली, किन्तु उसके प्रति अत्यधिक स्नेह होने क कारण उसन इन बाता पर विश्वास नही किया। पजाब की इस अव्यवस्था के परिणामस्वरूप सिकन्दर सूर अपने स्थान से निकलकर बाहर आया। उसन हैबत खा सुल्तानी का लगभग 5 करोड का कोष लूट लिया तथा उसे उसके अफसरा के साथ मार डाला और मानकोट के निकट के परगना स कर वसूल करने लगा। इस धन की सहायता से उसन अपनी सना सगठित की तथा

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 354।

2 वही।

3 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 462, अकबरनामा, 1, पृ० 355।

अली कुली न दीवाना की हत्या करा दी(18 जनवरी 15°6 ई०)तथा उसका कटा सिर हुमायू के पास भेज दिया। इसी बीच हुमायू ने कासिम मुखलिस को दीवाना के सम्भल, बदायू तथा कान्तगोला जीतने के उपलक्ष्य मे उस क्षमा करन और यदि सम्भव हो तो पारितोषिक देने के लिए आज्ञा-पत्र भेजा। मुखलिस के पहुचने के पूव ही दीवाना मर चुका था। हुमायू अली कुली पर बहुत नाराज हुआ और उसकी इस जल्दबाजी के लिए बुरा भला कहा। उसन लिखा "जब वह (कम्बर) स्वामिभक्ति प्रदर्शित करना चाहता था और सेवा मे उपस्थित होना चाहता था तो तुमने युद्ध क्यो होन दिया और वह जब बन्दी बना लिया गया था तो मेरी आज्ञा के बिना क्यो मरवा डाला ?"[1]

अली कुली का दीवाना को मरवा डालना अनुचित नही था। दीवाना का व्यवहार, अनुमति के बिना स्थानो पर अधिकार करना, उपाधियो का वितरण करना, बन्दी होने के बाद भी अली कुली के साथ अच्छा व्यवहार न करना, ये बातें उसका उग्र व्यवहार प्रदर्शित करती थी। ऐसे व्यक्ति के साथ कडाई करना आवश्यक था। फिर भी हुमायू उसे क्षमा करना चाहता था। यह कुछ तो इस कारण था कि मुगल अभी अपना प्रभुत्व स्थापित नही कर पाये थे और अफगानो का विरोध करने के लिए ऐसे व्यक्तियो की आवश्यकता थी तथा कुछ हुमायू के स्वभाव के कारण था।

गाजी खा की हत्या

अफगान सरदार गाजी खा बयाना का गवनर था। मुगल अमीर हैदर मुहम्मद आख्तावगी न बयाना पर अधिकार कर उसे पराजित कर दिया। गाजी खा दुग मे छिप गया। बाद म उसने इस शत पर समपण किया कि उस क्षमा करा दिया जाएगा। हैदर मुहम्मद ने अपना वचन न रखा तथा उसकी सम्पत्ति क लोभ म उसकी हत्या कर की। बदायूनी के अनुसार दूसरे दिन गडे धन की पूछताछ हुइ। हैदर मुहम्मद न दूध पीत बच्चो स बडो तक की हत्या करा दी।[2] उसके इस व्यवहार से हुमायू बहुत नाराज हुआ। उसने शिहाबुद्दीन अहमद खा को जो मीर ब्यूतात था, इस घटना की छानबीन तथा गाजी खा की सम्पत्ति का पता लगाने के लिए भेजा। जो धन गाजी खा स प्राप्त हुआ था हैदर मुहम्मद ने उसे छीन लिया। बदायूनी के अनुसार हैदर मुहम्मद ने बहुमूल्य रत्नो को छिपा लिया तथा अन्य वस्तुए समर्पित कर दी।[3] हुमायू उस दण्ड देना चाहता था, किन्तु वह

1 अकबरनामा 1 प० 354।
2 मुन्तखबुत्तवारीख, 1 पृ० 463 64।
3 वही।

हिन्दुस्तान म हाल ही म आया था इस कारण उसन एसा करना उचित नही समझा।[1]

मिर्ज़ा सुलेमान द्वारा अन्दराब पर अधिकार

अन्दराब तथा इश्किमीश तरदी बेग की जागीर थी। हिन्दुस्तान मे हुमायू के साथ आन क समय उसन मुकीम खा को इन भागो की देखभाल क लिए नियुक्त कर दिया था। सुलमान इन भागो पर अधिकार करना चाहता था। प्रारम्भ म उसन मुकीम खा को अपनी तरफ मिलान का प्रयत्न किया किन्तु इसम सफल न होन स उसने अन्दराब पर आक्रमण कर उस पर घेरा डाला। युद्ध करना कठिन समझकर मुकीम खा अपन परिवार के साथ दुग म बाहर आया और युद्ध करते हुए बहुत कठिनता स उसन काबुल के दुग म शरण ली।[2] इस तरह हुमायू तथा उसक अमीरो की अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप य भाग उसके हाथ म निकल गय।

सिकन्दर सूर तथा पजाब की समस्या

सिकन्दर सूर पजाब के भागो मे छिपा हुआ था। हुमायू न मीर शाह अबुल माली को पजाब का गवनर बनाया था तथा आज्ञा दी थी कि वह सिकन्दर सूर स उस प्रदेश की रक्षा करे। उसस कहा गया था कि वह जालन्धर को अपना केन्द्र बनाय। इस आज्ञा की परवाह न कर वह जालन्धर स लाहौर पहुच गया। अबुल माली घमडी था। वह जनता को कष्ट पहुचाता था तथा शाही आदशो की परवाह नही करता था। अपन अधीन अफसरो के प्रति भी उसका व्यवहार अच्छा नही था तथा लाहौर म बहुत ठाटबाट स रहता था।[3] उसन लाहौर क शिकदार [illegible] खा को हटाकर उसकी जगह अपना आदमी नियुक्त किया तथा शाही कोष का दुरुपयोग करन लगा। वह अमीरो को परेशान करता था तथा उनके कोषो को भी हडप लेता था। हुमायू को उसके इन कार्यो की सूचना मिली, किन्तु उसके प्रति अत्यधिक स्नेह होन क कारण उसने इन बातो पर विशेष ध्यान नही दिया। पजाब की इस अव्यवस्था के परिणामस्वरूप सिकन्दर सूर अपन स्थान स निकलकर बाहर आया। उसने हैबत खा सुल्तानी का लगभग 5 करोड का माल लूट लिया तथा उसे उसक अफसरो के साथ मार डाला और मानकोट क निकट क परगनो स कर वसूल करन लगा। इस धन की सहायता स उसन अपनी सेना सगठित की तथा

1 अकबरनामा, 1, पृ० 354।

2 वही।

3 मुन्तखबुत्तवारीख 1, पृ० 462, अकबरनामा 1, पृ० 355।

अली कुली न दीवाना की हत्या करा दी (18 जनवरी 15°6 इ०) तथा उसका कटा सिर हुमायू के पास भेज दिया। इसी बीच हुमायू ने कासिम मुखलिस का दीवाना क सम्भल, वदायू तथा कान्तगोला जीतने के उपलक्ष्य मे उसे क्षमा करन और यदि सम्भव हो तो पारितोषिक दने के लिए आना पत्र भेजा। मुखलिस के पहुचने के पूव ही दीवाना मर चुका था। हुमायू अली कुली पर बहुत नाराज हुआ और उसको इस जल्दबाजी के लिए बुरा-भला कहा। उसन लिखा "जब वह (कम्बर) स्वामिभक्ति प्रदर्शित करना चाहता था और सेवा म उपस्थित होना चाहता था तो तुमने युद्ध क्या होन दिया और वह जब वन्दी वना लिया गया था तो मेरी आना के बिना क्या मरवा डाला ?"[1]

अली कुली का दीवाना का मरवा डालना अनुचित नही था। दीवाना का व्यवहार, अनुमति के बिना स्थाना पर अधिकार करना, उपाधियो का वितरण करना, वन्दी होने के बाद भी अली कुली के साथ अच्छा व्यवहार न करना, य बात उसका उग्र व्यवहार प्रदर्शित करती थी। एस व्यक्ति के साथ कडाई करना आवश्यक था। फिर भी हुमायू उसे क्षमा करना चाहता था। यह कुछ तो इस कारण था कि मुगल अभी अपना प्रभुत्व स्थापित नही कर पाये थे और अफगानो का विरोध करने के लिए ऐसे व्यक्तियो की आवश्यकता थी तथा कुछ हुमायू के स्वभाव के कारण था।

गाजी खा की हत्या

अफगान सरदार गाजी खा बयाना का गवनर था। मुगल अमीर हैदर मुहम्मद आख्ताबेगी न बयाना पर अधिकार कर उसे पराजित कर दिया। गाजी खा दुग मे छिप गया। बाद मे उसन इस शत पर समपण किया कि उसे क्षमा करा दिया जाएगा। हैदर मुहम्मद ने अपना वचन न रखा तथा उसकी सम्पत्ति के लाभ म उसकी हत्या कर दी। वदायूनी के अनुसार दूसर दिन गडे धन की पूछताछ हुई। हैदर मुहम्मद न दूध पीत बच्चा से बडा तक की हत्या करा दी।[2] उसके इस व्यवहार से हुमायू बहुत नाराज हुआ। उसन शिहाबुद्दीन अहमद खा को जो मीर ब्यूतात था, इस घटना की छानबीन तथा गाजी खा की सम्पत्ति का पता लगाने के लिए भेजा। जो धन गाजी खा से प्राप्त हुआ था हैदर मुहम्मद ने उसे छीन लिया। वदायूनी के अनुसार हैदर मुहम्मद ने बहुमूल्य रत्ना को छिपा लिया तथा अन्य वस्तुए समर्पित कर दी।[3] हुमायू उसे दण्ड देना चाहता था, किन्तु वह

---

1 अकबरनामा, I, प० 354।

2 मुन्तखबुत्तवारीख, I, पृ० 463 64।

3 वही।

हिन्दुस्तान में हाल ही में आया था इस कारण उसने ऐसा करना उचित नहीं समझा।[1]

मिर्ज़ा सुलेमान द्वारा अन्दराब पर अधिकार

अन्दराब तथा इश्कमीश उसकी [illegible] थे। [illegible] ने हुमायूँ के साथ आने के [illegible] मुकीम खाँ को इन प्रदेशों की देखभाल के लिए नियुक्त कर दिया था। सुलेमान इन प्रदेशों पर [illegible] था। आरम्भ में उसने मुकीम खाँ को अपनी तरफ मिलाने का प्रयत्न किया किन्तु उसके न मानने से उसने अन्दराब पर आक्रमण करके [illegible]। कुछ समय [illegible] विवश होकर मुकीम खाँ अपने परिवार के साथ दुर्ग से [illegible] कष्ट उठाते हुए बहुत कठिनता से उसने काबुल [illegible]। इस प्रकार [illegible] उसकी जागीरों [illegible] गये।

सिकन्दर सूर तथा पंजाब की समस्या

माली को हुमायू ने लिखा कि वह तत्काल दरबार म आये, उसकी शिकायत की जाच की जायगी। जिस दिन अबुल माली को बैराम खा का पत्र प्राप्त हुआ उसी दिन बैराम खा का दूत भी उसे लाहौर से रवाना होने का परामश देने तथा उसकी गतिविधि का अवलोकन करन वहा पहुचा। अबुल माली को विवश होकर हुमायू की आज्ञा माननी पडी।

सिकन्दर सूर अपने छिपे स्थान से बाहर आ गया था किन्तु अकबर की सेना के आगमन की सूचना पाकर वह पुन पहाडियो मे वापस चला गया। अबुल माली सुल्तानपुर मे अकबर से मिला। अकबर ने उसे अपने दरबार मे बठन का स्वय आदेश दिया तथा उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। भोजन के समय उसके लिए अलग दस्तरख्वान बिछाया गया। इससे अबुल माली बहुत नाराज हुआ। अपने पडाव मे वापस जाकर उसने अकबर को सन्देश भेजा कि हुमायू उसका विशेष आदर करता था। उसने अकबर को याद दिलाया कि जूयशाही मे उसन हुमायू के ही बतन मे भोजन किया था, और अकबर वहा उपस्थित होन पर भी यह सम्मान न प्राप्त कर सका था। उसने आपत्ति की "उसके लिए अलग कालीन क्या बिछाया गया और उसके लिए पृथक् दस्तरख्वान क्या लगवाया गया? अकबर ने हाजी मुहम्मद सीस्तानी से कहा कि वह जाकर अबुल माली से कह दे कि "सल्तनत के कानून और होते हैं, तथा प्रेम के कानून और होत है। तुम्हारा बादशाह से जो सम्बन्ध था वह मुझसे नही। बडे आश्चय की बात है कि तुम दोनो सम्बन्धो मे भेदभाव न करके शिकायत करने लगे।"[1] अबुल माली समझ गया कि उसकी शिकायत का कोई प्रभाव न होगा।

पजाब मे प्रवेश करने के पश्चात् अकबर सिकन्दर सूर के विरुद्ध हरियाना[2] पहुचा। यहा उसे हुमायू के दुघटनाग्रस्त होने की सूचना मिली। यहा से वह कलानूर म आकर अन्य सूचना की प्रतीक्षा करन लगा।

हुमायू की मृत्यु

गद्दी पर दुबारा अधिकार करने के पश्चात् एसा प्रतीत होता है कि हुमायू के मन म जीवन से निराशा आती जा रही थी। अकबर के पजाब चल जान के पश्चात् वह अकसर परलोक की बात करता था[3] और दिल्ली के मकबरा और

1 अकबरनामा, 1, पृ० 366 67, बिगो तारख सल्तनत दीगर अस्त व कानूने इश्क दीगर। आ निस्बत की हजरत जहाबानी रा ब शुमा बूद, मूरा नीस्त। अजब कि दरमियाने ई दो निस्बत तफरका न कर्दा गिला कर्दा यद।

2 होशियारपुर (पजाब जिले मे) 31 38 उत्तर तथा 72 52' पूव।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 262।

पजाब की तरफ बढा ।[1]

अबुल माली को सिकन्दर के अभियान की सूचना मिली। वह निद्रा त्यागकर उसने अपने अमीरो से परामर्श किया । सभी ने सिकन्दर के विरुद्ध युद्ध करने की राय दी । किन्तु मुगलो के पास आवश्यक युद्ध सामग्री नही थी । जौहर, जो उस समय वहा उपस्थित था, लिखता है कि उसकी राय पर दुर्ग की मरम्मत के लिए आयी हुई लकडी, जजीर के कुडे इत्यादि की सहायता से अराबे' तैयार हुए। जौहर ने भी अस्त्र शस्त्र तथा बारूद दिया ।[2] इसी समय 500 मुगल सिपाही मध्य एशिया से आये थे, उन्हे भी सेना मे भर्ती किया गया। इस तरह अबुल माली ने युद्ध की तैयारी की । स्पष्ट है कि उसने अपने पद तथा उत्तरदायित्व का ध्यान नही रखा था । किसी प्रकार तैयारी कर वह सिकन्दर सूर के विरुद्ध बढा। सिकन्दर पुन पहाडो मे भाग गया ।

अबुल माली के कार्यों की सूचना पाकर हुमायू के परामर्शदाताओ ने उसके सम्मुख यह राय दी कि अबुल माली को बुलाकर किसी दूसरे को उसके स्थान पर नियुक्त करना चाहिए । हुमायू के लिए निश्चय करना बडा कठिन था । परिस्थिति के अनुसार बैराम खा सबसे उपयुक्त व्यक्ति था किन्तु उसे नियुक्त करने से दोनो की ईर्ष्या और बढ़ जाती । अन्त मे हुमायू ने अकबर को पजाब का गवर्नर और और बैराम खा को शहजादे का अतालीक नियुक्त किया तथा अबुल माली की बदली हिसार फिरोजा को कर दी । इस तरह हुमायू ने इस समस्या का हल किया ।

अकबर अपने अतालीक बैराम खा के साथ पजाब के लिए रवाना हुआ। (नवम्बर 1555 ई०)सरहिन्द के निकट अबुल माली की सेना के कई प्रमुख अमीर उससे आ मिले । राजसी नियम के अनुसार बैराम खा का इन व्यक्तियो का स्वागत नही करना चाहिए था। किन्तु बैराम खां को इससे आन्तरिक प्रसन्नता ही हुई क्योंकि इससे अबुल माली की शक्ति कम हो गयी। अबुल माली ने हुमायू से इसकी शिकायत की तथा बैराम खां और अकबर को लिखा कि यदि वे तत्काल लाहौर आ जाए तो सिकन्दर को पराजित किया जा सकता है। बैराम खा ने उसे लिखा, 'तुम इधर चले आओ और फिर सम्राट से मिलो।' बैराम खा ने हुमायू को भी पत्र लिखकर सूचित किया तथा उससे अबुल माली को बुलाने के लिए प्रार्थना की ।[3] हुमायू ने बैराम खां के पत्र के उत्तर मे अबुल माली का पत्र प्राप्त होने की सूचना दी तथा उसे लाहौर की तरफ तेजी से बढ़ने के लिए लिखा । अबुल

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ 350 ।

2 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 171 72 ।

3 इस पत्र-व्यवहार के लिए देखिए, जौहर स्टीवर्ट, पृ० 173-74 ।

माली को हुमायू ने लिखा कि वह तत्काल दरबार म आये, उसकी शिकायत की जाच की जायेगी। जिस दिन अबुल माली को बैराम खा का पत्र प्राप्त हुआ उसी दिन बैराम खा का दूत भी उसे लाहौर से रवाना होने का परामश देने तथा उसकी गतिविधि का अवलोकन करन वहा पहुचा। अबुल माली को विवश होकर हुमायू की आज्ञा माननी पडी।

सिकन्दर सूर अपने छिपे स्थान से बाहर आ गया था किन्तु अकबर की सेना के आगमन की सूचना पाकर वह पुन पहाडियो मे वापस चला गया। अबुल माली सुल्तानपुर मे अकबर से मिला। अकबर ने उसे अपने दरबार म बठने का स्वय आदेश दिया तथा उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। भोजन के समय उसके लिए अलग दस्तरख्वान बिछाया गया। इससे अबुल माली बहुत नाराज हुआ। अपने पडाव मे वापस जाकर उसने अकबर को स देश भेजा कि हुमायू उसका विशेष आदर करता था। उसन अकबर को याद दिलाया कि जूयेशाही मे उसने हुमायू के ही बतन मे भोजन किया था, और अकबर वहा उपस्थित होने पर भी यह सम्मान न प्राप्त कर सका था। उसने आपत्ति की "उसके लिए अलग कालीन क्यो बिछाया गया और उसके लिए पृथक् दस्तरख्वान क्या लगवाया गया? अकबर ने हाजी मुहम्मद सीस्तानी से कहा कि वह जाकर अबुल माली से कह दे कि "सल्तनत के कानून और होते हैं, तथा प्रेम के कानून और होते है। तुम्हारा बादशाह से जो सम्ब ध था वह मुझसे नही। बडे आश्चय की बात है कि तुम दोनो सम्ब धो मे भेदभाव न करके शिकायत करने लगे।"[1] अबुल माली समझ गया कि उसकी शिकायत का कोई प्रभाव न होगा।

पजाब म प्रवेश करने के पश्चात् अकबर सिक दर सूर के विरुद्ध हरियाना[2] पहुचा। यहा उसे हुमायू के दुघटनाग्रस्त होने की सूचना मिली। यहा से वह क लानूर मे आकर अन्य सूचना की प्रतीक्षा करन लगा।

हुमायू की मृत्यु

गद्दी पर दुबारा अधिकार करने के पश्चात ऐसा प्रतीत होता है कि हुमायू के मन म जीवन से निराशा आती जा रही थी। अकबर के पजाब चले जान के पश्चात् वह अकसर परलोक की बात करता था[3] और दिल्ली के मकबरा और

---

1 *अकबरनामा, 1, प० 366 67*, बिमो तोरये सल्तनत दीगर अस्त व कानूने इश्क दीगर। आ निस्बते की हजरत जहाबानी रा ब शुमा बूद, मूरा नीस्त। अजब कि दरमियान ई दो निस्बत तफरका न कर्दा गिला कर्दा यद।

2 होशियारपुर (पजाब जिले मे) 31 38 उत्तर तथा 72 52′ पूव।

3 *अकबरनामा, 1, प० 262।*

कब्रा का देखकर उसे इसकी और भी याद आती थी ।

बायजीद लिखता है कि हुमाय अक्सर सोचा करता था कि वह इस नमीन ससार को त्याग दे तथा उसने शपथ ली थी कि हिंदुस्तान पर, जो उसके भाइयो के पारस्परिक विरोध के कारण हाथ म निकल गया था, पुन अधिकार करने के पश्चात वह उसे अकबर को दे देगा तथा स्वय अपना समय दरवेशो, विद्वानो इत्यादि के सत्सग म व्यतीत करेगा।[1] अफीम की खुराक भी उसने कम करनी प्रारभ कर दी थी। सात दिन की खुराक कागज म लपेटकर उसने कहा कि वह सात दिनो म उतना ही अफीम खाएगा। 24 जनवरी 1556 ई० को उसके पास अफीम की चार गोलिया थी। उसने उन्हे गुलाब जल म मिलाकर सेवन किया।[2] उसी दिन सन्ध्या को उसके कुछ अधिकारी जो हज्ज से वापस आये थे, उनके सामने पेश किये गये। तुर्की एडमिरल सीदी अली रईस, जो गुजरात से आया था, उसी दिन हुमायू से मिला। काबुल से भी उसे वहा की परिस्थितियो की सूचना मिली। यहा से हुमायू अपने पुस्तकालय की छत पर गया और वहा से मस्जिद म जो लोग एकत्र हुए थे उनका अभिवादन (कोरनिश) उसने स्वीकार किया। बड़ी देर तक मक्का, गुजरात तथा काबुल की बात करता रहा। इसके पश्चात् उसने कुछ गणितज्ञो को शुक्र ग्रह के उदय का समय देखने के लिए बुलाया। वह उसी समय एक दरबार कर अपने अफसरो की पदोन्नति करना चाहता था। इसी समय जब वह नीचे उतर रहा था तथा दूसरी सीढी तक पहुचा था कि मिस्कीन नामक मुअज्जी (मस्जिद म दुआ प्रार्थनाओ का पाठ करने वाला) ने अजान दी। हुमायू का यह नियम था कि जब कभी वह अजान की आवाज सुनता था तुरन्त घुटनो के बल श्रद्धा से झुक जाता था। उस दिन भी वह अजान सुनकर वही बैठ जाना चाहता था।[3] जाडे का दिन होने के कारण वह लम्बा लबादा (पोस्तीन)[4] पहन हुए था। बैठते समय उसके पैर के नीचे उसका पोस्तीन दब गया। जो छडी वह लिये हुए था वह फिसल गयी और वह सीढी से फिसलकर सिर के बल गिर पडा। उसकी दाहिनी कनपटी म गभीर चोट लगी जिससे उसके दाहिने कान से कुछ रक्त की

1 बायजीद, पृ 194।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 363। अकबरनामा से यह स्पष्ट नहीं प्रतीत होता है कि उसने चार गोलिया एक साथ खा ली या एक गोली। अधिक सम्भव है कि उसने एक दिन की खुराक ही खायी।

3 अकबरनामा 1 पृ० 363, ए वमबेरी, दि ट्रैवल्स एण्ड एडवेंचर्स आफ दि टर्किश एडमिरल सीदी अली रईस पृ० 55।

4 यह एक तरह का लबादा था जो बालदार जानवरो की खाल से बनता था। इसके रोए भीतर तथा खाल ऊपर होती थी।

कुछ बूद निकल आयी। बेहोशी की अवस्था म वह राजमहल म ले जाया गया। कुछ देर के बाद उसे होश आया किन्तु वह पुन बेहोश हो गया। दूसरे दिन उसकी कमजोरी बढ गयी और ऐसा मालूम होने लगा कि उसका बचना असम्भव है। हकीमा ने हर तरह की दवाओ का प्रयोग किया लेकिन उसका कोई लाभ नही हुआ। एक द्रुतगामी दूत फौरन इसकी सूचना देने के लिए अकबर के पास पजाब भेजा गया[1] तथा शेख नजर जूली[2] के द्वारा अकबर के पास एक फरमान भेजा गया। इस फरमान म केवल यह सूचित किया गया था कि हुमायू सीढी से गिर पडा है और उसे थोडी चोट आयी है, पर चिन्ता की कोई बात नही है। अब सब ठीक है। यह फरमान कूटनीतिक दृष्टि से लिखा गया था जिससे लोगो मे गड-बडी न हो। हुमायू तो बेहोश था, इस कारण उसके निकट के अमीरो न ही इसकी भाषा निश्चित की थी। वास्तव मे उसकी अवस्था शोचनीय थी और 26 जनवरी 1556 ई०, रविवार के दिन हुमायू की मृत्यु हो गयी।[3]

मुगल साम्राज्य अव्यवस्थित था। गद्दी का उत्तराधिकारी दिल्ली से दूर था तथा चारो तरफ शत्रु थे। इस स्थिति म हुमायू की मृत्यु की सूचना से विद्रोह होना स्वाभाविक था। जनता को विश्वास दिलाने के लिए हुमायू जीवित है, तरह-तरह के प्रयत्न किय गय। प्रारम्भ मे यह घोषण प्रसारित की गयी कि बादशाह घोडे पर

---

1 अकबरनामा के अनुसार जब अकबर हरियाना मे था तो एक द्रुतगामी दूत पहुचा जिसने उसे हुमायू की दुघटना की सूचना दी। शेख नजर जूली कलानूर उसके बाद म पहुचा (अकबरनामा, 1, पृ० 367)

2 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 466, तबकाते अकबरी, 2, डे, पृ० 137 मे इसे नजर शेख जोली या जूलो तथा अकबरनामा (1, पृ० 364) मे नजर शेख चाली लिखा है। होदीवाला, स्टडीज इन इण्डो-मुस्लिम हिस्ट्री, 1, पृ० 514।

3 समकालीन इतिहासकारा मे हुमायू की मृत्यु की तिथि के विषय म भिन्नता है। तबकाते अकबरी, मुन्तखबुत्तवारीख, फिरिश्ता, दुघटना की तिथि तो शुक्रवार 7 रबीउल अव्वल 963 लिखत है किन्तु मृत्यु तिथि के विषय म कुछ दिना का अन्तर है। यह स्वाभाविक है क्योकि उसकी मृत्यु छिपायी गयी थी। इसकी विवेचना के लिए देखिए अकबरनामा, 1, पृ० 363 64, तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 139, जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 175, मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 465 66, ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 365, बनर्जी हुमायू, 2, पृ० 258, त्रिपाठी, राइज एण्ड फाल, पृ० 169, ए०एल०श्रीवास्तव, अकबर दि ग्रेट, 1, पृ० 17-18, होदीवाला, स्टडीज इन मुगल न्यूमिसमटिक्स, पृ० 264 65।

अपने प्रदेश की यात्रा करेंगे। उसी के बाद पुन दूसरी घोषणा की गयी कि मौसम की खराबी के कारण यह यात्रा स्थगित कर दी गयी है। दूसरे दिन सार्वजनिक दरबार की घोषणा की गयी, किन्तु उसे भी यह कहकर स्थगित कर दिया गया कि ज्योतिषो ने शुभ मुहूर्त न होने से इसकी स्वीकृति नहीं दी है। इन परिवर्तनो से सेना म और भी भय छा गया तथा उन्हे सदेह हुआ कि हुमायूँ की मृत्यु हो चुकी है। अब यह आवश्यक हो गया कि लोगो को सम्राट का दर्शन कराया जाए। मुल्ला बेकसी नामक व्यक्ति की शक्ल हुमायूँ से मिलती-जुलती थी। उसे राजसी वस्त्र पहनाये गये, किन्तु उसका चेहरा तथा आँखें बुर्के से ढक दी गयी। उसे ले जाकर उस स्थान पर बैठाया गया जहा हुमायूँ बैठा करता था। राजसी परम्परा तथा नियम के अनुसार उसके अन्य कर्मचारी भी उसके आगे-पीछे खड़े हो गये। उसने नदी की ओर मुह करके लोगो को दर्शन दिये। लोगो ने कोरनिश की तथा उन्हे विश्वास हो गया कि हुमायूँ जीवित है।[1]

सत्रह दिन तक हुमायूँ की मृत्यु छिपायी गयी।[2] उसके पश्चात् तरदी बेग तथा अन्य अमीरो ने दिल्ली की जुमा मस्जिद म अकबर के नाम से खुत्बा पढा तथा उसे हुमायूँ का उत्तराधिकारी घोषित किया। अकबर इस समय कलानूर म था। मृत्यु की विश्वस्त सूचना पाकर बैराम खा ने तत्काल उसके राजतिलक का प्रबन्ध किया। अकबर इस आकस्मिक वज्रपात से शोक तथा दुख से विलाप करने लगा। अतका खा तथा माहम अनगा ने उसे सात्वना दी। वृहत् प्रबन्ध का न समय था न साधन। वही एक ईटो के चबूतरे पर शुक्रवार 14 फरवरी 1556 ई० (2 रबी उल आखिर 963 हि०) को अकबर का राजतिलक हुआ तथा उसको मुगल सम्राट घोषित किया गया।[3]

मृत्यु के पश्चात हुमायूँ की लाश कपडे मे लपेटकर दिल्ली म दफना दी गयी। हेमू के दिल्ली पर अधिकार करने के समय उसकी लाश वहा से निकालकर सरहिन्द ले जाकर अस्थायी रूप से पुन दफनायी गयी। पानीपत के द्वितीय युद्ध के पश्चात् मुगलो के दिल्ली पर अधिकार करने के उपरान्त हुमायूँ का शव पुन दीनपनाह लाया गया। यहा कई वर्ष तक पडा रहा। इसी बीच हुमायूँ की रानी बेगा बेगम या हाजी बेगम ने अपने निर्देशन म हुमायूँ का मकबरा बनवाया जहा उसका शव दफनाया गया। *भाग्य की कैसी विडम्बना थी कि हुमायूँ को जीवन* भर शान्ति नही मिली और उसकी लाश भी बारबार दफनायी गयी।

---

1 वमबेरी, ट्रेवेल्स एण्ड एडवेंचर्स आफ दि टर्किश एडमीरल सीदी अली रईस, पृ० 56 57, अकबरनामा, 1, पृ० 364।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 364।

3 ए०एल० श्रीवास्तव, अकबर दी ग्रेट, भाग 1, पृ० 19।

11 सिंहावलोकन

ससार मे हुमायू की तरह भाग्यवान तथा उसकी तरह अभागे सम्राट बहुत कम होगे। उसे अपने पिता से एक वृहद साम्राज्य प्राप्त हुआ था, किन्तु उसने अपनी मूर्खताओ तथा परिस्थितियो के परिणामस्वरूप उसे खो दिया। निर्वासन काल म उसे तथा उसके परिवार को जो कष्ट उठाने पडे वे किसी भी व्यक्ति को जजर कर देते। उसके भाइयो तथा सम्बन्धियो ने उसे सदा कष्ट दिया। जीवन भर प्रयत्न करने पर भी उसे अन्त मे अपने पिता की आज्ञा के विरुद्ध अपने भाइयो को दण्ड देना पडा, जिसके लिए उसे सदा पछतावा तथा दु ख होता रहा। अपने 48 वष के जीवन मे केवल दस वष ही वह हिन्दुस्तान के सिंहासन पर शासन कर सका।[1] इस उथल पुथल मे वह कोई स्थायी शासन, महत्त्वपूण इमारत अथवा सस्था नही छोड सका, जिससे उसके वश का सितारा सदा चमकता रहता। इस दृष्टिकोण से वह बहुत ही अभागा था। दूसरी तरफ उसका सबसे बडा सौभाग्य यह था कि उसने अपना खोया हुआ साम्राज्य पुन प्राप्त कर लिया। इस तरह अ त म विजय उसी की हुई। उसके सम्पूण कष्टो तथा मानहानि को इस विजय ने समाप्त कर दिया। उसका इससे भी बडा सौभाग्य यह था कि वह अकबर महान का पिता था, जो भारत का ही नही वरन विश्व का एक महान शासक हुआ।

साम्राज्य तथा शासन

सम्राट

हुमायू एक सम्राट था तथा उसकी राज्य प्रणाली एकतन्त्रात्मक थी। वह सम्राट को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था। उसका मत था कि जिस तरह ईश्वर

---

1 हुमायू का जन्म 6 माच 1508 ई० तथा मृत्यु 26 जनवरी 1556 ई० को हुई। वह 30 दिसम्बर 1530 ई० को गद्दी पर बैठा। कन्नौज के युद्ध (17 मई 1540 ई०) के पश्चात् उसका प्रथम साम्राज्य समाप्त हो गया। 24 जुलाई 1555 ई० को उसने पुन दिल्ली मे प्रवेश किया तथा सिंहासन पर बैठा। इस तरह प्रथम साम्राज्य के समय 9 वष 4½ महीने तथा दूसरी बार 6 महीने अर्थात लगभग दस वष वह दिल्ली के मुगल साम्राज्य का शासक रहा।

प्राणियो की रक्षा करने के लिए होता है उसी तरह सम्राट अपने साम्राज्य को जनता के लिए होता है। हुमायू आध्यात्मिक तथा रहस्यवादी प्रवृत्ति का व्यक्ति था। वह ससार का वास्तविक सत्य की छाया मात्र समझता था। कदाचित इसी कारण अवसाद की अवस्था म वह बार-बार ससार त्यागने की बात करता था। हुमायू ज्योतिष शास्त्र म विश्वास करता था। उसके आविष्कारो तथा योजनाओ से स्पष्ट प्रकट होता है कि वह सूय की शक्ति पर विश्वास करता था। बगाल निवास के समय वह अपने राज मुकुट पर पर्दा (नकाब) डाल रहता। जब नकाब हटाता तो लोग "प्रकाश प्रकट हो गया" कहकर उसका अभिवादन करते थे। उसके इस व्यवहार से कुछ लोग यह समझने लगे कि वह खुदाई का दावा करता था। ईरान म लोगो ने इस बात पर उसका मजाक उड़ाया।[1] ख्वादमीर उसे "हजरत पादशाह खिलाफत पनाह, हकीकी मजाजी एव सल्तनत का याग"[2] मानता है तथा उसे ईश्वर का प्रतिरूप (हजरत पादशाह जिल्लइल्लाह) कहकर सम्बोधित करता है। इससे स्पष्ट होता है कि हुमायू अपने को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था तथा दैवी सिद्धान्त म विश्वास करता था।

हुमायू के राजत्व के इतिहास म दो एक घटनाए महत्वपूण हैं। चौसा के युद्ध के पश्चात उसने भिश्ती निजाम को, कामरान के विरोध पर भी, सिंहासन पर बैठाया। यह दैवी सिद्धान्त के विरुद्ध था। इसका अर्थ हुआ कि सम्राट जिसे भी चाहे राजत्व प्रदान कर सकता था। राजत्व के सम्मान को इससे बहुत बडा धक्का लगा। उसके भाइयो ने राजत्व शक्ति को बार-बार चुनौती दी तथा उसे न्याय के सिद्धान्त पर भावना के आधार पर चलने को विवश किया।

हुमायू के शासनकाल म उसके अमीरो को कभी कभी बहुत महत्व प्राप्त हो जाता था। भाइयो के बार बार विद्रोह करने पर भी हुमायू उन्हे क्षमा कर देता था। अन्त म अमीरो ने उसे शपथ लेने पर विवश किया कि वे जो भी निश्चय करेंगे उसे सम्राट को मानना पडेगा। इस तरह उसके राजत्व को अमीरो ने सीमित कर दिया। यह अमीरो की बहुत बडी विजय थी। हुमायू अपने शासन काल म राजत्व को वह शक्ति तथा बल न प्रदान कर सका जो उसके पुत्र के शासन काल म प्राप्त हुआ। फिर भी हुमायू अपने को अन्य समकालीन शासको से ऊचा समझता था और ईरान म शाह की दया पर निभर रहने पर भी उसने इस बात को नही छिपाया। अपने को उच्च समझने पर भी उसने अपने को न खलीफा घोषित किया और न सम्पूण मुस्लिम ससार का नेता ही।

---

1 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 446।

2 ख्व दमीर, कानूने हुमायू ने, बेनीप्रसाद, प० 17।

साम्राज्य

राज्यारोहण के समय हुमायू को अपने पिता से एक बहुत बडा साम्राज्य प्राप्त हुआ था जो आक्सस नदी से गगा नदी तक फैला हुआ था। इस साम्राज्य का वणन तीसरे अध्याय म किया जा चुका है। इस साम्राज्य को हुमायू न बढाने का प्रयत्न अवश्य किया किन्तु वह सफल न हो सका। 1536 ई० म उसने मालवा तथा गुजरात को विजय कर उन्हें अपन राज्य म मिला लिया। इस समय उसका साम्राज्य अपने विकास की अन्तिम सीमा पर पहुच गया था। इसी के पश्चात् उसका पतन प्रारम्भ हुआ। पहले मालवा तथा गुजरात उसके हाथ से निकल गये, फिर बगाल, बिहार, दिल्ली प्रदेश तथा सम्पूण साम्राज्य ही वह निष्कासित हो गया। कुछ दिनो तो उसके अधीन एक इच भूमि भी नही थी। अपने बाहुबल से उसने खोये हुए अधिकतर भागो पर पुन अधिकार कर लिया। मृत्यु के समय वह भारत का शासक अवश्य हो गया था, किन्तु अभी पजाब, दिल्ली, बिहार तथा दोआब के बहुत से भाग अफगानो के अधीन थे जिसका वणन किया जा चुका है। इस तरह उसकी मृत्यु के समय बाबर स प्राप्त मुग़ल साम्राज्य छोटा हो गया था।

साम्राज्य का राजनैतिक विभाजन

बाबर तथा हुमायू के साम्राज्य के राजनीतिक विभाजन का पूण ज्ञान प्राप्त नही है। बाबर न अपनी आत्मकथा म भीरा तथा बिहार के बीच तीस सरकारो तथा जमींदारियो का उल्लेख किया है। हुमायू के शासन के प्रथम काल म कदाचित् बाबर के काल ही का विभाजन चलता रहा।[1] साम्राज्य की भूमि चार श्रेणियो मे विभाजित थी (1) खालसा भूमि जो सम्राट के निजी अधिकार म थी, (2) जागीर अर्थात वह भूमि जो अमीरो को दी गयी थी, (3) सयूरगाल अर्थात माफी भूमि जो विद्वानो या धार्मिक व्यक्तियो को दी जाती थी, (4) जमींदारो के अधिकार की भूमि। ये भाग अपनी सुव्यवस्था, शान्ति तथा आन्तरिक शासन के लिए स्वतन्त्र थे।

हुमायू के द्वितीय राजत्व काल म उसे शेरशाह द्वारा सगठित साम्राज्य प्राप्त हुआ। उसके उत्तराधिकारियो के पारस्परिक वमनस्य के कारण इसका सगठन हिल गया था किन्तु उसका ढाचा मौजूद था जिसपर अकबर ने एक सुसगठित शासन की नीव डाली।

---

1 परमात्माशरण, प्राविन्शियल गवनमण्ट ऑफ दि मुगल्स, प० 46 47, त्रिपाठी, सम एस्पेक्ट्स, प० 296 97, मोरलड, एग्रेरियन सिस्टम आफ मुस्लिम इण्डिया, पृ० 79।

द्वितीय राजत्व के पश्चात् हुमायूं अपने साम्राज्य को सुव्यवस्थित करना चाहता था तथा उसके मस्तिष्क में इसके लिए एक योजना भी थी। अबुल फजल लिखता है कि हुमायूं कई स्थानों पर शासन का केन्द्र स्थापित करना चाहता था। वह दिल्ली, आगरा, जौनपुर, माडू, लाहौर, कन्नौज एवं अन्य स्थानों में योग्य तथा अनुभवी अमीरों को नियुक्त कर उनके अधीन उन स्थानों पर एक सेना भी रखना चाहता था। वह स्वयं अपने साथ 12,000 अश्वारोहियों से अधिक नहीं रखना चाहता था[1] उसका स्वप्न उसकी असामयिक मृत्यु के कारण पूरा न हो सका।

वजीर

हुमायूं में न प्रशासकीय संगठन की योग्यता थी और न इसके लिए उसे समय प्राप्त हुआ। इस कारण शासन संगठन की संस्थाओं में वह कोई परिवर्तन न कर सका।[2] मुगलों के आने के पश्चात वजीर (प्रधान मन्त्री) का महत्त्व बढ़ गया। बाबर के समय में निजामुद्दीन खलीफा उसका शक्तिशाली वजीर था। यह परम्परा हुमायूं के समय में भी बनी रही। उसके राज्य के प्रारम्भिक काल में अमीर उवस मुहम्मद वजीर था। वह सैनिक तथा राज्य के अन्य सभी विभागों पर नियन्त्रण रखता था। उसके पश्चात हिन्दू बेग को हुमायूं का विशेष विश्वास प्राप्त हुआ। उसे अमीरुल उमरा की उपाधि तथा सोने की कुर्सी दी गयी। हुमायूं ने शेर खां के विषय में उसकी रिपोर्ट को पूर्णतया स्वीकार कर लिया। ये वजीर केवल शासन के लिए उत्तरदायी नहीं थे वरन् ये सेनानायक भी थे तथा युद्ध में भी भाग लेते थे इस तरह सैनिक तथा नागरिक शासन का विभाजन नहीं था।[3] इनके पश्चात् अन्य किसी अमीर को यह स्थान प्राप्त नहीं हुआ। हुमायूं के निष्कासन काल में जब वजीर कराचा बेग का खजानादार से झगड़ा हुआ तो हुमायूं ने वजीर का पक्ष नहीं लिया।[4]

उसके भारतीय अभियान के समय बैराम खां तथा अबुल माली में शक्ति के लिए संघर्ष हो रहा था किन्तु हुमायूं ने दोनों को इस तरह सन्तुष्ट करने का प्रयत्न

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 356।

2 'He left no traces of any constructive achievement in the political institutions of the country' परमात्माशरण, प्राविन्शियल गवनमेण्ट आफ दि मुगल्स, प० 47।

3 इब्न हसन, दी सेन्ट्रल स्ट्रक्चर ऑफ दि मुगल एम्पायर, प० 120।

4 इस घटना के लिए देखिये इस पुस्तक के नवें अध्याय का 108 फुट नोट।

किया कि एक की शक्ति अधिक न बढ़े। मृत्यु के पूर्व उसने अबुल माली को दिल्ली बुलाया तथा बैराम खा को अकबर के साथ पंजाब भेजा। इसी समय उसकी मृत्यु हो गयी, जिससे इस शक्ति संघर्ष का स्पष्टीकरण न हो सका। किन्तु आग सुलग रही थी और वह कभी भी भयंकर रूप में प्रज्वलित हो सकती थी।

लगान सम्बन्धी सुधार

हुमायू ने लगान सम्बन्धी कुछ साधारण सुधार भी किये। सुल्तान सिकन्दर लोदी का गज 41½ इस्कन्दरी के बराबर था। हुमायू ने इसे बढ़ाकर 42 इस्कन्दरी कर दिया, जिससे यह पूरा 32 संख्या (digit) का हो गया।[1] हुमायू के समय में कदाचित अकबर के समय से कम लगान लिया जाता था।[2]

दरबार के नये नियम तथा उत्सव

हुमायू ने सम्राट के अभिवादन के लिए कोरनिश तथा तस्लीम का नियम निर्धारित किया। कोरनिश में दाहिने हाथ की हथेली ललाट पर रखकर सिर नीचे झुकाया जाता था। तस्लीम में हथेली का पिछला भाग जमीन पर रखकर उसे धीरे-धीरे ऊपर उठाया जाता था तथा खड़े हो जाने पर हथेली को ललाट पर रखा जाता था।[3] सम्राट के दरबार में प्रवेश करते समय नक्कारे की ध्वनि द्वारा लोगों को उसके आगमन की सूचना दी जाती थी। इसी तरह दरबार के समाप्त होने पर जब सम्राट उठकर जाता तो तोप दागकर इसकी सूचना दी जाती थी।[4] हुमायू दरबार में शाहजादा तथा अन्य विश्वासपात्रों के लिए सोने एवं चांदी की कुर्सियों[5] (सदलियां) का प्रबन्ध करना चाहता था। उसका विचार था कि इस सम्मान से वह उन्हें अपने वश में करने में सफल होगा।[6] इसी उद्देश्य से उसने हिन्दू बेग को

1 बनर्जी, हुमायू, 2, पृ० 343।

2 डा० बनर्जी के अनुसार, (हुमायू 2, पृ० 343) हुमायू एक खरवार (आठ मन से कुछ अधिक) वजन के अनाज पर दो बाबरी तथा चार टनका कर लेता था। अकबर के समय में इसी वजन का चार बाबरी देना पड़ता था। बाबरी एक चांदी का सिक्का था। 2½ बाबरी अकबर के एक रुपये के बराबर था। टनका दो तांबे के सिक्के के बराबर था।

3 आईने अकबरी, 1, पृ० 166 67।

4 अकबरनामा, 1, पृ० 358।

5 वही, 356 57।

6 वही।

एक कुर्सी प्रदान की थी।

पुराने नवरोज का उत्सव जिसे ईरानी मनाते थे,[1] बन्द कर दिया गया। इसके स्थान पर हुमायूं ने नये नवरोज का उत्सव प्रारम्भ किया जो वसन्त ऋतु में उस समय पड़ता था जब दिन रात बराबर होते हैं।[2] हुमायूं के सिंहासनारोहण का दिन भी बड़े उत्साह से मनाया जाता था। इस अवसर पर लोगों को इनाम तथा दान दिये जाते, जश्न होते और भांति भांति के आनन्दोत्सव मनाये जाते थे।[3] सम्राट का जन्मोत्सव भी बड़े उत्साह से मनाया जाता था। हुमायूं अस्त्र शस्त्र समेत सोने से तोला जाता, सर्वसाधारण तथा विशेष लोगों को भोजन दिया जाता और अन्य प्रकार के मनोरंजन का प्रबन्ध होता था।[4]

आविष्कार तथा नयी योजनाएं

हुमायूं ने कुछ नये प्रशासकीय नियम चलाये तथा मनोरंजन की नयी वस्तुओं का निर्माण कराया। ये योजनाएं शासकीय दृष्टि से किसी विशेष महत्त्व की नहीं थी किन्तु इनसे हुमायूं के चरित्र, उसके उर्वर मस्तिष्क तथा सूझ-बूझ का परिचय प्राप्त होता है।

अमीरों तथा राजकीय कर्मचारियों का तीन श्रेणियों में विभाजन

हुमायूं ने अमीरों तथा राज्य से सम्बन्धित व्यक्तियों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया[5] (1) अहले दौलत, (2) अहले सआदत, (3) अहले मुराद।[6]

अहले दौलत में वे लोग सम्मिलित थे जो अपनी बुद्धि, बहादुरी तथा कुशलता से शासन में योगदान करते थे तथा साम्राज्य के विकास में सहायक होते थे। सम्राट के सम्बन्धियों, भाइयों, अमीरों, वजीरों तथा सैनिकों को इस श्रेणी में रखा गया था। इसमें ऐसे व्यक्ति थे जिनकी सहायता के बिना राज्य कार्य नहीं चल सकता था।

---

1 नौरोज का त्यौहार ईरान में उस दिन मनाया जाता था जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता था।

2 ख्वान्दमीर, कानूने हुमायूनी, बेनी प्रसाद, पृ० 69। यह दिन 21 मार्च के लगभग पड़ता है।

3 वही, पृ० 63।

4 वही, पृ० 74 75।

5, इस विभाजन के लिए देखिए, ख्वान्दमीर, कानूने हुमायूनी बेनी प्रसाद, पृ० 23 31, अकबरनामा, 1, पृ० 357-59।

6 अहले दौलत अर्थात राज्य के समूह, अहले सआदत अर्थात् सौभाग्य के समूह, अहले मुराद अर्थात अभिलाषाओं तथा इच्छा पूरी करने वालों का समूह।

अहले सआदत म प्रमुख शेख सयिद, काजियो, दार्शनिको, कविया तथा विद्वानो को रखा गया था। ये लोग अपने ज्ञान तथा आदर्शों से राज्य की शक्ति बढाते थे।

अहले मुराद मे ऐसे लोग सम्मिलित थे जो अपनी सुन्दरता, सगीत, नृत्य इत्यादि से मनोरजन करते थे। इनम गायक, वादक, सु दर स्त्रिया, सुन्दर युवक इत्यादि आते थे।

प्रत्येक प्रमुख श्रेणी का एक प्रमुख अधिकारी होता था जिसका कर्तव्य था कि वह अपने श्रेणी के लोगा को सगठित कर सके। अहले दौलत का प्रमुख अधिकारी शुजाउद्दीन अमीर हिन्दू बेग था।[1] इसे अपनी श्रेणी के अमीरा पर नियन्त्रण रखना पडता तथा सेना के वतन, प्रहरिया की नियुक्ति इत्यादि भी करनी पडती थी। सआदत विभाग मौलाना मुहीउद्दीन मुहम्मद फरगारी के अधीन था। इस श्रेणी के लोगो की समस्याओ का समाधान, जन सामान्य मे से छोटे बडा के हको की पूछताछ धार्मिक अधिकारियो की नियुक्ति, वजीफा इत्यादि के निश्चय करने का उत्तरदायित्व उस पर था। अहले मुराद श्रेणी का अधिकारी अमीर उवैस मुहम्मद था। यह मनोरजन तथा इससे सम्बन्धि कार्यों के लिए उत्तरदायी था। तीनो अधिकारिया को एक एक सोने का वाण दिया गया था जिससे य अन्य लागा मे पहचान जा सकते थ। य बाण 'अहले सआदत के बाण', अहले दौलत के बाण तथा 'अहले मुराद के बाण' कहलाते थे।

प्रत्यक श्रेणी के लिए सप्ताह के दो दो दिन निश्चित किये गये थ। इन निश्चित दिना पर दरबार होता तथा सम्राट उस श्रेणी के लोगा से मिलता था। ये दिन ग्रह तथा नक्षत्रो के आधार पर निश्चित किये गये थे। इस तरह शनिवार तथा बृहस्पतिवार अहले सआदत के लिए, रविवार एव मगलवार अहले दौलत के लिए तथा सोमवार और बुधवार अहले मराद के लिए निश्चित हुए थे।

यह विभाजन किसी निश्चित आधार पर नही था। यह आवश्यक नही था कि एक श्रेणी का प्रमुख उसी श्रेणी का व्यक्ति हो, जसे मुराद श्रेणी का प्रमुख उवैस मुहम्मद न गायक था न सुन्दर युवक। मध्य युग के अमीर सैनिक तो होते ही थे, साथ ही उनम बहुत-स ऐसे थे जो साहित्यिक तथा अन्य गुणा स भी सम्पन्न होत थ। यदि विभाजन निश्चित गुणो पर अधारित होता तो बहुत-से व्यक्ति दो या तीन श्रेणिया म आते।

इस विभाजन से हुमायू को राजसी काय के लिए केवल दो दिन, रविवार तथा मगलवार प्राप्त हुए। बाकी दिन आमोद प्रमोद तथा मनोरजन के लिए निश्चित हुए थे। शासन की दष्टि से यह विभाजन हानिकारक था। सौभाग्य यही था कि

1 हिन्दू बेग बाबर तथा हुमायू के समय का प्रमुख अमीर था। हुमायू के काल मे वह जौनपुर का गवर्नर था। उसे अमीरुल उमरा की उपाधि दी गयी थी।

इस विभाजन का कदाचित कठोरता से पालन नहीं किया गया।

इस विभाजन का एक मनोरजक इतिहास है। बाबर के जीवन काल म एक दिन हुमायू काबुल म था। वह अपने गुरु मोलाना मसीहुद्दीन रहुल्लाह के साथ सर को निकला। माग म उसने शकुन (फाल)[1] निकालन का विचार किया। उसन अपने शिक्षक से कहा जो तीन व्यक्ति पहल मिल उनसे उनका नाम पूछकर उसस शकुन निकाला जाए। कुछ दूर चलने पर एक व्यक्ति मिला जिसका नाम मुराद ख्वाजा था। उसके बाद एक अन्य व्यक्ति गधे पर लकडी लादे जा रहा था। इसका नाम पूछन पर दौलत ख्वाजा निकला। हुमायू ने कहा कि यदि तीसरे व्यक्ति का नाम सआदत ख्वाजा हो तो यह बहुत ही उत्तम शकुन होगा। उसी समय एक व्यक्ति दिखायी पडा जिसने अपना नाम सआदत ख्वाजा बताया।[2] हुमायू इसस बडा प्रसन्न तथा प्रभावित हुआ। शासन प्राप्त करने पर उसन इसी आधार पर अपने कमचारियो इत्यादि का विभाजन किया।

बाणा के बारह वग

सम्राट तथा उसके कमचारी बारह श्रेणियो म विभाजित किय गय।[3] प्रत्यक श्रेणी के लिए एक विशेष तरह का बाण निश्चित था। बारहवो श्रेणी का बाण सबसे उच्च था तथा वह सम्राट को प्राप्त था। सबसे निम्न श्रेणी का बाण पहला था जा दरवाना, ऊटवाना इत्यादि को प्राप्त था। इसी तरह दूसरा बाण निम्न कोटि के सेवको, तीसरा साधारण सनिका, चौथा ध्वजाचिया, पाचवा नौजवान सनिको

---

1 फाल या शकुन की प्रथा इस्लाम धम म स्वीकृत है। कुछ वस्तुए अच्छी तथा कुछ बुरी समझी जाती हैं। शकुन कुरान से भी निकालने की प्रथा है। आख बन्द कर कुरान को खोलत हैं, फिर पीछे सात पृष्ठ गिनत हैं उसके पश्चात जिस वाक्य या लाइन पर दृष्टि जाती है उसस फाल निकालते है। हाफिज के दीवान स भी फाल निकाला जाता है। खुदा-बख्श लाइब्रेरी पटना म हाफिज का दीवान है जिस पर हुमायू तथा जहागीर के हाथ की टिप्पणिया हैं जिससे पता चलता है कि य लोग इसस फाल निकालते थे। फाल के लिए देखिए एनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लाम, 2, पृ० 46 47।

2 ख्वान्दमीर, कानूने हुमायूनी, वेनी प्रसाद प० 24-25 अकबरनामा 1, प० 357 अबुल फजल ने मिलने वाले तीसर व्यक्ति को मद तथा ख्वान्दमीर न लडका लिखा है।

3 ख्वान्दमीर, कानूने हुमायनी, वेनी प्रसाद, पृ० 31 33, अकबरनामा, 1, प० 359।

(यक्काजवानो), छठा अफगान कबीला के सरदारा तथा ऊजबेका, सातवा राज्य के छोटे अफसरो, आठवा दरबारी तथा विशेष कमचारियो, नवा प्रतिष्ठित अमीरा, दसवा उत्कृष्ट शेख सैयिदा, विद्वानो एव धार्मिक लोगा तथा ग्यारहवा बाण सम्राट के सम्ब धियो, भाइयो इत्यादि को प्राप्त था। प्रत्यक श्रेणी मे तीन-तीन श्रेणी के बाण थे—प्रथम, द्वितीय तथा ततीय—जो उच्चता के आधार पर प्रदान किये जाते थे।

ये श्रेणिया बारह ही क्या हुइ ? ख्वन्दमीर के अनुसार वप म बारह महीने होते ह, रात तथा दिन बारह बारह घटे के माने जाते है। इसी तरह इतिहास तथा धम म भी बारह के उदाहरण मिलते है।[1]

यह विभाजन भी किसी तक या सिद्धान्त पर आधारित नही था। कुछ ऐसे भी लोग थे जिनकी श्रेणी स्पष्ट नही थी, जसे राजमहल की स्त्रिया। कदाचित वे दूसरी श्रेणी के बाण म आ सकती थी। इस विभाजन मे विद्वाना को राज्य के अन्य कमचारिया से उच्च स्थान दिया गया है।

शासन के चार विभाग

हुमायू ने राज्य के सम्पूण कार्यों को चार तत्त्वो के आधार पर चार विभागा मे विभाजित किया।[2] प्रथम आतशी (अग्नि), दूसरा हवाई (हवा), तीसरा आबी (जल) तथा चौथा खाकी (मिट्टी)। प्रत्येक विभाग का एक वजीर नियुक्त किया गया। आतशी विभाग का वजीर अमीरुल मुल्क था। यह तोपखाना, अस्त्र शस्त्र तथा युद्ध से सम्ब धित सामग्रिया इत्यादि का प्रब धक था। लुत्फुल्लाह हवाई विभाग का वजीर था। सम्राट के वस्त्र, भोजनालय, पशुशाला तथा ऊट इत्यादि इस विभाग म आते थे। आबी विभाग शराब, शरबत, नहरा इत्यादि की देखभाल करता था। यह विभाग ख्वाजा हुसेन के अधीन था। खाकी विभाग ख्वाजा जलालुद्दीन मिर्जा बग की दखभाल मे था। यह विभाग कृषि, भवन, खालसा भूमि, कोप इत्यादि की देखभाल करता था।

प्रारम्भ म प्रत्यक विभाग के लिए एक-एक प्रमुख अमीर नियुक्त किया जाता था। अमीर नासिर कुली आतिशी विभाग का अध्यक्ष था। वह हमेशा लाल वस्त्र पहनता था। उसकी मृत्यु के पश्चात अमीर निहाल इस पद पर नियुक्त हुआ। बाद मे अमीर उवस मुहम्मद चारा विभागा का सुपरिटेण्डेण्ट नियुक्त किया गया।

---

1 अन्य उदाहरणा के लिए दखिए ख्वन्दमीर, कानून हुमायूनी, बनी प्रसाद पृ० 32 33।

2 वही, पृ० 35-36, अकबरनामा, 1, पृ० 359 60।

न्याय का तबला (तबल-ए-आदिल)

हुमायूं ने 'गरजनेवाले बादल के समान' एक तबला (ढोल, दौसा) दीवानखाने के निकट रखवा दिया। जो लोग न्याय चाहते थे वे इसे बजाते थे। इसके बजाने का नियम इस प्रकार निश्चित किया गया कि सुनने वाले को अपराध के विषय में पता चल जाए। साधारण झगड़े में छड़ी (चोब से एक वार, वेतन न मिलने पर दो वार, सम्पत्ति के अपहरण होने पर तीन बार तथा किसी की हत्या होने पर चार बार ढोल बजाने का आदेश था।[1]

न्याय से सम्बन्धित होने के कारण यह न्याय का तबला (तबल-ए-आदिल) कहलाता था।

हुमायूं का यह आदेश नया नहीं था। ईरान के शासकों ने इस तरह की प्रणाली चलायी थी। बाद में जहांगीर ने कदाचित् इसी से प्रभावित होकर अपने न्याय की जंजीर प्रारम्भ की।

आनन्द मंगल का कालीन (बिसाते निशात)

हुमायूं ने एक 'आनन्द मंगल का कालीन' बनवाया।[2] यह कालीन गोल था और तात्विक ग्रहों तथा नक्षत्रों के ग्रहपथों के तदनुरूप वृत्तों में विभाजित था। प्रथम वृत्त अतलस रूपी आकाश के अनुरूप, सदाचारियों के कर्मों के अनुसार श्वेत रंग का, दूसरा नीला, तीसरा शनि ग्रह से सम्बन्धित होने के कारण काला, चौथा भाग्यशाली वृहस्पति से सम्बन्धित होने के कारण हलके भूरे रंग का, पांचवां मंगल ग्रह से सम्बन्धित लाल रंग का, छठा सूर्य से सम्बन्धित सुनहले रंग का सोने चांदी के तारों से बुने हुए कपड़े का, सातवां शुक्र ग्रह के अनुरूप चमकता हरा, आठवां बुद्ध ग्रह से सम्बन्धित बैंगनी रंग[3] का तथा नवां चन्द्रमा के अनुरूप चौदहवीं के चांद की तरह सफेद था। चन्द्र वृत्त के उपरान्त अग्नि एवं वायु के वृत्त क्रम में रखे गये तदुपरान्त मिट्टी एवं जल के। पृथ्वी के आबाद भाग सात प्रदेशों में विभाजित किये गये थे। सातों ग्रहों के वृत्त दो सौ श्रेणियों में विभाजित थे, इस तरह इस

---

1 ख्वान्दमीर, कानूने हुमायूनी बेनी प्रसाद, पृ० 82, अकबरनामा, 1, पृ० 361 62, अर्सकिन, 2, पृ० 533 34।

2 ख्वान्दमीर, कानूने हुमायूनी, बेनी प्रसाद, पृ० 80-81, अकबरनामा, 1, पृ० 361।

3 इस ग्रह के इस रंग के चुनने की विवेचना के लिए देखिए ख्वान्दमीर, कानूने हुमायूनी, बेनी प्रसाद, पृ० 80, एनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लाम 4, पृ० 1058-59।

शासन का यह विभाजन पूर्णतया अवैज्ञानिक था। नहर विभाग कृषि के अन्तर्गत होना चाहिए था किन्तु वह शराब के विभाग में लगा हुआ था। उवस मुहम्मद को बहुत अधिक महत्त्व प्राप्त हो गया था, क्योंकि इन चार विभागों के अतिरिक्त उस पर अहले मुराद का भी उत्तरदायित्व था। आश्चर्य है कि मनोरंजन से सम्बंधित व्यक्ति शासन, उत्पादन, कृषि, निर्माण, तोपखाना इत्यादि की भी देख रेख करता था।

सात मजलिसों का आयोजन

हुमायूं ने सात तरह की मजलिसें सात श्रेणियों के लोगों के लिए आयोजित की। ये मजलिसें भी नक्षत्रों पर आधारित थीं। पहली मजलिस चन्द्रमा से सम्बंधित थी (कमर की मजलिस)। इस सभा में राजदूत, यात्री एवं संदेशवाहक रखे जाते थे। दूसरी मजलिस बुद्ध ग्रह से सम्बंधित थी (अतारिद की मजलिस)। इसमें गर सैनिक कर्मचारी तथा अन्य लोग आते थे। इसी तरह अन्य व्यक्ति भी बाकी पांच मजलिसों में विभाजित किये गये। प्रत्येक मजलिस की सजावट तथा लोगों के वस्त्र भी विशेष नक्षत्रों के आधार पर थे। सम्राट सप्ताह का एक एक दिन प्रत्येक मजलिस में व्यतीत करता था।[1]

नक्कारे बजाने का नियम

दिन में तीन बार नक्कारे बजाने का आदेश था। प्रथम, प्रातःकाल का नक्कारा जो नमाज एवं प्रार्थना के समय बजाया जाता था, 'नौबत सआदत' कहलाता था। दूसरा सूर्योदय के बाद, सल्तनत के विभागों का कार्य प्रारम्भ होने के समय बजाया जाता था, जो 'नौबते दौलत' कहलाता था। तीसरा, सायंकाल का नक्कारा, लोगों के विश्राम करने एवं आनन्द-मंगल मनाने के समय बजाया जाता था जिसे 'नौबत मुराद' कहते थे। प्रत्येक महीने की प्रथम तथा चौदहवीं तिथि को प्रसन्नता के नक्कारे बजाने का आदेश था। यह 'नक्कारा ए-शादीयाना' कहलाता था।[2] कदाचित इसी के आधार पर बाद में मुगल सम्राटों ने नौबतखाना की प्रणाली प्रारम्भ की।

---

1 फिरिश्ता, फा० पृ०213, ब्रिग्स, 2, पृ० 71। फारसी में मजलिस शब्द का प्रयोग किया गया है, ब्रिग्स ने इसका अनुवाद 'हाल आफ आडियन्स' किया है। इसी तरह पहली मजलिस को 'पैलेस आफ मून' तथा दूसरी को 'पैलेस आफ अतारिद' किया है। इस आविष्कार का जिक्र केवल फिरिश्ता करता है।

2 ख्वन्दमीर, कानूने हुमायूनी, बेनी प्रसाद, पृ० 81-82।

न्याय का तबला (तबल-ए-आदिल)

हुमायूं ने 'गरजनेवाले बादल के समान' एक तबला (ढोल, दौसा) दीवानखाने के निकट रखवा दिया। जो लोग न्याय चाहते थे वे इसे बजाते थे। इसके बजाने का नियम इस प्रकार निश्चित किया गया कि सुनने वाले को अपराध के विषय मे पता चल जाए। साधारण झगडे मे छडी (चोब से एक बार, वेतन न मिलने पर दो बार, सम्पत्ति के अपहरण होने पर तीन बार तथा किसी की हत्या होने पर चार बार ढोल बजाने का आदेश था।[1]

न्याय से सम्बन्धित होने के कारण यह न्याय का तबला (तबल ए-आदिल) कहलाता था।

हुमायू का यह आदेश नया नही था। ईरान के शासको ने इस तरह की प्रणाली चलायी थी। बाद मे जहागीर ने कदाचित् इसी से प्रभावित होकर अपने न्याय की जजीर प्रारम्भ की।

आनन्द मगल का कालीन (बिसाते निशात)

हुमायू ने एक 'आनन्द मगल का कालीन' बनवाया।[2] यह कालीन गोल था और तात्त्विक ग्रहो तथा नक्षत्रो के ग्रहपथो के तदनुरूप वृत्तो मे विभाजित था। प्रथम वृत्त अतलस रूपी आकाश के अनुरूप, सदाचारियो के कर्मों के अनुसार श्वेत रग का, दूसरा नीला, तीसरा शनि ग्रह से सम्बन्धित होने के कारण काला, चौथा भाग्यशाली वृहस्पति से सम्बन्धित होने के कारण हलके भूरे रग का, पाचवा मगल ग्रह से सम्बन्धित लाल रग का, छठा सूर्य से सम्बन्धित सुनहले रग का सोने चांदी के तारो से बुने हुए कपडे का, सातवा शुक्र ग्रह के अनुरूप चमकता हरा, आठवा बुद्ध ग्रह से सम्बन्धित बैगनी रग[3] का तथा नवा चन्द्रमा के अनुरूप चौन्हवी के चाद की तरह सफेद था। चन्द्र वृत्त के उपरान्त अग्नि एव वायु के वृत्त क्रम मे रखे गये तदुपरान्त मिट्टी एव जल के। पृथ्वी के आबाद भाग सात प्रदेशो मे विभाजित किये गये थे। सातो ग्रहो के वृत्त दो सौ श्रेणियो मे विभाजित थे, इस तरह इस

---

1 ख्वान्दमीर, कानूने हुमायूनी बेनी प्रसाद, पृ० 82, अकबरनामा, 1, पृ० 361 62, असंकिन 2, पृ० 533 34।

2 ख्वान्दमीर, कानूने हुमायूनी, बेनी प्रसाद, पृ० 80-81, अकबरनामा, 1, पृ० 361।

3 इस ग्रह के इस रग के चुनने की विवेचना के लिए देखिए ख्वान्दमीर, कानूने हुमायूनी, बेनी प्रसाद, पृ० 80 एनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लाम 4, पृ० 1058 59।

विशेष कोट तथा प्रत्येक दिन के लिए विशेष रग के वस्त्र

हुमायू ने उल्वाकचा नामक एक विशेष प्रकार का कोट तैयार कराया था। यह आगे खुला हुआ तथा कमर तक लम्बा होता था। यह अगरखा के ऊपर पहना जाता था।[1]

ग्रहो तथा नक्षत्रो के आधार पर हुमायू प्रत्येक दिन विशेष रग का वस्त्र तथा उसी रग का मुकुट धारण करता था। इस तरह वह शनिवार को काला, रविवार को पीला, सोमवार को सफेद, मगलवार को लाल, बुद्धवार को राख, नीले या रेशमी (उमचा) रग का तथा गुरुवार को सफेद वस्त्र धारण करता था।[2]

नौकाओ का चमत्कार

विशेष प्रकार की प्रमोद तरणी—कुशल बढइयो से हुमायू ने यमुना नदी मे चार बजरे (हाउस बोट) तैयार कराये। प्रत्येक बजरे मे दो मजिला चौकोर सुदर कमरा था। नौकाओ को आमने सामने एक विशेष तरह से मिला देने से बीच मे एक अष्टभुजाकार हौज बन जाता था। ये कमरे इतने सुदर ढग से बहुमूल्य वस्तुओ से सजाये जाते थे कि देखने वाले आश्चर्यचकित हो जाते। मौलाना यूसुफी तबीब, जलालुद्दीन उवैस मुहम्मद इत्यादि ने इसकी प्रशसा मे कविताओ की रचना की।[3]

नौकाओ पर बाजार—नौकाओ पर बाजार लगाने की भी प्रणाली हुमायू ने प्रारम्भ की। इसके लिए विशेष तरह की लम्बी चौटी नौकाओ का निर्माण हुआ। इन पर दोनो तरफ दूकान तैयार करायी गयी। प्रत्येक पेशे एव कला के जानने वाले लोगो को आदेश हुआ कि इनमे अपनी दूकाने खोलें तथा व्यापार करे। नौकाओ पर सजे बाजार के साथ अपने राज्य के प्रारम्भिक वर्षो मे हुमायू ने दिल्ली से आगरा की तरफ प्रस्थान किया था। मार्ग मे प्रत्येक व्यक्ति को भोजन, पेय, वस्त्र, कपडे, युद्ध के अस्त्र शस्त्र इत्यादि जिस वस्तु की आवश्यकता होती, इस नौकाओ के बाजार मे मिल जाती थी।[4] इस तरह यह एक चलता फिरता बाजार था। मुगल सम्राट की यात्राओ मे इससे आनन्द तथा आवश्यक वस्तुओ की पूर्ति होती थी।

नौकाओ का उद्यान—इसी प्रकार सम्राट की आज्ञा से नौकाओ पर तख्त

---

1 ख्वन्दमीर, कानूने हुमायूनी बेनी प्रसाद, पृ० 50।

2 वही, पृ० 50 52, अकबरनामा 1, पृ० 361।

3 वही, पृ० 36 40, वही पृ० 360।

4 वही, पृ०43 44।

कालीन पर 1,400 आदमी बैठ सकते थे। इस कालीन के बराबर एक लकडी की चौकी थी, जिस पर इसे फैला दिया जाता था। हुमायू स्वय सूर्य से सम्बन्धित छठे ग्रह म वठता था। अन्य लोगा को सात ग्रहा के आधार पर भिन्न भिन्न स्थानो पर बैठाया जाता था। उदाहरणतया, भारतीय वश के अमीर एव शेख काले रग के वृत्त मे बैठते थे, जो शनि से सम्बधित था। सैयिद तथा विद्वान लोग हलके भूरे रग के वृत्त म बैठते थे क्योकि यह वृत्त वृहस्पति स प्रभावित था। उपर्युक्त वृत्तो मे बैठकर कभी कभी लोग भिन्न भिन्न भागा म पासा फेंकते थ। पास के हर तरफ भिन्न-भिन्न मुद्राओ म मनुष्यो की आकृतिया बनी होती थी। जिसके पास म जो मुद्रा निकलती उस व्यक्ति को उसी तरह बैठना या खडा होना पडता। इस तरह यह आनन्दमय खेल बन जाता जिसमे सम्राट तथा अमीर आनन्द लते थे।

शीशे के विशेष चषक

मक्खियो, धूल तथा गन्दगी से बचने के लिए हुमायू ने विशेष तरह के शीशे के बरतना का प्रबध किया। उसने भोजन एव पीने की वस्तुओ के प्रबध करने वाला को आज्ञा दी कि दरबार मे शरबत इत्यादि इन्ही म दिया जाए।[1]

ताजे इज्जत

हुमायू ने (1532-33 ई० 939 हि० म) एक मुकुट बनवाया[2] जो नवीनता तथा सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध था। इसम अनक बहुमूल्य वस्तुए जसे यूरोपीय मखमल, सोने चादी के तारा स बना हुआ साटन सतरग ताजा' (एक तरह का रेशमी कपडा), उरमूक (एक तरह का बारीक ऊनी कपडा), किमखाब इत्यादि उत्तम तरीके म लगायी गयी थी। प्रत्यक टोप म फारसी के सात के अक (V) की तरह का एक कटा हुआ भाग होता था दोना कटे हुए भागो को मिलाने स सतहत्तर (VV) का रूप बन जाता था। इस ताज को ताजे इज्जत कहा जाता था। अब्जद के आधार पर इज्ज का जोड भी 77 होता था। इस्लाम धम म सात सख्या का विशेष महत्त्व होने के कारण इस मुकुट के निर्माण म सात को अधिक महत्त्व दिया गया था।[3] यह ताज भी ज्योतिष के आधार पर बना था, जिसस पहनने वाला भाग्यशाली हो।

---

1 ख्वान्दमीर, कानून हुमायूनी बनी प्रसाद, पृ० 80 81, अकबरनामा 1, पृ० 361।

2 ख्वान्दमीर कानून हुमायूनी, बनी प्रसाद, पृ० 81।

3 ह्यूग्स, ए डिक्शनरी आफ इस्लाम, पृ० 550 569 570।

विशेष कोट तथा प्रत्येक दिन के लिए विशेष रंग के वस्त्र

हुमायूं ने उल्वाक्चा नामक एक विशेष प्रकार का कोट तैयार कराया था। यह आगे खुला हुआ तथा कमर तक लम्बा होता था। यह अंगरखा के ऊपर पहना जाता था।[1]

ग्रहों तथा नक्षत्रों के आधार पर हुमायूं प्रत्येक दिन विशेष रंग का वस्त्र तथा उसी रंग का मुकुट धारण करता था। इस तरह वह शनिवार को काला, रविवार को पीला, सोमवार को सफेद, मंगलवार को लाल, बुद्धवार का राख, नीले या रेशमी (उमचा) रंग का तथा शुक्रवार को सफेद वस्त्र धारण करता था।

नौकाओं का चमत्कार

विशेष प्रकार की प्रमोद तरणी—कुशल बढ़इयों से हुमायूं ने यमुना नदी में चार बजरे (हाउस बोट) तैयार कराये। प्रत्येक बजरे में दो मंजिला चौकोर सुन्दर कमरा था। नौकाओं को आमने सामने एक विशेष तरह से मिला देने से बीच में एक अष्टभुजाकार हौज बन जाता था। ये कमरे इतने सुन्दर ढंग से बहुमूल्य वस्तुओं से सजाये जाते थे कि देखने वाले आश्चर्यचकित हो जाते। मौलाना यूसुफी तबीब, जलालुद्दीन उवस मुहम्मद इत्यादि ने इसकी प्रशंसा में कविताओं की रचना की।[2]

नौकाओं पर बाजार—नौकाओं पर बाजार लगाने की भी प्रणाली हुमायूं ने प्रारम्भ की। इसके लिए विशेष तरह की लम्बी चौड़ी नौकाओं का निर्माण हुआ। इन पर दोनों तरफ दूकानें तैयार करायी गयीं। प्रत्येक पेशे एवं कला के जानने वाले लोगों को आदेश हुआ कि इनमें अपनी दूकानें खोलें तथा व्यापार करें। नौकाओं पर सजे बाजार के साथ अपने राज्य के प्रारम्भिक वर्षों में हुमायूं ने दिल्ली से आगरा की तरफ प्रस्थान किया था। मार्ग में प्रत्येक व्यक्ति को भोजन, पेय, वस्त्र, कपड़े, युद्ध के अस्त्र शस्त्र इत्यादि जिस वस्तु की आवश्यकता होती, इस नौकाओं के बाजार में मिल जाती थी।[4] इस तरह यह एक चलता फिरता बाजार था। मुगल सम्राट की यात्राओं में इससे आनन्द तथा आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति होती थी।

नौकाओं का उद्यान—इसी प्रकार सम्राट की आज्ञा से नौकाओं पर तरल

1 ख्वान्दमीर, कानूने हुमायूनी बेनी प्रसाद, पृ० 50।

2 वही, पृ० 50 52 अकबरनामा, 1, पृ० 361।

3 वही, पृ० 36 40, वही पृ० 360।

4 वही, पृ० 43 44।

बिछाकर मिट्टी डालकर उसे कृषि योग्य बना दिया गया। इस तरह कृषि योग्य भूमि तैयार हो गयी जिस पर तरह तरह के फल फूल तथा तरकारियां लगायी गयी।[1] इस तरह नदी में हरियाली से भरा उद्यान भी सम्राट के साथ घूमता रहता था।

चलता फिरता पुल—बहुत सी नौकाओं को एक-दूसरे से मिलाकर उन्हें जंजीरों तथा कुन्दाओं से बांध दिया जाता था। उन पर तख्त बिछा दिए जाते तथा उन्हें कीलों से इस तरह जकड़ दिया जाता था कि घुड़सवारों के चलने पर भी वह नहीं हिलता था। इस तरह इससे हाथियों, ऊंटों इत्यादि को नदी के पार ले जाने में बड़ी सुविधा होती थी।[2] पुल की आवश्यकता न रहने पर नौकाएं अलग कर दी जाती थीं तथा उनसे अन्य काम लिया जाता था।

चलता फिरता महल कस्रे रवां—यह महल लकड़ी का बना था तथा जहां भी चाहें ले जाया जा सकता था। बढ़इयों ने इसे सुन्दर ढंग से बनाया था तथा लकड़ी के टुकड़ों को जोड़ने में इतनी सफाई दिखायी थी कि देखने पर यह एक ही लकड़ी का बना हुआ मालूम होता था। इसमें तीन मंजिलें थीं। सबसे ऊंची मंजिल पर पहुंचने के लिए सीढ़ी तैयार करायी गयी थी जो सुविधा से लगाई तथा खोली जा सकती थी। इस महल को चित्रकारों ने भांति भांति के सुन्दर रंगों से सजाया था। इस महल पर एक सोने का गुम्बज था जो सूर्य की तरह चमकता था। महल के दरवाजों पर खोतान, तुर्की तथा यूरोप से मंगाये गये कपड़ों के पर्दे शोभायमान थे।[3]

विचित्र खेमे

हुमायूं ने एक बड़ा खेमा भी निर्मित कराया। यह आकाश के बारह राशिचक्रों के आधार पर बारह कक्षों में विभाजित था। इन कक्षों में झंझरियां बनी थीं। इनसे प्रकाश आता तथा ये अत्यन्त ही सुन्दर प्रतीत होती थीं।[4]

इसके अतिरिक्त हुमायूं ने एक अन्य खेमे का भी निर्माण कराया जो बहुत बड़ा था तथा सभी खेमों को ढक लेता था। इसमें झंझरियां तथा कनातें नहीं थीं। लकड़ी के सुन्दर टुकड़ों को जोड़कर खम्भा बना लिया जाता था जिस पर वह

1 ख्वान्दमीर, कानूने हुमायूनी, बेनी प्रसाद पृ० 44 45, अकबरनामा, I, पृ० 360।

2 वही, पृ० 45, वही, पृ० 360।

3 वही, पृ० 46 47, वही, पृ० 360।

4 वही, पृ० 48 49, वही, पृ० 361।

खडा किया जाता था। इस खेम मे भी कइ प्रकार के रग थे। खडा करने पर यह बहुत ऊचा उठ जाता था।[1]

हुमायू से सम्बन्धित स्मारक

हुमायू को भवन निमाण तथा स्थापत्यकला स रुचि थी। ख्वान्दमीर लिखता है कि हुमायू की भव्य भवनो एव शक्तिशाली दुर्गो के निर्माण मे अत्यधिक रुचि थी।[2] यदि उसे समय तक सुविधा प्राप्त हुइ होती तो निश्चय ही सु दर भवनो के रूप मे उसने अपने सजनात्मक गुण का प्रदर्शित किया होता, कि तु जीवन की उथल पुथल तथा उलट फेर के कारण ऐसा सम्भव न हा सका।[3] फिर भी हुमायू से सम्बन्धित अथवा उसके द्वारा निर्मित कुछ भवना का ज्ञान हम प्राप्त है।

अपने राज्य के प्रारम्भिक काल मे हुमायू ने दीन पनाह मे अपनी राजधानी स्थापित कर वहा भवनो का निर्माण कराया।[4] दीन पनाह के भग्नावशेष आजकल दिल्ली के पुराने किले म है। नगर तो लुप्त हो गया कि तु दुग की बाहरी दीवार तथा एक दरवाजा (खूनी दरवाजा) अभी मौजूद है जिसम गढ का स्थान निश्चित किया जा सकता है। यह तीन फरलाग लम्बा तथा डेढ फरलाग चौडा है। दीवार चालीस फुट ऊची है। यमुना उन दिना उस स्थान पर बहती थी जहा अब निजामुद्दीन का स्टेशन है। ग्रीष्म ऋतु म दुग से यमुना के जल की छवि का आनन्द लिया जा सकता था। दुग यमुना के पानी से घिरा रहता था। यदि यह इमारत पूरी हो गयी होती तथा नष्ट न हुई होती तो वास्तुकला के इतिहास मे इसका विशेप स्थान हाता।

पुरान किले म) ही हुमायू का पुस्तकालय है।[5] यह ग्रेनाइट तथा लाल पत्थर का बना एक दुमजिला भवन है। इसकी सीढिया पतली हैं। इसम अब भी कुछ खाने हैं, जहा पुस्तके रखी जाती थी। इसी भवन की सीढी स गिरकर हुमायू की मृत्यु हुइ। पुराने किले के मध्य मे एक बडा गहरा कुआ है। इसे हुमायू न बनवाया

---

1 ख्वान्दमीर, कानून हुमायूनी, बेनी प्रसाद, पृ० 48 49, अकबरनामा, 1, पृ० 361।

2 ख्वन्दमीर, कानून हुमायूनी बेनी प्रसाद, पृ० 55।

3 कम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, 4, पृ० 524।

4 दीन पनाह की स्थापना के लिए देखिए इस पुस्तक का पृ० 119।

5 इस इमारत के लिए दखिए—जनरल एशियाटिक सासाइटी आफ बगाल, 1871 ई० पृ० 135, कार स्टीफेन—आर्कियोलाजिकल एण्ड मानूमेन्टल रिमन्स आफ डेल्ही, पृ० 193 94।

था, जिससे दुर्ग मे पानी की कमी न हो ।[1]

सलीमगढ दुर्ग के निकट यमुना के किनारे नीली छतरी नामक इमारत है। इसके गुम्बज पर नीली खपरैल है। यह 1532 ई० मे हुमायू द्वारा निर्मित हुई।[2]

हुमायू को साहित्य तथा साहित्यकारो से विशेष प्रेम था। अमीर खुसरो सल्तनत काल का सबसे बडा फारसी का कवि था। इसके मकबरे पर हुमायू ने एक अभिलेख अंकित कराया जो अब भी मौजूद है। उसने 938 हिजरी (1531-32 ई०) मे इसकी भीतर की चहारदीवारी का निर्माण कराया, उस पर संगमरमर लगवाया तथा उसकी कब्र पर एक संगमरमर का समाधि-प्रस्तर भी रखवाया।[3] अभिलेख मे खुसरो को 'शब्दो के साम्राज्य के सम्राट के' अतिरिक्त प्रमुख सन्त भी कहा गया है। अमीर खुसरो के प्रति हुमायू का आदर केवल एक कवि के नाते ही नही वरन् एक सूफी सन्त के नाते भी था।

आगरा मे हुमायू के किसी भवन निर्माण का निश्चित प्रमाण नही मिलता। एक मस्जिद जो गिरी हुई अवस्था मे है हुमायू द्वारा निर्मित बतायी जाती है।[4] इसी तरह की एक मस्जिद फतेहाबाद (जिला हिसार) मे है। यह एक बडी तथा सतुलित इमारत है। इसकी खपरैल एनेमल की है। कदाचित् हुमायू ने उसका निर्माण 1540 ई० मे कराया।[5] सारनाथ मे चौखंडी स्तूप पर एक अष्टाकार मीनार या बुर्ज है जो हुमायू के यहा आने की स्मृति मे राजा टोडरमल के पुत्र गोवर्धन द्वारा अकबर के समय मे निर्मित हुआ।[6] सहारनपुर जिले के नकुर तहसील के गगोह कस्बे मे शेख अब्दुल कद्दूस का मकबरा है। यह 1537 ई० मे हुमायू द्वारा बनवाया गया था, यद्यपि सन्त की मृत्यु 6 वर्ष बाद हुई हुमायू ने सन्त की कुटी

1 स्पीअर, देहली उसके स्मारक और इतिहास पृ० 30।

2 जहागीर अपनी आत्मकथा मे लिखता है "इस इमारत के नीचे पानी के पास एक चौकोर चौखण्डी बादशाह हुमायू के आदेश से बनी थी, जिस पर चमकते हुए खपरल लगे थे और ऐसे हवादार स्थान बहुत कम हैं। जब स्वर्गीय सम्राट हुमायू दिल्ली मे रहते थे तो इस स्थान पर बहुधा अपने मित्रो के साथ बठते तथा अपने दरबारियो से बातचीत करते।" जहागीर की आत्मकथा, ब्रजरत्न दास द्वारा हिन्दी मे अनुवादित, पृ० 208।

3 मिर्जा वाहिद, लाइफ एण्ड वर्क्स ऑफ अमीर खुसरो, पृ० 138 39।

4 पर्सी ब्राउन, इण्डियन आरकीटेक्चर, इस्लामिक पीरियड, पृ० 96।

5 वही, स्मिथ, ए हिस्ट्री ऑफ फाइन आर्ट् स इन इण्डिया एण्ड सीलोन, पृ० 158।

6 मजूमदार, बी०, ए गाइड टु सारनाथ, पृ० 26 27, जरनल यू० पी० हिस्टारिकल सोसाइटी, जिल्द 15, पृ० 55 64।

मे उससे धार्मिक विषयो पर वार्ता भी की थी।[1] आजमगढ जिले मे तहसील महाल के निगून कस्बे मे एक मस्जिद है जो हुमायू के काल मे 1533 ई० मे निर्मित हुई थी।[2] इसी तरह कालिंजर के एक जलाशय का निर्माण भी उसके समय म 936 हि० म हुआ।[3]

उपर्युक्त भवनो के अतिरिक्त कुछ अन्य भवनो के विषय मे केवल साहित्यिक प्रमाण मिलते हैं। ख्वन्दमीर लिखता है कि आगरा मे हुमायू ने एक 'इमारते तिलिस्म' का निर्माण कराया था, जिसका वणन किया जा चुका है।[4] हुमायू ने आगरा दुग के अन्दर उस स्थान पर जहा हिन्दू राजाओ के समय मे कोषागार था, एक महल का निर्माण कराया। इस महल मे बहुत-से कमरे तथा दालाने थी और यह इतना ऊचा था कि ऊपर बठने वालो को ऐसा मालूम होता था जैस व आकाश मे हो। यहा से यमुना सात-आठ मील तक दिखायी देती थी।[5] जिससे बडा आनन्द आता था। ग्वालियर मे हुमायू ने तराशे हुए पत्थरो से एक किले का निर्माण कराया तथा उस बहुत ही सुन्दर ढग से सजाया गया था। ख्वन्दमीर इस भवन को 'सृष्टि का आश्चय' कहता है।[6]

हुमायू द्वारा निर्मित वास्तुकला के विकास की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूण नही है, फिर भी इनसे प्रकट होता है कि हुमायू को भवन निर्माण से रुचि थी तथा समय और सुविधा प्राप्त होने पर उसने महत्त्वपूण भवनो का निर्माण कराया होता। उसका ईरान निवास भी व्यथ नही गया। वह वहा से अपने साथ वहा के कला सिद्धान्त लाया जो भविष्य म भारतीय कला से मिलकर मुगल कला के अग बन गये।

हुमायू का मकबरा

हुमायू से सम्बन्धित स्मारको मे सबसे महत्त्वपूण उसका अपना मकबरा है जो हुमायू के मकबरे के नाम से प्रसिद्ध है। इसका निर्माण अकबर के समय मे हुआ। साधारणतया शासक अपने मकबरो का निर्माण अपने जीवन काल मे करा लेते थे।

---

1 आईने अकबरी, 3, पृ० 417, बनर्जी हुमायू, 2, पृ० 349। गगोह सहारनपुर से 23 मील दक्षिण पश्चिम स्थित है।

2 बनर्जी, हुमायू 2, पृ० 349-50।

3 वही प० 350।

4, इस पुस्तक का पृ० 120-21।

5, ख्वन्दमीर, कानूने हुमायूनी, बेनी प्रसाद, प० 58-59, ख्वन्दमीर तीन-चार कुरोह लिखता है। कुरोह (सस्कृत का क्रोश) दो मील के बराबर था। प्राचीन समय मे मगध का क्रोश 1½ मील के ही बराबर था।

6 वही, प० 59।

दुर्भाग्यवश हुमायू को इसका समय नही मिल सका। उसकी मृत्यु के पश्चात् यह काय उसकी विधवा हाजी बेगम (वेगा बेगम) ने अपने हाथ म लिया। सम्राट की मृत्यु के आठ वर्ष पश्चात् (1564 ई० म) बेगम ने इस मकबरे का निर्माण काय प्रारम्भ कराया। वह स्वय दिल्ली जाकर बस गयी तथा उसी की देखरेख म यह मकबरा बनकर तैयार हुआ।

यह मकबरा दिल्ली म दीन पनाह के निकट बना हुआ है। इसी के निकट निजामुद्दीन औलिया की दरगाह है जहा उस समय भी बहुत-से लोग आया करते थे, जैसे आजकल जाते हैं। जिस समय इसका निर्माण प्रारम्भ हुआ, अकबर की राजधानी आगरा थी। इसका प्रमुख वास्तुकार मीराक मिर्जा गियास था, जो कदाचित ईरानी था। मकबरे के पास ही एक अरब सराय है। यह नाम कदाचित उन कारीगरो के परिवारो के बसने से पड गया, जिन्होंने इस मकबरे का निर्माण किया। भवन पर विदेशी प्रभाव होने पर भी अधिकतर कारीगर भारतीय थे।[1]

इस मकबरे के चारो तरफ एक पार्क है और उसके चारो तरफ एक चहारदीवारी है। चहारदीवारी की चारो दीवारो मे से प्रत्येक के मध्य म एक-एक द्वार है। मुख्य द्वार पश्चिम का है अन्य द्वार केवल सामजस्य स्थापित करने के लिए बनाये गये। द्वार से प्रवेश करने पर पार्क मिलता है जो मुगल काल म भाति भाति के पेड पौधो से सजा रहता था। लोदी काल म मकबरो के चारो तरफ दीवार बनाने की प्रणाली तो प्रारम्भ हो गयी थी, किन्तु इस तरह मकबरो के साथ चौकोर उद्यानो की प्रणाली की यह प्रथम प्रमुख इमारत है। इसके निर्माण म लाल तथा श्वेत पत्थरो का प्रयोग किया गया है। सम्पूर्ण भवन लाल पत्थर का तथा गुम्बद सफेद पत्थर का है। बीच-बीच मे सजावट के लिए भी सफेद पत्थर का प्रयोग हुआ है। मकबरा 22 फुट ऊचे चौकोर चबूतरे पर बना हुआ है। इसका निर्माण इस तरह हुआ है कि छत पर इसमे कई कमरे निकल आये हैं। यहा कदाचित् विद्यार्थी पढते थे।

हुमायू के मकबरे से मुगल काल की वास्तुकला का वास्तविक इतिहास प्रारम्भ होता है। इसके पहले की मुगल इमारते नगण्य हैं तथा इनका कलात्मक मूल्य भी बहुत कम है। इसकी विशेषता के कई कारण हैं। इसका गुम्बद पूर्ण गुम्बद कहलाता है अर्थात् यह पूर्ण अर्द्धवृत्त है। गुम्बद की चोटी पर चन्द्राकार है

---

1 "There is little doubt that the masonry of the building was done by Indian craftsmen" हैवेल, इण्डियन आरकीटेक्चर फ्राम दि फर्स्टमुहमडन इनवेजन टु दि प्रेसेन्ट डे, पृ० 163।

2 ब्राउन, इण्डियन आर्कीटेक्चर, इस्लामिक पीरियड, पृ० 97।

कमल नही। इसका कारण ईरानी प्रभाव है। इसके बाद के गुम्बदो (जैसे ताजमहल) की चोटी पर कमल है। इस गुम्बद के बनाने म भी विशेषता है। इसके मेहरावा पर भी ईरानी प्रभाव ह। मक्वरे के साथ के उद्यान से इसकी सुदरता और भी बढ जाती है।[1] ताजमहल के निर्माण के समय शाहजहा तथा उसके वास्तुकार हुमायू के मकवरे से प्रभावित थे तथा दोनो भवनो मे कई वाता म समानता है। ईरानी प्रभाव होने पर भी यह पूणतया भारतीय इमारत ह।[2]

हुमायू के मकबरे के नीचे भूमि गह मे मुगल परिवार से सम्बन्धित बहुत-सी कब्रे हैं। इन पर लेख नही खुदे हैं जिससे इनका पता लगाना सम्भव नही। शाहजहा का पुत्र द्वारा शिकोह हत्या के पश्चात् इसी मकबरे म बिना किसी सस्कार के दफना दिया गया था।[3] औरगजेब की मत्यु के पश्चात भी कई राजकुमार तथा मृत सम्राट यहा दफनाये गय।[4] यहा इतनी कब्रें है कि हुमायू का मकबरा तैमूर वश का श्मशान-गह कहलाता है। मुगल वश के अन्तिम सम्राट बहादुर शाह तथा उसके पुत्रा ने 1857 ई० मे भागकर हुमायू के मकवरे म शरण ली थी। यही वे बन्दी बनाये गय[5] तथा बहादुरशाह के दो पुत्र इसी के निकट गोली से मार डाले गये। विधि की यह कितनी विषम विडम्बना थी कि मुगल साम्राज्य का अन्त भी इसी मकबरे म हुआ।

मुगल चित्रकला तथा हुमायू

फारसी तथा तुर्की भाषा म चित्रकार का मुसव्विर कहते है। कुरान म परमेश्वर के लिए इसी शब्द का प्रयोग किया गया है। कुरान के अनुसार द्यूत, प्रतिमा-विधान तथा भविष्य कथन शैताना की कायवाइया हैं, इस कारण मुसलमाना को

---

1 The innovation here seems to have been more the association of a garden with a tomb than the style of the garden itself ' हैवेल इण्डियन आरकीटेक्चर, पृ० 163। हुमायू के मकवरे के उद्यान के लिए देखिए, विलियस स्टुअट, गार्डेन आफ दि ग्रेट मुगल्स, प० 95 97।

2 With all the Persian elements in the details, the plan of the whole building is characteristically Indian हैवेल, इण्डियन आरकीटेक्चर, प० 164।

3 सरकार हिस्ट्री आफ औरगजेब, 1 2 प० 549-50।

4 इरविन, लेटर मुगल्स 1, पृ० 34, 256।

5 सुरेन्द्रनाथ सेन एटीन फिफ्टी-सेवन, प० 109-11, मजूमदार आर० सी०, दि सिपाय म्यूटिनी एण्ड रिवोल्ट आफ 1857, पृ० 74 75।

इनसे बचना चाहिए। हदीस में कहा गया है कि कयामत के दिन चित्रकार को घोर नरक में स्थान प्राप्त होगा, क्योंकि वह अपनी बनायी हुई तस्वीरों में प्राण संचार न कर सकेगा। कुरान तथा हदीस की इस व्याख्या के कारण कट्टर मुसलमानों ने चित्रकला का विरोध किया, फिर भी इस्लामी देशों में भी इसका अन्त न हो सका।

सोलहवीं शताब्दी के अन्त में उत्तरी भारत में चित्रकला की प्राचीन परम्पराएं धीरे धीरे लुप्त होती जा रही थी। इसके विपरीत राजसी प्रश्रय के कारण ईरान में चित्रकला की उन्नति हो रही थी। विख्यात चित्रकार बिहजाद की मृत्यु हो गयी थी, किन्तु इसकी कला पर आधारित उसका स्कूल जीवित था। उसके शिष्य आगा मीराक, सुल्तान मुहम्मद तथा मुजफ्फर अली अपनी प्रसिद्धि के शिखर पर थे।[1] ईरान में पुस्तकों को चित्रित करने की कला ने बड़ी उन्नति की थी।

हुमायूं में कलात्मक भावना की कमी नहीं थी। ईरान में वह इन चित्रों से प्रभावित हुआ तथा उसने प्रसिद्ध चित्रकारों के चित्रों को देखा। तबरेज में हुमायूं का परिचय मीर सयिद अली नामक एक युवक चित्रकार से हुआ। मीर सयिद अली का पिता मीर मंसूर बदख्शां का निवासी था। वह कुशल चित्रकार था। तबरेज में बिहजाद के निर्देशन में चित्रकला की सूचना पाकर वह भी अपने पुत्र के साथ बदख्शां से तबरेज आ गया। यहां मीर सयिद अली ने चित्रकला में विशेषता प्राप्त की। यह कवि भी था तथा 'जुदाई' के उपनाम से कविता लिखता था।[2] तबरेज में हुमायूं की मुलाकात ख्वाजा अब्दुस्समद नामक एक अन्य चित्रकार से हुई। यह शिराज के गवर्नर शाहशुजा के वजीर ख्वाजा निजामुलमुल्क का पुत्र था। अब्दुस्समद उस समय चित्रकला तथा सुलेख के लिए प्रसिद्ध हो चुका था। हुमायूं ने उसे अपनी सेवा स्वीकार करने के लिए आमन्त्रित किया। उस समय हुमायूं के पास कोई प्रदेश नहीं था तथा वह स्वयं ईरान के शाह पर निर्भर था। इसी कारण अब्दुस्समद ने उस समय हुमायूं का निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया।

कुछ दिन बाद जब हुमायूं ने काबुल पर अधिकार कर लिया तो अब्दुस्समद तथा मीर सयिद अली ने सन 1550 ई० में हुमायूं की सेवा स्वीकार कर ली।[3] इन दोनों चित्रकारों द्वारा हुमायूं की सेवा स्वीकार करना मुगल काल के चित्रकला के इतिहास का स्वर्ण दिवस था। मुगल चित्रकला का इतिहास उसी दिन से प्रारम्भ होता है।

---

1 ब्राउन, पर्सी इण्डियन पेंटिंग अण्डर दि मुगल्स पृ० 52।

2 वही, पृ० 53।

3 अकबरनामा, I, पृ० 292।

हुमायूँ तथा उसके पुत्र अकबर ने इन कलाकारों से चित्रकारी सीखना भी प्रारम्भ किया।[1] मुग़ल सम्राटों की चित्रकला में दिलचस्पी का यह स्पष्ट प्रमाण है। हुमायूँ ने इन चित्रकारों को फ़ारसी की प्रसिद्ध पुस्तक 'दस्तान अमीर हमजा' को चित्रित करने की आज्ञा दी। प्रारम्भिक योजना के अनुसार सौ सौ चित्रों की बारह जिल्दों में पुस्तक को चित्रित करना था। अर्थात् कुल 12,00 चित्र बनाने थे। सात वर्ष के परिश्रम के पश्चात इन लोगों ने चार जिल्दें तयार कीं।[2] ये चित्र कपड़े पर बने हैं। चित्र बड़े आकार (22 × 28 ¼) के हैं। इन चित्रों में ईरानी विशेषतया बिहजाद की शैली का स्पष्ट प्रभाव है। फिर भी इसमें भारतीयता की झलक स्पष्ट है।[3] इन चित्रों को दोनों चित्रकारों ने अन्य सहयोगियों की सहायता से बनाया। इस कार्य के प्रारम्भ होने के कुछ ही दिनों बाद हुमायूँ ने भारतीय अभियान की तयारी प्रारम्भ की जिससे वह इस कार्य की निगरानी न कर सका। फिर भी इसका कार्य चलता रहा। हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात अकबर ने इस कार्य को पूरा किया। दोनों चित्रकारों ने अकबर के समय में प्रसिद्धि प्राप्त की तथा मुग़ल चित्रकला के प्रारम्भकर्त्ता बने।

अकबर ने अब्दुस्समद को 'शीरीं कलम' (मधुर कलम) की उपाधि दी तथा अपने राजत्व के बाइसवें वर्ष में इसे फतहपुर सीकरी की शाही टकसाल का अधिकारी भी नियुक्त किया और बाद में राजत्व के 31वें वर्ष में उसे दीवान बनाकर मुल्तान भेजा। अब्दुस्समद को चार सौ का मनसब प्राप्त था, किन्तु प्रभाव तथा सम्मान की दृष्टि से इसका विशेष स्थान था। यह सुलेख लिखने में अद्वितीय था।

---

1 ब्राउन, इण्डियन पेंटिंग अण्डर दि मुग़ल्स, पृ० 54।

2 वही, आइन अकबरी, 1, पृ० 115।

3 "It is interesting to find even in this early school—called the school of Humayun by Clarke—an unmistakable Indian feeling The manner of the Timuride styles is dominant in the delineation of landscape and architecture in the rendering of clouds, rocks, water trees and animals, but in the selection of recial types, drapery and attitudes there is greater freedm and in grouping still more' ताराचन्द इन्फ्लूएन्स आफ इस्लाम आन इण्डियन कल्चर, पृ० 270।

There is something in this work which is not safavid, in some way it is reminiscent of the Rajput style, vaguely suggestive of an Indian environment ब्राउन, इण्डियन पेंटिंग अण्डर दि मुग़ल्स, पृ० 56।

पोस्त के बीज पर इसने कुरान का पूरा 112वा सूरा लिख दिया था।[1] अकबर के समय के सिक्का पर भी अब्दुस्समद का प्रभाव स्पष्ट रूप स दिखाई देता है।

इस तरह हुमायू न मुगल चित्रकला के विकास का बीजारोपण किया। उसने चित्रकला के विकास की परिस्थिति उपस्थित कर दी थी। अकबर का आश्रय तथा प्रोत्साहन पाकर यह बीज एक छायादार वृक्ष के रूप मे विकसित हुआ।

विद्या प्रेम तथा साहित्यिक रुचि

हुमायू विद्वान था। वह अरबी, फारसी तथा तुर्की भाषा म बात चीत कर सकता था। मुग़ल सम्राटा की मातृभाषा चग़ताई तुर्की थी, किन्तु अपना देश त्यागने के पश्चात् उन्होने धीरे धीरे यह भाषा त्यागकर फारसी भाषा अपना ली थी। फ़ारसी उस समय दक्षिण-पश्चिम एशिया के प्रदेशा म सभ्य लोगो की भाषा समझी जाती थी। सल्तनत काल म राजसी भाषा फारसी थी। मुग़लो को यह वसीयत के रूप म प्राप्त हुई थी। इस तरह फारसी भाषा मुगल अमीरो तथा दरबार की प्रमुख भाषा बन गयी थी। फिर भी मुग़लो न इस समय तक अपनी मातृभाषा का त्याग नही किया था। अवसर मिलन पर वे तुर्की भाषा म बात चीत करते थ। विशेषतया जब व चाहते थे कि कोई अन्य उनकी बात न समझे तो वे तुर्की भाषा म बोलते थे। हुमायू भी ऐसे अवसरो पर इस भाषा का प्रयाग करता था। सन् 1548 ई० म जब कराचा खा समर्पण करने के लिए गले मे तलवार बाधकर उसके सामने उपस्थित किया गया तो हुमायू ने तुर्की भाषा मे कहा कि "सैनिक अपने जीवन-काल म इस प्रकार की भूले करते ही रहते हैं" तथा उसे क्षमा करने का आदेश दिया।[2] इसी तरह कामरान के समर्पण करने पर (22 अगस्त 1548 ई०) जब वह दरबार म उपस्थित किया गया तो वह सम्राट से हटकर बैठा। हुमायू ने तुर्की भाषा म कहा "और निकट बैठो।"[3] इस तरह हुमायू ने तुर्की भाषा के ज्ञान का सदुपयोग अन्य अवसरो पर भी किया।[4]

हुमायू अरबी भाषा भी जानता था। जौहर तथा नफायसुल मआसिर के लेखक अलाउद्दौला बिन यह्या कजवीनी उसके कुरान पढ़ने तथा स्मृति स कुरान के

---

1 आईने अकबरी, ब्लाखमैन, पृ० 555।

2 अकबरनामा, 1, पृ० 280।

3 वही, पृ० 281।

4 अन्य उदाहरणो के लिए देखिए गनी-ए हिस्ट्री आफ पर्सियन लैंग्वेज एण्ड लिटरेचर एट दि मुग़ल कोर्ट, 2, हुमायू, पृ० 79।

वाक्यों का भिन्न भिन्न अवसरो पर उद्धरण करने का उल्लेख करते है। वह नक्षत्र तथा ज्योतिष शास्त्र का विद्वान् था। सम्भव है उसे अरबी भाषा से इसम सहायता मिली हो।

हुमायू को फारसी भाषा का बहुत ही अच्छा ज्ञान था। वह इस भाषा म सरलता से बातचीत करता था। ईरान म उसको इस ज्ञान से बडी सुविधा हुई।

वह फारसी म कविता भी लिखता था। अबुल फजल लिखता है कि उस कविता एव कवियो म रुचि थी। उसम कविता करने की बडी योग्यता थी। समय-समय पर वह आध्यात्मिक तथा सासारिक विषयो पर कविता किया करता था। उसका दीवान अकबर के पुस्तकालय म था,[1] जो अब प्राप्त है। इसके अतिरिक्त उसकी कुछ कविताओ का अबुल फजल तथा अन्य लेखको ने अपनी पुस्तको मे उद्धृत किया है। इन कविताओ मे प्रेम तथा रहस्यवाद की कविताए भी हैं। उसकी कविताए स्पष्ट, सक्षिप्त तथा सुगठित है। उसकी कविताओ मे उसकी गजले तथा रुबाइया सबसे अच्छी समझी जाती हैं।[2] उसमे अन्य कवियो की कविताओ को सुधारने की भी योग्यता थी। बदायूनी ने इस तरह के उदाहरण दिये है,[3] जिनसे उसकी योग्यता तथा बुद्धि का पता चलता है। कुछ कविताओ मे उसने अपना उपनाम हुमाय दिया है। हुमायू की लगभग सभी रचनाए फारसी भाषा मे है। उसके कुछ पत्र तथा केवल एक कविता तुर्की भाषा म बतायी जाती है।[4]

हुमायू केवल कवि ही नही वरन कवियो तथा विद्वानो का पोषक तथा आश्रयदाता भी था। उसकी रुचि तथा प्रोत्साहन से प्रभावित होकर ईरान, तुर्किस्तान, बुखारा तथा समरकन्द के कवि अपना देश छोडकर उसके दरबार की शोभा बढाते थे। बुखारा के जाही यजमान तथा मावराउन्नहर के हैराती काबुल म ही उसके दरबार म आ गये थे। मौलाना अब्दुल बाकी सद्र तुर्किस्तानी, मीर अब्दुल हई बुखारी, ख्वाजा हिजरी जामी, मौलाना बसमी, मुल्ला मुहम्मद सालीह तथा मुल्ला जान मुहम्मद उसके दूसरे भारतीय अभियान मे उसके साथ आये। मीर अब्दुल-लतीफ कजवीनी, मौलाना इलियास, मौलाना अब्दुल कासिम अस्तराबादी, ख्वाजा

---

1 अकबरनामा, 1 पृ० 368, हादी हसन दि यूनिक दीवान आफ हुमायू। देखिए जनरल बिहार एण्ड उडीसा रिसर्च सोसाइटी, 1939 ई०, पृ० 71, इश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 371, टिप्पणी 2।

2 गनी, हिस्ट्री आफ पर्सियन लैंगवेज, 2, पृ० 10 23।

3 मुन्तखबुत्तवारीख 1, पृ० 478 81।

4 गनी, हिस्ट्री आफ पर्सियन लगवेज, पृ० 6।

अयब, शेख अबुल वाहिद फारिगी शिराजी तथा शौकी तबरीजी ईरान के सफवी दरबार तथा वहा के नगर से आये थे।[1]

सीदी अली रेईस हुमायू के कविता प्रेम की प्रशसा करता है। वह लिखता है कि हुमायू का शाही तीरन्दाज खुशहाल भी इन कवि गोष्ठिया म भाग लेता था।[2] शेख अमानुल्ला पानीपती हुमायू का प्रमुख कवि था। वह सूफी तथा धमशास्त्री भी था। इसने हुमायू की प्रशसा म अनेक कसीदा की रचना की। उसकी कविताए मधुरता, दद तथा सरलता के लिए प्रसिद्ध थीं। मौलाना कासिम शाही विद्वान् तथा कवि था। हुमायू की प्रशसा म उसने भी कसीदे, मसनवी तथा ग़जलो की रचना की। वह कामरान के साथ हज्ज को भी गया था। वहा स वह पुन लौट आया। हुमायू तथा कामरान की मृत्यु पर उसने बडे ही सुन्दर तिथिबधा (Chronograms) की रचना की। मौलाना जुनूनी बदख्शा का प्रसिद्ध कवि था। हुमायू की बदख्शा विजय के पश्चात् उसन उसकी सेवा स्वीकार की। हुमायू की प्रशसा म इसम 38 शेरा के एक सुन्दर कसीदे की रचना की। शेख जनुद्दीन खाफी 'वफाई' के उपनाम से कविता करता था। यह बाबर का सद्र रह चुका था। इसन आगरा म यमुना के पार एक मस्जिद तथा एक मदरसा बनवाया था। यह आशु कवि था। इसकी मृत्यु 1533 34 ई० म चुनार के निकट हुइ और वह अपने ही बनवाए हुए मदरसे म दफनाया गया। वफाई का मित्र शेख अबुल वाहिद फारिगी अपनी मीठी वाणी के लिए प्रसिद्ध था। उसकी मृत्यु भी 1533 34 ई० म हुई। वह आगरा म शेख जैन की खानकाह म दफनाया गया। अय प्रमुख कविया म ख्वाजा अयूब, शाह ताहिर हैदर तुनियाई, जाहो यतमान तथा मौलाना नादिरी समरकन्दी प्रमुख हैं।[3]

साहित्य के अतिरिक्त हुमायू को गणित, नक्षत्र शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र तथा इतिहास का भी ज्ञान था। ज्योतिष तथा नक्षत्र शास्त्र मे तो वह दक्ष था। उसके आविष्कार, जिनका ऊपर वणन किया जा चुका है, ज्योतिष तथा नक्षत्र शास्त्रो से प्रभावित थे। अबुल फजल लिखता है कि हुमायू एक वेधशाला का निर्माण करना

---

1 गनी, हिस्ट्री आफ पर्सियन लैंगवेज, पृ० 149 50।

2 बम्ब्रे, दि ट्रेवेल एण्ड एडवचस ऑफ दि टरकिश एडमिरल सीदी अली रेईस, पृ० 49 53।

3 इन कवियो के लिए देखिए गनी, हिस्ट्री आफ पर्सियन लग्वेज, 2, पृ० 55 62 तथा पृ० 149 60, बायजीद, पृ० 176-87, मुन्तखबुत्त-वारीख, 1, पृ० 469 92, ला, प्रोमोशन आफ लर्निंग, पृ० 134।

चाहता था। इसके लिए उसने बहुत से यन्त्रों की व्यवस्था भी कर ली थी तथा कई स्थानों को वेधशाला के लिए चुना भी था।[1] मृत्यु से सम्बन्धित दुर्घटना के पूर्व उसने गणितज्ञों तथा नक्षत्र शास्त्रियों को शुक्र ग्रह का निरीक्षण करने के लिए आमन्त्रित किया था। हुमायूं का विश्वास था कि मनुष्य-जीवन नक्षत्रों द्वारा प्रभावित होता है। इस तरह वह भाग्यवादी था। जब शाह तहमास्प ने उससे कहा कि उसकी दयनीय अवस्था का कारण उसका घमंड था तो उसने उत्तर दिया कि यह सब भाग्य का फल है।

ताजे इज्जत, विसाते निशात, विभागों का विभाजन, वाणों के बारह वर्ग, प्रत्येक दिन के लिए विशेष वस्त्रों का निर्णय इत्यादि नक्षत्रों से बचने के लिए ही थे। फिरिश्ता लिखता है कि हुमायूं ने एक ऐसा ग्लोब तैयार कराया था जिस पर पंचभूत एवं आकाश का वर्गीकरण अंकित था तथा उन्हें भिन्न भिन्न रंगों में रंगा गया था।[2] उसके दरबार में नक्षत्र शास्त्र के भी कई विद्वान् थे। इन विद्वानों में शाह ताहिर दक्खिनी, मौलाना इलियास उल्लेखनीय हैं। मौलाना इलियास ने हुमायूं को नक्षत्र शास्त्र की शिक्षा दी थी। वह अपने विषय का ज्ञाता था तथा वेधशाला स्थापित करने का भी विशेषज्ञ था।[3]

कवियों तथा नक्षत्र शास्त्रियों के अतिरिक्त अन्य विषयों के विद्वान् भी उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे। मीर अब्दुल लतीफ कजवीनी, जिसे काबुल में अकबर का शिक्षक नियुक्त किया गया था, बहुत ही उच्चकोटि का विद्वान था। अपने पिता काजी दह्या की भांति वह भी उच्चकोटि का इतिहासकार था। हुमायूं ने इसे भारत आने के लिए आमन्त्रित किया किन्तु वह सम्राट की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली पहुंचा। इतिहासकार बायजीद, जौहर तथा ख्वान्दमीर उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे।[4] मौलाना मुहम्मद ने 'जवाहिरुल उलूम (विज्ञानों का मणि) की रचना फारसी भाषा में इसी समय में की। इसमें इतिहास, नक्षत्र शास्त्र, गणित, वधक शास्त्र, दर्शन शास्त्र, न्याय शास्त्र, इत्यादि १२० विषयों पर चर्चा है। यह हुमायूं के समय का सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। उस युग में इस तरह के विश्वकोष (इनसाइक्लोपीडिया) की रचना करना बड़े साहस का काम था।[5]

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 368।

2 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 71।

3 गनी हिस्ट्री आफ पर्सियन लग्वेज, 2, पृ० 53।

4 इन इतिहासकारों के लिए इस पुस्तक की भूमिका देखिए।

5 गनी, हिस्ट्री ऑफ पर्सियन लैंग्वेज, 2, पृ० 78 100।

हुमायूं को पुस्तकों से भी प्रेम था। अबुल फजल लिखता है कि ये उसके आध्यात्मिक साथी थे। अभियान तथा यात्राओं में भी पुस्तकालय उसके साथ रहता था।[1] मिरात सिकन्दरी का लेखक लिखता है कि पुस्तकें बराबर हुमायूं के साथ रहती थीं तथा लेखक के पिता को उसकी सेवा में उपस्थित रहकर सदा पुस्तकें पढ़ना पड़ता था। सन् 1548 ई० में तालिकान के युद्ध के पश्चात् जब उसे अपनी सेना की पराजय की सूचना मिली तो उसने पूछा कि उसकी पुस्तकों का क्या हुआ। यह जानकर कि वे सुरक्षित हैं, उसे प्रसन्नता तथा सन्ताप हुआ।[2] कुछ दिन बाद जब किपचाक के युद्ध में खोई हुई पुस्तकों के बक्स प्राप्त हुए, तो उसकी प्रसन्नता की सीमा नहीं थी।[3] दिल्ली पर पुनः अधिकार करने के पश्चात् उसने शेरशाह के विनोद-गृह, शेरमंडल, को पुस्तकालय में परिवर्तित कर दिया जहां से गिरकर उसकी मृत्यु हुई।

हुमायूं के प्रोत्साहन से शिक्षा की भी उन्नति हुई। उसने दिल्ली में एक मदरसा भी स्थापित किया। इस मदरसे का मुख्य शिक्षक शेख हुसेन था।[4] इसके अतिरिक्त लोगों ने व्यक्तिगत मदरसे भी खोले थे।

हुमायूं के धार्मिक विचार

हुमायूं ईश्वरवादी, मुसलमान तथा सुन्नी मत का अनुयायी था। अपने व्यवहार में वह धार्मिक आस्था प्रकट भी करता था। क्षणभर के लिए भी वह बिना वजू किये नहीं रहता था तथा बिना पवित्रता के ईश्वर अथवा मुहम्मद साहब का नाम नहीं लेता था। यदि विवश होकर किसी ऐसे व्यक्ति का नाम लेना पड़ता जिसमें ईश्वर के नाम का कोई भाग भी सम्मिलित हो तो वह, ईश्वर का नाम छोड़कर बाकी नाम से उसे पुकारता था। जैसे अब्दुल्लाह के स्थान पर केवल अब्दुल कहकर बुलाता था। एक बार उसने अब्दुल हई सद्र को अब्दुल कहकर पुकारा। वजू करने के बाद उसने मीर से कहा, 'क्षमा करना, मैंने वजू न किया था। इसे ईश्वर का नाम

---

1 अकबरनामा, 1, पृ० 136, काउण्ट आफ नोअर, दि एम्परर अकबर अंग्रेजी अनुवाद पृ० 136, जहांगीर अपनी आत्मकथा में (रोजर्स द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, पृ० 17) हुमायूं के लाइब्रेरियन निजाम का उल्लेख करता है। इसका पुत्र जहांगीर द्वारा सम्मानित हुआ। ला, प्रोमोशन आफ लर्निंग पृ० 132, सूफी, अलमिनहाज, पृ० 51।

2 जौहर, स्टीवर्ट, पृ० 132।

3 अकबरनामा, 1, पृ० 305।

4 ला, प्रोमोशन ऑफ लर्निंग, पृ० 134।

है, अंत तुम्हारा पूरा नाम मैंने न लिया।"[1] इसी प्रकार पत्रों पर 'हुवा' लिखने के स्थान पर दो अलिफ लिखता, जिससे 11 बन जाता। अब्जद से हुवा का जोड भी 11 होता है।[2]

धार्मिक होते हुए भी हुमायू मे कट्टरता नही थी। ईरान मे उसके शिआ मत स्वीकार करने की हम विवेचना कर आये है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह इस्लाम धर्म तो स्वीकार करता था, किन्तु शिआ तथा सुन्नी सम्प्रदायो के भेद स्वीकार नही करता था। यह उदारता उसकी माता माहम बेगम, स्त्री हमीदा बानो तथा उसके स्वयं के स्वभाव के कारण थी। शिआ तथा सुन्नी अमीरो का एक साथ स्वागत करने मे उसे कोई असम्भव बात नही प्रतीत होती थी। एक तरफ जहां उसके साथ अबुल माली जैसे कट्टर सुन्नी थे, वहा बैराम खा जैसे शिआ उसके प्रमुख अमीरो में से थे। उसके भाई तथा मित्र उसकी उदारता के कारण उसे शिआ समझते थे। कन्नौज के युद्ध के पश्चात सब भाई लाहौर मे एकत्र थे। एक दिन हुमायू तथा कामरान कही जा रहे थे। मार्ग मे एक कुत्ता पांव उठाकर एक कब्र पर पेशाब कर रहा था। कामरान ने कहा, 'ऐसा मालूम होता है कि यह कब्रवाला राफजी (शिआ) है।" हुमायू ने इसका उत्तर दिया हां, ज्ञात होता है कि यह कुत्ता भी सुन्नी है।"[3] सम्भव है यह उत्तर कामरान को चिढाने तथा शिआ अमीरो को प्रसन्न करने के लिए दिया गया हो फिर भी इससे यह प्रकट होता है कि वह शिआ सुन्नी मतभेद को पसन्द नही करता था।

ज्योतिष तथा नक्षत्र शास्त्र के अध्ययन तथा धार्मिक विश्वास ने उसे भ्रमभीरु बना दिया था। बदायूनी लिखता है कि घर एवं मस्जिद मे भूलकर भी वह कभी बाया पाव आगे नही रखता था। यदि कोई बाया पाव रख देता तो वह उससे बाया पाव वापस करा कर दाहिना पाव आगे करने को कहता था।[4] हैदर मिर्जा के अनुसार वह मन्त्रो तथा जादू मे भी विश्वास करता था। बिना शकुन निकाले तथा शुभ नक्षत्र का निश्चय हुए वह शुभ कार्य नही प्रारम्भ करता था।

हुमायू के युग मे सूफी सन्तो का प्रभाव बढ रहा था। अवसर मिलने पर वह फकीरो का दर्शन करता था तथा उनसे धार्मिक विषयो पर वार्ता करता था। ईरान

1 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 467, फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 178।

2 मुन्तखबुत्तवारीख, 467 68, 'हुवा' का अर्थ वह या ईश्वर है। अब्जद के अनुसार हे पाच तथा वाव 6 के बराबर है अर्थात दोनो का जोड 11 हुआ।

3 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 179।

4 मुन्तखबुत्तवारीख 1, पृ० 468।

5 तारीखे रशीदी, तथा रास, पृ० 399।

में जिस नगर या स्थान में वह पहुंचता था वहां के प्रमुख दरगाहों, मकबरों इत्यादि का दर्शन करता था। उसकी कविताओं पर भी सूफी प्रभाव प्रकट होता है। भारतीय अभियान के पूर्व उसने सूफियों की तरह मांस न खाने की प्रतिज्ञा की थी। वह मौलवियों तथा सन्तों के साथ वार्ता करने में आनन्द लेता था। साधारणतया रात्रि का अन्तिम पहर तथा कभी-कभी पूरी रात उनके साथ धार्मिक विचार-विमर्श करने में व्यतीत कर देता था।[1]

समकालीन सूफी सन्तों में कुछ के साथ हुमायूं का निकट सम्बन्ध था। वह शेख मुहम्मद गौस तथा उनके बड़े भाई शेख बहलूल का आदर तथा सम्मान करता था। शेख गौस अपने समय के प्रमुख सन्त थे। ये सूफियों के शत्तारी सिलसिला के सूफी सन्त थे। इन्होंने बारह वर्ष तक चुनार की पहाड़ियों में तपस्या की थी।[2] बाद में इन्होंने ग्वालियर में अपनी कुटी बनायी। हिन्दाल के विद्रोह के समय हुमायूं ने इनके बड़े भाई बहलूल को हिन्दाल को समझाने के लिए बंगाल से आगरा भेजा। दुर्भाग्यवश शेख बहलूल हिन्दाल द्वारा मार डाला गया। हुमायूं के निष्कासन के पश्चात शेख गौस गुजरात चले गये। इससे हुमायूं को बड़ा सन्तोष हुआ। दोनों में पत्र व्यवहार होता रहता था।[3]

अपनी उदारता के कारण ही हुमायूं ने हिन्दुओं के प्रति कट्टरता की नीति नहीं अपनायी। हिन्दुओं के विरुद्ध उसने धर्मयुद्ध की घोषणा नहीं की। धर्म के नाम पर मन्दिरों के ध्वंस करने अथवा धर्म-परिवर्तन की आज्ञाएं भी उसने नहीं दी। इसके विपरीत कुछ राजपूत शासकों ने कठिन परिस्थिति में उसकी सहायता की। चौसा के युद्ध के पश्चात राजा वीरभान ने उसकी बड़ी सहायता की। मालदेव उसे सहायता देना चाहता था किन्तु वह इसका उपयोग न कर सका। जोधपुर से लौटकर उसे कहीं शरण नहीं मिल रही थी। उस समय अमरकोट के राजा ने उसे तथा उसके परिवार को शरण दी। इस तरह हुमायूं का हिन्दुओं के साथ अच्छा सम्बन्ध रहा। राजनीति पर धार्मिक प्रभाव डालने का उसने कोई सक्रिय कदम नहीं उठाया।[4]

सैनिक योग्यता

मध्य युग के सम्राट के लिए सैनिक निपुणता आवश्यक थी। हुमायूं की

1 मुन्तखबुत्तवारीख 1, पृ० 467, तबकात अकबरी, डे, 2, पृ० 138।

2 बील, ओरिएण्टल बायोग्राफिकल डिक्शनरी, पृ० 187।

3 निजामी दि शत्तारी सेण्टस एण्ड देयर एटीट्यूड टुवर्ड्स दि स्टेट, मेडीवल इण्डिया क्वाटरली, जिल्द 1, नम्बर 2, अक्तूबर 1950 ई० पृ० 62 65।

4 राय चौधरी, दि स्टेट एण्ड रिलीजन इन मुगल इण्डिया, पृ० 188।

कठिनाइयों तथा समस्याओं में एक उच्चकोटि के सैनिक की आवश्यकता थी। हुमायूं ने अपने जीवन के प्रारम्भिक काल में पानीपत तथा खानवा की लड़ाइयों में युद्ध का अनुभव प्राप्त किया था। आशा थी कि वह अपने को उच्चकोटि का सैनिक प्रदर्शित करेगा, किन्तु दुर्भाग्यवश वह इस दिशा में प्रसिद्धि न प्राप्त कर सका। हिन्दुस्तान में बाबर की मृत्यु के पश्चात उसने एक भी ऐसा युद्ध नहीं जीता जो उसकी सैनिक योग्यता का लोहा जमा देता। बहादुर शाह से उसकी एक भी खुलकर लड़ाई नहीं हुई। शेर खां से जो दो लड़ाइयां हुईं वह उनमें पराजित हुआ। माछीवारा की लड़ाई में वह उपस्थित नहीं था तथा सरहिन्द के युद्ध की विजय का श्रेय बैराम खां को है।

उसकी सैनिक कमजोरी के कई कारण थे। वास्तव में हुमायूं शान्ति का सम्राट था। युद्ध में वह शत्रु की शक्ति का मूल्यांकन नहीं कर पाता था। बंगाल अभियान में चुनार के दुर्ग को विजय करने में उसे 6 महीने लग गये। वहां से लौटते समय चौसा तथा कन्नौज के युद्धों में उसने कुछ सामरिक भूलें की जिनका उल्लेख किया जा चुका है। इसी तरह बहादुर शाह के विरुद्ध मन्दसौर में भी उसने सैनिक चतुरता नहीं दिखायी। युद्ध में शत्रु पर तत्काल आक्रमण करने की जो आवश्यकता पड़ती है, हुमायूं में उस गुण का नितान्त अभाव था। जिस समय बहादुर शाह मन्दसौर से भाग रहा था वह अपने सैनिकों के साथ उसे देखता रहा। चौसा के युद्ध में भी तत्काल आक्रमण करने के बजाय उसने समय नष्ट किया। युद्ध में उत्साह के साथ सम्पूर्ण नेतृत्व ग्रहण करने में भी वह हिचकता था, कन्नौज के युद्ध का उत्तरदायित्व हैदर मिर्ज़ा के और माछीवारा तथा सरहिन्द का बैराम खां के हाथ में था। आनन्दप्रिय व्यक्ति होने के कारण युद्ध की कठिनाइयों से वह भागता था। युद्धकाल में भी आमोद प्रमोद का अवसर मिलने पर वह युद्ध को भूलकर मनोरंजन में समय व्यतीत करने लगता था।

निष्कासन के पश्चात् हुमायूं में कुछ सक्रियता तथा बुद्धि आयी। अफगानिस्तान तथा बदख्शां के सैनिक कार्यों से उसके इस परिवर्तन की हमें स्पष्ट झलक मिलती है किन्तु अधेड़ अवस्था में प्रारम्भिक जीवन के दुर्व्यसनों को उखाड़ फेंकना असम्भव था। यदि वह कुछ दिन जीवित रहता तो सम्भव है उसकी परिवर्तित योग्यता का उदाहरण मिलता।

शेरशाह द्वारा उसकी पराजय से उसकी सैनिक अयोग्यता का ढिंढोरा पीटना हमारी भूल होगी। शेरशाह चतुर, धूर्त तथा बुद्धिमान सेनानायक था। जैसा डॉ० कानूनगो लिखते हैं, उसमें शेर तथा लोमड़ी के सम्मिलित गुण थे।[1] वह अपनी

1. डॉ० कानूनगो, शेरशाह, पृ० 408।

बराबरी के शत्रुओ से लोमडी की चतुरता तथा कमजोरो पर शेर का दंभ तथा गरज प्रदर्शित करता था। वह साधारण परिवार का था तथा उसका उत्कर्ष उसकी अपनी बुद्धि तथा कार्यशीलता का परिणाम था। उस साधारण सैनिक से सम्राट बनना था इसलिए वह सैनिको के साथ धूप म खाइया भी खोद सकता था तथा उनके कन्धे से कन्धा मिलाकर लड सकता था। तारीखे दाऊदी का लेखक लिखता है कि शेरशाह स्वय अपने सामने घोडा पर दाग लगवाता था। दाग के समय घोडा के बालो तथा चमडे के जलने से बू उठती थी जिससे बचने के लिए उसकी नाक के पास गुलाब जल से भीगा रूमाल रखा जाता था। जब उससे कहा गया कि बू से बचने के लिए घोडा को कुछ दूरी पर दाग लगाया जाय तो उसने इनकार कर दिया। जब हुमायू को इसकी सूचना दी गयी तो उसने उत्तर दिया कि "शेर खा ऐसा व्यवहार कर रहा है जैसा अन्य किसी सम्राट ने नही किया। वह अब भी साधारण सिपाही की तरह व्यवहार कर रहा है।" इस घटना तथा हुमायू के उत्तर से दोनो व्यक्तियो का भेद समझने म हम सहायता मिलती है। हुमायू सम्राट का पुत्र तथा स्वय सम्राट था। वह इस बात को कभी नही भूलना चाहता था। शेरशाह जैसे व्यक्ति से युद्ध म सफलता पाना, विशेषतया जब मुगल अमीरो का जोश ठण्डा हो गया था तथा अफगानो म राष्ट्रीय जागरण प्रारम्भ हो गया था, सरल नही था।

हुमायू का सबसे बडा सैनिक गुण उसका साहस था। चौसा के युद्ध के पश्चात् उसने शेरशाह से युद्ध करने मे भय नही प्रदर्शित किया। साथियो, सम्बन्धियो सभी ने उसका साथ छोड दिया, रेगिस्तान तथा बरफ से ढके पर्वतो म उसे अनेक कष्ट सहन पडे, किन्तु उसने हिम्मत नही हारी। अपनी सैनिक शक्ति से ही उसने काबुल, कन्धार तथा हिन्दुस्तान के अपने खोये राज्य को पुन प्राप्त किया। इस सफलता ने उसकी पिछली सभी सैनिक भूलो तथा त्रुटियो को धो दिया।

हुमायू की पत्निया

हुमायू की आठ पत्नियो का उल्लेख मिलता है। सम्भव है उसकी अन्य पत्निया भी रही हो। इनमे तीन—बेगा बेगम, हमीदा बानो तथा माहे चूचक बेगम—महत्त्वपूर्ण है। बेगा बेगम से हुमायू का विवाह उसकी युवावस्था म बाबर के जीवन काल मे हुआ था। उसके पुत्र अलअमान के जन्म तथा उसके नामकरण के सम्बन्ध म बाबर के पत्र का उल्लेख किया जा चुका है। वह मुहफट थी और सबके सामने हुमायू से शिकायत करने म भयभीत नही हुई। बगाल अभियान म वह हुमायू के साथ थी। उसकी बहन का विवाह जाहिद बेग से हुआ था। जाहिद बेग ने हुमायू को नाराज कर दिया। बेगा बेगम की प्रार्थना पर भी वह क्षमा नही किया गया। चौसा के युद्ध मे बेगा बेगम अफगानो द्वारा बन्दी बनायी गयी तथा हुमायू के पास

वापस भेज दी गयी। हमीदा बानो से हुमायू क विवाह के पश्चात बेगा बेगम का महत्त्व कम हो गया। हुमायू द्वारा हि दुस्तान पर आक्रमण के समय वह काबुल म थी। हुमायू की मृत्यु के पश्चात अ य स्त्रिया के साथ वह भी 1557 ई० म भारत आयी। 1564 65 ई० मे वह हज्ज के लिए गयी और वहा स तीन वप बाद लौटी। यह हाजी बेगम भी कहलाती है। उसन ही हुमाय के मकवरे का निमाण कराया। 1581 ई० म उसकी मृत्यु हुई। अकबर हाजी बेगम का अपनी मा की भाति आदर करता था।[1]

हुमायू की दूसरी पत्नी हमीदा बानो थी। उसके वश तथा विवाह का वणन किया जा चुका है। यह अकबर की माता थी। यह पढी लिखी विदुषी तथा बुद्धिमती थी। *ईरान म हुमायू को हमीदा बानो से बडी सहायता मिली।* हुमायू क भारतीय अभियान के समय वह भी काबुल म थी। हुमायू की मृत्यु के पश्चात् 1557 ई० म अकबर के शासन काल म वह भारत आयी। लगभग 30 वप की अवस्था म ही वह विधवा हो गयी। इसका अधिकतर जीवन अपन पुत्र अकबर के राजत्व काल म व्यतीत हुआ। अपन विवाह के 63 वप बाद 1604 ई० म सतहत्तर वप की अवस्था मे इसकी मृत्यु हुइ।

माह चूचक बेगम स हुमायू ने 1546 ई० मे विवाह किया। इसके चार पुत्रिया तथा दो पुत्र—मुहम्मद हकीम और फरुखफाल—थ। शाखदान म हुमायू की बीमारी मे इसने हुमायू की बडी सेवा की। अकबर के सिंहासनारूढ होने पर यह अपने पुत्र मिर्जा हकीम के साथ काबुल म ही रही। उसके नाबालिग्र होन के कारण वह उसकी सरक्षिका थी। वहा के शासन मे उसे बडी कठिनाइया हुइ। 1564 ई० म अबुल माली द्वारा वह मार डाली गयी।[3]

हुमायू की एक अन्य पत्नी गुनवार बीबी के बख्शी बानो बेगम नामक एक लडकी थी। इसका विवाह सुलेमान मिर्जा के पुत्र इब्राहीम मिर्जा स हुआ और 1560 ई० म उसकी मृत्यु के पश्चात मिर्जा शरफुद्दीन हुसन अहरारी से इसका पुन विवाह हुआ[4] चाद बीबी तथा शाद बीबी नामक हुमायू की दो स्त्रिया चौसा के युद्ध मे खो गयी, मारी गयी या डूब गयी। निजामुद्दीन खलीफा की पुत्री गुलबग

1 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज पृ० 218 20।

2 वही, प० 237 40, हमीदा बानो अपन विवाह के समय (29 अगस्त 1541 ई०) चौदह वप की थी। इससे कदाचित उसका ज म 1527 ई० म हुआ होगा।

3 *वही, प० 260, आईने अकबरी, 1, पृ० 333, 339।*

4 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज प० 235, बनर्जी, हुमायू 2, प० 39।

बेगम बलरास से हुमायू का विवाह चौसा की लडाई के पूव हुआ। हुमायू से विवाह करने के पूर्व 1524 ई० मे उसका विवाह मीर शाह हुसेन अरगून से हुआ था, किन्तु बाद मे दोनो अलग हो गये। गुलबग बेगम सिंध म हुमायू के साथ थी।[1] खाजग यसावल की पुत्री, मेवा जान, गुलबदन की सेविका थी। यह देखन म अच्छी थी। माहम बेगम के कहने से हुमायू ने इससे विवाह किया।[2]

विलासी प्रकृति का होने पर भी हुमायू अपने राजनीतिक कार्यों म किसी भी स्त्री से प्रभावित नही था। य स्त्रिया केवल उसके मनोरजन का साधन थी।

व्यक्तित्व तथा स्वभाव

हुमायू अच्छे डीलडौल तथा गेहुए रग का आकपक व्यक्ति था।[3] साधारणतया उसका स्वास्थ्य अच्छा रहता था। उसका बाल्यकाल उसक पिता के सुयोग्य सरक्षण मे व्यतीत हुआ था। प्रारम्भ से ही उसे शिक्षित तथा शासक के सम्पूण गुणो स पूण बनान का प्रयत्न किया गया। उसका प्रारम्भिक जीवन सुख तथा आनन्द म व्यतीत हुआ था। एक बडे पिता का पुत्र होने के कारण कठिनाइयो का अनुभव, जो मनुष्य को प्रत्येक परिस्थिति के लिए तैयार करता है, उसे प्राप्त न हो सका। वह स्वभाव से आनन्दप्रिय तथा विनोदी था। प्रकृति से वह नेक था। जहा तक सम्भव होता वह अपशब्द का प्रयोग नही करता था। किसी व्यक्ति से रुष्ट होन पर वह उस व्यक्ति को केवल 'मूख' कहता था।[4] वह स्नेही था तथा अपन भाइयो, बहनो तथा अन्य सम्बन्धियो के प्रति अपार दया तथा प्रेम प्रदर्शित करता था। भाइयो तथा सम्बन्धियो के नीच काय करने पर भी वह उन्हे सदा क्षमा करन को तैयार रहता था। कामरान की अक्षम्य क्रूरता दुष्टता तथा नीचता पर भी वह उसे मृत्यु-दण्ड देने को तैयार नहीं था। उसे अन्धा बनाये जाने के पश्चात् उससे मिलने पर वह फूटफूटकर रो पडा। अपने पिता के प्रति उसकी अपार श्रद्धा थी और अनेक कष्ट सहकर भी उसने, अपने भाइयो के प्रति सद्व्यवहार करने की, उसकी आज्ञा का पालन किया।

गुलबदन बेगम उसकी दयालुता तथा प्रेम की सराहना करती हुई लिखती है कि माहम की मृत्यु के पश्चात हुमायू के प्रेम के कारण ही वह अपने का अनाथ नही समझती थी। हुमाय अपनी सभी स्त्रियो का आदर करता था। दीन पनाह

1 गुलबदन, हुमायूनामा, बेवरिज पृ० 230।

2 वही, प० 112।

3 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, प० 243।

4 मुन्तखबुत्तवारीख 1, पृ० 468।

के उत्सव के समय बेगा बेगम की शिकायत तथा हुमायू के उत्तर से यह प्रतीत होता है कि हुमायू को जनानखाने की बडी तथा बूढ़ी स्त्रियों का भी ध्यान रहता था।

हुमायू को धन का लोभ नही था तथा उसने धन संचय करने का प्रयत्न नही किया। बदायूनी लिखता है कि वह इतना बडा दानी था कि सम्पूर्ण भारत का राजस्व भी उसके दान के लिए पूरा नही था।[1] दावतो तथा जश्नो में वह बहुत धन बरबाद करता था। ख्वान्दमीर लिखता है कि अपने 28वें जन्म दिन पर वह सोने से तौला गया तथा सम्पूर्ण धन जो लगभग 15,000 सिक्को के बराबर था, लोगो मे वितरित कर दिया गया।[2] उसकी इन आदतो का परिणाम यह हुआ कि उसके पास अपने व्यय के लिए भी धन न रह गया। निष्कासन के अवसर पर तो उसके पास धन की इतनी कमी हो गयी कि उसे यादगार नासिर तथा अन्य अमीरो से ब्याज पर धन उधार लेना पडा। इस व्यक्ति ने बाबर के जीवन काल में दिल्ली का राजकीय कोष क्यो लूटा? यह धन के लोभ के कारण नही बल्कि अन्य कारणो से था।

चारित्रिक दोष

प्रत्येक व्यक्ति का उत्थान तथा पतन उसके गुण दोष तथा परिस्थितिया पर निर्भर करते हैं। हुमायू के जीवन की घटनाओ तथा गुणो का वर्णन किया जा चुका है। अब हम उसके चरित्र के दोषो की तरफ दृष्टि डालें जो उसकी असफलताओ के लिए उत्तरदायी थे। स्वभाव से हुमायू आलसी था तथा साथ ही उसमे उत्तर-दायित्वहीनता भी थी। इन दोनो दुर्गुणो ने मिलकर कई बार कठिन परिस्थितिया उपस्थित की। हुमायू का मन कठिन कार्य से मानो दूर भागता था। जहा तक सम्भव होता वह कठिनाइयो को टालता रहता था। बाबर अपनी आत्मकथा मे शिकायत करता है कि भारत के अन्तिम आक्रमण के समय हुमायू समय से नही पहुचा। गुजरात अभियान मे उसका सारगपुर रुकना, गुजरात के विद्रोह के समय निकट रहने पर भी सहायता न करना, गुजरात अभियान से लौटकर आगरा में व्यर्थ समय नष्ट करना, बगाल अभियान मे राज्य कार्य भूलकर रुके रहना, चौसा तथा कन्नौज के युद्ध म युद्ध की प्रतीक्षा करना, इत्यादि उसके इस दोष के ज्वलन्त उदाहरण हैं। सबसे अधिक शर्म की बात तो तब हुई जब ईरान के शाह से विदा के पश्चात् भी वह कजवीन मे पडा रहा तथा शाह को उसे जबरदस्ती ईरान से भगाना पडा। आलसी स्वभाव के ही कारण हुमायू युद्ध मे तथा अन्य अवसरो पर तत्काल निश्चय नही कर पाता था। जिससे शत्रु लाभ उठाते थे।

---

1 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 468।
2 ख्वन्दमीर, कानूने हुमायूनी, बेनी प्रसाद, पृ० 76।

कठिन परिस्थितियो मे तत्काल सही निर्णय करना शासक या नेता का प्रमुख गुण है। हुमायू तत्काल निर्णय नही कर पाता था। शेरशाह से संधि तथा युद्ध की समस्याओ मे तत्काल निर्णय कर गुजरात अभियान के पूर्व उसने शेरशाह से चुनार के लिए युद्ध किया और पुनः सन्धि कर ली। गुजरात से लौटकर शेरशाह से युद्ध करने का निश्चय करने मे उसे कई महीने लग गये। बगाल अभियान के समय मनेर मे, चौसा के युद्ध के पूर्व तथा कन्नौज के युद्ध के बाद लाहौर मे भी संधि-वार्ता चलती रही। संधि करके उसने उसे तोड भी दिया, जैसे शेरशाह से मनेर मे तथा बहादुर शाह से माडू मे। कूटनीतिक क्षेत्र मे इसका बुरा प्रभाव पडा।[1]

एक तरफ जहा हुमायू दयालु था दूसरी तरफ वह कभी-कभी ऐसी बर्बर क्रूरता प्रदर्शित करता था कि देखने वाले आश्चर्यचकित रह जाते। माण्डू का हत्याकाड तथा चम्पानीर मे इमाम की हत्या इसके ज्वलन्त उदाहरण है। अपने प्रिय जनो के विरुद्ध दण्ड देने मे वह पक्षपात करता था। इसके परिणामस्वरूप अन्य अमीरो मे वैमनस्य फैल जाता था। धर्म के नाम पर हत्या करने पर भी उसने अबुल माली को दण्ड नही दिया।

अन्धविश्वास हुमायू के जीवन का अग बन गया था। बिना फाल (शकुन) निकाले वह कोई शुभ कार्य नही करता था। कभी कभी आवश्यक कार्य भी अच्छे नक्षत्र के लिए रोक देना पडता था। वह मन्त्रो तथा जादू मे भी विश्वास करता था। ये भावनाए उसे आत्मनिर्भर नही होने देती थी तथा सक्रिय कार्य करने मे रुकावट बन जाती थी।

हुमायू का उर्वर मस्तिष्क योजनाए बनाने मे बडा ही निपुण था। उसकी योजनाए तथा आविष्कार हमे आश्चर्यचकित कर देते है। किन्तु उसकी अधिकतर योजनाए काल्पनिक तथा मनोरजन के लिए थी। उनका प्रशासकीय महत्त्व नही था। यदि हुमायू ने वास्तविक शासन से सम्बन्धित नियम इस लगन से प्रतिपादित किये होते तो उसकी गणना विश्व के प्रमुख शासको मे होती।

हुमायू अपने निकट के लोगो तथा शत्रुओ का ठीक मूल्याकन नही कर पाता था। वह बहादुर शाह तथा शेरशाह की शक्ति का अनुमान न लगा सका। उसके निकट के मनुष्य उसे धोखा देते रहते थे फिर भी वह उनकी बातो पर विश्वास कर उन्हे क्षमा कर देता था। कितनी दुखद तथा आश्चर्यजनक बात थी जब जोधपुर से लौटते समय तरदी बेग ने गर्भवती हमीदा बानो के लिए अपना घोडा देने से इनकार कर दिया। उसकी यह दयालुता एक गुण होने पर भी राजसी कार्यों मे उसकी अनेक कठिनाइयो के लिए उत्तरदायी बनी।[1]

1 ईश्वरी प्रसाद, हुमायू, पृ० 379।

हुमायूँ ने समकालीन विद्वानों तथा धर्म-सम्बन्धी पुरुष भी थे। कुछ बुरे व्यक्तियों जैसे मोल्ला मुहम्मद फर्गली आदि की संगति ने उसे और भी पतला मुख कर दिया। उसकी अत्यन्त ध्यान की आदत भी बढ़ता गया। अपने जीवन के अन्त में उसने इस प्रकार की आदत का त्याग किया, किन्तु इसके पहले ही उसकी मृत्यु हो गयी।

डॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी उसके चरित्र की विवेचना करते हुए लिखते हैं, 'ज्ञात पड़ता है कि हुमायूँ की बुद्धि एकांगी थी जो बिना कारण कोई विचार धारणा के विपरीत होने पर परिवर्तित परिस्थितियों में निर्णय उसके लिए असम्भव हो जाता। वह सभी समस्याओं और स्थितियों में उसकी बहुमुखी गहराई समझे बिना पग उठाता था, क्योंकि सम्भवतः उसे अपनी सामरिक योग्यता का ज्ञान न था। उदाहरणतः गुजरात और बंगाल के सुदूर प्रान्तों पर सैनिक आक्रमण करना उसके लिए नितान्त अनावश्यक था। मालवा और बिहार में अपनी स्थिति पुष्ट करके ही उसको विजय का भार उठाने हाथ में लेना चाहिए था। परन्तु वह एकदम सब भार अपने मार्ग में आ गया जो सम्भव हो उठा रहे थे। उसके राजनीतिक अनुमान भ्रमात्मक होते थे, जिससे यह ज्ञात पड़ता है कि न तो मानव तथा मानव प्रकृति की ओर न राजनीतिक स्थितियों तथा सामरिक समस्याओं का ही वह ठीक पारखी था। कूटनीति और राजनीति में वह न बाबर की बराबरी कर सकता न शेरशाह की ही। अपने व्यक्तिगत गुण और आत्मसम्मान बिना उसने शीघ्र ही खो दिये, उन्हें एक सूत्र में सम्बद्ध करने की योग्यता का उसमें अभाव था। वह उत्तर अपना अधिकार न जमाये रख सका और उसके निकट जाने की उसकी भाग्य तथा राज्य पर भार सिद्ध हुए।'[1]

इतिहास में स्थान

भारतीय इतिहास विशेषतया मुगलकाल के इतिहास में हुमायूँ का क्या स्थान है? कुछ इतिहासकारों ने उसकी प्रशंसा की है तथा कुछ ने उसकी निन्दा। निज़ामुद्दीन अहमद के अनुसार 'उसके स्वच्छ व्यक्तित्व में सम्पूर्ण मानवीय गुण पूर्ण रूप से सुशोभित थे। वीरता एवं पौरुष में वह संसार के सुल्तानों में सर्वश्रेष्ठ था। सारा गुण में पूरे हिन्दुस्तान की आय भी उसके लिए पूरी नहीं होती।" वह उसकी विद्वता, गौरव, कलाकारों एवं गुणवानों के आश्रय दाता तथा धार्मिकता की सराहना करता है।[2] अबुल फज़ल लिखता है कि सम्राट की बुद्धिमत्ता तथा

---

1 त्रिपाठी, राइज एण्ड फॉल, पृ० 111-12।

2 तबकात अकबरी, जे, 2, पृ० 138।

निपुणता के इतने अधिक प्रमाण हैं कि उनकी गिनती नही की जा सकती। वह उसके 'नक्ली' और 'अक्ली' ज्ञान, कविता करने की योग्यता इत्यादि की प्रशंसा करता है।[1] फिरिश्ता उसके ज्ञान, लालित्य एवं सहृदयतापूर्ण स्वभाव, धार्मिकता तथा कविता प्रेम की सराहना करता है।[2] मुल्ला बदायूनी लिखता है "सम्राट फिरिश्ता सरीखे गुणो वाला था। वह समस्त बाह्य एवं आध्यात्मिक गुणो से सुशोभित था। ज्योतिष, नक्षत्र शास्त्र एवं समस्त रहस्यमय विद्याओ मे अद्वितीय था।" वह उसकी धार्मिकता, कविता प्रेम इत्यादि की भी सराहना करता है।[3] हुमायू का चाचा हैदर मिर्जा लिखता है "हुमायू बादशाह बाबर के पुत्रो मे ज्येष्ठ, सबसे अधिक योग्य तथा सबसे अधिक प्रतिष्ठित थे। मैंने उनकी जैसी प्रतिभा एवं योग्यता विरले ही मनुष्यो मे देखी है। किन्तु कुछ दुष्ट तथा विलासप्रिय लोगो की संगत के कारण, जिसमे मुल्ला मुहम्मद परगरी एवं उसी के समान अन्य लोग विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, उनमे कुछ बुरी आदतें उत्पन्न हो गयी थी जिसमे एक अफीम का सेवन भी था। पादशाह मे जितने भी दोष उत्पन्न हुए, और जो साधारण लोगो की चर्चा का विषय बने हुए है, इसी बुरी आदत के कारण है। इसके बावजूद उसमे उत्कृष्ट कोटि के गुण थे। वे युद्ध मे बहादुर, जश्नो मे मस्त तथा बहुत ही दयालु थे। संक्षेप मे वे प्रतिष्ठित सम्राट थे और अपूर्व वैभव तथा ऐश्वर्य का पालन करते थे।"[4]

आधुनिक पाश्चात्य इतिहासकारो मे कुछ ने हुमायू की कटु आलोचना की है। असकिन लिखता है कि यद्यपि हुमायू वीर, अच्छे स्वभाव वाला, उदार तथा विद्या से प्रेम करने वाला व्यक्ति था, फिर भी उसके सभी गुण उसके दोष की सीमा पर आ जाते थे, जिसके कारण उनका कोई फल नही निकला। उसके मस्तिष्क मे ऐसा ओछापन (असारता) था कि उसके सभी गुणो को समाप्त कर देता था। असकिन का विचार है कि यदि वह कुछ दिन और अपने पिता के सिंहासन पर आसीन रहता तो वह अपने वंश का भारत मे अंतिम सम्राट होता।[5] लेनपूल ने तो अपनी ओजमयी भाषा मे उसके पतन की कहानी को और भी मनोरंजक बना दिया है। वह लिखता है कि हुमायू का चरित्र आकर्षक था, किन्तु उसमे अपना आधिपत्य स्थापित करने की क्षमता न थी। निजी जीवन मे वह एक अच्छा साथी और पक्का

1 अकबरनामा, 1, पृ० 368।

2 फिरिश्ता, ब्रिग्स, 2, पृ० 70-71 तथा 178 80।

3 मुन्तखबुत्तवारीख, 1, पृ० 468।

4 तारीखे रशीदी, ए० तथा रास, पृ० 469।

5 असकिन, 2, पृ० 534 35।

मित्र साबित होता था। उसका सम्पूर्ण जीवन एक शरीफ आदमी का जीवन था, लेकिन राजा के रूप में वह असफल रहा। हुमायूँ का अर्थ है 'भाग्यशाली', लेकिन हुमायूँ जैसा अभागा अन्य राजा न हुआ। उसका अन्त उसके चरित्र के अनुकूल ही था। अगर कहीं भी फिसलकर गिरने की गुंजाइश होती थी तो हुमायूँ कभी न चूकता था। वह सारी जिन्दगी फिसलता रहा और आखिर फिसलकर वह दुनिया से विदा हुआ।[1] मलिसन का कथन है "हुमायूँ वीर, प्रसन्नचित्त, हास्यप्रिय, मन-मोहक साथी, *अत्यधिक शिक्षित, उदार और दयालु होने के कारण स्थायी सिद्धांतों* पर एक राजवंश की स्थापना करने के लिए अपने पिता बाबर से भी कम योग्य था। इन अनेक गुणों के साथ उसमें कई कट्टर दोष भी थे। वह चंचल, विचारहीन तथा अस्थिर था। उसे कर्तव्य की कोई बलवती भावना अनुप्रेरित नहीं करती थी। उसकी उदारता अपव्ययिता में तथा अनुराग दुर्बलता में परिवर्तित हो जाता था। उसमें किसी एक दिशा में कुछ समय के लिए पूर्ण रूप से अपनी शक्तियों को केंद्रित करने की क्षमता नहीं थी, और इसी प्रकार के विस्तार में कानून बनाने की न उसमें प्रतिभा थी, न रुचि ही। इसलिए जो साम्राज्य उसका पिता विरासत में छोड़ गया था, उसको सुसंगठित तथा सुदृढ़ करने में वह सर्वथा अयोग्य था।'[2]

हैवेल हुमायूँ के प्रति सहृदय होने पर भी लिखता है कि हुमायूँ तैमूर या बाबर की तरह व्यावहारिकवादी या कर्मशील नहीं था। वह दुर्बल तथा दुर्विदग्ध था और राज्य के सभी विषयों में दरबारी ज्योतिषियों की सलाह लिया करता था। इतना सावधान होने पर भी ग्रहों ने हुमायूँ के विरुद्ध ही कार्य किया। व्यक्तिगत साहस का उसमें अभाव नहीं था, किन्तु मुग़ल वंश की पुनः स्थापना का श्रेय उसकी योग्यता को नहीं, बल्कि उसके साथियों की अडिग भक्ति तथा शेरशाह के उत्तराधिकारियों की दुर्बलता को था।[3] एलफिन्स्टन लिखता है हुमायूँ में बुद्धि का अभाव नहीं था, किन्तु शक्ति की कमी थी और यद्यपि वह दुर्व्यसनों तथा उग्र आवेशों से मुक्त था, लेकिन साथ-ही-साथ सिद्धान्तहीन तथा स्नेहशून्य भी था। स्वभाव से वह जितना आरामतलब तथा आलसी था उतना महत्त्वाकांक्षी नहीं, फिर भी बाबर के संरक्षण में उसका पालन-पोषण हुआ था। इसलिए उसे शारीरिक तथा मानसिक *परिश्रम का अभ्यास था। संकटमय परिस्थितियों ने उसने कभी शक्ति की कमी* नहीं दिखलायी और न जन्म तथा पद के लाभों से पूर्णतया अपने को वंचित किया, यद्यपि उसने उनका अधिक-से-अधिक प्रयोग नहीं किया। स्वभाव से न वह क्रूर

1 लेनपूल मिडिवल इण्डिया पृ० 219।

2 मलिसन, अकबर, पृ० 50।

3 हैवेल, आर्यन रूल इन इण्डिया, पृ० 428 29 तथा 448 49।

था और न चालाक और यदि वह यूरोप का एक संवैधानिक राजा हुआ होता तो चार्ल्स द्वितीय से अधिक विश्वासघाती तथा रक्तपिपासु न सिद्ध होता।"[1]

उपर्युक्त विद्वानों के विचारों से पूर्णतया सहमत होना कठिन है। हुमायू के चरित्र को पूर्णतया समझने के लिए कुछ मूलभूत बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है। किसी भी व्यक्ति के कार्यों के मूल्यांकन के लिए उसकी समकालीन परिस्थितियां, कठिनाइयों, चरित्र तथा उसके विरोधी व्यक्तियों का अध्ययन आवश्यक है। महापुरुषों की सफलता में बहुत-कुछ सौभाग्य तथा परिस्थितियां उत्तरदायी होती हैं। किसी भी व्यक्ति को सफलताओं के आधार पर ही उसका मूल्यांकन करना एकांगी होगा। नपोलियन की सैनिक तथा शासकीय योग्यता को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता, किन्तु उसकी पराजय तथा उसका हृदय विदारक अन्त हमारे सम्मुख एक दूसरी ही तस्वीर उपस्थित करता है। यदि हम केवल उसकी भूलों पर ही दृष्टि रखें तो क्या हम नैपोलियन के वास्तविक व्यक्तित्व को समझ सकेंगे? अशोक तथा औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् उनका साम्राज्य विघटित हो गया, अकबर की मृत्यु के कुछ दिनों के पश्चात ही उसकी भारतीय एकता का स्वप्न समाप्त हो गया। गांधीजी अपने जीवन भर हिंदू मुस्लिम एकता के लिए प्रयत्नशील रहे, किन्तु उनके जीवन में ही धर्म के आधार पर देश का विभाजन तथा उनका दुःखद अन्त उनके कार्यों की एक असफल कहानी उपस्थित करता है। इसलिए क्या हम कहेंगे कि अकबर, अशोक या गांधीजी का आदर्श मूर्खतापूर्ण था?

हुमायू शान्ति युग का सम्राट था। यदि उसे अपने पिता द्वारा संगठित साम्राज्य प्राप्त हुआ होता तो उसने अपनी सृजनात्मक शक्ति द्वारा मुगल साम्राज्य का एक ऐसा चित्र निर्मित किया होता जो आदर्श होता। उसका सबसे बड़ा दुर्भाग्य उसकी अपार कठिनाइयां थीं। उसके शत्रु उससे चतुर थे। उसका बहुत-सा समय आन्तरिक तथा बाहरी शत्रुओं से संघर्ष में ही बीत गया। उसकी असफलता का बहुत कुछ उत्तरदायित्व परिस्थितियां, बाबर द्वारा छोड़ी गयी समस्याओं, उसके शत्रुओं की चतुरता तथा प्रबलता, भाइयों तथा सम्बन्धियों का असहयोग तथा विद्रोह, अफगान जागरण तथा उसके कुछ व्यक्तिगत दोषों पर है। अर्सकिन का यह कथन कि यदि हुमायू कुछ दिन और जीवित रह गया होता तो मुगल साम्राज्य का अन्त हो गया होता, हुमायू के प्रति अन्याय है।

हुमायू का जीवन चार कालों में विभाजित हो सकता है—1508 से 1530 ई० तक प्रारम्भिक काल, 1530 से 1540 ई० तक संघर्ष काल, 1540 से 1553 ई० तक (अन्धा बनाये जाने तक) कामरान के निष्कासन तथा संकट का काल, और 1553 से 1555 ई० तक विजय का काल। राज्यारोहण से लेकर

1 एलफिन्स्टन, हिस्ट्री आफ इण्डिया, पृ० 451-71।

चौसा के युद्ध तक कठिनाइया होने पर भी उसके भाग्य ने उसका साथ दिया। उसी के पश्चात् उसके बुरे दिन प्रारम्भ होते हैं। ईरान स सहायता प्राप्त कर पुन कधार पर अधिकार करने के पश्चात (1545 ई०) उसका भाग्योदय होता है, एक के बाद एक उसके शत्रुओ का अन्त होता जाता है और उसका खोया यश तथा साम्राज्य पुन लौट आता है।

वास्तव म शेर खा तथा अकबर के दिव्य प्रकाश से हमारी आखें इतनी चका-चौंध हो जाती है कि हुमायू का प्रकाश धुधला पड जाता है। यदि हम इसे हटा सकें तो हम स्वीकार करेंगे कि मुगल सम्राटो म हुमायू का एक सम्मानित स्थान है।

मुग़ल काल का महत्त्व केवल उसकी विजयो या शासन व्यवस्था के कारण नही, वरच सस्कृति के प्रोत्साहन, विकास और उपयोगी नीतियो पर है। मुग़ल काल साहित्य तथा कला का स्वण युग था। इस समय फतेहपुर सीकरी, आगरा तथा दिल्ली मे ऐसे भवनो का निर्माण हुआ जो आज भी विश्व की आखो को चका-चौंध कर देते हैं। यह काल साहित्य के भिन्न-भिन्न अगो के विकास का युग था। मुगल चित्रकला ने भारतीय चित्रकला की परम्परा को पुन जीवन दान दिया। धार्मिक सहिष्णुता तथा शान्ति की नीतियो का विकास हुआ। हुमाय न मुग़ल काल के इन सभी अगो मे अपना योगदान दिया। वह चित्रकला का जन्मदाता, साहित्य का उच्च कोटि का सरक्षक तथा धार्मिक सहिष्णुता का पथ प्रदशक था। ये मुगल साम्राज्य के स्थायित्व के स्तम्भ थे। मत्यु के पूव उसने सास्कृतिक, साहित्यिक तथा धार्मिक सहिष्णुता का एसा बीजारोपण कर दिया था जिस अकबर ने अपने बुद्धिबल से विकसित कर शक्तिशाली बनाया। हुमायू का योगदान औरगजेब की भाति मुगल साम्राज्य के विघटन का नही वरच स्थायित्व की आधार-शिला है। जब तक धार्मिक सहिष्णुता तथा सास्कृतिक, कलात्मक तथा साहित्यिक विकास म मुगल साम्राज्य का आधार स्वीकृत रहेगा तब तक हुमायू का नाम मुग़ल इतिहास म सदा श्रद्धा से लिया जाएगा।

12 प्रमुख समकालीन सहायक ग्रंथ

साम्राट हुमायू से सम्बंधित अधिकतर ग्रथ फारसी भाषा म हैं। इन प्रमुख ग्रथा म केवल ख्वादमीर का 'कानून हुमायूनी' उसके जीवनकाल म उसकी आज्ञा से लिखी गयी। अय ग्रथ अकबर या जहागीर के समय म लिखे गय। इन सबकी वहद आलोचना देना यहा सम्भव नही है। प्रस्तुत ग्रथ म भिन्न भिन्न स्थाना म इनके प्रमाण दिय गय हैं जिससे इनका मूल्याकन हो सकता है। प्रमुख समकालीन ग्रथा का सक्षिप्त परिचय यहा दिया जा रहा है, जिससे उनके महत्त्व को समझने म सुविधा होगी। इसके अन्त म प्रमुख समकालीन तथा अर्वाचीन ग्रथा की, जिनसे इस पुस्तक रचना म सहायता ली गयी है, सूची दी गयी है।

तुजुके बाबरी (वाक़ियाते बाबरी) अर्थात् बाबर की आत्मकथा—बाबर ने अपनी आत्मकथा अपनी मातृभाषा चग़ताई तुर्की म लिखी। इसम अरबी तथा फारसी भाषा स बहुत-से शब्द लिये गये है। अकबर के काल म अब्दुर्रहीम खानखाना ने इसका फारसी भाषा म अनुवाद तैयार किया। अंग्रेजी तथा अय भाषाओ मे भी इसके अनुवाद हुए हैं। श्रीमती बेवरिज ने, कई पाण्डुलिपियो के आधार पर, टिप्पणियो के साथ मूल पुस्तक का बडा ही उपयोगी अनुवाद किया है। बाबर की आत्मकथा डायरी की भाति लिखी गयी है। पूर्ण ग्रथ अप्राप्य है। बाबर के जीवन के 47 वर्ष 10 महीने के इतिहास म केवल अठारह वर्ष का ही वृत्तान्त हम मिलता है। बाबर ने भिन्न भिन्न अवसरो पर हुमायू से सम्बंधित घटनाओ का वर्णन किया है, जो हुमायू के प्रारम्भिक जीवन तथा चरित्र को समझने के लिए अत्यन्त ही उपयोगी है। हुमायू के जन्म, बाबर का अपने पुत्रा के प्रति प्रेम, भारतीय अभियान मे हुमायू के भाग, उसकी बदख्शा यात्रा तथा वापसी, अपने भाइया के प्रति हुमायू के व्यवहार का आदेश इत्यादि अनेक घटनाओ के लिए बाबरनामा अत्यन्त ही उपयोगी है। बहुत सी घटनाओ से हुमायू के चरित्र के दुर्गुण भी प्रकट होते हैं। दुर्भाग्यवश हुमायू के प्रारम्भिक जीवन से सम्बंधित घटनाए बाबरनामा म इतनी सक्षिप्त है कि बहुत सी बाते, जैसे हुमायू की शिक्षा, उसकी माता का वश परिचय, हुमायू के बदख्शा से वापस आने के कारण, चार पुत्रा म स केवल हुमायू तथा कामरान के भाग के निश्चय किय जाने के ~~रण इत्यादि अनेक बात स्पष्ट नही हैं, जिसस एतिहासि~~ उत्प[illegible] । हुमायू के प्रारम्भिक जीवन के लिए अय कोई[illegible] ~~ी है।

कानूने हुमायूनी—इस ग्रंथ के लेखक गयासुद्दीन मुहम्मद ख्वन्दमीर का जन्म 1474 75 ई० म ईरान म हुआ था। प्रसिद्ध उपन्यासकार मीर ख्वन्दमीर (1433 1498 ई०) इसका नाना था। इसकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने नाना की देख रेख म हुई। 1527 ई० म वह हिरात से कन्धार आया। वहा से 19 सितम्बर 1528 ई० को वह आगरा पहुचा। यहा मुगल सम्राट बाबर द्वारा वह सम्मानित हुआ। गद्दी पर बैठने के पश्चात हुमायू ने उसे 'अमीरुल अख्बार' की उपाधि दी। गुजरात अभियान म (1534 ई०) यह हुमायू के साथ था। वहा से लौटते समय 1535 ई० मे इसकी मृत्यु हो गयी।

ख्वन्दमीर ने अनेक ग्रंथो की रचना की है जिनम हबिबुस्सियार (1523 ई० तक का विश्व इतिहास) बहुत ही प्रसिद्ध है। हुमायू से सम्बन्धित कानूने हुमायूनी के लिखने की आज्ञा सम्राट ने उसे 1530 ई० मे ग्वालियर म दी। इस ग्रंथ को ख्वन्दमीर ने मार्च 1533 ई० म प्रारम्भ किया तथा मई 1534 ई० म इसे समाप्त किया। इस ग्रंथ म लेखक न आलकारिक भाषा का प्रयोग किया है। कानूने हुमायूनी म हुमायू के शासन के प्रारम्भिक तीन वर्षों का ही वर्णन है। इसम हुमायू के सिंहासनारोहण दीनपनाह की स्थापना, उसके द्वारा चलाये गये राजसी नियम, आविष्कार जश्न इत्यादि का वर्णन है। हुमायू से सम्बन्धित ग्रंथो मे यही एक ग्रंथ है जो उसकी आज्ञा स लिखा गया था। यह ग्रंथ एशियाटिक सोसाइटी आफ बगाल द्वारा प्रकाशित हुआ है तथा डा० बेनी प्रसाद न इसका अंग्रेजी म अनुवाद किया है, जो अत्यन्त ही उपयोगी है।

अकबरनामा के लिए सामग्री एकत्र करन के लिए अकबर ने, ऐसे लोगो को जो उसके पिता तथा पितामह के समकालीन थे, आज्ञा दी कि उसके बारे म वे जो कुछ भी जानत हो उसे लिपिबद्ध कर प्रस्तुत कर। इस आदेश पर रचे गये तीन ग्रंथ—गुलबदन बेगम का 'हुमायूनामा', जौहर का 'तजकिरतुल वाकेयात' एव बायजीद का 'तजकिरए हुमायू व अकबर' हुमायू के जीवन के लिए अत्यन्त ही उपयोगी हैं।

गुलबदन बेगम का हुमायूनामा—बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम का जन्म 1523 ई० म हुआ था। इसकी माता दिलदार बेगम थी। इस तरह बाबर के भारतीय आक्रमण के समय यह केवल दो वर्ष की थी। 1529 ई० के मध्य म अन्य महिलाओ के साथ यह भी भारत आयी। बाबर की मृत्यु के समय गुलबदन आठ वर्ष की थी। इसका विवाह खिज्र ख्वाजा खा मुगल से हुआ था। शेर खा स हुमायू की पराजय के पश्चात् गुलबदन आगरा स लाहौर और वहा से कामरान के साथ काबुल गयी। निष्कासन काल म हुमायू तथा उसके भाइयो के संघर्ष के समय गुल-बदन वही थी। हुमायू की मृत्यु के पश्चात 1557 ई० म वह पुनः भारत आयी। 1575 ई० म वह हज्ज करन गयी और वहा स 1582 ई० म वापस लौटी।

1603 ई० म उसकी मत्यु हुई ।

हिन्दाल, गुलबदन का सगा भाई था। गुलबदन जब दो वष की थी तभी हुमायू की माता माहम बेगम ने उसे गोद ले लिया। वे बराबर उसके सम्पक में रही तथा हुमायू से सबधित बहुत सी बातो का पता उन्ह माहम से प्राप्त हुआ होगा। गुलबदन ने यह सस्मरण फारसी भाषा मे अकबरनामा के लिए अकबर की आज्ञा से लिखा। मुगलो की मातभाषा चगताई तुर्की थी। गुलबदन ने इन शब्दो का भी प्रयोग किया है। हुमायूनामा दो भागो म विभाजित है। प्रथम भाग म बाबर तथा दूसरे मे हुमायू के काल की घटनाओ का वर्णन है। बाबर के काल की घटनाए बहुत ही सक्षिप्त है। पुस्तक का अधिक भाग हुमायू से सबधित है।

हुमायू के काल की घटनाए उसकी आखो के सामने ही घटी। मुगल परिवार की होने के कारण इन घटनाओ से सबधित अधिकतर लोगो से इसका व्यक्तिगत परिचय था। हुमायू की बेगम हमीदा बानो से भी इसकी घनिष्ठता थी। इस तरह बहुत-सी बातो की जानकारी जो इसको हो सकती थी, वह अन्य के लिए सम्भव नही थी। स्त्री होने के कारण अन्य लेखको से इसका दृष्टिकोण भिन्न है तथा इसने मुगल स्त्रियो के विषय मे मनोरजक बातो का वणन किया है। मुगल काल की बेगमो की दशा की जानकारी के लिए यह ग्रथ महत्त्वपूण है। राजनतिक घटनाओ के अतिरिक्त इसम समकालीन रीति रिवाज, सामाजिक मान्यताओ इत्यादि का भी वणन है। माहम बेगम द्वारा जश्न का आयोजन, आइनबन्दी, तिलिस्म का जश्न, हिन्दाल मिर्जा के विवाह का जश्न, माहम की हुमायू के पुत्र-जन्म की आकाक्षा तथा सुन्दर लडकियो स हुमायू के विवाह के लिए उनका प्रयत्न, मुगल स्त्रियो की पारस्परिक स्पर्धा तथा एसी अनेक घटनाए गुलबदन के वणन के बिना अप्राप्य रहती। बाबर की मृत्यु से सबधित घटनाए, हुमायू के प्रति बाबर का प्रेम, माहम की हुमायू के राज्यकाय मे दिलचस्पी, चौसा के युद्ध म खोयो गयी स्त्रियां, चौसा तथा कन्नौज की पराजय के पश्चात् मुग़ल परिवार तथा अमीरो की दयनीय दशा, हमीदा बानो के विवाह स सबधित घटनाए, हुमायू का उसके भाइयो स सबध, काबुल म कामरान के अत्याचार इत्यादि घटनाओ का वणन महत्त्वपूण है। गुलबदन बेगम इतिहासकार नही थी। हुमायूनामा उसका सस्मरण है। वह इसम वर्णित घटनाओ से सबधित थी। इसस कही-कही वह भावनाओ स प्रभावित हो जाती है तथा निष्पक्ष नही रह जाती। उदाहरणतया, अपन सगे भाई हिन्दाल के प्रति वह कही कही पक्षपात करती है, उसकी मृत्यु की घटनाए तो अत्यन्त ही मार्मिक शब्दो म वर्णित हैं। गुलबदन ने घटनाओ की सत्यता की खोज भी नही की। बहुत-सी घटनाए बहुत ही सक्षिप्त हैं, जसे कन्नौज तथा चौसा के युद्ध। उनकी तिथियां भी सदा सही नहीं हैं।

श्रीमती बवरिज न गुलबदन के मूल ग्रथ का सस्करण सम्पादित किया है तथा

टिप्पणियो के साथ उसका अग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया है। यह ग्रन्थ एशियाटिक सोसायटी द्वारा प्रकाशित हुआ है।

तजकिरतुल वाकेयात—इस ग्रन्थ के लेखक जौहर आफतावची के जन्म तथा जीवन की प्रारम्भिक घटनाओ का ज्ञान हम नही है। उसके सस्मरण से इतना स्पष्ट है कि हुमायू के निर्वासन काल मे, उच्च तथा भक्कर की यात्रा के पश्चात वह बराबर उसके साथ रहा। पजाव विजय के पश्चात् हुमायू ने जौहर को हैबतपुर परगन का राजस्व वसूल करने के लिए नियुक्त किया। उसके काम से प्रसन्न होकर उसे तातार खा लोदी का खजाना एव उसके अधीनस्थ प्रदेश भी प्रदान कर दिये गये। तदुपरान्त वह कुछ अन्य अधिकारियो के साथ पजाव एव मुल्तान का खजाची नियुक्त हुआ। हुमायू के दिल्ली पर अधिकार करने के पश्चात सिकन्दर सूर के विरुद्ध पजाव म उसने अबुल माली की सहायता की। अकबर के समय उसके कार्यों तथा पद का ज्ञान हमे नही है। यद्यपि वह उसके राज्यकाल म बहुत दिना तक जीवित रहा। उसने अपन सस्मरण की रचना 1587 ई० मे प्रारम्भ की।

जौहर के सस्मरण मे हुमायू के जीवन से सबधित अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओ का वणन है। उसने जो कुछ लिखा है वह अपनी स्मति से लिखा है तथा एसी घटनाओ का वणन किया है जो उसकी आखो के सामने हुई। वह हुमायू के साथ लगभग पच्चीस वष रहा, जिससे उसे हुमायू को निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ। हुमायू के निष्कासन काल की घटनाओ के लिए जौहर बहुत ही उपयोगी है। उसने घटनाओ का सीधी-सादी भाषा म वणन किया है। जौहर के पास सस्मरण लिखते समय कोई डायरी नही थी। इस कारण घटनाए सिलसिलेवार न हो सकी और जैसा वह स्वय लिखता है, घटनाओ की तिथिया देना सम्भव न हो सका। उसकी कुछ तिथिया तो इतनी भ्रामक हैं कि उनसे विवाद खडा हो गया है, जसे अकबर की जन्म तिथि। जौहर के लिए हुमायू ऐसे उच्च स्थान पर था कि उसके कार्यों की आलोचना करना अथवा उसम दोष देखना उसके लिए असम्भव था। एक इतिहासकार के गुण न होने पर भी कई स्थलो पर जौहर अपन विचारो स हम चकित कर देता है। गुजरात अभियान के पश्चात् जौहर का यह सुझाव कि हुमायू को, बहादुरशाह को गुजरात का डिप्टी नियुक्त करना चाहिए था, महत्त्वपूर्ण है।

मेजर स्टीवट ने जौहर के तजकिरतुल वाकेयात का अग्रेजी अनुवाद किया है। इसके विषय म असकिन का विचार था कि यह अनुवाद ठीक नहीं है। मजर स्टीवट का अनुवाद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जौहर क पुस्तक की पाण्डुलिपि स मिलता है। सम्भव है यह अनुवाद उसी पाण्डुलिपि स किया गया हो। डॉ० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार स्टीवट के अनुवाद म कुछ त्रुटिया अवश्य हैं, किन्तु असकिन के मत से सहमत नहीं हुआ जा सकता।

तजकिरए हुमायू व अकबर—इस ग्रन्थ का लखक बायजीद ब्यात एक तुर्क

1603 ई० मे उसकी मत्यु हुई।

हिदाल, गुलवदन का सगा भाई था। गुलवदन जब दो वष की थी तभी हुमायू की माता माहम बेगम ने उसे गोद ले लिया। वे बराबर उसके सम्पक में रही तथा हुमायू से सबधित बहुत सी बातो का पता उन्हे माहम से प्राप्त हुआ होगा। गुलवदन ने यह सस्मरण फारसी भाषा म अकबरनामा के लिए अकबर की आज्ञा से लिखा। मुगलो की मातभाषा चगताई तुर्की थी। गुलवदन ने इन शब्दो का भी प्रयोग किया है। हुमायूनामा दो भागो म विभाजित है। प्रथम भाग म बाबर तथा दूसरे में हुमायू के काल की घटनाओ का वणन है। बाबर के काल की घटनाए बहुत ही सक्षिप्त हैं। पुस्तक का अधिक भाग हुमायू से सबधित है।

हुमायू के काल की घटनाए उसकी आखो के सामने ही घटी। मुगल परिवार की होने के कारण इन घटनाओ से सबधित अधिकतर लोगो से इसका व्यक्तिगत परिचय था। हुमायू की बेगम हमीदा बानो से भी इसकी घनिष्ठता थी। इस तरह बहुत सी बातो की जानकारी जो इसको हो सकती थी, वह अन्य के लिए सम्भव नही थी। स्त्री होने के कारण अन्य लेखको से इसका दष्टिकोण भिन्न है तथा इसने मुगल स्त्रियो के विषय मे मनोरजक बातो का वणन किया है। मुगल काल की बेगमो की दशा की जानकारी के लिए यह ग्रन्थ महत्त्वपूण है। राजनतिक घटनाओ के अतिरिक्त इसम समकालीन रीति रिवाज, सामाजिक मान्यताओ इत्यादि का भी वणन है। माहम बेगम द्वारा जश्नो का आयोजन, आइनबन्दी, तिलिस्म का जश्न, हिदाल मिर्जा के विवाह का जश्न, माहम की हुमायू के पुत्र जन्म की आकाक्षा तथा सुन्दर लडकियो से हुमायू के विवाह के लिए उनका प्रयत्न, मुगल स्त्रियो की पारस्परिक स्पर्द्धा तथा एसी अनेक घटनाए गुलबदन के वणन के बिना अप्राप्य रहती। बाबर की मत्यु से सबधित घटनाए, हुमायू के प्रति बाबर का प्रेम, माहम की हुमायू के राज्यकाय मे दिलचस्पी, चौसा के युद्ध म खोयी गयी स्त्रियां, चौसा तथा कन्नौज की पराजय के पश्चात मुगल परिवार तथा अमीरो की दयनीय दशा, हमीदा बानो के विवाह से सबधित घटनाए, हुमायू का उसके भाइयो से सबध, काबुल म कामरान के अत्याचार इत्यादि घटनाओ का वणन महत्त्वपूण है। गुलवदन बेगम इतिहासकार नही थी। हुमायूनामा उसका सस्मरण है। वह इसम वर्णित घटनाओ से सबधित थी। इससे कही कही वह भावनाओ से प्रभावित हो जाती है तथा निष्पक्ष नही रह जाती। उदाहरणतया अपने सगे भाई हिदाल के प्रति वह कही कही पक्षपात करती है उसकी मत्यु की घटनाए तो अत्यन्त ही मार्मिक शब्दो म वर्णित है। गुलवदन ने घटनाओ की सत्यता की खोज भी नही की। बहुत सी घटनाए बहुत ही सक्षिप्त हैं, जसे कन्नौज तथा चौसा के युद्ध। उनकी तिथियां भी सदा सही नही हैं।

श्रीमती बेवरिज ने गुलवदन के मूल ग्रन्थ का सस्करण सम्पादित किया है तथा

टिप्पणियों के साथ उसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया है। यह ग्रन्थ एशियाटिक सोसायटी द्वारा प्रकाशित हुआ है।

तजकिरतुल वाकेयात—इस ग्रन्थ के लेखक जौहर आफताबची के जन्म तथा जीवन की प्रारंभिक घटनाओं का ज्ञान हमें नहीं है। उसके संस्मरण से इतना स्पष्ट है कि हुमायूं के निर्वासन काल में, उच्च तथा भक्कर की यात्रा के पश्चात् वह बराबर उसके साथ रहा। पंजाब विजय के पश्चात् हुमायूं ने जौहर को हैवतपुर परगने का राजस्व वसूल करने के लिए नियुक्त किया। उसके काम से प्रसन्न होकर उसे तातार खां लोदी का खजाना एवं उसके अधीनस्थ प्रदेश भी प्रदान कर दिये गये। तदुपरान्त वह कुछ अन्य अधिकारियों के साथ पंजाब एवं मुल्तान का खजांची नियुक्त हुआ। हुमायूं के दिल्ली पर अधिकार करने के पश्चात् सिकन्दर सूर के विरुद्ध पंजाब में उसने अबुल माली की सहायता की। अकबर के समय उसके कार्यों तथा पद का ज्ञान हमें नहीं है। यद्यपि वह उसके राज्यकाल में बहुत दिनों तक जीवित रहा। उसने अपने संस्मरण की रचना 1587 ई० में प्रारम्भ की।

जौहर के संस्मरण में हुमायूं के जीवन से संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन है। उसने जो कुछ लिखा है वह अपनी स्मृति से लिखा है तथा ऐसी घटनाओं का वर्णन किया है जो उसकी आंखों के सामने हुईं। वह हुमायूं के साथ लगभग पच्चीस वर्ष रहा, जिससे उसे हुमायूं को निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ। हुमायूं के निष्कासन काल की घटनाओं के लिए जौहर बहुत ही उपयोगी है। उसने घटनाओं का सीधी-सादी भाषा में वर्णन किया है। जौहर के पास संस्मरण लिखते समय कोई डायरी नहीं थी। इस कारण घटनाएं सिलसिलेवार न हो सकीं और जैसा वह स्वयं लिखता है घटनाओं की तिथियां देना सम्भव न हो सका। उसकी कुछ तिथियां तो इतनी भ्रामक हैं कि उनसे विवाद खड़ा हो गया है, जैसे अकबर की जन्म तिथि। जौहर के लिए हुमायूं ऐसे उच्च स्थान पर था कि उसके कार्यों की आलोचना करना अथवा उसमें दोष देखना उसके लिए असम्भव था। एक इतिहासकार के गुण न होने पर भी कई स्थलों पर जौहर अपने विचारों से हमें चकित कर देता है। गुजरात अभियान के पश्चात जौहर का यह सुझाव कि हुमायूं को, बहादुरशाह को गुजरात का डिप्टी नियुक्त करना चाहिए था, महत्त्वपूर्ण है।

मेजर स्टीवर्ट ने जौहर के तजकिरतुल वाकेयात का अंग्रेजी अनुवाद किया है। इसके विषय में असर्किन का विचार था कि यह अनुवाद ठीक नहीं है। मेजर स्टीवर्ट का अनुवाद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जौहर के पुस्तक की पाण्डुलिपि से मिलता है। सम्भव है यह अनुवाद उसी पाण्डुलिपि से किया गया हो। डॉ० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार स्टीवर्ट के अनुवाद में कुछ त्रुटियां अवश्य हैं, किन्तु अर्सकिन के मत से सहमत नहीं हुआ जा सकता।

तजकिरए हुमायूं व अकबर—इस ग्रन्थ का लेखक बायजीद ब्यात एक तुर्क

1603 इ० मे उसकी मत्यु हुई।

हिन्दाल, गुलबदन का सगा भाई था। गुलबदन जब दो वष की थी तभी हुमायू की माता माहम बेगम न उसे गोद ले लिया। व बराबर उसके सम्पर्क म रही तथा हुमायू से सबधित बहुत सी बाता का पता उ हे माहम से प्राप्त हुआ होगा। गुलबदन ने यह सस्मरण फारसी भाषा म अकबरनामा के लिए अकबर की आज्ञा से लिखा। मुगला की मातभाषा चग़ताई तुर्की थी। गुलबदन ने इन शब्दा का भी प्रयोग किया है। हुमायूनामा दो भागो म विभाजित है। प्रथम भाग म बाबर तथा दूसरे मे हुमायू के काल की घटनाआ का वणन है। बाबर के काल की घटनाए बहुत ही सक्षिप्त है। पुस्तक का अधिक भाग हुमायू से सबधित है।

हुमायू के काल की घटनाए उसकी आखो के सामने ही घटी। मुगल परिवार की होने के कारण इन घटनाओ से सबधित अधिकतर लोगा से इसका व्यक्तिगत परिचय था। हुमायू की बेगम हमीदा बानो से भी इसकी घनिष्ठता थी। इस तरह बहुत सी बातो की जानकारी जो इसको हो सकती थी, वह अन्य के लिए सम्भव नही थी। स्त्री होने के कारण अन्य लेखका से इसका दष्टिकोण भिन्न है तथा इसने मुगल स्त्रियो के विषय मे मनोरजक बाता का वणन किया है। मुगल काल की बेगमा की दशा की जानकारी के लिए यह ग्रन्थ महत्वपूण है। राजनतिक घटनाआ के अतिरिक्त इसम समकालीन रीति रिवाज, सामाजिक मान्यताआ इत्यादि का भी वणन है। माहम बेगम द्वारा जश्ना का आयोजन, आइनबन्दी, तिलिस्म का जश्न, हिन्दाल मिर्जा के विवाह का जश्न, माहम की हुमायू के पुत्र जन्म की आकाक्षा तथा सुन्दर लडकिया से हुमायू के विवाह के लिए उनका प्रयत्न, मुग़ल स्त्रिया की पारस्परिक स्पर्द्धा तथा ऐसी अनक घटनाए गुलबदन के वणन के बिना अप्राप्य रहती। बाबर की मत्यु से सबधित घटनाए, हुमायू के प्रति बाबर का प्रेम, माहम की हुमायू के राज्यकाय म दिलचस्पी, चौसा के युद्ध म खोयी गयी स्त्रिया, चौसा तथा कन्नौज की पराजय के पश्चात मुगल परिवार तथा अमीरा की दयनीय दशा, हमीदा बानो के विवाह से सबधित घटनाए, हुमायू का उसके भाइयो से सबध, काबुल मे कामरान के अत्याचार इत्यादि घटनाओ का वणन महत्त्वपूण है। गुलबदन बेगम इतिहासकार नही थी। हुमायूनामा उसका सस्मरण है। वह इसम वर्णित घटनाआ से सबधित थी। इसस कही कही वह भावनाआ से प्रभावित हो जाती है तथा निष्पक्ष नही रह जाती। उदाहरणतया, अपने सगे भाई हिन्दाल के प्रति वह कहीं-कही पक्षपात करती है उसकी मत्यु की घटनाए तो अत्यन्त ही मार्मिक शब्दो मे वर्णित है। गुलबदन ने घटनाआ की सत्यता की खोज भी नही की। बहुत सी घटनाए बहुत ही सक्षिप्त हैं, जसे कन्नौज तथा चौसा के युद्ध। उनकी तिथिया भी सदा सही नही है।

श्रीमती बेवरिज न गुलबदन के मूल ग्रन्थ का सस्करण सम्पादित किया है तथा

टिप्पणिया क साथ उसका अग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया है। यह ग्र थ एशियाटिक सोसायटी द्वारा प्रकाशित हुआ है।

तज्किरतुल वाके यात—इस ग्र थ के लेखक जौहर आफतावची के ज म तथा जीवन की प्रारम्भिक घटनाआ का ज्ञान हमे नही है। उसके सस्मरण से इतना स्पष्ट है कि हुमायू के निर्वासन काल म, उच्च तथा भक्कर की यात्रा के पश्चात वह वरावर उसके साथ रहा। पजाव विजय के पश्चात हुमायू ने जौहर को हैवतपुर परगने का राजस्व वसूल करने के लिए नियुक्त किया। उसके काम से प्रस न होकर उसे तातार खा लोदी का खजाना एव उसके अधीनस्थ प्रदेश भी प्रदान कर दिये गये। तदुपरान्त वह कुछ अ य अधिकारियो के साथ पजाव एव मुल्तान का खजाची नियुक्त हुआ। हुमायू के दिल्ली पर अधिकार करने के पश्चात सिक दर सूर के विरुद्ध पजाव म उसने अवुल माली की सहायता की। अकवर के समय उसके कार्यों तथा पद का ज्ञान हमे नही है। यद्यपि वह उसके राज्यकाल म बहुत दिना तक जीवित रहा। उसने अपन सस्मरण की रचना 1587 ई० मे प्रारम्भ की।

जौहर के सस्मरण मे हुमायू के जीवन से सबधित अनक महत्त्वपूण घटनाआ का वणन है। उसने जो कुछ लिखा है वह अपनी स्मृति से लिखा है तथा ऐसी घटनाओ का वणन किया है जो उसकी आखो के सामने हुइ। वह हुमायू के साथ लगभग पच्चीस वष रहा, जिससे उसे हुमायू को निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ। हुमायू के निष्कासन काल की घटनाओ के लिए जौहर बहुत ही उपयोगी है। उसने घटनाआ का सीधी सादी भाषा मे वणन किया है। जौहर के पास सस्मरण लिखते समय कोई डायरी नही थी। इस कारण घटनाए सिलसिलेवार न हो सकी और जैसा वह स्वय लिखता है घटनाओ की तिथिया देना सम्भव न हो सका। उसकी कुछ तिथिया तो इतनी भ्रामक है कि उनस विवाद खडा हो गया है, जसे अकबर की ज म तिथि। जौहर के लिए हुमायू ऐस उच्च स्थान पर था कि उसके कार्यों की आलोचना करना अथवा उसम दोष देखना उसके लिए असम्भव था। एक इतिहासकार के गुण न होने पर भी कई स्थलो पर जौहर अपने विचारो से हम चकित कर देता है। गुजरात अभियान के पश्चात जौहर का यह सुझाव कि हुमायू को, वहादुरशाह को गुजरात का डिप्टी नियुक्त करना चाहिए था, महत्त्वपूण है।

मेजर स्टीवट ने जौहर के तजकिरतुल वाकेयात का अग्रेजी अनुवाद किया है। इसके विषय म असकिन का विचार था कि यह अनुवाद ठीक नही है। मजर स्टीवट का अनुवाद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जौहर के पुस्तक की पाण्डुलिपि से मिलता है। सम्भव है यह अनुवाद उसी पाण्डुलिपि से किया गया हो। डा० इश्वरी प्रसाद के अनुसार स्टीवट के अनुवाद मे कुछ त्रुटिया अवश्य हैं, किन्तु अर्सकिन के मत स सहमत नही हुआ जा सकता।

तजकिरए हुमायू व अकबर—इस ग्र थ का लखक वायजीद व्यात एक तुक

कबीले से सबधित था, किन्तु वह ईरान निवासी था तथा उसका बाल्यकाल तबरेज म व्यतीत हुआ था। ईरान मे वह हुमायू से मिला तथा उसकी सेना म भर्ती हो गया। 1545 ई० म जिस समय हुमायू ने बैराम खा को दूत बनाकर काबुल भेजा, उस समय बायजीद भी उसके साथ था। बैराम खा तो लौट आया किन्तु बायजीद अपने भाई बहराम सक्का क पास गिरनीज चला गया। वह कुछ दिन हुमायू के एक प्रतिष्ठित अमीर का सेवक रहा तथा हुमायू द्वारा भी उस सम्मान प्राप्त होते रहे। उस समय की कई घटनाओ म उसने भाग लिया। 1554 ई० म जब हुमायू कन्धार से वापस आ रहा था तो बायजीद हुमायू के लिए अकबर की तरफ से उपहारस्वरूप फल लेकर वहा पहुचा। हुमायू के भारतीय अभियान के समय वह मुनइम खा के पास काबुल रह गया। 1560 ई० म वह लाहौर आया तथा बराम खा के पतन के समय उसने स देशवाहक का काय किया। तत्पश्चात उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलो म रहने का उसे अवसर मिला। अकबर के राज्यकाल म उसे अन्य सम्मानित कार्यों पर नियुक्त किया गया। 1590 91 ई० मे वह लाहौर म शाही खजाने का अमीन एव दारोगा था। 1590 91 ई० म जिस समय उसने अपने ग्रन्थ की रचना की, उस समय वह वृद्ध हो चुका था तथा लकवे के कारण उसका बाया हाथ बेकार हो गया था। अबुल फजल ने एक लिपिक नियुक्त किया। बायजीद बोलता जाता था तथा लिपिक लिखता जाता था। पुस्तक पढने से स्पष्ट हो जाता है कि शरीर कमजोर होने पर भी बायजीद की स्मृति अद्भुत थी।

अपने ग्रन्थ म बायजीद ने 1542 स 1590 ई० तक का मुगलकालीन इतिहास लिखा है। इस तरह हुमायू का पूरा इतिहास इस पुस्तक म नही है। हुमायू से मिलने के पश्चात बहुत सी घटनाए जिनका उसने वणन किया है, उसकी आखो के आगे घटित हुई तथा इनम स उसने स्वय कुछ म भाग लिया था। बायजीद ने कुछ ऐसी सूचनाए प्रस्तुत की है जो बहुत ही महत्त्वपूण है। उदाहरणतया उसने उन प्रमुख लोगो के नाम दिए ह जो हुमायू क साथ भक्कर स ईरान की तरफ रवाना हुए थे। इसी तरह भारतीय आक्रमण के समय उन लोगो की सूची है जो हुमायू अकबर तथा बराम खा के साथ थे। शाह तहमास्प का पत्र जिसम हुमायू के सत्कार का ब्योरा है तथा काशगर क शासक को लिखे गए हुमायू के पत्र को भी उसने दिया है। बायजीद न राजनतिक घटनाओ का विस्तार स वणन किया है। बायजीद की मूल पुस्तक का एशियाटिक सोसाइटी, आफ बगाल न प्रकाशित किया है। हुमायू म सबधित भाग का अग्रेजी अनुवाद डा० बनारसीप्रसाद सक्सेना द्वारा इलाहाबाद युनिवर्सिटी स्टडीज म प्रकाशित हुआ है (जिल्द 6 भाग 1, पृ० 71-148)।

तारीखे रशीदी—इस ग्रन्थ का लेखक मिर्जा हैदर बाबर का चचरा भाई था। इसका जन्म 1499 1500 ई० म, ताशकन्द म हुआ था। 1506-7 ई० म हैदर

मिर्ज़ा के पिता मुहम्मद हुसन गुरगान ने बाबर के विरुद्ध एक षडयन्त्र रचा किन्तु बाबर ने उसे क्षमा कर दिया। कुछ दिन पश्चात शवानी खा ने इसे मरवा डाला। हैदर मिर्ज़ा बच्चा था। इसकी देखरेख बाबर ने की। हुमायू के राज्यकाल मे यह भारत आया। कन्नौज के युद्ध म यह उपस्थित था तथा मुगल सेना का नतत्व उसी के अधीन था। कन्नौज की पराजय के पश्चात लाहौर तक वह हुमायू के साथ आया। पजाब स वह काश्मीर चला गया तथा वहा का शासक बन बैठा। 1551 ई० म कुछ स्थानीय लोगो द्वारा वह मार डाला गया।

मिर्ज़ा हैदर न हुमायू से सम्बधित घटनाओ का विस्तत वणन नही किया है। फिर भी हुमायू से सबधित जिन घटनाओ का उसने वणन किया है, वे उसकी आखो के सामने हुई। 1529 ई० म हुमायू के बदख्शा से भारत आन के कारण, चौसा-युद्ध के पश्चात मुगल अमीरो, हुमायू तथा उसके भाइयो की दयनीय स्थिति, कन्नौज का युद्ध, मुगलो का पलायन, लाहौर म विचार विमश इत्यादि घटनाओ के लिए उसका वणन अत्यन्त ही उपयोगी है।

एलियस तथा रास ने, 'ए हिस्ट्री ऑफ दि मुगल्स आफ सन्ट्रल एशिया' के नाम से तारीखे रशीदी का अग्रेजी म अनुवाद किया है, जिसस प्रस्तुत ग्रन्थ म सहायता ली गयी है।

नफायसुल मआसिर—इस ग्रन्थ का लेखक मीर अलाउद्दौला बिन यहया मफी हुसैनी कज़वीनी है। लेखक ने यह ग्रन्थ 1565 66 ई० म लिखना प्रारम्भ किया और 1589 90 तक यह समाप्त हुआ। इसम समकालीन कवियो की जीवनिया तथा उनकी कविताओ के उदाहरण दिए गय हैं। हुमायू के समय की कुछ महत्त्वपूण कविताए इसम सग्रहीत हैं। बहुत सी घटनाओ की तिथिया भी कविता म दी गयी ह। मूल पुस्तक का प्रकाशन नही हुआ है।

तारीखे इब्राहीमी—इस ग्रन्थ के लेखक इब्राहीम बिन जरीर(हरीर) क विषय म अधिक ज्ञान प्राप्त नही है। इस ग्रन्थ की रचना 1550ई० म हुई। इसम आदम से लेकर 1549 ई० तक का सक्षिप्त विश्व इतिहास है। हुमायू क काल की 1545 46 ई० तक की घटनाओ का उल्लख है। मूल पुस्तक अप्रकाशित है।

तारीखे एलचीए निज़ाम शाह—इस ग्रन्थ का लखक ख्वरशाह बिन कुबाद अल हुसनी, बुरहान निज़ामशाह प्रथम (1508 53 ई०) का सवक था। यह राज-दूत बनाकर ईरान भेजा गया। वहा कई वष तक रहा तथा उसन शाह तहमास्प म मुलाकात भी की। यह ग्रन्थ प्रकाशित नही हुआ है। हुमायू द्वारा कामरान को लिख गय पत्र तथा बहादुरशाह को लिखे गय अन्य पत्र क लिए यह उपयोगी है।

मिरातुल ममालिक—सीदी अली रईस नामक एक तुर्की एडमिरल 1556 ई० म भारत आया। लखक एसे परिवार का था जो समुद्र यात्रा क लिए प्रसिद्ध था। वह स्वय गणित, ज्योतिष, भूगोल साहित्य धमशास्त्र का ज्ञाता तथा कवि

था। हुमायू इससे मिलकर प्रसन्न हुआ तथा उसने एडमिरल के ग़ज़लो की सराहना की तथा अमीर अलीशेर स उसकी तुलना की। आगरा विजय के सम्बन्ध मे सीदी अली ने हुमायू को एक तिथिवन्ध प्रस्तुत किया। इसने हुमायू स हुई वार्ता का वणन किया है जिसस सम्राट के विद्या प्रेम का पता चलता है। हुमायू की मृत्यु स सबधित घटनाओ के लिए यह पुस्तक अत्यन्त ही उपयोगी है तथा ए० वमबरी द्वारा 'दि ट्रवल्स एण्ड एडवेंचस आफ दि टर्किश एडमिरल सीदी अली रईस' के नाम ■ अग्रेजी म प्रकाशित है। यह यात्रावणन सूक्ष्म है तथा इब्नबतूता तथा अन्य यात्रियो स इसकी तुलना नही हो सकती।

तारीखे अलफी—अकबर के काल म इस्लाम के एक हजार वप पूरे हो रहे थे। तारीखे अलफो की रचना अकबर की आज्ञा से हुई जिसम कई लेखको ने सहयोग दिया। हुमायू के सबध म इसम नवीनता नही है, यद्यपि यह अन्य लेखको का समथन करता है। इस ग्र थ का प्रकाशन नही हुआ है।

तारीखे खानदाने तिमूरिया—इस ग्रथ की पाण्डुलिपि खुदाबख्श लाइब्रेरी पटना मे है। इसम भारत के तैमूरवशियो का इतिहास, अकबर के बाइसवें वप तक दिया गया है। यह पुस्तक चित्रित है तथा अपने चित्रो के कारण इस बडी प्रसिद्धि मिली है।

अहसानत् तवारीख—इस ग्रथ के लेखक हसन ऐ रूमलू न इस ग्रन्थ की रचना 1582-83 ई० म की। गायकवाड ओरियन्टल सीरीज म इसका प्रकाशन हुआ है तथा श्री सेडन न इसका अग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया है। लेखक शाह तहमास्प के दरबार से सबधित था। इसम हुमायू के ईरान निवासी को घटनाओ पर प्रकाश पडता है।

तबकाते अकबरी—इस ग्र थ के लेखक ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद का जन्म कदाचित् नवम्बर 1551 ई० मे हुआ था। इसका पिता ख्वाजा मुहम्मद मुकीम हरवी बाबर का बडा विश्वासपात्र था तथा दीवान ब्यूतात के पद पर नियुक्त था। हुमायू के गुजरात विजय के पश्चात् 1535 ई० म जिस समय अस्करी को वहा नियुक्त किया गया, उस समय मुकीम उसका वजीर था। 1539 ई० म जब हुमायू चौसा के युद्ध म शेरशाह से पराजित होकर आगरा पहुचा तो मुकीम हरवी भी उसके साथ था। अकबर के प्रारम्भिक काल म भी वह राजसी काय से सबधित था। निजामुद्दीन अहमद अकबर के राजसी सेवा म था। वह उच्चकोटि का सैनिक था और उसन विभिन्न राजसी अभियानो म महत्त्वपूण भाग लिया था। कई वप तक वह गुजरात का बख्शी रहा। 1589 ई० म वह दरबार म बुला लिया गया। पैंतालीस वप की अवस्था म, नवम्बर 1594 ई० म, लाहौर के निकट उसकी मृत्यु हो गयी।

निजामुद्दीन न तबकाते अकबरी मे गजनी वश से प्रारम्भ कर 1593 94 ई०

तक के भारतीय इतिहास का वर्णन किया है। अपने ग्रन्थ की रचना मे उसने 29 ग्रन्थो से सहायता ली है। इनमे से कुछ अब उपलब्ध नही हैं। इससे इसकी पुस्तक का मूल्य और बढ़ जाता है। उसका पिता बाबर तथा हुमायू के शासन से सबधित था। बहुत सी बातो का ज्ञान उसे अपने पिता से प्राप्त हुआ। तबकाते अकबरी की भाषा सरल है। निजामुद्दीन ने अपने बहुत से समकालीन इतिहासकारो की भांति कट्टरता एव पक्षपात नही है, वरन् उसने उदारता का परिचय दिया है। वह कवियो का पोषक भी था। हुमायू के जीवन की कुछ घटनाओ के लिए निजामुद्दीन का वर्णन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। खलीफ़ा के षडयन्त्र के लिए तो वह हमारा प्रमुख साधन है, क्योकि उसके पिता ही की सहायता से उस षडयन्त्र का अन्त हुआ। इसके अतिरिक्त मुहम्मद जमान मिर्जा तथा मुहम्मद सुल्तान मिर्जा, हुमायू का बगाल अभियान इत्यादि अनेक घटनाओ के लिए यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी है। उसका पिता अस्करी का वजीर था। गुजरात म मुगलो की विजय तथा पलायन की घटनाओ का ज्ञान कदाचित् उसने अपने पिता से प्राप्त किया होगा। कई स्थलो पर निजामुद्दीन का वर्णन बहुत ही सक्षिप्त है तथा कुछ घटनाए है जो विवादग्रस्त हैं। श्री बृजेन्द्रनाथ डे ने अग्रेजी म इसका अनुवाद किया है। जो एशियाटिक सोसाइटी आफ बगाल द्वारा प्रकाशित हुआ है।

मुन्तखबुत्तवारीख—इस ग्रन्थ के लेखक अब्दुल कादिर बदायूनी का जन्म 1540 ई० को टोडा भीम, जयपुर म हुआ था। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा बसावर तथा तत्पश्चात् शेख मुबारक नागौरी से, अबुल फजल तथा फैजी के साथ, आगरा म हुई। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात वह बदायू चला आया। वहा वह पटियाली के जागीरदार हुसन खा की सेवा म 9 वर्ष रहा। 1574 ई० म वह अकबर के दरबार मे पहुचा। उसे एक हजार बीघे की भूमि मद्दे मआश के रूप म दी गयी। अब्दुल कादिर विद्वान था। वह सस्कृत भी जानता था। इससे रामायण, महाभारत के फारसी अनुवाद मे भी सहायता ली गयी। उसने कई अन्य ग्रन्थो की रचना की जिनम मुन्तखबुत्तवारिख सबसे महत्त्वपूर्ण है। इसमे गजनी वश से प्रारम्भ कर अकबर के राज्य के चालीसवें वर्ष तक की घटनाओ का वर्णन है। अब्दुल कादिर लिखता है कि उसका ग्रन्थ तबकाते अकबरी पर आधारित है, किन्तु उसके ग्रन्थ मे बहुत सी नयी बाते हैं जो तबकाते अकबरी म नही है। बदायूनी का दृष्टिकोण एक कट्टर सुन्नी मुल्ला का है। हिन्दुओ तथा अन्य गैर सुन्नी मुसलमानो का वह कटु आलोचक है। अकबर के प्रति उसका दृष्टिकोण अत्यन्त सकुचित, पक्षपातपूर्ण तथा कटु है। इसी कारण यद्यपि यह पुस्तक 1596 ई० म लिखी गयी थी, फिर भी यह बहुत दिनो तक गुप्त रखी गयी तथा जहागीर के काल म प्रकाश म आयी। हुमायू के इतिहास के प्रसग मे बदायूनी ने उस समय के शिआ-सुन्नी मतभेदो एव अन्य समकालीन लोगो के धार्मिक विचारो, कवियो इत्यादि का सुन्दर

वर्णन किया है। इस दृष्टि से उसकी पुस्तक अत्यन्त ही उपयोगी है। रेकिंग तथा लो ने इसका अंग्रेजी अनुवाद किया है जो एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल द्वारा प्रकाशित हुआ है। मूल ग्रन्थ भी वहीं से प्रकाशित हुआ है।

गुलशने इब्राहीमी अथवा तारीखे फिरिश्ता—इतिहासकार फिरिश्ता का पूरा नाम मुहम्मद कासिम हिन्दुशाह फिरिश्ता अस्तराबादी था। फिरिश्ता का अधिकतर समय दक्षिण में व्यतीत हुआ था। इसने अपना इतिहास इब्राहीम आदिलशाह (1606 7) को समर्पित किया। इस ग्रन्थ की रचना जहांगीर के काल में हुई। फिरिश्ता ने अपना इतिहास 35 ऐतिहासिक ग्रन्थों के अध्ययन के पश्चात् लिखा। इसमें बहुत से ग्रन्थ अप्राप्य हैं। मध्य युग के इतिहासकारों में फिरिश्ता का विशेष स्थान है। ब्रिग्स ने चार भागों में इसका अनुवाद अंग्रेजी में किया है। नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से इसका फारसी संस्करण प्रकाशित हुआ है। फिरिश्ता ने हुमायूं से सम्बन्धित कई ऐसी घटनाओं का वर्णन किया है जो अन्य ग्रन्थों में प्राप्य नहीं हैं। कई स्थानों पर फिरिश्ता अन्य इतिहासकारों से अधिक स्पष्ट है। इसकी भाषा भी सरल स्पष्ट है।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त कुछ समकालीन प्रान्तीय इतिहास भी हैं जो हुमायूं के इतिहास के लिए उपयोगी हैं। इन ग्रन्थों में मीर अबु तुराब वली का तारीखे गुजरात सिकन्दर बिन मुहम्मद मन्झू का मिरआते सिकन्दरी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर अलमक्की का जफरूल वालेह बे मुजफ्फर व आलेह तथा मीर मुहम्मद मासूमी का तारीखे सिन्ध महत्त्वपूर्ण है।

तारीखे गुजरात—इस ग्रन्थ का लेखक, मीर अबु तुराब वली, शीराज के सैयिदों के वंश से सम्बन्धित था। उसके पिता तथा चाचा को गुजरात में बड़ा आदर प्राप्त था। अबु तुराब कुछ दिनों बाद अकबर की सेवा में उपस्थित किया गया। अकबर का उस पर इतना विश्वास था कि 1577 ई० में उसे मीरे हज्ज नियुक्त किया गया तथा दरबारियों एवं बेगमों के एक समूह को लेकर वह मक्का गया। 1580 ई० में वह गुजरात लौट आया। 1583 ई० में उसे गुजरात का अमीने सूबा नियुक्त किया गया। जनवरी 1595 ई० में उसकी मृत्यु हो गयी। तारीखे गुजरात में 1525 ई० से 1584 ई० तक की घटनाओं का वर्णन है। बहादुरशाह के दरबार में मुगल शरणार्थियों की गतिविधि, बहादुरशाह तथा हुमायूं की वैमनस्यता के कारण उनके पत्र-व्यवहार तथा हुमायूं के गुजरात अभियान के अध्ययन के लिए यह पुस्तक अत्यन्त ही उपयोगी है। लेखक ने अपने संक्षिप्त इतिहास में उन्हीं घटनाओं का वर्णन किया है जिनका उसे स्वयं ज्ञान था। हुमायूं से सम्बन्धित अनेक घटनाओं में उसके पिता, चाचा तथा उसने स्वयं भाग लिया था।

मीरआते सिकन्दरी—इस ग्रन्थ के लेखक सिकन्दर बिन मुहम्मद उर्फ 'मन्झू' ने अपना इतिहास 1611 ई० अथवा 1613 ई० में लिखा था। इसमें मुजफ्फरशाह

प्रथम स लेकर मुजफ्फर शाह ततीय की मृत्यु (1591 ई०) तक की घटनाओ का वणन है। लेखक का दष्टिकोण मुस्लिम है। इसन अपने ग्रथ म बहुत सी किवदतिया तथा कहानियो का वणन किया है। ऐतिहासिक घटनाओ के अतिरिक्त इसम बहादुरशाह से सबधित अनेक किंवदतिया तथा कहानिया दी गयी हैं। जैस बहादुरशाह के तोते तथा कलाव त मझू क व दी बनाय जान तथा उसकी स्वत त्रता का वणन किया जा चुका है। दोनो शासको म हुए पत्र व्यवहार म इसने बहादुरशाह का अ तिम पत्र दिया है जिसका उल्लेख किया जा चुका है। बेले न इसका अग्रेजी अनुवाद किया है।

जफरवालेह बे मुजफ्फर व आलेह—इस ग्रन्थ के लेखक अब्दुलाह मुहम्मद बिन उमर अलमक्की उफ 'हाजी उद्दबीर' का ज म 1540 ई० म हुआ। 1555 ई० मे वह भारत आया और अपने पिता के साथ अहमदाबाद मे रहने लगा। गुजरात विजय के पश्चात् लेखक के पिता को अकबर ने गुजरात के वक्फा का प्रब ध सौपा। अपने पिता की मत्यु (1576 ई०) के पश्चात् वह एक अ य अमीर की सेवा म प्रविष्ट हो गया। तत्पश्चात् खानदेश के अमीर फौलाद खा की सेवा म पहुचा। हाजी उद्दबीर न अपन इतिहास की रचना 1605 ई० म, अरबी भाषा म की। एसा प्रतीत हाता है कि उसन बाद मे भी इसमे सशोधन किया। इस ग्र थ म गुजरात के सुल्ताना के इतिहास के साथ साथ अ य ऐतिहासिक घटनाओ का वणन है। इसम हुमायू तथा बहादुरशाह मे हुए पत्र व्यवहार के पत्र प्राप्त है। हुमायू तथा बहादुरशाह से सबधित उपयोगी सामग्री उपल ध है। डेनीसन रास ने इसका अनुवाद 'एन अरेबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात' के नाम से किया है। इसी नाम स यह अधिक प्रसिद्ध है।

तारीखे सिंध—इस ग्र थ का लेखक मीर मुहम्मद मासूम 'नामी' भक्कर क एक शेखुल इस्लाम का पुत्र था। 1583 ई० मे वह गुजरात आया तथा निजामुद्दीन अहमद का मित्र बन गया। 1595 96 ई० म उसे अकबर ने 250 का म सब प्रदान किया। 1603 4 ई० म वह राजदूत बनाकर ईरान भेजा गया। 1606 7 ई० म वह भक्कर लौट गया, जहा उसकी मृत्यु हो गयी। तारीखे सिंध म मुसलमाना की विजय से लेकर अकबर के शासनकाल तक सिंध का इतिहास है। हुमायू के सिंध निवास के लिए यह उपयोगी इतिहासकार है। भडारकर इ सटीटयूट पूना न 'तारीखे सिंध' के नाम स इसे प्रकाशित किया है।

हुमायू का सघष अफगाना से भी हुआ था। अफगान इतिहासकारो स भी हुमायू सबधी सामग्री मिलती है। ये इतिहासकार समकालीन नहीं हैं। फिर भी इन्हाने अनेक परम्पराओ के आधार पर इन ग्र था की रचना की है। इन ग्र था म वाकेयाते मुश्ताकी, तारीखे शेरशाही, मखजाने अफग़ेना तथा सलातीन अफ़ग़ाने प्रमुख हैं।

वाकेआते मुश्ताकी—इस ग्रथ के लेखक शेखरिजकुल्लाह मुश्ताकी का जन्म 1491 92 ई० म हुआ था। यह फारसी तथा हिन्दी दोनो भाषाओ का कवि था। वाकेआत मुश्ताकी म बहलाल लोदी स लेकर अकबर के राज्यकाल तक का वणन है। इसम शासको से सबधित अलौकिक कहानियो की भरमार है।

तारीखे शेर शाही—इस ग्रथ का लेखक अब्बास खा सरवानी अकबर की सेवा म था तथा उसकी आज्ञा स उसने इस ग्रथ की रचना की (1579 ई०)। इसमे शेरशाह स सबधित अनेक घटनाओ का वणन है। हुमायू तथा शेरशाह से सबधित घटनाओ के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। इलियट तथा डासन के हिस्ट्री आफ इडिया एज टोल्ड बाई इट्स ओन हिस्टोरियन्स' के चौथे भाग म इसका अनुवाद है।

सलातीने अफाग़ेना—अहमद यादगार अपनी पुस्तक मे अपने को सूर अफग़ानो का सेवक लिखता है। उसका पिता गुजरात म अस्करी का वजीर था। एशियाटिक सोसायटी आफ बगाल न तारीखे शाही के नाम से इसे प्रकाशित किया है। यह पुस्तक बगाल के शासक दाऊद शाह की आज्ञा से (इसकी मृत्यु 1576 ई० म हुई) लिखी गयी। इसम लोदी तथा सूर वश के शासको का वणन है। मुग़लो से सबधित घटनाओ का भी वणन है। बाबर द्वारा हुमायू को उत्तराधिकारी मनोनीत करने की घटना का वणन जो अहमद यादगार न किया है, महत्वपूण है। हुमायू के काल की घटनाए तबक़ाते अकबरी से ली गयी हैं पर कई स्थानो पर इसम और भी उपयोगी सामग्री है।

मखज़ाने अफाग़ेना—इसकी रचना नियामतउल्लाह न 1611 ई० म खा जहा की आज्ञा से प्रारम्भ की। यह ग्रथ डान न हिस्ट्री आफ दि अफग़ान्स' के नाम से अग्रेजी म अनुवाद किया है। इसम भी लोदी तथा सूर वश का इतिहास है।

तारीखे दाऊदी—इस ग्रथ का लेखक अब्दुल्ला जहागीर का समकालीन था। यह देखकर कि लोग अफग़ान सुल्तानो क विषय मे धीरे धीरे भूलत जा रहे हैं, उसने इस ग्रथ की रचना की। उसन अपना ग्रथ बगाल के अफग़ान शासक दाऊद शाह (1572-76 ई०) को समर्पित किया है, यद्यपि उसकी रचना जहागीर के काल म हुई। मूल ग्रथ अलीगढ विश्वविद्यालय स प्रकाशित हुआ है।

13 प्रमुख सहायक ग्रन्थो की सूची

(अ) समकालीन ग्रन्थ

मूल ग्रन्थ

अबुल फज़ल —अकबरनामा, भाग 1, कलकत्ता, 1873 87।

अबूतुराब वली —तारीखे गुजरात, कलकत्ता, 1909।

अब्दुल्लाह —तारीखे दाऊदी, अलीगढ, 1954।

अहमद यादगार —तारीखे शाही, कलकत्ता, 1939।

गुलबदन बेगम —हुमायूनामा लन्दन, 1902।

जायसी, मलिक मुहम्मद —पद्मावत, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

फिरिश्ता, मुहम्मद
कासिम हिन्दू शाह —तारीखे फिरिश्ता, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ।

बदायूनी, अब्दुल कादिर —मुन्तखबुत्तवारीख, कलकत्ता, भाग 1, 1868।

बायज़ीद ब्यात —तारीखे हुमायू व अकबर, कलकत्ता, 1941।

मुहम्मद मासूम —तारीखे सिन्ध या तारीखे मासूमी, पूना, 1938।

मूल ग्रन्थो के अनुवाद

अबुल फज़ल —अकबरनामा, एच० बेवरिज द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, आइन अकबरी भाग 1, श्री एच० ब्लाखमैन तथा डी० सी० फिलाट द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, द्वितीय सस्करण, कलकत्ता 1939, भाग 2 तथा 3, द्वितीय सस्करण एच० एस० जरेट तथा यदुनाथ सरकार द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, कलकत्ता, 1948 तथा 1949।

अब्दुल्ला मुहम्मद, (हाजी उद दबीर) —ज़फरुल वालेह का राम द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, एन अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात।

इलियट तथा डासन —हिस्ट्री आफ इण्डिया एज टोल्ड बाइ इटस ओन हिस्टोरियन्स, भाग 1, 4 तथा 5, लन्दन, 1872 तथा 1873।

ख्वान्दमीर —कानूने हुमायूनी, डॉ० बेनी प्रसाद द्वारा अंग्रेजी अनुवाद कलकत्ता, 1940।

गुलबदन बेगम —हुमायूनामा, श्रीमती बेवरिज का अंग्रेजी अनुवाद, लन्दन, 1902।

जहांगीर —जहांगीर की आत्मकथा का रोजर्स द्वारा अंग्रेजी अनुवाद 1909 तथा 1914, बृजरत्न दास द्वारा हिंदी अनुवाद, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 2014 संवत।

जौहर —तजकिरतुल वाक़ेयात अर्थात् जौहर का सम्राट हुमायूं से सम्बन्धित संस्मरण, मेजर चार्ल्स स्टीवर्ट का अंग्रेजी अनुवाद, कलकत्ता, 1904।

नानक गुरु —आदि ग्रंथ।

निजामुद्दीन अहमद —तबकात अकबरी, श्री बी० डे, द्वारा अंग्रेजी अनुवाद भाग 2 तथा 3, कलकत्ता, 1936 40।

फिरिश्ता —तारीखे फिरिश्ता जान ब्रिग्स द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, हिस्ट्री आफ दी राइज ऑफ मोहमडन पावर इन इण्डिया, भाग 2, 3, 4, कलकत्ता, 1909 तथा 1910।

बदायूनी —मुंतखबुत्तवारीख का रैंकिंग, लो तथा हेग द्वारा अंग्रेजी अनुवाद।

बम बेरी० ए —ट्रेवेल्स एण्ड एडवेंचर्स आफ दि टर्किश एडमिरल सीदी अली रेइस।

बाबर —दि मेमायर्स आफ बाबर, बाबर की आत्मकथा का श्रीमती ए० एम० बेवरिज द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, लन्दन, 1921।

बायजीद ब्यूतात —तारीखे हुमायूं व अकबर, डॉ० बनारसीप्रसाद सक्सेना का अंग्रेजी अनुवाद, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी स्टडीज जिल्द 6, भाग 1, 1930।

बेले, इ० सी० —हिस्ट्री आफ गुजरात, (दि लोकल मोहमडन डाइनेस्टीज आफ गुजरात) मीराते सिकन्दरी का अंग्रेजी अनुवाद, लन्दन, 1886।

मिर्जा हैदर —तारीखे रशीदी, एलियस तथा रास द्वारा अंग्रेजी अनुवाद।

रिजवी, अतहर अब्बास —मुगल कालीन भारत, हुमायूं, भाग, 1, अलीगढ़, 1961 तथा भाग 2, अलीगढ़ 1962।

होदीवाला, एस० एच० —स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री, भाग 1, बम्बई, 1939।

(आ) आधुनिक ग्रन्थ

असकिन विलियम —हिस्ट्री आफ इण्डिया, अण्डर दि फस्ट टू सावरेन्स ऑफ दि हाउस आफ तैमूर, बाबर एण्ड हुमायू, भाग 1 तथा 2, 1854।

अवस्थी, आर० एस० —हुमायू (अप्रकाशित)।

आगस्टस, फ्रेडरिक काउन्ट आफनोअर —एम्परर अकबर, ए० एस० बेवरिज द्वारा अंग्रेजी अनुवाद, कलकत्ता, 1890।

इब्न हसन —दि सेन्ट्रल स्ट्रक्चर आफ दि मुगल एम्पायर, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1936।

इरविन, विलियम —लेटर मुगल्स, भाग 1 तथा 2, कलकत्ता 1922।

ईश्वरी प्रसाद —दि लाइफ एण्ड टाइम्स आफ हुमायू ओरियन्ट, लागमैन्स, 1955।

एडवर्ड्स एस० एम० तथा गरेट एच० एल० ओ० —मुगल रूल इन इण्डिया, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1930।

एलफिन्सटन —हिस्ट्री आफ इण्डिया।

ओझा, गौरीशंकर —राजपूताने का इतिहास।

कानूनगो, कालिकारंजन —शेरशाह (कलकत्ता 1921)।
दाराशिकोह (कलकत्ता 1952)।

कामिस्सारियट, एम० एस० —हिस्ट्री ऑफ गुजरात (1938) लागमन्स ग्रीन एण्ड कम्पनी।

खां, सर सयद अहमद —आसार अस् सनादीद (उर्दू) कानपुर, 1904।

ग़नी, मुहम्मद अब्दुल —ए हिस्ट्री आफ पर्शियन लंगवेज एण्ड लिटरेचर एट दि मुगल कोर्ट, भाग 2, हुमायू, इलाहाबाद, 1930।

ग्रेनाड, फरनण्ड —बाबर फस्ट आफ दि मुगल्स (लन्दन 1931)।

जाफर, एस० एम० —दि मुगल एम्पायर (पेशावर, 1936)।
एजूकेशन इन मुस्लिम इण्डिया (1936)।

टाड, जेम्स —एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज़ ऑफ राजस्थान, भाग 1 2, पापुलर एडीशन, जार्ज रूतलेज एण्ड सन्स (लन्दन)।

ताराचन्द —इन्फ्लूएन्स आफ इस्लाम आन इण्डियन कल्चर, इलाहाबाद, 1936।
त्रिपाठी, रामप्रसाद —राइज एण्ड फाल आफ दि मुगल एम्पायर (इलाहाबाद, 1955)।
सम ऐसपेक्टस ऑफ मुस्लिम एडमिनिस्ट्रेशन (इलाहाबाद, 1956)।
नाजिम मुहम्मद —लाइफ एण्ड टाइम्स आफ सुल्तान महमूद आफ गजनी (कैम्ब्रिज 1931)।
प्रसाद, डाक्टर बेनी —हिस्ट्री आफ जहांगीर, ततीय संस्करण (इलाहाबाद, 1940)।
बनर्जी, डा० एस० के० —हुमायू बादशाह भाग 1, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 1938 भाग 2, लखनऊ, 1941।
बर्न, सर रिचर्ड —दि कम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, चतुर्थ भाग, दिल्ली।
बील टामस विलियम —दि ओरियन्टल बायोग्राफिकल डिक्शनरी, (कलकत्ता, 1881)।
बेन्द्रे बी० एस० —ए हिस्ट्री आफ मुस्लिम इन्सक्रिप्शन्स (बम्बई, 1944)।
ब्राऊन, पर्सी —इण्डियन आर्किटेक्चर, इस्लामिक पीरियड, ततीय संस्करण बम्बई।
इण्डियन पेंटिंग्स अण्डर दि मुगल्स (आक्सफोर्ड, 1924)।
ब्राऊन सी० जे० —दि क्वायन्स आफ इण्डिया (कलकत्ता, 1922)।
मजूमदार, बी० —ए गाइड टू सारनाथ (दिल्ली, 1947)।
मिर्जा, मुहम्मद वाहिद —दि लाइफ एण्ड वर्क्स आफ अमीर खुसरो (कलकत्ता, 1935)।
मलिसन, जी० बी० —अकबर आक्सफोर्ड, 1908।
मोरलण्ड, डब्ल्यू० एच० —इण्डिया ऐट दि डेथ आफ अकबर (लन्दन, 1920) दि अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुस्लिम इण्डिया (इलाहाबाद)।
राय, एन० बी० —दि सक्सेसर्स आफ शेरशाह (ढाका 1934)।
राय, चौधरी डा० एम० एल० —दि स्टेट एण्ड रिलीजन इन मुगल इण्डिया, (कलकत्ता 1951)।
रे सुकुमार —हुमायू इन पर्शिया (कलकत्ता 1948)।

रेऊ, विश्वेश्वरनाथ —मारवाड का इतिहास प्रथम भाग, (जोधपुर, 1938)।

ला, नरेन्द्रनाथ —प्रोमोशन आफ लर्निंग इन इण्डिया ड्यूरिंग मोह्-मेडन रूल (लागमैं स ग्रीन एण्ड कम्पनी)।

लाल, के० एस० —हिस्ट्री आफ दि खाल्जीज (इलाहाबाद, 1950)

लेनफूल, स्नलो —मेडिवल इण्डिया (लन्दन, 1916)। बाबर (दिल्ली, 1957)।

विलियम्स, एल० एफ० रशबुक—ऐन एम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी—जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर, लॉगमैन्स ग्रीन एण्ड कम्पनी 1918।

शर्मा, श्रीराम —ए बिब्लियोग्राफी आफ मुगल इण्डिया (बम्बई) स्टडीज इन मेडिवल इण्डियन हिस्ट्री (शोलापुर, 1956)।

दी रिलीजस पालिसी आफ दी मुगल एम्परस कलकत्ता 1940।

शर्मा, एस० आर० —मुग़ल एम्पायर इन इण्डिया,(बम्बई, 1940)।

शर्मा, जी० एन० —मेवाड एण्ड दि मुगल एम्परस(आगरा, 1954)।

शरण, डॉ० परमात्मा —स्टडीज इन मेडिवल इण्डियन हिस्टी (दिल्ली, 1952)।

दि प्राविन्शियल गवनमेण्ट आफ दि मुगल्स (इलाहाबाद 1941)।

श्यामलदास, कविराज —वीर विनोद, भाग 1 तथा 2।

श्रीवास्तव, आशीर्वादीलाल —शेरशाह एण्ड हिज सक्सेसस (आगरा, 1950)।

अकबर दि ग्रेट (आगरा, 1962)।

मुगल एम्पायर (आगरा)।

सरकार, सर यदुनाथ —ए मिलिटरी हिस्ट्री आफ इंडिया (कलकत्ता, 1960)।

सिंह, रघुवीर —पूर्व आधुनिक राजस्थान (उदयपुर, 1951)।

सूफी, जी० एम० डी० —अल मिनहाज (लाहौर, 1941)।

स्टुअर्ट, सी० एम० विलियस —गार्डन्स आफ दी ग्रेट मुगल्स (लन्दन, 1913)।

स्पीयर, टी० जी० पी० —दिल्ली, इसके स्मारक और इतिहास (आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 1940)।

स्मिथ, वी० ए० —अकबर दि ग्रेट मुग़ल (आक्सफोर्ड, 1919), ए हिस्ट्री आफ फाइन आर्ट इन इण्डिया एण्ड

सीलोन, (वम्बइ, ततीय सस्करण),
दि आक्सफोड हिस्ट्री आफ इडिया (आक्सफोर्ड, 1928)।

हसन, मोहिविब्बुल —कश्मीर अण्डर दि सुल्तान्स कलकत्ता, 1949।

हीराचन्द —वासवाडा राज्य का इतिहास (अजमेर सन 1937), डूगरपुर राज्य का इतिहास (अजमेर, वि० स० 1992)।
बीकानेर राज्य का इतिहास (अजमेर, सन 1939 40)।
जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम खड, अजमेर सन 1938)
उदयपुर राज्य का इतिहास (अजमेर)।

हेग, सर उल्सले —दि कम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इडिया ततीय भाग, (कैम्ब्रिज 1928)।

हेग, सर उल्सले तथा

हैवेल, ई० बी० —इडियन आर्किटेक्चर (लन्दन, 1927)।
आयन रूल इन इडिया।

प्रसाद आर० एन० —राजा मानसिंह आफ आमेर कलकत्ता, 1966,।

प्रसाद ईश्वरी —ए शाट हिस्ट्री आफ द मुस्लिम रूल इन इडिया, इलहाबाद, 1958।

होदीवाला, एस० एच० —हिस्टारिकल स्टडीज इन मुगल न्युमिसमेटिक्स, कलकत्ता, 1923।
—स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री, भाग 1, बम्बई 1939, स्टीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री, भाग 2, वम्बई 1957।

हबीब, इरफान —एग्रेरियन सिस्टम आफ मुगल इडिया अलीगढ, 1963।

रहीम एम० ए० —हिस्ट्री आफ द अफगानस इन इडिया, कराची, 1961।

वान नोअर —कसर अक्वर, दो भाग ए० एस० बेवरिज द्वारा अग्रेजी अनुवाद, कलकत्ता, 1890।

कुमुद रजन दास —राजा टोडरमल, कलकत्ता, 1979।

खान इस्तदार आलम —मिर्जा कामरान अलीगढ, 1964।
—पालिटिक्स बायग्राफी आफ ए मुगल नोबुल—

मुनीमखान ए खानन,

सिद्दीकी, आई० एच —हिस्ट्री आफ शेरशाह सूर, अलीगढ, 1971।

अम्बष्ट, बी० पी० —डिसीसिव बैंटल्स आफ शेरशाह, पटना, 1977।

सिन्हा, पी० पी० —राजा बीरबल लाइफ एण्ड टाइम्स, पटना, 1980।

भार्गव, मोती लाल —हमू एण्ड हिज टाइम्स, लखनऊ, 1961।

वर्मा, आर० सी० —फारन पालिसी आफ द ग्रेट मुगल्स, 1976, आगरा।

इस्लाम, रियाजुल —इण्डो पर्शियन रिलेशन्स, तेहरान, 1970।

रहीम, अब्दुर —मुगल रिलेशन्स विद पर्शिया ऐण्ड सेन्ट्रल एशिया —बाबर टू औरंगजेब, अलीगढ।

श्रीवास्तव, हरिशंकर —मुगल शासन, प्रणाली (मेकमिलन क०)।

(इ) अन्य ग्रन्थ

इनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लाम, लन्दन, 1913-37। डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स

(ई) पत्रिकाओं मे प्रकाशित लेख

अवस्थी, आर० एस० —दि टिले इन हुमायूज एक्सेशन, जरनल, यू० पी० हिस्टारिकल सोसाइटी, *1941*।

निजामी, के० एच० —दी सत्तारी सनटस एण्ड देअर एटीटयूड टूवर्ड्स दि स्टट, मडिवल इडिया, क्वाटरली, जिल्द 1, नम्बर, 1950।

बनर्जी, एस० के० —दि बथ आफ अकबर, प्रोसीडिंग्स ऑफ दि इडियन हिस्ट्री काग्रेस, कलकत्ता, 1939।

बेवरिज, एच० —महदी ख्वाजा, एपीग्रेफिका इण्डो मुसलेमिका, *1915 16*।

रहीम, ए० —मुगल रिलेशन्स विद पर्शिया, इस्लामिक कल्चर, 1937।

रे, एन० आर० —हुमायू एण्ड मालदेव, प्रोसीडिंग्स थड इडियन हिस्ट्री काग्रेस, 1939।

रे, सुकुमार —ए लेटर आफ दि मुगल एम्परर हुमायू टू हिज ब्रदर कामरान, प्रोसीडिंग्स ऑफ दि टवेन्टी फस्ट सेशन आफ दि इडियन हिस्ट्री काग्रेस, 1958,

सीलोन, (बम्बई, तृतीय सस्करण),
दि आक्सफोर्ड हिस्ट्री आफ इडिया (आक्सफोर्ड, 1928)।

हसन, मोहिबिब्बुल —कश्मीर अण्डर दि सुल्तान्स, कलकत्ता, 1949।

हीराचन्द —वासवाडा राज्य का इतिहास (अजमेर सन् 1937), डूगरपुर राज्य का इतिहास (अजमेर, वि० स० 1992)।
बीकानेर राज्य का इतिहास (अजमेर, सन् 1939 40)।
जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम खड, अजमेर सन् 1938)
उदयपुर राज्य का इतिहास (अजमेर)।

हेग, सर उलसले —दि कम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इडिया, तृतीय भाग, (कम्ब्रिज 1928)।

हेग, सर उलसले तथा

हैवेल, ई० बी० —इडियन आर्किटेक्चर (लन्दन, 1927)।
आयन रूल इन इडिया।

प्रसाद, आर० एन० —राजा मानसिंह आफ आमेर, कलकत्ता, 1966,।

प्रसाद, ईश्वरी —ए शार्ट हिस्ट्री आफ द मुस्लिम रूल इन इडिया, इलहाबाद, 1958।

होदीवाला, एस० एच० —हिस्टारिकल स्टडीज इन मुगल न्युमिसमेटिक्स, कलकत्ता, 1923।
—स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री, भाग 1, बम्बई 1939, स्टीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्टो, भाग 2, बम्बई 1957।

हबीब, इरफान —एग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इडिया, अलीगढ, 1963।

रहीम, एम० ए० —हिस्ट्री आफ द अफगानस इन इडिया, कराची, 1961।

घान नोअर —कसर अकबर, दो भाग, ए० एस० बेवरिज द्वारा अग्रेजी अनुवाद, कलकत्ता, 1890।

कुमुद रजन दास —राजा टोडरमल कलकत्ता, 1979।

खान इस्तदार आलम —मिर्जा कामरान अलीगढ 1964।
—पालिटिक्स बायग्राफी आफ ए मुगल नोबुल—

मुनीमखान ए खानन,

सिद्दीकी, आई० एच —हिस्ट्री ऑफ शेरशाह सूर, अलीगढ, 1971।

अम्बष्ट, बी० पी० —डिसीसिव बैटल्स ऑफ शेरशाह, पटना, 1977।

सिन्हा, पी० पी० —राजा बीरबल लाइफ एण्ड टाइम्स, पटना, 1980।

भागव, मोती लाल —हूमू एण्ड हिज टाइम्स, लखनऊ, 1961।

शमा, आर० सी० —फारन पालिसी ऑफ द ग्रेट मुगल्स, 1976, आगरा।

इस्लाम रियाजुल —इण्डो पर्शियन रिलेशन्स, तेहरान, 1970।

रहीम, अब्दुर —मुगल रिलेशन्स विद पर्शिया ऐण्ड सेन्ट्रल एशिया —बाबर टू औरंगजेब, अलीगढ।

श्रीवास्तव, हरिशंकर —*मुगल शासन, प्रणाली (मेकमिलन क०)।*

(इ) अन्य ग्रन्थ

इनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लाम, लन्दन, 1913-37। डिस्ट्रिक्ट गजेटियस

(ई) पत्रिकाओ मे प्रकाशित लेख

अवस्थी, आर० एस० —*दि डिले इन हुमायूज एक्सेशन, जरनल,* यू० पी० हिस्टारिकल सोसाइटी, 1941।

निजामी, के० एच० —दी सत्तारी सनटस एण्ड देअर एटीटयूड टूवर्ड्स दि स्टेट, मेडिवल इंडिया, क्वाटरली, जिल्द 1, नम्बर, 1950।

बनर्जी, एस० के० —दि बथ आफ अकबर, प्रोसीडिंग्स ऑफ दि इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस, कलकत्ता, 1939।

बेवरिज, एच० —महदी ख्वाजा, एपीग्रेफिका इण्डो मुसलेमिका, 1915 16।

रहीम, ए० —मुग़ल रिलेशन्स विद पर्शिया, इस्लामिक कल्चर, 1937।

रे, एन० आर० —हुमायू एण्ड मालदेव, प्रोसीडिंग्स थर्ड इंडियन *हिस्ट्री कांग्रेस, 1939।*

रे, सुकुमार —ए लेटर आफ दि मुग़ल एम्परर हुमायू टू हिज ब्रदर कामरान, प्रोसीडिंग्स आफ दि टवन्टी फस्ट सेशन आफ दि इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस, 1958,

पृ० 318-19।

शर्मा, श्रीराम —हुमायूँ एण्ड मालदेव, जरनल इंडियन हिस्ट्री, 1932।

श्यामलदास, कविराज —बथ डेट आफ अकबर, जरनल एशियटिक सोसाइटी आफ बंगाल, 1886।

श्रीवास्तव, ए० एल० —दी डेट आफ अकबस बथ, हिस्ट्री एण्ड पोलिटिकल साइन्प जनरल, आगरा कॉलिज, आगरा, जनवरी, 1955।

सक्सेना, बनारसीप्रसाद —मेमायस आफ बायजीद, इलाहाबाद यूनीवर्सिटी स्टडीज, जिल्द 6, भाग 1, 1930।

स्मिथ, वी० ए० —बथ आफ अकबर, इंडियन एन्टीक्वरी, 1915।

हरिशंकर —सम्राट अकबर की जन्म तिथि, सरस्वती, इलाहाबाद, अप्रल, 1946।

अन्सारी, एम० अजहर —एम्युजमेण्टस एण्ड द गेम्स आफ द ग्रेट मुगल्स, इंडियन कल्चर, 1961, प० 21-31।

हिदायतुल्ला —बाबर एण्ड द अफग़ान्स—प्रोसीडिंग्स आफ पाकिस्तान हिस्टारिकल कान्फ्रेंस, 1958, पृ० 203 15।

नूरुल हसन, एस० —द पोजीशन आफ द जमींदारस इन द मुगल इम्पायर, इंडियन इकोनामिक एण्ड सोशल, हिस्ट्री रिव्यु भाग 1, 1964, प० 107-119

सिन्हा, सुरेन्द्रनाथ —द ऐडमिनिस्ट्रेटिव सेटअप ऑफ द सूबा आफ इलाहाबाद 1526 1707, इंडियन कल्चर, भाग 39, 1965, प० 85 109।

बनर्जी, एस० के० —द कन्वर आफ कन्धार बाई हुमाय सितंबर 3, *1545, जनल यू०पी० हिस्टारिकल सोसाइटी,* 1940, प० 39 50।

प्रसाद, बी० —कानूने हुमायूनी एण्ड हुमायू, बंगाल पास्ट एण्ड प्रजेन्ट, 1941, पृ० 44 48।

रे, एन ०आर० —हुमायू एण्ड मालदेव, प्रोसीडिंग्स, थर्ड इंडियन *हिस्ट्री काग्रेस, 193 प० 91, 124 1132।*

अनुक्रमणिका